

निशीथ-सूत्रम् NIŚĪTHA-SŪTRA

सम्पादक
उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि
मुनि श्री कन्हैयालाल "कमल"

About the Book-

Nishtha is an important Agama text of the Jainas. The Bhashya of Sthavira Pungava Shri Vishahagani Mahattara and the Churni of Jinadasa Mahattara on this, Agama text posses a great value and special significance. The Bhashya described different aspects of conduct situated to time and place. Besides, the Bhashya throws light on the cultural, Political, Social and other aspects contemporaneous with the period of Bhashyadara.

Infact, Nishith is an encyclopaedia of knowledge which the Bhashya suppliments additionally. It was first published by Sanmati Gyan Peeth, Agra under the Editor-ship of Pujya Shri Amar Muni Ji Maharaj and Muni Shri Kanhaiya Lalji. A number of scholars have written thesis on the work obtained Doctorates.

With the first edition going out of print, there has been an incresing demand for the supply of this book. It is to meet this long -felt need of scholars, Universities and private Institutions that this present in the same Type reprint has seen the light of the day. Due to Flourish the name of Pujya Gurudev the limited Copies have again printed as a IIInd edition.

Complete set in four parts Rs. 1000/-

स्थविः-पुंगव श्री विसाहगणि महत्तर-प्रणीतं, सभाष्यं

निशीथ-सूत्रम्

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर-विरचितया

निशेष-चूर्णी समलंकृतम्

चतुर्थो विभागः

उद्देशकाः 16-20

सम्पादक :

उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि जी महाराज

व

मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज “कमल”

अमर पब्लिकेशन

वाराणसी-1

प्रकाशन :

अमर पब्लिकेशन

सी.के.-13/23, सत्ती चौत्तरा
वाराणसी.

फोन : (0542) 2392378

वितरक :

भारतीय विद्या प्रकाशन

1, यू.बी. जवाहर नगर,
बंगलो रोड, दिल्ली-7.

फोन : 011-23851570

पोस्ट बॉक्स न. 1108,

कचौड़ी गली, वाराणसी

फोन : (0542) 2392378

मूल्य : 1200.00 (चार भाग में)

संस्करण : 2005

मूद्रक :

टिविन्क्ल ग्राफिक्स, दिल्ली-110088.

NISHITH SUTRAM

(With Bhashya)

By

**STHAVIR PUNGAVA SHRI VISAHGANI MAHATTAR
and Vishesh Churni**

By

ACHARYA PRAVAR SHRI JINDAS MAHATTAR

PART IV

UDESHIKA 16-20

Edited by

Upadhaya Kavi Shri Amarchand Ji Maharaj

By

Muni Shri Kanhaiyalal Ji Maharaj “Kamal”

AMAR PUBLICATIONS

VARANASI-1

Published by :

AMAR PUBLICATIONS

CK-13/23, Satti Chautra

Varanasi.

Phone : (0542) 2392376

Distributers :

BHARATIYA VIDYA PRAKASHAN

1, U.B., Jawahar Nagar,

Bungalow Road, Delhi-7.

Phone : 011-23851570

Post Box No. 1108,

Chauchari Gali, Varanasi

Phone : (0542) 2392378

Price : Rs. 1200.00 (In four parts)

Edition : 2005

Printed by :

Twinkle Graphics, Delhi-110088.

आचार - शास्त्र

के

सतर्क एवं सजग मर्मी अध्येताओं

को



—उपाध्याय अमर मुनि

सम्पादकीय

यह निशीथचूणि का चतुर्थ खण्ड है, और अब निशीथचूणि अपने में पूर्ण है। इतने बड़े भीमकाय ग्रन्थ का सम्पादन एवं प्रकाशन इतनी शीघ्रता के साथ पूर्ण होना, वस्तुतः एक आश्चर्य है। जिस गति से प्रारम्भ में सम्पादन एवं मुद्रण चल रहे थे, यदि वही गति अन्त तक बनी रहती, तो संभव था, इतना विलम्ब भी न होता। परन्तु कुछ ऐसी विघ्न-परम्परा उपस्थित होनी रही कि हम चाहते हुए भी तदनुसार कुछ न कर सके।

निशीथचूणि अद्यावधि कहीं भी मुद्रित नहीं हुई है। यह पहला ही मुद्रण है। अतः सम्पादन से सम्बन्धित सभी प्रकार की सतर्कता रखते हुए भी, हम, और तो क्या, अपनी कल्पना के अनुसार भी सफल नहीं हो सके। कारण यह था कि लिखित पुस्तक-प्रतियाँ अधिकतर अशुद्ध मिलीं, और ताडपत्र की प्रति तो उपलब्ध ही न हो सकी। और सबसे बड़ी बात यह भी थी कि इस प्रकार का सम्पादन-कार्य हमारे लिए पहला ही था, जिसके लिए 'सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवानृताः' कहा गया है। अस्तु, सम्पादन में त्रुटियाँ रही हैं, जो हमारे भी ध्यान में हैं, परन्तु, एतदर्थ क्षमायाचना के अतिरिक्त, अब हम अन्य कुछ कर भी तो नहीं सकते।

प्रस्तुत सम्पादन का विद्वज्जगत् में बड़ा आदर हुआ है। विश्वविद्यालय तथा तत्स्तरीय ग्रन्थ सर्वोच्च शिक्षा-संस्थाओं ने अपने पुस्तकालयों के लिए इस ग्रन्थ की प्रतियाँ मँगवाई हैं और अध्ययन के बाद मुक्त भाव से प्रशंसा-पत्र प्रेषित किये हैं। भुवनेश्वर (उड़ीसा) में, अक्टूबर १९५६ में आयोजित 'अखिल भारतीय प्राच्य विद्या-परिषद्' (आल इंडिया ओरिएंटल कान्फ्रेंस) के बीसवें अधिवेशन के प्राकृत एवं जैन धर्म विभाग के अध्यक्ष डा० सांडेसरा ने भी अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में प्रस्तुत सम्पादन को 'नोंघ-पात्र' गिना है। विद्वान् मुनिवरों ने भी खूब दिल खोलकर इसे सराहा है। हमें प्रसन्नता है कि हमारा यह तगण्य कार्य, साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सका।

एक बात और भी है। कुछ लोग उक्त प्रकाशन से नाराज भी हुए हैं। क्यों? इसका उत्तर हम क्या दें! हमारा काम एक प्राचीन ग्रन्थ को, जो अबतक भंडारों के जीर्ण-शीर्ण हस्त-लेखों की सीमा में ही प्रायः काल-यापन कर रहा था, मात्र, बाहर प्रकाश में लाना था, और वह हमने ला दिया। हमारी दृष्टि सु-विशुद्ध रूप से ज्ञानोपासना की रही है। कौन आचार्य हैं? किस परम्परा के हैं? उन्होंने क्या लिखा है? वह आज के युग में कहाँ तक अनुकूल है या प्रतिकूल?

और उस युग में भी वह कहाँ तक औचित्य की सीमा में था ? हमारे अपने साम्प्रदायिक पक्षबद्ध मनोवृत्ति के व्यक्ति क्या कहेंगे और क्या नहीं ? उनसे प्रशंसा प्राप्त होगी अथवा निन्दा ? यह सब सोचना साहित्यकार का काम नहीं है । साहित्यकार का काम है, शुद्ध भाव से ज्ञान-साधना करना । और वह हमने 'आवदुर्बुद्धिबलोदय' की है । वस, अपना कार्य पूरा हुआ ।

निशीथ-चूर्णि को हम जैन-साहित्य का, जैन-साहित्य का ही नहीं, भारतीय साहित्य का एक महान् ग्रन्थ मानते हैं । जैन-आचार का यह खेसर ग्रन्थ है । आचार-शास्त्र की गुत्थियों का रहस्योद्घाटन, जैसा इस ग्रन्थ में हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । भारतीय इतिहास तथा लोक-संस्कृति की प्रकट एवं अप्रकट विपुल सामग्री का तो एक प्रकार से यह विश्व-कोष ही है । इसके अध्ययन के बिना, निशीथ-सूत्र एवं अन्य छेद-सूत्र कथमपि बुद्धिमत् नहीं हो सकते; यह हमारा अधिकार की भाषा में किया जाने वाला मुनिश्चित दावा है, जो किसी के भी मिथ्या प्रचार से झुलझाया नहीं जा सकता । निशीथ-चूर्णि क्या है, और उसमें ऐसा क्या कुछ है, जो वह पीढ़ी एवं पाश्चात्य, तथैव जैन एवं जेनेतर सभी विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है ? इसके लिए पं० दत्तमुखर्भाई मालवणिया (प्राध्यापक—जैन-दर्शन, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) की विस्तृत प्रस्तावना 'निशीथः एक अध्ययन' का अवलोकन किया जा सकता है । एग्जिट जो ने गम्भीर ग्रन्थ तत्पर्याय अध्ययन के साथ जो तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण किया है, वह विद्वज्जगत् को चकित कर देने वाला है । हम यहाँ इस सम्बन्ध में स्वयं और कुछ लिखकर पुनरुक्ति नहीं करना चाहते ।

यह ठीक है कि चूर्णि एक मध्यकालीन प्राचीन कृति है, एक विशेष संप्रदाय एवं परम्परा से सम्बन्धित है, वह उस साध्व्याचार की अपक्रान्ति के एक विलक्षण मोड़ पर गन्द्यद्ध हुई है, उस पर देश एवं काल की बदली हुई परिस्थितियों का भी अनेकविध प्रभाव पड़ा है । अस्तु, चूर्णि की कुछ बातें ऐसी हैं, जो अटपटी सी हैं, जैन धर्म की मूल परम्परा से काफी दूर जा पड़ी हैं । परन्तु इस सर्वसे क्या ! पाठक को अपनी बुद्धि का उपयोग करना है, हम के नीरक्षीर-विवेक से काम लेना है । किसी भी छद्मस्थ आचार्य की सभी बातें पूर्ण रूपेण ग्राह्य हों, एवं सर्वप्रकारेण सभी को मान्य हों; यह तो न कभी हुआ है, और न कभी होगा । "पञ्चासमिक्खए धम्मं" का उत्तराध्ययनसूत्रीय सन्देश आखिर किस काम आयेगा ! इस सम्बन्ध में हम निशीथचूर्णि के प्रथम भाग की प्रस्तावना (सन् १६४७) में पहले से ही पाठकों को सतर्क रहने के लिए, वह भी काफी स्पष्टता के साथ, लिख चुके हैं । अस्तु हम समझते हैं, फिर भी जो लोग चूर्णि की तदयुगीन कुछ अटपटी बातों को ही अग्रस्थान देकर अनर्गल अपप्रचार कर रहे हैं, वे अपने कलुषित अहं का ही कुप्रदर्शन कर रहे हैं । यदि कोई गुलाब के मोहक एवं सुवासित पुष्प में केवल कंठे ही देखता है; यदि कोई निर्मल चन्द्र में मात्र कलंक के ही दर्शन करता है, तो यह उसके 'दोषदृष्टिपरं मनः' का ही दोष कहा जायगा, और क्या ?

हाँ, तो गुण-ग्रहण के भाव से निशीथ-चूर्णि का अध्ययन करना चाहिए । आचार्य जिनदाम ने साधक के मानसिक जगत् की सूक्ष्मताओं का, उतार-चढ़ावों का बड़ी कुशलता के साथ चित्रण किया है । आचार की कठोर, कठोरतर एवं कठोरतम चर्चा को अग्रस्थान देते हुए उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में दुर्बल साधक को, कथंचित् अपवाद-प्ररूपणा के द्वारा, सर्वथा

अपभ्रष्ट होने से संरक्षण भी दिया है। आखिर 'जीवन्तरो भद्रशतानि पश्येत्' के यथार्थवादी मिद्धान्त को कोई कैसे सहसा अपदस्थ कर सकता है ? साधना और जीवन का प्रामाणिक विश्लेषण करने की दिशा में, चूर्णि, एक बहुस्वपूर्ण उपादेय सामग्री प्रस्तुत करती है। कुछेक प्रतिकूल बातों को छोड़कर, शेष सप्रस्त ग्रन्थ सूत्रार्थ की गंभीर एवं उच्चतर विपुल सामग्री से भरा पड़ा है। आखिर, २० × ३० अउपेजी १६७३ पृष्ठों के महाग्रन्थ की असूत्य चिन्तन सामग्री में, कुछेक प्रतिकूल बातों की कल्पित भीति से वंचित रहना, विचारभूदता नहीं तो और क्या है ? 'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्, विचार-मूढः प्रतिभासि मे त्वम्।' अस्तु, आशा है आज का चिन्तनशील तटस्थ साधक, अपनी तत्त्वसंग्राहिणी प्रतिभा के उज्ज्वल प्रकाश में, सारा-सार का ठीक सूत्यांकन करके, स्वपर की संयम-साधना को निरन्तर उज्ज्वल से उज्ज्वलतर बनायेगा।

मुनि श्री अखिलेशचन्द्र जी का, प्रस्तुत सम्पादन-कार्य में, प्रारंभ से ही उत्साहवर्द्धक सहयोग रहा है। उनकी व्यवस्था-बुद्धि के द्वारा, समय-समय पर काफी सुविधाएँ उपलब्ध हुई हैं। अस्तु, उनकी मधुर स्मृति का समुल्लेख, यहाँ हमारे लिए आनन्दे की वस्तु है।

महावीर-दीक्षा-कल्याणक,
मार्गशिर कृ० दशमी, वीरानन्द २४८६

—उपाध्याय अमरमुनि
—मुनि कन्हैयालाल

विषयानुक्रम

षोडश उद्देशक

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१	पन्द्रहवें तथा सोलहवें उद्देशक का सम्बन्ध	५०६५	१
	सागारिक शय्या का निषेध		१-२६
	सागारिक शय्या की व्याख्या	५०६६	१
	सागारिक शय्या के भेद	५०६७	१
	सागारिक पद के निक्षेप	५०६८	१
	द्रव्य-निक्षेप	५०६९-५११२	२-४
	द्रव्य सागारिक के रूप, आभरण-विधि, वस्त्र, प्रलङ्कार, भोजन, गन्ध, आतोद्य, नाट्य, नाटक, गीत आदि प्रकार; उनका स्वरूप तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५०६९-५१०२	२
	द्रव्यसागारिक वाले उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोषों का वर्णन	५१०३-५११२	३-४
	भाव निक्षेप	५११३-५२२७	५-२६
	भाव सागारिक का स्वरूप	५११३-५११४	५
	जनसाधारण, कौटुम्बिक और दण्डिक के स्वामित्व वाले भाव सागारिक अर्थात् दिव्य, मनुष्य और तिर्यञ्च सम्बन्धी रूप = प्रतिमा तथा रूप-सहगत का स्वरूप और उसके प्रकार	५११५	५
	दिव्य प्रतिमा का स्वरूप	५११६-५१६५	५-१६
	दिव्य प्रतिमा के प्रकार	५११७-५११८	५-६
	दिव्य प्रतिमा वाले उपाश्रय में निवास करने से स्थान और प्रतिसेवना-निमित्तक लगने वाले प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी प्रश्नोत्तर	५११९-५१३६	६-१०
	दिव्य प्रतिमा-युक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले आज्ञाभङ्ग आदि दोष और उनकी व्याख्या। आज्ञाभङ्ग पर गुल्तर दण्ड देने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का दृष्टान्त	५१३७-५१४३	१८-११

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	देवतादि के सान्निध्यवाली दिव्य प्रतिमाओं से युक्त उपाश्रय में रहने से देवता की ओर से की जाने वाली परीक्षा, प्रत्यनीकता तथा भोगेच्छा के निमित्त से होने वाली चेष्टाएँ और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५१४४-५१५३	११-१३
	देवता के सान्निध्यवाली प्रतिमाओं के प्रकार	५१५४	१३
	प्रतिमाओं के सान्निध्यकारी देवता के सुखविजय, सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी भ्रकरनैगम, रत्नदेवता आदि के उदाहरण	५१५५-५१५८	१३-१४
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्व वाली दिव्य स्त्री-प्रतिमाओं, प्रतिमा हो नहीं उनकी स्त्रियों, और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्तों की युक्ता, लघुता और उसके कारण	५१५९-५१६५	१५-१६
	मनुष्य-प्रतिमा का स्वरूप	५१६६-५१७६	१६-१६
	जनसाधारण आदि के स्वामित्ववाली मनुष्य-प्रतिमाओं के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमाओं वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५१६६-५१७६	१६-१८
	मनुष्य-स्त्री के सुखविजय-सुखमोच्य आदि चार प्रकार, उनके उदाहरण, दोष, प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी युक्ता-लघुता आदि	५१७७-५१७९	१९
	तिर्यञ्च प्रतिमा का स्वरूप	५१८०-५१८२	१९-२२
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्ववाली तिर्यञ्च प्रतिमाओं के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमा वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष एवं उनके प्रायश्चित्त	५१८०-५१८६	१९-२१
	तिर्यञ्च स्त्री के सुखविजय-सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी उदाहरण	५१८०-५१८२	२१-२२
	निर्ग्रन्थियों के लिए दिव्यादि स्त्री-प्रतिमा के स्थान में पुरुष-प्रतिमा की सूचना और कुक्कुरसेवी स्त्री का दृष्टान्त	५१८३	२२
	सागारिक शय्या-सम्बन्धी अपवाद और तद्विषयक जिलिमिलिका, निशिजाग्रण आदि यतना	५१८४-५१८६	२२-२३
	सागारिक शय्या का सामान्य वर्णन करने के अनन्तर श्रमण-श्रमणी के विभाग से विशेष वर्णन की प्रणिज्ञा	५१८७	२३
	श्रमणों को स्त्री-उपाश्रय में तथा श्रमणियों को पुरुष-उपाश्रय में रहने का निषेध एवं सजातीय उपाश्रय में रहने का विधान	५१८८	२३
	सूत्र-रचना-विषयक शङ्का और उसका समाधान	५१८९-५२०२	२३-२४
	निर्ग्रन्थ-विषयक सागारिक सूत्र की विस्तृत व्याख्या	५२०३-५२२२	२४-२८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सविकार पुरुष तथा नपुंसक का स्वरूपा, उसके मध्यस्थ आदि चार प्रकार; तत्सम्बन्धित उपाश्रय में रहने से संयम-विराधनादि दोष और उनका प्रायश्चित्त । यदि कारणद्वय तथाकथित सागारिक उपाश्रय में रहा हो पड़े तो तत्सम्बन्धी यतना और अपवाद निगन्धियों के लिए भी सागारिक शब्दा सूत्र-सम्बन्धी निर्ग्रन्थपरक व्याख्या को ही पक्षिचित् परिवर्तन के साथ जान लेने की सूचना	५२०३-५२२२ ५२२३-५२२७	२४-२८ २८-२९
२	सोदक (जलसंयुक्त शब्दा का निषेध सोदक शब्दा की व्याख्या जल के शीत, उष्ण और प्रासुक-अप्रासुक विषयक चार भङ्ग और तत्सम्बन्धित उपाश्रय में रहने से अग्नीतार्थ को प्रायश्चित्त द्रव्य, क्षेत्र आदि के भेद से प्रासुक की व्याख्या उत्सर्ग तथा अपवाद-सम्बन्धी विस्तृत चर्चा अग्नीतार्थ-विषयक शङ्का समाधान, उत्सर्ग-सूत्र, अपवादसूत्र आदि छह प्रकार के सूत्रों तथा देश-सूत्र आदि चार प्रकार के सूत्रों का सोदाहरण स्वरूप भौतसंगिक तथा आपवादिक सूत्रों के विषय और उनके स्वस्थान प्रश्नोत्तरी के द्वारा उत्सर्ग और अपवाद का रहस्योद्घाटन अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना का स्वरूप त्रिविध यतना-विषयक अग्नीतार्थ की अज्ञानता अग्नीतार्थ-विषयक अनुज्ञापना-अयतना का स्वरूप अग्नीतार्थ-विषयक स्वपक्ष-अयतना का स्वरूप अग्नीतार्थ-विषयक परपक्ष-अयतना का स्वरूप गीतार्थ-विषयक अनुज्ञापना-यतना का स्वरूप गीतार्थ-विषयक स्वपक्ष-यतना का स्वरूप गीतार्थ-विषयक परपक्ष-यतना का स्वरूप [जागरिका पर वत्स-नरेश की भगिनी जयन्ती श्राविका का उदाहरण, गाथा ५३०६] दकतीर की विस्तृत व्याख्या दकतीर पर स्थानार्थ, वृषकवास और आतापना करने से प्रायश्चित्त दकतीर की सीमा के सम्बन्ध में प्रचलित सात आदेशों (मतों) का उल्लेख और उनमें से प्रामाणिक आदेशों का निर्णय बसाशय के किनारे लड़े होने, बँटने, सोने और स्वाध्याय आदि करने से लगने वाले अधिकरण आदि दोष एवं उनका स्वरूप	५२२८ ५२२९ ५२३० ५२३१-५२४० ५२३१-५२४३ ५२४४-५२४५ ५२४६-५२४० ५२४१-५३०८ ५२४१ ५२४२-५२४६ ५२४०-५२७१ ५२७२-५२८२ ५२८३-५२८७ ५२८८-५२९६ ५२९७-५३०८ ५३०९-५३११ ५३०९-५३१० ५३११-५३१२ ५३१३-५३२४	२९-५७ २९ २९ ३० ३०-३५ ३०-३४ ३४ ३४-३५ ३५-४६ ३५ ३५-३७ ३७-३९ ३९-४१ ४१-४२ ४२-४४ ४४-४६ ४६-४७ ४६ ४६-४७ ४७-४८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जलाशय के निकट स्थान, निषीदन आदि दस स्थानों के सम्बन्ध में सामान्य प्रायश्चित्त	५३२५	५०
	निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला का स्वरूप	५३२६	५१
	दकतीर के संपातिम तथा असंपातिम नामक दो भेद, उक्त दकतीर-द्वय पर स्थान एवं निषीदन आदि दस स्थानों को सेवन करने वाले आचार्य, उपाध्याय आदि पाँच निर्गन्धों, तथैव प्रवर्तिनी, अभियेका आदि पाँच निर्गन्धियों के लिए प्रायश्चित्त-विषयक विभिन्न आदेश	५३२७-५३३७	५१-५३
	ग्लूक-स्वरूप और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५३३८-५३४१	५४
	दकतीर पर आतापना लेने से लगने वाले दोष	५३४२-५३४५	५५
३	दकतीर, ग्लूक तथा आतापना-विषयक अपवाद एवं यतना	५३४६-५३४९	५६-५७
	साग्नि (अग्निःसहित) शय्या का निषेध		५७-६५
	साग्नि शय्या के भेद-प्रभेद	५३५२-५३५३	५७
	उत्सर्ग और अपवाद-विषयक विस्तृत चर्चा	५३५४-५३७३	५७-५६
	अनुज्ञापना आदि विविध यतना	५३७४	५६
	ज्योतिष्युक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोषों का अप्रतिलेखनादि पतनान्त पदों द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद एवं तत्सम्बन्धी यतना	५३७५-५४०३	५६-६४
	[प्रसङ्गवश पणितशाला आदि छह शालाओं का निरूपण, गाथा ५३६०-६१]		६१
	दोषक के प्रकार, तदप्युक्त उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोषों का प्रतिमादहनादि पदों द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद और यतना	५४०४-५४०६	६४-६५
४-७	सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित इक्षु के भोजन एवं विदशन का निषेध	५४१०	६५
८-११	इक्षु के सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित विभिन्न विभागों के भोजन एवं विदशन का निषेध		६५
	इक्षु के अन्तरिक्ष आदि विभिन्न विभागों की व्याख्या	५४११-५४१२	६५-६६
१२-१३	अरण्य आदि में जाते-आते लोगों से अशनादि लेने का निषेध		६६
	वन-यात्रा के हेतु जाते-आते यात्रियों से अशनादि लेने से दोष तथा अशिवादि अपवाद	५४१३-५४१६	६६-६७
१४	वसुरातिक (मंथमी) को अवसुरातिक (अमंथमी) कहने का निषेध		६७-७२

सूत्रसंख्या	विषये	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मूलसूत्रगत वसुराति या वुसिराति शब्द की विभिन्न नियुक्तियाँ, वसुराति के प्रति असद्व्युत्पादभाव के कारण, सविन्नों की असविन्नों द्वारा की जाने वाली अवहेलना और उसका प्रतिवाद, तथा अस्तुत निषेध का अपवाद	५४२०-५४४१	६७-७२
१५	अवसुरातिक को वसुरातिक कहने का निषेध	५४४२-५४४६	७२-७३
१६	वसुरातिक गण से अवसुरातिक गण में संक्रमण का निषेध		७३-१००
	काल की दृष्टि से उपसम्पदा के तीन प्रकार	५४५१-५४५३	७३
	गच्छवास के युग और उनकी व्याख्या	५४५४-५४५७	७४
	ज्ञान-दर्शनादि की अभिवृद्धि के लिए गणान्तरूपसम्पदा की स्वीकृति	५४५८	७४
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा	५४५९-५४६२	७५-८७
	सूत्र, ग्रन्थ आदि के ज्ञानार्थ की जाने वाली उपसम्पदा और उसके भौत आदि घाट अतिचार, उनका स्वरूप एवं तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५४६३-५४७२	७५-७७
	निष्कारण प्रतिषेधक आदि के निकट उपसम्पदा स्वीकार करने की विधि	५४७३-५४७४	७७
	अप्रतिषेधक आदि से सम्बन्धित अपवाद	५४७५-५४८०	७७-७८
	व्यक्त तथा अव्यक्त शिष्यों का स्वरूप, उन्हें उपसम्पदा लेने के लिए साथ में ग्रन्थ साधु को भेजने के सम्बन्ध में प्रतीच्छनीय आचार्य एवं मूलाचार्य-सम्बन्धी आभाव्य एवं अनाभाव्य का विभाग	५४८१-५४८६	७८-८०
	आचार्य-उपाध्याय आदि की आज्ञा के विना उपसम्पदा स्वीकार करने वाले शिष्य एवं प्रतीच्छक आचार्य को प्रायश्चित्त और आज्ञा न देने के कारण	५४८७-५४९१	८०-८१
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा की विधि	५४९२-५४९२	८१-८७
	दर्शनार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४९३-५४९८	८७-८८
	चारित्र्यार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४९९-५५००	८८-८९
	निर्ग्रन्थी-विषयक ज्ञानादि उपसम्पदा	५५०१-५५०२	८९
	संयोगार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५५०३-५५०७	८९-९६
	आचार्य-उपाध्यायार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५५०८-५५१३	९६-१००
१७-२५	कलह के कारण संघ से निष्क्रान्त भिक्षुओं के साथ अशानादि, वस्त्रादि, वसति एवं स्वाध्याय के दाना-दान का निषेध		१००-१०५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अपक्रमण के प्रकार, बहुगतादि सात निह्वनों का परिचय, निह्वनों के साथ अन्ननादि-दानादान सम्बन्धी प्रायश्चित्त और अपवाद	५५६४-५६३३	१०१-१०५
२६	आहारादि की दृष्टि से मुलभ जनपदों के रहते अनेक दिन-गमनीय अध्वा के विहार का निषेध		१०५-१२४
	मूलसूत्रगत 'विह' शब्द का अर्थ और अध्वा के प्रकार	५६३४-५६३५	१०५
	दिन अथवा रात्रि में गमन और रात्रि-विषयक मान्यता के सम्बन्ध में दो आदेश	५६३६	१०६
	रात्रि में मार्गरूप अध्वगमन से होने वाले दोषों का वर्णन और तत्सम्बन्धी अपवाद	५६३७-५६५४	१०६-१०७
	पन्च के छिन्नादि दो प्रकार और तद्गमन की विधि	५६५५-५६५६	१०७
	रात्रि में पंथरूप अध्वगमन से लगने वाले आत्मविराधना आदि दोषों का स्वरूप तथा अध्वोपयोगी उपकरण न रखने से होने वाले दोष	५६५७-५६५८	१०८-१०९
	अध्वगमन-सम्बन्धी अपवाद के कारण, अध्वोपयोगी उपकरणों का संग्रह तथा योग्य सार्यवाह की शोध	५६५९-५६६७	१०९-११०
	भण्डो, वह्निक आदि पाँच प्रकार के साथ और उनके साथ जाने की विधि	५६६८-५६६९	११०
	साथ और सार्यवाह आदि कैसे हैं ? साथ की लाद्य-सामग्री और पडाव डालने आदि की क्या व्यवस्था है ? इत्यादि बातों के सम्बन्ध में उचित जानकारी प्राप्त करने की विधि	५६७०-५६७१	११०-११२
	आठ प्रकार के सार्यवाह और आठ ही प्रकार के अति आधिक-साथ-व्यवस्थापक	५६७१	११२
	अध्वगमन-विषयक ५१२० भङ्ग	५६७२-५६७६	११२-११३
	सार्यवाह से सहयात्रा की आज्ञा प्राप्त करने की विधि, और भिक्षा आदि से सम्बन्धित यतना	५६७७-५६८२	११३-११५
	अध्वगमनोपयोगी अध्व-कल्प का स्वरूप	५६८३-५६८८	११५-११६
	अध्वकल्प और आधाकार्मिक की सदीपता निर्दोषता के सम्बन्ध में शंका-समाधानादि	५६८९-५६९४	११६-११७
	अध्वगमन-विषयक श्वापद, स्तेन, अश्वि, दुग्धिश आदि व्याघात और तत्सम्बन्धी यतनाओं की सविस्तर विवेचना	५६९५-५७२६	११७-१२४
२७	मुलभ जनपदों के रहते विरूप, दस्यु और अनाय आदि प्रदेशों में विहार करने का निषेध		१२४-१३१
	विरूप, प्रत्यंत, अनाय आदि की व्याख्या	५७२७-५७२८	१२४
	आय-आयसंक्रम आदि संक्रमण-सम्बन्धी चतुर्भङ्गो	५७२९-५७३१	१२५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	लिङ्ग-सम्बन्धी आर्य-भनार्य व्यवहार और तद्विषयक चतुर्भङ्गी आर्य-क्षेत्र की सीमा	५७३२	१२५
	आर्य क्षेत्र में विहार करने के हेतु	५७३३	१२५
	भनार्यदेश-गमनविषयक चतुर्गुह प्रायश्चित्त के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान	५७३४-५७३८	१२५-१२६
	आर्य-क्षेत्र से बाहर विहार करने से लगने वाले दोष और इस सम्बन्ध में स्कन्दकाचार्य का दृष्टान्त	५७३६	१२६
	ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि के लिए आर्य-क्षेत्र की सीमा (भा० ५७३३) से बाहर विहार करने की अनुज्ञा और इस सम्बन्ध में सम्प्रति राजा के द्वारा प्रयत्न देशों में किये गये घम-प्रचार का उल्लेख	५७४०-५७४३	१२७-१२८
२८-३३	जुगुप्सित कुलों में अशनादि, वस्त्रादि, वसति तथा स्वाध्याय का निषेध	५७४४-५७५८	१२८-१३१
	जुगुप्सा के प्रकार, जुगुप्सित कुलों में अशन-वस्त्रादिव्रह्मण एवं स्वाध्याय से होने वाले दोष, अपवाद और तत्सम्बन्धी यतना		१३१-१३३
३४-३६	पृथ्वी, संस्तारक और आकाश (ऊँचाई) पर अशनादि रखने का निषेध	५७५९-५७६४	१३२-१३३
	पृथ्वी, संस्तारक आदि पर अशनादि-निषेध से होने वाले दोष, अपवाद और यतना		१३३-१३४
३७-३८	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थों के साथ एक पात्र तथा एक पक्ति में भोजन करने का निषेध	५७६५-५७७०	१३३-१३४
	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थों के भेदानुभेद, उनके साथ भोजन करने से दोष, प्रायश्चित्त और अपवाद		१३४-१३६
३९	आचार्य तथा उपाध्याय के शय्या-संस्तारक को पैर से संघट्टित कर देने पर विना क्षमा माँगे चले जाने का निषेध	५७७१-५७८०	१३४-१३६
४०	प्रमाणातिरिक्त और गणनातिरिक्त उपधि रखने का निषेध	५७८१-५७८४	१३७
	उपधि के भेद-प्रभेद		१३८-१६०
	उपधि के प्रमाणादि की सूचक द्वार-गाथा	५७८५	१३८
	१. प्रमाण-द्वार	५७८६	१३८
	जिन-कल्पिक और स्थविर-कल्पिक को पात्र-सम्बन्धित उपधि की संख्या	५७८७-५८१२	१३८-१४२
		५७८७	१३८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जिन-कल्पिक को शरीर-सम्बन्धित उपधि की संख्या	५७८८	१३८
	जिन-कल्पिक को जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट उपधि की संख्या और उसका प्रमाण (कल्प, पात्रक-बन्ध और रजस्त्राण का नाप)	५७८९-५७९३	१३८-१३९
	गच्छवासियों के कल्प का प्रमाण और उसका कारण	५७९४-५७९५	१३९
	शीघ्र, शिशिर तथा वर्षा ऋतु-आश्रित पटलकों की संख्या और उसका प्रमाण	५७९६-५७९८	१४०
	रजोहरण का स्वरूप और उसका प्रमाण	५८००-५८०२	१४०
	संस्तारक, उत्तरपट्ट, चोलपट्ट, मुखवस्त्रिका, गोच्छग, पात्र-प्रत्युपेक्षणिका और पात्रस्थापन का प्रमाण	५८०३-५८०६	१४०-१४१
	हीनाधिक वस्त्र को लेकर एक-दूसरे की निन्दा न करने का आदेश	५८०७	१४१
	कल्प के गुण और उसका उत्सर्ग एवं अपवाद की दृष्टि से प्रमाण	५८०८-५८१२	१४१-१४२
२.	हीनातिरिक्त द्वार	५८१३	१४२
	कम या अधिक उपधि रखने से होने वाले दोष		
३.	परिकर्म-द्वार	५८१४-५८१५	१४२
	वस्त्र-परिकर्म-विषयक सकारण-अकारण पद के साथ विधि-अविधि पद की चतुर्भङ्गी, तथा विधि-परिकर्म और अविधि-परिकर्म का स्वरूप		
४.	विभूषा-द्वार	५८१६-५८१८	१४३
	विभूषा-निमित्तक उपधि-प्रशालन करने वाले को प्रायश्चित्त और उसके कारण		
५.	सूच्छा-द्वार	५८२०-५८२१	१४४
	सूच्छा से उपधि रखने वाले को दोष और प्रायश्चित्त		
	पात्र विषयक विधि	५८२२-५८२५	१४४-१४७
	पात्र के प्रमाण आदि की सूचक द्वार-गाथा	५८२२-५८२३	१४४
१.	प्रमाणातिरेक-हीनदोष द्वार	५८२४-५८२६	१४४-१४७
	शास्त्रोक्त दो पात्र से अधिक तथा विहित प्रमाण से बड़े पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२४-५८२७	१४४-१४५
	शास्त्रोक्त संख्या से कम तथा विहित प्रमाण से छोटे पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२८-५८३६	१४५-१४७
	पात्र का प्रमाण (नाप)	५८३७-५८३९	१४७
२.	अपवाद-द्वार	५८४०-५८४५	१४५-१४८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथासू	पृष्ठासू
	संख्या से अधिक या कम, और प्रमाण से बड़े या छोटे पात्र रखने का भ्रमवाद		
३.	लक्षणाऽलक्षण द्वार पात्र के मुलक्षण तथा भ्रमलक्षण, तद्विषयक गुण-दोष एवं प्रायश्चित्त	५८४६-५८५१	१४८-१४९
४.	त्रिविधोपधि द्वार पात्र के तुम्हा आदि तथा यथाकृत आदि तीन प्रकार और उनके लेने का क्रम	५८५२	१४९
५.	विपर्यस्त द्वार पात्र-ग्रहण के क्रम को भंग करने से होने वाले दोष एवं प्रायश्चित्त	५८५३	१४९
६.	कः द्वार पात्र की याचना करने वाले अधिकारी निर्ग्रन्थ का स्वरूप	५८५४	१५०
७.	पौरुषी द्वार पात्र की याचना का समय	५८५५	१५०
८.	काल-द्वार कितने दिनों तक पात्र की याचना करनी चाहिए ?	५८५६-५८५७	१५०
९.	आकर द्वार पात्र-प्राप्ति के योग्य स्थान और तत्सम्बन्धी विधि	५८५८-५८६१	१५०-१५१
१०.	चाउल द्वार तन्दुल-घावन, तथा उष्णोदक आदि से भावित कल्पनीय पात्र, और उसके ग्रहण की विधि	५८६२-५८६७	१५१-१५२
११.	जघन्य यतना द्वार पात्र-ग्रहण विषयक जघन्य यतना	५८६८-५८७४	१५२-१५४
१२-१३.	चोदक तथा असति अशिव द्वार जघन्य यतना-विषयक शंका-समाधान	५८७५-५८७७	१५४-१५५
१४.	प्रमाण-उपयोग-छेदन द्वार प्रमाण-युक्त पात्र के न मिलने पर उपलब्ध पात्र के छेदन का विधान	५८७८-५८८३	१५५-१५६
१५.	मुख प्रमाण द्वार पात्र-मुख के तीन भेद और उनका प्रमाण	५८८४-५८८५	१५६-१५७
	मात्रक-विषयक विधि	५८८६-५९०१	१५७-१६०

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मात्रक के ग्रहण का विधान	४८८६-४८८७	१४७
	मात्रक न लेने से होने वाले दोषों की द्वार-गाथा	४८८८	१४७
	१. अप्रग्रहण धारत्रक द्वार	४८८९-४८९०	१४८
	मात्रक न रखने से लगने वाले दोष और धारत्रक का दृष्टान्त		
	२. प्रमाण-द्वार	४८९१-४८९३	१४८-१४९
	मात्रक का प्रमाण और इस सम्बन्ध में तीन आदेश		
	३-४ हीनद्वार-अधिकद्वार	४८९४-४८९६	१४९
	शास्त्र-विहित प्रमाण से छोटा या बड़ा मात्रक रखने से दोष		
	५-६ शोधि, अपवाद, परिभोग, ग्रहण तथा		
	द्वितीय पद द्वार	४८९७-४८९९	१४९-१५०
	धाचार्य, बाल, वृद्ध, तपस्वी एवं रोगी आदि के लिए मात्रक		
	का ग्रहण, तथा निष्कारण स्वयं मात्रक का उपयोग करने पर		
	आयचित्त आदि :		
	मात्रक के लेप की विधि	४९००	१५०
	पाणि-प्रतिष्ठी आदि जिन कल्पिक, परिहार-विशुद्धि,		
	आहानन्दिक, स्थविर कल्पिक तथा निषन्धियों का उपधि-विभाग	४९०१	१५१
४१-४५	सचित्त, सस्निग्ध तथा जीव-प्रतिष्ठित आदि पृथ्वी पर		
	उच्चार-प्रसवण करने का निषेध		१५१-१५२
४६-४८	जीव-प्रतिष्ठित शिला आदि पर उच्चार-प्रसवण करने		
	का निषेध		१५२
४९-५१	धूणा आदि, कुण्ड आदि, प्राकार आदि पर उच्चार-		
	प्रसवण करने का निषेध		१५२
	सूत्रोक्त-विशेषण-विशिष्ट पृथ्वी आदि पर उच्चार-प्रसवण		
	करने के दोष और अपवाद	४९०२-४९०३	१५२-१५३
	छोटे-बड़े आकारों के उत्प्रेल के साथ ब्रूणिकार का अपना परिक्रम		१५३

सप्तदश उद्देशक

	षोडश और सप्तदश उद्देशक का सम्बन्ध	४९०४	१५४
१-२	कौतूहल से त्रस प्राणियों को बाँधने तथा छोड़ने का निषेध	४९०५-४९०६	१५५-१५६
३-५	कौतूहल से तृणमाला, मुञ्जमाला आदि मालाओं के निर्माण, एवं धारण आदि का निषेध	४९१०-४९११	१५६
६-८	कौतूहल से लोह आदि घातुओं के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	४९१२-४९१३	१५६-१५७

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
६-११	कौतूहल से हार, अर्धहार आदि के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	५६१४-५६१५	१६७
१२-१४	कौतूहल से अजिन, कम्बल आदि के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	५६१६-५६१७	१६८
१५-६७	निग्रन्थी को निग्रन्थ के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्धर्तन एवं प्रक्षालन आदि करने का निषेध	५६१८-५६३०	१६९-१७६
६८-१२०	निग्रन्थ को निग्रन्थी के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्धर्तन तथा प्रक्षालन आदि कराने का निषेध	५६३१	१७६-१८७
१२१	सदृश निग्रन्थ को उपाश्रय में विद्यमान स्थान न देने वाले निग्रन्थ को प्रायश्चित्त		१८७-१९०
	सदृशता की व्याख्या	५६३२	१८७
	दशविध स्थित कल्प	५६३३	१८७
	स्थापना-कल्प के दो प्रकार और उत्तरयुग-कल्प	५६३४-५६३५	१८८
	सदृश का आदेशान्तर, स्थान न देने पर प्रायश्चित्त, तथा निग्रन्थ के आगमन के कारण	५६३६-५६३८	१८८
	वसति से बाहर रहने में दोष तथा वसति-दान के अपवाद, यतना आदि	५६३९-५६४७	१८९-१९०
१२२	सदृश निग्रन्थी को उपाश्रय में विद्यमान स्थान न देने वाली निग्रन्थी को प्रायश्चित्त	५६४८	१९१
१२३	माला-हृत अशनादि लेने का निषेध		१९१
	मालाहृत के छूर्च, अघः आदि भेद-प्रभेद; दोष, प्रायश्चित्त तथा अपवाद	५६४९-५६५३	१९१
१२४	कुशूल आदि में रखे हुए, फलतः कठिनता से ऊँचे-नीचे होकर दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५४	१९१-१९२
१२५	मृत्तिका से लिप्त, फलतः भेदन करके दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५५-५६५७	१९२
१२६-१२८	पृथ्वी, जल, अग्नि और वनस्पति पर रखे हुए अशनादि का निषेध		१९२-१९३
	पृथ्वी आदि और निक्षिप्त के प्रकार, दोष, शंका-समाधान, अपवाद और तद्विषयक यतना	५६५८-५६६४	१९३-१९४

सूत्रसंख्या	विषय	भाषाङ्क	पृष्ठाङ्क
१३०-१३१	सूर्य आदि से शीतल करके दिये जाने वाले अत्यन्त ऊष्ण तथा उष्णोष्ण (गरमागरम) अशनादि का निषेध	५६६५-५६६८	१६४
१३२	पूर्ण रूप से शस्त्र-परिणत होकर अचित्त न हुए, इस प्रकार के उत्स्वेदिम आदि जल का निषेध उत्स्वेदिम आदि की व्याख्या, जल की अचित्ताता के परिज्ञान के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान, अपवाद आदि	५६६६-५६७६	१६५-१६६
१३३	अपने आचार्य-योग्य लक्षणों के कथन का निषेध आचार्य के लक्षण, लक्षण-कथन से होने वाले दोष आदि	५६७७-५६८६	१६७-१६८
१३४	गायन-वादन-नृत्य आदि करने का निषेध	५६८७-५६९३	१६९-२००
१३५-१५०	भेरी आदि, वीणा आदि, ताल आदि, वज्र आदि के शब्द सुनने की अभिलाषा का निषेध	५६९४-५६९६	२००-२०३
१५१	लौकिक तथा पारलौकिक आदि विविध रूपों में आसक्ति रखने का निषेध		२०३

अष्टादश उद्देशक

	सप्तदश और अष्टादश उद्देशक का सम्बन्ध	५६९७	२०४
१	विना प्रयोजन नाव पर चढ़ने का निषेध	५६९८-६०००	२०४
२-५	नाव के खरीदने आदि का निषेध	६००१-६००६	२०६-२०७
६-७	स्थल से जल में और जल से स्थल में नाव के खींचने का निषेध		२०७
८-९	नाव में से जल को उलीचने और कीचड़ में से फँसी नाव को बाहर निकालने का निषेध	६०१०	२०८
१०	नाव में पानी भरता देख छिद्र को हस्तादि से बन्द करने का निषेध		२०८
११	दूरस्थ नाव को अभीष्ट स्थान पर मँगाने का निषेध		२०८
१२-१३	उर्ध्वगामिनी आदि तथा योजनगामिनी आदि नाव में बैठने का निषेध	६०११	२०८
१४-१६	नाव को खींचने, खेने, निकालने और जलरिक्त करने आदि का निषेध उत्तिङ्ग आदि की व्याख्या तथा अपवाद, आचार्य आदि एवं निर्ग्रन्थी की पूर्वापर रूप से नौका द्वारा पार उतारने का क्रम	६०१२-६०२३	२०८-२११

सूत्रसंख्या	विषय	गाथासू.	पृष्ठासू.
२०-२३	नौका-स्थित लोगों से अश्वानादि ग्रहण करने का निषेध	६०२४-६०२६	२१२-२१३
२४-७४	वस्त्र खरीदने आदि का निषेध (चतुर्दश उद्देशक के पात्र-प्रकरण के समान)	६०२७	२१३-२१८

एकोनविंशतितम उद्देशक

	अष्टादश और एकोनविंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६०२८-६०२९	२१९
१-७	विकट के खरीदने आदि का निषेध और ग्लानापवाद	६०३०-६०३३	२१९-२२४
८	चार संध्याओं में स्वाध्याय का निषेध	६०३४-६०३८	२२४-२२५
९-१०	संध्या आदि में कालिक श्रुत एवं दृष्टिवाद के क्रम से ३ तथा ७ से अधिक प्रश्न पूछने का निषेध	६०३९-६०६३	२२५-२२६
११-१२	इन्द्र महोत्सवादि चार महामहोत्सवों और ग्रीष्म-कालीन आदि महाप्रतिपदाओं में स्वाध्याय का निषेध	६०६४-६०६८	२२६-२२७
१३	पौषी स्वाध्याय के अतिक्रमण का निषेध		२२७
१४	स्वाध्याय-काल में स्वाध्याय न करने पर प्रायश्चित्त	६०७०-६०७३	२२७-२२८
१५	अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने का निषेध		२२८-२४६
	अस्वाध्याय के भेद-प्रभेद	६०७४	२२८
	अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने पर दण्ड और इस सम्बन्ध में राजा का दृष्टान्त	६०७५-६०७८	२२९
	संयमघाती अस्वाध्याय	६०७९-६०८४	२२९-२३१
	औत्पातिक अस्वाध्याय	६०८५-६०८७	२३१-२३२
	दिव्यकृत अस्वाध्याय	६०८८-६०९३	२३२-२३३
	विग्रह-सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९४-६०९८	२३३-२३४
	शरीर-सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९९-६११७	२३४-२३६
	काल-प्रतिलेखना-सम्बन्धी गृह-समाधान तथा अपवाद आदि	६११८-६१६४	२३६-२४६
१६	स्वशरीर-समुत्थ अस्वाध्याय में स्वयं स्वाध्याय करने का निषेध	६१६५-६१७६	२४६-२४९
१७	पहले के समवसरणों का वाचन किये बिना अग्रिम समवसरणों के वाचन का निषेध	६१८०-६१८३	२४९
१८	नव ब्रह्मचर्य (आचारांग) का वाचन किये बिना उत्तर या उत्तम श्रुत (छेद-सूत्र आदि) के वाचन का निषेध		२४९-२५५
	उत्तम श्रुत की व्याख्या, आर्यरक्षित के द्वारा युगानुसार अनुयोगों का पृषक्करण, अनुयोगों का क्रम, दोष तथा अपवाद	६१८४-६१९८	२५३-२५५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१६	अपात्र (अयोग्य) को वाचना देने का निषेध		२४५
२०	पात्र को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२४५
२१	क्रम से अध्ययन न करने वाले को वाचना देने का निषेध		२४५
२२	क्रमशः अध्ययन करने वाले को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२४५-२६२
	तिन्ताणिक आदि अपात्र तथा ग्रहद्विभाव आदि अव्यक्त की विस्तृत व्याख्या, दोष एवं अपवाद	६१६८-६२३६	२४५-२६२
२३-२६	अव्यक्त तथा अप्राप्त को वाचना देने का निषेध और व्यक्त तथा प्राप्त को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२६२-२६३
	व्यक्त और अव्यक्त की परिभाषा, अप्राप्त-सम्बन्धी चतुर्वङ्गी, दोष तथा अपवाद	६२३७-६२४३	२६२-२६३
२७	दो समान गुणवाले ग्रन्थेताओं में से एक को अध्ययन कराने और दूसरे को अध्ययन न कराने की भेद-बुद्धि का निषेध	६२४४-६२४६	२६३-२६४
२८	आचार्य तथा उपाध्याय द्वारा अदत्त वाणी के ग्रहण का निषेध		२६४-२६६
	वाणी के भेद, अदत्त वाणी-ग्रहण के कारण, तपःस्तेन आदि, मावस्तेन के सम्बन्ध में गोविन्द वाचक का उदाहरण, दोष तथा अपवाद	६२४८-६२४७	२६४-२६६
२९-४०	अन्यतीर्थी, गृहस्थ, पार्श्वस्थ तथा कुशील आदि के साथ वाचना के दानाऽदान व्यवहार का निषेध		२६६-२६६
	अन्यतीर्थी आदि को वाचना देने-लेने पर प्रायश्चित्त, वाचना के देने-लेने से दोष, स्वपापण्डी और अन्यपापण्डी की व्याख्या, अपवाद और तद्विषयक यतना	६२४८-६२४९	२६७-२६६

विंशतितम उद्देशक

एकोनविंशतितम और विंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६२७२	२७१
१ मासिक परिहार-स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		२७१-२८४
भिक्षु-पद के निक्षेप और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६२७३-६२८१	२७२-२७४
मास पद के निक्षेप और नक्षत्रादि मासों का प्रमाण	६२८२-६२८१	२७४-२७६
परिहार-पद के निक्षेप	६२८२-६२८५	२७६-२८०
स्थान-पद के निक्षेप	६२८६-६२८२	२८०-२८२

सूत्रसंख्या	विषय	पाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रतिसेवना के भेद-प्रभेद और तद्विषयक शङ्का-समाधान	६३०३-६३०८	२८२-२८३
	शस्त्रोद्धरण के लिए आलोचना और उसके तीन प्रकार	६३०६-६३११	२८३-२८४
	विहारालोचना	६३१२-६३२२	२८४-२८६
	उपसम्प्रदायोचना	६३२३-६३३६	२८६-३००
	अपराधालोचना	६३३७-६३६०	३००-३०२
	माया-भेद मुक्त आलोचना के गुण	६३६१-६३६२	३०३
	आलोचनाहर्ष के दो प्रकार-आगम व्यवहारी और श्रुत-व्यवहारी	६३६३-६३६५	३०३-३०४
	मायावी आलोचक को भय और दण्डक के दृष्टान्तों द्वारा उद्बोधनादि	६३६६-६३६८	३०४-३०५
२-६	द्विमासिक आदि परिहार-स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०५-३०७
	द्विमासिक परिकुञ्चित आलोचना के विषय में यथाक्रम कुञ्चित तापस, शल्य, मालाकार आदि के उदाहरण तथा छः मास से अधिक तपः प्रायश्चित्त न देने का हेतु	६३६६	३०५-३०७
७-१२	अनेक बार मासिक आदि परिहार-स्थान सेवन करने वाले को परिकुञ्चित एवं अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०८-३१३
	एक बार और अनेक बार के दोषी को समान प्रायश्चित्त देने के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान तथा रासम-मूल्य, कोडागार एवं खत्वाट के उदाहरण	६४००-६४१७	३०८-३१३
१३	मासिक आदि परिहार स्थानों के प्रायश्चित्त का संयोगसूत्र संयोग-सूत्र के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान	६४१८-६४१६	३१३-३१४
१४	बहुशः मासिक आदि परिहार-स्थानों के प्रायश्चित्त का संयोग-सूत्र		३१४-३६०
	संयोग-सूत्रों के अन्य प्रकार, उनकी रचना-विधि, और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६४२०-६४२६	३१४-३१८
	१. स्थापना-संचय द्वारा	६४२७-६४६२	३१८-३३०
	स्थापना तथा आरोपणा की व्याख्या और उनके प्रकार आदि		
	२. राशि द्वारा	६४६३-६४६५	३३०
	प्रायश्चित्त-राशि की उत्पत्ति के असंयम स्थान		
	३. मान द्वारा	६४६६	३३०-३३१
	विभिन्न तीर्थङ्करों की अपेक्षा से प्रायश्चित्त के मान (अंश) की विविधता		
	४. प्रभु द्वारा	६४६७-६४६८	३३१

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रायश्चित्त-दान के योग्य अधिकारी		
	५. कियान् द्वारा	६४६६-६४६६	३३१-३३८
	प्रायश्चित्तों की गणना तथा कृत्स्न और अकृत्स्न आरोपणा		
	अतिश्रमादि के सम्बन्ध में विचार-चर्चा	६४६७-६४६६	३३८-३३६
	नवम पूर्व से निशीथ का उद्धार	६४८०	३३६
	अनेक दोषों की शुद्धि के लिए एक प्रायश्चित्त देने का हेतु,		
	इस सम्बन्ध में घृत-कुट आदि के उदाहरण तथा अन्य		
	आवश्यक शङ्का-समाधान	६४८१-६४८६	३३६-३४६
	मूल व्रतविचार तथा उत्तर गुणविचार-सम्बन्धी चर्चा	६४८७-६४९५	३४६-३४८
	प्रायश्चित्त वहन करने वालों के भेद-प्रभेद	६४९६-६४९४	३४६-३६०
१५-१६	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आलो-		
	चना-सूत्र		३६०-३६७
	आलोचक के गुण एव दोष तथा आलोचना-विधि	६४९५-६४८३	३६१-३६७
१७-२०	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आरोपणा-सूत्र		३६७-३८६
	परिहार तप और शुद्ध तप की विवेचना	६४८४-६६०४	३६६-३७५
	वैशाख्य के तीन प्रकार तथा आचार्य के गुण	६६०५-६६१५	३७५-३७७
	आरोपणा के भेद-प्रभेद तथा आलोचना की चतुर्भङ्गी	६६०६-६६४७	३७७-३८७
२१-५३	प्रायश्चित्त-स्वरूप तप वहन करते हुए बीच में लगे-		
	दोषों का प्रायश्चित्त		३८७-४११
	निशीथ के निर्माता विशाखागणी की प्रशस्ति		३६५
	प्रायश्चित्त वहन करने वालों के कृत करणादि भेद-प्रभेद	६६४८-६६६५	३६६-४०१
	निशीथ-कल्प के श्रद्धान कल्प आदि चार प्रकार	६६६६-६६७६	४०१-४०४
	प्रायश्चित्त-प्रदान के हेतु	६६७७-६६७६	४०४
	दशविध प्रायश्चित्तों का ऐतिहासिक काल-क्रम	६६८०	४०४
	शोधनिष्पन्न तथा विस्तार निष्पन्न के भेद से प्रायश्चित्त		
	के दो प्रकार	६६८१-६६८२	४०५
	उत्सर्ग और अपवाद के आचरण की विधि, अथवा छेद-सूत्रों		
	में प्रतिस्मृत-प्रतिषेध, अपवाद आदि चतुर्विध अनुयोग-विधि	६६८३-६६८८	४०५-४०६
	अनुयोगधर की ओर से स्वगीरव का परिहार	६६८६	४०६
	निशीथ-सूत्र के अनेकविध अर्थधिकार	६७००-६७०१	४०६-४१०
	निशीथ-सूत्र के अधिकारी और अनधिकारी	६७०२-६७०३	४१०
	निशीथ-चूर्णिकार की स्वनामोल्लेखपूर्वक प्रशस्ति		४११
	निशीथ-चूर्णिकार के विंशतितम उद्देशक की संस्कृत में		
	सुबोध्या व्याख्या		४१३-४४३

परिशिष्ट

१. प्रथम परिशिष्ट	४४७-५३५
भाष्यगाथा-सूची	
२. द्वितीय परिशिष्ट	५३६-५४१
उद्धृत गायत्रि के प्रमाण	
३. तृतीय परिशिष्ट	५४२-५४४
प्रमाणत्वेन निर्दिष्ट ग्रन्थ	
४. चतुर्थ परिशिष्ट	५४५-५५१
भाष्य-वृष्यन्तर्गत दृष्टान्त	
५. पञ्चम परिशिष्ट	
विशेष नामों की विभागशः अनुक्रमणिका	५५२-५७०
६. षष्ठ परिशिष्ट	
सुभाषित-सुधासार	५७१-५७२

**“अपक्षपातेन यदर्थनिर्णयस्,
तदेव धर्मः परमो मनीषिणाम् ।”**

— बिना किसी पक्ष-पात के यथार्थ
सत्य का निर्णय करना ही,
विद्वानों का परम धर्म है ।



निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्यप्रवर श्री जिनदासमहत्तर-विरचितया

विशेषचूर्ण्या समलंकृतम्

विंशतितमोद्देशकस्य सुबोधारूपया संस्कृत-व्याख्यया सहितञ्च

चतुर्थो विभागः

उद्देशकाः १६-२०

ण वि किंचि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिदेहिं ।
॥ एसा तेसिं आणा, कज्जे सरुचेण होयव्वं ॥ ५२४८ ॥
दोसा जेण निरुभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥ ५२४९ ॥
—भाष्यकार ।

षोडश उद्देशकः

उक्तः पंचदशमोद्देशकः । इदानीं षोडशः प्रारभ्यते, तत्रायं सम्बन्धः -

देहविभूसा बंभस्स अगुत्ती उज्जलोवहितं च ।

सागारिते य (वि) वसतो, बंभस्स विराहणाजोगो ॥५०६५॥

पंचदशमुद्देशगे देहविभूसाकरणं उज्जलोवविधारणं च निमित्तं, मा बंभवयस्स अगुत्ती, पसंगतो मा बंभवयस्स विराहणा भविस्सति । इहावि सोलसमुद्देशगे मा अगुत्ती बंभविराहणा वा, यतो सागारिय-वसहिणिसेहो कज्जति । एस सम्बन्धो ॥५०६५॥

एतेण सम्बन्धेणागयस्स सोलसमुद्देशगस्स इमं पदमं सुत्तं -

जे भिक्खु सागारियसेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥१॥

सह आगारीहि सागारिया, जो तं गेहति वसहि तस्स आणादी दोसा, चउलहुं व से पच्छित्तं ॥

सन्नासुत्तं सागारियं ति जहि मेहुणुब्भवो होइ ।

जत्थित्थी पुरिमा वा, वसंति सुत्तं तु सट्ठाणे ॥५०६६॥

जं सुत्तं “सागारियं” ति एसः सामयिकीसंज्ञः । जत्थ वसहीए ठियाणं मेहुणुब्भवो भवति सा सागारिया, तत्थ चउगुत्तमा ।

अथवा - जत्थ इत्थिपुरिसः असंति सा सागारिका, इत्थिसागारियो चउगुत्तमा सुत्तनिवातो । “सट्ठाणि” ति जा पुरिससागारिया, णियंणीणं पुरिससागारियो चउगुत्तमा । सेसं सहेइ ॥५०६६॥ एस सुत्तयो ।

इमो णिज्जुत्तिवित्थरो -

सागारिया उ सेज्जा, ओहे य विभागओ उ दुविहाओ ।

ठाण-पडिसेवणाए, दुविहा पुण ओहओ होति ॥५०६७॥

सागारिया सेज्जा दुविहा - ओहेण विभागमो य । ओहेण पुण दुविधा - ठाणातो पडिसेवणातो य । एतेसु पच्छित्तं अणिहितं ॥५०६७॥

सागारियणिक्खेवो, चउच्चिहो होइ आणुपुब्बीए ।

णामं ठवणा दविए, आवे य चउच्चिहो भेदो ॥५०६८॥

सागारिणिक्लेवो णामठवणादिगो चउव्विधो कायव्वो । स पश्चाधेन कृतश्चतुर्विधः । दब्बे
आगममो, गो आगममो य ॥५०६८॥

णो आगममो जाणग-भविष्यव्वइरित्तं दब्बसागारियं इमं -

रूवं आभरणविही, तत्थालंकारभोयणे गंधे ।

आओज्ज णट्ट णाडग, गीए सयणे य दब्बम्मि ॥५०६९॥

“रूव”ति अस्य व्याख्या -

जं कट्टकम्ममादिसु, रूयं सट्ठाणे तं भवे दब्बं ।

जं वा जीवविमुक्कं, विसरिसरूवं तु भावम्मि ॥५१००॥

रूवं णाम जं कट्टवित्तलेपकम्म वा पुरिसरूवं कयं, अहवा - जीवावप्पमुक्कं पुरिसरीरं तं
“सट्ठाणे” ति गिगंगयाणं पुरिसरूवं दब्बसागारियं, जे इत्थीसरीरा तं भावसागारियं । एतेसु चेव कट्टकम्ममादिसु
जं इत्थीरूवं तं निम्मंयोंणं दब्बसागारियं, जे पुण पुरिसरूवा तं तासि भावसागारियं । आभरणा कडगादी ज
पुरिसजोग्गा ते गिगंगयाण दब्बे, जे पुण इत्थिजोग्गा ते भावे । इत्थीणं इत्थिजोग्गा दब्बे, पुरिसजोग्गा
भावे ॥५१००॥

‘वत्थादि अलंकारं चउव्विहं । भोयणं असणादियं चउव्विहं । कोटुगपुडगादी गंधा अणेगविहा ।
आओज्जं चउव्विहं - तत्तं वित्तं धणं भुत्तिरं । णट्टं चउव्विहं - अंबियं रिभियं आरभडं भत्तोलं ति ।

अहवा इमं ‘णट्टं’ -

णट्टं होति अगीयं, गीयजुयं णाडयं तु तं होइ ।

- आहरणादी पुरिसोवभोग दब्बं तु सट्ठाणे ॥५१०१॥

गीतेण विरोहनं णट्टं, गीतेणं जुत्तं णाडगं । गीयं चउव्विहं-तत्तिसमं तालसमं अहसमं लयसमं च ।
सयणिज्जं पत्तंकादि बहुप्पगारं । “‘दब्बे’” ति दब्बसागारियमेवमुद्धिहं । भोयण-गंधव्व-आओज्ज-सयणाणि ।
उभयपक्खे वि सरिसत्तणतो गियमा दब्बसागारियं चेव, सेसाणि दब्बभावेषु भाणियव्वाणि । सरिसे दब्बसागारियं,
विसरिसे भावसागारियं ॥५१०१॥

एतेसु इमं पच्छित्तं -

एक्केक्कम्मि य ठाणे, भोयणवज्जाण चउलहू होति ।

चउगुरुग भोयणम्मी, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५१०२॥

रूवादिदब्बसागारियप्पगारेसु एक्केक्कम्मि ठाणे ठायमाणस्स भोयणं वज्जेत्ता सेसेसु चउलहुगा,
भोयणं चउगुरुं । केसि च आयरियाणं - अलंकारवत्थेषु वि चउगुरुगा, आणादिया य दोसा भवन्ति ।

चोदक आहू - सव्वे ते साहू, कहं ते दोसे करेज्ज ?

१ गा० ५०६९ । २ गा० ५०६९ । ३ स्वरसाम्येन गानं । ४ गा० ५०६९ ।

उच्यते -

को जाणति "केरिसओ, कस्स व माहप्पता समत्थत्थे ।

धिइदुब्बला उ केई, डेवेति पुणो अगारिजणं ॥५१०३॥

छुउमत्थो को जाणइ णाणादेसियाणं कस्स केरिसो भावो, इत्थिपरिस्सहे उदिण्णे कस्स वा माहप्पता, महंको अप्पा माहप्पता । अहंवा - माहप्पता प्रभावो । तं च माहप्पं पभावं वा समत्थता चित्तिज्जति । सामत्थं धित्ति, सारीरा सत्ती । इदियणिगहं प्रति ब्रह्मव्रतपरिपालने वा कस्स किं माहात्म्यमिति । एयम्मि वि अपरिणाए सागारियवसधीए ठियाणं तत्थ जे धित्तिदुब्बला ते रुवादीहि अक्खित्ता विगयसंजमधुरा अगारिणाणं "डेवेति" - परिभृजंतीत्यर्थः ॥५१०३॥

ते य संजया पुब्बावत्था इमेरिसा होज्जा -

केइत्थ भुत्तभोई, अभुत्तभोई य केइ निक्खंता ।

रमणिज्ज लोइयं ति य, अम्हं पेयारिसं आसी ॥५१०४॥

भुत्ताभुत्ता दो वि भणंति - रमणिज्जो लोइओ धम्मो । जे भुत्तभोगी ते भणंति - अम्हं पि गिहाममे ठियाणं एरिसं लाणपायादिक आसि ॥५१०४॥

किं च -

एरिसओ उवभोगो, अम्हं वि आसि (त्ति) ण्ह एण्हि उज्जन्ता ।

दुक्कर करेमो भुत्ते, कोउममितरस्स ते दट्ठुं ॥५१०५॥

"उवभोगो" ति ण्हाणवत्था भरणगंधमल्लानुलेवणधूवणवसत्तंबोलादियाण पुक्खं आसी । इण्हि इवाणि, उज्जन्ता प्रावत्येन, मल्लिणसरीरा लडसुहामादा अम्हे सुदुक्करं सहामो, एवं भुत्तभोगी चित्तयति । "इतर"ति अभुत्तभोगी, तं तं रुवादि दट्ठुं कोउमं करेज्जा ॥५१०५॥

सति कोउएण दोण्ह वि, परिहेज्ज लएज्ज वा वि आभरणं ।

अण्णोसिं उवभोगं, करेज्ज वाएज्ज उड्ढाहो ॥५१०६॥

"सति" ति पुब्बरयादियाणं सरणं भुत्तभोगिणो, इयरस्स कोउमं । एते दोणिं वि असुभभाबुप्पणा पत्थे वा परिहेज्ज, आभरणं वा "लएज्ज" ति अण्णो आभरेज्ज, अण्णोसिं वा वत्थादियाणं उवभोगं करेज्ज, वाएज्ज वा आतोवज्ज । असंजतो वा संजतं आयरियादि दट्ठुं उड्ढाहं वारेज्ज ॥५१०६॥

किं च -

तच्चित्ता तल्लेसा, भिक्खा-सज्जायमुक्कतत्तीया ।

विकहा-विसुत्तियमणा, गमणुस्सुग उस्सुगब्भूया ॥५१०७॥

तं इत्थीमादी रुक्क दट्ठुं तदगावयवसरूक्कचित्तेणं चित्तं, तदगपरिभोगज्जअवसाधो लेसा (भिक्खा) सज्जायादिसंजमजोकरणमुक्कतत्ती गिब्बावारदित्यर्थः । वायिगजोगेण संजमाराहणी कहा, तच्चित्तवत्सभूता विकहा । कुसलमणधारणोदीरणेण संजमसासविद्धि(?)करेत्ता सो वस्तमना ततो विगहाविसोत्तियमणा भवति । एवं

१ को किरितो, इति बृहत्कल्पे गा० २४५५ ।

इत्थिमादिकवसमागमतो उदिण्णभोहाण स्थीरिभोमुत्सुमभूताणं गमणे ओत्सुक्यं भवति । अग्निप्रेतायं स्वरित-
सम्प्रापणं ओत्सुक्यमित्यर्थः ॥५१०७॥

सुट्ठु कयं आभरणं, विणासियं ण वि य जाणसि तुमं पि ।

मुच्छुद्धाहो गंधे, विसोत्तिया गीयसहेसु ॥५१०८॥

कयं आभरणं वा दट्ठं एगो भणाति — “सुट्ठु” ति लट्ठं कयं ।

वित्तियो तं भणाति — “एतं विणासियं, अविसेसणू तुमं, ण जाणसि किं वि” ।

एवं उत्तरोत्तरेण अधिकरणं भवति, प्रशंसतो वा रागो, इतरस्स दोसो । “मुच्छ” ति मुच्छं वा
करेज्ज । मुच्छाघो वा सपरिग्गहो होजा ।

गंधे ति चंदणादिणा विसिते वृक्षिते वा अग्ग्राणे उद्धाहो भवति । आतोक्क-गीयसहादिएसु विसोत्तिया
भवति ॥५१०८॥

किं च —

णिच्चं पि दव्वकरणं, अवहितहिययस्स गीयसहेसु ।

पडिलेहण सज्झाए, आवासग भुंज वेरत्ती ॥५१०९॥

णिच्चमिति तीए वसहीए सब्बकालगीतादिसहेदिं भवधियमणस्स पडिलेहणादिकरणं सब्बेसि
संजमजोगायं दव्वकरणं भवति ॥५१०९॥

ते सीदिउमारद्धा, संजमजोगेहि वसहिदोसेणं ।

गलति जत्तुं तप्पंतं, एव चरित्तं मुणेयव्वं ॥५११०॥

तेसि एवं वसहिदोसेणं सीयंताणं वरित्ताणी ।

कहं ?, उच्यते । इमो दिट्ठतो —

जहा जउ अग्गिणा तप्पंतं गलति एवं जहुत्तसंजमजोगस्स अकरणतातो चरित्तं गलति,
॥५११०॥

वसहिदोसेण जो इत्थिमादीविसयोवभोगभावो असुभो उप्पण्णो —

‘तण्णिकखंता केई, पुणो वि सम्मेलणाइदोसेणं ।

वच्चंति संभरंता, भेत्तूण चरित्तपागारं ॥५१११॥

तस्मान्निक्खंता त वा परित्यज्य निःकान्ता तण्णिकखंता केचित्तं सर्वं । सेसं कंठं ।

एगम्मि दोसु तीसु व, ओहावंतेसु तत्थ आयरिओ ।

भूलं अणवट्ठो, पावति पारंच्चियं ठाणं ॥५११२॥

वसहिकएण दोसेण जइ एक्को उण्णिकखमिति तो पायरियस्स भूलं, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारंच्चियं ।
जस्स वा वसेण तत्थ ठिसा तस्स वा एयं पच्छित्तं ॥५११२॥ दव्वसागारियं गतं ।

१ उण्णि “”, इति बृहत्कल्पे गा० २४६३ ।

इदानीं भावसागारियं -

‘अद्वारसविहम्बं, भावउ ओरालियं च दिव्वं च ।

भणवयणकायगच्छण, भावम्मि य रुवसंजुत्तं ॥५११३॥

एयं दव्वसागारियं भणतेण भावसागारियं एत्थेव भणियं, तद्ववि वित्थरतो पुणो भणति - तं भावसागारियं अद्वारसविहं अम्बं । तस्स मूलभेदा दो - ओरालियं च दिव्वं च । तत्थं ओरालियं नवविहं इमं - ओरालियं कायभोगा मणसा गच्छति, गच्छावेति, गच्छंतं भणुजाणति । एवं वायाए वि । काएणं वि । एते तिणिं तिया गव । एवं दिव्वेण वि णव । एते दो णवमा अद्वारस । एयं अद्वारसविहं अम्बं भावसागारियं ॥५११३॥

“भावम्मि य रुवसंजुत्तं” ति अस्य व्याख्या -

अहव अम्बं जत्तो, भावो रुवा सहगयातो वा ।

भूसण-जीवजुत्तं वा, सहगय तव्वज्जियं रुवं ॥५११४॥

अम्बंभावो जत्तो उप्पज्जइ तं च रुवं रुवसंजुत्तं वा, कारणे कज्जोवयाराधो, तं चेव भावतो अम्बं ;

अहवा - उदिण्णभावो जं पडिसेवति तं च रुवं वा होज्ज, रुवसहगतं वा । तत्थं जं इत्थीसरीरं सचेयणं भूसणसंजुत्तं तं रुवसहगतं ।

अहवा - अणाभरणं पि जीवजुत्तं तं रुवसहगतं भणति, “तव्वज्जियं रुवं” ति सचेयणं इत्थीसरीरं भूसणवज्जियं रुवं भणति, अचेयणं वा रुवं भणति ॥५११४॥

तं पुण रुवं तिविहं, दिव्वं माणुस्सगं च तेरिच्छं ।

तत्थ उ दिव्वं तिविहं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥५११५॥ कठा

दिव्वे इमे मूलभेदा -

पडिमेतरं तु दुविहं, सपरिग्गह एवकमेक्कगं तिविहं ।

पायावच्च-कुडुंबिय-डंडियपरिग्गहं चेव ॥५११६॥

पडिमाजुयं तं दुविहं - सणिहितं असणिहितं वा । “इतरं” ति - देहजुयं तं पि सचेयणं अचेयणं वा । पुणो एक्केक्कं सपरिग्गहं अपरिग्गहं वा । जं सपरिग्गहं तं तिविधेहि परिणहितं । पच्छद्दं कठं ॥५११६॥

दिव्वं जहण्णादिगं तिविधं इमं -

वाणंतरीय जहण्णं, भवणवती जोइसं च माज्झमगं ।

वेमाणियमुक्कोसं, पगयं पुण ताण पडिमासु ॥५११७॥

वाणंततरं जहण्णं, भवणवासि जोइसियं च माज्झमगं, वेमाणियं उक्कोसयं । इह पडिमाजुतेयं अधिकारो जेण वसहिंविसोही अधिकया ॥५११७॥

१ अद्वारसविहम्बं इति बृहत्कल्पे गा० १४६५ । २ गा० ५११३ ।

अहवा - पडिमाजुएण जहण्णादिया इमे भेदा -

कट्ठे पोत्थे चित्ते, जहण्णयं मज्झिमं च दंतमि ।

सेलमि य उक्कोसं, जं वा रुवातो णिप्फणं ॥५११८॥

जा दिव्वपडिमा कट्ठे पोत्थे लेप्पगे चित्तकम्मे वा जा कीरइ एयं जहण्णयं, अनिष्टस्पर्शत्वात् ।
जा पुण हरिषदंते कीरति सा मज्झिमा, जेण मुमत्तरफरिसा, अत्रापि हीरसंभवः । मणिमीलादिमु जा कीरइ
सा उक्कोसा, सुकुमालफरिसत्तणतो अहीरत्तणतो य ।

अधवा - जं विरूवं कयं तं जहणं । जं मज्झिमरूवं तं मज्झिमं । जं पुण मुरुवं कयं तं
उक्कोसयं ॥५११८॥ सव्वोहृतो पडिमाजुए ठायमाणस्स चउलहं ।

ओहविभागे इमं -

ठाण-पडिसेवणाए, तिविहे दुविहं तु होइ पच्छित्तं ।

लहुगा तिण्णि विसिट्ठा, अपरिग्गहे ठायमाणस्स ॥५११९॥

“तिविध” ति - दिव्वयाणुसतेरिच्छे दुविधं पच्छित्तं - ठाणपच्छित्तं पडिसेवणापच्छित्तं च । एवं
अत्यनिरुवणं काउं । एय चेव पुव्वद्व । अण्णाहा भाणियव्वं - “तिविधे” ति जहणमज्झिमुक्कोसे दुविहं
पच्छित्तं - ठाणओ पडिसेवणओ य । तत्थ पडिसेवणओ ताव ठप्पं । ठप्पंतस्स इम - “लहुगा तिण्णि
विसिट्ठा”, दिव्वे पडिमाजुए असण्हिण्ण जहन्ने चउलहुया उभयलहु, मज्झिमे लहुगा चेव कालगुरु, उक्कोसे
लहुगा चेव तवगुरु ।

अहवा - “तिविधे दुविधं तु” - तिविधं जहणमादी, तं सण्हियासण्हितेण दुविहं ।

अहवा - पडिसेवणाए तं चेव जहण्यादिकं तिविधं । दिट्ठादिट्ठेण दुविधं ॥५११९॥

विभागे ओहपच्छित्तं इमं -

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्घाता ।

छम्मासा उग्घाता, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१२०॥

पढमे ति जहणो, तत्थ उग्घाय ति चउलहु । वितियं मज्झिमं तत्थ अणुग्घाय ति चउगुरु । उक्कोसे
छम्मासा, उग्घाय ति छल्लहु । एय ठायमाणस्स एयस्स इम उच्चारणविधी - जहणो पायावच्चपरिग्गहिते
ठाति च्छु । मज्झिमए पातावच्चपरिग्गहिते ठाति च्छु । उक्कोसे पातावच्चपरिग्गहिते ठाति फु ॥५१२०॥

इदाणि एते पच्छित्ता विसेसिज्जन्ति -

पायावच्चपरिग्गहे, दोहि वि लहु हीन्ति एते पच्छित्ता ।

कालगुरु कांडुचे, उंडियपरिग्गहे तवसा ॥५१२१॥

जे एते पायावच्चपरिग्गहिते जहणए मज्झिमए उक्कोसए य ठायमाणस्स चउलहु चउगुरु
छल्लहुया पच्छित्ता भगिता । एते कालेण वि त्वेण वि लहुगा णायव्वा ।

कोट्टवियपरिग्गहिते एते चेव तिण्णि पच्छित्ता कालगुरु तवलहुया ।

इन्द्रियपरिग्रहिते एते चेव तिणि पच्छिता काललहुभा तवगुरुभा । जम्हा जहण्णादिविभागेण कर्तं सण्हितासंणिहितेण ण विमेषियव्वं, तम्हा विभागे मोहो जम्हो ॥५१२१॥

इदाणि विभागपच्छित्तं -- तत्थ एयाणि चेव जहणमज्झिमुक्कोसाणि असण्हियसंणिहित्यभिणा छट्ठाणा भवति ।

ताहे भण्णति -

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्घाया ।

ततियम्मि य एमेवा, चउत्थे छम्मास उग्घाता ॥५१२२॥

जहण्णेण असण्हियं पढमं ठाणं, सण्हियं वितियं ठाणं ।

मज्झिमे असण्हियं तइयट्ठाणं, सण्हियं चउत्थं ।

उक्कोसेण असण्हियं पंचमं, सण्हियं छट्ठं ।

जहण्णए असण्हिए पायावच्चपरिग्रहिते ठाति चउलहुयं, सण्हिए चउगुरुं । मज्झिमए असण्हिए “एमेव” ति - चउगुरुया, सण्हिए छल्लहुया ॥५१२२॥

पंचमगम्मि वि एवं, छट्ठे छम्मास होतऽणुग्घाया ।

असन्निहिते सन्निहिते, एस विही ठायमाणस्स ॥५१२३॥

उक्कोसए असण्हिए पायावच्चपरिग्रहिते ठाति एमेव ति छल्लहुया, सण्हिए छगुरुं । एसो ठायपच्छित्तस्स विधी भणितो ॥५१२३॥

पायावच्चपरिग्रह, दोहि वि लहु होति एते पच्छिता ।

कालगुरुं कोटुबं, इन्द्रियपरिग्रहे तवसा ॥५१२४॥

पायावच्चे उभयलहुं, कोटुबिए कालगुरुं, इन्द्रिये तवगुरुं । सेसं पूर्ववत् ॥५१२४॥

ठाणपच्छित्तं चेव वितियादेसतो भण्णति -

अहवा भिक्खुस्सेयं, जहण्णागाइम्मि ठाणपच्छित्तं ।

गणिणो उवरिं छेदो, मूलायरिए हसति हेट्ठा ॥५१२५॥

ज एयं जहण्णादी असन्निहित्यसंनिहित्यभेदेण चउलहुयादि - छगुरुगावसाणं एयं भिक्खुस्स भणियं । “गणि” ति-उवज्झाम्हो, तस्स चउगुरुयादी छेदे ठायति । आयरियस्स छल्लहुयादी मूले ठायति । इह चारणाविकप्पे जहा उवरिपदं वट्ठति तहा हेट्ठापदं हस्सति । ॥५१२५॥

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होति तइयम्मि ॥५१२६॥

इह पढमिल्लुगं पायतितं ठाणं, वितियं कोटुबं, ततितं इन्द्रियं । सेसं पूर्ववत् ॥५१२६॥ एयं ठायंतस्स पच्छित्तं भणियं ।

इदाणि पडिसेवतस्स पच्छित्तं भण्णति -

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छम्मासिय छेद लहुग गुरुगो तु ।

मूलं जहण्णागम्मी, सेवन्ते पसज्जणं मोचुं ॥५१२७॥

पायावच्चपरिग्राहे जहणो असणिहिए अदिट्ठे क्क । दिट्ठे क्का । सणिहिते अदिट्ठे क्का । दिट्ठे फु । कोटुबियपरिग्राहे जहणाए असणिहिए - अदिट्ठे फु । दिट्ठे फा । सणिहिते अदिट्ठे फा । दिट्ठे छम्मासितो लहुतो छेदो ।

डंडियपरिग्राहे जहणाए असणिहिते, अदिट्ठे छम्मासियो लहुच्छेदो । दिट्ठे छम्मासियो गुरु छेदो । सणिहिए अदिट्ठे छम्मासितो गुरु छेदो । दिट्ठे मूलं ।

एयं जहणापदं अमुयतेण उदिण्णमोद्धत्तणो पडिमं पडिसेवत्तस्स पच्चिच्छत्तं भणियं पसज्जणं मोत्त पसज्जणा णाम दिट्ठे संका भोडगादो, अथवा - गेण्ण कहुगादो ॥५१२७॥

चउगुरुग छच्च लहु गुरु, छम्मासियछेदो लहुग गुरुगो य ।

मूलं अणवट्ठप्पो, मज्झिमए पसज्जणं मोत्तुं ॥५१२८॥

मज्झिमे वि एवं चेव चारणविधी, णवरं - चउगुरुगायो आदत्ते - अणवट्ठे ठाति ॥५१२८॥

तवछेदो लहु गुरुगो, छम्मासियो मूल सेवमाणस्स ।

अणवट्ठप्पो पारंचित्तो य उक्कोस विण्णवणे ॥५१२९॥

उक्कोसे वि एवं चेव चारणविधी, णवरं - चउगुरुगायो (छल्लहुगातो) आदत्तं पारंचित्ते ठाति । विण्णवणति पडिसेवणा पत्थणा वा, ॥५१२९॥

इमेण कमेण चारणं करेति आलावो कायव्वो -

पायावच्चपरिग्राह, जहणा सच्चिहित नह असच्चिहिते ।

अदिट्ठ दिट्ठ सेवति, आलावो एस सव्वत्थ ॥५१३०॥कंठा

अणो चारणियं एवं करेति - जहणो पायावच्चपरिग्राहे असणिहिते सणिहिते अदिट्ठ दिट्ठ ति, एयं पायावच्चपरिग्राहं अचयतेण मज्झिमुक्कोसा वि चारियव्वा । पच्चिच्छत्तं चउलहुगादि मूलावसाणं ते चेव । एयं कोटुबियं पि चउगुरुगादि अणवट्ठणावसाणं । डंडियं पि छल्लहुगादि पारंचित्तावसाणं । एतय पायावच्चं जहणं कोटुबं मज्झिमं डंडियं उ सं भाणियत्वं, उभयहा वि चारिज्जंतं अविरुद्धं ॥५१३०॥

चोदगो भणति -

जम्हा पढमे मूलं, त्रितिए अणवट्ठ ततिय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥५१३१॥

“पढमे” ति - जहणो चउलहुगातो आदत्तं मूले ठाति, मज्झिमे चउगुरुगातो आदत्तं अणवट्ठे ठाति, उक्कोसे छल्लहुगातो आदत्तं पारंचित्ते ठाति । जइ एवं पडिसेवमाणस्स पायच्चिच्छत्तं भवति तम्हा ठायंतस्मेव पारंचित्तं भवतु । अथवा - ठाणपच्चिच्छत्तं वि मूलाणवट्ठपारंचित्ता भवतु । किं कारणं ? भवत्थमेव प्रसज्जनां प्रतीत्य मूलानवस्थाप्यपारंचित्तान् प्राप्स्यन्ति ॥५१३१॥

आयरिओ भणइ -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्पणं ॥५१३२॥

“पडिसेवणाए” ति - पडिसेवतस्स अतिथारानुरूपा मूलाणवटुपारंरिचिया एवं संभवति ।

जति पुण ठितो ण चेव पडिसेवति तो कहं एतो भवंतु ? ॥५१३२॥

जनि पुण सव्वो वि ठितो, सेवेज्जा होज्ज चरिमपच्छित्तं ।

तम्हा पसंगरहितं, जं सेवति तं ण सेसाइं ॥५१३३॥

जति नियमो होज्ज सव्वो ठायंतो पडिसेवेज्जा तो जुज्जइ तं तुमं भणसि, जेण पुण ण सव्वो ठायंतो पडिसेवति तेण कारणेण पसंगरहितं जं ठाणं सेवति तत्त्वेव पायच्छित्तं भवति ॥५१३३॥

“पसज्जणा सत्थ होति एक्केकक” ति एक्केककातो पायच्छित्तठाणातो पसज्जणा भवति ।

कहं ?, उच्यते - तं साधुं तत्थ ठियं दट्ठुं अविरयओ को वि तस्सेव संकं करेज्जा - “णूणं पडिसेवणाणिमित्तेण एस एत्थ ठियो,” ताहे दिट्ठे संखा भोतिपायो भेदा भवति ।

अह पसंगं इच्छसि तो इमो पसंगो “चरिमपदे चरिमपदं” ति अस्य व्याख्या -

अदिट्ठातो दिट्ठं, चरिमं तहि संकमादि जा चरिमं ।

अहव ण चरिमाऽऽरोवण, ततो वि पुण पावती चरिमं ॥५१३४॥

चारणिआए कज्जमाणीए अदिट्ठदिट्ठेह अदिट्ठपदातो जं दिट्ठपदं तं चरिमपदं भणति, ततो चरिमादातो सका भोतिपादिपदेहि विभासाए जाव चरिमं पारंरिचियं च पावति ।

स्यान् मतिः - “अथ दृष्टं कथं संका ?, ननु निः शंकितमेव । उच्यते - दूरेण गच्छतो दिट्ठं वि अविभाविते संका, अहवा - यासणो वि ईसि अद्विच्छि गिरिक्खणेण संका भवति ।

अहवा - “चरिमपदे चरिमपदं” भणति । असण्हितपदातो सण्हितपदं चरिमपदं ति । तत्थ सण्हिया पडिमा खित्तमादी करेजा, परितावणमादिपदेहि चरिमं पावेज्जा । अहव ण चरिमारोवण ति तृतीयः प्रकारः - जहणे चरिमं मूलं, मज्झिमे चरिमं अणवटु, उवकोसे चरिमं पारंरिचियं । ततो एक्केककतातो चरिमपदातो संकादिपदेहि चरिमं पारंरिचियं पावइ ॥५१३४॥

“तं पि यं आणादिनिप्फण्णं” ति अस्य व्याख्या -

अहवा आणादिविराहणाओ एक्केक्कियाओ चरिमपदं ।

पावति तेण उ नियमा, पच्छित्तधरा अतिपसंगो ॥५१३५॥

अहवा - आणाणवरथमिच्छतविराहणाणं चउण्हं पथायं विराहणापदं चरिमं, सा विराहणा दुविहा - आय-संजमेमु । तत्थ एक्केककातो तं चरिमपदं निप्फण्णइ ।

कहं ?, उच्यते - तस्सामिणा दिट्ठे पंताविए आयाए परितावणादि चरिमं पावति, संजमे भन्ने पुण संठवणे - छक्काय चउमु गाहा । एवं चरिमं पावति । जम्हा पसंगओ बहुविहं भवति तम्हा पसंगरहितं जं चेव आसेवितं तं चेव दायव्वं । ठायमाणस्स ठाणपच्छित्तं चेव, पडिसेवमाणस्स पडिसेवणापच्छित्तं - न पसंगमित्थयः । ॥५१३५॥

गत्थि खलु अपच्छिन्ती, एवं ण य दाणि कोइ मुंचेज्जा ।

कारि-अकारी समता, एवं सति राग-दोसा य ॥५१३६॥

एवं नास्ति कश्चिदप्रायश्चित्ती, न वा कश्चिदसेवमानोऽपि कर्मबन्धानुच्यते, जो वि पडिसेवति तस्म वि तं, जो वि ण पडिसेवति तस्म वि तं । एवं कारि अकारिसमभावता भवति । एवं प्रायश्चित्तसंभवे सति राग दोससंभवो य भवति ॥५१३६॥

“तं पि य आणादिणिफणं” पुनरप्यस्यैव पदस्य व्याख्या -

मुरियादी आणाए, अणवत्थ परंपराए थिरकरणं ।

मिच्छत्तं संकादी, पमज्जणा जाव चरिमपदं ॥५१३७॥

सकमेयं पच्छित्तं आणादिपदेहि णिफज्जति, अवराहपदे पवत्तं तो तित्थकराणामगं करेति तत्थ से षउयुगं, आणाभगे मुरियदिदुंतो कज्जति ।

तम्मि वेद काले अणवत्थपदे वट्टति तत्थ से द्दु । अणवत्थतो य परंपरेणं संजमवोच्छेदो भवति ।

तम्मि वेव काले देसेण मिच्छत्तमालेवति, परस्स वा मिच्छत्तं जणेति, थिर वा करेति, तत्थ से द्दु ।

अवराहपदे पुण वट्टं तो विराहणापदं वट्टति वेव तत्थ परस्स संकं जणेति जहेयं मोसं तहज्जां पि । अहव संकाभोद्गादी पसज्जणा चउलहुगादी जाव चरिमं पदं पावति ॥५१३७॥

एत्थ चोदक आह -

अवराहे लहुगतरो, किं णु हु आणाए गुत्तरो दंडो ।

आणाए च्चिय चरणं, तन्मगे किं न भगं तु ॥५१३८॥

चोदगो भणति - “अवराहपदे चउलहुं पच्छित्तं आणाभगे चउयुगं दिदुं । एवं कहं भवति, णणु अवराहपदे गुत्तरेण भवियव्वं” ?

आयरियो आह - “आणाए च्चिय” पच्छदं । परमत्थमो आणाए च्चिय चरणं छियं, आणा दुवालसंगं गणिपिडगं ति काउं, तव्वतिवकमे तन्मगे किं ण भगं भवति ? किं च लोडया वि आणाए भगे गुत्तरं डंडं करेति (पवत्तेति) ।

एत्थ दिदुंतो मुरियादि । मुरिय ति मोरपोसगवत्तो चंदगुत्तो । आदिमहणानो अण्णे-रायाणो । ते आणाभगे गुत्तरं डंडं पवत्तेति । एवं अहं वि आणा बलिया ॥५१३८॥

इमं णिदरिसणं -

भत्तमदाणमडंते, आणट्टवणं च छेत्तु वंसवती ।

गविसण पत्त दरिसिने, पुरिसवति सवालडहणं च ॥५१३९॥

चंदगुत्तो मोरपोसगो ति जे अभिजानंति खत्तिया ते तस्स आणं परिभवति ।

चाणक्कस्स चिंता-आणाहीणो केरिसो राया ? कहं आणातिकवो होअ ? ति । तस्स य चाणक्कस्स कप्पडियत्ते अडंतस्स एगम्मि गामे भत्तं न लद्धं । तत्थ य गामे बहू अंबा वंसा य । तस्स य गामस्स पडिणिविट्ठेणं आणट्टवणणिमित्तं लिहियं पेसियं इमेरिसं “आम्रान् छित्त्वा वंशानां

वृत्तिः शीघ्रं कार्ये" ति । तेहि य गामेयगेहि दुल्लिहियं ति काउं वंसे छेतुं अंबाण वती कता । गवेसाविया चाणक्केण - "किं कतं ?" ति । आगतो, उबालद्धा, एते वंसा रोधगादिमु उवउज्जंति, कीस भे छिण्णा ?, दंसियं लेहूचीरियं - "अण्णं संदिट्ठं अण्णं चेव करेहि" ति डंडपत्ता । ततो तस्स गामस्स सबालवुट्ठुं हिं पुरिसेहिं अधोसिरेहिं वति काउं सो गामो सव्वो दड्ढो । अण्णे भणति - सबालवुट्ठु पुरिसा तीए वतीए छोटुं दड्ढा ॥५१३६॥

एगमरणं तु लोए, आणति वा उत्तरे अणंताइं ।

अवराहरक्खणट्ठा, तेणाणा उत्तरे बलिया ॥५१४०॥

लोइयआणाइक्कमे (एगमरणं) । लोपुत्तरे पुण आणाइक्कमे अणेत्यति जम्ममरणाइं पावति । अण्णं च प्रतिचाराक्खणट्ठा चेव आणा बलिया, आणाअणतिककमे य अइयाराइक्कमो रक्खितो चेव भवति ॥५१४०॥

"अणवत्थ" ति अस्य व्याख्या -

अणवत्थाए पसंगो, मिच्छसे संकमादिया दोसा ।

दुविहा विराहणा पुण, तहियं पुण संजमे इणमो ॥५१४१॥ कंठा

अणट्ठाडंडो विकहा, वक्खेव विसोत्तियाए सतिकरणं ।

आलिगणादिदोसा, असण्हिए ठायमाणस्स ॥५१४२॥

अकारणे डंडो अणट्ठाडंडो, सो - दब्बे भावे य । दब्बे अकारणे अवरद्धं रायकुलं डंडेति । भावडंडो आणादीणं हाणी ॥५१४२॥

"विकहाए" वक्खाणं -

सुट्ठु कया अह पडिमा, विणासिया ण वि य जाणसि तुमं ति ।

इति विकहादधिकरणं, आलिगणे भंग भदितरा ॥५१४३॥ कंठा

अलिगणे कजमाणे कयादि हत्थादियाण भंगो हवेज्ज, तत्थ सपरिग्गहे भद्वंताइ दोसा हवेज्जा, वक्खेवो तं पेक्खंतस्स, उल्लावं च करंतस्स सुत्तत्थपल्लिमथो ।

विमोत्तिया दब्बे भावे य । दब्बे सारणिपाणोयं वहंतं वृणमादिणा रुद्धं, अणतो कासारादिमु गच्छति, ततो सस्सहाणी भवति । भावे आणादीणं, आगमस्स विसोत्तियाए चरितस्स विणासो भवति ।

सतिकरणं ति भुत्तभोगीणं, अभुत्तभोगीण कोउमं ।

अथ कोइ मोहोदएण आलिगेज्ज, आलिगिता भज्जंज्जा, असण्हिए सपरिग्गहे भद्वंतदोसा, च्छाकाम्मदोसा य, पंतो तत्थ गेहूणादी करेज्ज । एते असण्हिते ठायमाणस्स दोसा ॥५१४३॥

इमे य सण्हिए -

वीमंसा पडिणीयट्ठया व भोगत्थिणी व सन्निहिया ।

काणच्छी उक्कंपण, आलाव णिमंतण पलोमे ॥५१४४॥

स णहिया तिहि कारणेहि साधु पलोहेज्जा - वीमंसट्ठया पडिणीयट्ठयाए भोगत्थिणी वा ।

तत्त्व वीमंसाए — “किं एस सक्केति खोमेउं ण व” ति पडिमाए अणुपविसित्ता काणञ्छी करेज्ज, यणुककंणं (उक्कंणं) वा करेज्ज, आलावं वा करेज्ज — हे अमुग णाम ! कुसलं ते, निमंतणं वा करेज्ज — मए समं सामि ! भोगा भुंजसु, एवमादिएहि पलोमेजा । अहवा — पलोमेति यणकक्खोसपट्ठण-दंसिएहि, कडक्खञ्चिक्खिकारणिरित्तोहि ॥५१४४॥

काणञ्छिमाइएहि, खोभियद्वाति तम्मि भदा तु ।

णासति इतरो मोहं, सुवण्णकारेण दिट्ठंतो ॥५१४५॥

जाहे काणञ्छिमादिएहि आगारेहि खोभितो ताहे गिण्हामि ति उट्ठातितो, ताहे सा देवता भदा णासेति, इतरो णाम सो खोभियसाधू तीए अहंसगं गताए सम्मोहं गतो पडितो तं दट्ठुमिच्छति । कत्तो गयासि ?, विलवति, पण्णविज्जंतो वि पण्णवणं ण गेह्ति । जहा अणंगसेणसुवण्णगारो ॥५१४५॥ एसा भद्विमंसा ।

इदार्णि “पडिणीयदुताए” ति —

वीमंसा पडिणीता, विहरिसणञ्चित्तमाइणो दोसा ।

असंपत्ती संपत्ती, लग्गस्स य कड्डणादीणि ॥५१४६॥

पडिणीया वि काणञ्छिमातिएहि वीमंसेउं, एत्थ वीमंसा णाम केवला, जाहे खुभिमो धातितो गिण्हामि ति ताहे सा पडिणीया “असंपत्ति” ति जाव ण चेव गेह्ति हत्थादिणा ताव विहरिसणं विवृत्तरूपं दर्शयति ।

अहवा — विहरिसणं अलगमेव लोगो लगं पासति, खित्तमादि वा करेज्ज, मारेज्ज वा ।

अधवा — सा पडिणीया पडिभोगमांति काउं तत्थेव लाएज्ज स्वानादिषत्, पडिणीयदेवतापमोगमो चेव लेप्पगसामिणा अण्णेण वा दिट्ठे गेह्णकड्डणादिमा दोसा करेज्ज ॥५१४६॥

पंता उ असंपत्ती, तहेव मारेज्ज खित्तमादी वा ।

संपत्तीइ वि लाएतु, कड्डणमादीणि करेज्ज ॥५१४७॥ गतार्णि

इदार्णि भोगत्थिणी —

भोगत्थिणी विगते, कोउयम्मि खित्तादि दित्तचित्तं वा ।

दट्ठूण व सेवंतं, देउलसामी करेज्ज इमं ॥५१४८॥

भोगत्थिणी देवता काणञ्छिमादिएहि उवल्लोमेता खुमिएण सह भोगे सुंजित्ता विगयभोगकोतुका भा अण्णाए सह भोगे भुंजउं ति खित्तादिचित्तं करेज्जा । अहवा — तीए सह सेवणं करेत्तं दट्ठूण देउलसामी महाभावेण इमं करेज्ज ॥५१४८॥

तं चेव णिट्ठवेंती, बंधण णिच्छुमण कडगमहो य ।

आयरिए गच्छंमि य, कुल गण संघे य पत्थारो ॥५१४९॥

तं सेवंतं दट्ठुं कुट्ठो णिट्ठिवेत्ति ति — मारेज्जा, पम्प वा सयं बंधिज्जा, अण्णभू वि पमुणा बंधाविज्जा । अधवा — वसधी गाम नगर देस रज्जाओ वा णिच्छुमेज्जा । ‘कडगो’ ति खंधावारो । जहा सो

१ अणंगसेणेण, इत्यपि पाठः । २ गा० ५२४४ ।

परविसयमोद्गणो एगस्स रण्णो अग्निगिवेसेण अकारिणो वि गामणगरादि सव्वे विणासेइ, एवं एणेण कयमकज्जं सव्वो बालवुड्ढादी जो जय्य दीसइ सो तत्थ मारिज्जति । एस कडगमहो !

अथवा - इमो कडगमहो, सह तेण कारिणा, मोत्तुं वा तं कारि (णं), जो आयरिमो गच्छो वा कुलं गणो वा तं वावादेति, तत्थ वा ठाणे जो संघो तं वावादेति ॥५१४६॥

अथवा इमं कुज्जा -

गेण्हणे गुरुणा छम्मास कडूणे छेदो होति वव्हारे ।

पच्छाकडम्मि मूलं, उड्डहण-विरुंगणे णवमं ॥५१५०॥

पडिसेवते गहते ङ्क । हप्पे वत्थे वा वेत्तुं कड्डिते णीते रायकुलं फू । तेण परिकड्डिते फी । वव्हारे छेदो । पच्छाकडो ति जितो मूलं । उड्डाहे कते विरुंगिते वा अणवड्डो भवति ॥५१५०॥

उद्वावण णिव्विसए, एगमणेमे पदोस पारंची ।

अणवड्डप्पो दोसु य, दोसु य पारंचीओ होति ॥५१५१॥

उद्वावते णिव्विसए वा कते एगमणेगेसु वा पदोसे कते सो पडिसेवगो पारंचीयं पावति । उड्डहण विरुंगण एतेसु दोसु अणवड्डो भवति, णिव्विसतोद्वावणेषु दोसु पदेसु पारंचीय ॥५१५१॥

अथवा - पदुड्डो इमं कुज्जा -

एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खितदिक्खगस्स अह दोसो ।

इति पंतो णिव्विसए, उद्वावण विरुंगणं व करे ॥५१५२॥

एयस्स चि पडिसेवगस्स ण दोसो, जो अपरिक्खितं दिक्खेति तस्स एस दोसो, इति एवं चितेउं पंतो आयरियं णिव्विसयं करेज्जा, उद्देवज्ज वा, कण्ण णास-णयणुगघायणं वा करेज्ज, एयं विरुवकरणं विरुवणं ॥५१५२॥

अथवा सण्णिहिते इमे दोसा -

तत्थेव य पडिबंधो, अदिट्ठ गमणादि वा अणेंतीए ।

एते अण्णे य तहि, दोसाओ होंति सण्णिहिए ॥५१५३॥

तत्थेव पडिमाए पडिबंधं करेज्जा, अदिट्ठे ति - लेप्पयसाभिणा अदिट्ठे वि इमे दोसा भवति ।

अथवा - सा वाणमंतरी बिगयकोउमा शागच्छति, तीए अणेंतीए सो पडिगमणादी करेज्ज ॥५१५३॥

ताओ पुण सण्णिहियपडिमाओ इमम्मि होज्जा -

कट्ठे पोत्ते चित्ते, दंतकम्मे य सेलकम्मे य ।

दिट्ठिप्पसे रूवे, खित्तचिचस्स भंसणया ॥५१५४॥

पुब्बद्धं कंठं । दिट्ठिणा पत्तं रुवं दृष्टमित्ययं । तेण रूवेण खित्तं चित्तं जस्स सो खित्तचित्तो, तस्स खित्तचित्तस्स यमत्तत्तणओ चारिसाओ जीवियाओ वा अंसो भवति ॥५१५४॥

તાસિં પુણ સણ્ણિહિયાણં દેવયાણં વિણ્ણવણં પડુચ્ચ ઇમો પગારો ભવો હોજ્જા—

સુહવિણ્ણપ્પા સુહમોહ્યા ય સુહવિણ્ણપ્પા ય હોતિ દુહમોયા ।

દુહવિણ્ણપ્પા ય સુહા, દુહવિણ્ણપ્પા ય દુહમોયા ॥૫૧૫૫॥

एतीए गाहाए चउभंगो गहितो ॥५१५५॥

તત્ય પદમભંગે ઇમં ઉદાહરણ —

સોપારયમ્મિ ણયરે, રણ્ણા કિર મગ્ગિઓ ય ણિગમકરો ।

અકરો ત્તિ મરણધમ્મો, બાલતવે ધુત્તસંજોગો ॥૫૧૫૬॥

સોપારયમ્મિ ણયરે જોગમો ત્તિ ણિણિયજ્ઞો વસતિ । તાણ ય પંચ કુદુ'બિયસયાણિ વસંતિ ।

तत्थ य राया मंतिणा वुग्गाहितो — “एते ह्वगकरं मग्गिज्जंति ।”

રણ્ણા મગ્ગિતા । તે ય ‘અકરે’ ત્તિ પુત્તાણુપુત્તિઓ કરો ભવિસ્સઈ, ણ દેમો ।

રણ્ણા મળિયા — ‘જતિ ણ દેહ, તો ઇમમ્મિ મિદ્ધે અગ્ગિપવેસં કરેહ’ । તત્તો તેહિ મરણ-ધમ્મો વવસિતો । ‘‘જ ય ણામ કરપવત્તિ કરેમો’’, સવ્વે અગ્ગિં પવિટ્ઠા । ॥૫૧૫૬॥

પંચસયમોગિ અગ્ગી, અપરિગ્ગહ સાલભંજિ સિદ્ધરે ।

તુહ મજ્જ ધુત્તપુત્તાઈ અવણે વિજ્જસીલણતા ॥૫૧૫૭॥

તેસિં પંચ મહિલસતાઈ, તાણિ વિ અગ્ગિં પવિટ્ઠાણિ । તાઓ ય બાલતવેણ પંચ વિ મયાઈ અપરિગ્ગહિયા જાતા । તેહિ ય ણિગમેહિં તમ્મિ ચેવ ણયરે સિદ્ધરં સમાધરં કારિયં । તત્થ પંચ સાલિભજિતા સતા । તે તેહિ દેવતેહિ ય પરિગ્ગહિતા ।

તાઓ ય દેવતાઓ ણ કોઈ દેવો ઇચ્છઈ, તાહે ધુત્તેહિં સહ સંપલગ્ગાઓ । તે ધુત્તા તસ્સંબધે મંડણં કાઝાઢત્તા, એસા ણ તુહં મજ્જ, ઇતરો વિ મળાતિ — મજ્જં ણ તુહં । જા ય જોણ ધુત્તેણ સહ અચ્છઈ સા તસ્સ સવ્વં પુવ્વભવં સાહતિ ।

તત્તો તે મળંતિ — હરે ! અમુગ્ગામધેયા એસ તુજ્જ માતા મળિણિ વા ઇદાણિ અમુગ્ગેણ સહ સંપલગ્ગા, તા ય એગમ્મિ પીતિ ણ વંધંતિ. જો જો પડિહાતિ તેણ સહ અચ્છંતિ । તં ચ સોઝં અયસો ત્તિ કાઝં વિજ્ઞાવાતિણં સ્વીલાવિયાતે ॥૫૧૫૭॥ મત્તો પદમ ભંગો ।

इदाणि तिण्णि वि भंगा एग्गाहाए वक्खाणेति —

વિતિયમ્મિ રયણદેવય, તઙ્ગ મંગમ્મિ સુહયવિજ્જાતો ।

‘ગોરી-ગંધારીયા, દુહવિણ્ણપ્પા ય દુહમોયા ॥૫૧૫૮॥

વિતિયમંગે રયણદેવતા ઉદાહરણ । અપ્પકલ્પિયત્તણતો કામાઝરત્તણઓ ય સા સુહવિણ્ણવણા, સવ્વસુહસંપાયત્તણઓ ય સા દુહમોયા ।

૧ ગધારાઈ, હર્યવિ પાઠ. ।

ततियभंगे सुइयविज्जाओ भवति - ताओ य णिच्चं सुइसमायारत्तणओ सव्वसुइदव्वपडि-
सेवणतो महिद्धियत्तणओ य दुहविण्णप्पाओ, तेसि उग्गत्तणतो णिच्चं दुरणुचरत्तणओ य छेहे य
सावायत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थभंगे गोरि-गंधारीओ भातंगविज्जाओ साहणकाले लोगगरहियत्तणतो दुहविण्ण-
वणाओ, जहिट्टकामसंपायत्तणओ य दुहमोया ॥५१५८॥ एवं चउत्थभंगो वक्खाओ ।

इदाणि तिविघपरिग्गहे गुरु लाघवं भणति -

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागतिथ कुडुबि डंडिए चेव ।

साहस असमिक्ख भए, इतरे पडिपक्ख पभुराया ॥५१५९॥

सीसो पुच्छति - “पायावच्च-कुडुबिय-डंडियपरिग्गहाण कत्थ गुरुतरो दोसो, कत्थ वा
अणत्तरो ?” एत्थ य भयणा भणति - पागतिथं गुरुतरं, कोडुबिय-डंडियं लहुतरं ।

कहं ?, उच्यते - सो मुखत्तणेण साहसकारी असमिक्खयकारी य, अणोसरत्तणओ य भयं ण
भवति । एव सो पागतिओ मारणं पि ववसेज्जा ।

“इयरे” ति कोडुबिय-डंडिया, ते पागतितस्स पडिपक्खभूतो ।

कहं ?, उच्यते - ते साहसकारी ण भवति, असमिक्खयकारी य ण भवति, पत्ता भवति, भयं च
तेसि भवति । ५१५९॥

इम -

ईसरियत्ता रज्जा, व भंसए मंतुपहरणा रिसओ ।

तेण समिक्खयकारी, अण्णा वि य सिं बहू अन्थि ॥५१६०॥

मन्तु कीको । एते रिसओ कीवपहरणा भवति, रुट्ठा य मा भं रज्जाओ ईसरत्तणओ य भंसंहिति,
अतो ते समिक्खयकारी भवति । अण्णं च तेसि अण्णाओ वि बहू पडिमाओ अत्थि, अतो तेसु अणादरा ॥५१६०॥
(अत्रोच्यते) -

अह्वा - “पत्थरो” ति अस्य व्याख्या -

पत्थारदोसकारी, णिवावराओ य बहुजणे फुसइ ।

पागतिओ पुण तस्स व निवस्म व भया ण पडिक्कुज्जा ॥५१६१॥

डंडियकोडुबिओ गुरुतरो, पागतितो लहुतरो । राया पहू, सो एगस्स अत्थस्स रुट्ठो संघे पत्थारं
करेज्जा, रायावकारी य बहुजणे फुसति, तेण सो गुरुतरो । पागतिवावराओ पुण बहुजणे ण फुसइ, अण्णं च -
पागतितो “तस्स” ति साहस्स “भया” तिवस्स भया पच्चवकारं ण करेति, एतेण वारणेण पागतितो
लहुतरो ॥५१६१॥

किं च -

अवि य हु कम्मदण्णा, ण य गुत्ती तेसि णेव दारिद्धा ।

तेण कयं पि ण णज्जति, इतरत्थ धुवो भवे दोसो ॥५१६२॥

ते पागतिता खेते खलादिसु कम्मकण्णिग्या पडिमाण उदंतं ण वहंति, तेण तत्थ कतो वि अवरारो
ण णज्जति, ण य तेसि संतियासु देवद्रोणोसु रक्खवालो भवति, ण वा दारपालो भवति । इतरत्थ सि राय-
कुडुबिएसु धुवो दोसो भवइ ॥५१६२॥

तुल्ले मेहुणभावे, णाणत्ताऽऽरोवणा य एमेव ।

जेण णिवे पत्थारो, रागो वि य वत्थुमासज्ज ॥५१६३॥

पागतिय-कुडुबिय-डंडिएसु तुल्ले मेहुणभावे अवरारह्णाणत्तणमो चेव पायच्छित्ते णाणत्तं । पायावच्च-
परिणहातो कोडुबियपरिणहे कालगुल्हा, डंडियपरिणहे तवगुल्हा भणित्ता । अण्णं च कोडुबिय-डंडिएसु
पत्थारदोसतो अधिकतरं पच्छित्तं ।

अह्वा — वत्थुविसेसमो रागविसेसो, रागविसेसमो पच्छित्तविसेसो भवइ ॥५१६३॥

जतो भणगति —

जतिभागगया सत्ता, रागादीणं तथा चपा कम्मे ।

रागादिविधुरता वि हु, पायं वत्थूण विहुरत्ता ॥५१६४॥

जारिसी रागभगमात्रा मंदा मध्या तोत्रा वा तारिसी मात्रा कर्मबंधो भवति ।

अह्वा — जावतिया रागविसेसा तावतिया कम्मामुभागविसेसा भवति — तुल्या इत्यर्थः ।

तेण भण्णति — जतियं भागं गता रागमात्रा । मात्राशब्दः परिमाणवाचकः । तन्मात्रः कर्मबंधो
भवतीत्यर्थः । "रागाइ विहुरया त्रि हु"—रागादिविधुरता नाम विषमत्वं । हु शब्दो यस्मादर्थः । यत्समुत्थो रागः
प्रतिमादिके तस्य यस्मात् प्रतिमादिवस्तुविधुरता तस्माद्वागादिविधुरत्वं भवति ॥५१६४॥

अयमन्यप्रकारः विधुरत्वप्रदर्शने —

रण्णो य इत्थिया खलु, संपत्तीकारणम्मि पारंची ।

अमच्छी अणवडुण्णो, मूलं पुण पागयजणम्मि ॥५१६५॥

रण्णो जा इत्थी सीए सह मेहुणसंपत्ती, एतेण मेहुणसंपत्तिकारणेण पारंचियं पायच्छित्तं । अमच्छिए
अणवट्टो । पागतिए मूलं । एयं पच्छित्ते णाणत्तं वत्थुणाणत्तामो चेव भणियं ॥५१६५॥ दिठ्ठं गयं ।

इदार्णि माणुस्स भण्णइ —

माणुस्सगं पि तिविहं, जहण्णयं मज्झमं च उक्कोसं ।

पायावच्च कुडुबिय, दंडिगपारिगहं चेव ॥५१६६॥

जहण्णादिगं तिविधं पुणो एक्केक्कं पायावच्चातिपरिणहे भाणियच्च ।

उक्कोस मा७-भज्जा, मज्झं पुण भहणि-धूयसादीओ ।

खरियादी य जहण्णा, पगयं सचि (जि) तेतरं देहे ॥५१६७॥

माता अप्पणो अणम्मो, अण्णस्स य तं ण देति, अतो तीए सह जं मेहुणे तिव्वरागज्झवसाणं
उप्पज्जति तं उक्कोसं ।

मज्जं अण्णस्स ण देति अतो तम्मि मुच्छितो उक्कोसं ।

मिदुणकावे भणिणी गम्मा । सेसकावे भणिणी, धूया य सव्वकालं धप्पणी भगम्मा, धणस्स तातो देति ति भतो ताहि सह जं मेदुणं तं मज्झिमं ।

सरिगादिषु मव्वजणसामण्णासु ण तिग्वाभिणिवेसो, भतो तं जहण्णं । इह माणुस्सदेहजुएण धकिारो, ण पडिमासु । तं देहं दुक्खं - सचेयणमचेयणं वा ॥५१६७॥

सामण्णतो देहजुए ठायंतस्स इमं -

१पढमिल्लुगम्मि ठाणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्धाता ।

छम्मासा २उग्धाया, वितिए ततिए भवे छेदो ॥५१६८॥

पढमिल्लुग ति जहण्णं, पायावच्चपरिगहितो जहण्णो ठाति ऋ ।

वितिए नि मज्झिमे पायावच्चपरिगहे ठाति फु ।

तत्तिवं नि उक्कोसं पायावच्चपरिगहे उक्कोसे ठाति छेदो ॥५१६८॥

ण भणियं कोविद छेदो, अतस्तज्ज्ञापनार्थमिदमुच्यते -

पढमस्स ततियठाणे, छम्मासुग्धाइओ भवे छेदो ।

चउमासो छम्मासो, वितिए ततिए अणुग्धातो ॥५१६९॥

एत्थ पढमदुणं पायावच्चपरिगहं, तस्स ततियं ठाणं उक्कोसयं, तत्थ जो सो छेदो सो छम्मासितो उग्धातितो णायव्वो । “चउमासो” पच्छद्धं अनयोस्तृतीयस्थानानुवर्तनादिदमुच्यते ।

वितिए ति कोटुबे उक्कोसे कोटुबपरिगहे चउगुरुमो छेदो ।

ततिए ति ढडियपरिगहे गुरुमो छम्मासिमो छेदो । अर्थादापन्नं कोटुबे जहण्णए मज्झिमए य जं चेव पायावच्चे, एवं चेव ढडिए वि जहण्णमज्झिमे ॥५१६९॥

पढमिल्लुगम्मि तवारिह, दोहि वि लहु होंति एए पच्छित्ता ।

वितियम्मि य कालगुरू, तवगुरुगा होंति ततियम्मि ॥५१७०॥

पढमिल्लुगं णाम पायावच्चपरिगहे दोणि आदित्ता तवारिहा, ते दो वि लहुया ।

वितिए ति कोटुबिए जे तवारिहा दोणि आदित्ता ते कालगुरू तवगुरु ।

ततिए ति ढडियपरिगहिए जे आदित्ता दोणि तवारिहा ते काललहू तवगुरू ॥५१७०॥

एवं ठाणपच्छित्तं । मणुएसु गतं ।

इदानीं पडिसेवणापच्छित्तं -

चतुगुरुगा छगुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति ।

छगुरुगा छेद मूलं, अणवदुप्पो य मज्झिमए ॥५१७१॥

१ प्रथमं नाम जवन्य मानुष्यरूपं, तत्र प्राजापत्यपरिगृहीतादौ भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्चत्वारोऽनुदाता मासक गुरव इत्यर्थः ।

द्वितीयं - मध्यमं, तत्रापि त्रिष्वपि भेदेषु षण्मासा अनुदत्ताः ।

तृतीयं - उत्कृष्टं, तत्र भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्चछेदो भवेत्, बृहत्कल्पे गा० २५१८ । २ ...ऽणुग्धाया, इति बृहत्कल्पे गा० २५१८ ।

છેદો મૂલં ચ તદ્વા, અણવદ્વપ્પો ય દ્વોતિ પારંચી ।

एवं दिद्वमदिद्वे, सेवंते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१७२॥

પાયાવચ્ચપરિગ્ગહે જહ્ણો અદિદ્વે ઃ ઃ । દિદ્વે ઃ ઃ ઃ ।

कोट्विए परिगहे जह्णो अदिद्वे ः ः ः । दिद्वे छेदो ।

હંડિયપરિગ્ગહે જહ્ણો અદિદ્વે છેદો । દિદ્વે મૂલં ।

पायावच्चपरिगहे मज्झिमे अदिद्वे छग्गुरुगा । दिद्वे छेदो ।

कोट्वियपरिगहे मज्झिमे अदिद्वे छेदो । दिद्वे मूलं ।

હંડિયપરિગ્ગહે મજ્ઞિમે અદિદ્વે મૂલં । દિદ્વે અણવદ્વો ।

पायावच्चपरिगहे उक्कोसए अदिद्वे छेदो । दिद्वे मूलं ।

कुट्वियपरिगहे उक्कोसए अदिद्वे मूलं । दिद्वे अणवद्वो ।

હંડિયપરિગ્ગહે ઉક્કોસએ અદિદ્વે અણવદ્વો । દિદ્વે પારંચિયં ।

अहंवा - पायावच्चे जह्णमज्झिमुक्कोसे अदिद्वदिद्वे सु चउगुरुगादि मूले ठायति ।

कोट्विए जह्णमादिगे छग्गुरुगादि अणवद्वे ठायति ।

હંડિયપરિગ્ગહે જહ્ણમાદિમે છેદાદિ પારંચિએ ઠાતિ ॥૫૧૭૨॥

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, वित्तिए अणवद्व तत्तिय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवद्व पारंची ॥५१७३॥ पूर्ववत्

आचार्य आह -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एककेक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं चिय आणादिणिप्फण्णं ॥५१७४॥ पूर्ववत्

તે ચેવ તત્થ દોસા, મોરિયઆણાએ જે મણિત પુલ્લિં ।

आलिंणणादि मोत्तुं, माणुस्से सेवमाणस्स ॥५१७५॥

તે ચેવ પુલ્લમણિતા અણવત્થાદિગા દોસા ભવંતિ । “તત્થ” તિ માણુસ્સે ।

चोदगेण चोदितं - “कील आणाए गुरुतरो ङंडो ?” आयरिएण मोरियआणाए दिद्वुतं काउं तित्तयकराणा गुरुतरी कता । एवं जहा पुल्लं मणियं तद्वा माणियल्लं ।

दिब्बे लेप्पणे आलिंणणभंगदोसा ते मोत्तुं सेसा दोसा माणुसं सेवमाणस्स सव्वे ते चેવ भाणिયव्वा

॥५१७५॥

इदमेव फुडतरमाह -

आलिंणंते हत्थादिभंजणे जे तु पच्छकम्मादी ।

ते इह गत्थि इमे पुण, णक्खादिविछेयणे स्या ॥५१७६॥

चेत्पणं धालिगंतस्स जे हत्यादिभंगे पच्छक्कमादिया दोसा भवति ते इह देहजुते ण भवति । इमे देहजुए दोसा भवति — इत्थी कामातुरत्तणओ णहेहि ता छिदेज्ज, दंतेहि वा छिदेज्ज, तेहि सो सूइज्जति सपक्षेण वा परपक्षेण वा जहा एस सेवगो ति ॥५१७६॥

माणुसीसु वि इमे चउरो विकप्पा —

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१७७॥

भंगचउक्कं कंठं ।

चउसु वि भगेसु जह्वक्कम्मं इमे उदाहरणा —

खरिया महिड्डिगणिया, अंतपुुरिया य रायमाया य ।

उभयं सुहविण्णवणे, सुमोय दोहिं पि य दुहाओ ॥५१७८॥

खरिया मव्वजणसामणं ति सुहविण्णवणा, परिपेलवसुहलवासादत्तणतो सुहमोया पटमभंगित्ता ।

महिड्डिगणिया वि गणिप्रत्तणतो चेव सुहविण्णप्पा जोव्वणरूवविबभमरूवादिभावजुत्तणतो य भाववत्तवेवकारिणि ति दुहमोया बितियभंगित्ती ।

नतियभगे अंतपुुरिया । तत्थ दुण्वेसं भयं च, अतो दुहविण्णवणा, अवायवहुलत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थे भगे रण्णे माता । सा मुरक्खिया भयं च सव्वस्स य गुरुठाणे पूयणिज्जति दुहविण्णवणा, सव्वसुहसंपायकारिणी अवाए य रक्खति जम्हा तेण दुहमोया । पच्छद्धे ण एते चेव जह्वक्कम्मं चउरो भंगा गहिया ॥५१७९॥

चोदगो पुच्छइ —

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागतिय कुडुंबि डंडिए चेव ।

साहस असमिक्खभए, इत् पडिपक्ख पशु राया ॥५१८०॥

कंठा पूर्ववत् । यत्तं माणुस्सगं ।

इदाणि नेरिच्छं —

तेरिच्छं पि य तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।

पायावच्च कुडुंबिय, दंडियपारिग्गहं चेव ॥५१८०॥

जहण्णगादिगं तिविहं, एक्केक्कं पायावच्चादित्तिपरिग्गहियं भागियच्चं ।

अतिगं अमिल्ला जहण्णा, खरि महिसी मज्झिमा वल्लभादी ।

गोणि कणेरुक्कोसं, पगतं सजितेतरं देहे ॥५१८१॥

इह इत्थावेक्खतो जहण्णमज्झिमुक्कोसगा ।

अधवा - अद्वयप्रमिलासु गिरपायसणतो सुहृपावगियासु ण तिव्वज्जकवसाओ भतो जहण्णं ।

खरि-महिसिमादियासु सावयासु ओ परिभोगज्जकवसाओ स तिव्वतरो भतो मज्झिमं ।

गोणि-कणेरुसु, कणेरुत्ति हत्थिणी, लोगगरहियसावयासु ओ अउक्कवसाओ तिव्वतरो भतो उक्कोसं ।

फरिसओ वा विसेसो भाणियवओ । तिरियाण वि पडिमासु णाधिकारो, देहेण अधिकारो । तं देहं दुविधं - सवेयणं अवेयणं वा ॥५१८१॥

सामण्णतो देहजुए इमं पच्छित्तं ठायमाणस्स -

चत्तारि य उग्घाया, जहण्णिणए मज्झिमे अणुग्घाया ।

छम्मासा उग्घाया, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१८२॥

पायावच्चपरिगहे जहण्णए ठाति ० ० । मज्झिमए ० ० । उक्कोसए ऋ । एवं चैव कोडुबिए डंडिए य ॥५१८२॥

इमो विसेसो -

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।

बितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होति तइयम्मि ॥५१८३॥

पढमिल्लुगं ठाणं पागतितं, बितियं ठाणं कोडुबियं, ततियं डंडियं, सेसं कंठं । ठाणपच्छित्तं मतं तिरिएसु ।

इदाणि तिरिएसु पडिसेवणापच्छित्तं -

चउरो लहुगा गुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति ।

चउगुरुगा छेद मूलं, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥५१८४॥

छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होइ पारंची ।

एवं दिट्ठमदिट्ठे, सेयंते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१८५॥

पायावच्चपरिगहे जहण्णए अदिट्ठे पडिसेवतस्स ऋ । दिट्ठे ऋ ।

कोडुबियपरिगहे जहण्णए पडिसेवतस्स अदिट्ठे चउगुरुं । दिट्ठे सेवतस्स छेदो ।

डंडिए जहण्णए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

पायावच्चपरिगहे मज्झिमए अदिट्ठे ऋ । दिट्ठे छेदो ।

कोडुबिए मज्झिमए य अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

डंडियपरिगहे मज्झिमपरिगहे अदिट्ठे मूलं । दिट्ठे अणवट्ठो ।

पायावच्चपरिगहे उक्कोसे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

कोडुबिए उक्कोसे अदिट्ठे मूलं । दिट्ठे अणवट्ठो ।

डंडिए उक्कोसे अदिट्ठे अणवट्ठो । दिट्ठे पारंचीयं । एवं पञ्चित्रं पसंगविरहियं भणियं ॥५१८६॥

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, चित्ति ए अणवट्ठ तइय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥५१८६॥ कंठा

आचार्याह -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा तत्थ होइ एक्केक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिष्फणं ॥५१८७॥ कंठा

ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुब्बिं ।

आलवणादी मोत्तुं, तेरिच्छे सेवमाणस्स ॥५१८८॥

पूर्ववत् पुब्बद्धं कंठ । माणुसिद्धीसु जहा आलवणविभ्रमा भवति तथा तिरिक्खीसु णत्थि । अतो ते आलवणादि तिरिक्खीसु मोत्तुं, सेसा आयसंजमविराहणादिदोसा सव्वे समवन्ति ॥५१८८॥

जह हास-खेड्ड-आकार-विभ्रमा होति मणुयइत्थीसु ।

आलावा य बहुविहा, ते णत्थि तिरिक्खइत्थीसु ॥५१८९॥ कंठा

विण्णवणे इमो चउभंगो -

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य, सुहविण्णप्पा य होति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१९०॥

चउभंगरयणा कंठा कायव्वा ॥५१९०॥

चउभंगे जहसखं इमे उदाहरणा -

अमिलादी उभयसुहा, अरहण्णगमादिमक्कडि दुमोया ।

गोणादि ततियभंगे, उभयदुहा सीहि-वग्घीओ ॥५१९१॥

पढमभंगे सुहगाहणे निरपायत्वात् सुहविण्णवणा, लोगगरहिय अप्पत्वाच्च सुहमोया ।

वितियभंगे वाणरिमादी रिउकाले कामातुरत्तणतो सुहविण्णप्पा, ताओ चेव जदा अणुरत्ताओ तदा दुहमोया । एत्थ विट्ठतो अरहण्णगो ।

ततियभंगे गोणादियाओ सपक्खे वि दुक्खं समानं इच्छति, किमंग पुण मणुए । अतो दुहविण्णवणा, लोगगरहियत्तणतो सुहमोया ।

चरिमभंगे सीहिमादियाओ जीवियंतकरीओ तेण दुहविण्णप्पाओ, ताओ चेव जया अणुरत्ताओ अणुबंधं ण मुयंति त्ति दुहमोया ॥५१९१॥

चोदगो पुच्छति - “को एरितो मधुमो भावो हुज्जा, जो तिरिक्खजोणीओ लोगगरहियाओ मसिजेज्जा” ?

आयरिओ आह -

जति ता सणप्फतीसू, मेहुणसन्नं तु पावती पुरिसो ।

जीवितदोच्चा जहियं, किं पुण सेसासु जातीसु ॥५१६२॥

सब्वे जे 'णहारा ते सणप्फया भण्णति; इह सोही वेतन्वा । जइ ताव सोहीसु जीवितंतकरीसु पुरिसो मेहुणं पावति. किं पुण सेसासु अमिळादिजातिसु ति ।

एत्थ दिट्ठतो - एक ता सोही खुडुलिया चेव गहिता, सा बंधणत्था चेव जोव्वणं पत्ता । रितुकाले मेहुणत्थी, सजातिपुरिसं अलभंती अहावत्तीती एक्केणं पुरिसेणं सागारियठाणे छिक्का, सा य चाडुं काउमाढत्ता, सा य तेण अप्पसागारिए पडिसेविता । तत्थ तेसि दोण्ह वि ससाराणु-भावतो अणुरागो जातो । तेण सा बंधणा मुक्का । सा तं पुरिसं घेतुं पलात्ता अडविं पविट्ठा । त पुरिमं गुहाए छोडुं अणेउं पोगले देति । सो वि तं पडिसेवति ॥५१६२॥ एवं पुरिसाण भणियं ।

इदाणि संजतीणं भणइ -

एसेव गमो गियसा, णिगंधीणं पि होति नायव्वो ।

पुरिसपडिमाओ ताप्ति, साणम्मि य जं च अणुरागो ॥५१६३॥

संजतीण वि एमेव सब्वं दटुव्वं, णवरं - लेप्पगे दिव्वपुरिसपडिमाओ । माणुसे मणुयपुरिसा । तेरिच्छे तिरियपुरिसा य दटुक्का ।

तेरिच्छे साणदिट्ठतो य कायव्वो -

एक्का अगारी अवाउडा काइय बोसिरंती विरहे साणेण दिट्ठा । सो य साणो पुच्छं 'लोसंतो चाडुं करंतो उच्चासणाए अल्लीणो । सा अगारी चित्तेइ - "पेच्छामि एस किं करेति" ति । सा तस्स पुरतो सागारियं अभिमुह काउं इत्थेहि जाणुएहि य अधोमुही ठिता । तेण सा पडिसेविता । तीए अगारोए तत्थेव साणे अणुरागो जातो । एवं मिग-छगल-वाणरादी वि अगारि अभिलसंति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा सागारिए ण वसियव्वं ॥५१६३॥

इमं बितियपदं -

अट्ठाणणिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिअण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, वसंति तो दव्वसागरिए ॥५१६४॥

अट्ठाणणिग्गय ति अट्ठाणप्रतिपन्नाः तिक्खुत्तो तिसि वारा अण्णं सुद्धं वसहिं मग्गियं । "असति ति अलभंता ताहे दव्वसागारियवसवीए जयणाए वसंति ।

का य जयणा ?, गीयसाइसु उच्चेण सदेण सज्जायं करंति, अणलद्धो वा अणं अयति ॥५१६४॥

इमो भावसागारियस्स अववातो -

अट्ठाणणिग्गयादी, वासे सावयभए व तेणभए ।

आवरिया तिबिहे वी, वसंति जतणाए गीयत्था ॥५१६५॥

१ गाहारा इत्थपि । २ बालंतो, इत्थपि पाठः ।

अतो गामादीण सुद्ववसहि अलभता बाहि गामस्स निवसंति । इमेहि कारणेहि — वासं वासति, ग्रहवा — बाहि सीहमादिसावयभयं, सरीरोवह्निणगभयं वा, ताहे अंतो चेव भावसागारिए वसंति । तत्थ तिविधा वि णडिमाओ दिव्वा साण्सा तिरिया य वत्थमादिहं यावरेति, अंतरे वा कडगविलिमिलि दंति । एव गीयत्था जयणाए वसंता सुज्झति ॥५१६५॥

बहुधा दव्वभावसागारियसंभवे इमं भण्णति —

जहि अप्पतरा दोसा, आभरणादीण दूरतो य मिगा ।

चिलिमिणि णिसि जागरणं, गीते सज्झाय-भाणादी ॥५१६६॥

अप्पतरदोसे गीयत्था ठायति, आभरणाउज्जभत्तादीण य अगीयत्था दूरतो ठविज्जति, तं दिसं अण्णा ठायति, अंतरे वा कडगविलिमिलि दंति, रातो य जागरणं करंति, गीयत्था इत्थिमादिगीतादिसंदेसु य सज्झाय करंति, भाणं वा भायति ॥५१६६॥

एसा खलु ओहेणं, वसही सागारिया समक्खाया ।

एत्तो उ विभागेणं, दोण्ह वि वग्गाण वोच्छामि ॥५१६७॥

ज पुत्तिइत्थोण सामण्णतो अविभागेण अक्खायं एस ओहो भण्णड । तेसं कंठ ।

इमो कप्पमुत्ते (प्रथमोद्देशके सूत्र २६, २७, २८, २९) विभागो भणितो —

णो कप्पइ णिग्गथाणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथाणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

णो कप्पति णिग्गथोणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथोणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ॥५१६८॥

एसेव सुत्तकमो इमो भणितो —

समणाणं इत्थीसुं, ण कप्पति कप्पती य पुरिसेसुं ।

समणीणं पुरिसेसुं, ण कप्पति कप्पती थीसुं ॥५१६९॥ कंठा

इत्थीसागारिए उवस्सयम्मि सच्चेव इत्थिगा होती ।

देवी मणुय तिरिक्खी, सच्चेव पसज्जणा तत्थ ॥५१७०॥

जाए इत्थीए सागारिए उवस्सए ण कप्पइ वसितं सा इत्थी भाणियव्वा, अतो भण्णति — सच्चेव इत्थिया होइ जा हेट्ठा णंतरमुत्ते भणिता, ता य देवी मणुस्सी तिरिक्खी । एतासु ठियस्स तं चेव पणितं, ते चेव आयसंजमविराहणादोसा, सच्चेव पसज्जणापसज्जणवच्छित्तं, तं चेव जं पुव्वमुत्ते भणियं ॥५१७०॥

चोदगाह —

जति सच्चेव य इत्थी, सोही य पसज्जणा य सच्चेव ।

सुत्तं तु किमारद्धं, चोदग ! सुण कारणं एत्थं ॥५२००॥

अइ सत्वं चेव तं जं पुव्वमुत्ते भणियं, तो विमिह पुण इत्थसागारियसुत्तसमारंभो ?

आचार्य आह — हे चोदग ! एत्थ कारणं सुणसु —

पुव्वभणितं तु जं एत्थ, भण्णती तत्थ कारणं अत्थि ।

एडिसेहे अणुण्णा, कारणविसेमोवल्लंभो वा ॥५२०१॥

पुव्वद्धं कंठं । जे पुव्वं अणुजाणतेण अत्था भणिता ते चेवअये एडिसेवतो भणइ, ण दोसो ।

अहवा — जे पुव्वं एडिसेवतो अत्था भणिता, ते चेव अणुण्णं करेत्तो दसेति, ण दोसो ।

अहवा — “कारणं” ति हेउं दरिसेत्तो भणाति, ण दोसो ।

अहवा — विसेमोवल्लंभ वा दरिसेत्तो पुव्वभणियं भणाति, ण दोसो ॥५२०१॥

किं च —

ओहं मच्चणिमेहो, सरिमाणुण्णा विभागमुत्तेसु ।

जयणाहेतुं भेदो, तह मज्झत्थादयो वा वि ॥५२०२॥

ओहमुने सामण्यतो सच्चं चेव णिनिद्धं, विभागमुत्ते पुण सपक्खे अणुण्णा, जहा पुरिसाण पुरिससागारिण कप्पन्ति, इत्थीणं इत्थीमु कप्पइ ।

अहवा — जयणा जहा पुरिसेसु इत्थीसु वा कता त दरिसेतेण विभागमुत्ते भेदो कत्तो ।

अहवा — पुरिसेसु इत्थीसु य मज्झत्थादयो विसेसा दसेहामि ति विभागमुत्तनमारंभो ।

अथवा — अणंतमुत्ते सागरिय अत्थमो भणिय । इह पुण त चेव मुत्तेण णियमंति, विसे — गीतल्लंभो वा इमो पुरिस-नपुंसक इत्थीसु ॥५२०२॥

तत्थ पुरिसेसु इमं —

पुरिससागरिण उवस्सयम्मि चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

ते वि य पुरिसा दुविहा, सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

जइ पुरिससागरिण उवस्सए ठाति तो चउलहुअं । ते य पुरिसा दुविधा — सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

तत्थ सविकारा इमे —

रूवं आभरणविहिं, वत्था-उल्लंकार-भोयणे मंथं ।

आओज्ज णट्ठ णाडग, गीण य मणोरमे सुणिया ॥५२०४॥

तत्थ रूवं उद्धतंनस्तानजपास्वेदकराणहृदतवाप्तसठावणादियं, आभरणवत्थाणि वा णाणादेसियाणि विविहाणि परिदेति, आभरणमत्तादिणा वा अलंकरणेण अलंकरेति, भोयणं वा विभवेण विसिट्ठं भुज्जति, मज्जादि वा विवति, चउणकुसुमकोट्टपुडादोहि वा गवेहिं अत्थाणं आलिपेति, वामेति वा, धूवेति वा, तथादि वा चउल्लव्वहमाओज्जं वादेति, णव्वंति वा, णाडग णाडेति, मणोहारि वा मणोरम मेयं करेति, रूवादि वा दट्ठ मंथे य मणोहरे अग्घाएत्ता गीयादिए य सदे सुणिता जत्थ मंथो तत्थ रसो वि । एवमादिएहि ईदयअत्थेहि धुत्तभोगिणो सत्तिकरणं, अमुत्तभोगिणो कोत्तुअं, एडिगमणदयो दोसा ॥५२०४॥

१ चउरो लहुगा य दोस धाणादी, इति बृहत्कल्पे गा० २५५६ ।

एतेसु ठायमाणस्स इमं पच्छित्तं -

एक्केक्कम्मि य ठाणे, चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

आणाइणो य दोसा, विराहणा संजमाऽऽताए ॥५२०५॥

एतेसु रुक्कामरणपिसु एक्केक्के ठायमाणस्स चउलहुया ॥५२०५॥

एवं ता सविगारे, णिव्वीगारे इमे भवे दोसा ।

संसहेण विवुद्धे, अहिगारणं सुत्तपरिहाणी ॥५२०६॥

पुव्वद्धं कठं । साधूणं सम्भयसद्देणं आवस्सियणिसीहियसद्देण वा रतो सुतादि बुज्जेग्गहा ततो अधिकरणं भवति । अद्द अधिकरणभया सुत्तत्थपरिसोओ ण करेति तो सुत्तत्थपरिहाणी भवति ।

अहवा - “अधिकरणे” ति - साधू काइयादि णिण्हित्ता पविसंता वा आवडेज्ज वा पवडेज्ज वा णिसीहियादिसद्देण वा गिहत्था विवुद्धा रोस करेज्जा, ततो अधिकरण उत्तरतरतो भवेज्ज । अधिकरणेण या विट्ठापिट्ठि करेज्ज । ततो आभविआहणा सुत्तत्थपरिहाणी य भवति ॥५२०६॥

अधवा - “अधिकरणे” ति पदस्य इमा व्याख्या -

आउज्जोवण वणिए, अगणि कुडुंवि कुक्कम्म कुम्मरिए ।

तेणे मालागारे, उब्भामग पंथिए जंते ॥५२०७॥

अह्हा एते दोसा तम्हा एएसु पुरिसेसु वि ण ठायव्वं ॥५२०७॥

चोदगो भणति -

एवं सुत्तं अफलं सुत्तणिवातो उ असति वसहीए ।

गीयत्था जयणाए, वसंति तो पुरिससागरिए ॥५२०८॥

आयरिओ भणति - सुत्तणिवाओ विमुद्धवसहीए असद्द पुरिसाण जं पुरिससागारियं तं दव्वसागारियं, तत्थ गीयत्था जयणाए वसंति ॥५२०८॥

ते वि य पुरिसा दुविहा, सन्नी य असन्निणो य बोधव्वा ।

मज्झत्थाऽऽभरणपिया, कंदप्पा काहिया चेव ॥५२०९॥

ते पुरिसा दुविहा - असन्निणो सन्निओ य । जे सन्निओ ते चउव्विहा - मज्झत्था आभरणपिया कंदपिया काहिया य । ॥५२०९॥

इमे आभरणपिया -

आभरणपिए जाणसु, अलंकरेते उ केसमादीणि ।

सहरहसिय-प्पललिया, सरीरकुइणो उ कंदप्पा ॥५२१०॥

पुव्वद्धं कठं । इमे कदपिया - “सहर” पच्छद्धं । सहरं ति पुशभिरनिवार्यमाणाः स्वेच्छया हसन्ति, अनेकक्रीडासु अंदोलकादिदप्पललिया घेइणो इव घणैगसरीरकिरियाओ करेतो कंदप्पा भवति ॥५२१०॥

इमे य काहिया -

अक्खातिगा उ अक्खाणमाणि गीयाणि छलियकब्बाणि ।

कहयंता उ कहाओ, तिसमुत्था काहिया होति ॥५२११॥

तरंगवतीमादिअक्खातियाओ अक्खाणमा धुलक्खाणगा, पदाणि ध्रुवमादियाणि कहिति । जे तेमि वण्णा सेतुमादिया छलियकब्बा, वसुदेवचरियचेडगादिकहाओ, धम्मत्थकामेसु य घण्णाओ वि कहाओ कहेना काहिया भवति ॥५२११॥

एएमि तिण्हं पी, जे उ विगाराण बाहिरा पुरिसा ।

वेरगगर्हं णिहुया, निसग्गहिरिमं तु मज्झत्था ॥५२१२॥

वेरणं रुच्चति जेमि ते वेर (२) गगर्हं, करचरणिदिएसु जे सत्या अज्झंति ते णिहुया, निसग्गो नाम स्वभावः हिरिमं जे सत्त्वजा इत्यर्थः । एवविहा मज्झत्था ॥५२१२॥

पुणो एतेसि इमो भेदो -

एक्केक्का ते तिविहा, थेरा तह मज्झिमा य तरुणा य ।

एवं सन्नी बारस, बारस अस्सण्णिणो होति ॥५२१३॥

मज्झत्था तिविधा - थेरा मज्झिमा तरुणा । एवं आभरणणिया वि कंदप्पिया वि क हिया वि निविधा । एवं एते बारसविधा सण्णिणो । एवं भसण्णिो वि बारसविधा कायब्बा ॥५२१३॥

पुरिससागारियस्स अलंभे, कदाति णपु सगसागारिओ उवस्सओ लभेज्जा, तत्थ वि इमो भेदो -

एमेव बारसविहो, पुरिस-णपुंसाण सण्णिणं भेदो ।

अस्सण्णीण वि एवं, पडिसेवम अपडिसेवीणं ॥५२१४॥

एमेव अवधारणे, जहा पुरिसाणं भेदो बारसविहो तथा सण्णीणं असण्णीणं च णपुंसाणं बारसभेदा कायब्बा ।

ते सत्थे वि समासतो दुविधा दट्ठब्बा - इत्थिगेवत्थिया पुरिसगेवत्थिया य ।

जे पुरिसगेवत्था ते दुविधा - पडिसेवी य अपडिसेवी य ।

जे इत्थिगेवत्थिया ते णियमा पडिसेवी ॥५२१४॥

एवं विभागेसु विभत्तेसु इमं पच्छिन्नं भण्णति -

काहीया तरुणसुं, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणानं ।

सेमेसु वि चउलहूगा, समणानं पुरिसवग्गम्मि ॥५२१५॥

सण्णीणं एक्को काहियतरुणो, अमण्णीण वि एक्को, एते दोण्णि । जे पुरिसणपुंसो पुरिसगेवत्थं-अपडिसेवगा तेसु वि सण्णिभेदे एक्को काहियतरुणो तेसु जे । अमण्णीणभेदे वि एक्को, एते वि दो । एते दो दुग्गा चउरो । एतेसु चउसु काहियतरुणेषु ठायमाणानं एते चउगुरुगा, सेससु चोयात्तीसाए भेदेसु ठायमाणान पत्तंयं चउलहूगं । एवं पच्छिन्नं पुरिसवग्गे भणियं णिककरणओ ठायमाणानं ।

कारणे पुण इयाए विवीए ठायमाणा सुज्झन्ति -- “असति वसहीए” त्ति ॥५११५॥

सण्णीसु पढमवग्गो, असति असण्णीसु पढमवग्गम्मि ।

तेण परं सण्णीसुं, कमेण अस्सम्मिस्सु चेव ॥५२१६॥

सण्णीणं पढमवग्गे मज्झत्था ते तिविधा, तत्थ पढमं येरेसु ठाति, येरासति मज्झिमेसु, तेसऽसति तरुणेषु ठाह ।

सण्णीणं पढमवग्गासति ताहे असण्णीणं पढमवग्गे येर-मज्झिम-तरुणेषु कमेण ठाति ।

तेसि असतीए सण्णीणं बितियवग्गे येर-मज्झिम-तरुणेषु ठायन्ति । तेसि असइ सण्णीसु चेव तइयवग्गे येर-मज्झिम-तरुणेषु ठायन्ति ।

तेसि असइ सण्णीसु चेव काहिएसु येर-मज्झिमेसु ठायन्ति ।

ताहे असति सण्णीणं असण्णीसु बितियवग्गाओ कमेण एवं चेव जाव काहिय-मज्झिमाणं असतीए ताहे सत्रीसु काहिय-तरुणेषु ठायन्ति, ते पणमविज्झन्ति जेण कहाओ ण कहेति ।

तेसि असति असण्णीसु वि काहिय-तरुणेषु ठायन्ति, ते वि पणमविज्झन्ति ॥५२१६॥ पुरिसेसु एम पच्छित्तं ठायथ्वं, जयणा य भगिया ।

इदाणि णपुंसगेसु भण्णन्ति-

जह चेव य पुरिसेसु, सोही तह चेव पुरिसेवेसेसु ।

तेरासिएसु सुविहित, पडिसेवगअपडिसेवीसु ॥५२१७॥

जह चेव पुरिसेसु सोधी भगिता तह चेव णपुंसेसु पुरिसेवेसगेसु अपडिसेवेसु पडिसेवेसु वा भाणियव्वा । ठायव्वे वि जयणाविधी तह चेव भाणियव्वा ॥५२१७॥

जह कारणम्मि पुरिसे, तह कारणे इत्थियासु वि वसन्ति ।

अद्धान-वास-सावय-तेणेसु वि कारणे वसन्ति ॥५२१८॥

जह पुरिससागारिगे कारणेण ठाह तहेव कारणं भवन्विज्जुग इत्थिसागारिए वि जयणाए ठायन्ति वसन्तीत्यर्थः । अद्धानादिणिगया सुद्धवसहिं अणतरदोसवसहिं वा तिक्खुत्ते मग्गितं भलमन्ता इत्थिसागारिए वसन्ति । इमेहि कारणेहि पडिबद्धं वासं पडइ, बाहि वा सावयभयं, उवधिसरीरतेणभयं वा । इत्थिसागारिए वि बारस भेदा जहा पुरिसेसु । असण्णिक्खीसु वि बारस, इत्थिवेसणपुंसेसु सण्णीसु वि बारस, तेसु चेव असण्णीसु वि बारस ॥५२१८॥

इमं पच्छित्तं --

काहीता तरुणीसुं, चउसु वि मूलं ठायमाणाणं ।

सेसासु वि चउगुरुगा, समणाणं इत्थिवग्गम्मि ॥५२१९॥

सण्णिकाहिकतरुणी, असण्णिकाहिकतरुणी, इत्थिवेसणपुंससण्णिकाहिकतरुणी, ना चेव असण्णिकाहिकतरुणी, एयासु चउसु वि जइ ठायन्ति तो मूलं । सेसासु सण्णि-असण्णिजुसु वा वीसाए इत्थीसु चउगुरुगा । एयं समणाणं इत्थिवग्गे ठायन्ताणं पच्छित्तं ॥५२१९॥

जह चेव य इत्थीसु, सोही तह चेव इत्थिवेसेसु ।

तेरासियसु सुविहिय, ते पुण णियमा उ पडिसेवी ॥५२२०॥

जहा समणाणं इत्थीसु ठायमाणाणं सोधी भणिया तह चेव इत्थिवेसेसु णवसनेसु ठायताण सोधी भाणियन्वा, जेण ते णियमा पडिसेवी । ५२२०॥

इमा तासु ठायव्वे जयणाविधी -

एमेव होइ इत्थी, बारस सण्णी तहेव अससण्णी ।

सण्णीसु पढमवग्गे, असति असण्णीसु पढममि ॥५२२१॥

जहा पुरिसेसु भेदा एवं इत्थीसु वि सण्णीसु बारस भेदा, असण्णीसु वि बारस । एयासु ठायव्वे जयणा "सण्णीसु पढमवग्गे" ति, मज्झिमसूत्रे धेरमज्झिमनरुणीसु, अमति तेसि असण्णीसु । पढमवग्गे अमति तेसि सण्णीसु वित्तियवग्गे । अमति तेसि असण्णीसु वित्तियवग्गे ॥५२२१॥

एवं एककेवक तिगं, वोच्चत्थगमेण होइ विण्णेयं ।

मोत्तूण चरिम सण्णीं, एमेव नपुंसएहिं पि ॥५२२२॥

आहरणप्पियाणं असण्णीण अमति सण्णीसु कंदप्पियासु तत्तियवग्गे ठाति ।

तेसि असति असण्णीसु कंदप्पियासु, तेसि असति सण्णीसु काहियासु धेरमज्झिमासु ।

तेसि असति असण्णीसु काहियासु धेरमज्झिमासु । ततो सण्णीसु तरुणीसु । ततो असण्णीसु तरुणीसु । एवमेव इत्थियणुवेसु वि ठायव्वे जयणा भाणियन्वा ॥५२२२॥ एस पुरिसाण पुरिसेसु इत्थीसु य सोधी ठायव्वे जयणा भणिता ।

इदाणि इत्थीणं पुरिसेसु य सोधी ठायव्वे जयणा भणति -

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ णायव्वो ।

जइ तेसि इत्थियाओ, तह तासि पुमा सुणेयव्वा ॥५२२३॥

पुव्वद्धं कंठा । जहा तेसि पुरिसाणं इत्थीओ पुरुगाओ तहा तेसि इत्थियाणं पुरिसा गुरुगा सुणेयव्वा ॥५२२३॥

इत्थियाणं इमं सपक्खे पच्छित्तं -

काहीतातरुणीसुं, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणीणं ।

सेसासु वि चउलहुगा, समणीणं इत्थिवग्गम्मि ॥५२२४॥

पूर्ववत् कंठा । णवरं - इत्थियाओ भाणियन्वाओ ॥५२२४॥

इमं पुरिसेसु ठायमाणीणं पच्छित्तं -

काहीगातरुणेसुं, चउसु वि मूलं तु ठायमाणीणं ।

सेसेसु वि चउगुरुगा, समणीणं पुरिसवग्गम्मि ॥५२२५॥

पूर्ववत् कंठा । णवरं - इत्थियाओ पुरिसेसु वत्तव्वा ॥५२२५॥

अधवा - इमो अण्णो पायच्छित्तादेसो, सण्णीसु बारससु असण्णीसु य बारससु -

थेरातितिविह अधवा पंचग पण्णरस मासलहुओ य ।

छेदो मज्झत्थेरादिसु, काधिगतरुणेसु चउलहुगा ॥५२२६॥

मज्झत्थे येरे पंच राइदिया छेदो ।

मज्झत्थे मज्झिमे पण्णरस राइदिया छेदो ।

मज्झत्थे तरुणे मासलहु छेदो । एवं आभरणकदप्पेसु वि, काहिएसु वि घेरमज्झिमेसु एवं चेव, णवरं - काहिगतरुणेसु चउलहुछेदो । असण्णीण वि बारस विकप्पे एवं चेव ॥५२२६॥

सण्णीसु असण्णीसुं, पुरिस-णपुंसेसु एव साहूणं ।

एयासुं चिय थीसुं, गुरुगो समणीण विवरीओ ॥५२२७॥

सण्णिअसण्णीण विकप्पेसु चउवीस। पुरिसणपुंसेसु, एवं चेव इत्थीसु वि, एयासु चेव चउवीसभेदासु इत्थिवेसधारीसु य णपुंसेसु चउवीसविकप्पेसु एम चेव छेदो एवं चेव दायव्वो, णवरं - गुरुगो कायव्वो । “समणीण विवरीओ” ति समणीण समणीपक्खे जहा पुरिसाणं पुरिसपक्खे, तासि पुरिसपक्खे जहा पुरिसाणं इत्थिपक्खे ॥५२२७॥

जे भिक्खु सउदगं सेज्जं उवागच्छइ, उवागच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

सउ उदण सउदया, उपेत्य गच्छति उपागच्छति, साइज्जणा दुविहा - भणुमोयणा कारावणा य, तिसु वि ङ्कु ० ० ।

अह सउदगा उ सेज्जा, जत्थ दगं जा य दगसमीवम्मि ।

एयासिं पत्तेयं, दोण्हं पि परूवणं वोच्छं ॥५२२८॥

अपेत्ययं निपातः, सागारिय अणतरभेदप्रदर्शने वा निपतति । “जत्थ दगं” ति पाणियघरं प्रपादि, जाए वा सेज्जाए उदगं समीवे वप्पति । जा उदगसमीवे सा विट्ठु उ ताव जत्थ उदगं तं ताव परूवेमि ॥५२२८॥

जत्थ णाणाविहा उदया अच्छंति इमे -

सीतोदे उसिणोदे, फासुमप्फासुगे य चउभंगो ।

ठायंते लहु लहुगा, कीस अगीयत्थसुत्तं तु ॥५२२९॥

सीतोदगं फासुयं, सीतोदगं अफासुयं ।

उसिणोदगं फासुयं, उसिणोदगं अफासुयं ।

पढमभगे उसिणोदग सीतीभूतं वाउलोइगादि वा, नितियभगे सच्चित्तोदगं चेव ।

ततियभगे उसिणोदगं उव्वत्तडंडं, चउत्तभगे तावोदगादि ।

पढमततियभगे ठायंतरस मासलहुं । नितियचउत्थेसु चउत्तहुं ।

एयं कस्स पच्छित्तं ?

आयारिओ भणइ - एयं अगीयस्स पच्छित्तं ॥५२२९॥

फासुगस्स इमं वक्खणं -

सीतितरफासु चउड्ढा, दब्बे संसद्धमीसमं खेत्ते ।

कालतो पोरिसि परतो, वण्णादी परिणतं भावे ॥५२३०॥

जं सीतोदगं फासुयं, “इयर” इति जं च उण्होदगं फासुयं, तं चउड्विहं - दब्बधो खेत्तघो कालघो भावघो य ।

दब्बधो जं गोरससद्धे भावणे छूडं, सीतोदगं तं तेण गोरसेण परिणमितं दब्बतो फासुयं ।

खेत्तघो जं कूबतलागाइसु ठियं मधुरं लवणेण मीसिज्जति लवणं वा मधुरेण ।

कालतो जं इधगे छूडे पहरमेत्तेण फासुगं भवति ।

जं वण्णगंधरसफरिसविप्परिणयं भावतो जं (तं) फासुयं वुत्तं ॥५२३०॥

“जो भग्गीयत्थो भिक्खू ठाति तस्स एयं पच्छित्तं” ।

एत्थ चोदगो चोएति -

णत्थि भग्गीयत्थो वा, सुत्ते गीओ व कोइ णिदिट्ठो ।

जा पुण एगाणुण्णा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५२३१॥

“गीतो भगीतो वा सुत्ते ण भणतो । जं पुण एगस्स गीयत्थपक्खस्स भण्णं करेह, भग्गीयपक्खस्स पडिसेहं करेह, एस (एत्थ) तुज्जं चेव स्वेच्छा, ण तित्थगरभणियं ।

अथवा - किं वा कारणं, जं गीयस्स भण्णो, भग्गीयस्स पडिसेहो ॥५२३१॥

आयरिओ भणति -

एतारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिदिट्ठो ।

अज्जोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५२३२॥

पुण्वड्ढं कठं । जग्घा य भगीतो कारणं अकारणं वा जयणं अजयणं वा ण याणति तेण भगीते पच्छित्तं । भण्णं च सुत्ते एतयो अज्जोकडो भणिओ ति, अविसेसितो, तं अविमिट्ठं अत्थं आयरिओ “उवेहति” उत्प्रेक्षते विशेषयतीत्यर्थः । जहा एगातो पिडाओ कुलालो भण्णे घडादिकूवे घडेति एवं आयरिओ एगाओ सुत्ताओ भण्णे अत्थविगल्हे दसेति ।

अथवा - जहा अथगारे अप्पणासिते संता वि घडादिया ण दिसंति एवं सुत्ते अत्थविसेसा, ते य आयरियपदीवेण जदि पणासिता भवन्ति तदा उवलब्भन्ति ॥५२३२॥

किं च -

जं जह सुत्ते भणियं, तद्देव तं जति वियारणा णत्थि ।

किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं ॥५२३३॥

जति सुत्ताभिहिते विचारणा ण कज्जति तो कालियसुत्तस्स अनुप्रोगपोरिभीकरणं किं दिट्ठं दिट्ठिप्पहाणेहिं ?, दिट्ठिप्पहाणा जिणा गणहरा वा । अतो अनुप्रोगकरणओ कज्जति - जहा मूत्रे बहू अत्थपदा, ते य आयरिएण निगदित्ता ति ॥५२३३॥

किं च -

उत्सग्गसुयं किंची, किंची अववाइयं मुण्येयव्वं ।

तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुण्येयव्वा ॥५२३४॥

किं चि उत्सग्गसुत्तं । किं चि अववादसुत्तं । किं चि तदुभयसुत्तं । तं दुविहं, तं जहा - उत्सग्गव-
वादियं, अववादसुत्तमियं । एते सुत्तगमा - सूत्रप्रकारा इत्यर्थः ।

अथवा - सुत्तगमा द्विरभिहितो गमः, तं जहा - उत्सग्गसुत्तमियं अववादाववादियं चेति ।

एते वि ह्य सुत्तगमास आयरिएण बोधिता णज्जति ॥५२३४॥

इमो वा सुत्ते अत्थपडिवधो भवति -

‘ण्येमु एगगहणं, सलोम णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।

विहिभिण्णस्स य गहणे, अववादस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३५॥

इमो अण्णाणुपव्वीए एतेमि सुत्ताणं अत्थो दंसिज्जति - ‘विधिभिण्णस्स य’ पच्छदं । “कप्पति
णिग्गंधीणं पक्के तालपल्लवे भिण्णे पडिग्गाहित्तए से वि य विधिभिण्णे, णो चेव णं अविधिभिण्णे,”
अववादेण गहणे पत्ते जं अविधिभिण्णस्स पडिसेहं करेइ, एस अववादे उत्सग्गो ॥५२३५॥

अववादाणुण्णाय कहां पुणो पडिसिज्जति ?

अतो भणति -

उत्सग्गठिई मुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जयं लहइ ।

ण य तं होइ विरुद्धं, एमेव इमं पि पासामो ॥५२३६॥

ठाणं ठितो, उत्सग्गस ठिई उत्सग्गठिई - उत्सग्गस्थानमित्यर्थः । उत्सग्गठाणेषु जं चेव दव्वं
कप्पति त चेव दव्वं असत्तण्ये जम्हा विवज्जयं लभति । “विवज्जतो” विवरीयता - असुद्धमित्यर्थः । तं
असुद्धं गुणकरेति वेपत्तं ण विरुद्धं भवति । “एमेव इमं पि पासामो” ति अववादाणुण्णाय अविधिभिण्णे
दोषद्वयं जतो भवति, तेण पुणो पडिसेहो कज्जइ - ण दोष इत्यर्थः ॥५२३६॥

उत्सग्गे गोयग्ग्मी, णिसिज्जकप्पाज्जवायओ तिण्हं ।

ममं दल मा अट्ठिं, अववाउत्सग्गियं सुत्तं ॥५२३७॥

इमं उत्सग्गसुत्तं - “णो कप्पति णिग्गंधीणं वा णिग्गंधीणं वा अंतरिगहंसि आसइत्तए वा
जाव काउत्सग्ग वा ठाणं ठावित्तए वा” ।

अहया - “गोयग्गपविट्ठो उ, ण णिसीएज्ज कत्थति ।

कहं च ण पवधिज्जा, विट्ठिता ण व सज्जण” ।

इमं अववादिकं - “अथ पुण एवं जाणेज्जा - जुण्णे वाहिणं तवस्सि दुब्बले किलंते
मुद्धं वा पवडेज्जवा एव ण्हं कप्पति अंतरिगहंसि आसइत्तए वा जाव उत्सग्गठाणं ठावित्तए” ।

१ गाल ५२३५ । २ दण० अ० ५ उ० ७ गाल ७ । ३ दण० अ० ६ गाल ६० ।

अथवा - "तिष्ठमण्णतरागस्स, णिसेज्जा जस्स कप्पति ।

जरए अभिभूयस्स, ब्राहिगस्स तवस्सिणो ॥६०॥

इमं प्रववादुस्समिगं - "बहुप्रद्वियं पोग्गलं अभिमिसं वा बहुकंउयं ।" एवं प्रववादतो गिण्हतो मणाति - "मंसं दल मा अद्विय" ति ॥५२३०॥

अथवा -

णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।

कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्समं ॥५२३८॥

"णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा आमे तालपल्लवे अभिण्णे पडिग्गाहितए" (बृह० उ० १ सू० १) एयं उस्समिगं । "कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा आमे तालपल्लवे भिण्णे पडिग्गाहितए", (बृह० उ० १ सू० २) एयं प्रववादयं । पच्छद्द कंठं ।

२पूर्वोक्त इमं उस्समगाववाइयं - "णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा रातो वा विद्याले वा सेज्जासंधारए पडिग्गाहितए, ॥ णऽण्णत्थेगेणं पुव्वपडिलेहिणं सेज्जासंधारएण" । (बृह० उ० ३ सू० ४२, ४३)

इमं उस्सम्युस्समिगं । "जे भिक्खू असणं वा पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा (ङ्कु) पढमाए पोरिसंए पडिग्गाहेता पच्छिमं पोरिसिं उवातिणावेति, उवातिणावेत वा सातिज्जति; से य आहव उवातिणाविते सिया जी तं भुजति भुजतं वा सातिज्जति ।" (बृह० उ० ४ सू० १६)

इमं प्रववादाववादियं । जेसु प्रववादो सुत्तेसु निबद्धो तेसु चैव सुत्तेसु प्रत्यतो पुणा अणुणा पवत्ति, ते प्रववादाववादियं । सुत्ता, जतो सा वितियाणुणा सुत्तरयाणुगता इति ।

इदार्णि ३वितियागाहाए पुव्वद्धस्स इमं वक्खाणं -

अण्णेसु सुत्तत्थेसु वेत्तव्वेसु एगस्स प्रत्यस्स गहणं करेति, जहा जत्थ सुत्ते पाणातिवातविरतिग्गहणं तत्थ सेसा महव्ववया प्रत्यतो वट्ठवा । एवं कसायइदियमासवेसु वि भाणियव्व ।

इमे पत्तेयसुत्ता -

णो कप्पति णिग्गंथाणं अलोमाइं चम्माइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा । ()

कप्पइ णिग्गंथाणं सलोमाइं चम्माइं धारित्तए वा परिहित्तए वा । (बृह० उ० ३ सू० ४)

णो कप्पति णिग्गंथीणं सलोमाइं चम्माइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा । (बृह० उ० ३ सू० ३)

कप्पति णिग्गंथीणं अलोमाइं चम्माइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा । ()

इमं सामण्यसुत्तं ।

णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा कसिणाइं चम्माइं धारित्तए वा परिहित्तए वा ।

कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अकसिणाइं चम्माइं धारित्तए वा परिहित्तए वा ।

(बृह० उ० ३ सू० ५-६) ॥५२३८॥

किं चान्यत् -

कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं ।

उक्कम-कमजुत्ताइं, कारणवसतो निउत्ताइं ॥५२३९॥

१ दश० अ० ५ उ० १ गा० ७३ । २ गा० ५२३४ । ३ गा० ५२३५ ।

अस्य व्याख्या -

देसगहणे बीएहि स्रइया मूलमाइणो होंति ।

कोहाति अणिगहिया, सिंचति भवं निरवसेसं ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्रे देशग्रहणं करोति, जहा कप्पस्स पढमसुत्ते पल्लवगहणातो सेसवणस्सइमेदा मूल-कंद-
खंभ-तया-साह-पसाह-पत्त-पुष्फ-बीया य गहिया । बीयगहणातो वा लेसा दट्ठम्वा ।

इम निरवसेसगहणं -

"*कोहो य माणो य अणिग्गहिया, भाया य लोभो य विवड्डमाणा ।

चत्तारि एते कसिणा कसाया, सिंचति मूलाइ पुण्णवस्स ।" (दश० ८, ४०) ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्राणि उत्क्रमेण कृतानि क्वचित् क्रमेण जहा -

सत्थपरिण्णा उक्कमो, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।

जं पि य उक्कमकरणं, तं पऽहिणवधम्ममायडा ॥५२४१॥

सत्थपरिण्णऽज्जमयणे - तेउक्कमयस्स उवरि वाउक्कमो भवति, सो य न तत्थ भणितो,
तसाणुवरि भणितो, दुःअद्वेयत्वात् । जं त उक्कमकरणं तं अहिणवस्स सेहस्स धम्मप्रतिपत्तिकारणा वाउकातिग-
जीवत्वप्रतिपत्तिकारणा वा इत्यर्थः ।

"गोयरपिंडेसणा कमेणं" ति तत्थ गोयरातिमे अभिग्गहविसेसतो जाणियव्वा भवति, तज्जहा - पैला,
दद्वपेला, गोमुत्तिया, पयंगवीहिया, अंतोसंबुक्का वट्ठा, बाहिं संबुक्का वट्ठा, गंतुपच्चागया, उक्खित्तचरगा,
उक्खित्तपिक्खित्तचरगा ।

इमाणो सत्त पिंडेसणाओ - असंसट्ठा, संसट्ठा, उद्धवा, अप्पलेवा, उवगहिया, पग्गहिया,
उज्झियवम्मिया य ।

दायगो असंसट्ठेहि हत्थमत्तेहि देति ति असंसट्ठादायगो ।

संसट्ठेहि हत्थमत्तेहि देति ति संसट्ठा ।

जत्थ उवक्खडियं मायणे तातो उद्धरिं अग्गमादिमु, एस उद्धवा ।

अहस दिज्जमाणस्स दव्वस्स जिप्पाव-चणगादियस्स लेवो ण भवति, सा अप्पलेवा ।

जं परिवेसणेण परिवेसणाए परस्स कडुक्कुतादिणा उवगहियं - आणियति वुत्तं भवति, तेण व
तं पडिसिद्धं तं तद्धक्खित्तं चेव साधुस्स देइ । एस उवगहिया ।

जं असणादिगं भोत्तुकामेण कंसादिभायणे गहियं भुंजामि ति असंसट्ठित्ते चेव साधू भागतो तं चेव
देति, एस पग्गहिया ।

जं असणादिगं गिही उज्झिउकामो साहू य उवट्ठित्ती तं तस्स देति, ण य तं कोइ अण्णो दुपदावी
अभिलसति, एस उज्झिमधम्मिया ॥५२४१॥

बीएहि कंदमादी, वि स्रइया तेहि सव्ववणकायो ।

भोमातिका वणेण तु, सभेदमारोवणा भणिता ॥५२४२॥

कम्हिवि सुत्ते वीयग्गहणं कत्तं, तेण वीयग्गहणेण मूलकंदादिया मूइता, तेहि सग्गे परिताणंतो सभेदो वणस्सइकाग्रो मूत्तिनो, तेण वणस्समतिगा भोमादिया पंच काया मूत्तिता, एवं सप्रदेदा प्रासेवणा केमुइ सुत्तेसु भाणियव्वा ॥५२४२॥

किं च -

जत्थ तु देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि मूइयवसेणं ।

मोत्तूण अहीकारं, अणुओग्गधरा पभासंति ॥५२४३॥

पुव्वद्धं गतार्थं । कम्हिवि सुत्ते प्रमुओग्गधरा अधिगतं अत्थं मोत्तूणं सुत्ताणुवायिपसंगावयमत्थं ताव भणंति । एवं विचिन्ता सुत्ता, विचिन्तो य सुत्तत्थो, ण णज्जति जाव मूरिणा ण पाण्डिओ ॥५२४३॥

उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववायओ य जाणि भवे ।

कारणजाएण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५२४४॥

उस्सग्गेण भणिताणि जाणि सुत्त णि अववादेण य जाणि सुत्ताणि भणिताणि, “कारणजातेण मुणि” त्ति पडिसिद्धस्स आयरणहेऊ कारणं, “जाय” ति उप्परणं, “मुणि” त्ति ग्रामतणे, सव्वाणि वि जाणियव्वाणीति ।

कहं ?, उच्यते - अववायमुत्तेसुस्सग्गे अत्थतो भणितो अववादकारणे सुत्तणिबंधो, उस्सग्गमुत्तस्स उस्सग्गमुत्ते णिवंधो, अत्थतो कारणजाते अणुणा अतो सव्वमुत्तेसु उस्सग्गे अववादो य दिट्ठो ।

अतो भणति - “कारणजातेण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि “मूवाणीत्यर्थः । ते य उस्सग्गव-वादा गुरुणा बोधिता णज्जंति । ते य जाणिऊण अणुपणो ठगे समायरंति । अजाणिए पुण ते कहं समायरंति ?, ॥५२४४॥

अववादट्ठाणे पत्ते -

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।

कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५२४५॥

जाणि संथरमाणस्स उस्सग्गे दव्वाणि णिसिद्धाणि ताणि चेव दव्वाणि अववायकारणजाते, “जाय” सट्ठो प्रकारवाची, बित्तिओ ‘जाय’ सट्ठो उप्परणवाची, अन्यतमे कारणप्रकारे उतान्ने इत्यर्थः । जाणि उस्सग्गे पडिसिद्धाणि उप्परणे कारणे सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ण दोसो ॥५२४५॥

चोदगाह -

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।

एवं होयऽणवत्था. ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५२४६॥

सुत्तत्थस्स अणवत्था भवति, चरण करणस्स वा अणवत्थओ य तित्थं ण भवति, पडिसिद्धमणुजाणं-तस्स सव्वं ण भवति ॥५२४६॥

उम्मत्तावायसरिसं, खु दंसणं न वि य कप्पऽकप्पं तु ।

अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५२४७॥

“पुष्पावरविरुद्धं सुतं पावइ उम्भत्तवचनवत्”, “हमं कप्पं, हमं अकप्पं” एयं अण्णहा पवति जतो अकप्पं पि कप्पं भवति । जइ एवं तुज्झं अभिप्पेयत्थसिद्धी भवति तो चरगादियाण वि अप्पण्णो अभिप्पेयत्थसिद्धी भवेज्ज ॥५२४७॥

आचार्य आह - सुणेहि एत्थ णिच्छियऽत्थं -

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं ।

एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयच्चं ॥५२४८॥

णिककारणे अकप्पणिज्जं ण किं चि अणुण्णायं, अववायकारणे उप्पण्णो अकप्पणिज्जं ण किं चि पडिसिद्धं, णिच्छियववहारतो एस तित्थकारणा, “कज्जे सच्चेण भवियच्चं” कज्जं ति अववादकारणं, तेण जति अकप्पं पडिसेवति तहावि सच्चो भवति, सच्चो ति संजमो ॥५२४८॥

अहवा -

कज्जं णाणादीयं, उस्सग्गाववायओ भवे सच्चं ।

तं तह समायरंतो, तं सफलं होइ सच्चं पि ॥५२४९॥

कज्जं ति णाण-दंसण-चरणा । ते जहा जहा उस्सर्पति तहा तहा समायरंतस्स संजमो भवति स्यात् ॥५२४९॥

कथं संजमो भवति -

दोमा जेण निरुंभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।

सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥५२५०॥

उस्सग्गो उस्सग्गं, अववादे अववादं करंतस्स रागादिया दोसा निरुंभंति, पुव्वोवचियकम्मा य खिज्जंति, एवं जो जो साधुस्स दोसनिरोधकम्मस्सवणो किरियाओगो सो सो सव्वो मोक्खोवातो ।

इमो दिट्ठतो - “रोगावत्थासु समणं व”, रोगावत्था रोगप्रकारा, तेसिं रोगाणं प्रशमनं अपत्थं पडिसिज्जति, जेण य प्रशमंति तं तस्स दिज्जति ।

अधवा - कस्स ति रोगिस्स णिसेहो कज्जति, कस्स वि पुणो तमेव अणुण्णवति ।

एवं कम्मरोगस्सवणे वि समत्थस्स अकप्पपडिसेहो कज्जति । असंपरस्स पुण तमेव अणुण्णवति ।

हे चोदक ! जं तं तुज्झे भणियं - सुत्ते अगीतो गीतो वा नत्थि कोइ भणितो तं, एयं सुत्ते मीयादीया पवयणातो विण्णोवा ॥५२५०॥

अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो न जाणाति ।

अणुण्णवणाइ जयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५२५१॥

चोदको भणति - “अगीयस्स कि कारणं ण कप्पति ?

आयरिओ भणइ - “तिविहं जयणं” ति जेण सो न याणइ ।

पुणो चोदगो भणति - “कप्पया मा तिविधा जयणा” ?

आयरिओ भणइ - अणुण्णावणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ।

चोदको भणति - “सुत्ते पडिए अगीतो कहं जयणं न जाणाति ?”

आयरिओ भणति - हे चोदक ! आयरिसहाया सत्वागमा भवन्ति जेण पडिज्जति ॥५२५१॥

णिउणो खलु सुत्तत्थो, न ह्नु सको अपडिबोहितो नाउं ।

ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसि तहि वसंताणं ॥५२५२॥

णिउणो ति सुहुमो सुत्तत्थो, सो य आयरिएण पडिबोहितो जजति, अण्णह ण जजति, जे अगीयत्वाणं तहि वसंताणं दोसा ते अण्णमाणे सुणसु ॥५२५२॥

अग्गीया खलु साहु, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।

रमणिज्जमिक्ख गामे, ठायंती उदगसालाए ॥५२५३॥

अगीयसाधू साधुकिरियाए जुता णवरं - सदोसणिहोस-वसहिअणुणवणे दोसगुणे ण याणंति, अजयणाए अणुणवणे दोसा, जयणाणुणवणाए य गुणा । सदोसाए य कारणे ठिया जयणं काउं ण याणंति जे य तत्थ दोसा उप्पज्जति ॥५२५३॥

‘रमणिज्ज’ पच्छद्वं अस्य व्याख्या -

रमणिज्जमिक्ख गामो, ठायामो इहेव वसहि भोसेह ।

उदगघराणुणवणा, जति रक्खह देमि तो भंते ! ॥५२५४॥

अगीयसाधू दूइज्जंनो एगत्थ गामे बाहि ठिते, मिक्खा हिडिया पभूता इहा य लद्धा, ताहे भणंति - “एस रमणिज्जो गामो, मिक्खा य अट्ठिय, एत्थेव मासकण्विहारेण उच्छिहामो, वसहि भोसेह घम्मकहि” ति । तेहि उदगसाला दिहा, तं अणुणवेत्ता उदगघरसामिणा भणित्ता - “जति उदगं घरं वा रक्खिस्सह तो भे देमि” ति ॥५२५४॥

किं च ते गिहत्था भणति -

वसहीरक्खणवग्गा, कम्मं ण करेमो णेव पवसामो ।

णिच्चिंता होह तुमं, अम्हे रत्तिं पि जग्गामो ॥५२५५॥

“उदगघरादिरक्खवावडा अम्हे किसिमादि कम्मं पि ण करेमो, ण य आमंतणादिमु गामंतरं पि पवसामो” । ताहे अगीयत्वा भणंति - “णिच्चिंतो होहि तुमं, अम्हे रत्तिं पि जग्गिस्सामो” ॥५२५५॥

इमा वि अणुणवणे अविधी चेव -

जोत्तिस निमित्तमादी, छंदं गणियं च अम्ह साहित्था ।

अक्खरमादि व डिंभे, गाहेस्सह अजतणा सुणणे ॥५२५६॥

जति अणुणविज्जंते वसहिसामो भणति - “जति जोत्तिसं निमित्तं छंदं गणियं वा अम्हं कहेस्सह, “डिंभे”-ति डिंभेरुवं तं अक्खरे गाहिस्सह. आदिसद्दातो अण्णं वा किं चि पावसुत्तं वागरणादि ।”

एत्थ साधू जति पडिसुणेति - “कहेस्सामो सिक्खावेस्सामो वा” तो अणुणवणे अजयणा कया भवति ॥५२५६॥

१ गाहिजह ।

अजयणाऽणुण्वणाए ठियाणं इमे दोसा -

अणुण्वण अजयणाए, पउत्थसागारिए घरे चेव ।

तेसिं पि य चीयत्तं, सागारियवज्जियं जातं ॥५२५७॥

अस्य पूर्वार्धस्य व्याख्या -

तेसु ठितेसु पउत्थो, अच्छंतो वा वि ण ब्रह्ती तत्ति ।

जह वि य पविसितुकामो, तह वि य ण चएत्ति अतिगंतु ॥५२५८॥

“तेसु” ति - अगीयत्थेसु अजयणाऽणुण्वणाए ठियाणं “उदगादिघरं संजता रवस्वति” ति सागारिणो गिच्चितो पवसइ, घरे वा अच्छंतो उदगादिमायणां वावरं ण ब्रह्ती, “तेसिं पि” - संजयाणं “चियत्तं” - जं ग्रहं तेण सागारिणो णागच्छंति ।

ग्रह्वा - जे संजता उदगरसकोउपा तेसिं चियत्तं, ग्रहवा - सो पविसितुकामो तह वि न सक्केइ तत्थ पविसिउं ॥५२५८॥

केण कारणेण ? अतो भण्णति -

संथारएहि य तहिं, समंततो आत्तिकिण्ण त्रितिकिण्णं ।

सागारिओ ण इंती, दोसे य तहिं ण जाणाति ॥५२५९॥

अतिकिण्णं आकीणं परिचाडीणं, त्रितिकिण्णं विप्रकीणं अणुण्वणीए, अहुविद्युत्ति वुत्तं भवति, एतेथ कारणेण सो सेजजात्तो ण पविसति । तेसु उदगमायणेसु जे सेवणादिदोसा ने ण याणंति ॥५२५९॥ अणुण्वण ति गता ।

इदानीं सप्तमखे जयणा -

ते तत्थ सण्णिविद्धा, गहिता संथारगा जहिच्छाए ।

णाणादेसी साह, कस्सति चिंता समुप्पण्णा ॥५२६०॥

“सण्णिविद्ध” ति ठिता ‘जहिच्छ’ ति जहा इच्छंति, णो गणावच्छेइएण दिण्णा ग्रहारातिगियाए ।

॥५२६०॥

तत्थ कस्स ति साधुस्स इमा चिंता उप्पण्णा -

अणुभूता उदगरसा, णवरं मोत्तूणिमेसि उदगाणं ।

काहामि कोउहल्लं, पासुत्तेसुं समारद्धो ॥५२६१॥

“केरिसो उदगरसो” ति कोतुग्रं, तं कोउग्रान्कूलं काहामो ति सो मुत्तेसु साधुगु समारद्धो

पाउं ॥५२६१॥

इमे उदगे -

धारोदए महासलिलजले संभारिते च दव्वेहिं ।

तण्हाइयस्स व सती, विया व राओ व उप्पज्जे ॥५२६२॥

१ गा० ५२५७ । २ गा० ५२५९ ।

धारोदगं जहा सत्तवारादिसु, मडासलिलोदगं गंगासिधुमादीहि दव्वेहि वा संपारियं,
कपूरादिपाणियवासेम वासियं, एवमादिउदगेसु तण्हाइयस्स प्रभिलासो भवति, पुब्बाणुभूतेण वा सती संवरणा
भवति, अण्णुभूतेण वा कोउणं सती भवति ॥५२६२॥

ताहे सतीए उप्पण्णाए अप्पणो हियपचचक्खं भण्णति -

इहरा कहासु सुणिमो. इमं खु तं विमलसीतलं तोयं ।

विगतस्स वि णत्थि रमो, इति सेवति धारतोयादी ॥५२६३॥

"इहरे" ति - अपचचक्खं सुतिमेतीवलदं, "इमं" ति पचचक्खं, जं पि अम्हे उण्होदगादि
दिवतजीवं विवामो तस्स वि सत्थोवहयस्स अण्णाहाभूतस्स रमो णत्थि, इति एवं चित्तेउं धारोदगादि सेवइ
॥५२६३॥

तम्मि पडिसेविते इमे दोसा -

विगयम्मि कोउहल्ले, छट्ठवयविराहणं ति पडिगमणं ।

वेधाणस्स ओधाणे, गिलाण-सेहेण वा दिट्ठो ॥५२६४॥

तम्मि उदमे शासेविए विगते उदगस्सकोउए छट्ठं रातीभोषणविरति वय भगं, तम्मि भग्गे
सेसवयाण वि भंगो, ताहे "भग्गव्वतो मि" ति स गिहे पडिगमणं करेज्ज, वेधाणस्स वा करेज्ज, विहाराणो वा
ओहाण करेज्ज, गिलाणेण सेहेण वा प्रभिणवधम्मेण दिट्ठो तं पडिसेवती ॥५२६४॥

ताहे गिलाणो इमं कुज्जा -

तण्हात्तिओ गिलाणो, तं दिस्स पिण्णज्ज जा विराहणया ।

एमेव सेहमादी, पियंति अप्पचचओ वा सिं ॥५२६५॥

तं दट्ठु पिवंतं गिलाणो वि निसितो विवेज्ज, अतिसितो वा कोउएण विवेज्जा । तेण पीएण
अपव्येण जा अण्णागाढादिविराहणं तण्णिप्पणं पच्छिन्नं तस्स माधुस्स भवति । अह उट्ठाति तो चरिमं । एवं
सेहेण वि दिट्ठे सेहो वि विवेज्जा, सेहस्स वा अपचचओ भवेज्ज, जहेयं मोसं तहण्णं पि ॥५२६५॥

अहवा -

उट्ठाहं च करेज्जा, विप्परिणामो व होज्ज सेहस्स ।

गेण्हतेण व तेणं, खंडित भिण्णे व विट्ठे वा ॥५२६६॥

सो वा सेहो अण्णमणस्स भवस्संतो उट्ठाहं करेज्जा ।

अहवा - सेहो अयाणंतो भणेज्ज - "एस तेणो आहरेइ" ति उट्ठाहं करेज्जा, तं वा दट्ठुं सेहो
विपरिणमेज्ज, विपरिणतो सम्मत्तं चरणं निगं वा लुड्ढेज्ज । अगिलाजमाधुणा गिलाणेण वा सेहेण वा एतेमि
अण्णतरेण उदगं गेण्हतेण तं उदगभायणं खडियं भिण्णं वा वेहो मे वा कतो ॥५२६६॥

अधवा -

फेडितमुहा तेणं, कज्जे सागारियस्स अतिगमणं ।

केण इमं तेणेहि, तेणाणं आगमो कत्तो ॥५२६७॥

मुद्रियस्स वा मुद्दा फेडिया, अण्णो य कज्जेण मागारितो "अडगतो" ति पविट्ठो नेण दिट्ठं ।
दिट्ठे भणाति — केण इमं खंडियं ? भिण्णं वा ?

साहू भणंति — तेणेहि ।

ताहे सागारितो भणइ — "तेणाणं भ्रातृभ्यो कहां जातो ? जो अम्हेहि ण गातो" ॥५२६७॥

ताहे सागारिणेण चित्तेण अवधारितं — "एतेहि चैव उदगं पीतं भायणं वा खंडियं भिण्णं वा ।"
तस्य सो भट्ठो हवेज्ज पंतो वा ।

भट्ठो इमं भणेज्जा —

इहरह वि ताव अम्हं, भिक्खं च बलिं च गेण्हह ण किंचि ।

एण्हिं खु तारिओ मि, गेण्हह छंदेण जेणऽट्ठो ॥५२६८॥

एयं उदगगहणं भोतुं "इहरह वि" ति चरणदिसामणं भिक्खगहणकाले जं. 'कुटुंबपगतं ततो भिक्खं अम्हं घरे ण हिड्डह, जं वा देवताणं वलीकयं ततो उव्वयिं पि ण गेण्हह, इण्हिं पुण उदगगहणेन अणुगहो कतो, संसारातो य तारिता । एत्थ जेण भे अण्णेण वि भट्ठो तं पि तुम्हे छंदेण अण्णो इच्छाए कज्जितियं गेण्हह ॥५२६९॥

इमं भट्ठपतेसु पच्छितं —

लहुगा अणुगहम्मी, अप्पत्तिय धम्मकंचुगे गुरुगा ।

कडुग फरुसं भणंते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२६९॥

जति भट्ठो "अणुगह" ति अणेज्ज तो चउलट्ठं । पंतो अप्पत्तियं करेज्जा ।

अपत्तियो वा इमं भणेज्ज — "एते धम्मकंचुगवट्ठो एण्लेस्सा जेमं मुसंति", एत्थ से चउगुरु ।
कडुगवयणं फरुसवयणं वा भणंति छगुरुगा । रायकरभरेहि भगवाणं समणकरो वोढव्वो ति भणंते छेओ
भवति ॥५२७०॥

मूलं सएज्जमएसुं, अणवट्ठप्पो तिण चउक्केसु ।

रच्छा महापहेसु य, पावति पारंचियं ठाणं ॥५२७०॥

३सइज्जा समोसियगा, तेहि उदगं तेणियं ति एत्थ मूलं तिगे चउक्के वा पसरिते 'तेणया वा
एते' अणवट्ठो, महापहेसु सेसरत्थासु य तेणियं ति य सुए पारंचियं ॥५२७०॥

"कडुगफरुसं" पच्छिद्धस्स इमं वक्खमाणं —

चोरो त्ति कडुं दुव्वोडिओ त्ति फरुसं हतो सि पव्वावी ।

समणकरो वोढव्वो, जाते भे करभरहताणं ॥५२७१॥

कडा । सपक्खजयणा एसा गता ।

*परपक्खजयणा इमा —

परपक्खम्मि य जयणा, दारे पिहितम्मि चउलट्ठू होंति ।

पिहिणे वि होंति लहुगा, जं ते तसपाणघातो य ॥५२७२॥

१ कुटुंबपागवयं, इत्यपि पाठः । २ सएज्जमया=प्रातिवेदिमका । ३ गा० ५२६९ । ४ गा० ५२५१ ।

मणुयमोणादी असंजतो सञ्चो परपक्खो भाणियव्वो, पावसणपे डेयाए जीवववरोवणमया जति दारं न पिहंति तो चउलहुं । अहं पिहंति तहावि भावत्तणपेडियाजते संचारयलूयाउट्ठेहिणमादीण य तसाणं घातो भवति, एत्थ वि चउलहुं तसण्णफ्फणं च ॥५२७२॥

अपिहिते इमे दोसा -

गोणे य साणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।

खरण य तेणए था, गुरुगा य पदोसतो जं च ॥५२७३॥

दुवारे अपिहिते गोणादी पविसेज्जा, ते जति वारेति तो चउलहुं । सो य वारितो वच्चंतो अभिकरणं जेण हरितादि भलेहिति, तण्णफ्फणं अंतरायं च से कयं ।

अट्ठवा - “खरण” ति तस्मेव संतिओ दासो दासी वा तेणगा वा पविसेज्जा, ते जति वारेति तो चउगुरुगा, ते वारिया समाणा पट्ठुं जं छोभव-परितावणादि काहिति तण्णफ्फणं पावति ॥५२७३॥

तेसि अवारणे लहुगा, गोसें सागारियस्स सिट्ठम्मि ।

लहुगा य जं च जत्तो, असिट्ठे संकापदं जं च ॥५२७४॥

गोण साण-खर-खरिय-तेणगा य जति ण वारेति तो पत्तेयं क्खु । ते य अवारिता उदगं पिण्ज्जा, हरेज्जा वा, भायणादि वा विणसेज्जा । गोमे ति पच्चूते जइ सागारियस्स साहेति “अमुणेण अमुणीए वा अमुणेण वा तेणेण रामो उदगं पीते” ति चउलहुगा । कहिते सो रुठ्ठो दुजवसरियादीण जं परितावणादि काहीति, “जत्तो” ति बंधणपायण विसेसा, तो तण्णफ्फणं सव्वं पावइ । अहं ण कहिति तो वि चउलहुगा । साधू य णट्ठे संकेज्जा, संकाए चउलहुं । निस्संकिने चउगुरु । अणुग्गहादि वा भट्पंतदोसा हवेज्ज, “जं च” पट्ठुं णिच्छुअणादि करेज्ज ॥५२७४॥

गोणादियाण सव्वेसि वारणे इमे दोसा -

तिरियनिवारण अभिहणण मारणं जीवघातो नासंते ।

खरिया छोभ विसाज्जणि, खरण पंतावणादीया ॥५२७५॥

सव्वे वि गोणादी तिरिया णिवारिज्जता सिगादिणा माह्वेज्ज, तत्थ परितावणादि जिव मरणं भवे, सो वा णिवारितो जीवघातं करंतो वच्चेज्जा । खरिया य णिवारिता छोभगं देज्ज - “एस्स मे समणो पय्येति”, विसगरादि वा देज्ज, वसहिं वा अणणिगा भामेज्ज । खरणो वि पट्ठुं पंतावणादि करेज्ज, भायणाणि वा विणसेज्ज, सेज्जातरं वा पंतावेज्ज ॥५२७५॥

तेणगा इमेहि कारणेहि उदगं हरेज्जा-

आसण्णो य छणूसवो, कज्जं पि य तारिसेण उदएण ।

तेणाण य आगमणं, अच्छह तुण्हिककगा तेण ॥५२७६॥

आसण्णे छणे ऊसवे वा, छणो जत्थ विसिट्ठं भत्तपाणं उवसाहिज्जति, ऊसवो जत्थ तं च उवसा-धिज्जति, जणो य अलंकिय विभूसितो उज्जाणादिसु मित्तादिजणपरिवुडो सज्जादिणा उवललति । तम्मि छणे ऊसवे वा तारिसेण उदगेण अवस्सं कज्जं ।

तस्मि य भप्पणो गिहे भविज्जमाणे उदयतेणणट्ठाए आगता तेणा । सहे भगीता भणंति - “तेणा आगता, अच्छह भंते ! तुण्हवका, ण कप्पति कहेतुं अयं तेणो, अयं उवचरए” ति । अथवा - तेणा आगता संजतेहि दिट्ठा । ते तेणगा भणंति - “तुण्हवका अच्छह, मा भे उद्विस्सामो” ॥५२७६॥

उच्छवच्छणेषु संभारितं दगं ति सितरोगितट्ठा वा ।

दोहल-कुतूहलेण व, हरंति पडिसेविपादीया ॥५२७७॥

तेषु छगूपवेषु तिसिया पीयणट्ठाए उदयं वासवासियं कप्पूरपाडलावासियं वा चउपंचमूलसंभारकयं वा रोगियस्सट्ठाए अवहरंति, गुब्बिणीए वा डोहनट्ठाए, कोउमंण वा केरिखो एयस्स सामो ? ति, पडिसेविता अण्ये वा अवहरंति ॥५२७७॥

गहितं च तेहि उदगं, घेतूण गता जतो सि गंतव्वं ।

सागारितो उ भणती, सउणो वि य रक्खती नेड्डं ॥५२७८॥

तेणगा घेतुं उदगं गता जत्य गंतव्वं । अप्पणो य कज्जेण सागारिओ पभाए आगतो । मुद्दामेदं दट्ठुं भणाति - “अज्जो ! सउणो वि, “नेड्डं” ति गिहं, सो वि ताव भप्पणो गिहं रक्खति, तुब्बेहि इमं ण रक्खिय” ॥५२७८॥

दगभाणूणे दट्ठुं, सजलं व हितं दगं च परिसडितं ।

केण हियं ? तेणेहिं, असिड्ड मदेतर इमे तू ॥५२७९॥

अथवा - जलेण भरियं भायणं दगं च परिसडियं । तस्य दट्ठुं सामारिओ पुच्छति - केण हियं ।

साह भणाति - तेणेहिंति । तस्य जति तेणयं वण्णस्सवेण कहंति तो बंधणादिया दोसा, “असिड्डि” ति अकहिते भद्दोसा “इतरे” ति पंतदोसा य इमे ॥५२७९॥

लहुगा अणुग्गहम्मो, अप्पत्तिययम्मकंचुगे गुरुगा ।

कडुग-फल्सं भणंते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२८०॥ पूर्ववत्

मूलं सएज्झएसुं, अणवट्ठप्पो ति ए चउक्केसु ।

रच्छ-महापहेसु य, पावति पारंचियं ठाणं ॥५२८१॥ पूर्ववत्

एगमणेगे छेदो, दिय रातो विणास-गरहमादीया ।

जं पाविहिंति विहणिग्गतादि वसहिं अलभमाणा ॥५२८२॥

पूर्ववत् । एयस्स साधुस्स अणेगण वा बोच्छेदं करेज्जा । अथवा - तट्ठवस्स अणेगण वा ।

जति दिवसतो णिच्छुमेज्जा ० ०, रातो वा ० ० । अण्यं वा वसहिं अलभंता तेणसावयादिएहि विणासं पाविज्जति, लोणेण वा गरहिज्जति । एते तेणगा ति । ततो य णिच्छूटा विहं पडिवण्णा जं सीउण्हसुप्पिवासपरीसहमादी तेणसावयादीहिं वा वसहिं अलभंता जं पावति तण्णिप्फणं पावति ।

अथवा - तस्स दोसेण अणो विह-णग्गतादिया वसहिं अलभंता जं पाविहिंति तण्णिप्फणं पावति । एवं अकट्टिजंते तेयो दोसा । अथ तेयं कहेज्ज - जं ते तेणगाण काहिंति तेणगा वा तस्स साधुस्स वा जं काहिंति ॥५२८२॥ एते अगोयत्थस्स दोसा ।

इदानीं गीयत्थस्स विधी भण्णइ --

गीयत्थस्स वि एवं, णिक्कारण कारणे अजतणाए ।

कारणे कडजोगिस्स उ, कप्पति वि तिविहाए जयणाए ॥५२८३॥

गीयत्थो वि जी निक्कारणे उदगसालाए ठाति, कारणे वा ठितो जयणं ण करेति । कडजोगी गीयत्थो ।
तिविधा जयणा -- अणुणवणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ॥५२८३॥

निक्कारणम्मि दोसा, पडिबंधे कारणम्मि णिहोसा ।

ते चेव अजयणाए, पुणो वि सो पावती दोसे ॥५२८४॥

जड निक्कारणे उदगपडिबद्धाए वसहीए ठाति तो ते चेव पुक्खभणितो दोसा भवन्ति । कारणे पुण
ते चेव दोसे पावति जे अजयणट्टिताणं ॥५२८४॥

किं पुण तं कारणं ?, इमं --

अद्धाणणिग्गयादी, तिव्वुत्तो मग्गिऊण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, वसन्ति तो उदगसालाए ॥५२८५॥

विमुद्धवसहीए असति सेसं कंठं ॥५२८५॥

तत्थ य अणुणवणाए जति वसहिंसायी भणेज्ज -- "जति अग्गं किं चि जोतिसाति कहेस्सह
तो मे वसहिं देमो ।"

तत्थ साधूहि वत्तव्वं --

न वि जोतिसं न गणियं, न चऽक्खरे न वि य किं चि रक्खामो ।

अप्पस्सगा असुणगा, भायणखंभोवमा वसिमो ॥५२८६॥

जोतिसाति ण विक्खवेमो, ण वा जाणामो ति वत्तव्वं, जहा भायणखंभ-कुट्टादिया तुज्झं सुत्थदुत्थेसु
वावारेण वहति एवं अग्गे विमामो । जति ते किंचि कज्जविचित्ति पेच्छामो तं पेच्छता वि अप्पस्सगा इह
अच्छामो । जड वा कोड भणेज्जा -- इमं सेज्जातरणं वहेज्जह, असुणंतं वा सुणावेह, तत्थ वि अग्गे असुणगा
॥५२८६॥

णिक्कारणम्मि एवं, कारणदुलभे भणंतिसं वसभा ।

अग्गे ठियल्लग च्चिय, अहापवत्तं वहह तुग्गे ॥५२८७॥

उत्सग्गेणं एवं ठायति । असिबोमादिदुग्गिभव्वकारणेसु अणतो अगच्छता तत्थ य सुद्धवसही दुल्लभा
ताहे उदगसालाए ठायता इमं भणति साधारणवणं वसभा "अग्गे ता ठियचित्ता, तुग्गे पुण जं अहापवत्तं
वावारवहणं दिवसदेवसियं तं वहहे चेव ॥५२८७॥ गया अणुणवणजयणा ।

इमा "सपक्खजयणा --

आमं ति अब्भुवगाए, भिक्ख-विघारादि णिग्गय मिएसुं ।

भणति गुरु सामसियं, कत्थुदगं जाणणट्टाए ॥५२८८॥

सांगारिणेण अन्धुवमयं - “शिरुवगारी होउं अच्छह त्ति, अहापवत्तं वावारं वहिस्सामो” त्ति, ताहे तत्थ ठिया, इतरा ण ठायति । तत्थ ठियाणं इमा विही - जाहे सव्वे भिया भिक्खादिणिग्गता भवति ताहे गुरू उदगभायणट्टा अण्णावदेसेण सांगारियस्स पुरतो ॥५२८८॥

इमं भणति -

चउमूल पंचमूला, तालोदाणं च तावतोयाणं ।

दिट्ठभए सन्निचिया, अण्णादेसे कुडुंबीणं ॥५२८९॥

चउहिं पंचहिं वा अण्णतमेहिं सुरहिमूलेहिं पाणट्टा संभारकडं तालोदं तोसलीए, तावोदं रायगिहे ॥५२८९॥

एवं च भणितमेत्तम्मि कारणे सो भणाति आयरिए ।

अत्थि ममं सन्निचिया, पेच्छह णाणाविहे उदए ॥५२९०॥

जाहे एवं भणितो गुरुणा ताहे कमपत्ते कहणकारणे सेज्जातरो पच्छद्वेण भणति - “पत्थभोयणे तावोदण, एत्थ तालोदण”, एवं तेण सव्वे कहिता ॥५२९०॥

ते य गुरुणा -

उवलक्खिया य उदगा, संथाराणं जहाविही गहणं ।

जो जस्स उ पाओग्गो, सो तस्स तहिं तु दायव्वो ॥५२९१॥

ताहे संथारणाणं अहाराइणियाए विट्ठिमहणे पत्ते वि तं सामायारिं भेतुं गुग्गो अण्णत्तिपं तत्थ करेति, जो जस्स जम्मि ठाणे जोगो संथारणो नस्स तहिं ठाणं देति ॥५२९१॥

तत्थिमो विही -

निक्खम-पवेसवज्जण, दूरे य अभाविता उ उदगस्स ।

उदयंतेण परिणता, चिलिमिणि राइंदिय असुण्णं ॥५२९२॥

सांगारियस्स उदगादिगहणट्टा पविसमाणस्स निक्खमण-पवेसो वज्जेयव्वो । उदगभायणाण य अभाविया अणीया अतिपरिणामगा मंदघम्मा य दूरतो ठविज्जति । जे पुण घम्मसद्विया यिरचित्ता ते उदगभायणाण ठाणे य अंतरे कडगो चिलिमिली वा दिज्जति । गीयत्थपरिणामगेहिं य विपारातो य असुण्णं कज्जति ॥५२९२॥

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संथारणा विधीपुव्वं ।

जागरमाण वसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५२९३॥

जहा तत्थ दोसो ण भवति तहा संथारणा वेत्तव्वा, एसेव तत्थ विधी । सपक्खं रक्खंता तत्थ गीयत्था सदा सजागरा सुवति ॥५२९३॥

अथवा -

ठाणं वा ठायंती, णिसेज्ज अहत्ता सजागरे सुवति ।

बहुसो अमिद्वंते, वयणमिणं वायणं देमि ॥५२९४॥

जो वा ददसंघयणो अत्थचित्तगो सो ठाणं ठाति, निसण्णो वा भायमाणो चिट्ठह :

अथवा - गीयत्यो कृतकेन सर्वोसि पुरतो भणति - “संदिसद्व भंते ! सम्भराइयं उत्सगं करेस्सामि ।”
पच्छा सुत्तेसु सुवति, अण्णदिणं अण्णो संदिसावेति । एवं एवस्संति । वसभा वा सज्जामरा सुवति, जति तस्य
दगाभिलासी दगभायणतेण आगच्छति तस्य तहा गुरवो वसभा वा संजीहारं करेति, जहा सो पडिणीयत्तति ।

अथ सो पुणो पुणो अभिहवति ताहे गुरु सामण्णतो। वयणं भणाति - “उट्ठेह भंते ! वायणं देमि ।”
तं वा भणाइ “अज्जो ! वायणं वा ते देमि” ॥५२६४॥

फिडितं च दगद्धिं वा, जतणा वारेंति ण तु फुडं वेति ।

मा तं सोच्छति अण्णो, गित्थक्कोऽक्कज्ज गमणं वा ॥५२६५॥

फुडं रुक्ख ण भणति, मा तं अण्णो सोउं अण्णोसि कहेस्सति ।

पच्छा सव्वेहि णाते गुरुणा वा फुडं भणिते गित्थक्को गित्थज्जो भवति ।

पच्छा गित्थज्जोभूतो अक्कज्जं पि करेति, णातो मि ति लज्जितो वा पडिमगगादीणि करेज्जः।

॥५२६५॥

“जयणाए वारेंति” ति अस्य व्याख्या -

दारं न होति एत्तो, निदामत्ताणि पुच्छ अच्छीणि ।

भण जं च संक्रितं ते, गेण्हह वेरत्तियं भंते ! ॥५२६६॥

कंठा । सपक्खजयणा गता ।

इमा परपक्खजयणा -

परपक्खम्मि वि दारं, ठयंति जयणाए दो वि वारेंति ।

तद्वि य अठायमाणे, उव्वेह पुट्ठा व सार्हंति ॥५२६७॥

परपक्खेसु दारं ठयंति इमाए जयणाए -

पेहपमज्जणमणियं, उव्वओगं काउं दारे षट्ठेति ।

तिरिय णर दोणिण एते, खर-खरि तिथ-पुं णिसिट्ठितरे ॥५२६८॥

चक्खुणा पेहउं रसोहरणेण पमज्जति, अचक्खुविसए वा उव्वओग काउं ।

अथवा - सचक्खुविसए वि उव्वओगकरणं ण विरज्जति । एवं च सणियं जहा जीवविराघणा ण
भवति तहा जयणाए दारं ठयंति ।

अह्वा - “जयणाए दो वि वारेंति” तिरिया णरा य एते दोणि ।

अह्वा - दोणि - दासो दासी य, अह्वा - दोणि - इत्यो पुरिसो य ।

अह्वा - दोणि “निमिट्ठितर” ति जेसि पवेसोऽणुणात्तो ते निमिट्ठा, णाणुणातो पवेसो जेसि
ते इतर ति ।

१ गा० ५२६४ । २ गा० ५२६३ ।

ग्रहवा - अक्कतियतेणा गिसट्ठा इतरे अणिसट्ठा, उवरि वक्खाणिज्जमाणा, जयणाए । तथा य अट्ठायमाणेसु "उवेह" ति तुण्हिक्को अच्छति । सागारिणा वा पुट्ठो - "केणुदमं गीय?" ति ताहे सार्हेति "अमुणेण अमुणीए वा" ॥५२६८॥

गेण्हतेसु य दोसु वि, वयणमिणं तत्थ वेति गीयत्था ।

बहुगं च नेसि उदगं, किं पगयं होहिती कल्लं ॥५२६९॥

इत्थिपुरिसादिषु दोसु वि गेण्हतेसु गुरुमावी गीयत्था इमं वयणं (भणति) पच्छदं कंठं ॥५२६९॥
तेणेगेसु इमा विही -

नीसट्ठेसु उवेहं, सत्थेणं तासिता तु तुसिणीया ।

बहुसो य भणति महिलं, जह तं वयणं सुणति अन्नो ॥५३००॥

तेणा दुविधा - गिसट्ठतेणा अणिसट्ठतेणा य । गिसट्ठा अक्कतिया बला अवहरंति जहा पभवो ।
तेसु भागतेसु उवेहं करेइ, तुण्हिक्को अच्छइ ।

ग्रहवा - खभादिणा सत्थेण तासिता - तुण्हिक्का अच्छइ मा भे मारेमं ।

अह महिला उदगं नेति तत्थ इमं वयणं - "बहुसो य पच्छदं" ॥५३००॥

अस्य व्याख्या -

साहूणं वसहीए, रत्तिं महिला ण कप्पती एंती ।

बहुगं च नेसि उदगं, किं पाहुणगा वियाले य ॥५३०१॥

तेणेसु गिसट्ठेसु पुब्बा-उवररत्तिमल्लियंतेसु ।

तेणुदयरक्खणट्ठा, वयणमिमं वेति गीयत्था ॥५३०२॥

"तेणे" ति उदगं जे तेणेति, तेसि रक्खणट्ठा गीयत्था उच्चसदेण इमं भणति ॥५३०२॥

जागरह णरा ! णिच्चं, जागरमाणस्स वड्ढती बुद्धी ।

जो सुवतिं ण सो सुहितो, जो जग्गति सो सया सुहितो ॥५३०३॥ कंठा

सुवति सुवंतस्स सुयं, संकियखलियं भवे पमत्तस्स ।

जागरमाणस्स सुयं, थिरपरिचियप्पमत्तस्स ॥५३०४॥

"सुवति" ति नश्यतीत्यर्थः । ग्रहवा - निद्राप्रमत्तस्य सुखत्वा संकिता भवति खलति वा, णो दरदरस्स प्रागच्छति, संभरणेण प्रागच्छति, नागच्छति वेत्यर्थः । विगहादीहि वा पमत्तस्स सुयं अपिरं भवति ॥५३०४॥

सुवइ य अजगरभूतो, सुयं पि से णासती अमयभूयं ।

होहिति गोणब्भूयो, सुयं पि णट्ठे अमयभूये ॥५३०५॥

अजगरस्स किल महंती निद्रा भवति, जेण जहा निच्छित्तो सुवइ ।

कि चान्यत् -

जागरिता धम्मीणं, आधम्मीणं च सुत्तगा सेया ।

वच्छाहिवभगिणीए, अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥५३०६॥

वच्छज्जणवए कोसंबी जगरी, तस्स अहिवो संताणितो राया, तस्स भगिणी जयंती ।
 तीए भगवं वद्धमाणो पुच्छिओ । 'धम्मियाणं किं सुत्तया, सेया ? जागरिया सेया ?
 भगवया वागरियं - 'धम्मियाणं जागरिया सेया, णो सुत्तया । अघम्मियाणं सुत्तया सेया,
 णो जागरिया ।'

"अकहिमु" ति मत्तीते एवं कहियवान् ॥५३०६॥

किं चान्यत् -

णालस्सेण समं सोवखं, ण विज्जा सह णिदया ।

ण वेरगं ममत्तेणं, णारंभेण दयालुया ॥५३०७॥ कंठा

तासेतूण अवहिते, अवेइएहि व गोसे साहेति ।

जाणंते वि य तेणं, साहंति न वण्ण-रूवेहि ॥५३०८॥

अवकंतिवतेणेहि सत्तेणं तासेउं, भणवकंतिएहि वा अवेइएहि य, एवं भण्ययरप्पगारेण हरिते,
 "गोहि" ति पच्चूसे सेज्जातरस्स कहंति, जति वि ते णामगोएणं जाणंति तहावि तं ण कहंति, अकहिज्जते
 वा जति पच्चंगिरा भवति तो कहंति ॥५३०८॥ "स उदग" ति सेज्जा गता ।

इदाणि उदगसमीवे सा भण्णइ -

इति सउदगा तु एसा, उदगसमीवम्म तिण्णिमे भेदा ।

एक्केक्क चिट्ठणादी, आहारुच्चार-भाणादी ॥५३०९॥

जा सा उदगसमीवे तस्स तिण्णि भेदा, तेसु तिसु भेदेसु एक्केक्के चिट्ठणादिया किरियविसेसा
 करेज्ज ॥५३०९॥

ते य इमे तिण्णि भेदा -

दगतीरचिट्ठणादी, जूवग आतावणा य बोधव्वा ।

लहुगो लहुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५३१०॥

चिट्ठणादिया दस वि पदा एक्कं पदं । जूवगं ति वित्तिथं । धायावणं ति तत्तिथं । चिट्ठणादि दस
 वि उदगसमीव करंतस्स पत्तेयं भासलहुं । जूवगे वसंति गेण्हति झू । पातवेति झू । जूवगं वा संक्रमेण
 गच्छति झू । तिसु वि ठाणेषु पत्तेयं आणादिया दोसा भवति ॥५३१०॥

दगतीरं दगासणं दगन्भासं ति वा एगदं । तस्स पमाणे इमे आएसा -

णयणे पूरे दिट्ठे, तडि सिंचण वीइमेव पुट्ठे य ।

आगच्छंते आरण्ण, गाम पसु मणुय इत्थीओ ॥५३११॥

चोदगो भणइ - "अहं दगतीरं भणामि, उदगागरातां जत्य णिज्जति उदगं तं उदगतीरं" ?

आयरिओ भणति - दूर पि णज्जति उदगं, तम्हा ण होइ तं उदगतीरं ।

तो जत्तियं णदोपूरेण अक्कमइ तं उदगतीरं ।

अथवा - जहि ठिएहि जलं दीसइ, अथवा - णदीए तडी उदगतीरं ।

अथवा - जहि ठिनो जलट्टिएण सिञ्जिजइ सिग्गादिणा तं जलतीरं ।

अथवा - जावतियं कीति (चि) ओ कुमति, अथवा - जावतियं जलेण पुट्टं तं दगतीरं" ।

आयरिओ भणइ - 'ण होइ एयं दकतीरं ।'

दगतीरलक्खणं इमं भणति - आरण्या गामेयगा वा दगट्ठिणो आगच्छमाणा वसु मणुस्सा इत्थिगामो वा साधु दगतीरद्वियं दट्ठु अक्कंति - णियत्तंति वा जत्तो तं उदगतीरं ॥५३११॥

पुणरवि आयरिओ भणति -

सिंचण-वीथी-पुट्टा, दगतीरं होइ थ पुण तम्मचं ।

ओयरिउत्तरिउमणा, जहि दिस्स तसंति तं तीरं ॥५३१२

जयणादियाणं सत्तण्ह आदेसाणं चरिमा तिण्णि सिंचण, कीति, पुट्टो य, एते णियमा दगतीरं । सेसा अयणिज्जा । इमं अट्ठभिचारि दगतीरं - आरण्या गामेयगा वा तिरिया वा मणुस्सा वा दगट्ठिणो ओयरिउमणा पाउं वा उत्तरिउमणा जलचरा वा जहि ठियं साधु दट्ठणं चिट्ठंति, तसंति वा तं दगतीरं भवति ॥५३१२॥

दगतीरे चिट्ठणादिसु इमे दोसा -

अहिकरणमंतराए, छेदण उस्सास अणहियासे य ।

आणा सिंचण जल-थल-खहचरणणाण वित्तासो ॥५३१३॥

दगतीरे चिट्ठंतस्स अधिकरणं भवति, बहूण य अंतरायं करेति । "छेदणं" ति - साधुरस्स चल्णा ओ उट्ठिण-रओ सो जले णिवडति । "उस्सासे" ति - उस्सासविभुक्कपोमला जले निवडति । जलं वा खोभंति । दगतीरे ठिनो वा तिसितो धितिवुब्बलो अणधियामो जलं पिवेज्जा । तित्थकराणाभंगो य । दगतीरे ठियं वा अणुकंप-पडिणीययाए कीति सिंचेज्जा । दगतीरद्विओ य जल-थल-खहचरणं वित्तासं करेति ॥५३१३॥

"अधिकरणं" ति अस्य व्याख्या -

दट्ठूण वा णियत्तण, अभिहणं वा वि अण्णतूहेणं ।

गामा-उसरणपसुणं, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५३१४

"दट्ठूणं वा णियत्तण" ति अस्य व्याख्या -

पडिपहणियत्तमाणम्मि अंतरागं (यं) च तिमरणे चरिमं ।

सिग्गति तन्निमित्तं, अभिघातो काय-आताए ॥५३१५

गामेयगा अरण्णवासिणो वा, गामेयगा ताव ठप्पा । आरण्या तिसिया तित्थाहिमुहा एता दगतीरे तं साधु दट्ठूण पडिपहेण गच्छंतेसु अधिकरणं, छक्काए य वहेंते, उदगं च अपाउं जति ते पडिपहेणं

गच्छन्ति तो अंतरायं भवति, चसद्वातो परित्तावणादी दोसा, एगम्मि परित्ताविते खेरो, दोसु भूत्तं, तिसु भणवट्ठो ।^१

अह एकं तिसाए मरइ तो भूत्तं, दोसु भणवट्ठो, तिसु पारचियं ।

“अभिहण्णं वा वि” अस्य व्याख्या — “सिम्बगति” पच्छद्वं, “सण्णमितं” ति — तं साधु दट्ठं पीता सिम्बगती भण्णं भण्णोण्णं वा अभिपापयति, छक्काए वा घाएति, साहुस्स वा दित्ता वाधातं, करेज्जा, तिसिया वा भणधियासत्तणतो साहुं णोस्सेउं अभिहणेउं गच्छेज्जा ॥५३१५॥

“अण्णतूहेणं” ति अस्य व्याख्या —

अतड-पवातो सो च्चेव य मग्गो अपरिभुत्त हरितादी ।

ओवड कूडे मगरा, जदि घोट्टे तसा य दुहत्तो वि ॥५३१६॥

तस्य ठितं साधुं दट्ठं ‘अतड’ ति अतित्थं भणोतारं तेण ओयरेज्जा । तस्य छिण्णटंके प्रपाते आयविराहणा से ह्वेज्ज ।

अह्वा — सो च्चेव ग्रहिणवो मग्गो पयट्टेज्ज, तस्य अपरिभुत्ते भण्णाणुपुब्बोए छक्काया विराहिज्जेज्ज । “ओवड” ति — खड्वातीते पडेज्ज, अतित्थे वा कूडेण वेप्पेज्ज, अतित्थे वा जलमोइण्णो मगरातिणा सावयेण खज्जेज्ज । साधुनिमित्तं ‘अतित्थेण अतित्थेण वा ओयरित्ता अतडे भाउक्काए जति सो घोट्टे करेइ ततिया चउलहुगा, अचित्ते भाउक्काए जइ बेंदिये ग्रसति तो छल्लहुगं, तेइदिए छग्गुल्लं, चउरिदिए खेरो, पंचेदिए एक्कम्मि भूत्तं, दोसु भणवट्ठो, तिसु पारचियं । ‘दुहत्तो वि’ ति — जस्य भाउक्काओ सचित्तो सतसो य तस्य दो वि पच्छित्ता भवति, चउरिदिएसु चउसु पारचियं, तेइदिएसु पंचसु पारचियं, बेंदिएसु छसु पारचियं ॥५३१६॥ एते ताव आरण्णमाणं दोसा भणित्ता ।

इदाणि गामेयमाणं दोसा भणन्ति —

गामेय कुच्छियमकुच्छित्ते य एक्केक्क दुट्ठुदुट्ठा य ।

दुट्ठा जह आरणा, दुग्गुत्ति^२दुग्गुत्तिता णेया ॥५३१७॥

ते गामेयगा तिरिया दुविवा — दुग्गुत्तिता अदुग्गुत्तिता य । दुग्गुत्तिता गद्भाती, अदुग्गुत्तिता गवादी । दुग्गुत्तिता दुट्ठा अदुट्ठा य । अदुग्गुत्तिया वि एवं । जे दुग्गुत्तिता अदुग्गुत्तिता वा दुट्ठा ते दोवि जहा आरणा भणित्ता तहा भाणियव्वा ॥५३१७॥

जे अदुग्गुत्तिता अदुट्ठा तेसु नत्थि दोसा जहासंभवं भाणियव्वा,

जे ते दुग्गुत्तिया अदुट्ठा तेसु इमे दोसा —

भुत्तेयरदोस कुच्छित्ते, पडिणीए छोम गेण्हादीया ।

आरण्णमण्य-थीसु वि, ते च्चेव णियत्तणादीया ॥५३१८॥

तिरियंची महासहिता दुग्गुत्तिताजे, जेण गिहिका भुत्ता तस्स तं दट्ठं सत्तिकरणं, ‘इतरे’ ति — जेण ण भुत्ता तस्स तं दट्ठं कोउमं भवति, कुच्छियासु वा आरण्णणियासु पडिणीतो कोइ छोमं देज्ज — ‘मए

१ चतुर्थे परित्तावितेषु पारोचिकं, इति वृ० वृ० गा० २३८६ । २ गा० ५३१४ । ३ गा० ५३१४ । ४ उवग, इति पूनासत्तताडपत्रप्रती । ५ अन्नतित्थेण, इत्यपि पाठः । ६ गा० ५३१४ । ७ दुग्गुत्तिता इत्यपि पाठः ।

एस समणो महासद्दिग्गं पडिसेवतो दिट्ठो”, तत्थ वि मेण्हणादिया दोसा । एवं गामारण्णतिरिएसु दोसा भणिता । जा य जत्थ काए धारोवणा भणिता सा सज्जा उव्वज्जितूण भाणियच्च । एते तिरियाणं दोसा भणिता ।

इदानीं मणुस्साणं “आरण्णमणुय” पच्छद्दं ।

मणुया दुविसा — आरण्णगा गामेयगा य । तत्थ आरण्णयाणं पुरिसाण य इत्थियाण य ते चेव नियसणादिया दोसा जे तिरियाणं भणिता ॥५३१६॥

इमे य अण्णे दोसा —

पावं अवाउडातो, सबरादीतो तहेव णित्थक्का ।

आरियपुरिस कुतूहल, आतुभयपुल्लिद आसुवधो ॥५३१६॥

पुत्रद्वं कंठं । णित्थक्का णिल्लज्जा । तातो साधुं दट्ठूणं आरियपुरिसो त्ति काउं पुल्लिदियादिअणा-
रिया कोउणं साधुसमीवं एज्जतामो दट्ठं आयपरउभयसमुत्था दोसा भवेज्ज । मेहुणपुल्लिवो वा तं इत्थियं
साधुसगासमागतं दट्ठं ईसायंतो रुढो “आमु” सिब्बं मारेज्ज ॥५३१६॥

थी-पुरिसअणायारे, खोमो सागारियं ति वा पह्णे ।

गामित्थी-पुरिसेसु वि, ते विय दोसा इमे चण्णे ॥५३२०॥

अधवा — सो पुल्लिदपुरिसो पुल्लिदयाए सह अणायारं आयरेज्ज, तत्थ भुत्ताभुत्ताण सतिकरणकोउएहि
वित्तखोहो हवेज्ज । खुभिए य वित्ते पडिगमणादिया दोसा ।

अहवा — सो पुल्लिदतो अणायारमायरिउकामो सागारियं ति काउं साधुं पह्णेज्जा मारेज्ज वा ।
एते आरण्णयाण दोसा । गामेयकपुरिसइत्थोण वि एते चेव दोसा, इमे य अण्णे दोसा ॥५३२०॥

चंकमणं णिल्लेवण, चिट्ठित्ता चेव तम्मि तूहम्मि ।

अच्छंते संकापद, मज्जण दट्ठुं सतीकरणं ॥५३२१॥

“चंकमणे” त्ति अस्य व्याख्या —

अण्णत्थ व चंकमती, मज्जण अण्णत्थ वा वि वोसिरती ।

कोनाली चंकमणे, परकूलातो वि तत्थेति ॥५३२२॥

कोइ अण्णत्थ चंकमंतो साधुं दगतीरे दट्ठुं तत्थेति एत्थ साधुसमीवे चेव चंकमणं करेस्सामि,
कि वि पुच्छिस्सामि वा बोलालाव-संकहाए अचिच्छिस्सामि, साधुं वा दगतीरे चंकमंतं दट्ठुं गिही अण्णयाणाओ
तत्थेइ अहं पि एत्थेव चंकमिस्सं, सो य अयगोलसमो विआसा ।

अहवा — तत्थ ^३दगतीरे चंकमणं करेस्सामीनि आगतो तत्थ साधुं दट्ठूणं वित्तेति — “जामि
इतो ठाणातो अण्णत्थ चंकमणं करेस्सामी” त्ति गच्छति, गच्छंते अचिकरणं । “अणिल्लेवणं” त्ति अस्य
व्याख्या — “^१मज्जण अण्णत्थ वा वि वोसिरति” । सण्णं वोसिरितुं अण्णत्थ णिल्लेवेउकामो साधुं दट्ठुं
साधुसमीवे एउं निल्लेवेइ । एवं मज्जणपि, मज्जणं ति ण्हाणं ।

अहवा — तत्थ निल्लेविउं कामो साधुं दट्ठुं अण्णत्थ गंतुं निल्लेवेति एवं मज्जण सण्णवोसिरणं पि ।

१ गा० ५३२१ । २ आयमण...इत्यपि पाठः । ३ ...समीवे, इत्यपि पाठः । ४ गा० ५३२१ ।

५ आयमण...इत्यपि पाठः । ६ गा० ५३२२ ।

“चिद्विज्ञा चेव तस्मि तूहस्मि” अस्य व्याख्या - “कोनाली” पच्छदं । गंतुकामो सागारिगो साधुं दगतीरे ददंतुं तस्मि चेव “तूहस्मि” ति तित्ये चिद्विज्ञा ।

अथवा - परकूलातो वि साधुसमीवं एति । “कोनालि” ति गोटी । गोटीए सःधुणा सह बोलासाव-संकहेण चकमणं करंतो अचिच्छसं, तत्थ साधुसंलावणिमित्तं अचच्छंतो धक्काए वधति ॥५३२२॥

“अचच्छंतो संकापद” ति अस्य व्याख्या -

दग-मेहुणसंकाए, लहुगा गुरूगा य मूल णीसंके ।

दगतूर कुंचवीरग, पवंस केसादलंकारे ॥५३२३॥

दगतीरे साधुं अचच्छंतं ददंतुं कोइ संकेज्जा - कि उदगट्टा अचच्छति । अहं कि संगारदिण्णतो ? तत्थ दगसंकाए चउलहुं, गिस्संके चउगुरुं । मेहुणसंकाए चउगुरुं, गिस्संकिते मूलं ।

“अमज्जण ददंतुं सतीकरण” ति अस्य व्याख्या - “दगतूर” पच्छदं । कोति सविगारं मज्जति, दगतूरं करंतो एरिसं जलं अफ्फलेति जेण पुरवसदो भवति । एवं पडहु-पणव-वेरिमादिया सदा करंतो ।

अथवा - कुंचवीरगेण जलं आहिठति । कुंचवीरगो सगढपक्खसारिच्छं जलजाणं कज्जति । सुगंध-दब्बेहि य आधंसमाणं केसवत्थमल्लभाभरणालंकारेण य आभरंतो ददंतुं भुत्तभोगिसतिकरणं, इयराण कोउवं भवइ । पडिगमणादी दोसा ॥५३२३॥ एते पुरिसेसु दोसा ।

इमे इत्थीसु-

मज्जण-प्फाणट्ठाणेसु अचच्छती इत्थिणं ति गहणादी ।

एमेव कुच्छित्तेतर-इत्थीसविसेस मिहुणेसु ॥५३२४॥

इत्थीसो दुविहा -- अदुगुच्छिता दुगुच्छिता य । तत्थ अदुगुच्छिता वंभणी सत्तिया वेमि सुदी य । दुगुच्छिता संभोइयदुग्गल्लरियाओ, अथवा णडवकडादियाओ अंसंभोइयइत्थिआओ । एताओ वि दुविधाओ - सपरिगहा अपरिगहाओ य । एत्थ सपरिगहात्थियाणं वसंतःइसु अण्णत्थ ऊसवे विभवेण जा जलक्रीडा संमज्जणं, मलहाहोवसमकरणमेतं प्फाणं, जलवहणपहेसु वा अण्णेसु वा गिस्सलेवणट्ठाणेसु इत्थीणं अचच्छंतस्स आयपरोभय-समुत्था दोसा ।

अथवा - तस्मिं णायसो पांसित्ता जत्थमहं इत्थीसो मज्जणादी करंतो तत्थ सो समणो परिभवं - कामेमाणो अचच्छति, दुट्ठो ति काउ गेप्फणादयो दोसा । जाओ पुण अपरिगहाओ कुच्छिया इयर ति अकुच्छिया वा इत्थीसो तासु वि एवं चेव आयपरोभयसमुत्था दोसा । “मिहुणं” ति जे सदित्थिया पुरिसा तेसु मिहुणक्रीडासु क्रीडंतेषु सविसेसतरा दोसा भवंति ॥५३२४॥

जम्हा दगसमीवे एवमादिया दोसा तम्हा “चिद्विज्ञादिया पदा इमे तत्थ णो कुज्जा -

चिद्विज्ञ णिसिय तुयट्ठे, निदा पयला तहेव सज्झाए ।

आणाऽऽहारवियारे, काउस्सग्गे य मासलहुं ॥५३२५॥

उद्विट्ठितो चिद्विज्ञ, णिसीयणं उवविट्ठितो चिद्विज्ञ, तुयट्ठो णिब्बणो अचच्छति ॥५३२५॥

१ गा० ५३२१ । २ गा० ५३२१ । ३ गा० ५३२१ । ४ गा० ५३१० ।

पयलणिहाणं इमं वक्खणं -

सुहपडिबोहो णिहा, दुहपडिबोहो य णिह-णिहा य ।

पयला होति ठियस्सा, पयलापयला उ चंक्रमतो ॥५३२६॥

वायणादि पंचविहो सज्जामो । “भाणि” ति धम्मसुक्के भाष्यति, आहारं वा आहारति, “वियारे” ति-उच्चारणासवणं करोति, अभिभवस्व काउत्सगं वा करोति । एतेषु ताव दसस पदेसु अविशिट्ठं असामायागि-
णिष्फणं मासलहुं ॥५३२६॥

इदाणि विभागो पच्छित्तं वण्णेउकामो अण्णपुण्वीचारणियपदसंगहं चारणियावकप्पसु
च जं पच्छित्तं तं भणामि -

संपाइमे असंपाइमे य अदिट्ठे तदेव दिट्ठे य ।

पणगं लहु गुरु लहुगा गुरुग अहालंद पोरिसी अधिका ॥५३२७॥

तं दगतीरं दुविहं संपातिमसंपातिमं वा ।

एतेसि इमा विभासा -

जलजाओ असंपातिम, संपाइम सेसगा उ पंचेदी ।

अहवा विहंगवज्जा, होति असंपाइमा सेसा ॥५३२८॥

अण्णठाणातो आगतं जे जले जलचरा वा थलचरा वा पंचेदिया संपतति ते संपाइमा, जे पुण
जलचरा वा तथस्या एव ते असंपातिमा ।

अहवा - सलचरा आगत्य जले संपतति संपाइमा । सेसा विहंगवज्जा थलचरा सवे असंपाइमा ।
एतेहि संपाइमसंपातिमेहि जुत्तं दुविधं दगतीरं । एयम्मि दुविधे दगतीरे तेहि संपातिमेहि दिट्ठो अच्छति
अदिट्ठो वा । जं तं अच्छति कालं तस्सिमे विभागा - अहालंदं पोरिसि ।

अधिगं च पोरिसि लंदमिति कालस्तस्य व्याख्या - तरुणित्थीए उदउत्तो करो जावतिएण
कालेण सुक्कति जहणो लंदकालो । उक्कोसेण पुव्वकोडी । सेसो मज्झो ।

अहवा - जहणो सो चेव, उक्कोसो “अलंद” ति जहालंदं, जहा जस्स जुत्तं, जहा - पडिमा-
पडिवणाणं अहालंदियाणं य पंचराइदिया, परिहारविसुद्धियाणं जिणकप्पियाणं निक्कारणओ य मच्छवासीण
वा उदुवदे मासं, वासासु चउमासं, अज्जाणं उदुवदे दुमासं, मज्झिमाणं पुव्वकोडी, । एव जहण्णेण अहालंद-
कालेण अधिकारी ॥५३२८॥

इदाणि संपाति-असंपाति-अहालंदियादिषु अदिट्ठ-दिट्ठेषु य पच्छित्तं भणति -

असंपाति अहालंदे, अदिट्ठे पंच दिट्ठ मासो उ ।

पोरिसि अदिट्ठ दिट्ठे, लहु गुरु अहि गुरुग लहुगा य ॥५३२९॥

असंपातिमे अहालंदं अदिट्ठे मच्छति पंच राइदिया । दिट्ठे मच्छइ मासलहुं ।

असंपाइमेसु पोरिसि अदिट्ठे मच्छइ मासलहु । दिट्ठे मासगुरु ।

अधियं पोरिसि अदिद्वे अचछति मासगुरुं । दिद्वे चउलहुगं ।

संपाइमेसु अहालदं अदिद्वे मासलहु । दिद्वे मासगुरुं ।

पोरिसि अदिद्वे मासगुरुं । दिद्वे चउलहुगं ।

अधियं पोरिसि अदिद्वे चउलहु । दिद्वे चउगुरुं ॥५३२६॥

संपातिमे वि एवं, मासादी णवरि ठाति चउगुरुए ।

भिक्षु वसहाभिसेगे, आयरिए विसेसिता अहवा ॥५३३०॥

पुम्बद्धं गतार्थं । एवं ओहिमं गयं ।

अधवा — एवं चेव भिक्षुस्स वसभस्स अभिसेपस्स आयरियस्स य विमेषियं विज्जति । भिक्षुस्स उभयलहुं, वसभस्स कालगुरुं, अभिसेगस्स तवगुरुं आयरियस्स, उभयगुरुं । एस वित्तियो आदेशो ॥५३३०॥

अहवा भिक्षुस्सेवं, वसभे लहुगाति ठाति छल्लहुगे ।

अभिसेगे गुरुगादी, छगुरु लहुगादि छेदंतं ॥५३३१॥

भिक्षुस्स एवं जं पुत्तं । वसभस्स असंपाइम-संपाइम-अहालदपोरिसि-अधिय-अदिद्विद्वेसु पुम्ब चारणियविहीते मासलहुगाओ आढत्तं छल्लहुए ठायति ।

उवज्झायस्स असंपाइमेसु मासगुरुगाओ आढत्तं छल्लहुए ठायति, संपातिमेसु चउलहुगातो आढत्तं छगुरुए ठायति ।

आयरियस्स चउलहुगाओ आढत्तं छेदे ठायति । एस तत्तियो पयारो ॥५३३१॥

अहव पंचव्हं संजतीण समणाण चेव पंचण्हं ।

पणगादी आरद्धा, णेयव्वा जाव चरिमं तु ॥५३३२॥

पंच संजतीओ इमा — खुड्डी, धेरी, भिनखुणी, अभिसेगि, पवत्तिणी चेव । समणाण वि एते चेव पंच भेदा । “पणगादि जाव चरिमं” ति ॥५३३२॥

इमे पक्खित्ताणा —

पण दस पणार वीसा, पणवीसा मास चउर छच्चेव ।

लहुगुरुगा सच्चेते, लंदादि असंप-संपदिसुं ॥५३३३॥

पणगादि जाव छम्मासो, सच्चे एते लहुगुरुभेदभिण्ण सोलस भवति । छेदो मूलं अणवट्ठो पारंरियं च एते चउरो, सच्चे वीसं ठाणा । अहालंदादिया तिण्णि पदा, असंपाइमा दो पदा, अदिद्विद्विदा य दो पदा, चिट्ठणादिया य दसपदा ॥५३३३॥

इदाणि चारणिया कज्जति —

पणगादि असंपादिमं, संपातिमदिद्वमेव दिद्वे य ।

चउगुरुगे ठाति खुड्डी, सेसाणं बुड्ढि एक्केक्कं ॥५३३४॥

खुड्डी चिट्ठति असंपाइमे अहालदं कालं अदिद्वे पंचराइदिया लहुया । दिद्वे पंच राइदिया गुरुया ।

खुड्डी चिट्ठति असंपातिमे पोरिसि अदिद्वे पंच राइदिया गुरुया । दिद्वे दस राइदिया लहुया ।

खुडो विट्ठइ असंपादमे अधियं पोरिमि अदिट्ठं दसराइदिया लहुया । दिट्ठे दस राइदिया गुरुया ।
एयं असंरातिमे भणियं ।

संगाइमे पुण पंचराइदिण्हि गुरुएहि आढत्तं पण्णरसराइदिण्हि लहुए ठाति ।

एयं विट्ठंतीए भणियं गिसीयंतीए पंचराइदिण्हि गुरुएहि आढत्तं पण्णरसहिं गुरुहिं ठाति ।

तुअट्ठंतीए असपातिम-संपातिमेहि दमसु राइदिण्सु लहुएमु आढत्तं वोसाए राइदिण्हि लहुएहि ठाति ।

गिह्वायंतीए वोसाए गुरुहिं ठाति ।

पयलायंतीए पणुवीसाए लहुएहि ठाति ।

सज्जायं करंतीए पणुवीसाए राइदिण्हि गुरुएहि ठाति ।

भागं भायंतीए मामलहुए ठाति ।

आहारं आहारंतीए मामगुरुए ठाति ।

वियारं करंतीए चउलहुए ठाति ।

काउरसमं करंतीए चउगुरुए ठाति ।

एयं खुडोए भणियं । थेरमादियाण हेट्ठा एक्कं पदं हुसेज्जा उवरि एक्कं वड्ढेज्जा ॥५३३४॥

छल्लहुगे ठाति थेरी, भिक्खुणि छग्गुरुग छेदी गणिणीए ।

मूलं पवत्तिणी पुण, जहभिक्खुणि खुडुए एवं ॥५३३५॥

थेरीए गुरुपणगातो आढत्तं छल्लहुगे ठाति ।

भिक्खुणीए दमण्हं राइदियाण लहुयाण आढत्तं छग्गुरुए ठाति ।

अभिसेयाए दमण्हं इंदियाण गुरुयाण आढत्तं छेदी ठाति ।

पवत्तिणीए पण्णरस लहुया आढत्तं मूले ठायति । एवं संजतीण भणियं ।

इदामि संजयाणं भण्णति - तत्थ अतिदेसो कीरति ।

जहा भिक्खुणी भणिता तहा खुडो भाणियव्वो ।

जहा गणिणी भणिया तहा भिक्खू भाणियव्वो ।

उवज्जायस्स गुरुएहि पण्णरसहिं आढत्तं अणवट्ठे ठाति ।

आयरिणो वोसाए लहुएहि राइदिण्हि आढत्तं पारंयिए ठाति ॥५३३५॥

गणिणिसरिसो उ थेरो, पवत्तिणीसरिसओ भवे भिक्खू ।

अट्ठोक्कंती एवं, सपदं सपदं गणि-गुरुणं ॥५३३६॥

गताया । गणिस्स सपदं अणवट्ठं, गुरुस्स सपदं पारंयियं ॥५३३६॥

एमेव चिट्ठणादिसु, सव्वेसु पदेसु जाव उस्सगो ।

पच्छित्ते आपसा, एक्केक्कपदम्मि चचारि ॥५३३७॥

१ प्रवसाहारनिहारस्वाध्याय-ध्यानकायोत्सर्गाः, इति क्रमेण प्रायश्चित्तान्मुक्तानि, वृ० क० २४०६ गाथा-वृत्तौ ।

चिट्ठुणादिपदे असंपातिसंपातिमे य मदिदु-दिदुमु चउरो पच्छित्ता भवति । एवं निरीयणादिमु वि एक्केक्के चउरो पच्छित्ता भवति ।

अहवा — चिट्ठुणादिमु एक्केक्के चउरो आदेता इमे — एक्कं मोहियं, नितियं तं चेव कालविसेसितं, ततियं छेदंतं पच्छित्तं, चउत्थं 'महल्लं पच्छित्तं' ॥५३३७॥ सम्मत्तं दगतीरं ति दारं ।

अधुता 'जुवकस्यावसरः प्राप्तः । तत्थ गाहा —

संकम जुवे अचले, चले य लहुगो य होति लहुगा य ।

तम्मि वि सो चेव गमो, नवरि गिलाणे हमं होति ॥५३३८॥

जुवयं नाम विट्ठुं (वीउ) पाणियगित्तित्तं । तत्थ पुण देउलिया घरं वा होउज्ज, तत्थ वसति गेण्हति चउलहुगा, एयं वसद्धिगहणगिष्फणं । तं जुवयं संक्रमेण जलेण वा गम्मइ ।

संकमो दुविहो — चलो अचलो य । अवलेण जाति मासलहु ।

चलो दुविहो — सपच्चवाओ अपच्चवाओ य । अपिपच्चवाएणं जइ जाति तो चउलहुं सपच्चवाएण जाति चउगुरू । जलेण वि सपच्चवाएण गच्छति चउगुरू । अपिपच्चवाए चउलहुं । "तम्मि वि सच्चेव" पच्छद्व — तम्मि वि जुवते सच्चेव वत्तव्वया जा उदयतीरए भगिता । "अधिकरणं अंतराए" ति एतओ आदत्तं वाव "एक्केक्कपदम्मि चत्तारि" ति, गवरि — इमे दोसा अब्भहिता गिलाणं पडुच्च ॥५३३८॥

दट्ठुण व सत्तिरुणं, ओभासण विरहिने व आतियणं ।

परितावण चउगुरूगा, अकप्प पडिसेव मूलदुगं ॥५३३९॥

गिलाणस्स उदयं दट्ठुं "सत्तिरुणं" ति एरिसो मत्तो उणज्जति गियामिं ति । ताहे ओभासइ । जइ दिज्जति तो संजमविराहण । अह ण दिज्जति तो गिलाणो परिच्छतो, विरहियं साहहि अण्णेहि य ताहे आदिएज्ज । जति सत्तिगेण आदियति तो चउलहुं । अट्ठाकप्पं पडिमेवति "दुगं" पि मिहिलिगेण अण्णातिविय-लिगेण वा तो मूलं ।

अहवा — आदिए आउक्कायगिष्फणं चउलहुयं । तसेमु य तसगिष्फणं पाणियव्वं । पचिदिएमु तिसु चरिमं, तेण वा अपत्थेणं परितावणादिगिष्फणं ।

अह ओभासेतस्स ण देति असंजमो ति काउं, तत्थ अणागाडादिगिष्फणं ।

अह उहातितो चरिमं, जणो य भणइ — "अहो ! गिरणुक्वा मणत्तस्स वि ण देति" ।

अहवा — अकप्पं पडिसेवतो ओहावेज्ज — एगो मूलं, दोसु अण्णद्वं, तिसु चरिमं ॥५३३९॥

आउक्काएलहुगा, पूतरगादीतमेसु जा चरिमं ।

जे गेलण्णे दोसा, धित्तिदुब्बल-सेहे ते चेव ॥५३४०॥

एत्थ कायगिष्फणं पच्छित्तं पाणियव्वं ।

छक्काय चउसु लहुगा, परिच लहुगा य गुरूगमाहरणे ।

संवट्ठण परितावण, लहुगुरूगाऽतिवायतो मूलं ॥५३४१॥

१ चारणिहा अयश्चित्तं । २ गा० ५३१० । ३ गा० ५३१३ । ४ गा० ५३३३ ।

कंठा । जे गिलाणदोसा भणिता ते धितिदुब्बले वि दोसा, सेहे वि तच्चेव दोसा ॥५३४१॥
जुवगेति गयं ।

इदार्णि 'आयावणा -

आतावण तह चेव उ, णवरि इमं तत्थ होति नाणत्तं ।

मज्जण-सिचण-परिणाम-वित्ति तह देवता पंता ॥५३४२॥

जदि दगसमीवे आयावेति तत्थ तह चेव अधिकरणादि दोसा । जे उदगतीरे भणिया जे जुवगे भणिया संबवति ते सन्ने अविसेसेण भाणियव्वा । दगसमीवे आयावेत्तस्स चउलहुं आयावणाए इमे अन्नभहिया 'मज्जण-सिचण-परिणाम-वित्तिदेवतापंत' ति ॥५३४२॥ मज्जण-सिचणपरिणामा एते तिणि पदा जुगवं एकगहाए ववज्जाणेति ।

मज्जंति व सिचंति व, पडिणीयऽणुकंपया व णं कोई ।

तण्हण्हपरिणतस्स व, परिणामो ण्हाण-पियणेषु ॥५३४३॥

तं उदगतीरातावणं मज्जंति ण्हवति पडिणीयत्तणतो, घम्मितो पयावणेणं सिचंति तं सिगच्छइदि पंजलीहि वा, तं वि अणुकंपया पडिणीयत्तया वा कश्चित् अहमद्रः प्रत्यनीको वा एवं करेति ।

अहवा - तस्स दगतीरातावणस्स "तण्हपरिणतोमि" ति तिसिम्मो उण्हपरिणतो घम्मितो, एयावत्प-सूयस्स घम्मियस्स ण्हाणपरिणामो उण्हज्जति, तिसियस्स पियणपरिणामो ति ॥५३४३॥ दारा तित्रि गता ।

"३वित्ति" अस्य व्याख्या -

आउट्टुजणे मरुगाण अदाणे खरि-तिरिक्खिञ्जोभादी ।

पच्चक्ख देवपूयण, खरियाचरणं च खित्तादी ॥५३४४॥

पुव्वद्वस्स इमा विभासा -

आतावण साहुस्सा, अणुकंपंतस्स कुणति गामो तु ।

मरुगाणं च पदोसा, पडिणीयाणं च संका उ ॥५३४५॥

तस्स साहुस्स दगतीरे आयावेत्तस्स आउट्टो सो गामज्जणो अणुकंपतो य पारणमदिणे भत्तादियं सविसेसं देति, - "इमो पच्चक्खदेवो ति कि अमहं अनेसि मरुगादीणं दिन्नेणं होहिति, एयस्स दिण्यं महफलं" ति । ताहे मरुगादि अदिज्जते पदोसं गता । "खरि" ति दुवक्खरिता, "तिरिक्खी" महासहियादि, एयावु "छोभगो" ति अययं देति, - "एस संजतो दुवक्खरियं परिभुजति, तिरिक्खियं वा" ।

अहवा - दुवक्खरियं दाणसंगहियं काउ महाजणमग्गे बोत्तावेति, महासहियं वा तत्थ संजतसमीवे नेउं संजयवेसेण गिण्हति, संजयं च अप्पसागारियं ठवेति, अग्गे य बोलं करेति - "एस संजतो एरिसो" ति । तत्थ जे पडिणीया तेसि संका भवति द्धु । निगसकिए मूलं । अहवा - जे पडिणीया ते संकंति कीस एसो तित्थठाणे आयावेति, कि तेण्हेण, कि ताव मेहुण्हेण । "वित्ति" गतं ।

इदार्णि "तह देवता पंता" अस्य व्याख्या - "पच्चक्खदेव" पच्चद्व । जत्थ आयावेति तस्स संगीवे देवता जत्थ जणो पुव्वं पूयापरो भासीव, साहु आयावेत्तं दट्ठं इमो पच्चक्खदेवो ति साहुस्स

१ गा० ५३१० । २ ऽऽ ता प क, इत्यपि पाठः । ३ गा० ५३४२ । ४ गा० ५३४८ । ५ गा० ५३४२ । ६ गा० ५३४८ ।

पूर्वं कालमारब्धो न देवताए, सा देवता जहा मरुता पदुदा तहा दुवक्खरिण-तिरिक्खिणु करेज्ज, अहुदा - सा देवता साहुक्खं धावरेता अन्नं च तस्स पडिक्खं करेता दुवक्खरिणं तिरिक्खीं वा परिभुजंतं लोमस्स दंसेति । अहुदा - खित्तित्तादिणं करेज्ज । अन्नाद्यो वा अकप्पपडित्तेवणा अकिरियाआं दरिसेज्ज । अम्हा तत्थ एतिया दोसा तम्हा तत्थ दगतीरे न ठाएज्जा ॥५३४५॥

वीयपए ठाएज्ज वि दगतीरे -

पढमे गिलाणकारण, बितिए वसही य असति ठाएज्जा ।

रातिणियकज्जकारण, ततिए बितियपयजयणाए ॥५३४६॥

“पढमे” ति दगतीरे, तत्थ गिलाणकारणेण ठाएज्जा । “बितिय” ति जुवगे तत्थ ठायज्जा वसविनिमित्तं । “ततियं” ति - आयावणा, “राट्ठिणउ” ति कुलगणसंघकज्जं तेण राट्ठो कज्जं हवेज्ज, एते-
तिमिबि बितियपदा ॥५३४६॥

कहं पुण गिलाणट्ठा दगतीरेण ठाएज्जा ? -

विज्ज-दवियट्ठाए, णिज्जंतो गिलाणो असति वसतीए ।

जोग्गाए वा असती, चिट्ठे दगतीरेणोतारे ॥५३४७॥

वेज्जस्स सगासं निज्जंतो, ओमहट्ठा वा [“असति”] अन्नत्थ निज्जंतो, अन्नत्थ नत्थि वसधी दगतीरे य अत्थि ताहे तत्थ ठाएज्ज, गिलाणजोगा वा वसही अन्नत्थ नत्थि । अहुदा - वीममणट्ठा दगतीरेण मुहुत्तमेत्तं ओयारिज्जइ तत्थ वि मणुयतिरियाण ओयरणमगे नोतारिज्जति ॥५३४७॥

तत्थ ठियाणं इमा जयणा -

उदगतेण चिलिमिणी, पडिचरए मोत्तु सेम अण्णत्थ ।

पडिचर पडिसंलीणा, करेज्ज सन्वाणि वि पदाणि ॥५३४८॥

उदगतेण चिलिमिणी कडगो वा दिज्जइ, जे गिलाणपडियरगा ते परं तत्थ अच्छंति सेसा अन्नत्थ अच्छंति । पडियरगा वि पडिसंलीणा अच्छंति जहा असंवातिसंपाति-माणं सत्ताणं संत्तासो न भवति । एवं ठिया सन्वाणि वि चिट्ठणादिपदाणि करेज्ज ॥५३४८॥ पढमे ति भतं ।

इदार्णि ‘बितिय ति -

अट्ठाणणिग्गायादी, संकम अप्पावहुं असुण्णं तु ।

गेलण्ण-मेहभावे संसट्ठुसिणं व (सु) निव्ववियं ॥५३४९॥

अट्ठाणणिग्गायादी दोसा साहुणो अन्नाए वसहिए सति जुवगे ठायति । तत्थ जति संकमेण गमणं, तेसु संकमेसु अप्पाबहुणं, जो एग्गिओ अन्नलो, अपरिसादी णिप्पच्चवातो य तेण गंतव्वं, अण्णेसु वि जो बहुयुणो तेण गंतव्वं । दिया-राओ य वसही असुण्णा कायव्वा । तत्थ य ठियाण जति गिलाणस्स सेहस्स वा पाणिंयं पियामो ति असुओ भावो उप्पज्जति ताहे त पणविज्जंति, तहावि पट्ठिते भावे ताहे संसट्ठुवाणं उडिणोदवं वा “सुणिज्जितं” ति सुसीयलं काउं दिज्जति, अण्णं वा फासुणं ॥५३४९॥ जुवयजयणा भता ।

इदाणि 'रातिणियकज्जंति -

उल्लोयण णिग्गमणे, ससहातो दगसमीव आतावे ।

उभयददो जोगग्गे, कज्जे आउट्ट पुच्छणया ॥५३५०॥

चेतियाण वा तद्वरविणासे वा संजतिकारणे वा अणम्मि वा कम्मि य कज्जे रायाहीणे, सो य राया तं कज्जं ण करेति, सयं बुग्गाहितो वा, तस्साउट्टणामितं दगतीरे आतावेअ । तं च दगतीरं रण्णो ओल्लोयणठियं णिग्गमणहे वा । तत्थ य आतावेतो ससहाओ आतावेति उभयददो धितिसंघयणेहि । तिरियाणं ओ अवतरणपहो मणुयाण य ण्हाणादिभोगट्ठणं तं च वज्जेउं आतावेइ । कज्जे तं महातवजुतं दट्ठुं अल्लिएज्ज, राया आउट्टो य पुच्छेज्जा - "किं कज्जं आयावेसि ? अहं ते कज्जं करेमि, भोगे वा पयच्छामि, वरेहि वा वरं जेण ते अट्ठो" । ताहे भणाति साहू - "ण मे कज्जं वरेहि, इयं संघकज्जं करेहि" ॥५३५०॥

इमेरिसो सो य सहाओ -

भावित करण सहायो, उत्तर-सिचणपदे य मोत्तूणं ।

मज्जणगाइणिचारण, ण हिंडति पुप्फ वारेति ॥५३५१॥

धम्मं प्रति भावितो, ईसत्थे धणुवेदादि कयकरणे संजमकरणे वा कयकरणे, ससमयपरसमयगहियड त्यत्तणओ उत्तरसमत्थो, अप्पणो वि एरिसो चेव । सो य सहाओ वति कोइ धणुकूलपडिणीयत्तणेणं सिचति वा मज्जति वा पुप्फाणि वा आलएति तो तं वारेति । तम्मि सामे णगरे वा सो आयावगो भिक्खं ण हिंडइ, भा मरुगादि पट्टुा विसगरादि देज्ज ॥५३५१॥

जे भिक्खू सागणियसेज्जं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥५३५२॥

सह अगणिगा सागणिया ।

सागणिया तू सेज्जा, होति सजोती य सप्पदीवा य ।

एतेसिं दोण्हं पी, पत्तेय-परुवणं वीच्छं ॥५३५२॥

सागणिसेज्जा दुविधा - जोती दीवो वा । पुणो एक्केवका दुविधा - असव्वरातो सव्वरातो य । असव्वरातीए दीवे मासलहुं । सेसेसु तिसु विकप्पेसु चउलहुगा पत्तेयं ॥५३५२॥

दुविहा य होति जोई, असव्वराई य सव्वरादी य ।

ठायंतगाण लहुगा, कीस अगीयत्थ सुत्तं तु ॥५३५३॥

"जोइ" ति उद्दिश्यंतं । सेसं कठं ।

चोदगाह -

अणत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ य कोति णिदिट्ठो ।

जा पुण एगाणुण्णा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५३५४॥

१ गा० २५० । २ देखो गा० ५३३१ से ५३५३ ।

भायरियाह -

एयारिसम्मि वांसो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिदिट्ठो ।
 अक्कोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५३५५॥
 जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति विधारणा णत्थि ।
 किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठि प्पहाणेहिं ॥५३५६॥
 उस्सग्गसुत्तं किंची, किंची अववाहयं मुणेयव्वं ।
 तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥५३५७॥
 गेगेसु एगगहणं, सलोम-णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।
 विहिमिण्णस्स य गहणे, अववाउस्सगिगयं सुत्तं ॥५३५८॥
 उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जयं सहइ ।
 न य तं होइ विरुद्धं, एमेव इमं पि पासामो ॥५३५९॥
 उस्सग्गे गोयरम्मी, णिसिज्जऽकप्पाववायओ निण्हं ।
 मंसं दल मा अट्ठिं, अववाउस्सगिगयं सुत्तं ॥५३६०॥
 णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।
 कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सग्गं ॥५३६१॥
 कत्थति देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं ।
 उक्कमकमजुत्ताइं, कारणवसतो णिउत्ताइं ॥५३६२॥
 देसग्गहणे बीए, हि सुइया मूलमाइणो होति ।
 कोहाति अणिग्गहिया, सिच्चंति भवं निरवसेसं ॥५३६३॥
 सत्थपरिणा उक्कमे, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।
 जं पि य उक्कमकरणं, तं पिऽभिनवधम्ममातट्ठा ॥५३६४॥
 बीएहि कंदमादी, विसुइया तेहि सच्चवणकायो ।
 भोमातिका वणेण तु, समेदमारोवणा भणिता ॥५३६५॥
 जत्थ उ देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि सुइयवसेणं ।
 भोत्तूण अहीकारं, अणुओगधरा पभासेति ॥५३६६॥
 उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववादओ य जाणि भवे ।
 कारणजाएण मुणी !, सच्चाणि वि जाणियव्वाणि ॥५३६७॥

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे भुण्णिणो ।
कारणवाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५३६८॥

चोदगाह -

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।
एवं होयऽणवत्था, ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५३६९॥
उम्मत्तवायसरिसं, खु दंसणं न वि य कप्पऽकप्पं तु ।
अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धो उ कस्सेवं ॥५३७०॥

आयरिओ -

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिदेहिं ।
एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५३७१॥
कज्जं णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।
तं तह समायरंतो, तं सफलं होइ सच्चं पि ॥५३७२॥
दोसा जेण णिरुंभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥५३७३॥
अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो ण जाणाति ।
अणुण्णवणाइजयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५३७४॥
णिउणो खलु सुत्तथो, न हु सक्को अपडिबोहितो नाउं ।
ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसिं तहिं वसंताणं ॥५३७५॥
अग्गीया खलु साहू, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।
रमणिज्ज भिक्ख गामे, ठायंती जोइसालाए ॥५३७६॥

एत्ततो (५३५४) आदत्तं जाव 'अग्गीया' गाह (५३७६) ।

एयाओ सव्वाओ गाहाओ जहा उदगसालाए भणिता तहा भाणियव्वा ।

सजोइवसधीए ठियाणं इमे दोसा -

पडिमाए भामियाए, उट्ठाहो तणाणि वा तहिं होज्जा ।

साणादि वालणा लाली, मूसए खंभतणाई पत्तिप्येज्जा ॥५३७७॥

तेण त्रौतिमा पडिमा भामिज्जेज्जा, तत्थ उट्ठाहो एतेहि पडिणीयताए गारायणादिपडिमा
भामिता, तत्थ तेण्हादी दोसा ।

संधारणादिकया वा तणा पत्तिवेज्ज ।

साणेण वा उम्भए चालिए पत्तीवणं होज्ज ।

जस्य पदीवो तस्य भूसगो "लाल" ति वट्टी तं कट्टति, तस्य खंभो पलिप्पइ गिवेसणाणि वा पलिप्पति ॥५३७७॥ बितिय० गाहा (५१५८) अट्टाणनिगया०... गाहा (५१६४) ॥५३७८॥ ॥५३७९॥ कंठया पूर्ववत् ।

सजोतिवसहीए दव्वतो ठायंतस्स इमे दोसा पच्छित्तं च -

उवकरणेऽपडिलेहा, पमज्जणावास पोरिसि मणे य ।

णिक्खमणे य पवेसो, आवडणे चेव पडणे य ॥५३८०॥

चउण्हं दाराणं इमं वक्खाणं -

पेह पमज्जण वासए, अग्गी ताणि अकुव्वतो जा परिहाणी ।

पोरिसिमंगे अभंगे, सजोती होति मणे तु रति अरति वा ॥५३८१॥

जति सवगरणं ण पडिलेहेइ, "मा छेदणेहि अगणिसंघट्टो भविस्सइ" ति तो मासलहुं उवधिणिप्फणं वा । ते य अपडिलेहुंवस्स संजमपरिहाणो भवति । अह पडिलेहेति तो छेदणेहि अगणिकायसंघट्टो भवति, तस्य चउलहुं । सुत्तपोरिसि ण करेति मासलहुं, अतएवपोरिसि ण करेति मासगुरुं, सुत्तं णासेइ चउलहुं, अतएव णासेति चउगुरुं । मणेण य जइ जोइसालाए रती भवति "सजोतीए सुहं अच्छिजइ" तो चउगुरुं, अह भरती उत्पज्जइ, जोतीए दोसं भणइ तो चउलहुं ॥५३८१॥

१आवासए ति अस्य व्याख्या -

जति उस्सग्गे ण कुणति, ततिमासा सव्वअकरणे लहुगा ।

वंदण-धुती अकरणे, मासो संडासगादिसु य ॥५३८२॥

"जोति" ति काउं जत्तिया काउस्सग्गा ण करेति तत्तिया मासलहुं । सव्वं आवासयं ण करेति चउलहुगा । अह सजोइयाए आवस्सयं करेति तहावि जत्तिया उस्सग्गा करेति अगणिविराहण ति काउं तत्तिया चउलहुगा । सव्वम्मि चउलहुगं चेव । अगणि ति काउं वंदणयं न देति, धुतीतो ण देति, संडासयं ण पमज्जंति उवसंता, तिसु वि पत्तेयं मासलहुं । अह करेति तह वि मासलहुं । छेदणगेहि य अगणिविराहणाए चउलहुं ॥५३८२॥

२णिक्खमणे य पच्छिद्धं अस्य व्याख्या -

आवस्सिया णिसीहिय, पमज्ज आसज्ज अकरणे इमं तु ।

पणगं पणगं लहु लहु, आवडणे लहुग जं चउण्णं ॥५३८३॥

णिक्खमंता आवासियं ण करेति तो पणगं, पविमंता णिसीहियं ण करेति तो पणगं चेव । अधवा-पविमंता णिता वा ण पमज्जंति, वसहि वा ण पमज्जंति तो मासलहुं । अह पमज्जंति तो मासलहुं, पमज्जंतस्स य छेदणेहि अगणिविराहणे चउलहुं । आसज्जं ण करेति मासलहुं । आवडण ति उम्मुमादिसु पखलणा तस्य चउलहुं । "जं चउणं" ति अगगाडपरित्तावणाणिप्फणं ॥५३८३॥

अधवा - "जं चउण्णं" ति -

सेहस्स विसीयणता, ओसक्कऽहिसक्क अण्णहि नयणं ।

विज्जविज्जण तुयड्डण, अहवा वि भवे पलीवणता ॥५३८४॥

१ गा० ५३८० । २ गा० ५३८० । ३ गा० ५३८० । ४ गा० ५३८३ ।

मेहो कोइ सीयतो विसीएज तेण वा उज्जालिते जइ मण्णो तप्पइ तो चउलहुं। जत्तिया वारा हत्था परावत्तेइ तावेइ वा मण्णं वा गायं तत्तिया चउलहुगा । “मोसक्केइ” त्ति उत्सारेइ उम्भुयं “अहिसक्केइ” त्ति मण्णि तेण उत्तुमत्ति, सुयंतो जग्गतो वा तं मण्णि मण्णत्थ गेत्ति, सुयंतो वा जत्ति विअक्कवत्ति-एएसु सत्वेसु पत्तेयं चउलहुगा, पयावमाणस्म पमादेण पलिप्पेज्जा ॥५३८५॥

तत्थिमं पच्छित्तं -

गाउय दुगुणादुगुणं, वत्तीसं जोयणाइ चरिमपदं ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८५॥

जइ गाउयं डज्जति तो ० ० । अद्धजोयणं डज्जति ० ० । जोयणं ० ० ० । दोहि जोयणेहि ० ० ० । चउहि जोयणेहि छेने । अट्ठहि मूलं । सोलसहि मण्णद्वो । वत्तीसाए चरिमं ॥५३८५॥

गोणे य साणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।

लहुगा अवारणम्मि, खंभतणाइं पलीवेज्जा ॥५३८६॥

अह गोणसाणे वारेत्ति मा पलीवणं करेहि त्ति तो चउलहुगा । वारिया य हरितायी विराहेत्ता वच्चत्ति, अहिकरणं तत्थ वि चउलहुं, कायणिक्कणं वा । अह ण वारेत्ति तत्थ खंभं तणादि वा पलीवेज्जा ॥५३८६॥

तत्थ वि -

गाउय दुगुणादुगुणं, वत्तीसं जोयणाइ चरिमपदं ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८७॥ पूर्ववत्

जम्हा एते दोसा तम्हा णो जोतिसालाए ठाएज्जा, कारणे ठायंति -

अद्धानिग्गतादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असत्तीए ।

गीयत्था जयणाए, वसंति तो जोतिसालाए ॥५३८८॥

पुव्वभणितो अववातो गाममज्जे जा जोतिसाला देवकुलं वा । इमो कुंभकारसालाए अववादो, जेण कुंभकारस्स पंचसालाओ भणिया,

इमाओ -

पणिया य भंडसाला, कम्मे पयणे य वग्घरणसाला ।

इंधणसाला गुरुगा, सेसासु वि होत्ति चउलहुगा ॥५३८९॥

एतेसि इमा विभासा -

कोलालियावणा खलु, पणिसाला भंडसाल जहिं भंडं ।

कुंभारसाल कम्मे, पयणे वासासु आवातो ॥५३९०॥

तोसलिए वग्घरणा, अग्गीकुंडं तहिं जलति णिच्चं ।

तत्थ सयंवरहेउं, चेडा चेडी य छुम्भंति ॥५३९१॥

पणियसाला जत्थ भायणाणि विक्केति, वाणिय कुंभकारो वा एसा पणियसाला ।

भंडसाला जहि भायणाणि संगोवियाणि अच्छंति ।

कम्मसाला जत्थ कम्मं करेति कुंभकारो ।

पयणसाला जहि पच्चंति भायणाणि ।

इंधणसाला जत्थ तण-करिसभारा अच्छंति ।

वग्घारणसाला तोसलिविए गाममउक्के साला कीरइ । तत्थ अगणिकुंडं णिचभेत्त अच्छंति संयवरणिमित्तं । तत्थ य बह्वे चेडा एक्का य संयवरा चेडी पविसिज्जति, जो से चेडीए भावति तं वरेति । एयासु सत्तासु इमं पच्छित्तं क्कु । ॥५३६१॥

णवरं -

इंधणसाला गुल्ला, आलिच्चे तत्थ णासिउं दुक्खं ।

दुविहविराहणा भुमिरे, सेसा अगणी उ सागरियं ॥५३६२॥

पुव्वद्धं कंठं । अण्णं च इंधणसालाए भुमिरं, तत्थ दुविधा विराधणा - भायविराहणाए चउगुहा, संजमविराधणाए तत्थ संघट्टादिकं जं आवज्जति तं पावति । सेसासु पणियसालादिषु सागारियं पयणसालाए पुण अगणिदोसो ॥५३६२॥

एयासु अववादेण ठायंतस्स इमो कमो -

पढमं तु भंडसाला, तहिं सागारि णत्थि उभयकाले वि ।

कम्माऽऽपणि णिसि णत्थी, सेसकमेणिधणं जाव ॥५३६३॥

अण्णाए वसहीए असति पढमं भंडसालाए ठाति, तत्थ उभयकाले वि सागारियं नत्थि । उभय-कालो - दिया रातो य । ततो पच्छा कम्मसालाए । ततो पच्छा पणियसालाए ।

अह्वा - कम्मपणियसालाण कमो णत्थि, तुल्लदोसत्तणतो, । सेसेसु पयण-वग्घारण-इंधणाइसु असति कमेण ठाएज्जा ॥५३६३॥

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संधारणा विही पुव्वं ।

जागरमाणवसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५३६४॥ कंठया

तत्थ वसंताण इमा जयणा -

पासे तणाण सोहण, ओसक्कऽहिसक्क अन्नहिं नयणं ।

संवरणा लिपण्या, छुक्कार णिवारणोक्कट्ठी ॥५३६५॥

पुरातना गाथा । अगणिकायस्स पासे तणाणि विसोहिज्जति, अक्कंतियतेणेषु वा ओसक्कज्जति, गलीवणभएण वा अक्कंतियतेणेषु वा उस्सक्कज्जति, गिलाणट्ठा सावयभएण वा अट्ठाणे वा विवितासीयं वा तेण अइसक्कावेज्जा वि, अण्णाहिं वा सोउमणो नेज्जा, बाहिं वा ठवेज्जा, कते वा कज्जे खारेण संवरिज्जति, ऋक्कमइ ति कुत्तं भवति मत्तणेण वा, पहाउमं पालेत्ता विज्झाहिंति । खंभो छगणादिणा वा लिप्पति । गिलवणभया साणो गोणो तेणो वा तत्थ छुत्ति हडिं ति वा भन्नइ, तह वि अटंता वारिज्जति, सहसा वा लिप्ते तत्थतो उवक्कज्जति भव्वं । तणाणि वा, कडगो वा उदग-धुलीहिं वा विज्झविज्जति, पालं वा कज्जति ५३६५॥

સજોતિવસહીએ ઉવકરણ-પડિલેહનાદિદારેસુ હમં જયણં કરેતિ—

કહઓ વ ચિલિમિલી વા, અસતી સમએ વ વાહિ જં અંતં ।

ઠાગાસતિ સમયમ્મિ વ, વિજ્ઞાયઽગ્ગણિમ્મિ પેહંતિ ॥૫૩૬૬॥

જોતોએ અંતરે કહઓ કહજતિ, ચિલિમિલી વા । અસતિ કહગચિલિમિલીએ વા જતિ ય ઉવહિતેજગ-
મયં અરિય તાહે અંતોવઢી વાહિ પડિલેહિજ્જતિ, અહવા — વાહિ પિ તેજગમયં ઠાગો વા ગતિય તાહે વિજ્ઞાએ
અગ્ગણિમ્મિ પેહંતિ ॥૫૩૬૬॥

જિંતા ણ પમજ્જંતિ, મૂગા વા સંતુ વંદણમહીણં ।

પોરિસિ વાહિ મણેણ વ, સેહાપ વ દેતિ અણુસદ્ધિં ॥૫૩૬૭॥

જિંતા પવિસંતા વા ણ પમજ્જંતિ, આવાસયં વાહ્યજોગ-વિરહિયં મૂયં કરેતિ, વારસાવત્તવંદણં
ણ દિતિ, પોરિસિ સુસત્તયાણં વાહિ કરિતિ । અહ વાહિ ઠાગો ગતિય તાહે “મણે” તિ મણસા અણુપેહિત્તિ ।
અત્ય સેહો અણ્ણો વા ઉદિતે રાગં ચચ્છતિ તત્ય અણુસદ્ધિં દેતિ ગીયત્થા ॥૫૩૬૭॥

આવાસ વાહિ અસતી, ઠિત વંદણ વિગહ જતણ થુતિહીણ ।

સુત્તથ વાહિયંતો, ચિલિમિણિ કાઠણ વ સરંતિ ॥૫૩૬૮॥

ગતાર્યા । વાહિ અસતિ ઠાગસ્મ જો જાહિ ઠિઓ સો તહિં ચેવ ઠિઓ પડિવકમતિ વંદણહીણં ।
વિગહણા ધાલોયણા, તેં જયણાતે કરેતિ । ધૂર્વંતો મણસા કહતિ । સુત્તથ વાહિ ગયત્થં જોતિઅંતરેવિ ચિલિમિલિં
કાઠં અતો ચેવ સુત્તયે સરંતિ ॥૫૩૬૮॥

હમા અણુસદ્ધી સેહાદીણં—

નાણુજ્જોયા સાહ, દવ્વુજ્જોયમ્મિ મા હુ સજ્જિત્થા ।

જસ્સ વિ ન એતિ નિદા, સ પાઉયા ણિમીલિયં ગિમ્હે ॥૫૩૬૯॥

સજ્જતિ તિ રજ્જતે । જસ્સ વિ સજોતિએ ગિદ્દા ણ એ સોવિ પાઉમો સુવતિ । અહ ગિમ્હે ઘમ્મો સો
અચ્છોણિ ણિમિલ્લેતિ જાવ સુવતિ ॥૫૩૬૯॥

મૂગા વિસંતિ ણિતિ વ, ઉમ્મુગમાદી કતાહ અલ્લિવંતા ।

સેહા ય જોહ દૂરે, જમ્મંતી જા ધરતિ જોતી ॥૫૪૦૦॥

મૂગા વિસંતિ પ્રવિશંતિ । મૂમત્તિ ણિસીહિયં ણ કરેતિ, ણિતો આવસ્સિયં ણ કરેતિ, પ્રાવટ્ટણાદિમય્યા
અગ્ગણિસંઘટ્ટણમય્યા ઉમ્મુગાદિ ણ ચ્છિલ્લેતિ, સેહે અગીતા અપરિણતા ગિદ્દમ્મા ય જોતોએ દૂરે ઠવિજ્જતિ, જે ય
ગીતા વસમ્મા તે જમ્મંતિ જાવ સો જોતિ ધરતિ ॥૫૪૦૦॥

અહવા—

વિહિણિગ્ગતાદિ અતિનિદ્ધેપેલ્લિતો ગીઓ સન્નિકકુ’ સુવતિ ।

સાવયમ્મય ઉસ્સન્નકણ, તેજમએ હોતિ મયણા ઉ ॥૫૪૦૧॥

અદ્ધાણવિવિત્તા વા, પરકહ અસતી સયં તુ જાલંતિ ।

સલાદી વ તવેડં, કયકજ્જે છારઅન્નકમણં ॥૫૪૦૨॥

विहिण्णितो आत्तः भतीवन्निहातितो वा ताहे ओसक्किउं सुवति, गीयरयो सोहसावयादिमए वा ओसक्कति, तेणमए य भयणा, अक्कतिएसु विज्झावेति, इयरेसु ण विज्झावेति ।

अद्धाने विविता मुसिता सीतेण वा अभिभूता ताहे ओ परकडो भगणो तत्थ विसीतंति, परकडस्स असति सयं जालेंति, सूलादिसु कज्जं काउं छारेण अक्कमंति णिव्वेति वा ॥५४०२॥

सावयमए आणिति व, सोउमणा वा वि बाहि णीणंति ।

बाहिं पलीवणभया, छारे तस्सासति णिव्वावे ॥५४०३॥

भण्णतो वि आणेंति, वसहीतो बाहिं णेंति । सेसं कउं ॥५४०३॥ जोति त्ति गतं ।

इदाणि 'दीवो -

दुविहो य होति दीवो, असव्वराती य सव्वराती य ।

ठायंते लहु लहुगा, करीस अगीतत्थसुत्तं तु ॥५४०४॥

^१एत्ततो आढत्तं सब्ब भाणियब्बं ।

“^२णत्थि अगीतत्थो वा” गाहा (५३५४) “एयारिसम्मि” गाहा (५३५५) “जं जह गाहा (५३५६) “उत्सगसुयं” गाहा (५३५७) जाव ते “तत्थ सत्तिट्ठा” गाहा (५३५४) ।

पडिमाभामण ओरुभणं, लिपणा दीवगस्स ओरुभणं ।

उव्वत्तण परियत्तण, छुक्कारण वारणोकड्डी ॥५४०५॥

जत्थ पडिमाभामणभयं होजा तत्थ तच्चो ओगासाओ पडिमा फेडिज्जति, जति सक्कति फेडेत्तु । अह ण सक्केति तो दीवतो फेडिज्जति, खभकडणकुट्टाणि य लिप्पंति । अहुवा - संकलदीवगो ण सक्कति उत्तारेउं ताहे वत्ती उवत्तिज्जति, णिपोलिज्जति वा, साणगोणदि वा छुक्कारिज्जति, पविसंता वा साणगोणदी वारिज्जति, बही वा ओकड्डिज्जति, तेणगसु वा उत्सक्किज्जति, सप्पादिमए वा ॥५४०५॥

संकलदीवे वत्ती, उव्वत्ते पीलए य मा डज्जे ।

रूतेण व तं तेव्वलं, घेतूण दिया विगिंचंति ॥५४०६॥ कंठा

पासे तणाण सोहण, अहिसक्कोसक्क अण्णहिं णयणं ।

आगाढकारणम्मि, ओसक्कउहिसक्कणं कुज्जा ॥५४०७॥

दीवगस्स जे पासे तणा, दीवग वा अहिसक्केति । “ओसक्कति” त्ति उत्सक्केति वा अण्णहिं वा गेति । जं तं उत्सक्कण ओसक्कणं करेंति त आगाढे करेंति, णो अण्णगडे ॥५४०७॥

मज्जे व देउलादी, बाहिं व ठियाण होति अतिगमणं ।

जे तत्थ सेहदोसा, ते इह आगाढजतणाए ॥५४०८॥

अधवा - ते साधू विद्याले आगता देउले ठातेज्ज, मज्जेवा गामदेउलं तहिवसतो सागारियाउलं एवि आगता तत्थ दिवसतो ण ठायंति, बाहिं अच्छंति, विसरिएसु सागारिएसु संभाए पविसंति,

१ गा० ५३५२ । २ भाष्ये गृहीत्वात् । ३ अत्र सर्वासु यत्र यत्रोदगसालादि तत्र जोहसालादि उपयुज्य इत्यर्थं भाष्यवचनात् ।

બાહિ વાસે તેજમાવવાદિભયં જાગિઝળ તદ્વ સત્રોતિયાએ સાલાએ સદીવ્ વા જે સેહાદિદોસા પુચ્છતા તે રહ કારણે આગઃહે જયણાએ કાયઞ્વા ॥૫૪૦૮॥

તત્થ જતિ કહિ વિ પલિવેઝ્જા તો રૂમા જયણા -

અપ્પણાતે તુસિણીયા, ણાતે દટ્ઠુણ કરણ સવિઝલં ।

બાહિં ચ દેઝલાદી, સંસદા આગય સ્વરંટો ॥૫૪૦૯॥

જતિ કેળઈ જાતા 'એથ સંજયા ઠિય' તિ તો તુસિણીયા ગાસંતિ । અથ ગાયા લોગેજ તો પલિત્તં દટ્ઠુ મહતા સદ્દેજ સવિઝલં બોલં કરંતિ તાવ જાવ જત્થ ચહુજ્જણો મિલિઓ, તાહે બહુજ્જણસ્સ પુરઓ મળંતિ- "કેળતિ પાથેજ પમીવણં કરંતં, તુઞ્ઞેહિં ચેવ પલીવિતં 'સમણા દુઞ્ઞંતુ' તિ, 'મમંહં ચ સવ્વં ઉવકરણં એથ યુ' , એવં તે સ્વરંટિયાઃ જ કિંચિ ઉત્તરંતેતિ "મ (તુ) મ્હેહિં પલીવિતં" તિ । જત્થ વિ બાહિં ગામસ્સ દેઝલં તત્થ વિ એવં ચેવ, અથવા - દેઝલાતો બાહિં ગિમંતુ સસદ્ કજ્જતિ ॥૫૪૦૯॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તં ઉચ્છુ મુંજઈ, મુંજંતં વા સાતિજ્જઈ ॥૫૪૦૧૦॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તં ઉચ્છુ વિઙ્સઈ, વિઙ્સંતં વા સાતિજ્જઈ ॥૫૪૦૧૧॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તપઈટ્ઠિયં ઉચ્છુ મુંજઈ, મુંજંતં વા સાતિજ્જઈ ॥૫૪૦૧૨॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તપઈટ્ઠિયં ઉચ્છુ વિઙ્સઈ, વિઙ્સંતં વા સાતિજ્જઈ ॥૫૪૦૧૩॥

"મુંજતિ જં મુક્કત્તો, લીલા પુણ વિઙ્સણ તિ ગાયઞ્વા ।

જીવજુતં સચિત્તં, અચિત્તં સચેયજ-પતિદં ।"

એતંસિ ચેવ ચઉણં મુત્તાણં રૂમો અતિદેસો -

સચ્ચિત્તંવફલેહિં, પળ્લરસે જો ગમો સમક્કાતો ।

સો ચેવ ણિરવસેસો, સોલસમે હોતિ રક્કમ્મિ ॥૫૪૧૦॥ કઠા

આણાદિયા દોસા ચઝલહં પચ્છંતં ।

રૂમે ઉચ્છુવિભાગમુત્તા -

જે ભિક્ષુ સચિત્તં અંતરુચ્છુયં વા ઉચ્છુસંહિયં વા ઉચ્છુચોયગં વા ઉચ્છુમેરગં વા ઉચ્છુસાલગં વા ઉચ્છુહાલગં વા મુંજઈ, મુંજંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૫૪૦૧૪॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તં અંતરુચ્છુયં વા ઉચ્છુસંહિયં વા ઉચ્છુચોયગં વા ઉચ્છુમેરગં વા ઉચ્છુસાલગં વા ઉચ્છુહાલગં વા વિઙ્સઈ, વિઙ્સંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૫૪૦૧૫॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તપઈટ્ઠિયં અંતરુચ્છુયં વા ઉચ્છુસંહિયં વા ઉચ્છુચોયગં વા ઉચ્છુમેરગં વા ઉચ્છુસાલગં વા ઉચ્છુહાલગં વા મુંજઈ, મુંજંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૫૪૦૧૬॥

જે ભિક્ષુ સચિત્તપઈટ્ઠિયં અંતરુચ્છુયં વા ઉચ્છુસંહિયં વા ઉચ્છુચોયગં વા ઉચ્છુમેરગં વા ઉચ્છુસાલગં વા ઉચ્છુહાલગં વા વિઙ્સઈ, વિઙ્સંતં વા સાતિજ્જઈ ॥૫૪૦૧૭॥

पव्वसहितं तु खंडं, तव्वज्जिय अंतरुच्छुयं होइ ।

उगलं चक्कलिछेदो, मोयं पुण छल्लिपरिहीणं ॥५४११॥

पेर उभयो पव्वदेससहितखंडं पव्वं, उभयो पेहरहियं अंतरुच्छुयं, चक्कलिछेदछिण्णं उगलं भण्णति,
मोयं अब्भतरो मोरो ॥५४११॥

चोयं तु होति हीरो, सगलं पुण तस्स बाहिरा छल्ली ।

काणं पुण मुक्कं वा, इतरजुतं तप्पइद्वं तु ॥५४१२॥

वंसहीरसहितो चोयं भण्णति, सगल बाहिरो छल्ली भण्णति, पुणकाणियं अंगारइयं वा बुत्तय,
सियालादीहि वा खइय, उवरि मुक्कं, इयरं ति सच्चित्तं तम्मि सच्चित्तविभागे पतिट्ठियं सच्चित्तपतिट्ठितं
भण्णति ॥५४१२॥

जे भिक्खु आरण्णगाणं वण्णंधाणं अडविजत्तासंपइ^१ड्डिताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्माहेइ,
पडिग्माहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खु आरण्णगाणं वण्णंधाणं अडविजत्ताओ पडिनियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्माहेइ,
पडिग्माहेतं वा साइज्जति ॥सू०॥१३॥

अरण्णं गच्छतीति आरण्णगा, वणं धावतीति वण्णधा, आरण्य वण्णार्थय धावतीत्यर्थः । तस्मि
जत्तापट्ठियाणं जो असणादी गेण्हति जत्तापडिनियत्ताणं असणादिसंसं खउरादि वा जो गेण्हति तस्स मायादी
दोसा, चउलहुं ज पच्छित्तं ।

तणकडुहारगादी, आरण्ण वणंधगा उ विण्णेया ।

अडविं पविसंताणं, णियत्तमाणाण तत्तो य ॥५४१३॥

आदिसद्दातो पुप्फकलमूलकंदादीणं, तेसि वण्णंधाणं अडवि पविसंताणं जं संइलं पकत्तं, तत्तो
णियत्ताणं जं किंचि^२ भुण्णादि । सेसं कंठं ॥५४१३॥

तण-कडु-पुप्फ-फल-मूल-कंद-पत्तादिहारगा चेव ।

पत्थयणं वच्चंता, करेति पविसंति तस्सेसं ॥५४१४॥

तणादिहारगा अडवि पविसंता अप्पणो पत्थयणं करेति, सेसं उव्वरिय सिद्धं ।

अडवी पविसंताणं, अहवा तत्तो य पडिनियत्ताणं ।

जे भिक्खु असणादी, पडिच्छते आणमादीणि ॥५४१५॥ कडा

१ वणंधगा । २ संपट्ठियाणं इति जिनविजयसंपादित मूल पुस्तके । ३ गा० ५४१८ ।

इमे दोसा -

पच्छाकम्ममर्तिते, णियडुमाणे वि बंधवा तेसि ।

अच्छिज्जा णु तदा सा, तद्व्वे अण्णदव्वे य ॥५४१६॥

अठविपविसतेणं जं संबलं कयं तं साधूण दातुं पच्छा अण्णो अण्णं करेति । सण्णियट्ठाण वि ण धेतव्वं, तेसि बंधवा तद्व्वे अण्णदव्वे वा कतासा अच्छेज्जा । तद्व्वं चैव जं परातो णीतं, अण्णदव्वं जं अठविप कंदबुण्णादि उपपज्जति ॥५४१६॥

पत्ययणं दाउं इमं करेति -

कम्मं कीतं पामिच्चियं च अच्छेज्ज अगहण दिगिज्जा ।

कंदादीण व घातं, करेति पंचिदियाणं च ॥५४१७॥

अण्णो "कम्म" ति अण्णं करेति, अण्णो वा किणाति, "पामिच्च" ति अच्छेज्जं गेण्हति, अण्णोसि वा अच्छिदरति, अह ण गेण्हति पत्ययणं तो दिगिचित्ति, खुहाए जं अण्णागाढादि परिताविज्जति, अहवा - भुक्खित्तो कंदादि गेण्हति, अथ परिताणंतण्णिप्फण्णं ।

अधवा - भुक्खित्तो जं लावगतित्तिरादि घातिस्सति, परितावणादिण्णिप्फण्णं तिसु चरिमं ॥५४१७॥

अरण्णातो णियगच्छमाणो जो गेण्हति तस्स इमे दोसा -

चुण्णखउरादि दाउं, कप्पट्टग देह कोव जह गोवो ।

चड्डण अण्णे व वए, खउरादि वज्जंखडे भोयी ॥५४१८॥

चुण्णो वदरादियाण, खोरखदिरमादियाण खउरो, भत्तसेसं वा साधूण दाउं कप्पट्टिएहि पुत्तणत्तुभत्ति-जगादिण्हि अण्णोहि य तदामाए अच्छमाणेहि जानिज्जमाणा - "देह णे कंदे मूले चुण्णखउरभत्तसेसं वा", ते भणति - "दिण्णा अग्गेहि साधूण", एव भणते ते पक्खणा क्कणं करेताणि ताणि दट्ठूण पदोसं अच्छेज्ज, जडा गोवो पिड-णिज्जु लीए । एतेसु वा चड्डेतेसु अट्ठेतेसु अण्णं वा अण्णेति खउरादि "भोइ" ति भारिया तो सह असंखडं भवति, अंतरायदोसा य । अट्ठा एवमादि दोसा तट्ठा वर्णं पविमत्ताणं णिताया वा ण धेतव्वं ॥५४१८॥

अत्रे कारणं -

अयिंवे ओमोयरिए, रायडुडे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण गेहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥५४१९॥

अयण ति एणगपरिज्जाणोए जादे चउलहुं पत्तो ताहे सावसेसं गेण्हति ॥५४१९॥

जे भिक्खू वगुराइयं अवगुराइयं वयइ, वयंतं वा साहिज्जति ॥सु०॥१३॥

वगूणि गयणाणि, नेसु रातो वगुरातो, अववा - रातो दीप्तिमाभाजते वा क्षोभत इत्यर्थः, तं विवरीयं जा भणति तस्म चउलहुं ।

इमा णियज्जुत्तो -

वसुमं ति व यमिमं ति व, वसति व वुमिमं व पज्जया चरणे ।

नेसु रातो वुमिरानी, अवुमिमि रातो अवुमिराती ॥५४२०॥

वसु ति रयणा, ते दुविधा—दब्बे भावे य । दब्बे मणिरयणादिया, भावे णाणादिया । इह भाववसूहि अधिकारो । ताणि जस्स ग्रन्थि सो वसुमं ति भण्णति ।

अथवा — इंदियाणि जस्स वधे वट्टंति सो वसिमं भण्णति ।

अथवा — णाणदंसणचरित्तसु जो वसति निच्चकालं सो वस (वुसिमं) ति रातिणिमो भण्णति ।

अहवा — अमुत्तुवति पापं ग्रन्थपदार्थाव्यानं, चारित्रं वा वुसिमं ति वुच्चति । वसति वा चारित्तं वसुराती भण्णति ।

अहवा — “पज्जया चरणे” ति एते चारित्तियस्स पज्जता एगद्धिता इत्यर्थः । एस वुसिरादी भण्णति, पडिपक्खे अबुसिराती ॥५४२०॥

अहवा —

वुसि संविग्गो भणितो, अबुसि असंविग्ग ते तु वोच्चत्थं ।

जे भिक्खु वएज्जा ही, सो पावति आणमादीणि ॥५४२१॥

कठः । वोच्चत्थं नि वुसिरातियं अबुसिरातित् भणति च्छु ॥५४२१॥

एत्थ पढमं वुसिरातियं अबुसिरातियं भण्णति इमेहि कारणेहि —

रोसेण पडिणिवेसेण वा वि अकयन्नु मिच्छभावेणं ।

संतगुणे छाएत्ता, भासंति अगुण असंते उ ॥५४२२॥

कोइ कस्सति कारणे अकारणे वा रुदो, पडिनिवेसणं एसो पूतिज्जइ अहं ण पूइज्जामि, गवमादिविमासा । अकयण्युयाए एनेण तस्स उवयारो कधो ताहे मा एयस्स पडिउवयारो कायव्वो होहिइ ति, मिच्छाभावेण मिच्छत्तेणं उद्दिण्णेणं । सेसं कठं ॥५४२२॥

असंविग्गा संविग्गजणं इमेण आलंबणेण हीलंति —

धीरपुरिसपरिहाणी, नाउणं मंदधम्मिया केई ।

हीलंति विहरमाणं, संविग्गजणं अबुद्धीतो ॥५४२३॥

के पुण धीरपुरिसा ?, इमे —

केवल-मणोहि-चोइस-दस-णवपुव्वीहि विरहिए एण्हिं ।

सुद्धमसुद्धं चरणं, को जाणति कस्स भावं च ॥५४२४॥

एते संपइ एत्थि, जति संपइ एते होंतो तो जाणता असौदताणं चरणं सुद्धं इयरोति प्रसुद्धं, केवलमादिणो गाउं पडिचोर्यता पच्छित्तं च जहारुहं देता चित्तंति अग्नंतरगो वि एरितो चेव भावो, ण य एगतेण बाहिरकरणजुत्तो अभ्यंतरकरणयुक्तो भवति ।

कहं ? उच्यते — जेण विवज्जतो दीसति, जहा उदायिमारयस्स पसण्णचंदस्स य । बाहिर प्रविबुद्धो वि भरहो विबुद्धो चेव ॥५४२४॥

बाहिरकरणेण समं, अभिंतरयं करंति अमुणेंता ।

जेगंता तं च भवे, विवज्जज्जो दिस्सते जेणं ॥५४२५॥

जति वा गिरितीचारा, हवेज्ज तव्वज्जिया य मुज्जेज्जा ।

ण य होति गिरितीचारा, संघयणधित्तीण दोब्बल्ला ॥५४२६॥

संघयणकालं जति गिरितीचारा हवेज्ज, अहुवा - तव्वज्जिया नाम ओहिणाणादीहि यज्जिते जइ चरित्तमुद्धी हवेज्ज तो बुत्तं वत्तु - इमे विसुद्धचरणा, इमे भविसुद्धचरणा । संघयणधित्तीण दुब्बलत्तगतो य - पच्छित्तं करेति ॥५४२६॥

संघयण-धित्तदुब्बलत्तगतो चेव इमं च ओसण्णा भणति -

को वा तहा समत्थो, जह तेहि कयं तु धीरपुरिसेहि ।

जहसत्ती पुण कीरति, [जहा] पइण्णा हवइ एवं ॥५४२७॥

धीरपुरिसा तित्थकरादी जहासत्तिए कीरति एवं भण्णमाणे दढा पइण्णा भवति, अनत्तियं च भवति जो एवं भणति । जो पुण भण्णहा वदति भण्णहा य करेति, तस्स सच्चपइण्णा ण भवति ॥५४२७॥

आयस्सिओ भणति -

सव्वेस्सि एगचरणं, सरणं सोयाव्वं दुहसयाणं ।

मा रागदोसवसगा, अण्णो सरणं पलीवेह ॥५४२८॥

सव्वेस्सि भवसिद्धियाणं चरणं च सरीरमाणसाणं दुवस्साण विमोक्खणकरं, तं तुब्बे सयं सीयमाणा अण्णो चरित्तेण रागाणुगता उज्जयचरणेण चरणदोसमावण्णा मा भणह - "चरणं णत्थि, मा जत्थेव वसह तं चेव सरणं पलीवेह णासहेत्थर्यः" ॥५४२८॥

किं च -

संतगुणणासणा खलु, परपरिवाओ य होति अत्तियं च ।

धम्मो य अबहुमाणो, साधुपदोसे य संसारो ॥५४२९॥

चरणं णत्थि स्ति एवं भणतेहि साधुहि संतगुणणासो कतो भवति, पवयणस्स परिभवो कतो भवति, अत्तियवयणं च भवति, चरणधम्मो पलोक्खित्ते चरणधम्मो य अबहुमाणो कतो भवति, साधुण य पदोसो कतो भवति, साधुपदोसे य णियमा संसारो बुद्धितो भवति ॥५४२९॥

किं च -

खय उवसम मीसं पि य, जिणकाले वि तिविहं भवे चरणं ।

मिस्सातो च्चिय पावति, खयउवसमं च णण्णत्तो ॥५४३०॥

तित्थकरकाले वि तिविहं चारित्तं - खत्तिपं उवसमियं खमोवसमियं च । तस्मिं वि तित्थकरकाले मिस्सातो चेव चरित्तातो खत्तियं उवसमियं वा चरित्तं पावति, नान्यस्मात् । बहुतरा य चरित्तविसेसा खमोवसमभावे भवति ॥५४३०॥

किं च तीर्थकाले वि -

अइयारो वि हु चरणे, ठितस्स मिस्से ण दोसु इत्तरेण ।

वत्थातुरदिट्ठंता, पच्छित्तेणं स तु विसुज्जो ॥५४३१॥

१ ण य । (ताइ) । २ दढा, इति चूर्णो । ३ साधुण, इत्यपि पाठः ।

"इयरेसु" ति स्तुति एवमस्मिन् य । जहा कृत्स्नं सारादीहि सुज्झति, आधुरस्स वा रोगी विरेयणमोसहपमोमेहि सोहिज्जति, तथा साधुस्स मिससचरणादिमहायारो पच्छित्तणं सुज्झति ॥५४३१॥

जं च भणियं - "अतिसयरहिण्हि सुद्धासुद्धचरणं ण णज्जति भावो" ।

तस्य भण्णति -

दुविहं चेव पमाणं, पच्चक्खं चेव तह परोक्खं च ।

ओधाति तिहा पढमं, अणुमाणोवम्मसुत्तितरं ॥५४३२॥

ओहि मणपवज्ज केवलं च एयं तिविषं पच्चक्खं । धुमादग्निज्ञानमनुमानं । यथा गोस्तथा गवय श्रोपम्यं । सुत्तमिति प्रागमः । इयरति एयं तिविषं परोक्खं ॥५४३२॥

सुद्धमसुद्धं चरणं, जहा उ जाणंति ओहिणाणादी ।

आगारेहि मणं पि व, जाणंति तहेतरा भावं ॥५४३३॥

पुक्खदं कठं । जहा परस्स भमुहणन्ति (भमुहाणण) बाहिरागारेहि भंतरगतो मणो णज्जति तथा "इयर" ति परोक्खणाणी आलोयणाविहाणं सोउं पुब्बावरबाहियाहि गिराहि आचरणेहि य जाणंति चरितं सुद्धासुद्धं भावं च सुद्धेतरं ॥५४३३॥

चोदगाह - "जइ आगारेण भावो णज्जति तो उदातिमारदिणं किं ण णातो ?"

आचार्याह -

कामं जिणपक्खस्सो, गूढाचाराण दुम्मणो भावो ।

तहउवि य परोक्खसुद्धी, जुत्तस्स व पण्णवीसाए ॥५४३४॥

काममिति अनुमितार्थः । जइ वि जे उदायिमारगादि गूढाचारा तेषं स्रउमत्थेणं दुक्खं उवलम्भति भावो, सो जिणाणं पुण पच्चक्खो, तहावि परोक्खणाणी आगमाणुसारेण चरितसुद्धिं करेति चेव ।

कहं ?, उच्यते - "जुत्तस्स व" ति जहा सुत्तोवत्तो "मीसजायज्जोयरो एयो" ति पण्णरस उग्गमदोसा, दस एसणादोसा, एते पण्णवीसं जहासुयाणुसारेण सोहंतो चरणं सोहेति, तथा सुताणुसारेण पच्छित्तं वेत्तो करेत्तो य चरितं सोधेति ॥५४३४॥

अणुज्जतचरणो इमेहि कज्जेहि होज्ज -

होज्ज हु वसणप्पत्तो, सरीरदोब्बल्लताए असमत्थो ।

चरण-करणे असुद्धे, सुद्धं ममां परूवेज्जा ॥५४३५॥

वसणं आवती मज्जगीतादितं वा, 'तम्मि ण उज्जमति, अह्वा - सरीरदुब्बल्लतणतो असमत्थो सज्जायपडिहेण्णादिकिरियं काउं अकप्पियादिपडिसेहणं च । अघवा - सरीरदोब्बला असमत्था अदढधम्मं एवमादिकारणेहि चरणकरणं से अविमुद्धं, तहावि पप्पाणं गरिहंतो सुद्धं साद्धमणं परूवेत्तो आराधणो भवति ॥५४३५॥

१ तेण, इत्यत्र पाठः ।

इमो चेव अत्थो भण्णति -

ओसण्णो वि विहारे, कम्मं सिद्धिलेति सुलभबोही य ।

चरणकरणं विसुद्धं, उववूहेतो परूवेतो ॥५४३६॥

कंठ्या । जो पुण ओसण्णो होउं ओसण्णमगं उववूहइ, सुद्धं चरणकरणमगं गृहति इमेहि कारणेहि ।

इमं च से दुल्लभबोहिअत्तं फलं -

परियायपूयहेतुं, ओसण्णार्णं च आणुवत्तीए ।

चरणकरणं णिगूहति, तं दुल्लभबोहियं जाणे ॥५४३७॥ कंठ्या ।

अहवा -

गुणसयसहस्सकलियं, गुणुत्तरतरं च अभिलसंताणं ।

चरणकरणाभिलासी, गुणुत्तरतरं तु सो लहति ॥५४३८॥

गुणार्णं सत्तं गुणसत्तं, गुणसयार्णं सहस्सा गुणसयसहस्सं, छंदोभंगभया सकारस्स ह्रस्सता कता, ते य अट्टारससीलंगसहस्सा, तेहि कलियं जुत्तं संखियं वा । किं तं ? चारित्तं जो तं पससति । किं च गुणदचासो उत्तरं च गुणुत्तरं, अथवा - अन्येऽपि गुणाः सन्ति क्षमादयस्तेषां उत्तरं तं च गुणुत्तरं सरागचारित्तं, गुणुत्तरतरं पुण अहवसायं चारित्तं भण्णति, तं च जे अभिलसति, ते उज्जयचरणा इत्यर्थः । ते य उववूहते जो ओसण्णो अण्णो य उज्जयचरणो होहति चरणकरणाभिलासी भण्णति स एववादी गुणुत्तरतरं लभति अहवसाय-चारित्र्यमित्यर्थः । अहवा - गुणुत्तरं भवत्येकेवलिसुह, गुणुत्तरतरं पुण मोक्खसुह भण्णति, तं लभति ॥५४३८॥

जो पुणोसण्णो -

जिणवयणभासितेणं, गुणुत्तरतरं तु सो वियाणित्ता ।

चरणकरणाभिधाती, गुणुत्तरतरं तु सो हणति ॥५४३९॥

गुणुत्तरतरं चारित्रं साधू वा अण्णो य चरणकरणोवघाते वट्टति । अहवा - चरणकरणस्स जत्ताण वा निदापरोवघायं करेइ, स एववादी गुणुत्तरं वा चारित्रं मोक्खसुहं वा हणति ण लब्धइ ति, जेण सो दीहसंसारित्तणं शिव्वत्तेति ॥५४३९॥

जो ओसण्णं ओसण्णमगं वा उववूहति -

सो होती पडिणीतो, पंचण्हं अण्णो अहितिओ य ।

सुहसीलवियत्ताणं, नाणे चरणे य मोक्खे य ॥५४४०॥

पंच पासत्यादि सुहसीला विहारतिगा ओघाविउकामा अवियत्ता अगीयत्त्या णाणचरणयोस्सरस य एनेसि सव्वेसि पडिणीतो भवति ॥५४४०॥

इमेहि पुण कारणेहि ओसण्णं ओसण्णमगं वा उववूहेज्जा -

वितियपदमणप्पज्जे, वण्ज्ज अविकोविए वि अण्णज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, भयसा तच्चाति गच्छट्ठा ॥५४४१॥

राया सिय ओसण्णाणुवत्तियो भया भणेज्जा । तच्चादि त्ति कश्चिद्वादी ब्रूयात् - "तपस्विनं
अतपस्विनं ब्रूवतः पापं भवतीति नः प्रतिज्ञा", तत्प्रतिष्ठातकरणे वुसिरातियं अणुसिरातियं भणेज्ज, दुब्भिवस्सादिसु
वा ओसण्णभाविएसु खेतिसु मच्छन्तो ओसण्णाणुवत्तियो मच्छपरिपालण्डा भणेज्ज ॥५४४१॥

जे भिक्खू अणुसिराइयं वुसिराइयं वयइ, वयंतं वा सातिज्जति ॥५४४२॥

एमेन वित्तियसुत्ते, अणुसिरातिं वएज्ज वुसिरातिं ।

कह पुण वएज्ज सोऊण अणुसिरातिं तु वुसिरातिं ॥५४४२॥ कंठा

एगच्चरिं मन्नंता, मयं च तेसु य पदेसु वट्ठंता ।

सगदोसद्धायण्डा, केइ पसंमंति णिद्धम्म ॥५४४३॥

कोइ वासत्यादीणं एगचारियं भणति - "एस सुंदरो, एयस्स एगामिणो ण केणइ सह रागदोसा
उपपज्जंति", सो वि अप्पणा मच्छवज्जरमग्गो तम्मि चैव ठाणे वट्ठति, सो य अप्पणज्जदोसे द्वाएउकामो नं
वासत्यादि एगचारि णिद्धम्मं पसमति ॥५४४३॥

इमं च भणति -

दक्ककरयं खु जहुत्तं, जहुत्तवाद्धियावि सीदंति ।

एस नितिओ हु मग्गो, जहमत्तीए चरणमुद्धी ॥५४४४॥ कंठा

एवं भणति इमे दोसा -

अब्भक्खणं णिम्मंकया य अस्मंजमंमि य धिरत्तं ।

अप्पा सो अवि चत्तो, अवण्णवातो य तित्थस्स ॥५४४५॥

असंतभावुब्भावाणं अवभवखाणं, अणुसिरातियं वुसिरातियं भणति, सो य गोतंनो पसमिज्जमग्गो
णिम्मंको भवति, मंदधम्माणं वि अमंजमे धिरोकरणं करेति, अण्णं च उम्ममग्गमंमग्गाने अप्पणो य उम्ममग्गपट्ठित्तो
चत्तो, तित्थस्स य अग्गपदाय्येन अवण्णवादः कुतो भवति ॥५४४५॥

किं च -

जो जत्थ होइ मग्गो, आवामं सो परम्म अविदंती ।

गंतुं तत्थअचंती, इमं पहाणं ति वोमेति ॥५४४६॥

अट्ठाणगदिदुत्तेण ओसण्णो उवसंघारयक्खो, मयं कठ ॥५४४६॥

किं च -

पुव्वगयकालियमुण, संतामंतेहिं केइ खोभेति ।

ओसण्णचरणकरणा, इमं पहाणं ति धोमेति ॥५४४७॥

पुव्वगयकालियमुपनिवसपच्चयतो सीदति,

तत्थ कालियसुते इमेरिमो आलावगो -

"बहुमोहो वि य ण पुव्वं विहरेत्ता पच्छा मंबुडे कालं करेज्जा, किं आराहणं विराहणं ?
गोयमा ! आराहणं, णो विराहणं" । (.....)

एवं पुत्रगणं वि जे के वि आलाभगा ते उच्चरिता । परं शोभन्ति, अप्यणा शोभन्ति - सीदन्तीत्यर्थः ।
ते य ओसणचरणकरणा "इमं" ति अप्यणो चरियं पहाणं घोसेति ॥५४४७॥

इमेसि पुरतो -

अबहुम्सुए अगीयत्थे, तरुणे मंदघम्मिए ।

परियारपूयहेऊ, सम्मोहेऊ' निरु' भन्ति ॥५४४८॥

जेण आचारपण्यो ण भातितो एस अबहुम्सुतो, जेण आबस्सगादिपाणं अत्थो ण सुतो सो अगीयत्थो, सोलसवरिसाणं आहवेत्तु जाय न चत्तालीसवरिसो एस तरुणो, असन्तिगो मंदघम्मो, एते पुरिते विपरिणाभेति, अप्यणो परिवारहेऊ, एतेहि य परिवारितो लोयस्स पूयणिज्जो होहं, कालियदिट्ठिवाए भणितेहि, अथवा - अभणिएहि वा सम्मोहेऊं अप्यणो पासे निरु' भन्ति - धरतीत्यर्थः । अथवा - ओ एवं पण्यवेति सो चेव अबहुम्सुओ अगीयत्थो वा तरुणो मंदघम्मो वा । सेसं कंठं ॥५४४८॥

अत्तो चुतो विहारा, तं चेव पसंसए सुलभबोही ।

ओसणविहारं पुण, पसंसए दीहसंसारी ॥५४४९॥

अत्तो चुतो विहारा, संविणविहारातो चुओ तं पसंसति ओ सो सुलभबोही । ओ पुण ओसण-
विहारं पसंसति सो दीहसंसारी भवति ॥५४४९॥

वितियपदमण्यज्जे, वएज्ज अविकोविए व अप्यज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, भयसा तच्चादिगच्छट्ठा ॥५४५०॥ पूर्ववत्

जे भिक्खु वुसिरातियगणातो अवुसिराइयं गणं संकमइ, संकमंतं वा साइजइ ॥५४५१॥

वुसिरातियागणातो, जे भिक्खु संकमे अवुसिराति ।

वुसिरातिया वुसिं वा, सो पावति आणमादीणि ॥५४५१॥

वुसिरातियातो वुसिराइयं चउमंगो कायव्वो । चउत्थभंगो अवत्थु । ततियभंगे अणुगगा,
पढम-गितिएसु संकमो पडिसिद्धो । पढमे संकमतस्स मासलहुं । वितिए चउलहुं ।

चोदगाह - "जुत्तं वितिए पडिसेहो, पढमभंगे किं पडिसेहो" ?

आचार्याह - तत्थ णिककारणे पडिसेहो, कारणे पुणो पढमभंगे उवसंपदं करेति ॥५४५१॥

सा य उवसंपया कालं पडुच्च ति विहा इमा -

छम्मासे उवसंपद, जहण्णा वारससमा उ मज्झिमिया ।

आवक्कहा उक्कोसे, पडिच्छसीसे तु जाजीवं ॥५४५२॥

उवसंपदा ति विहा - जहण्णा मज्झिमा उवकोसा । जहण्णा छम्मासे, मज्झिमा वारमवरिसे,
उक्कोसा जावज्जीवं । एवं पडिच्छगस्स सीसस्स एगविहो चेव जावज्जीवं आयरिसो ण मोलव्वो ॥५४५२॥

छम्मासे अशूरंतो, गुरुमा वारससमा चउलहुमा ।

तेण वरं मासियं तु, मणित्तं पुण आरत्तो कज्जे ॥५४५३॥

जेण पडिच्छगेण छम्मासिया उवसंपया कथा सो जति छम्मासे अपूरिता जाति तस्स चउगुहया ।

जेण बारसवरिसा कया ते अपूरिता जाइ चउलहुं । जेण जावज्जीवं उवसंपदा कता सो जाइ तस्स मासलहुं । छण्ह मासाण परेण णिवकारणे गच्छेत्तस्स मासलहुं ।

जेण बारससमा उवसंपदा कया तस्स वि छम्मासे अपूरितस्स चउगुहा चव । बारससमातो परेण णिवकारणे मासलहुं ।

जेण जावज्जीवोवसंपदा कया तस्स छम्मासे अपूरितस्स चउगुहा चव, तस्सेव बारससमाओ चउलहुमा ॥५४५३॥ एस सोही गच्छतो णितस्स भणितो ।

गच्छे पुण वसंतस्स इमे गुणा -

भीतावासो रतीधम्मे, अणायतणवज्जणं ।

णिग्गहो य कसायाणं, एयं धीराण सासणं ॥५४५४॥

“भीतावासो” त्ति अस्य व्याख्या -

आयरियादीण मया, पच्छित्तमया ण सेवति अकज्जं ।

वेयावच्चऽज्जभयणेषु सज्जते तदुवगोगेणं ॥५४५५॥ कंठा

पुव्वद्धं कंठं । रतीधम्मे अस्य व्याख्या -

“वेयावच्च” पच्छद्धं । आयरियादीण वेयावच्चं करेति । अज्जभयणं ति सज्जभयं करेति । तदुवगोगेणं सुत्तत्थोवगोगे, तेण सुत्तत्थोवगोगेण वेयावच्चज्जभयणेषु रज्जति - रतिं करेत्ति त्ति वुत्तं भवइ ।

अहुवा - तदुवगोगे अप्पणो आयरियादीहिं य भणमाणो वेयावच्चज्जभयणादिसु रज्जति ॥५४५५॥

“अणायतणवज्जणं” त्ति अस्य व्याख्या -

एगो इत्थीगम्भो, तेणादिमया य अल्लियगगारे ।

कोहादी व उदिण्णे, परिणिव्वावेति से अण्णे ॥५४५६॥ कंठा

“कसायाणिग्गहो” अस्य व्याख्या - कोहादी पच्छद्धं । गच्छवासे वसंतस्स अण्णे य आयरियादी परिणिव्वावेति सकसाए । गच्छवासे वसंतेण एयं वीरसासणे धीर-सासणे वा ज भणियं तं आराहियं भवति ॥५४५६॥

इमे य अण्णे गच्छवासे वसंतस्स गुणा -

णाणस्स होइ भागी, थिरयरतो दंसणे चरित्ते य ।

धण्णा आवकहाए, गुरुकुलवासं न मुंचंति ॥५४५७॥

जम्हा गच्छवासे वसंतस्स एवमादी गुणा तम्हा णिवकारणे संविग्गेण संविग्गेमु वि संकमो ण कायव्वो ॥५४५७॥

कारणे पुण करेज्ज ते य इमे कारणा -

णाण्ड दंसण्डा, चरित्ता एवमाइसंकमणं ।

संभोगडा व पुणो, आयरियडा व णातव्वं ॥५४५८॥

१ गा० ५४५४ । २ गा० ५४५४ । ३ गा० ५४५४ । ४ अल्लियगगारे, इत्थपि पाठः । ५ गा० ५४५४ ।

णाणटु ति अस्य व्याख्या -

सुत्तस्स व अत्थस्स व, उभयस्स व कारणा तु संकमणं ।

वीसज्जियस्स गमणं, भीओ य णियत्तई कोई ॥५४५६॥

पुव्वद्धं कंठं । तेण अण्णो आयरियाणं जं सुत्तं अत्थि तं गहियं, अत्थि य से सत्ती अण्णं पि वेत्तं, ताहे जत्थ अत्थि अधिगमुत्तं संविमोसु तत्थ संकमइ विमज्जितो आयरिएणं, अविसज्जिएण ण गंतध्वं । अहं गच्छति तो चउलहुगा । विसज्जितो य इमे पदे आयरेज्जा-जइ तेसि आयरियाणं कक्खडचरियं सोउं कोति भीओ णियत्तेज्ज तो पणमं ॥५४५६॥

चित्तंतो वइगादी, गामे वा संखडी अपडिसेहो ।

सीसपडिच्छग परिसा, पिसुगादायरियपेसविओ ॥५४६०॥

पणमं च भिण्णमासो, मासो लहुगो य सेसए इमं तु ।

संखडि सेह गुरूगा, पेसविओमि चि मासगुरुं ॥५४६१॥

पडिसेहगस्स लहुगा, परिसिल्ले छ चु चरिमओ सुद्धो ।

तेसि पि होति लहुगा, जं वाऽऽभव्वं तु ण लभंति ॥५४६२॥

एतेसि तिह वि गाहाणं अत्थो सह पच्छित्तेण अण्णति -

चित्तेति-कि वच्चामि ण वच्चामि तत्थ अण्णत्थ वा चित्तेति भिण्णमासो (पणमं) । वच्चंतो वा वइयादिसु 'पडिवज्जति, दधिखीरदुा उव्वत्ति वा मासलहुं । आदिसद्दातो सण्णीसु वा दाणराइहेसु भहेसु वा दीहं वा गोयरं करेज्ज, अण्णं वा देसकालं पडिच्छेज्ज, खट्वादाणिपगामे वा पडिवज्जति सव्वेसेतेसु पत्तेयं मासलहुं ।

संखडीए वा पडिवज्जति चउगुरूगा, पडिसेवगस्स वा पासे अंतरा चिट्ठेज्ज तत्थ य तेसि पविसंताणं चउलहुगा, सेहेण सह चउगुरूगा, गहिओवकरणउवधिणिप्फणं ।

पडिसेहगस्स पडिसेहत्तणं करंतस्स चउलहुं, सेहदुा करंतस्स चउगुरूगा ।

"सीसपडिच्छग" ति सो पडिमेहगो सीसपडिच्छग वावारेति तम्मि आगते णिउणं 'सुत्तं पुच्छेज्ज, परिसिल्लस्स वा पासे अंतरा पविसेज्जा तेसि तत्थ चउलहुगा, सह सेहेण चउगुरूगा, उवकरणे उवहिणिप्फणं । परिसिल्लत्तणं करंतस्स अण्णो छल्लहुगा । पिसुया मकुणाण वा भया णियत्तति, अण्णतो वा गच्छति, मासलहुं ।

अहंवा - तत्थ संपत्तो भणाइ "आयरिएणाहं तुज्ज समीवं अमुगसुत्तत्थणिमित्तं पेसविओ", एवं भणंतस्स चउगुरुं । "वरिमो" ति जो भणति - "अहं आयरियविसज्जितो तुज्ज समीवमागतो" सो सुद्धो । "तेसि पि होति लहुगो" ति अण्णं अभिघारेउं अण्णं वदंतस्स चउलहुं, पडिच्छ्वत्तस्स वि चउलहुं, जं च सचित्ताचित्तं कि चि तं तेण लभंति, जत्थ पट्टवितो जो 'पुव्वघारिउं तस्स तं आभव्वं ॥५४६२॥

एयं चेव अत्थं सिद्धसेणखमासमणो वक्खाणेति ।

१. 'बज्जति' इत्यपि पाठः । २. सुतत्थं करेज्ज । ३. पुव्वमभिधारिओ ।

“भीमो णियत्तइ” ति अस्य व्याख्या -

संसाहगस्स सोतुं, पडिपंथियमाइयस्स वा भीमो ।

आचरणा तत्थ खरा, सयं च नाउं पडिनियत्तो ॥५४६३॥

संसाहय मणवच्चगो । सेसं कंठं ।

“चिन्तेतो” ति अस्य व्याख्या -

पुब्बं चित्तेयव्वं, णिग्गतो चित्तेति किं णु हु करेमि ।

वच्चगमि णियत्तामि व, तहिं व अण्णत्थ वा गच्छे ॥५४६४॥

जाव ण णिग्गच्छति ग्रामरियं वा ण पुच्छति ताव सुचितियं कायव्वं, सेसं कंठं ॥५४६५॥

“वइयगामसंखडिमादिमु” इमा व्याख्या -

उव्वत्तणमप्पत्ते, लहुगो खद्धे भुत्तम्मि होंति चउलहुगा ।

निसद्ध सुवण्ण लहुगो, संखडि गुरुगा य जं चऽण्णं ॥५४६५॥

पंचातो वइयमादिमो उव्वत्तति । अप्पत्तं वा वेत्तं पडिक्खति । “जं चऽण्णं” ति संखडौ हृत्पेण हृत्ये संघट्टियपुब्बे, पाएण वा पाए अक्कंतेपुब्बे, सीसेण वा सीसे आउडियपुब्बे संजमविराहणा वा भावणभगो वा भवति । ऐसं गतार्थं कंठं ॥५४६५॥

इदाणि “पडिसेह सीसपडिच्छग” अस्य व्याख्या -

अमुगत्थअमुओ वच्चति, मेहावी तस्स कडुणट्ठाए ।

अण्णगामे पंथे, उवस्सए वा वि वावारे ॥५४६६॥

अभिलावसुद्धपुच्छा, रोलेणं मा हु ते विणासेज्जा ।

इति कडुंते लहुगा, जति सेहट्ठाए तो गुरुगा ॥५४६७॥

अक्खर-वज्जणसुद्धं, मं पुच्छह तम्मि आगए संते ।

घोसेहि य परिसुद्धं, पुच्छह णिउणे य सुत्तत्थे ॥५४६८॥

को ति ग्रामरिमो विसुद्धसुत्तत्थो फुटविषयवज्जणभिलावी अपडिसेचित्तो वि पडिसेहगो वेव भावतो लब्धति, तेण थ सुयं जहा अमुगत्थ अमुगो साहू मेहावी, अमुगसुत्तणिमितं गच्छति, तेणवि चित्तियं मा मं अतिक्कमेउं, तस्स कडुणट्ठाए “उडुवणकं करेति, उवरिएण अण्णगामेण गच्छंनस्स पंथे वा अप्पगो वा उवस्सए सीसे पडिच्छए वा वावारेति, जणिमितं सो वच्चति तम्मि आगते - “तं तुब्बे परियट्ठेह, अभिलाव-पुद्धं अत्थं च गुणेज्जह, प्रत्थं थ से पुच्छिज्जह, ते एवं णिवकाएति, पुणो पुणो मा ते रोलेणं विणासेज्जह ति, अण्णं पि सुयं अक्खरवज्जणघोससुद्धं पडेज्जह, तम्मि आगते अण्णं पि णिउणे सुत्तत्थे पुच्छेज्जह” एवं कट्टिए चउलहुं, सेहट्ठा कट्टिए चउयुहं ॥५४६८॥ पविसंतस्स वि एवं वेव ।

१ गा० ५४५६ । २ गा० ५४६० । ३ गा० ५४६० । ४ गा० ५४६० । ५ आकषेणं ।

इदानीं 'परिसिल्लस्स व्याख्या -

पाउतमपाउता घट्ट मट्ट लोय सुरु विविहवेसधरा ।

परिसिल्लस्स तु परिसा, थलिए व ण किंचि वारेति ॥५४६६॥

तत्थ पवेसे लहूगा, सच्चित्ते चउगुरुं च नायव्वं ।

उवहिणिप्फणं पि य, अचिच्च देंते य गिण्हंते ॥५४७०॥

परिसिल्लो सव्वस्स संविग्गासंविग्गस्स परिसिमित्तं संगहं करेति । घट्टा फेणादिणा जंघाघो, तेल्लेण केसे सरीरं वा मट्टेति, थलि ति देवद्रोणी । सेसं कंठं ॥५४७०॥

इदानीं "अपिमुत गुरुहि पेसितो मि" ति एतेसि व्याख्या -

डिक्कुण-पिसुगादि तहिं, सोउं नातुं व सन्नियचंते ।

अमुग सुतत्थनिमित्ते, तुज्झंति गुरुहि पेसवितो ॥५४७१॥ कंथा

चोदगाह - "गुरुहि पेसियो मि ति भणंतस्स को दोसो" ?

आचार्याह -

आणाए जिणवराणं, न हु वलियतरा उ आयरियआणा ।

जिणआणाए परिभवो, एवं गव्वो अविणओ य ॥५४७२॥

त्रिणिदेहि चेव भणिणं णिहोसो विधिमागतो पडिच्छियव्वो ति, णो आयरियाणुवत्तोए पडिच्छियव्वो, जिणाणा य पराभविता भवति, पेसंतस्स उवसंज्जंतस्स पडिच्छित्तस्स वि तिहि वि गव्वो भवति, तित्थकराणं सुयस्स य अविणओ कयो भवति ॥५४७२॥

जो जं अभिघारेउं पट्टितो तत्थ जो अन्वासरणेण गंतो सो सुद्धो -

अण्णं अभिघारेतुं, पडिसेह परिसिल्ल अण्णं वा ।

पविसेते कुलातिगुरु, सच्चित्तादिं च से हातुं ॥५४७३॥

जो पुण अण्णं अभिघारेउं अपडिसेहगस्स पडिसेहगस्स परिसिल्लस्स अण्णस्स वा पासे पविसति पच्छा कुलगणसंघधेरेहि णातो तो जं हेण सच्चित्ताच्चित्तादि उवणीयं तं से हरति ॥५४७३॥

ते दोवुवालभित्ता, अभिघारिज्जंति देंति तं थेरा ।

घट्टण वियारणं ति य, पुच्छा विष्फालणेमट्टा ॥५४७४॥

कीस तुमं अण्णं अभिघारेत्ता एत्थ ठितो जेण य पडिच्छित्तो ? सो वि भण्णति - "किं ते एस पडिच्छित्तो ?" तं सच्चित्तादिगं थेरा जो पुव्वअभिघारितो तस्स विसज्जंति । सेसं कंठं ॥५४७४॥

घट्टेउं सच्चित्तं, एसा आरोदणा य अविहीए ।

वितियपदमसंविग्गे, जयणाए कयम्मि तो सुद्धो ॥५४७५॥

“घट्टण” त्ति पुच्छ, जइ निक्कारणे तत्थ ठितो तो सच्चितादी हरेज्ज, पच्छित्तं च से अभिघपदे दिज्जति, निक्कारणे त्ति वुत्तं भवति ।

पडिसेहगस्स अववाओ भण्णति - “वित्तियपद” पच्छदं । जं सो अभिघारेति सो असंविग्गो ताहे जयणाए पडिसेहं करंति ।

का जयणा ?, पढमं सव्वेहि भण्णवेति, मा तत्थ वच्चाहि, पच्छा अण्णो वि भण्णवेज्ज, पुब्बुत्तेण वा सीसपडिच्छगवावारणपयोगेण धरेज्जा, ण दोसो । एवं करंते कारणे पुज्झति, णवरं - जं तत्थ सच्चित्तचित्तं सव्वं पुब्बाभिघारियस्स पट्टेयव्वं ॥५४७५॥

इदमेवत्थं भण्णति -

अभिघारंते पासत्थमादिणो तं च जइ सुत्तं अत्थि ।

जे अ पडिसेहदोसा, ते कुच्चंता हि णिदोसो ॥५४७६॥

जं सो सुत्तं अभिलसति, जइ सुत्तं अत्थि तो पडिसेहतणं करंतस्स वि जे दोसा भणिया ते ण भवंति ॥५४७६॥

जं पुण सच्चित्तादी, तं तेसिं देंति ण वि सयं गेण्हे ।

वित्तियं वित्तूण पेसे, जावत्तियं वा असंथरणे ॥५४७७॥

पुब्बदं कंठ । जं वत्थादिगं अचित्तं तं कारणे अण्णो विसूरंते असिवादिकारणेहि अण्णं घलभंतो ण पेसेति जावत्तियं उवउज्जति, जेण असंथरणं वा तावत्तियं गेण्हति, सेसं विसज्जेति, अहुवा - सव्वं पि ण विसज्जेति ॥५४७७॥

कारणे इमो सच्चित्तस्स अववातो -

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

सयमेव दिसाबंधं, करेज्ज तेसिं ण पेसेज्जा ॥५४७८॥

जो तेण सेहो आणितो सो परममेहावी, अण्णो गच्छे णत्थि को वि आयरियपदजोओ, जं च से पुव्वगतं कालियसुयं च तरस्स माहणो णत्थि, ताहे तेसिं वोच्छेदं जाणिऊणं तं सेहं अण्णो सीसं शिबंघइ, ण पुब्बाभिघारियस्स पट्टवेइ ॥५४७८॥

इदाणि परिसिल्ले अववादो भण्णति -

असहाओ परिसिल्लत्तणं पि कुज्जा उ मंदधम्मोसु ।

पण्य व काल-ऽद्धाणे, सच्चित्तादी वि गिण्हेज्जा ॥५४७९॥

असहायो आयरियो परिसिल्लत्तणं पि करेइ, तं संविग्गं असंविग्गं वा सहायं गेण्हति ।

सिरसा वा मंदधम्मा गुरुस्स वावारं ण वहंति, ताहे अण्णं सहायं गेण्हति ।

सङ्गा वा मंदधम्मा गुरुणो जोभं ण देति ताहे लद्धिसंणणं परिगेण्हति ।

दुग्धिवल्गादिकाले वा अद्यापि वा पविस्तो - एवमादिकारणेहि परिसिल्लत्तणं करंतो सुद्धो ।
सचित्ताचित्तं पुण पेसेति ण पेसेति वा, पुव्वभणियकारणेहि ॥५४७६॥

जो सो अभिधारंतो वच्चति तस्स अववादो भणति -

असिवादिकारणेहि, कालगतं वा वि सो व्व इतरो तु ।

पडिसेहे परिसिल्ले, अण्णं व विसिज्ज वितियपदे ॥५४८०॥

जत्थ गंतुकामो तत्थ असिचं अतरा वा, अहवा - जो अभिधारितो आयरिमो सो कालगतो,
“इतरो” त्ति जो सो पहावितो साधू पडिसेहपरिसिल्ले अण्णस्स वा आयरियस्स पासं पविसेज्ज, वितियपदेण
ण दोसो ॥५४८०॥ एयं अविसेसित्तं भणियं ।

इमं ‘आभव्वाणाभव्वं विसेसियं भणति -

वच्चंतो वि य दुविहो, वत्तमवत्तस्स मग्गणा होति ।

वत्तम्मि खेत्तवज्जं, अव्वत्तेणं पि तं जाव ॥५४८१॥

पुव्वद्धस्स इमा विभासा -

सुअ अव्वत्तो अगीओ, वएण जो सोलसण्ह आरेणं ।

तव्विवरीतो वत्तो, वत्तमवत्ते च चउभंगो ॥५४८२॥

सुएण वि अव्वत्तो वएण वि अव्वत्तो चउभंगो कायव्वो । सुएण अगीओ अव्वत्तो । वएण जो सोलसण्ह
भासाणं आरते । तव्विवरीतो वत्तो जाणियव्वो । सो पुण वच्चतो सहाओ वच्चति असहाओ वा ॥५४८२॥

वत्तस्स वि दायव्वो, पहुप्पमाणे सहाओ किमु इतरे ।

खेत्तविवज्जं अव्वंतिएसु जं लभमति पुरिल्ले ॥५४८३॥

आयरिएण पहुप्पमाणेसु साहुसु वत्तस्स वि सहाओ दायव्वो अव्वस्सं, किमंग पुण अव्वते ।

“अवत्तम्मि खेत्तवज्जम्मि” अस्य व्याख्या - “खेत्तविवज्ज” पच्छद्धं । वत्तो अव्वत्तो वा
अव्वतिया मे सहाया तेणेव सह गंतुकामो परखेत्तं मात्तुं जं सो य लभमति तं सव्वं पुरिमस्स अभिधारंतस्स
आभवति, परखेत्ते जं पुण लद्धं तं खेतियस्स आभवति ॥५४८३॥

जति णेतु एतुमाणा, जं ते मग्गिल्ल वत्तपुरिमस्स ।

नियमव्वत्तसहाओ, णेउ णियत्तति जं सो य ॥५४८४॥

अह ते सहाया तं णेउ पराणेत्ता पडियागंतुकामा जं ते सहाया लभमति तं मग्गिल्लस्स अप्पखिज्ज
आयरियस्स आभवति । सो पुण वच्चंतो अण्णणा जति वत्तो तो जं सो लभमति तं पुरिमस्स अभिधारिज्जंतस्स
देति । “अव्वत्तेणं पि जाव” त्ति अस्य व्याख्या - अव्वत्तो पुण नियमा सहायो भवति, तस्स सहाया
जे ते य णेतु णियत्तित्ताकामो जं सो ते य लभमति तं सव्वं पुव्वित्तायरियस्स आभवति ॥५४८४॥

वितियं अपहुप्पंतं, ण देज्ज वत्तस्स सो सहाओ तु ।

वड्याइ अपडिवज्जंतगस्स उवही विसुद्धो उ ॥५४८५॥

वित्तिं ति भववाचतो, आयरिधो अपहुण्तेसु सहायं न देज्जा, सो य अण्णजा मुक्क-वएसु वत्तो, तस्स वइमादिसु अप्पडिक्कज्जतस्स उवहीए वाचातो ण भवति, अह वइयादिसु पडिक्कज्ज तो तण्णिक्कण, उवकरणोवचायट्ठाणेसु व वट्ठतस्स उवही उवहम्मति ॥५४८५॥

एगे तु वच्चंते, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

वच्चंतो उ गिलाणो, अंतरा उवहिमग्गणा होति ॥५४८६॥

जो वत्तो एगागो गच्छति सो जति अण्णस्स आयरियसा जो उग्गहो तं वज्जेउं णोगाहस्सेते किञ्चि लभति तं सर्व्वं अभिधारिज्जते देति । अहवा - एगागो वच्चंतो दो तिण्णि वा आयरिए, अभिधारिज्ज, तस्स य अंतरा गेलणं होज्ज, जे अभिधारिता तेहिं आयरिएहिं सुयं जहा अम्हे धारतो साधू यतो गिलाणो जाओ ॥५४८६॥

आयरिय दोण्णि आगत, एक्के एक्के व णागए गुरुमा ।

न य लभती सच्चित्तं, कालगए विप्परिणए य ॥५४८७॥

जे ते अभिधारिता ते जति सज्जे आगता तो तेणं जं अंतराणे लद्धं तं तेमि सज्जेसि साधारणं ।

अह तस्य एगो आगतो भवसेवा णागता । जे नागया तेति चउगुरं, तं सच्चित्ताचित्तं ण लभति । जो गतो गवेसगो तस्स तं सर्व्वं आभवति । कालगतं वि एवं वेर ।

अह गिलाणो वि विप्परिणमो अस्स सो ण लभति, जं पुण अभिधारिज्जते लद्धं पच्छा विपरिणतो जं विपरिणते भावे लद्धं तं लभति, विप्परिणए भावे जं लद्धं तं ण लभति ॥५४८७॥ एसा सुप्रभिधारणे आभवंतमग्गणा भणिया ।

इमा अण्णा बाताहडमग्गणा भण्णाति -

पंथसहायमसड्ढो, धम्मं सोऊण पक्कयामि सि ।

खेत्ते य बाहि परिणत, सहियं पुण मग्गणा इणमो ॥५४८८॥

एक्को कारणितो विहरति, तस्स पंथे असड्ढो बाताहडो सहाओ मिसितो, सो य तस्स साहुस्स पासे धम्मं सुखेता असुणेत्ता वा पक्कयामि ति परिणामो जातो - “विक्खेह व” ति । सो परिणामो जति साधुपरिगहियखेतस्स अंतो जातो तो सो सेहो खेतियस्स आभवति, अह बाहि खेतस्स अपरिभाहे खेते परिणामो होज्ज तो तस्सेव साहुस्स आभवो ॥५४८८॥

खित्तिम्मि खेत्तियस्सा, खेतवहिं परिणते पुरिन्लस्स ।

अंतरपरिणयविप्परिणए य कायन्व ममापता ॥५४८९॥

पुक्कडं गतार्थं । णवरं - “पुरिन्लस्स” ति साधोः पूर्वाचार्यस्तेष्वर्थः । एवं अंतरा पक्कयणापरिणामो पुण विपरिणामो, एवं अर्थ भवद्वितो परिणामो जाओ सो पमाणं - खेतं कितियस्स, अखेतो तस्सेव । जो पुण सम्महिद्धो तस्स अह बंतणपज्जातो अस्थि तो इच्छा, दंसणपज्जायअच्छिणो जेण सम्मतं नाहितो तस्स भवति । ॥५४८९॥

एस विहं तु कित्तिज्जते, अबिसज्जि लहुग्गमासज्जापुच्छा ।

तेसिं पि होति लहुगा, जं वाऽऽभयं च ण लभति ॥५४९०॥

अविसज्जितो जइ सीसो गच्छइ खु, पडिच्छगो जइ जाइ तो चउलहुगा ।

अहं विसज्जितो दोखं वारं अणापुच्छाए गच्छइ, सीसो पडिच्छगो वा तो मासलहुं, तेसि पि पडिच्छताणं चउलहुगा, जं च सचिसादिणं तं ते पडिच्छंतगा ण सभति ॥५४६०॥

आयरिओ पुण इमेहि कारणेहि ण विसज्जेति -

परिवार-पूयहेउं, अविसज्जंते भमत्तदोसा वा ।

अणुलोमेण गमेज्जा, दुक्खं सु विसज्जिउं गुरुणो ॥५४६१॥

अप्यणो परिवारणिमित्तं, बहूहि वा परिवारितो पूयणिज्जो भवित्सं, मम सीसो अणस्स पासं गच्छति त्ति गेहमभत्तेण वा ण विसज्जेति । पच्छदं कंठं । अहं अविसज्जितो सोही ण भवति, ण य सो गुरु पडिच्छइ तम्हा पुच्छियखं ॥५४६२॥

सा य आपुच्छा दुविहा - भविषी विधी य । भविषिआपुच्छणे तं चेव पच्छितं जं अपुच्छिए । विषिपुच्छाए पुण सुद्धो ।

सा इमा विधी -

नाणम्मि तिणिण पक्खा, आयरिय-उवज्झाय-सेसगाणं तु ।

एक्केक्के पंच दिवसो, अहवा पक्खेण एक्केक्कं ॥५४६२॥

गायणिमित्तेण जंतो तिणिण पक्खे आपुच्छ करेति, तत्थ आयरियं आपुच्छति पंच दिणा, जति ण विसज्जेति तो उवज्झायं पंचदिणे, जति सो वि ण विसज्जेति तो गच्छं पंचदिणे. पुणो आयरियउवज्झायगच्छं च पंचपंचदिणं, पुणो एते चेव पंचपंचदिणे, एवं एक्केक्के पक्खो भवति, एवं तिणिण पक्खा । अहवा - अणुबद्धं आयरियपक्खं, पच्छा उवज्झायं, पच्छा गच्छपक्खं, एवं वा तिणिण पक्खा । एवं जति ण विसज्जितो तो अविसज्जितो चेव गच्छति ॥५४६२॥

एतविहिमागतं तू, पडिच्छ अपडिच्छणमि भवे लहुगा ।

अहवा इमेहि आगत, एगादि पडिच्छए गुरुमा ॥५४६३॥ कंठं

अह एगादिकारणेहि आगतं पडिच्छति तो चउगुरुमा ॥५४६३॥

एगे अपरिणए या, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥५४६४॥

एगायि आयरियं छुट्ठा आगतो । अपरिणता वा सेहा, आहारवत्थपादादियण अकप्पिया तेसि सहियं आयरियं छुट्ठा आगतो । अप्पाहारी आयरितो तं चेव पुच्छिता सुत्तये बायणं देति, तं मोत्तुमागतो । थेरं गिलाणं आयरियं छुट्ठा आगतो । बहुरोगी णाम जो चिरकालं बहूहि वा रोगेहि अभिभूतो तं छुट्ठा आगतो । अहवा - सीसो गुरु वा मंदधम्मा, तस्स गुणं ण सामायारी पडिपूरेति तं “छुट्ठा” आगतो । “पाहुडे” त्ति आयरिएण सह कलहेत्ता आगतो ॥५४६४॥

एतारिसं विसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।

सीस-पडिच्छा-SSयरिए, पायच्छित्तं विहिज्जति ॥५४६५॥ कंठं

સિસ્સસ્સ પઢિચ્છયસ્સ આયરિયસ્સ ય તિણ્હ વિ પચ્છિત્તં મળ્લતિ -

એગે ગિલાણયાહુહ, તિણ્હ વિ ગુરુમા તુ સીસમાદીર્ઘં ।

સેસે સીસે ગુરુમા, લહુગપઢિચ્છે ય ગુરુસરિસં ॥૫૪૬૬॥

એગે ગિલાણે પાહુહે ય તિતુ વિ દારેસુ તિણ્હ વિ સીસપઢિચ્છમાયરિયાણં પત્તેયં ગુરુમા મળંતિ, સેસા જે અપરિણયાલી દારા તેસુ સીસસ્સ ચઝયુરુમા, તેસુ જેવં પઢિચ્છયસ્સ ચઝલહુમા, ગુરુસરિસં તિ અહ સીયં પઢિચ્છહ તો ચઝયુરુમા, અહ પઢિચ્છયં તો ચઝલહુમા ॥૫૪૬૬॥

૧જાણટ્ટા તિણ્ણ પક્કે આપુચ્છિયવ્વં તસ્સ ઇમો અવવાતો -

ચિતિયપદમસંવિગ્ગે, સંવિગ્ગે વા વિ કારણાઽઽગાદે ।

નાઝળ તસ્સ માવં, કપ્પતિ ગમણં ચઽણાપુચ્છા ॥૫૪૬૭॥

આયરિયાદીસુ પ્રસંવિચ્છીમૂતેસુ જાપુચ્છિજ્ઞા વિ । અહવા - સંવિગ્ગેસુ આયરિયાદિસુ અપ્પણો સે કિંચિં હિત્થિમાદિયં ચરિત્તવિજ્ઞાસકારણં આગાઠં ઝપ્પણં તાહે અણાપુચ્છિએ વિ ગચ્છતિ । “મા એસ ગચ્છતિ (તિ) ગુરુમાદિયાણ વા માવે જાતે અણાસે અણાપુચ્છાએ વિ ગચ્છતિ ॥૫૪૬૭॥

અવિસજ્જિએણ ણ મંતવ્વં તિ એયસ્સ અવવાદો -

અઝમ્મયણં વોચ્છિજ્જતિ, તસ્સ ય ગહણમ્મિ અત્થિ સામત્થં ।

જ ય વિતરંતિ ચિરેણ વિ, જાતું અવિસજ્જિતો ગચ્છે ॥૫૪૬૮॥ અઝમ્મા

એવં અવિસજ્જિએ ગચ્છતિ, જ દોસો । અવિધિમાગતો આયરિએણ ણ પઢિચ્છિયવ્વો તિ ।

એયસ્સ અવવાદો -

જાઝળ ય વોચ્છેયં, પુવ્વગણે કાલિયાણુઓગે ય ।

સુત્તત્થજાણતો સ્વલુ, અવિહીય વિ આગતં વાણે ॥૫૪૬૯॥

અણાપુચ્છવિસજ્જિયં વઙ્ગયાદિપઢિચ્છમ્મંતં વા અવિધિમાગયં વોચ્છેદાદિકારણે અવસંવિઝ્ઞા પઢિચ્છતિ ચોદેતિ વા જ દોસો ॥૫૪૬૯॥

“જો તેણ આગતુગેણ સેહો આણિતો તસ્સ અભિધારિયસ્સ અણામવ્વો, સો તેણ જ ગેણ્હિ-યવ્વો” તિ એયસ્સ અવવાદો ઇમો -

જાઝળ ય વોચ્છેયં, પુવ્વગણે કાલિયાણુઓગે ય ।

સુત્તત્થજાણગસ્સ તુ, કારણજાતે દિસાબંધો ॥૫૫૦૦॥

ચોદક આહ - “અણિબદો કિ જ વાહજ્જતિ” ?

આવાયં આહ - અણિબદો ગચ્છહ સ ગુરુર્હિ યાતિજ્ઞહ, કાલસખાવદોસેણ વા મમત્તીકતં વાણ્તિ, અતો દિસાબંધો અણુજાતો ।

જો ય સો ણિબજ્ઞહ સો ઇમો -

મસહાયઅવત્તેણ, સ્વેત્તે વિ ઉવટ્ઠિયં તુ સચ્ચિત્તં ।

દલ્લયંતુ નાનુબંધતિ, ઉભયમમત્તદ્વયા તં વા ॥૫૫૦૧॥

अप्यतेण ससहायेण वत्तेण वा असहाएण परस्मै उवट्ठितो सच्चित्तो सो खेतियाण आभब्बो तहावि तं वलदंति परममेहाविणं गुरुपदजोमां ष, अप्पणो य सो गच्छे आयरियजोगो गरियं ति ताहे तस्स अप्पणो विखाबधं करेति । “उभय” ति सज्जता संवतीमो य । अहुवा - तस्स सगच्छिस्सगाणं य परोप्परं ममीकारकरणं भवति, अम्हं सज्जकंतिउ त्ति, “तं य” ति जो पडिच्छगो आगतो तं वा णिबंघइ । जो सो सेहो पडिच्छगो आगतो तं वा णिबंघइ ॥५५०१॥

जो सो सेहो पडिच्छगो वा णिबद्धो सो तत्थ णिम्मातो -

आयरिए कालगते, परियट्ठति सो गणं सयं चेव ।

चोदेति व अपढंते, इमा तु तहि मग्गणा होति ॥५५०२॥

आयरिए कालगए सो तं गच्छं ण सुयइ, एत्थ गच्छस्स णिबद्धायरियस्स ववहारो भण्णति, सो तं सयमेव गणं परियट्ठइ, सो य गच्छो ण पढति, अपढतो य तेण चोदेयब्बो, जति चोदिया वि ण पढति तो इमो आभवंतमग्गणा ॥५५०२॥

साहारणं तु पढमे, वितिए खेत्तम्मि त्तिए सुहदुक्खं ।

अणहिज्जंते सेसे, हवंति एक्कारस विभागा ॥५५०३॥

कालगयस्स जाव पढमवरिसं ताव गच्छस्स जो सो ठितो आयरिमो एतेसि दोण्ह वि साधारणं सचित्तादि सामान्यमित्यर्थः ।

वितिए वरिसे - जं खेतोवसंपण्णतो लभति तं ते अपढंता लभंति ।

ततिए वरिसे - जं सुहदुक्खोवसंपण्णतो लभति तं ते लभंति ।

चउत्थे वरिसे - कालगतायरियसीसा अणहिज्जंता ण किं चि लभंति, सब्बं पडिच्छगायरियस्स भवति ॥५५०३॥

सीसो पुच्छइ - “किं खेतोवसंपण्णतो सुहदुक्खिमां वा लभइ ?” ति ।

उच्यते -

णात्तीवग्गं दुविहं, मित्ता य वयंसगा य खेत्तम्मि ।

पुरपच्छसंधुता वा, सुहदुक्खं चउत्थाए सब्बं ॥५५०४॥

दुविहं णात्तीवग्गं - पुब्बसंधुता पच्छसंधुता य । सहजायगादि मिता, पुब्बुप्पणा वयंसगा, एते सब्बे खेतोवसंपण्णतो लभति, सुहदुक्खीतो पुण पुरपच्छसंधुता एव केवला भवंति । जे पुण अहिज्जंति तेसि एक्कारस विभागा । तस्स य कालगतायरियस्स चउत्थिचो गणो - पडिच्छमा सिस्सा सिस्सिणीमो पडिच्छणीमो य । एतेसि जं तेण आयरिएण जीवतेण उहिट्ठं तं पुब्बुहिट्ठं भण्णति, जं पुण तेण पडिच्छगायरिएण उहिट्ठं तं पच्छुहिट्ठं भण्णति ॥५५०४॥

खेतोवसंपयाए, बावीसं संधुया य मिता य ।

सुहदुक्खमित्तवज्जा, चउत्थाए णालबद्धा य ॥५५०५॥

पुव्वुद्धिट्ठं तस्स उ, पच्छुद्धिट्ठं पवाततंतस्स ।

संवच्छरम्मि पढमे, पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ॥५५०६॥

जं जीवन्तेण आयरिएण पडिच्छगस्स उद्धिट्ठं तं चेव पढतस्स पढमवरिसे जं सचित्ताचित्तं लभति तं सव्वं "तस्स" ति जेण उद्धिट्ठं तस्स आभवत्वं । एस एक्को विभागो । अहं इमेण उद्धिट्ठं पडिच्छगस्स पढमवरिसे तो जं सचित्ताचित्तं लभति तं सव्वं वा देतस्स । एस बित्तियो विभागो ॥५५०६॥

वितियवरिसे -

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठे, पडिच्छए जं तु होइ सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि वितिए, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५०७॥

पडिच्छगो वितियवरिसे पुव्वुद्धिट्ठं वा पच्छुद्धिट्ठं वा पढउ जं तस्स सचित्ताचित्तं सव्वं वाएतस्स । एगं तत्तिओ विभागो ॥५५०७॥

इदाणि सीसस्स भण्णति -

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठं, सीसम्मी जं तु होइ सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि पढमे, तं सव्वं गुरुस्स आभवति ॥५५०८॥

सीसस्स पढमवरिसे कालगतायरिएण च उद्धिट्ठं इमेण वा पडिच्छगारिएण उद्धिट्ठं पढतस्स जं सचित्ताचित्तं तं सव्वं कालगतस्स गुरुस्स आभवति । एस चउत्थो विभागो ॥५५०८॥

सीसस्स वितिए वरिसे -

पुव्वुद्धिट्ठंतस्स उ, पच्छुद्धिट्ठं पवाययंतस्स ।

संवच्छरम्मि वितिए, सीसम्मी जं तु सच्चित्तं ॥५५०९॥

जहा पडिच्छगस्स पढमवरिसे दो आदेस। तहा सीसस्स वितियवरिसे दो आदेस। भाणियव्वा । एत्थ पंच-खट्टु विभागा सीसस्स वितियवरिसे ॥५५०९॥

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठं, सीसम्मी जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि तइए, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५१०॥ (३)

जहा पडिच्छास्स वितियवरिसे तहा सीसस्स ततियवरिसे । एस सत्तमो विभागो ॥५५१०॥

इदाणि सिस्सिणो पढम-वितियसंवच्छरेसु भाणियव्वा पडिच्छगतुल्ला -

पुव्वुद्धिट्ठंतस्सा, पच्छुद्धिट्ठं पवाययंतस्स ।

संवच्छरम्मि पढमे, सिस्सिणिए जं तु सच्चित्तं ॥५५११॥

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठं, सीसिणिए जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि वितिए, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५१२॥

तत्थ तिणि विभागा पुव्विल्लेसु कुत्ता दस विभागा ।

इदाणि पडिच्छगा -

पुण्वं पच्छुद्धिदं, पडिच्छए जं तु होति सच्चिवं ।

संवच्छरम्मि पदमे, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५१३॥

पडिच्छगाए पदमे चेव संवच्छरे भायरिएण वा उद्धिदं इमेण वा उद्धिदं पडउ जं से सच्चितादि तं सव्वं वाएंतो गेण्हति, एते एक्कारस्स विभागा ॥५५१३॥ एसो विभागे ओहो, इमो विभागेण पुण अण्णो भादेसो भण्णइ, अहवा - एसो विधि जो सो सेहो अण्णो णिवद्धो तस्स भण्णितो ।

जो पुण सो पाडिच्छगो णिवद्धो तस्सिमो विधी -

सो तिबिहो होअ - कुलिच्चो, गणिच्चो, संचिच्चो वा होअ ।

संवच्छराणि तिण्णि उ, सीसम्मि पडिच्छए उ तद्विसं ।

एवं कुले गणे या, संवच्छर संधे छम्मासा ॥५५१४॥

जइ सो एगकुलिच्चो तो तिण्णि वरिसे सच्चितादि सिस्साण ण गेण्हति, पडिच्छगाण पुण तद्विसं चेव भायरिमो कालगमो तद्विसं चेव गेण्हति, एवं कुलिच्चए भणियं ।

अह सो एगगणिच्चो तो संवत्सरं सिस्साण सच्चितादि ण गेण्हति । जो य कुलगणिच्चो [ण] भवति सो णियमा संचिच्चो । सो संचिच्चो छम्मासे सिस्साण सच्चितादि ण गेण्हति, ते पडिच्छगायरिएण तत्थ गच्छे तिण्णि वरिसा भवत्सं अच्छियव्वं, परेण इच्छा ॥५५१४॥

तत्थेव य निम्माए, अण्णिगते णिगते इमा मेरा ।

सकुले तिण्णि तिगाइं, गणे दुयं वच्छरं संधे ॥५५१५॥

तत्थेव पडिच्छगायरियस्स समीधे तम्मि अण्णिगए जति कोति तम्मि गच्छे णिम्मातो तो सुंदरं ।

अह ण णिम्माओ सो य तिण्ह वरिसाण परतो णिगतो, अहवा - एस अह सच्चितादि हरति ति ते वः णिगता तेसि इमा मेरा -

सकुले समवायं काउं कुले येरेसु वा उवट्ठावति ताहे तेसि कुलं वायणायरियं देति, बारएण वा वाएति कुलं, तिण्णि तिथा णववरिसे वाएति ण य सच्चितादि गेण्हति, जइ णिम्मातो विहरइ ततो सुंदरं ।

अह एक्को वि ण णिम्मातो सतो परं सच्चितादि गेण्हति, ताहे रगणे उवट्ठाति गणो वायणायरियं देति, सो वि दोण्णि वरिसे वातेति, ण य सच्चितादि गेण्हति; जति णिम्मातो एक्को वि तो बिहरंतु, अणिम्माते संधे उवट्ठावति, संधो वायणायरियं देति, सो य तरिसे वाएति, ण य सच्चितादि गेण्हति, णिम्माए विहरंतु । एते बारस्स वरिसा ॥५५१५॥

अह एतेसि एक्को वि णिम्मातो, कहं पुण एवतिएण कालेण णिम्माति ?

उच्यते -

ओमादिकारणेहि व, दुम्मेहत्तेण वा ण णिम्माओ ।

काऊण कुलसमायं, कुल येरे वा उवट्ठति ॥५५१६॥

ओमसिवदुम्भकस्साइएहि अढतो न णिम्मातो दुम्मेहत्तेण वा, ताहे पुणो कुलादिसु कुलादिघेरेसु वा उवट्ठावति तेणैव कमेण, एते वि बारस्स वरिसे । दो बारस्स चउव्वीसं । जति एक्को वि णिम्मातो

विहरंतु, ग्रह न निम्मातो तो पुणो कुसाबिंदु तेणेव कमेण उवट्ठायंति, एते वि बारस बरिसे, सब्बे छत्तीसं जाता । एवं जति छत्तीसाए बरिसेहि निम्मातो तो सुंदरं, ग्रह न निम्मातो ताहे अण्णं परममेहाविणं पत्तं उवादाय पक्खावेत्ता उवसंपज्जति ॥५११६॥

सा य उवसंपदा एतारिसे ठाणो -

पुव्वज्जएगपक्खिय, उवसंपद पंचहा सए ठाणे ।

छत्तीसाऽतिककंते, उवसंपद पत्तुवादाय ॥५११७॥

पच्छदं गतायं ।

पुव्वदस्स इमा विभासा, “पुव्वज्ज एगपक्खी” इमे -

गुरुसज्जिक्खलए सज्जंति ए य गुरुगुरु गुरुस्स वा नत्तु ।

अहवा कुल्लिच्चओ ऊ पुव्वज्ज। एगपक्खी उ ॥५११८॥

पितृव्यः, भ्राता, पितामहः, पीतृकः - भ्रातृव्य इत्यर्थः । अहवा - एगकुल्लिच्चए तेति एक्का सव्वा सामाचारी, सुतेण एगपक्खितो वस्स एगवायेणियं सुतं ॥

पुव्वज्जाए सुएण य, चउमंगुवसंपया कमेणं तु ।

पुव्वाहियविस्सरिए, पढमासति तइयमंगो उ ॥५११९॥

पुव्वद्वर्गणियकमेण उवसंपदा पढमतियमंगेसु ति, जम्हा तेसु पुअाहितं विस्सरियं पुणो उज्जुधारे ओसक्कइ ।

चोदकाह - “साहम्मियवञ्जल्लयाए सम्बस्तेव कायव्वं, कि कुसातिविभागेण उवट्ठवणं कत्तं” ? उच्यते -

सव्वस्स वि कातव्वं, निच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा ।

कालसभावममत्ते, गारवलज्जाए काहिति ॥५१२०॥ कंठा

“उवसंपदं पंचविधं” ति अस्य व्याख्या -

सुतसुहदुक्खे खेत्ते, मग्गे विणए य होति बोधव्वे ।

उवसंपया उ एसा, पंचविहा देसिता सुत्ते ॥५१२१॥

उवसंपदासु इमो आमवंतववहारो -

सुत्तम्मि णालवद्धा, णातीवद्धा व दुविहमिच्चादी ।

खेत्ते सुहदुक्खे पुण, पुव्वसंपयुय मग्गदिट्ठादी ॥५१२२॥

सुत्तोवसंपदा दुविधा - पढते अमिषारेंते य । दुविधाए वि सुत्तोवसंपदाए छ णालवद्धा इमे - माता पिता भ्राता भविजी पुत्तो भूता ।

१ या० ५११७ । २ पुरे इत्थपि पाठः ।

एतेसि परावि सोलस इमे -

मासम्माता पिता आता भगिणी, एवं पिउणो वि चउरो, भाउपुत्तो धूया य, एवं भगिणी पुत्त-
धूमान वि दो दो, एते सोलस, छ सोलस य बावीसं, एते णालकाद्धा, सुत्तोवसंपण्णो सभति । छेत्तोवसंपण्णो
बावीसं पुब्बपच्छसंभुया य मित्ता य सभति । सुहदुक्खी पुण बावीसं पुब्बपच्छसंभुया य सभति । मग्गोवसं-
पण्णतो एते सव्वे सभति दिट्ठा मट्ठा य सभति । विणयोवसंपदाते सव्वं सभति, णवरं - विणयावरिहस्स न
संभवाविणयं पउजति ।

“सगे ठाण” ति - पक्कज्जाए सुतेण य जो एगपक्खी पढमं तत्थ य उवसंपज्जति, पच्छा कुलेण
सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण गणेण य जो एगपक्खी, तस्स वि
पच्छा वित्तिभोगेसु, पच्छा चउत्थभगे, एवं उवसंपदाते ठामति ।

अह्वा - “सट्ठाणो” ति - सुत्तत्थिस्स जस्स सुयं भत्थि तं सट्ठाणं एवं सुहदुक्खियस्स जत्थ
देयावक्ककरा भत्थि, छेत्तोवसंपदत्थिस्स जस्स जत्थभत्तादियं भत्थि, मग्गोवसंपदत्थिस्स जत्थ मग्गं भत्थि,
विणयोवसंपदत्थिस्स जत्थ विणयकरणं जुज्जति । एते सट्ठाणा एतेसु उवसंपदा ॥५५२२॥ णाणट्ठोवसंपदा गता ।

इदाणि दंसणट्ठा भण्णति ।

कहं वा दंसणट्ठा गम्माति !, उच्यते -

कालियपुक्कवाते वा, णिम्माओ जदि य भत्थि से सत्ती ।

दंसणदीवगहेउं, गच्छइ अह्वा इमेहिं तु ॥५५२३॥

कालियसुतं पुक्कगयसुते वा जं वा जम्मि काले पसरति सुत्तं तम्मि सुत्तत्थतदुमएसु णिम्मातो ताहे
चइ से दंसणदीवगेसु गहणचारणसत्ती भत्थि ताहे अप्पणो परस्स य दरिक्खणं दीवगति दीप्यं करोति हेतु-
कारणं तानि वसोवविशोधनानीत्थयं । अह्वा - इमेहिं कारणेहिं गच्छति ॥५५२३॥

भिक्खुगा जहि देसे, बोडिय-थलि निण्हएहि संसग्गी ।

तेसि पण्णवणं असहमाणे वीसज्जिते गमणं ॥५५२४॥

जत्थ भोगे णगरे देसे वा भिक्खुग-बोडिय-निण्हमाण वा वली तत्थ ते भायरिवा ठिता, तेहिं सदि
भायरियसंसग्गी - प्रीतिरित्थयं । ते य भिक्खुमादी अप्पणो सिद्धंतं पण्णवेंति, सो य भायरिपो तेसि वसिक्खण्ण
तुप्पिहको भण्णति ॥५५२४॥

लोगे वि य परिवाओ, भिक्खुगमादी य गाढ चमडेति ।

विप्परिण्णमति सेहा, ओमाभिज्जति सट्ठा य ॥५५२५॥

एते भिक्खुमादी जाणगा, इमे पुण ओदधमुंडा, ते य भिक्खुमादी अमहं पक्कं गाढं चमडेति,
सेह सट्ठा य विपरिणमति, भणति य - एते सेवभिक्खु घम्मवादिणो, जइ सामत्तं भत्थि नं तो अमहं
उत्तरं देवु, एवं सपक्खेसु सट्ठा ओहाविज्जति, ॥५५२५॥

अह तेहिं भिक्खुगमाइहिं थलीए बहुओ णिबद्धो -

रसगिद्धो य थलीए, परित्थियतज्जणं असहमाणो ।

गमणं बहुस्सुयत्तं, आगमणं वादिपरिसाओ ॥५५२६॥

सो य आयरियो रसगिद्धो गोउलपिबहतो, सति 'वि सामत्ये भणमाणो वि ण किं चि उत्तरं देति, एवमादि तेसि परतिविधायणं पण्णवसतज्जणं असहमाणो सिस्सो आयरिए विधीए पुच्छति, जाहे विसज्जितो ताहे विहिणा यधो, सो य सुणेत्ता बहुस्सुधो जाधो, आगमणं, आगतेण य पुब्बं सायरिया दटुव्वा, भण्णवसहीए सो ठाड, जे तत्थ पडिया बादिगरिस्सं च गेह्ति, ते परिजियायते करेति, ते रण्णो महाज्जणं स मा पुरतो गिहत्तरे करेति ॥५५२९॥

वादपरायणकुविया, जति पडिसेहेति साहु लट्ठं च ।

अह चिरणुगतो अग्गं, मा से पवत्तं परिहवेह ॥५५२७॥

बादकरणे जिता कुविया जइ ते तं आयरियस्स निबधं पडिसेहेति तो सुदरं, अहवा - तत्थ कोइ तुट्ठो भणिज्ज - "एयस्स को दोसो ? एस अग्गं चिरणुगतो, पुब्बवत्तं वट्ठं मा परिहवेह" ॥५५२७॥

ओहे वत्त अवत्ते, आभव्वे खो गमो तु णाणट्ठा ।

सो चेव दंसणट्ठा, पच्चागते हो इमो वण्णो ॥५५२८॥

ओहविभागे णाणट्ठा संजयस्स वत्तस्स अवत्तस्स य जो सचित्तादियाण आभव्वाण्णाभव्वगमो भणिधो सो चेव असेसो दंसणट्ठा गच्छत्तस्स भवति, पच्चागते कते वादे जितेसु भिक्खुणादिसु आयरिए भणति-गीह एतत्तो तुब्भे ॥५५२८॥

जइ एवं भणमाणो णीति तो इमा विधी -

कातूण य पणामं, छेदसुत्तस्स ददाहि पडिपुच्छं ।

अण्णत्थ वसहि जग्गण, तेसिं च निवेयणं काउं ॥५५२९॥

आयरियस्स पादे पणमित्ता भणति - 'छेदसुत्तस्स ददाहि पडिपुच्छं' ति, अस्य व्याख्या -

सहं च हेउसत्थं, चऽहिज्जिओ छेदसुत्तं णट्ठं मे ।

एत्थ य मा असुयत्था, सुणेज्ज तो अण्णहिं वसिमो ॥५५३०॥

साहे ति व्याकरणं, हेतुसत्थं अवसपादादि, एवमादि पडिज्जतो छेदसुत्तं गिसीहादि णट्ठं सुत्तधो अत्यधो तदुभधो वा, तस्स मे पडिपुच्छं देह ।

"अण्णत्थ वसहि" ति अस्य व्याख्या - 'एत्थ य' पच्छदं । "एत्थ बहुवसहीए असुयत्था सेहा भणीता अपरिणामगा य, मा ते सुणेज्जा तं अण्णवसहीए ठामो, एव ववगसेण णीणेति, ॥५५३०॥

अहवा - वसहीधो खेतधो वा णो इच्छइ गिमांतं ।

"जग्गण तेसिं निवेदण" ति अस्य व्याख्या -

खेत्तारक्खिनिवेयण, इतरे पुब्बं तु गाहिता समणा ।

जग्गविओ सो य चिरं, जह णिज्जंतो ण चेतेति ॥५५३१॥

आरक्खिणो ति दंडवासिणो, तस्स निवेदिज्जति - "अग्गं मंदो पसू अत्थि, तं अग्गे रक्खीए वेज्जमूलं नेहामो ति तुब्भे मा किं चि भणेज्जह", इतरे य भणीता समणा ते गमिया - "अग्गे प्रायरियं एवं

येनामो तुम्हे भा बोलं करेजह ।” “जग्गण” ति सो व प्रायरिओ राधो किंषि अक्खाइयादि कहाविज्जति सुचिरं जेण निसिद्धसुत्तं विज्जंतो ण किंचि वेदति, ताहे संचारो छोड्ढं गेति, अहं चेतेति विसवति वा ताहे “वित्तचित्तो” ति लोगस्स कहेयव्वं ॥५५३१॥

णिण्हयसंसग्गीए, बहुसो भण्णंतुवेह सो भण्णति ।

तुह किं ति वत्ति वच्चसु, गता-SSगते णीणितो विहिणा ॥५५३२॥

अहं बोडियाण णिण्हयणं वा संसग्गी तेण ण गच्छति, बहुसो वि अणंतो उवेहति - तुण्हिक्को अच्छति । अहंवा भण्णंज - “जति हं णिण्हवगसंसग्गीए अच्छामि तो तुम्हं किं दुक्खति ?, वच्चइ तुम्हे जतो भे गतव्वं, अहं ण गच्छामि”, एत्थं वि सिस्सेण सिक्खणमतगतेण णिण्हयादि जेउं प्रायरिओ विहिणा णीणियव्वो ॥५५३२॥

एसा विही विसज्जिते, अविसज्जिए लहुग गुरुमासो य ।

लहुगुरुम पडिच्छंतं, आगतमविही इमो तु विही ॥५५३३॥

पडिच्छगस्स चउलहुम, सीसस्स चउगुरुमा, बोच्चं प्रापुच्छणे मासो, अणापुच्छे प्रागयं जइ पडिच्छगं पडिच्छइ तो चउलहुं, अहं सीस तो चउगुरुमा, एवं अविहिमागयस्स पच्छित्तं ।

इसा विही भण्णति ॥५५३३॥

दंसणपक्खे आयरिओवज्झाए चेव सेसगाणं च ।

एक्केक्के पंचदिणे, अहंवा पक्खेण सव्वे वि ॥५५३४॥

दंसणप्रावमाण सत्थाण सिक्खगस्स गच्छंतस्स पक्खं प्रापुच्छणकालो, तत्थं प्रायरियं पंचदिणे, तेसा पंचदिणा । “अहंवा - “पक्खेण सव्वे” ति वित्तियादेसो, दिणे दिणं सव्वे पुच्छति भाव पक्खो पुण्णो ॥५५३४॥

एतविहिमागतं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा ।

अहंवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छए गुरुमा ॥५५३५॥

एगे अपरिणए या, अप्याहारे य धेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मो य पाहुडे ॥५५३६॥

एतारिसे विओसेज्ज, विण्णवासो न कप्पती ।

सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५३७॥

वित्तिपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागाडे ।

णाऊण तस्स भावं, होति तु गमणं अणापुच्छा ॥५५३८॥ गतायोः

दंसणट्ठा गयं ।

इदाणि चरित्तट्ठा -

चरित्तट्ठ देस दुविहा, एसणदोसा य इत्थिदोसा य ।

गच्छम्मि विसीयंतं, आतसङ्गत्थेहि दोसेहि ॥५५३९॥

चरितद्रुगमणं दुविहं - देसदोसेहिं आयसमुत्पदोसेहिं य । देस-दोसा दुविधा - एसणदोसा, इत्थिदोसा य । आयसमुत्पदा दुविहा - गुरुदोसा, गच्छदोसा य ।

तत्प गच्छे जति आयसमुत्पेहिं चक्कवालसमारिवितहकरणेहिं सीएज तत्प पक्कं आपुच्छंते अन्छति, परतो गच्छइ ॥५५३३॥

इमे संजमोवघायदोसा, एतेसु उवदेसो - न गंतव्वं -

जहियं एसणदोसा, गुरक्कम्मादी ण तत्थ गंतव्वं ।

उदयपउरो व देसो, जहि तं चरियादिसंकिण्णो ॥५५४०॥

उदयप्रचुरः सिधुविषयवत्, परिदाजिका कापालिका तच्चवण्णो भगवी च एवमादिवरगादीहिं जो प्राइण्णो विसमो तं ण गंतव्वं ॥५५४०॥

अह संजमविसए असिवादी कारणा होज्ज ताहे असंजमखेतं पविट्ठा -

असिवादीहिं गया पुण, तक्कज्जसमाणिथा ततो णिति ।

आयरिए अणिते पुण, आपुच्छित्तु अप्पणा पेति ॥५५४१॥

आदिसहातो दुम्भिकसपरचनकादिया । “तक्कज्जसमाणिय” चि तम्मि संजमखेतं जया ते असिवादिवा फिट्ठा ताहे तो असंजमखिताओ णिमतव्वं । जइ आयरिमो केणइ पडिबंघेण सीयंतो वा णणिगगच्छति तो जो एगो दो बहू वा असीदंता ते आयरियं विधीए पुच्छिता अप्पणा णिगगच्छति ॥५५४१॥

णिगगच्छणे इमा विधी -

दो मासे एसणाए, इत्थिं वज्जेज्ज अट्ठ दिवसाणि ।

आतसमुत्पे दोसे, आगाढे एगदिवसं तु ॥५५४२॥

जत्थ एसणादोसा तत्थ जयणाए भणेसणिज्जं गिण्हंतो वि दो मासे, आयरियं आपुच्छंते वि उदिवसति सहसा ण परिच्चयति,

अह “इत्थिसयग्गिभादि उवसमोति, अप्पणो य दढं चित्तं, तो अट्ठदिवसे आपुच्छति । तप्परतो अणितेसु अप्पणा णिमाच्छति ।

अह - इत्थीए अप्पणा अज्झोववण्णो तो एरिते आयसमुत्पे आगाढे दोसे एगदिवसं पुच्छिता अणितेसु जितियदिवसे अप्पणा णीणेति ॥५५४२॥

सेज्जायरमादि सएज्जिमाया व अउत्थदोसे उमए वा ।

आपुच्छति सणिहितं, सणातिगतो व ततो उ ॥५५४३॥

अह अप्पणा सेज्जातरुए सएज्जिगाए वा अतीव अज्झोववण्णो । “उमए” वत्ति परोप्परओ तो जति सो आयरितो सणिहितो आपुच्छति, असणिहिते पडिस्सयगओ सणादिभूमियओ वा अहा - सणिहितं साधुं पुच्छिता ततो चेव गच्छति ॥५५४३॥

१ मा० इत्थी सेहमियादि इत्थपि पाठः ।

एयविदिमागयं तु, पडिच्छ अपडिच्छणे मवे लहुगा ।

अहवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छणे गुरुगा ॥५५४४॥ पूर्ववत्

एगे अपरिणते या, अप्पाहारे य धेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मो य पाहुडे ॥५५४५॥ पूर्ववत्

एतारिसं विओसज्ज, विप्पवासो ण कप्पति ।

सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५४६॥ पूर्ववत्

भवे कारणं ण पुच्छिज्जा वि -

वित्तिपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागादे ।

नाऊण तस्स भावं, अप्पणो भावं चउणापुच्छा ॥५५४७॥

आयरियादी असंविग्गा होज्ज, संविग्गा वा कारणं आगाढं अहिदकदि अवसंबित्ता ण पुच्छेज्ज, तस्स वा भावं जाणति, सुविरेण वि ण विसज्जेति, अप्पणो वा भावं जाणति - "अम्हं अच्छंतो अवस्सं सि (सी) दामि", एवमादिकारणेहि अणापुच्छिता वच्चेज्जा चरित्तदा ५५४७॥

अह गुरु इत्थिदोसेहि सीएज्जा -

सेज्जायरकप्पट्ठी, चरित्तठवणाए अभिगया खरिया ।

सारुविओ गिहत्यो, सो वि उवाएण हरियब्बे ॥५५४८॥

सेज्जायरस्स भुणिगा जोव्वणकप्पे ठिमा, कप्पट्ठियं पडुक्क आयरिएण चरित्तं ठवियं - तं पडिसेवतीत्यर्थः । अहवा - दुववसरिया अभिगता सम्महिट्ठी तं वा पडिसेवेति, अहवा - अभिगते ति - आसक्ता, सो पुण आयरिमो चरित्तवज्जितो वेसधारी वा बाहिरकरणजुत्तो होज्जा । लिंगी वा सारुविगो वा सिद्धपुत्तो वा गिहत्यो वा होज्ज ।

लिंगधारी लिंगी ।

बाहिरकर्मंतरणवज्जितो सारुवी ।

मुंडो सुक्कलवासधारी कच्छं य बंधति अबंमचारी अज्जगो त्रिक्कं हिदद् ।

जो पुण मुंडी सतिहो सुक्कंवरधरो समज्जगो सो सिद्धपुत्तो, एयणायरधिकप्पे ठितो ।

"उवाएण हरियब्बो" पुब्बं गुरुं अणुकुलं भणति - इसाओ खेताओ वच्चाओ, जवा नेच्छति ताहे जत्थ सो पडिबट्ठो सा पणविज्जति "एसो बहूणं आहारो, एवं विसज्जेहि, पुमं किं वा महामोहकम्पं पगरेहि" । अति सा ठिया सो सुंदरं, अह य अति तो सा विज्जमंतणिमित्तेहि पाठट्ठिज्जति वसीकज्जति वा, असति विज्जादियाण अत्थं दाउं भोएति, गुरुं य एयंते व भणमाओ सम्बदां अणिच्छंतो पुब्बकमेयं राओ हरियब्बो ५५४८॥

सख्वा आयरिए भणिते अप्पणा ततो णेति भणेगा एगो वा ।

आ एगस्स विधी सा भणेगाण वि दट्ठवा -

एगो तु वच्चंते, उग्गाहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

चरित्तद्धं जो तु णेति सच्चित्तं णप्पिणे जाव ॥५५४६॥

जो साहू वतो एगाणितो वञ्चति सो परोवग्गाहवज्जं सच्चित्तादि जं लभति तं अप्पणो १ समभिल्लस्स वा गुरुस्स, चरित्तस्स वा २ स्वपीरुपलक्षणचरित्तद्वा पुण ओ सहाभो णेति तत्थ सच्चित्तादि णेतस्स जं सच्चित्तादि तं जाव ण सम्पेति साव पूर्वाचार्यस्स भवत्तसहाए वि ण लभति पुरिल्लो, जदा पुण उवसंपणो सम्पणितो वा तदा लभति, तत्कालाभो वा चरित्तपरिपालणा ॥५५४६॥

एमेव गणावच्छे, तिविही उ गमो उ होति गाणादी ।

आयरिय-उवज्झाए, एसेव य णवरि ते वत्ता ॥५५५०॥

जहा साधुस्स भणियं तथा गणावच्छेदयस्स तिविधो गमो गाणदंसणचरित्तद्वा गच्छंत्तस्स, एवं आयरिउवज्झायाण वि । णवरं - ते नियमा वत्ता भवन्ति ॥५५५०॥

एसेव गमो नियमा, निगंथीणं पि होइ नायच्चो ।

गाणद्धं जो तु णेती, सच्चित्तं नप्पणिज्जा वा ॥५५५१॥

णवरं - ताधो नियमा सहायाभो जो पुण तातो णेति सच्चित्तादी तस्स, सम्पियामु बाएत्तस्स ॥५५५१॥

को पुण तातो णेति ?

पंचण्हं एमतरे, उग्गाहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

आपुच्छ अट्ठ पक्खे, इत्थीविग्गेण संविग्गे ॥५५५२॥

संजतीतो गाणद्धा णेति आयरिय उवज्झायो वा पबिल्ली मणी वा येरो वा, एएत्ति पंचण्हं अणत्तरो गितो उग्गाहवज्जं सच्चित्तादि लभति । इत्थी पुण गाणद्धा वच्चंती अट्ठपक्खे आपुच्छति आयरियं उवज्झायं वसमं गच्छं वा । एवं संजतिविग्गे वि चउरो इत्थीभो सत्थेण थियव्वाभो, संविग्गे भीयत्थो परिणयवयो णेति । चरित्तद्वा गयं ॥५५५२॥

तिण्हद्धा संकमणं, एयं संभोइएसु जं भणितं ।

तेसस्सति अण्णसंभोइए वि वच्चेज्ज तिण्हद्धा ॥५५५३॥

गाणातिगितस्सद्वा एयं संकमणं संभोइएसु भणियं, संभोइयाण असतो अण्णसंभोइएसु वि गाणातिगितस्सद्वा संकमति ॥५५५३॥

अहवा - संभोगद्धा संकमति -

संभोगा अवि हु तिहिं, कारणेहिं तत्थ चरणे इमो भेदो ।

संकमचउक्कमंगो, पइमे गच्छम्मि सीदंते ॥५५५४॥

१ सेसत्तिस्सस्स, इत्थपि पाठः । २ लक्षणस्स अट्ठा चरित्तद्वा, इत्थपि पाठः ।

संभोगो वि तिष्ठतु । इच्छिञ्जह, तं तद्वा जायस्स दंसगस्स चरित्तस्स । जायदंसगट्ठा जस्स उवसंपण्णो तस्मि सीयते ततो णिगम्भो भाणियब्बो, जहा मय्यणो गच्छामो । चरित्तट्ठा पुण जस्स उवसंपण्णो तस्स चरत्तं प्रति सीदंतेसु इमो चउभिवहो विगण्णो ।

कहं पुण संकमति ?, चउभंगे ।

इमो चउभंगो -

गच्छो सीदति, णो आयरिओ । णो गच्छो, आयरिओ ।

गच्छो वि, आयरिओ वि । णो गच्छो, णो आयरिओ ।

पढमे गच्छो सीदति ॥५५५४॥

सो पुण इमेहि सीदति -

पडिलेह दियतुयड्डण, णिक्खवणाऽऽयाण विणय सज्झाते ।

आलोय-ठवण-भत्तट्ट-भास-पडलग-सेज्जातरादीसु ॥५५५५॥

पडिलेहणा काले ण पडिलेहेति, [ण] पडिलेहेति वा विवच्चासेण, [वा] ऊपात्तिरित्तमादिदोसेहि वा पडिलेहेति । गुरुपरिणमिलाणसेहाण वा न पडिलेहेति । निवकारणे वा दिया तुष्टंति । णिक्खवणे आदाणे वा ण पडिलेहेति, ण पमज्जति, सत्तभंगा । विणयं ग्रहारिहं ण पयुजति । सज्झाए सुत्तत्यपोरिसीओ य ण करंति, अकाले असज्झाए वा करंति । पविस्सयादिसु आलोयणं ण पडंजति, भत्तादि वा ण भासोएति, दोसेहि वा आलोएति, संखडिण वा भत्तं आलोएति-गिरवखलीत्यर्थः । ठवणकुलाणि वा ण ठवति, ठवएसु घणापुच्छाए विसंति भत्तट्ट । मंडलीए ण भुजंति, बीसुं भुजंति, दोसेहि वा भुजंति, गुरुणो वा अणालोगेण भुजंति । अणारभासगदिहि भासति, सावज्जं भासति । पडलेहि आणियं अभिहं भुजंति । सेज्जायरपिहं वा भुजंति । आदिग्गहणेण उग्गमउप्पादणेसणादोसेहि य गेप्पति ॥५५५५॥

एवमादिएहि गच्छं सीदंतं -

चोदावेति गुरुण व, सीदंतं गणं सयं व चोदेति ।

आयरियं सीदंतं, सयं गणेणं व चोदावे ॥५५५६॥

गच्छो सीयतो गुरुण चोदज्जति, मय्यणा वा चोएति, जे वा तहि ण सीदति ते वा चोएति । बीयभगे आयरियं सीदंतं सतं वा चोएति, गणो वा तं आयरियं चोएति ततियग्गे ॥५५५६॥

दोणिं वि दिसीयमाणे, सयं च जे वा तहि ण सीदंति ।

ठाणं ठाणासज्जतु, अणुलोभादीहि चोदावे ॥५५५७॥

दोणिं वि जत्थ गच्छो आयरिओ य सीदंति तत्थ य सयं चोएति । जे वा तहि ण सीयंति तेहि चोदावेति । "ठाणं ठाणासज्ज" स्ति आयरिय-उवज्झाय-पवत्ति-वेर-गणावच्छ-अिक्खु-सुट्ठा य ग्रहवा खर-मज्झ-मउय-कुराज्जुरा वा जस्स आरिसी ग्रहण चोदणा जो वा जहा चोदणं गेप्पति सो तद्वा चोदेयब्बो ॥५५५७॥

अवमाण भाणवेतो, अयाणमाणस्स पक्ख उक्कोसो ।

लज्जाए पंच तिणिण व, तुह किं ति व परिणते विवेगो ॥५५५८॥

गच्छं सीदंतं, आश्रयं वा उभयं वा सीदंतं सद्यं चोदंतो अणोहि वा चोयावंतो अच्छति । अथ न जायति अहा एते मणमाणा वि गो उज्जमिउकामा तत्थ उक्कोसेण पक्खं अच्छति शुशं पुण सीदंतं लज्जाए गारवेण वा जाणंतो वि पंच तिणि वा दिवसे अमणंतोवि सुदो ।

अहं चोदिज्जंतो गच्छो गुरु वा उभयं वा अणज्जा - “तुम्हं किं दुक्कसि ? जइ अम्हे सीदामो, अम्हे वेव दोणति जाईहामो”, एवंभावपरिणए विवेगो गच्छस्स शुशस्स उभयस्स व कज्जति । अम्मं गणं गच्छइ । सो पुण एगो अणेगो वा असंविग्गमणातो संविग्गमणं संकमेति । एवं चउभंगो ॥५५५८॥

गीयत्थविहारातो, संविग्गा दोणिण एज्ज अण्णतरे ।

आलोइयम्मि सुद्धा, तिविहुवधीमग्गणा णवरि ॥५५५९॥

गीयत्थगहणातो उज्जयविहारातो गहितो, ततो उज्जयविहारातो संविग्गा, दोणि एज्ज ॥५५५९॥

“अण्णतरे” ति अस्य व्याख्या -

गीयमगीतागीते, अप्पडिवंधे ण होति उवघातो ।

अग्गीयस्स वि एवं, जेण सुया ओहणिज्जुत्तो ॥५५६०॥

अइ एगो सो गीओ अगीमो वा, अहं दुगादी होज्ज ते गीता अगीता वा मिसा वा, जति एगो गीतो वइयादिसु अप्पडिउक्कंतो वव्वति तो उवघिउवघातो ण भवति, जो वि अगीतो जहण्णेण जेण सुता ओहणिज्जुत्तो तस्स वि अप्पडिउक्कंतस्स उवही ण उवहम्मति ॥५५६०॥

गीयाण व मीसाण व, दोण्ह वयंताण वइगमादीसु ।

पडिबज्जंताणं पि हु, उवहि ण हम्मे ण वा-SSरुवणा ॥५५६१॥

दोण्हं गीताणं विमिस्साणं वा दोण्हं अइ वि वतियादिसु पडिबज्जंति सेससामायारि करंति तेषि उवही ण उवहम्मति ण वा पच्छित्तं भवति । अगियविउज्जते उवघिउवघातो चित्तिज्जो । एवं संविग्गविहारातो एगो अणेगो वा विहीए आगता, अप्पमिति गणातो फिडिया ततो आइवेत्तु आलोयणा दायव्वा, ततो सुद्धा ॥५५६१॥

“तिविघउवहीमग्गणा णवरि” ति अस्य व्याख्या -

आगंतु अहाकडयं, कथंत्वं अहाकडस्स असती य ।

मेलेति मज्झिमेहिं, मा गारवकारणमगीए ॥५५६२॥

“तिविहो” ति अहाकडो अप्पपरिकम्मो बहुपरिकम्मो य । एवं वत्थव्वाण वि तिविधो, अहाकडं अहाकडेहिं मेलिज्जति, इतरे वि दो एवं । वत्थव्वाण अहाकडा णतिय ताहे आगंतुगो मघाकडा वत्थव्वग-मज्झिमेहिं मेलिज्जति, मा सो आगंतु अगीयत्थो गारवं करेस्सति “ममेव उवधी उवघोसतरो” ति ॥५५६२॥

गीयत्थे णु मेलिज्जति, जो पुण गीओ वि गारवं कुणइ ।

तस्सुवही मेलिज्जइ, अहिगरण अपच्चओ इहरा ॥५५६३॥

गीयत्थो जइ अगारवी वत्थव्वमहाकडमसत्तीते तहा वे म्हाकडपरिभोगेणेव भुंजति, भह सेषाणं अण्णाण वा पुरोधो भणति ।

“ममोवही उक्कोसो, तुम्भ उवही असुद्धो” एवं भणंतो वारिज्जति । जइ ठितो तो सुंदर, भह ण ठाति, ताहे अण्णोवहिसमो कज्जति ।

“इहरे” ति अमेलिज्जंतो अगीयसेहाण अण्णव्वो कि अग्हेहितो एस उज्जमततरो जेण उवधि उक्कोसपरिभोगेण भुंजति । “ममोवही उक्कोसो” ति इतरे अमहाभाषा अभिकरणं करेज्जा, तम्हा मेलिज्जति ॥५५६६॥

एवं खलु संविग्गे, संविग्गे संकमं करेमाणे ।

संविग्गमसंविग्गे, -ऽसंविग्गे या वि संविग्गे ॥५५६४॥

पुञ्चद्वे पञ्चमभंगो गतो, पञ्चद्वे वितिय ततियभंगो ।

तत्थ वितियभंगसंकमे इमे दोसा -

सीहगुहं वग्घगुहं, उदहिं व पलित्तगं व जो पविसे ।

असिवं ओमोयरियं, पुवं से अप्पा परिच्चत्तो ॥५५६५॥

जो संविग्गे असंविग्गेसु संकमति तस्स ड्ढ, आणादिया य दोसा, सेमं कंठं ॥५५६५॥

चरण-करणपरिहीणे, पासत्थे जो उ पविसए समणो ।

जयमाणए य जहितुं, जो ठाणे परिचाए तिणि ॥५५६६॥

ओसणादो सीहगुहादिसठाणा, सीहगुहादिपक्वे एगमवि य मरणं पावति । जो पुण पासत्थादो भतीति सो अणेगाइ जाइव्व-मरियव्वाइ पावति ॥५५६६॥

एमेव अहाळ्ळंदे, कुसील ओसण्णमेव संसत्ते ।

जं तिणि परिच्चयती, णाणं तह दंसण चरित्तं ॥५५६७॥

कंक्षा । गतो वितियभंगो ।

पंचहं एगतरे, संविग्गे सं.मं करेमाणे ।

आलोइए विवेगो, दोसु असंविग्गे सच्छंदो ॥५५६८॥

पंचविहो असंविग्गे - पासत्थो ओसणो कुसीलो संसतो अहाळ्ळंदो । एतेसि अण्णयरो संविग्गेसु संकमेज्जा, सो संविग्गमज्जमतो संतो आलोयणं देति, अविमुद्धोवधिस्स विवेगं करेति, अणो मे विमुद्धोवधी दिज्जति । “दोसु” ति असंविग्गे असंविग्गेसु संकमं करेति. एस चउत्थमंगो । एस “सच्छंदो” इच्छा से “अविधि” ति काउं अवत्थू जेव ॥५५६८॥

पंचेगतरे गीए, आरुभिय वदे जतंत एमाणे ।

जं उवहिं उप्पाए, संमोइय सेसमुज्झंति ॥५५६९॥

पंचहं पासत्थादियाण एगतरो एतो जइ गीयत्थो आरुभियं अभिघारेउं तहि जेव महव्वयउच्चचारणं काउं आगंतव्वं । विधीए अपडिबज्झंतो आगच्छमाणी पंचे जं उवकारणं उप्पाएतो एति तं सर्व्वं संभोतितं ।

‘सेसो’ त्ति जो पासस्थोवधी अविबुद्धो सं परिट्वेति, जो पुण अगीयरथो तस्स वते आयरितो देति, उवधी से पुराणो अहिण्णुत्पातितो वा से सव्वो परिठविज्जति, आलोहए जं आवण्णो तं से पच्छित्तं देज्जति ॥५५६६॥

पासत्थादिसु इमं आलोयणाविधानं -

पासत्थादीमुद्धिते, आलोयण होति दिक्खपभित्तिं तु ।

संविग्ग पुराणे पुण, जप्पिभित्तिं चेव ओसण्णो ॥५५७०॥

अच्चतपासत्थो जो तस्स पव्वज्ज दी आलोयणा । जो पुण पच्छा पासत्थो जातो सो जतो पासत्थो जातो ततो कालतो आढवेत्तु आलोयणं देति । एयं अहाछंदवज्जणा । अहाछंदो जाहे पडिक्कमति तहे तस्स ॥ अक्खसेसं तहेव ॥५५७०॥ एवं संभोगट्टं गयं ।

इमो आयरियट्ठा णिवमो भण्णति -

आयरिओ वि हु तिहि कारणेहि णाणट्ठ दंसणचरित्ते ।

णाणे महकप्पसुत्तं, दंसणजुत्ता इमं चरणे ॥५५७१॥

आयरियादि णाणनिमित्तं उक्खंजति । अहवा - “णाणे महाकप्पसुत्तं” ति -

णाणे महकप्पसुत्तं, सीसत्ता केइ उवगते देइ ।

तस्सऽट्ठ उद्दिसिज्जा, सेच्छा खलु सा ण जिणआणा ॥५५७२॥

केसि वि आयरियाणं कुले गणे वा महाकप्पसुत्तं अत्थि । तेहि गणसंठितो कया - “जो अम्हं आवकहियसीसत्ताए उवट्ठाइ तस्स महाकप्पसुत्तं दयव्वं, जो अणस्स” । अणतो गणे विज्जमाणे अविज्जमाणे वा महाकप्पसुत्तं उद्दिट्ठे आयरिए तम्मि गहिए सो पुरिल्लानं चेव, ण वाएतस्स, जेण तेसि सा सेच्छा । ण जिणगणहरेहि मणियं - “आवकहियसीसत्ताए उवगयस्सेव सुयं देममिति” ॥५५७२॥

दंसणट्ठा -

विज्जा-मंत-णिमित्ते, हेतूसत्थट्ठ दंसणट्ठाए ।

चरितट्ठा पुव्वगमो, अहव इमे होति आएसा ॥५५७३॥

हेतुसत्थ-गोविइणिज्जुतादियट्ठा उक्खसंज्जति ।

चरितट्ठा इमो आदेसो -

आयरिय-उवज्झाए, ओसण्णोहावित्ते व कालगते ।

ओसण्ण छव्विहे खलु, वत्तमवत्तस्स मग्गणता ॥५५७४॥

आयरिओ ओसण्णो जातो, ओषातितो वा गिहत्थो जातो, कालगतो वा । जति ओसण्णो तो छण्हं अणतरो - पासत्थो, ओसण्णो, कुसीलो, संसत्तो, नीतितो, अहाछंदो य । जो य तस्स सीसो आयरियपदे जोणो सो वत्तो अवत्तो वा ॥५५७४॥

१... सुतट्ठा अदिट्ठे, इत्यपि पाठः ।

वत्ते खलु गीयत्ये, अव्वत्तवएण अहवग्गीयत्ये ।

वत्तिच्छ सार पेसण, अहवा सण्णे सयं गमणं ॥५५७५॥

वत्तो वएण, सुएण वत्तो गीयत्यो । एस पढमभंगो ।

वत्तो वएण, सुएण अवत्तो । एस अत्थतो वितियभंगो

अव्वत्तो वएण, सुएण वत्तो । एस अत्थतो तत्तियभंगो ।

अव्वत्तो वएण अहवा अगीयत्ये ति । एस चउत्थो भंगो ।

पढमभंगिल्लो जो वत्तो तस्स इच्छा गणं सारेलि वा ण वा । अहवा - तस्स इच्छा अणं आयरियं उद्दिंसइ वा ण वा, जाव ण उद्दिमति ताव गणं सारवेति । अहवा - तं आयरियं दूरत्थं “सारेलि” ति - बोदेति साधुसंघादगपेसणेण । अहं आसणो सो ध आयरितो तो समयेव गतुं बोदेति ॥५५७५॥

चोदणे इमं कालपरिमाणं -

एगाह पणम पक्खे, चउमासे वरिस जत्थ वा मिलती ।

चोयति चोयावेति य, अणिच्छे वट्ठावए सयं तू ॥५५७६॥

अप्पणा बोदेति, सगच्छ-परगच्छिच्चेहि वा चोतावेति, सव्वहा अणिच्छे समत्थो समयेव गणं वट्ठावेति ॥५५७६॥

अहवा -

अण्णं च उद्दिसावे, पंतावणट्ठा ण संगहट्ठाए ।

जति णाम गारवेण वि, सुएज्जअणिच्छे सयं ठाति ॥५५७७॥

ण गच्छस्स संगहोवगहुणिमितं आयरियं उद्दिंसति, आतावणट्ठा उद्दिंसति ।

तत्थ गतो भणति - “अहं अण्णं वा आयरियं उद्दिसावेमि, जइ तुम्हे एत्ततो ठाणात्तो ण उवरमह” ।

सो चित्तेति “अए जीवन्ते अण्णं आयरियं पडिवज्जति, सुयामि पासत्थत्तणं”, जइउवरतो तो सुन्दरं । सव्वहा तस्मि अणिच्छे जइ समत्थो तो अप्पणा गच्छाविबो ठाति ॥५५७७॥ गतो पढमभंगो ।

इमो वितियभंगो -

सुतवत्तो वयवत्तो, भणति गणं ते ण सारिउं सत्तो ।

सगणं सारहे तं, अण्णं व वयामो आयरियं ॥५५७८॥

असमत्थो अप्पणो गच्छं वट्ठावेउं सो तं आयरियं ताव भणति - “अहं असमत्थो गच्छं वट्ठावेउं तुम्हे वेव इमे सीसा, अहं व अण्णेसि सित्थो होहामि”, अहवा - “एते य अहं च अण्णं आयरियं वयामो उद्दिंसामो” इत्यर्थः ॥५५७८॥

आयरिय उवज्जाए, अणिद्धंते अप्पणा य असमत्थो ।

तिव्वसंवच्छरमद्धं, कुल्लगणसंघे दिसावंबो ॥५५७९॥

एवं पि गणिग्रो ग्रायरिग्रो उवजभाग्रो वा जाहे ण इच्छति संजमे ठाउं, गणाद्वित्ते वा अण्णो य असमत्थो य, ताहे कुलिच्चं ग्रायरियं उद्दिषति तिणिण वासे । ताहे तद्दि ठितो तं परिसारेति चोदेति य । तिण्हं वरिसाणं परग्रो जं सचित्ताचित्तं सो कुलिच्चायरिग्रो हरति ताहे गणिच्चं उद्दिशावेति वरिसं, ततो संचिच्चं छम्भासे उद्दिशावेति ॥५५७९॥

कुलातो गणं, गणातो वा संघं संकमंते ग्रायरियं इमं भणाति -

सचित्तादि हरति णे, कुलं पि णेच्छामो जं कुलं तुज्झं ।

वच्चाग्रो अण्णगणं, संघं च तुमं जति ण ठासि ॥५५८०॥

एवं भणते जति अण्णुद्धितो तो सुंदरं ॥५५८०॥

एवं पि अठायंते, तावेतुं अट्ठपंचमे वरिसे ।

सयमेव धरेति गणं, अणुलोमेणं व णं सारे ॥५५८१॥

अट्ठपंचमवरिसोवरि वएण वत्तीभूतो सयत्थो सयमेव गणं धारेति, ठिग्रो वि तं ग्रायरियं अणुलोमेहि सारेति ॥५५८१॥

अह्वा - वितियभंगिल्लो कुत्तगणसंघेसु नो उवसंपज्जति ।

कहं ?, उच्यते -

अहव जदि अत्थि थेरा, सत्ता परिउद्दिऊण तं गच्छं ।

दुहओ दत्तसरिसओ, तस्स उ गमओ मुणेयव्वो ॥५५८२॥

सुयवत्तो अण्णो सुत्तयपोरिसीतो देति, गीयत्था थेरा गच्छंति परियट्ठंति, एस पढमभंगतुल्लो जेव भवति । “गमो” ति पढमभंगप्रकार एव, एसो वि ग्रायरियं सारेति तावेति य ॥५५८२॥ गतो वितियभंगो ।

इमो ततियभंगो -

वत्तवओ उ अगीओ, जति थेरा तत्थ केति गीयत्था ।

तेसंतिए पढंते, चोदे तेसऽसति अण्णत्थ ॥५५८३॥

वत्तवत्तगणं गणं रक्खेति चोदयति, असति थेराणं गीयत्थाणं अण्णमायरियं पढमभंगसुएण एगवत्तियं सह गणं उवसंपज्जति ।

अह्वा - ततियभंगिल्लो जदि अगीयत्तगणो गणं परियट्ठं अस्मत्थो थेरा य से गीयत्था तेसंतिए पढंति, अण्णो य थेरा गच्छारियट्ठो कुसला ते गणं परियट्ठंति, एरिसो वि णो अण्णस्स उवसंपज्जति, असति थेराण उवसंपज्जति ॥५५८३॥ गतो ततियभंगो ।

इमो चउत्थभंगो -

जो पुण उभयावत्तो, वट्ठावग असति तो उ उद्दिसति ।

सव्वे वि उद्दिस्ता, मोत्तूणमिमे तु उद्दिस्ता ॥५५८४॥

जति येरा पाडेतया अत्थि गणं च वट्टावेंतया तो एसो वि ण उद्दिंसति, अण्णं च वट्टावणघेराणं पुण असति उद्दिंसति ॥५५८४॥

सब्बे वि आयरियं उद्दिंसता इमेरिसे आयरियं भोत्तुं उद्दिंसति -

संविग्गमगीतत्थं, असंविग्गं खलु तद्देव गीयत्थं ।

असंविग्गमगीयत्थं, उद्दिंसमाणस्स चउगुरुगा ॥५५८५॥

तिविधं पि उद्दिंसतस्स चउगुरुगा, अहवा - काल-तव-उभएहिं गुरुगा कायव्वा ॥५५८५॥

एतेसु उद्दिहेसु य अणाउट्ठंतस्स इमं कालगतं पच्छित्तं -

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेतो पहावती ।

छेदेण छिण्णपरिभाए, ततो मूलं तअओ दुगं ॥५५८६॥

सत्तदिवसे चउगुरुग । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहुं । अण्णे सत्तदिणे छगुहं । अण्णे सत्तदिणे छेदो । मूलं एवकं दिणं, अणवट्ठं एवकदिणं । एवकलीसइमे दिणे पारंघियं ।

अहवा - दितितो इमो प्रादेसो-एवकवीसं दिवसे तवो पूर्ववत् । तवोवरि सत्तदिवसे चउगुरु छेदो । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहुछेदो । अण्णे सत्तदिवसे छगुरुछेदो, ततो मूलजणवट्ठुपारंघिया पणयालीसइमे दिवसे ।

अहवा - छेदे ततितो प्रादेसो - पणगादि सत्त सत्त दिणेहिं णेयव्वो, एत्थं छत्तेमुत्तरसत्तदिवसे पारंघियं च यावति । जम्हा एते दोसा तम्हा संविग्गो गीयत्थो उद्दिंसियव्वो ॥५५८६॥

छट्ठाणविरहियं वा, संविग्गं वा वि वयसि गीयत्थं ।

चउरो वि अणुग्घाया, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५५८७॥

एयं पि संविग्गगीयत्थं छट्ठाणविरहयं । जति मामकं काहियं पासणियं संपसारियं उद्दिंसावेति तो चउगुरुगा प्राणादिया दोसा ॥५५८७॥

छट्ठाणा जा णित्तिओ तव्विरहियकाहिगादिया चउरो ।

ते वि य उद्दिंसमाणो, छट्ठाणगताण जे दोसा ॥५५८८॥

गताया । एत्थं वि सत्तरत्तादिनवच्छेदविसेसा य सब्बे भाणियव्वा ।

एतस्स इमो अववातो - गीयत्थस्स संविग्गस्स असति गीयत्थं असंविग्गं पव्वज्जमुतेण एगपव्विखयं उद्दिंसति, एवं कुलगणसंविच्चयं पि, एवंपि ता ओसण्णो गतो ॥५५८८॥

ओहाधित-कालगते, जाविच्छा ता नह उद्दिंसावेंति ।

अव्वत्ते तिविहे वी, नियमा पुण संगहट्ठाए ॥५५८९॥

जो ओहाधितो सो सारुवितो लिंगत्थो गिहत्थो वा, यो विउण्णेणं गवेसियव्वो, अप्पसागारियं च विण्णवियव्वो, जाहे णेच्छति अप्पणा य अण्णं प्रायरियं इच्छति ताहे उद्दिंसावेति । “अव्वत्तो तिविहो” पढमभगवज्जे। ततो भंगा, अहवा - तिविहो अव्वत्तो तिविहे वि कुले गण संघं य उद्दिंसावेति । एतेसि दोण्ह वि पणाराणं उद्दिंसावेंतो णियमा संगहणिमित्तं उद्दिंसावेति । कालगए वि एस चेव विहो, णवरं - चोदण-तावणा णत्थि ॥५५८९॥

वत्तम्मि जो गमो खलु, गणवच्छे सो गमो उ आयरिए ।

णिविस्ववणे तम्मि चत्ता, जमुदिसे तम्मि ते पच्छा ॥५५६०॥

जो वत्तस्स भिवलुत्तस्स गमो सो गमो गणावच्छेदए आयरियाणं । इमं णाणत्तं - जइ णाण-दंसण-णिमित्तं गच्छति अण्णो य से आयरिओ संविगो तस्स पासे णिविस्वविउं गच्छं अण्णवित्तो ततितो वा गच्छति ।

अह से अण्णो आयरिओ असंविगो तो ते साधु जति तस्स पाति णिविस्वविउं गच्छति तो तेण ते चत्ता भवति, तम्हा ण णिविस्वववा णेयव्वः । तेण ते जेण तेण पमारेण ते य वेत्तुं जत्थ गतो तथ पदमं अण्णं णिविस्ववति, पच्छा भणति - “जइ भे अहं, तहा भे इमे वि” । “तम्मि ते पच्छा” तस्स तस्सा भवति ॥५५६०॥

णिविस्ववणा अण्णो परे य संतेसु तस्स ते देति ।

संघाडणं असंते, सो वि ण वावारऽणापुच्छा ॥५५६१॥

जदा अण्णा परो य णिविस्वतो तदा तस्स वि आयरियस्स किं वा जाया ?, जति से संति ति अण्णो य सहाया पटुप्पंति ताहे तेण तस्स चेव दायव्वा, असंतेसु संघाडणं एणं देति, अण्णसेसा अण्णा गेण्ठति । अह सव्वहा असहातो सव्वे वि गेण्ठति, तेण वि से कायव्वं, तस्स गुरुस्स अणापुच्छाए सो ते ण वावारेति ॥५५६१॥

आयरियं मिहिभूयं ओसणं वा जत्थ पेच्छति तत्थिमं भणति -

ओहावित-उत्सण्णे, भण्णति अणाहओ विणा वयं तुम्भे ।

कमसीसमसागरिए, दुप्पडियरगं जतो तिण्हं ॥५५६२॥

पुव्वदं कंठं । ओसणस्स पुव्वगुरुस्स कमा पादा सिरणे तेसु णिवडिति असामारिए ।

सीसो भणति - “तस्स असंजयस्स कहं चसणेसु णिवडिज्जइ” ।

आयरिओ भणति - “दुप्पडियः जतो तिण्हं” दुक्खं उवकारिस्स पच्चुवकारो किज्जति, तं जहा - माता पिउणो, सामिस्स, वन्मायरियस्स । अतो तस्स पादेसु वि पडिज्जति, ण दोसो ॥५५६२॥

किं च -

जो जेण जम्मि ठाणम्मि, ठाविओ दंसणे व चरणे वा ।

सो तं तओ जुयं तम्मि चेव कातं भवे निरिणो ॥५५६३॥

सो सीसो तेण आयरिएण णाणादिमु ठविओ, इदाणि सो आयरिओ ततो णाणादिभाराओ जुतो, तं जुअं सो सीसो तेसु चेव णाणादिमु ठवेतो निरणो भवति ॥५५६३॥

जे भिक्खु वुग्गहवक्कंताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खु वुग्गहवक्कंताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खु वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ,
देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खु बुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा
पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥५५६१॥

जे भिक्खु बुग्गहवक्कंताणं वसहिं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥५५६२॥

जे भिक्खु बुग्गहवक्कंताणं वसहिं पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥५५६३॥

जे भिक्खु बुग्गहवक्कंताणं वसहिं अणुपविसइ,
अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥५५६४॥

जे भिक्खु बुग्गहवक्कंताणं सज्जायं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥५५६५॥

जे भिक्खु बुग्गहवक्कंताणं सज्जायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥५५६६॥

सव्वे सुत्ता भाणियव्वा -

बुग्गहवक्कंताणं, जे भिक्खु असणभादि देज्जाहि ।

चउलहुग अट्टहा पुण, णियमा हि इमं अवक्कमणं ॥५५६७॥

बुग्गहो कलहो, तं काउं अवक्कमति । एकग्गहणा तज्जातीयग्गहणमिति वचनात् अट्टहि ठाणेहि
गणाओ अवक्कमणे पणत्ते -

अब्भुज्जत ओहाणे, एक्केक्क-दुभेद होज्जवक्कमणं ।

णाणादिकारणं वा, बुग्गहो वा इहं पगतं ॥५५६८॥

अब्भुज्जयं दुविधं - अब्भुज्जतमरणेण अब्भुज्जयविहारेण वा । ओहाणं दुविधं - विहारोधावणेण
लिकोधावणेण वा, णाणट्ठा आदिग्गहणातो दंसणचरितट्ठा य, बुग्गहेण वा । एते उच्चारितसरिस ति काउं इह
बुग्गहेण पगतं, बुग्गहेण वक्कंता । बुग्गहो ति कलहो ति वा भंडणं ति वा विवादो ति वा एगट्ठं ॥५५६९॥

के पुण ते बुग्गहवक्कंता ? इमे सत्त -

बहुरयपदेस अव्वत्त समुच्छा दुग तिग अबद्धिया चेव ।

सत्तेते णिण्हगा खलु, बुग्गहो होत वक्कंता ॥५५७०॥

जेट्ठा सुदंसण जमालिऽणोज्ज सावत्थि-तिदुग्गज्जाणे ।

पंचसया य सहस्सं, ढंकेण जमालि मोत्तूणं ॥५५७१॥

रायगिहे गुणसिलए, वसु चोदसपुब्बि तीसगुत्ताओ ।

आमलकप्पा णगरी, मित्तिसिरी कूर पिउडाई ॥५५७२॥

सेयविपोलासादे, जोगे तद्विवसहियसूले य ।

सोधम्म-णलिणिगुम्मे, रायगिहे मुनियवलभदे ॥५५७३॥

मिहिलाए लच्छिवरे, महगिरि कोडिण आसमिते य ।
 नेउणियणुप्पवाए, रायगिहे खंडरक्खा य ॥५६००॥
 नदिखेडजणवउल्लुग, महगिरि धणगुत्त अज्जगंगे य ।
 किरिया दो रायगिहे, महातवो तीरमणिणाए ॥५६०१॥
 पुरिमंतरंजि भूयगिह, बलसिरि सिरिगुत्त रोहगुत्ते य ।
 परिवायपोट्टसाले धोसणपडिसेहणा वादे ॥५६०२॥
 विच्छु य सप्पे मूसग, मिगी वराही य काग पोयाई ।
 एयाहिं विज्जाहिं, सो य परिवायगो कुसलो ॥५६०३॥
 मोरी नउली विराली, वघी सिही य उलुगि ओवाइ ।
 एयाओ विज्जाओ, गिण्ह परिवाय महणीओ ॥५६०४॥
 सिरिगुत्तेणं छलुगो छम्मास विकड्डिऊण वाए जिओ ।
 आहरण कुत्तिआवण, चोयलसएण पुच्छाणं ॥५६०५॥
 वाए पराजिओ सो, निव्विसओ कारिओ नरिंदेण ।
 धोसावियं च नयरं, जयइ जिणो वदमाणो त्ति ॥५६०६॥
 दमउर-नगरुच्छुवरे, अज्जरक्खिय पूसमित्तियगं च ।
 गोट्टा माहिल नवमट्टमेसु, पुच्छाय विक्कम्म ॥५६०७॥
 पुट्टो जहा अबद्धो, कंचुडणं कंचुओ समभेइ ।
 एवं पुट्टमवद्धं, जीवं कम्मं समभेइ ॥५६०८॥
 रहवीरपुरं नगरं, दीवगमुज्जाणमज्जकण्हे य ।
 सिवभूहस्तुवहिम्मि, पुच्छा थेराण कहणा य ॥५६०९॥
 उहाए पणत्तं, बोडिय-सिवभूइ उत्तराहि इमं ।
 मिच्छादंसणमिणमो, रहवीरपुरे समुप्पणं ॥५६१०॥
 चांदस वासाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्स नाणस्स ।
 तो बहुरयाण दिट्ठी, सावत्थीए समुप्पन्ना ॥५६११॥
 सोलम वासाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्स नाणस्स ।
 जिवपएसियदिट्ठी, तो उममपूरं समुप्पण्णा ॥५६१२॥
 चोदा दो वासमया, तइया मिद्धि गयस्स वीरस्स ।
 तो अव्वत्तय दिट्ठी, सेवविआए समुप्पण्णा ॥५६१३॥

वीसा दो वाससया, तइया सिद्धि भयस्स वीरस्स ।
 सामुच्छेइयदिट्ठी, मिहिलपुरीए समुप्पन्ना ॥५६१४॥
 अट्ठावीसा दो वाससया, तइया सिद्धि भयस्स वीरस्स ।
 दो किरियाणं दिट्ठी, उल्लुगातीरे समुप्पन्ना ॥५६१५॥
 पंचसया चोयाला, तइया सिद्धि भयस्स वीरस्स ।
 पुरिमंतरजियाए, तेरासियदिट्ठि उपपन्ना ॥५६१६॥
 छव्वाससयाइं नवुत्तराईं, तइया सिद्धि भयस्स वीरस्स ।
 तो बोडियाण दिट्ठी, रहवीरपुरे समुप्पन्ना ॥५६१७॥
 चोइस सोलस वासा, चोहावीमुत्तरा य दोन्नि सया ।
 अट्ठावीसा य दुवे, पंचेव सया य चोआला ॥५६१८॥
 पंचसया चुलसीया, तइया सिद्धि भयस्स वीरस्स ।
 तो अबद्धियादिट्ठी, दसउरणयरे समुप्पन्ना ॥५६१९॥
 बोडियसिवभूइओ, बोडियलिंगस्स होइ उपपत्ती ।
 कोडिन्न कोइ वीरा, परंपरा फासमुप्पन्ना ॥५६२०॥
 पंचसया चुलसीओ, छच्चेव सया नवुत्तरा हुंति ।
 नाणुप्पत्तीए दुवे, उपपन्ना निव्वुए सेसा ॥५६२१॥
 सावत्थी उमभपुर, सेअम्बिआ मिहिल उल्लुगातीरे ।
 पुरिमंतरंजि दसपुर रहवीरपुरं च नयराईं ॥५६२२॥
 सत्तेया दिट्ठीओ, जाइ-जरा-मरण-गम्भ-वसहीणं ।
 मूलं संसारस्स उ, हवंति निगंथरुवेणं ॥५६२३॥
 मोत्तण एत्थ एक्कं, सेसाणं जावजीविया दिट्ठी ।
 एक्केक्कस्स य एत्तो, दो दो दोसा मुणेयव्वा ॥५६२४॥
 बहुरयादी जाव बोडिया -
 एएसि तु परूवण, पुव्विं जा वन्निआ उ विहिसुत्ते ।
 म च्चेव गिरवसेसा, इहमुदेमस्मि नायव्वा ॥५६२५॥
 एतेसि परूवणा कायव्वा "विधिमुत्ते" ति जहा पावसमे सामाइय-णिज्जुसीए ॥५६२५॥
 एतेसि अमणादी, वत्थादी वसहि-वायणादीणि ।
 जे देज्ज पडिच्छेज्ज व, मां पावति आणमादीणि ॥५६२६॥

१-“५६०३”-“५६२४” परिमिताः भवतिः खलु गायः पूनासत्कमुनभाष्यप्रती मात्र प्रथमपदोल्लेख-
 रूपेणैव संकेतिताः प्रासन्, अतोऽस्माभिरावश्यक-सामायिकनियुक्तिनः पूर्णोक्तः ।

तेसि अस्सणादि देति पच्छित्तं सत्त्वपदेसु चउलहुं, अत्थे वउत्थुह, आणादिया य दोसा, अणवत्थपसंगा
अण्णो वि दाहिति, सङ्गान वि मिच्छत्तं जणोति ॥५६२६॥

दोणग्गहणे संवासओ य वायणं पडिच्छणादी य ।

सरिसं पभासमाणा, जुत्तिमुवण्णेण ववहरंति ॥५६२७॥

“दाणे” त्ति अस्य व्याख्या -

गव्वेण ते उद्दिण्णा, अण्णे वा देतं दट्ठू भासंति ।

नूणं एते पहाणा, विसादि संसग्गिए गच्छे ॥५६२८॥

अम्हं एते प्रसणादि देति गव्वं करेज्ज, तेण गव्वेण उद्दिण्णेण पलावा भवेज्ज । अण्णो वा दिज्जत्तं
दट्ठुं भणेज्ज - “नूणं एते चेव पहाणा” । तेसि वा किं चिं अहाआवेण गेलण्णं होज्ज, ते भणेज्ज - “एतेहि
किं पि विसादि दिण्णं”, एत्थ गेण्हण-कड्डगादिया दोसा । एवं दाणसंसग्गीए अणोयसेहादिया जोदित्तं तेसु चेव
वएज्जा ॥५६२८॥

“अहणे त्ति अस्य व्याख्या -

तेसिं पडिच्छणे आणा, उग्गममविसुद्ध आभिओगं वा ।

पडिणीयया व देज्जा, बहुआगमियस्स विसमादी ॥५६२९॥

तेसि हत्थातो भत्तादि पडिच्छन्तस्स तित्थकराणातिवक्कमो, उग्गमादि अणुद्धं परिभुज्जति, वसोकरणं
वा देज्ज “अम्हं एते पडिक्खन्तो” त्ति पडिणीयत्तणे । अहवा - एस बहु आगमिय त्ति विसादि देज्ज ।

एगवसहिंसंसेण सेहा णिद्धम्मा सोदंति, तेति वा चरियं गेहंति ।

सुव-वायण-पडिच्छणादिसु वि संसग्गमादिदोसा ।

जुत्तिसुवण्णदिट्ठनेण वा सरिसं चरणकरणं कहेंनो सेहादी हरंति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा
ओ किं वि तेसि देजा, पडिच्छेज्ज वा, ण वा संवसेजा । एवं संकरेण पुव्वभणिया दोसा परिहरिया भवन्ति ।
॥५६२९॥

भवे कारणं -

असिवे ओमोयरिए रायदुद्धे भए व गेलण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, अयाणमाणे वि चितियपदं ॥५६३०॥

असिवाविकारणेहि तेसि दिज्जति पडिच्छति वा ॥५६३०॥

इमं गेलण्णे -

गेलण्णं मे कीरति, न कीरती एय तुब्भ भणियम्मि ।

एस गिलाणो एत्थं, गवेसणा णिहओ मां य ॥५६३१॥

१ गा० ५६२७ । २ गा० ५६२७ । ३ गा० ५६२७ ।

एतत्तु गामे साधू गच्छता भणिता - "तुम्भं गिलाणस्स किं वेयावच्चं कीरइ, न कीरइ वा" ।

साधू भणति - "किं वा ते" ।

गिही भणइ - "एस गिलाणो तुब्भसंतिओ ।"

एतत्तु गामे साधुणा पविसिउं गविट्ठो जाव णिण्हतो सो ॥५६३१॥

जणपुरतो फासुएणं, अण्फासुयमगणे असमणो उ ।

पणवणपडिककामण, अविसेसित णिण्हए वा वि ॥५६३२॥

जणममक्खं उगमुप्पादणसणासुद्धच्छेण करेति, जाहे सुद्धं ण लभति सो य असुद्धं मगति ताहे लोगस्स पुरधो उस्सगं पणवेंति भणति य - "एस असमणो" ।

तं पि भणति - "जति तुमं णिण्हगदिट्ठो पडिककमपि पासत्थादित्तणओ वा तो ते सब्बहा करेमो ।" तहा य पणवेंति जहा सो तद्वाणाओ पडिककमति । अहवा - जत्थ साधूणं णिण्हमाणं य विसेसो ण णज्जइ किञ्चि ॥५६३२॥

दुक्खं सु निरणुकंपा, लोए अदेते य होति उड्डाहो ।

सारूवम्मि य दिस्सति, दिज्जति तेणेवमादीसु ॥५६३३॥

जइ वि सो ओसणो निण्हओ वा तहावि प्रकज्जते निरणुकंपया भवति, सा य दुक्खं कज्जइ, लोणो य तत्थ उड्डाह करेति - "जइ वि पव्वजाए एरिसं अणाहतणं ण परोप्परं कतोवकारियाओ भलं पव्वजाए," सारूप्यं सरिसं लिगं दीसति, एवमादि कारणेहि करेतो सुद्धो ॥५६३३॥

जे भिक्खु विहं अणेगाहमणिज्जं सति लाढे विहारए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ ॥सु०॥२५॥

"जे" ति - णिहंसे, भिक्खू पुत्रवर्णिण्णतो । विहं ण म अट्ठाणं, अणेगेहिं अहेहिं जं गम्मति तं अणे-गाहमणिज्जं, अहो णाम दिवतो । अहवा - अणेगेहिं अहेहिं गमणिज्जं अणेगाहमणिज्जं । अकारणेण गमणं पडिसिद्धं ।

किं कारणं गमणं पडिसेहेति ? जम्हा एत्थ गम्ममाणो अणेगा संजमाताए दोसा पसज्जंति । जम्मि विसए पुणा तवणियमसंजमसज्जायमादिया तं विसय, "लाढे" ति - सहा, जम्हा उगमुप्पादणसणासुद्धेण आहारोवधिणा संजमभारवहणट्ठयाए अप्पणो सरीरयं लाढेतीति लाढो, विहारयेति । दप्पेण देसदंसणाए विहरति । "संथरमाणसु जणवएसु" ति आहारोवहिवसहिमादिहं सुलभेहिं जणवणं, तं जणवयं विहाय पव्वज्जए तस्म पव्वज्जतो सुद्ध सुद्धेण वि गच्छमाणस्स चउलहं । एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्ति-वित्थरो -

विहमट्ठाणं भणितं, णेगा य अहा अणेगदिवसा तु ।

सति पुण विज्जंतम्मी, लाढे पुण साधुणो अक्खा ॥५६३४॥

गयत्था । विहं णाम अट्ठा ।

अट्ठाणं पि य दुविहं, पंथो मग्गो य होइ नायव्वो ।

पंथम्मि णत्थि किंची, मग्ग सगामो तु गुरु आणा ॥५६३५॥

तं दुविधं - पंथो मग्गो य । पुणो पंथो दुविहो - छिण्णो अछिण्णो य । छिण्णो गत्थि किंवि, पुण्णं सव्वं । अछिण्णो पत्तिवड्ढा वा अत्थि । गामाणुगामि मग्गो । पंथे चउगुरुगा, मग्गे चउसहुं. धाणरदिया य दोसा ॥५६३५॥

तं पुण गमेज्ज दिवा, रत्तिं वा पंथ गमणमग्गे वा ।

रत्तिं आदेसदुगं, दोसु वि गुरुगा य आणादी ॥५६३६॥

तं पंथं मग्गं वा दिवसग्गो वा रात्रो गच्छति । राइसहे आदेसदुगं - संभारती, संभावमग्गो वा राती ।

कहं ?, उच्यते - संभा जेण रात्रि सौभति दिप्पति तेण संभारती । संभावमग्गो विद्यालो । अह्वा - संभावमग्गो राती :

कहं ?, उच्यते - जम्हा संभावमग्गे चोर-पाशदूरिया रमंति तेण संभावमग्गो राती । संभाए जम्हा एते विरमंति तेण संभा विद्यालो । पंथं मग्गं वा जइ रातीए विद्याले वा गच्छइ तो चउगुरुगा ॥५६३६॥

तत्थ मग्गे ताव इमे दोसा -

मिच्छत्ते उड्डाहो, विराहणं होति संजमाताए ।

इरियाति संजमम्मी, छक्काय अचक्खुविसयम्मी ॥५६३७॥

"मिच्छत्ते उड्डाहो" दोण्हं विभासा -

किं मग्गे णिसिगमणं, जाती ण सोहंति वा कहं इरियं ।

जतिवेसेण व तेणा, अडंति गहणादि उड्डाहो ॥५६३८॥

उद्दालोपवत्तकज्जजाणं परलोयकज्जुज्जाणं किं रातो गमणं ? किं मग्गे दुट्ठचित्ता एते होज्जा ? कहं वा इरियं सोहंति, इरिउवउत्ता वा जंति ?, जहा एयं असच्चं तहा अण्णं पि मिच्छत्तं जणेज्जा, जइवेसेण वा तेण सि काउं रातो अडंता गहिया कडुणववहाराविसु पदेसु उड्डाहो ॥५६३८॥

"विराहण संजमाताए" एसा विभासा -

संजमविराहणाए, मह्व्वया तत्थ पढमे छक्काया ।

चितिए अतेण तेणे, तइए अदिन्नं तु कंदादी ॥५६३९॥

संजमविराहणा दुविधा - मूलगुणे उत्तरगुणे य । मूलगुणे पंचमह्व्वया, पढमे य मह्व्वए छक्काय-विराहणं करेति, विनिए मह्व्वए अतेण तेणमिति भासेज्जा, ततिए मह्व्वए कंदादि अदिण्णा गेण्हेज्ज ॥५६३९॥

अह्वा -

दियदिन्ने वि सच्चित्ते, जिणतेणं किमुत सव्वरीविसए ।

जेसिं च ते सरीरा, अविदिण्णा तेहि जीवेहिं ॥५६४०॥

सच्चित्तं जिणेहिं णाणुण्णायं तेण दिवसतो वि तेणं, रात्री रातो वा अदिण्णं, अह्वा - जेसिं ते कंदादिया मरीरा जीवाणं तेहिं वा अदिण्णं ति तेणं ॥५६४०॥

पंचमे अणेसणादी, छडे कण्यो व पढम चितिया वा ।

भगवन्त्रो त्ति मि जात्रो, अपरिणत्रो मेहुण पि वए ॥५६४१॥

पंचमे त्ति वते अणेसणिज्जं गेण्हंस्स परिण्हो भवति, छडे त्ति रातीभोयणे भद्राणं कण्यं भुजंतस्स रातीभोयणभंगो भवति । पढमो त्ति-सुहापरीसहो बित्तियो पिवासापरीसहो तेहिं भातुरो रात्ति भुजेज्ज वा पिण्ज वा, एगवत्तभंगे सव्ववयभंगो त्ति काउं मेधुण पि सेवेज्जा । अहवा - अपरिणतो भवुद्धधम्मत्तणमो दिया रातो सत्थे वत्तमाणे काइयानिमित्तं उसक्को, अगारी त्ति काह उसक्का, अप्पसागारिए तं पडिसेवेज्ज ॥५६४१॥

इरिया इति अस्य व्याख्या -

रीयादसोधि रत्ति, भासाए उच्चमदवाहरणं ।

ण य आदाणुस्सग्गे, सोहए काया य ठाणादि ॥५६४२॥

राभो इरियासमिदं न सोहेइ । भासासमिदं वि अगमिओ पंथाइविप्पण्हु उच्चमहेण वाहरेज्जा । एगवत्तमिति ण संभवति, रातो दिवसतो वा भद्राणं पढमवित्तियपरीसहाउरो एसणं पेलेज्जा । आदाणणिवत्तव-ममितीणं ठाणणिसीदणाणि वा करेत्तो रातो ण सोहेति । काइयादिरिट्ठवणं पि करेत्तो यडित्तं पि ण सोहेति ॥५६४२॥ एसा सव्वा संजमविराहणा ।

इमा आयविराहणा -

वाले तेणे तह सावए य विसमे य साणु कंटे य ।

अकम्हा भय आतसमुत्थं रत्ति मग्गे भवे दोसा ॥५६४३॥

सप्पादी वाला तेसु डमिज्जति, उवकरणसरीरतेणा ते उवकरणं संजतं वा हरेज्जा, सीहादिमावणं खज्जति, विसमे पडिप्पस्स अण्णतरणा य विराहणा हवेज्जा, साणुकंटे वा वि सप्पो हवेज्जा, अकम्हा भयं अहेतुकं भवति, राभो मग्गे वि एते दोसा, किमुत्त पंचे ॥५६४३॥

डमं वित्तियपदं -

कप्पति तु गिलाणट्ठा, रत्ति मग्गे तहेव संभाए ।

पंथो य पुव्वदिट्ठो, आरक्खिओ पुव्वभणितो य ॥५६४४॥

आरक्खिणो त्ति दंडवासिणो, पुव्वमेव भणति अग्गे गिलाणादिकारणेण रातो गमिस्सामो, वा किंचि वल्ल काहिसि । अणुण्णाते गच्छति, सेसं कंठं ॥५६४४॥ मग्गं त्ति यत्तं ।

इदाणि पंथो भणति -

दुविहो य होइ पंथो, छिण्णद्वाणंतरं अछिण्णं च ।

छिण्णे ण होइ किंची, अछिण्णे पल्लीहि वड्ढाहि ॥५६४५॥

डमो विधो -

छिण्णेण अछिण्णेण व, रत्ति गुरुगा तु दिवसतो लहुगा ।

उद्दरे पवज्जण, सुद्धपदे सेवती जं च ॥५६४६॥

उद्दरे जइ भद्राणं पञ्चजति तत्त्वं सुखसुखेण वि गच्छमाणस्त एयं पञ्चजति, जं च अकप्पादि किं वि सेवति तं सर्वं पावति ॥५६४६॥

इमा आयविराहणा -

वात खलु वात वट्ठग, आवडणं विसम-खाणु-कट्टेसु ।

वाले सावय तेणे, एमाइ होति आयाए ॥५६४७॥

खलुगा जाणुगाविसंघाणा वातेण वेपंति, चम्मकट्टगो वातकट्टगो ग्रहवा 'गृद्धिसी हट्ठागृद्धिसी वा कायकट्टगो वा । सेस कट्ठ ॥५६४७॥ एसा आयविराहणा ।

इमा सजमविराहणा -

छक्कायाण विराहण, उवगरणं बालबुद्धसेहा य ।

पदमेण व चितिएण व, सावय तेणे य मेच्छे य ॥५६४८॥

अथडिलेसु पुढविमादिछण्हं कायाणं संघट्टणादिविराहणं करंति, बालबुद्धसेहा पदमवितियपरीसहेत्ति परिताविज्जति, साधु उभिज्जं सावभो सावएण वा खज्जेज्जा । तेणेमेहि मेच्छेहि वा उवकरणं बुहुगादि वा हीरेज्जा ॥५६४८॥

२ उवकरणं त्ति एयस्स इमं वक्खाणं -

उवगरण-गेण्हणे भार-वेदणे तेणगम्म अधिकरणं ।

रीयादि अणुवओगो, गोम्मिय भरवाह उड्डाहो ॥५६४९॥

नंदिपडिगह-अट्टाणकप्प दुल्लिगमादिपयोवकरणं च जइ गिण्हति तो भारेण वेयणा भवति, विहडफ्फडा य तेणगम्ममा भवति, तेणेहि वा उवकरणे गहिए अधिकरणं, भारवक्ता य इरियोवउत्ता ण भवति, बहूवकरणा वा गोमिएहि वेपंति, गोमिया य चित्तेति उल्लावेंति य - "ग्रहो ! बहुलोभा भारवहा य" एवं उड्डाहो भवे । अट्टावा - एतद्दोसभया उवकरणं उज्झति तो जं तेण उवकरणेण विणा विराहणं पावेंति तमावज्जति ॥५६४९॥

इमं पथोवकरणं -

चम्मकरणं सत्थादी, दुल्लिगकप्पे य चिलिमिलिऽग्गहणे ।

तस विपरिणमुड्डाहो, कंदादिवहो य कुच्छा य ॥५६५०॥

जइ चम्मकरणे ण वेपति सत्थकोसमं वा, "दुल्लिमं" वा गिहत्थलिगोवकरणं अण्णरासडिय-लिगोवकरणं वा, "कप्प" त्ति-अट्टाणकप्पं, चिलिमिलि त्ति, एतेसि अग्गहणे इमे दोसा जहासंखं पच्छदं भणिया । चम्मकरणं अग्गहणे तसविराहणा, पिप्पलमुल्लया गोरस-पोत्तगादि अग्गहणे सेहमादियाण विप्परिणामो भवति, पिप्पलगाविसंसेणे पुण पल्ले विकरणे काजं आणिज्जति, दुल्लिगेण विणा रातो गेण्हंताण पिसियादि वा उड्डाहो भवति । अट्टाणकप्पेण विणा कंदादियाण छण्ह वा कायाण विराहणा भवति, चिलिमिलियं विणा मंडलीए भुजंताणं जणो दुगच्छति ॥५६५०॥

पथजोगोवकरणं अग्गहणे अजयकरणे य इमे दोसा -

अपरिणामगमरणं, अतिपरिणामा य होति नित्यक्का ।

णिग्गतं गहणे चोदितं, मणंति तइया कहं कप्पे ॥५६५१॥

१ कट्ठपथोभागवर्ती संधिवायुः । २ गा० ५६४८ । ३ व्याकुला, इत्यर्थः ।

“अकल्पियं” ति णाउं अपरिणामगो ण गेण्हति, अगेण्हणे मरति । अद्धाने अकल्पियगहणं दट्ठं
अतिपरिणामा’ गित्यक्का” गित्तलज्जा भवति, अद्धानातो णिमया अकल्पं गेण्हता चोदिता — “मा गेण्हह ति, ण
वट्ठति” ते पडिभणति — “ततिया अद्धाने कहं कल्पे” ॥५६५१॥

काउडीए विणा इमे दोसा —

तेणभयोदककज्जे, रत्ति सिग्घगति दूगमणे य ।

वहणावहणे दोसा, बालादी सल्लविद्धे य ॥५६५२॥

तेणभया रातो सिग्घं गंतव्वं, उदगणिमित्तं जहा मगविसए रातो सिग्घं दूरं च गंतव्वं । तत्थ
कावोडीए बालवुड्ढा असहं सल्लविद्धा उवकरणं च वोढव्वं, अह ण वहति तो एते परिचत्ता भवति । उवकरणं
पि छुट्ठेयव्वं । अहवा — “तेण” ति-तेणभए डंडचिलिमिली पेप्पति । अकल्पणिज्जकज्जे परितिययउवकरणं ।
उदगकज्जे चम्मकरगो, उदगकज्जे चेव गुलिगगहणं, उदगगहणदुया दतिगहणं । रातो सिग्घगतिगमणे
तलियगहणं । दूरं गतुं सत्थो ठाइस्सति तत्थ बालादिमल्लविद्धवहणदुया कावोडी । सल्लुद्धरणादिगमित्तं
सत्थकोसो भेदा । एवमादिउवकरणं वहतो भारमादिया दोसा, अवहंतस्स आयसंजमविराधणादिया दोसा,
तम्हा गिक्कारणे अद्धाने गो पवज्जेज्ज ॥५६५२॥

कारणे पवज्जति तत्थ इमो कम्पो —

चित्तिपदं गम्ममाणे, मग्गे असतीए पंथजयणाए ।

पडिपुच्छिऊण गमणं, अल्लिणपल्लीहि वतियाहिं ॥५६५३॥

पदमं मग्गेण गंतव्वं । असति मग्गस्स जणवयं पुच्छिऊण अल्लिणपवेगे पल्लिवतिगादीहि गंतव्वं,
सतो छिण्णेण ॥५६५३॥

इमेहि कारणेहि पंथेण गम्मति —

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।

गेलण्ण उत्तिमट्ठे, णाणे तह दंसण चरित्ते ॥५६५४॥

अणतरे वा आगाढे, जहा — सुधम्मसामिगणहरस्स मासकप्पे असंपुण्णे रायगिहे णगरे
तणकटुधारगो दमगो पव्वइतो । त भिक्खं हिडंतं गेगो भणति—“तणकटुधारगो” ति । तस्स असहणं,
सुधम्मस्स अभयाऽऽपुच्छणं ।

अभयस्स पुच्छा, कहणं “सेहस्स सागारियं” ति, तिकोडिपरिच्चागो विभासा —

एएहि कारणेहिं, आगाढेहिं तु गम्ममाणेहिं ।

उवगरण पुव्वपडिलेहिएण सत्थेण गंतव्वं ॥५६५५॥

पंथजोगोवकरणपडिलेहा गहणं, अह पुव्वं सत्थं पडिलेहेउं सुद्धे ण तेण सह गमणं ॥५६५५॥

असिवे अगम्ममाणे, गुरुगा दुविहा विराहणा नियमा ।

तम्हा खलु गंतव्वं, विहिणा जो वणिआो हेट्ठा ॥५६५६॥

दुविहा विराहणा — आय-सज्जमेसु । अहवा — अण्णो परस्स य । हेट्ठा ओहणिज्जुत्तीए जो गमो
भाणतो, सेसा वि ओमोदरियादग्गे जहेव ओहणिज्जुत्तीए तहा भाणियव्वा ॥५६५६॥

उवगरण पुच्वभणितं, अप्पडिलेहेंते चउगुरु आणा ।

ओमाण पंथ सत्थिय, अतियत्ति अप्पपत्थयणे ॥५६५७॥

उवकरणं चम्पकरणादी, जं वा वसलपाणं त भगोहमाणस्स सत्थं वाऽपडिलेहंतस्स चउगुरुणा ।
अपडिलेहोए दोसा भवन्ति - ओमाण पेल्लिओ व होज्जा, सत्थवाहो प्रतियत्ती पासत्थो वा पंतो होज्ज, सत्थो वा
अप्पपत्थयणो अप्पसवलो होज्ज, अणो वा पयिया तत्थ पत्ता होज्ज । तम्हा एयदोसपरिहणत्थं पडिलेहियव्वो
सत्थो ॥५६५७॥

सो केरिसो सत्थपडिलेहयो -

रागदोमविमुक्को, सत्थं पडिलेहे सो उ पंचविहो ।

भंडी वहिलग भरवह, आदरिय कप्पडिय सत्थो ५६५८॥

सो सत्थो पंचविहो - भंडि त्ति भंडी, वहिलगा उट्टबनिदादी, भारवहा पोट्टलिया वाहगा,
उदरिया णाम जहि गता तहि चैव क्ववगादी ओट्टं समुद्दिस्सति पच्छा गम्मति, अहवा - महियसंबला उदरिया,
कप्पडिया। मिक्खायरा ॥५६५८॥

रागदोमिए इमे दोसा -

गंतव्वदेसरागी, अपत्थ सत्थं करेति जे दोसा ।

इयरो सत्थमसत्थं, करेति अच्छंति जे दोसा ॥५५५९॥

जस्स गंतव्वे रागो सो जत्ति सत्थपडिलेहयो सो असत्थं पि सत्थं करेज्जा, तेण कुसत्थेण गच्छंणाण
जे दोसा तमावज्जति (‘‘दयेरे’’ त्ति जो गंतव्वो दोसी सो मुअमाणपत्थं पि असत्थं करेति, तत्थ अभिवादिमु
अच्छंणाण जे दोसा ते पावति ॥५६५९॥

उप्परिवाडी गुरुगा, तिमु कंजिमादि संभवो होज्जा ।

परिवहणं दोसु भवे, बालादी सत्तल-गेलण्णे ॥५६६०॥

भंडीमु विज्जमाणामु जइ वहिलगेसु गच्छति तो चउगुरुगा, एवं सेमेसु वि । अपडिलेसु तिमु
कजियमादिपाणगसंभवो होज्ज, दोसु भंडिवहिलगेसु परिवहणं होज्ज ।

केसि परिवहणं ?, उच्चये - बालादोण, आदिसद्गहणेणं बुद्धाणं दुव्वलाणं खयंकियाण य सत्तल-
विद्धानि गिलाणां य ॥५६६०॥ सत्थं पडिलेहंति तम्हा सत्थो पडिलेहियव्वो ।

सत्थे इमं पडिलेहियव्वं -

सत्थं च सत्थवाहं, सत्थविहाणं च आदियत्तं च ।

दव्वं खेत्तं कालं, भावोमाणं च पडिलेहे ॥५६६१॥

पुच्वदस्स डमा वक्खा -

सत्थे त्ति पंचभेदा, भत्थाहा अट्ट आतियत्तीया ।

सत्थस्स विहाणं पुण, गणिमाति चउव्विहक्केक्कं ॥५६६२॥

सत्यस्स पंच भेदा - मंडीमादि । सत्यवाहो भट्टविहो । आइयतिथा वि भट्टविहा उतरि भण्णिहिति । सत्यविहाणं पूण गणिमादि चउच्चिबं, गणिमं पूणफलादि, धरिमं जं तुलाए दिज्जति खडसक्करादि, मेज्जं चतुत्तुलादि, पारिच्छं रयणमोत्तिथादि । “एक्केक्के” ति वड्डिल्लेसु वि एयं चउच्चिबं । मारवहेसु वि एवं चउच्चिबं । उदरियकप्पडिएसु तं भंडं चउच्चिबं भाणियच्चं ॥५६६२॥

दब्बादि चउक्कं च पडिल्लेहेज्ज, तत्थ दब्बे -

अणुरंगादी जाणे, गुंठादी वाहणे अणुण्वणे ।

धम्मो ति व भत्ती य व, बालादि अणिच्छे पडिकुट्टं ॥५६६३॥

अणुरंगा नाम घंसिधो । जाणा सगडिगातो वा वाहणा । गुंठादी - गुंठो घोडमो, आदिसहातो अस्सो उट्ठो हत्थो वा । ते अणुण्वणविज्जति - जइ अम्हं कोइ बालो आदिसहायो बुद्धो दुब्बलो गिलाणो वा गंतुं ण सक्केज्जा सो तुम्हेहि चडायेयव्वो, जइ अणुजागति धम्मेण सो तेहि समं सुढं गमणं । अहं मुल्लेण विजा णेच्छति तो तं वि अन्धुवगच्छिज्जति । अहं मुल्लेण वि णेच्छति तो तेहि समं पडिकुट्टं गमणं, ण तेहि समं गम्मति ॥५६६३॥

किं च इमेरिसभंडभरितो इच्छिज्जति सत्थो -

दंतिकक-गोर-तेल्ले, गुल-सप्पिएमातिभंडभरितासु ।

अंतरावाघातम्मि उ, दंतैतिधरा उ किं देउ ॥५६६४॥

मोदग-साग-वट्टिमादी दंतखज्जयं बहुविहं दंतिककं !

अहंवा -- तंदुला दंतिकका, सच्चं वा दंतखज्जयं दंतिककं । गोर ति गोधूमा । तहा तेल्लसप्पिए-जाणविषाण य धण्णाण मंडीधो जइ मरियातो तो सो दब्बतो सुढो ।

किं कारणं ?, अंतरा वाघाए उप्पण्णे तं अप्पणा खंति अम्हाणं वि देति । “इहरह” ति जइ कुकुम-काणूरिय - तगर पत्तचोय-हिथु-संखलोयमादी अखज्जदब्बभरिए अंतरा वाघाते संबले णिट्ठिए किं दिनु, तम्हा एरिसभरिए ण गंतव्वं ॥५६६४॥

अंतरा वाघातो इमो -

वासेण णदीपूरेण वा वि तेणभय इत्थि रोहे वा ।

खोभो जत्थ व गम्मति, असिबं एमादि वाघातो ॥५६६५॥

अंतरा गाडं वासमारद्धं, चउमासवाहिणी वा महानदी पूरेण आगता, अगगतो वा चोरभव, दुद्धहत्थिणा वा पंधो रुद्धो, जत्थ वा सत्थो गंतुकामो तत्थ रोहणो, रक्खोभो वा तत्थ, असिबं वा तत्थ, एवमादिकज्जेसु अंतरा सण्णिवेसं काउं सत्थो अच्छति ॥५६६५॥ एवं दब्बतो पडिल्लेहा ।

इमा खेत-काल-भावेसु -

खेत्तं जं बालादी, अपरिस्संता वतंति अद्धानं ।

काले जो पुच्चण्हे, भावे सपक्ख-परपक्खणादिण्णो ॥५६६६॥

जतियं खेतं बालवुड्ढादिगच्छो अरिश्वांतो गच्छति तत्तियं जति सत्थो जाति तो खेतथो सुद्धो ।
कालो जो उदयवेलाए पत्थिते पुब्बण्हे ठाति सो कालतो सुद्धो । भावे जो सपक्ख-परपक्खभिक्षायरेहि
आणाइणो सो भावथो सुद्धो ॥५६६६॥

एक्केक्को सो दुविहो, सुद्धो ओमाणपेल्लितो चेव ।

मिच्छत्तपरिग्गहितो, गमणाऽऽदियणे य ठाणे य ॥५६६७॥

“एक्केक्को” ति भंडिवहिलगादिस्थो दुविहो — सुद्धो असुद्धो य । सुद्धो अणोमाणो, ओमाणपेल्लिओ
असुद्धो । सत्थवाहो आतियत्तो वा जे वा तत्तर अश्वप्पज्ञाणा एते मिच्छद्दिहो । एतेहि सो सत्थो पारिग्गहितो
होज्ज ॥५६६७॥

ओमाणपेल्लिओ इमेहि होज्ज —

समणा समणि सपक्खो, परपक्खो लिंगिणो गिहत्था य ।

आता संजमदोसा, असती य सपक्खवज्जेणं ॥५६६८॥

पुब्बद्धं कटं । बहुमु सपक्ख-परपक्खभिक्षायरेमु अक्कव्वत्ताणं आयविराहणा, कदादिगहणे वा
संजमविराहणा । अणोमाणस असतीते सपक्खोमाणं वज्जिता परपक्खोमाणेणं गंतव्वं, तत्थ जणो भिक्षवगहणे
विरोसं जाणति ॥५६६८॥

“गमणे” ति अस्य व्याख्या —

गमणे जो जुत्तगती, वड्ढापल्लीहि वा अछिण्णेणं ।

थंडिल्लं तत्थ भवे, भिक्षवगहणे य वमही य ॥५६६९॥

जुत्तगती नाम मिदुपनी — न शीघ्रं गच्छतीत्यर्थः । अछिण्णवहेण वड्ढपल्लीमादीहि वा गच्छति,
तत्थ थंडिल्लं भवति, वड्ढपल्लीहि य भिक्षव समह, वसडी य लभति ॥५६६९॥

“आदियणे” ति अस्य व्याख्या —

आतियणे भोत्तूणं, ण चलति अवरण्हे तेण गंतव्वं ।

तेण परं भयणा उ, ठाणे थंडिल्लठायीसु ॥५६७०॥

आतियणे ति जो मुत्तणवेलाए ठाति, भोत्तूणं य अवरण्हे जो ण चलति तेण गंतव्वं । तेणं परं भयणे
ति भयणा नाम जइ अवरण्हे भोत्तुं चलए तत्थ जइ सव्वे समत्था गतुं नो सुद्धो, अह ण सक्कंति तो असुद्धो,
ण तेण गंतव्वं । ठाणे ति जो सत्थो सण्णिवेसथंडिल्लेमु ठाति सो सुद्धो, अथाडिले ठाति असुद्धो ॥५६७०॥

जं वुत्तं सत्थहा अट्ठ आयियत्ती य अस्य व्याख्या —

पुराणसावग सम्मदिट्ठि अहाभइ दाणसद्धे य ।

अणभिग्गहिते मिच्छे, अभिग्गहिते अण्णतित्थी य ॥५६७१॥

पुराणो, गहताणुव्वतो सावगो, अवरियसम्मदिट्ठो, अहाभइगो, दाणसद्धो, अणभिग्गहियमिच्छो
अभिग्गहियमिच्छदिट्ठो, अण्णतित्थिओ य, एते सत्थाहिवा अट्ठ । आतिमत्तिमा वि एते चेव अट्ठ ॥५६७१॥

१ गा० ५६६७ । २ गा० ५६६७ । ३ गा० ५६६२ ।

अद्वाणं पदुच्च भंगदंसणत्थं भण्णति -

सत्थपणए य सुद्धे, य पेत्तिते कालऽकालगम-भोजी ।

कालमकालद्धाई, सत्थाहऽद्धाऽऽदियती वा ॥५६७२॥

सत्थपण ति पंच सत्था, एयं गुणकारपयं, ते य सत्था सुद्धा ।

कहं ?, उच्यते - सपक्ख परपक्खतोमाणमपेल्लिय ति, कालप्रकाले गमणं, कालप्रकाले भोग्यं, कालप्रकालगिवेसी ठाई ति थंडिलप्रयंडिलठाई । एते चउरो सपडिपक्खा सोलसभंगकरणया । अट्ट सत्थवाहा प्रतिपत्ति ते दो वि गुणकारयया - एत्थ काले गच्छइ, काले भुजइ, काले निवेसइ, थंडिले ठाई-एए सुद्धपया, पडिपक्खे प्रमुद्धा । सत्थवाहादिया पढमा चउरो नियमा भट्ठा, पच्छिमा चउरो भयणिजा भवति, अदियती वि ॥५६७२॥ एसा भट्ठावाहुकया गाहा, एईए अत्थप्रो सोलस भंगा उत्तरभंगा, उत्तरभंगविगप्पा य मक्खे सूतिया ।

जतो भण्णति -

एतेसिं च पयाणं, भयणा सयाइ एगपणं तु ।

वीसं च गमा नेया, एत्तो य सयग्गजो जतणा ॥५६७३॥

सत्थपणपदं, चउरो य सोलसभंगपदा, अट्ट सत्थवाहा, प्रादियत्ति अट्ट पदा य, एतेसि पदाणं संजोगे भयण ति भंगा, एतेसि एक्कावणमया भवति वीसं च भंगा । एत्थ सत्थेसु सुद्धासुद्धेसु सत्थवाहाइयत्तेसु य भट्ठत्तेसु अपरबहुचित्ताए सधगेहि जयणा भवति ॥५६७३॥

एमेवत्थो फुडो कज्जति -

कालुद्धाई कालनिवेसी, ठाणद्धाई कालभोई य ।

उग्गयऽणत्थमियथंडिल भज्जण्ह धरंतं सरे वा ॥५६७४॥

कालुद्धाती उग्गए आइच्चे दिवसतो जां गच्छति, कालनिवेसी जे अणत्थमिए आदिच्चे थक्कति, ठाणद्धाती थंडिले थक्कइ, कालभोती जो मःअण्ह भुजइ, अणत्थमिए वा ॥५६७४॥

एतेसिं तु पयाणं, भयणा सोलसविहा तु कायव्वा ।

सत्थपणएण गुणिता, असीति भंगा उ नायव्वा ॥५६७५॥

एतेसिं चउह पयाणं इमेण विहिगा सोलस भंगा कायव्वा - कालुद्धाती कालनिवेसी ठाणद्धाती कायभोती (१), एवं सपडिपक्खेसु सोलस भंगा कायव्वा । एते सोलस भंगा सत्थपणएण गुणिता असीति भंगा भवति ॥५६७५॥

मत्थाहऽद्धगुणिता, असीति चत्ताल छस्मया होति ।

ते आइयत्तिगुणिता, सन एक्कावण वीसऽहिया ॥५६७६॥

असीति अट्ठहि सत्थाहिर्वह गुणिया छस्मया चत्ताला भवति । ते अट्ठहि प्रतिप्रतिहृति गुणिता एक्कावणं सता वीसा (५१२०) भवति । एत्थ अणायरे सत्थे भंगविगप्पेण वा मुद्धे प्रायंतुं आयरियाणं प्राप्नोएति सत्थपडिलेहा ॥५६७६॥

इदानीं अणुणवणा भणति --

दोण्ह वि चियत्ते गमणं, एगस्सऽचियत्ते होति भयणा उ ।

अप्पत्ताण णिमित्तं, पत्ते सत्थम्मि परिसाओ ॥५६७७॥

जस्य एगो सत्थवाहो तस्य तं अणुणवेंति, जे य अहवाधाना पुरिसा ते वि अणुणवेंति, जस्य दो सत्थाधिवा तस्य दोऽवि अणुणवेंति, दोण्ह वि चियत्ते गमणं । अह एगस्स अचियत्तं तो भयणा, जति पेल्लगस्स अचियत्तं तो गम्मति, अह पेल्लगस्स अचियत्तं तो गम्मति । पंचिता वा आव ण मिलंति सत्थे ताव सउणादि-णिमित्तं गेण्हति, सत्थे पुण पत्ता सत्थस्स चेष सउणेण गच्छति । अणं च सत्थपत्ता तिणि परिसा करेति -- पुरतो मिगपरिसा, मज्जे सीहपरिसा, पिटुतो वसभपरिसा ॥५६७७॥

दोण्ह वि त्ति अस्य व्याख्या --

दोण्ह वि समागता सत्थिओ व जस्स व वसेण गम्मति ऊ ।

अणुणवणे गुरुगा, एमेव य एगतरपंते ॥५६७८॥

"दोण्ह" वि सत्थो सत्थवाहो य, एते दो वि समागतं समं अणुणवेंति । अहवा -- सत्थवाहं जस्स य वसेण गम्मइ एते दो वि समागते समं अणुणवेंति । अहवा -- सत्थाहिं चैव एकं अणुणवे । एवं जइ णो अणुणवेंति तो चउगुरुगा, जति दोणि अहिवा ते दो वि पेल्लगा तस्य एकं अणुणवेंति, एत्थं वि चउ-गुरुगा । एगतरे वा गते पेल्लगे जइ गच्छति सत्थ एमेव चउगुरुगं ॥५६७८॥

जो वा वि पेत्तिओ तं, भणंति तुह बाहुल्लायसंगहिया ।

वच्चांमऽणुगहो त्ति य, गमणं इहं गुरु आणा ॥५६७९॥

सत्थाहिं सत्थं वा जो वा तम्मि सत्थं पेल्लगे तं भणति -- जति अणुणवणहं मम्मं तो तुम्हेहिं समं तुह बाहुल्लायहिता समं वच्चांमो ।

जइ सो भणेज -- 'अणुगहं' ततो गम्मति । अह वृण्हिको अच्छति भणइ वा -- 'मा गच्छ' । जइ गच्छति तो चउगुरुगं, आणादिया य दोसा ॥५६७९॥

जति सत्थस्स अचियत्ते सत्थाहिवस्स वा अन्नस्स वा पेल्लगस्स अचियत्ते गम्मति तो इमे दोसा --

पडिसेहण णिच्छुभणं, उवकरणं बालमाति वा हारे ।

अतियत्ति गोम्मएहि व, उड्डुज्जंते (उद्धुज्जंते) ण वारंति ॥५६८०॥

अडविमज्जे मयणं भत्तपाणं पडिसेहेज, सत्थातो वा णिच्छुमेज्ज, उवकरणं वा बालं वा प्राणेशं हरावेज, अतियत्तिएहि "गोमि" ति-गो (या) गइल्लया तेहि उद्धुज्जंते न वारंति ॥५६८०॥

ते पंता भद्गा वा --

भद्गवयणे गमणं, भिक्खे भत्तट्टणाण वगहीए ।

थंदिन्लासति मत्तग, वमभा य पदेम वोमिरणं ॥५६८१॥

अणुणविण भद्गवयणे गम्भति, इमं भद्गवयणं - जं तुभ्मेहिं संदिसह तं मे सव्वं पडिपावेस्सं
सिद्धत्थपुण्णाविण सिरट्ठिना मे पीडं ण करेह । एवं भणंते गंतव्वं ॥५६८१॥

पुव्वभणितो व जयणा, भिक्खे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।

सत्तचेव य होति इहं, णाणत्तं णवरि कप्पम्मि ॥५६८२॥

पुव्वं भणिता सवट्ठसुत्तं थंडिल्लस्स प्रसति मत्तमेसु वोसिरित्तु बहति जाव थंडिल्लं, एवं वसभा
जयति । थंडिल्लमत्तगासति धम्मधम्मगाऽसण्णदेसेसु वोसिरति । इह कप्पे णाणत्तं ॥५६८२॥

तास्सिमो विही -

अग्गहणे कप्पस्स उ, गुरूणा दुविहा विराहणा नियमा ।

पुरिसऽद्धानं सत्थं, णाऊण ण वा वि गिण्हेज्जा ॥५६८३॥

जति छिण्णे अत्थिण्णे वा पंचे अद्धानकप्पं ण गेप्पुंति तो चउगुरूणा, भत्तादिप्रलंभे सुहियस्स
आयविराहणा, सुहस्ते वा कंदादो गेप्पेज्ज संजमविराहणा । अहंवा - सव्वे जइ संघयण-धिति-बलिया पुरिसा
अद्धानं वा जति एगदेवसियं दो देवसियं वा, सत्थं ति - जति सत्थे अत्थि भिक्खं पभूयं पुवल्लो भद्गो
सत्थगे कालभोईय कालट्ठाती य एवमादिणा णातुं छिण्णद्धाने वि ण गेप्पेज्ज ॥५६८३॥

सो पुण अद्धानकप्पो केरिसो घेत्तव्वो -

सक्कर-घय-गुलमीसा, खज्जूर अगंधिमा य तम्मीसा ।

सत्तुअ पिण्णाओ वा, घय-गुलमिस्से खरेणं वा ॥५६८४॥

सक्कराए घएण य, सक्कराभावे गुलेण वा घएण वा, एतेहिं मिस्सिया अगंधिमा घेप्पंति । अगंधिमा
णाम कयलया ।

अण्णे भणंति - मग्गहुविसए फलाण कयलकप्पमाणाओ पेंडीओ एकम्मि डाले बहुविक्रमो
भवति ताणि फलाणि खंडाखंडीण कयाणि घेप्पंति, तेमि प्रसति खज्जूरा घयगुलमिस्सा घिप्पति, एतेमि
असतोए सत्तुआ घयगुलमिस्सा घेप्पंति, अमति घयस्स खरसण्हगुलमिस्सो पिण्णाओ घेत्तव्वो ॥५६८४॥

एतेमि इमो गुणो -

थोवा वि हणंति खुहं, ण य तण्ह करंति एते खज्जंता ।

सुक्खोदणोवऽलंभे, समितिम दंतिकक चुण्णं वा ॥५६८५॥

पुव्वद कंठ । एरिअद्धानकप्पस्स अलंभे "सुक्खोदणो" - सुक्खकूरो, "समितिम" सुक्खमंडगा,
"दंतिकक" - अण्णेगागारं खज्ज । अहंवा - दंतिककं चुण्णो तंदुललोट्टो दंतिककाहणीय तंदुलचुण्णो, चुण्णगाह-
णातो खज्जगच्छो, एम दंतिककचुण्णो खज्जगच्छो वा घयगुलेण मिस्सिज्जति, मा संसज्जति । जति सुद्धं
नभंति तो अद्धानकप्पं ण भजति, जत्तिएण वा उणं सुद्धं तत्तियं अद्धानकप्पं भजति, अणुवट्ठाविषाण वा
दिज्जति अद्धानकप्पो ॥५६८५॥

इमं च गिण्हति -

तिविहाऽऽमयभेसज्जे, वणभेसज्जे य सप्पि-महु-पट्टे ।

मुद्धाऽमति तिपरिए, जा कम्मं णाउमद्धानं ॥५६८६॥

वात-पित्त-सिन्धवसहातो सण्णवातिषाण वा रोगातंकाणं भेसजा ओसहा वण-ओसहाणि य
गेण्हति, वणभंगट्ठा य घतमहु, वणबंघट्ठा य खीरपट्ठं गेण्हति । सव्वं पेयं सुद्धं मणियव्वं, असति सुद्धस्स
तिपरिरयजयणाए वणगपरिहाणीए जाव अहाकम्म वि गेण्हति, पमाणतो अट्ठाणकप्पं घोवं बहु वा भट्ठाणं
णाउं गेण्हति, गच्छप्रमाणं वा नाउं ॥५६८६॥

सभए सरभेदादी, लिंगविवेगं च कातु गीतत्था ।

खरकम्मिया व होउं, करेति गुत्ति उभयवग्गे ॥५६८७॥

जत्थ सभयं तत्थ वसभा सरभेयवणभेयकारिगुलियाहि अण्णो अण्णारिखं सरवणभेदं काउं, अह्वा-
रयोहरणादि दण्वलिंगं मोसुं गिहिलिंगं काउं जहा ण णउज्जति एते संजयं ति खरकम्मिया व सन्नद्धपरियरा
जहासंभवगहियाउघा होउं साहुसाहुणीउभयवग्गे गुत्तिरक्खं करेति ॥५६८७॥

किं च —

जे पुव्वं उवगरणा, गहिता अट्ठाण पविसमाणेहि ।

जं जं जोग्गं जत्थ उ, अट्ठाणे तस्स परिभोगो ॥५६८८॥

पुव्वद्धं कंठं । जं जोग्गं — जत्थ उदयगलणकाले जम्मकरगो, बहणकाले कावोडो उट्ठा, भिनखाय-
रियकाले सिक्कगा, विकरणकाले पिप्पल्लगो, एवमादि ॥५६८८॥

सुखोदणो समितिमा, कंजुसिणोदेहि उण्हविय भुंजे ।

मूलुत्तरे विभासा, जांततूणं णिग्गते विवेगो ॥५६८९॥

जो सुखोदणो गहिता, जे य समितिमादी खरा, एते उण्होदणं कंजिएण वा उण्हे गाहेता
सुईकरेत्ता भोत्तवा । “मूलुत्तरे विभास” ति अट्ठाणकप्पो मूलगुणोवघातो, अहाकम्मं उत्तरगुणोवघातो ।

किं अट्ठाणकप्पं भुंजउ ? अह अहाकम्मं लवभमाणं भुंजउ ?, अत्रोच्यते—“एत्थ दो प्रादेसा,
जम्हा कप्पो मूलगुणघातो, अहाकम्म उत्तरगुणघातो, तम्हा कम्मं लहुतरं भोत्तव्वं । जम्हा प्राहाकम्मं छण्हवघातो,
कप्पो पुण फासुभो । एत्थ वरं कप्पो, ण कम्मं” ॥५६८९॥

ओदगाह — “जो कप्पो प्राहाकम्मिभो तत्थ कहं दुदोसदुट्ठो” ?,

आचार्यं आह —

कामं कम्मं पि सो कप्पो, णिसिं च परित्रासितो ।

तहावि खलु सो सेयो, ण य कम्मं दिणे दिणे ॥५६९०॥

सर्वथा वरं अट्ठाणकप्प एव, न चाहाकम्मं, दिने दिने बहुसत्त्वोपपातित्वात् ॥५६९०॥

आहाकम्मं सईं घातो, सयं पुव्वहते सिया ।

जे ते तु कम्ममिच्छन्ति, निग्घीणा ते ण मे मता ॥५६९१॥

अट्ठाणकप्पे जं प्राहाकम्मं तत्र पूर्वहते सकृदेव जीवोवघातः (जे पुण) अट्ठाणकप्पं मूलगुणं ण
भंजति । “उत्तरगुणो ति” जे पुण प्राधाकम्मं भंजति दिने दिने ते अत्यंतनिष्ठंणा सत्त्वेषु, न ते मम सम्मता
संयमायतनं प्रति ।

“जतिऊणं णिमए विवेगो” ति एवं अट्ठाणे जतित्ता जाहे अट्ठाणातो णिमाता ताहे अमुलं भुण्डयिं वः अट्ठाणकणं विवेगो ति परिट्ठवेंति ॥५६९१॥ भट्ठगवयणे ति गयं ।

इदाणि “भिविखति” दारस्स कोति विसेसो भणन्ति -

कालुट्ठादीमादिसु, भंगेसु जतंति वितियभंगादी ।

लिंगविवेगोऽककंते, चुडलीओ भगओ अमए ॥५६९२॥

कालुट्ठादी कालनिवेसी, ठाणठाती कालभोती ।

एत्थ पडमभंगो सुद्धो । एत्थ भंगजयणा णत्थि ।

वितियभंगादिसु जयंति-तत्थ वितियभंगे अकालभोती, तत्थ सलिंगविवेगं काउं राओ परलिंगेण णिहंति ।

तत्थि-वउत्थभंगेसु अ ठाणठाती तत्थ जयंति, अं गोणादीहि अककंतेट्ठाणं मासि तहि ठायति ।
वउत्थभंगे लिंगविवेगेण भत्तादि णेहंति, गोणादिअककते य ठायति ।

पंचमादिभंगेसु चउसु “चुडली” संथारभूमादिसु बिलादि जोइउं ठायंति ।

णवमादिसोलसंतेसु अट्ठभंगेसु अकालट्ठातीसु रातो गमणमगतो “अमए” ति जति वण्णंतायं भंगतो” ति पच्छतो अमयं तो पच्छतो ठिता जयंति । एसा भंगजयणा ॥५६९२॥

पुवं भणिता जतणा, भिक्खे भत्तद्ध वसहि थंडिल्ले ।

सच्चेव य होति इहं, जयणा तत्थिम्मि भंगम्मि ॥५६९३॥

संवट्ठमुत्तादिसु बहुतो भणिया जयणा ।

अह्वा - णवगणिवेसे जहा भिक्खुगहणं तहा कायब्बं भत्तट्ठाणं, अकालठातिस्स निअए पुरतो गंतुं समुत्तिंसति, जेण समुत्तिट्ठे सत्थो अमोत्ति, वसहिभज्जे सत्थस्स णिहंति, अथडिले मत्तासु जयंति, भत्तगासति पदेसेसु वि । अह्वा - तत्थिभंगे अथडिलाइम्मि सच्चेव जयणा जा संवट्ठमुत्ते सवित्थण भणिया ॥५६९३॥

सावय अण्णट्ठकडे, अट्ठा सयमेव जोति जतणाए ।

गोउलविउव्वणाए, आसासपरंपरा सुद्धो ॥५६९४॥

सावय ति अट्ठाणे जति सावयभयं होज्ज तो अण्णेहि सत्थिल्लएहि जा अण्णट्ठा कया भगणी तमत्तिथंति, तस्स य असति अण्णात्थकडे अर्णाणं धेतूणं कासुयदारएहि जावन्ति, अट्ठे ति जा सत्थिल्लएहि संजयट्ठाए कडा तं सेवंति, परकडमसति ति सयमेव अगणि अहूत्तरेण जयंति जोइजइणाए ति - कते कज्जे जोउलभणियजयणाए विज्जवेंतीत्यर्थः ॥५६९४॥

“गोउल” पञ्चाधं, अस्य व्याख्या -

सावय-तेण-परद्धे, सत्थे फिडिता ततो जति हवेज्जा ।

अंतिमवइया वेटिय, नियट्ठणय गोउलं कहणा ॥५६९५॥

अंतरा महादवीए सिधादिसावयतेगेहि वा सत्यो परदो. सव्यो दिसोदिसि गट्टो, साधू वि एककतो गट्टा, सत्थाओ फिडिया ण किं वि सत्थित्तलयं पससति, पयं च अज्जाणमाणा भीमादवि पवज्जेज्जा । तस्य वसभा मणिपुरोणा सेसा सवत्थामेण गच्छरक्खणं करेति जयणाए ताहे दिसाभागमपुणेता सवाल्लुगच्छस्स रक्खणट्टा वणदेवताए उस्सगं करेति, सा प्रागपिया दिसिभागं पयं वा कहेज्ज, सम्महिट्ठिदेवता वा अण्णोवदेसतो बइयाओ विउव्वति, ते साधू तं बइयं पासित्ता आससिया, ते साधू ताए देवताए गोउलपरंपरण ताव नीया जाव जणवयं पत्ता ताहे सा देवता अतिमवइयाए जाव उवगरणवेटियं वित्सरावेइ, तीए अट्टा साहुणो गियत्ता गोउमं व पेच्छति, वेटियं वेत्तुं पडिगया । गुरुणो कहेति - नत्थि ता वइयति, नायं जहा देवताए कय ति, एत्थ सुट्ठा चेव । नत्थि पच्छित्तं ॥५६६५॥

भंडी-बहिलग-भरवाहिएसु एसा व वण्णिया जतणा ।

ओदरिय विविचेसुं, जयणा इमा तत्थ नायव्वा ॥५६६६॥

विवित्ता कण्डिया, अट्ठावा-विवित्ता-पुसित्ता, सेसं कंठं ।

ओदरिए पत्थयणा, ऽसति पत्थयणं तेसि कंदमूलफला ।

अग्गहणम्मि य रज्जू, वल्लेति गहणं तु जयणाए ॥५६६७॥

भंडिबहिलगभरवाहणं असति आगाढे रायदुट्ठादिकज्जे उदरियादिसु वि सह गम्मेज्ज । तस्य ओदरिगेहि सह गम्ममाणे अट्ठाणकप्पादि ओदरिगादीण वि पत्थयणासति जाहे ते ओदरिया पत्थयण-खीणा, ताहे तेसि पत्थयणं कंदमूलफलादि, साहूणं ते च्चेव होज्ज ॥५६६७॥

“अग्गहणम्मि” पच्छद्धं, अस्य व्याख्या -

कंदादि अभुंजंते, अपरिणते सत्थियाण कहयंति ।

पुच्छा वेहासे पुण, दुक्खहरा खाइतुं पुरतो ॥५६६८॥

तत्थ जे अपरिणया ते णेच्छंति कंदादि भुज्जिउं, ताहे वसभा तेसि सत्थइल्लाणं कहेति ।

ते वसभा सत्थिल्लए भणंति - एते तहा बीहावेह, जहा खायंति ।

ताहे ते सत्थित्तया रज्जूओ वल्लति, अपरिणता पुच्छति । अपरिणयाण वा पुरतो साहू पुच्छति - कि एयाहि रज्जूहि ?

ताहे ते सत्थित्तया भणंति - अम्हे एकणावारुडा । अम्हे कंदादि ण खाइतं, अम्हे एताहि वेहाणसे उल्लवेहामो, इह्रा तेसि पुरओ दुक्खं खायामो ॥५६६८॥

इह्रा वि मरति एसो, अम्हे खायामो सो वि तु भएणं ।

कंदादि कज्जगहणे, इमा उ जतणा तहिं होति ॥५६६९॥

सो कंदादि अखायंतो इह भववीए भवत्स नेव मरइ तहा तं मारेत्ता अम्हे सुहं चेव खायामो । सो य अपरिणमो एयं सोखा भया खायति, एवमादिकज्जे कंदादिगहणे इमा जयणा ॥५६६९॥

फासुगजोणि.....गाहा	॥५७००॥
बद्धट्टिए वि एवं.....गाहा	॥५७०१॥
एमेव होइ.....गाहा	॥५७०२॥
साहारण.....गाहा	॥५७०३॥
तुवरे.....गाहा	॥५७०४॥
पासंदणे.....गाहा	॥५७०५॥

‘एवं छ गाहाओ भाणियव्वो ।

एयाओ जहा प्रलंबसूत्रे, पूर्ववत् । असि वे त्ति गतं ।

इदाणि ओमे त्ति -

ओमे एसण सोही, पजहति परितावितो दिग्गिछाए ।

अलभंते वि य मरणं, असमाही तित्थवोच्छेदो ॥५७०६॥

ओमे अद्धानं पवजियव्वं ओमे अच्छंनो दिग्गिछाए परिताविओ एसणं पजहति । अहुवा - अलभंते भत्तपाणं मरति, असमाही वा भवति, असमाहिमरणे वा आराधइ, अण्णोणमरंतेसु य तित्थवोच्छेदो भवति, एते अगमणे दोसा ॥५७००॥

गमणे इमा पंथजयणा -

ओमोयरियागमणे, मग्गे असती य पंथजयणाए ।

परिपुच्छिअण गमणं चतुव्विहं रायदुडं तु ॥५७०७॥

जया ओमे गम्पति तदा पुव्वं मग्गेण गंतव्वं, असति मग्गस्स पपेण, तत्थ वि पुव्वं अच्छिअणो, पच्छा छिअणेण । गमणे विही सच्चेव जो असि वे । ओमे त्ति गतं ।

इदाणि “रायदुडे”, तं च उव्विहं वक्खमाणं ॥५७०७॥

१. पुनासत्कमूलभाष्यपुस्तकादर्श, टाइपग्रन्थितपुस्तकादर्श च “फासुग जोणि गाहा” तः आरभ्य “एवं छ गाहाओ भाणियव्वो” इत्यन्तः पाठः उपरिनिर्दिष्टरूपेण भाष्ये समुपलभ्यते । किन्तु चूणिकारेण “एयाओ जहा प्रलंबसूत्रे पूर्ववत्” इति सूचना विहिता, तदनुसारेण प्रलम्बसूत्राधिकारे तु गाथात्रयमेव, न तु गाथा षट्कम् । ताः खलु तिस्सो गाथास्वेताः -

फासुग जोणि परित्ते, एगट्ठि अबद्ध भिण्णअभिण्णे य ।

बद्धट्टिए वि एवं, एमेव य होति बहुवीए ॥३४६७॥

एमेव होति उवरि, बद्धट्टिय तह होति बहुवीए ।

साहारणस्स भावा, आदीए बहुगुणं जं च ॥३४६८॥

तुवरे फले य पत्ते, ख्वख-सिला-तुप्प-मइणादीसु ।

पासंदणे पवाते, आयवतत्ते वहे अवहे ॥३४७०॥

गाथाप्रसक्तोकेन स्फुटं प्रतिभाति - यत् “बद्धट्टिए वि एवं” ५७०१, साहारण ५७०३, पासंदण ५७०५, अङ्कमिता गाथाः “फासुगजोणि” ५७००, “एमेवहोइ” ५७०२, “तुवरे” ५७०४, अङ्कमितार्थं गाथानामुत्तरांशरूपा एव ।

सो पुण राया कहं पदुदो ? अत उच्यते -

ओरोहधरिसणाए, अन्भरहियसेहदिकसणाए य ।

अहिमर अणिदुदरिसण, बुग्माहण वा अणायारे ॥५७०८॥

ओरोहओ अंतपुरं, तं निगत्यमादिणा केणइ भापरिसियं ।

अहवा - तस्य रणो प्रन्भरहिओ सि भासणो कोइ सेहो दिक्खितो । अहवा - माधुवेसेण पहिमरा पविट्ठा ।

अहवा - स्वभावेण कोइ साधू अणिट्ठो, अणिट्ठं वा साधुदंसणं मण्णाति, मंतिमादीण वा बुग्मा-
हितो, वाए वा जितो, संजओ वा अगारीए समं अणायारं पडिसेवंतो दिट्ठो ॥५७०८॥

एवमादिकारणेहि पदुदो इमं कुज्जा -

णिच्चिसओत्ति य पढओ, चित्तिओ मा देह भत्त-पाणं से ।

तत्तिओ उवकरणहरो, जीविय-चरित्तस्स वा भेदो ॥५७०९॥

जेण रण्णा णिच्चिसया आणत्ता तस्य जति ५ गच्छति तो चउगुरुणं, अण्णं च आणाइककमे कज्जमाणे
राया गाढवरं हस्सति । एते पढमभेदे दोसा ॥५७०९॥

गुरुगा आणालोवे, बलियत्तरं कुप्पे पढमए दोसा ।

गेण्हंत-दंतदोसा, चितिए चरिमे दुविधमेतो ॥५७१०॥

जेण रण्णा रुट्ठेण गाम-गगरादिमु भत्तपाणं वारितं तस्य दंतान् गेण्हन्तान् वि दोसा, एते चित्ति-
वेसा । तत्तिए उवकरणहरो तस्य वि एते चेव । चरिमो ति चउत्थो तस्य दुविधभेददोसा जीवियभेद वा
करेज्ज, चरणभेवं वा । जग्हा अच्छंतान् एवमादी दोसा तग्हा गंतव्वं ॥५७१०॥

णिच्चिसयाण ताण तिक्खिं गमणं इमं -

सच्छंदेण य गमणं, भिक्खे भत्तट्ठणा य वसहीए ।

दारे ठिओ रुंभति, एगत्थ ठिओ व आणावे ॥५७११॥

“सच्छंदेण य गमणं भिक्खे” अस्य व्याख्या -

सच्छंदेण सयं वा, गमणं सत्थेण वा वि पुव्वुत्तं ।

तत्थुग्मातिसुद्धं, असंथरे वा पणगहाणी ॥५७१२॥

सच्छंदगमणं अण्णो इच्छाए, सयं ति चिणा सत्थेण वा गच्छति, तं च गमणं पुव्वुत्तं इहेव
असिबदारे ओहणिज्जुत्तीए वा । तस्य सच्छंदगमणे उग्मातिसुद्धं भत्तपाणं गेण्हंतो अच्छन्तु, सुद्धासति वा
असंथरे पणगपरिहाणीए जयता गेण्हन्तु ।

“दारे व ठिउ” त्ति-एयस्स विभासा - णिच्चिसयमाणत्तेसु भा एत्थेव जणवदे णिज्जुक्का
अच्छिंहति, ताहे पुरित्ते साहज्जे देति ।

ते पुरिसा भिक्खुगहणकाले भणंति - “तुम्हे पबिसह गामं णगरं वा भिक्खं हिडिता ततो चेव भोत्तुं यागच्छह, इह चेव अरट्ठिता उट्ठिक्खामो ।” ते तत्थ ठिया ओ ओ सावू एति त तं च णिरुं भति जावं सध्वे मिलिया ।

अहवा - ते रायपुरिसा एगत्थ सभाए देउले वा डिता भणंति - तुम्हे भिक्खं हिडिता इहं प्राणेह, अम्ह समीवे भुजह ति ॥५७१२॥

तिण्हेगतरं गमणं, एसणमादीसु होइ जइतव्वं ।

भत्तट्ठ ण थंडिल्ले, असति सोही व जा जत्थ ॥५७१३॥

“तिण्हेगतरं” ति - सच्छंदगमणं एक्को, दारे वं भति बित्तियो, इह प्राणेह ति तत्तिओ, एक्कणयरप्पगारेण गच्छमाणा एसणा । आदिसदातो जग्गमुप्पायणा य । तेसु विसुद्धं भत्तपाणं गेण्हति, भत्तट्ठ दोमु बिहिणा करंति । रायपुरिससमीवट्ठितेसु भयणा । थंडिल्लसामायारी ण हावेंति, रायपुरिससमीवट्ठितेहि वा कुरुकुयं करंति । सच्छंदं वसमाणा वसहिंसामायारि न परिहावति ।

अह रायपुरिसा भणेज्ज - “अम्हं समीवे वसियव्वं ।” तत्थ वि जहा विरोहलो ण हावेंति । अनादिमुद्धस्स असति पणगपरिहाणीए विमोधि अविमोधीए जयतस्स जा जत्थ अणतरदोसकोडी तं गेण्हति ॥५७१३॥

जे भणिया भद्वाहुकयाए गाहाए सच्छंदगमणाइया तिण्णि पगारा, ते चेव सिद्धसेणखमा-समणेहिं फुडतरा करंतेहि इमे भणिता -

सच्छंदेण उ एक्कं, वितियं अण्णत्थ भोत्तिहं मिलह ।

तत्तिओ धेत्तुं भिक्खं, इह भुंजह तीसु वी जतणा ॥५७१४॥

तिसु वि पगारेसु गच्छता तिसु वि जग्गमुप्पायणेसणासु जतंति, सत्तिं ण हावेंति । शेषं गतार्थम् ॥५७१४॥

अहवा - कोइ कम्मघणक्कलडो स्वचित्तिनिकुतिबंचनानुमानपरमविजृम्भादिद कुर्यात् -

सचित्तिज्जए व मुंचति, आणावेत्तुं च चोल्लए देति ।

अम्हुगमाइसुद्धं, अणुसट्ठि अणिच्छं जं अंतं ॥५७१५॥

सावूण भिक्खं हिडंताण रायपुरिसचित्तिज्जते जइ उत्तसंता अणेसणिज्जं पि गिण्हावेंति तत्थ ते पणावेज्जा - अम्ह उगमात्तिमुद्धं घेप्पति । अहवा - एगत्थ णिरुं भित्तं चोल्लए आणावेज्जा देति “एवं भुजह” ति ।

ताहे सो रायपुरिसो भणति - “अम्हे उगमाइ सुद्धं भुजेमो, ण कप्पइ एयं ।” एवं भणिमो जइ उत्तसंकाइ ताहे भिक्खं हिडंति, अणिच्छे अणुमट्ठो, घम्मकहालडो सो घम्मं कहेति, गिमित्तेण वा आउट्ठिज्जति, मंतजोएण वा वलीकज्जति, असति अणिच्छे य जं चोल्लगेसु प्राणीयं तत्थ जं अंतपंतं तं भुंजति ॥५७१५॥

अहवा -

पुव्वं व उवक्खडियं, खीरादी वा अणिच्छे जं देति ।

कमट्ठग भुत्ते सन्ना, कुरुकुयदुविहेण वि दवेणं ॥५७१६॥

सो रायपुरिसो भण्णति - “जं पुब्बरद्धं तं अम्ह चोत्सयेसु माणिज्जउ, दहिखीरादि वा आयाविज्जउ ।”

अहवा - चोत्सयेसु जं पुब्बरद्धं दहिखीरादि व भञ्जति, जइ पुब्बरद्धं दहिखीरादि वा नेच्छति आयावेत्तु ताहे सुद्धमसुद्धं वा जं सो देति तं भञ्जति ।

इमा भत्तट्टजयणा - कमदगेसु संतरं भुञ्जति, पिहिआयणेसु वा । सण्णं व वोसरित्ता फासुयमट्टियाए बहुदवेण य कुमकुयं करेति, दुविघेण वि दवेण अचित्तेण य सचित्तेण वि, पुब्बं सोणेण पच्छा ववहाएसचित्तेण ।

“असति सोधी य जा जत्थ” ति एयं पदं अण्णाहा भण्णति - जति जयणा संभवे अत्रयणं न करति, विमुद्धाहारे वा लब्धते असुद्धं भत्तट्ट, पंढित्तविहि वा न करेति, तो जा जत्थ सोही तमावज्जति । णिव्विसय सि गयं ।

इदानीं व्रित्तिभ्यो “मा देह भत्तपाण” ति अत्रोच्यते -

व्रित्ति ए वि होति जयणा, भत्ते पाणे अलम्भमाणे वि ।

दोसीण तक्क पिंडी, एसणमादीसु जइयव्वं ॥५७१७॥

पुब्बद्धं कठं । जाव जणो ण संवरति ताव सायुवेलाए दोसीणं तक्क वा गेण्हति, भिक्खवेलाए वा आयसपिंडी गेण्हति, ततो एसणाए चे अण्णतरा दोसा ततो उप्पायवाए ततो उग्गमेण अण्णतरदोसेसु जयति ॥५७१७॥

अहवा - इमा जयणा -

पुराणादि पण्णवेउं, णिसिं पि गीयत्थे होइ गहणं तु ।

अग्गीते दिवा गहणं, सुण्णघरे ओमरादीसु ॥५७१८॥

पुराणो सावगो वा गहियाणुव्वतो खेयणो पण्णविज्जति । सो पण्णविज्जो देवकुले बलिलवलेण ठावेइ, तं दिवा वेण्णइ, तारिसस्स असइ गीयत्थेसु रातो वि वेण्णति । अग्गीएसु दिवा गहणं, देवकुले सुण्णघरे असंतघरे वा अक्खणलक्खेण ओमरादीसु ठवियं ॥५७१८॥

उम्मर कोट्टिंवेसु य, देवकुले वा णिवेदणं रण्णो ।

कयकरणे करणं वा, असती णंदी दुविघदव्वे ॥५७१९॥

“कोट्टिंवे” ति - जत्थ गोभत्तं दिज्जति तत्थ गोभत्तलक्खेण ठवियं गेण्हति, जाव उवसामिज्जति राया ताव एवं जयणजुत्ता अण्णति । जति सव्वहा उवसामिज्जतो णोवसमति ताहे जो संजतो कयकरणो ईतत्थे सो तं बंधेउं सासेति, विउज्जावलेण वा सासेति, विउव्विणिविउत्तंरण्णो वा सासेति । जाहे कयकरणादियाण असति ताहे “णंदि” ति णंदी हरिसो, एसो तुट्टी, जेण दुविघदव्वेण भवति तं गेण्हति । दुविघदव्वं फासुयमफासुयं वा, परित्तमणत्तं वा, असण्णिहिं सण्णिहिं वा, एसणिज्जं अणेसणिज्जं वा । एवमादिभत्तपाणं पडिसेव ति ॥५७१९॥ मा देह भत्तपाणंति गयं ।

इदानीं उवकरणहरे ति -

तति ए वि होति जयणा, वत्थे पादे अलम्भमाणम्मि ।

उच्छुद्ध निप्पइण्णे, एसणमादीसु जतियव्वं ॥५७२०॥

१ गा० ५७०६ । २ गा० ५७१३ । ३ गा० ५७०६ ।

रणा पडिसिद्धं मा एतेसि कोइ देउज । एवं वत्थपादेसु अलङ्कममाणेसु इमा जयणा - जं देवकुसादिसु कण्ठिएसु उच्छुद्धं तं भिण्हति, विप्यरणं जं उक्कुसंडियादिसु ठितं एसणादिसु वा जतंति पूर्ववत् ॥५७२०॥

हितसेसगाय अस्ती, तण अगणी सिक्कगा य वागा य ।

पेहुण-चम्मगाहणे, भत्तं च पलास पाणिसु वा ॥५७२१॥

रणा हट्टेण सधूण उवकरणं हरितं, सेसं ति अण्णं गत्थि, ताहे सीतामिभूता तणाणि गेण्हेज्जा, अगणि गेण्हेज्ज, अगणि वा सेवेज्ज । पत्तगबंभाभावे सिक्कगद्विपादे काउं हि (डे) ज्ज, सत्तादि प (व) न्कतया पाउरणा गेण्हेज्ज, पेहुणं ति मोरंमया पिच्छया रयहरणट्टाणे करेज्ज, पत्थरण पाउरणं वा जह बोडियाण, चम्मयं वा पत्थरणपाउरणं गेण्हेज्ज, पलासपत्तिमादिसु भत्तं गेण्हेज्ज, अहवा - भत्तं कुंडगादिसु गेण्हेज्जा पलासपत्तेसु वा भुंजेज्ज । पाणीसु वा गह्णं भुंजणं वा ॥५७२१॥

अस्ती य लिंगकरणं, पण्णवणट्टा सयं व गहणट्टा ।

आगाढकारणम्मि, जहेव हंसादिणं गहणं ॥५७२२॥

पसति रण्णोवसमन्स, उवकरणस्य वा असति, ताहे परलिंगं करंति । जं रण्णो अणुमतं तेण सिंगेण ठिता ससमय-परसमयविद् वसभा रायाणं पण्णवेंति - उवसामेंतीत्यर्थः । तेन वा परलिंगेन ठिता उवकरणं स्वयमेव गृह्णन्ति, एयं चैव आगाढं । अण्णम्मि वा आगाढे जहेव हंसमादितेत्स्लाण गहणं दिट्ठं तहा इहं पि आगाढे कारणे वत्थ-पत्तादियाण गहणं कायत्वं । सोसोवण-तालुगवाडमाविह्मि अण्येन वाहि संप्रयोगेनेत्यर्थः ॥५७२२॥ उवकरणहृडे ति गयं ।

इदाणि भेदे ति -

दुविहम्मि भेरवम्मि, विज्जणिमित्ते य चुण्ण देवीए ।

सेट्ठिम्मि अमरुचम्मि य, एसणमादीसु जइयच्चं ॥५७२३॥

भेरवं भवानकं, तं दुविहं जीवियाधो चारित्ताधो वा ववरोवेति तं रायाणं पटुद्धं विज्जादीहि वसीकरेज्जा, निमित्तेण वा पाउट्टिज्जति, चुण्णेहि वा आधंसमादीहि वसीकज्जति । “देवी य” ति जा य तरस महादेवी इहा सा वा विज्जादीहि पाउट्टिज्जति, अहवा - खंतगो खंतिगा वा से जो वा रण्णो अणुवक्रमणिज्जो, जइ तेहि अण्णतो ठितं सुंदरं ।

यह ग ठाति ताहे सेट्ठिं अण्णति, अमरुचं वा, जइ ते उवसमेज्जा । अहवा - जाव उवसमइ ताव सेट्ठि-अमरुचंभाणं चवगहे अण्णति, जो वा रण्णो अणुवक्रमणिज्जो तस्स वा घरे अण्णति, एसणादिसु जयंति पूर्ववत् । पासंजणं (पासंडगणं) वा उवट्टावेज्जा, जइ गाम ते उवसमेज्ज अण्णज्जाहि अणुसासणादीहि ॥५७२३॥

आगाढे अण्णलिंगं, कालक्खेवो बहिं निगमणं वा ।

कतकरणे करणं वा, पच्छागण थावरादीसु ॥५७२४॥

अणुवसमंते एरिसे आगाढकारणे अण्णलिंगं करेति, तेण परलिंगेण तत्येव कालक्खेवं करेति, अणज्जमाणा विसयंतं वा गच्छंति, जाहे सव्वहा उवसामेज्ज ग तीरइ ताहे “कयकरणे करणं व” ति सहस्स-जोही तं सासेज्ज, अह तं पि गतिय ताहे “पच्छागणथावरादीसु” ति जाव पत्तादिज्जति ताव खल्लगहणेसु

अप्यार्णं पच्छादंति, पउमसरदिमु वा लिविकया मच्छति, अहवा - दिया एतेसु निलुक्कया मच्छति, राभो वच्चति । एवं रायहुद्वे जयति ॥५७२४॥

इदार्णि 'भयादिदारा -

बोहिग-मेच्छादिमए, एमेव य गम्ममाण जयणाए ।

दोण्हऽद्धा य गिलाणे, गाणादद्धा व गम्मंते ॥५७२५॥

“भयं” ति बोहियभयं, बोहिगा भालवादिमेच्छा, ते पव्वयमात्तेसु ठिया माणुसाणि हरंति । तेसि मया गम्ममाणे एवं चेव गमणं, जयणा य जहा असिवादिसु । भयमेवाभाढं । अहवा - किंचि उपपत्तिममागाढं, जहा भातापितिसण्णायणेणं संदिट्ठं - “इमं कुलं पव्वज्जमक्खमुक्खगच्छति जति तुमं प्रागच्छसि” अहवा - “गायच्छसि तो विप्परिणमंति अण्णम्मि वा सासणे पव्वयंति” एरिसे वा गतत्वं । गेलणवेज्जस्स वा ओसहाण य । उत्तिमद्वे य पडियरगो वितोहिकामो वा ।

णाणदंसणेसु सुत्तणिमित्तं । अहवा - अत्थस्स । अहवा - उभयस्स । चरित्तद्वा पुत्रभणिय । एवमादिकारणेसु पुत्रं मग्गेण, पच्छा अच्छिण्णपयेण, ततो छिण्णपयेण ॥५७२५॥

एत्थ एक्केक्के असिवादिकारणे -

एगापण्णं व सतावीसं च ठाण णिग्गमा जेया ।

एतो एक्केक्कम्मिं, सयग्गसो होइ जयणा उ ॥५७२६॥ पूर्ववत्

**जे भिक्खु विरूवरूडाइं दसुयायणाइं अणारियाइं मिलक्खूइं पच्चंतियाइं सति
लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥२६॥**

इमो सुत्तथो -

सग-जवणादिविरूवा, छव्वीसद्वंतयासि पच्चंता ।

कम्माणज्जमणारिय, दसणेहि दंसति तेण दसू ॥५७२७॥

सग-जवणादिपण्णण्वेसभासादिद्विता विविधरूवा विरूवा मगहादियाणं अद्विद्वीसाए प्रारिय-जणवयाणं, तेसि अण्णतरं ठिया जे अणारिया ते पच्चंतिया, प्राकट्टा दंतेहि दंसति तेण दसू, तेसि अणायतणा वासन्नो पल्लिमादी वा । हिसादिअकज्जकम्मकारिणो अणायरिया ॥५७२७॥

मिलक्खसूज्जवत्तभासी, संथरणिज्जा उ जणवया सगुणा ।

आहारोवहिसेज्जा, संथारुच्चारसज्जाए ॥५७२८॥

मिलक्ख जे मय्यत्तं अफुडं भासंति ते मिलक्खू । जहा रुद्धा तदा दुक्खं सण्णविज्जति दुस्सण्णपा । दुक्खं चरणकरणजातमाताउत्तिए धम्मो पण्णविज्जति दुप्पण्णवणिज्जा, रातो सव्वादरेण भुज्जति अकालपरिभोगिणो, रातो चेव पडिबुज्जति अकालपडिबोही, सदग्गे दुक्खं बुज्जति त्ति दुप्पडिबोहीणि । सति विज्जमाणे “लाढे”

१ या० ५६३० । २ आयरिय निब्बासन्नो पल्लिमादी वा इत्यपि पाठः ।

ति साधुणो भवन्ता, सगुणा जणवया संघरणिजा भवन्ति । ते पुण गुणा आहारो उवही सेजा संघारणो, अण्णो य बहुविहो । उवधी सततं भविरुद्धो लब्धमति, उच्चारपासवणभूमीओ य सति, सज्झावो मुज्झति । “विहराए” ति दप्पेण णो असिवादिकारणे, तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ॥५७२८॥

इमो णिज्जुत्तिवित्थारो -

आरियमणारिएसुं, चउक्कभयणा तु संकमे होति ।

पढमतिए अणुण्णा, वित्थियचउत्थाऽणुण्णाया ॥५७२९॥

आरितातो जणवयाओ आरियं जणवयं संकमइ, एवं चउभंगो कायव्वो, सेसं कंठ ॥५७२९॥

आरिय-आरियसंकम अद्वुक्खीसं हवन्ति सेसा तु ।

आरियमणारियसंकम, बोधियमादी मुणेतव्वा ॥५७३०॥

अद्वुक्खीसाए जणवयाणं अण्णतराओ अण्णतरं चेव आरियं संकमति तस्स पढमभंगो, आरियातो अण्णयरवोहिगविसयं संकमन्तस्स वित्थिओ ॥५७३०॥

अणारियारियसंकम, अंधादमिला य होंति णायव्वा ।

अणारियअणारियसंकम, सग-जवणादी मुणेतव्वा ॥५७३१॥

अंधादमिलादिविसयाओ आरियविसयं संकमन्तस्स तइओ, अणारियातो सगविसयाओ अणारियं चेव जवणविसयं संकमन्तस्स चउत्थो । एस खित्तं पडुच्च चउभंगो भणितो ॥५७३१॥

इमं लिंगं पडुच्च भणति -

भिक्षुसरक्खे तावस, चरगे कावाल गारलिंगं च ।

एते अणारिया खलु, अज्जं आयारभंडेण ॥५७३२॥

भिक्षूमादी अणारिया लिंगा, “अज्जं” ति आरियं, तं पुण आयारभंडयं रयोहरण-मुहोत्तिवा-ओलपट्टकए य पडिगहो समसो य ।

आयारभंडग एत्थ वि चउभंगो कायव्वो ।

आरियलिंगाओ आरियलिंगं एस पढमभंगो । एत्थ शेरकप्पातो जिणकप्पातिसु संकमं करेति । वित्थिओ कारणिओ, ततिए भिक्षुमादि उवसंतो, चउत्थे भिक्षुमादी सरक्खादीसु ।

अह्वा चउभंगो - आयरिओ आरियलिंगं संकमति भावणा कायव्वा ।

अह्वा चउभंगो - आरिएणं लिगेण आरियविसयं संकमति, भावणा कायव्वा । जो आरिएणं वि लिगेण अणारियविसयं संकमति, एत्थ मुत्तणिवतो । सेसं विकोवणट्ठा भणियं ॥५७३२॥

को पुण आरिओ, को वा अणारिओ ?

अतो भणति -

मगहा कोसंबीया, धूणाविसओ कुणालविसओ य ।

एसा विहारभूमी, पत्ता वा आरियं खेत्तं ॥५७३३॥

पुष्पेण मयहविसम्भो, दक्षिणेण कोसंबो, अक्षरेण भूगाविसम्भो, उत्तरेण कुणासाविसम्भो । एतेति मज्झं
आरियं, परतो अणारियं ॥५७३३॥

आरियविसयं विहरंताणं के गुणा, अतो भणति -

समणगुणविदुस्तथ जणो, सुलभो उवही सतंत अवरुद्धो ।

आरियविसयम्मि गुणा, णाण-चरण-गच्छवुद्धी य ॥५७३४॥

समणाणं गुणा समणगुणा । के गुणा ?, मूलगुण-उत्तगुणा । पंचमहन्त्रया मूलगुणा, उम्भगुणादेवता
अट्टारससीलंगसहस्ताणि य उत्तरगुणा । “विद-ज्ञाने” अमणगुणविदुः ।

कश्चासो ?, उच्यते - जनसुलभो उवधी ओहिओ उवभहिओ य ।

अस्मिन् तञ्जे - अवरुद्धो एसजिओ लब्धति, एवमादि गुणा आरिओसु । किं च णाणदंभ-
चरित्ताण विद्धी, नास्ति व्याधातः, गच्छवुद्धी य तस्य पक्वज्जंति सिक्खोपदाणि य गिण्हंति ॥५७३५॥

इमं च आरिए जणे भवति -

जम्भण-णिक्खमणेषु य, तित्थकराणं करेति महिमाओ ।

भवणवति-वाणमंतर- जोतिस-वेसाणिया देवा ॥५७३५॥

तं दट्ठं भव्वा त्रिबुज्जंति बुज्जयंति य, चिरपव्वइया वि चिरतरा भवति ॥५७३५॥

तित्थकरा इमं धर्मोपदेशादिकं आरिए जणे करेति -

उप्पण्णे णाणवरे, तम्मि अणंते पहीणक्कमाणो ।

तो उवदिसंति धम्मं, जगजीवहिंयाय तित्थगरा ॥५७३६॥

इमो समोसरणातिसम्भो -

लोगच्छेरयभूयं, उप्पयणं निवयणं च देवाणं ।

संसयवागरणाणि य, पुच्छंति तहिं जिणवरिंदे ॥५७३७॥

सण्णो बहु जुगवं ससए पुच्छंति, तेसि चैव जिणो जुगव चैव वागरणं करेति, तेहि आरियजणवए
जिणवरिंदे पुच्छंति ॥५७३७॥

एत्थ किर सन्नि सावग, जाणंति अभिग्गहे सुविहिताणं ।

एएहिं कारणेहिं, बहि गमणे होतउणुघाता ॥५७३८॥

एत्थ किर आरियजणवए, “किर” ति परोक्खवयणं, अविदयसम्पट्ठिओ सण्णो गहिंयाणुज्जतो
गवगो एते जाणंति “अभिग्गहे” ति, आहारोक्खसेज्जागहणविहाणं, तं जाणंता तथा देंति । अहंवा -
अभिगहो दन्वसेतकालभावेहिं तं जाणंता तहेव पडिपूरंति । जम्हा एते गुणा आरियजणवए तम्हा “बहि”
ति अणारियविसयं गच्छंताण चउगुणा ॥५७३८॥

चोदगाह -

सुत्तरस विसंवादो, सुत्तनिवातो इहं तु संकप्पे ।

चत्तारि छच्च लहुगुरु, सट्ठाणं चैव आवण्णे ॥५७३९॥

इह सोलसमुद्देशे सगे चउलहणाऽधिकारो - तुमं च अणारियविसयसंकमे चउगुरुं देसि, अतो मुत्तविसवातो ।

आयरिओ भणइ - तुमं मुत्तणिवातं ण याणसि । इह मुत्तणिवातो मणसंकप्पे चउलहुं, पदभेदे चउगुरुं, पंचमोइणोसु छलहुं, अणारियविसयपत्तेसु छगुमुं, संजमायविराहणाए सट्ठाणं । तत्थ संजमविराहणाए "छक्काय चउसु लहु" गाहा भावणिज्जा । आयविराहणाए चउगुरुं परितगणाई वा ॥५७३६॥

आणादिणो य दोसा, विराहणा खंदएण दिट्ठतो !

एवं ततियविरोहो, पडुच्चकालं तु णणवणा ॥५७४०॥

आयविराहणाए खंदगो दिट्ठतो -

दोच्चेण आगतो खंदएण वाए पराजिओ कुवितो ।

खंदगदिक्खा पुच्छा णिवारणाऽऽराय तव्वज्जा ॥५७४१॥

चंपा णाम णगरी, तत्थ खंदगो राया । तस्स भणिणी पुरंदरजसा उत्तरापये 'कु'भा-कारकडे णगरे डंडगिस्स रण्णो दिण्णा ।

तस्स पुरोहिओ मरुगो पालगो, सो य अकिरियदिट्ठो । अण्णया सो दूओ आगतो चंपं । खंदगस्स पुरतो जिणसाहुअवणं करोति । खंदगेण वादे जिओ, कुविओ, गओ स-णगरं । खंदगस्स बहं चितेतो अच्छइ ।

खंदगो वि पुत्तं रज्जे ठविस्ता मुणिमुव्वयसामिअंणि पंचसयपरिवारो पव्वतितो अघीय-मुयस्स गच्छो अणुणाओ ।

अण्णया भणिणीं दिच्छामि त्ति जिणं पुच्छति । सोवस्सगं से कहियं ।

पुणो पुच्छति - "आराहगो ण व ?" त्ति ।

कहियं जिणेणं - तुमं मोत्तुं आराहगा सेसा । गलो णिवारिज्जंतोऽवि ॥५७४१॥

सुतो पालगेण आगच्छमाणो -

उज्जाणाऽऽउह णूमेण, णिवकहणं कोव जंतयं पुव्वं ।

बंध चिरिक्क णिदाणे, कंबलदाणे रजोहरणं ॥५७४२॥

पालगेण अगुज्जाणे पंचसया आयुहाण ठविआ । साहवो आगया तत्थ ठिता । पुरंदरजसा दिट्ठा, खंदगो कंबलरयणेन पडिलाभितो । तत्थ णिसिज्जाओ कयाओ ।

पालगेण राया दुग्गाहितो । एस परिसहपराजिओ आगओ तुमं मारेउं रज्जं अहिद्वेहेति ।

कहं णज्जति ?, आयुधा दसिया ।

कुविओ राया, पालगो भणितो - मारेहि त्ति । तेण इक्खुजंतं कयं ।

खंदगेण भणियं - 'मं पुव्वं मारेहि ।' जंतसमीवे खंमे बधितं ठविओ, साहुं पीलित रुहिरचिरिक्काहिं खंदगो भरितो । खुडुगो आयरियं विलवंतो, सो वि आराहगो । खंदगेण णियाणं कतं ॥५७४२॥

अगिकुमारुववातो, चिंता देवीए चिण्ह रयहरणं ।

खिज्जण सपरिसदिक्खा, जिण साहर वात डाहो य ॥५७४३॥

अगिकुमारेसु उववण्णो ।

पुरंदरजसाए देवीए चिंता उववण्णा वट्ठति “साधुणो पाणमपढमालिवाणिमित्तं पागच्छति किं होज्ज” ? एत्थंतरे खंदगेण “सण्ण” त्ति — सकुलिकारूवं काउं रयहरणं रहिरालित्तं पुरंदरजसा-पुरतो पाडियं, दिट्ठं, सहसा अक्कंदं करेती उट्ठिया, भणिओ राया — पाव ! विणट्ठो सि विणट्ठो सि ।

सा तेण खंदगेण सपरिवारा मुणिसुव्वयस्स समोवं णीया दिक्खिया । खंदगेण संवट्ठ-गवायं विउव्वित्ता राघाणं सबलवाहणं पुरं च स कोहाविट्ठो वारसजोयणं खेतं णिड्डुहति । अज्ज वि डंडगारणं त्ति भण्णति ॥५७४३॥

जम्ह! एवमादी दोसा तम्ह! आरियातो अणारियं ण गंतव्वं ।

चोदमाह — “एवं ततियविरोहो त्ति — एवं वक्खाणिज्जते जं गाहामुत्ते ततियमंगो प्रणुण्णाओ, तं विरुक्कति ।

जइ अणारिएसु गमो णट्ठिय चम्मो वा, तो भिक्खुस्स अणारियाओ आरिएसु आगमो कहं ?,

आयरिओ भणइ — “सुत्ते णीयणकालं पडुच्च पढममंगं । ततियमंगो पुअ अणागओ मासिअमुत्तत्थेण संपइरायकुलं पडुच्च पणविज्जति ।

एत्थ संपइस्स उप्पत्ती —

कोसंबाऽऽहारकए, अज्जसुहत्थीण दमगपव्वज्जा ।

अव्वत्तेणं सामाइएण रण्णो धरे जातो ॥५७४४॥

कोसंबीए णगरीए अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य दोवि समोसडा । तथा य अवीयकाले साधूजणो य हिंडमाणो फव्वति ।

तत्थ एगेण दमएण ते दिट्ठा । ताहे सो भत्तं जायति ।

तेहिं भणियं — अम्हं आयरिया जाणंति ।

ताहे सो आगओ आयरियसगासं । आयरिया उवउत्ता, तेहिं णात — “एस पव्वयणउवगमे वट्ठिहित” त्ति । ताहे भणिओ — जति पव्वयसि तो दिज्ज भत्तं ।

सो भणइ — पव्वयामि त्ति । ताहे आहारकते सो दमगो पव्वावितो । सामाइयं से कयं, ते अतिसमुट्ठिओ । सो य तेण कालगयो । सो य तस्स अव्वत्तसामाइयस्स भावेण कुणालकुमारस्स अंवस्स रण्णो पुत्तो जातो ।

को कुणालो ? कहं वा अंधो ? त्ति —

पाडलिपुत्ते असोमसिरी राया, तस्स पुत्तो कुणालो । तस्स कुमारस्स भुत्ती उज्जेणी दिण्णा । सो य अट्ठवरिसो, रण्णा लेहो विसज्जितो — शीघ्रमधीयतां कुमारः । असंवत्तिअलेहे रण्णो उट्ठितस्स माइसव तीए कत्त “अधीयतां कुमारः” । सयमेव तत्तसलागाए अक्खी अजिया । सुतं रण्णा । गामो

१ गा० ५७४० । २ रयया इत्थपि पाठः । ३ अचियकालो इति बृहत्कल्प भा० सू० गा० ३२७१ ।

से दिण्णो । गंधव्वकलासिक्खणं । पुत्तस्स रज्जवरथो आगमो पाडलिपुत्तं । असोगसिरिणो जवणियंत-
रितो गंधव्वं करेति, आउट्ठो राया, मग्गमु जं ते अभिच्छित्तं ॥५७४४॥

तेण भणियं -

चंदगुत्तपुत्तो य, बिंदुसारस्स णत्तुओ ।

असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणिं ॥५७४५॥

उवउत्तो राया, णातो कि ते अंधस्स कागिणीए ? कागिणी=रज्ज्वं ।

तेण भणियं - पुत्तस्स मे कज्जं । संपति पुत्तो वि त्ति । आणेहि तं पेच्छामो, आणियो,
मंवट्ठिमो, दिण्णं रज्जं ! सब्बे पच्चंता विसया तेण उयविया विक्कंतो रज्जं भुज्जइ ॥५७४५॥

अण्णया -

अज्जमुहत्थाऽऽगमणं, दट्ठुं सरणं च पुच्छणा कहणं ।

पावयणम्मि य भत्ती, तो जाया संपत्तीरण्णो ॥५७४६॥

उज्जेणीए समोसरणे अणुजाणे रहपुरतो रायंगणे बहुसिस्सपरिवारो आलोयणठित्तेण
रणा अज्जमुहत्थी आलोइओ, तं दट्ठूण जाती संभरिया, आगतो गुरुसमीवं ।

धम्म सोउं पुच्छति - अहं मे कहिं चि दिट्ठपुक्खो ?, पुच्छति य - इमस्स धम्मस्स कि
फलं ?, गुरुणाऽभिहितं सग्गो मोक्खो वा ।

पुणो पुच्छइ - इमस्स सामाइयस्स कि फलं ?,

गुरु भणइ - अक्खतस्स सामाइयस्स रज्जं फलं । सो संभंतो भणाति सच्चं ।

ताहे सुहत्थी उवउज्जिअण भणति - “दिट्ठिल्लमो त्ति ।” सब्बं से परिकहियं । ताहे सो
पवयणभत्तो परमसावगो जातो ॥५७४६॥

जवमज्जं मुरियवंसो, दारे वणि-विदणि दाणसंभोगो ।

तसपाणपडिक्कमओ, पभावओ समणसंघस्स ॥५७४७॥

चंदगुत्तातो बिंदुसारो महंततरो, ततो असोगसिरी महंततरो, ततो संपत्ती सब्बमहंतो,
ततो हाणी, एवं मुरियवंसो जवागारो, मज्जे संपइ - आसी ।

“दारे” त्ति अस्य व्याख्या -

उदरियमओ चउसुवि, दारेसु महाणसे स कारेति ।

णिताऽऽणिते भोयण, पुच्छा सेसे अमुत्ते य ॥५७४८॥

पुक्खभवे ओदरिओ त्ति पिडोलगो आसि, तं संभरित्ता णगरस्स चउसु वि दारेसु सत्त-
कारमहाणसे कारवेति, णितो पविसंतो वा जो इच्छइ सो सब्बो भुज्जति, जं सेसं उव्वरति तं
महाणसियाण आभवति ।

ताहे राया ते महाणसिए पुच्छति - जं सेसं तेण तुब्भे कि करेह?,

ते भणंति - धरे उवउज्झति ॥५७४६॥

ताहे राया भणति - जं सेसं - अंभुत्तं तं तुब्भे -

साहूण देह एयं, अहं मे दाहेमि तत्तिगं मोल्लं ।

णेच्छंति धरे पेत्तुं, समणा मम रायपिंडो त्ति ॥५७४६॥

एवं महाणसिता भणिता देति साधूणं ।

“वणि-विवणि-दाणि” त्ति अस्य व्याख्या -

एमेव तेल्ल-गोलिय, -पूवीय-मोरंड दूसिए चेव ।

जं देह तस्स मोल्लं, दलामि पुच्छा य महगिरिणो ॥५७५०॥

वणिति - जे णिच्चट्ठितः बवहरंति, “विवणी” त्ति जे विणा भावणेण उव्वट्ठिता वाणिज्जं करेंति ।

अहंवा - विवणि त्ति अवाणियगा ।

रण्या भणिया - तेल्लविकिक्कणा साधूणं तेल्लं देज्जह, अहं मे मोल्लं दाहामि । एवं “गो (कु) लिय त्ति” महियविककया, पूवलिक्कादि पूविगा, तिलभोदगा मोरंडविककया, वत्थाणि य दोसिया । पच्छद्धं कंठं ।

“संभोगो” त्ति एवं पभूते किमिच्छए लब्धमाणे महागिरी अज्जसुहृत्थी पुच्छति - अज्जो ! जाणसु, मा अणेसणा होज्जा ॥५७५०॥

ताहे -

अज्जसुहृत्थि ममचे, अणुरायाधम्मतो जणो देति ।

संभोग वीसुकरणं, तक्खण आउंटण-णियत्ती ॥५७५१॥

अज्जसुहृत्थी जाणंतो वि अणेसणं अप्पणो सीसममत्तेणं भणइ - अणुराया धम्माओ जणो जति त्ति - रायाणमणुवत्तए जणो, जहा राया भइओ तहा जणो वि, राजानुवर्तितो धर्मअ भविष्यतीत्यतो जनो ददाति” । एवं भणंतो महागिरिणा अज्जसुहृत्थीण सह संभोगो वीसुं कओ, विसंभोगकरणमित्यर्थः ।

ताहे अज्जसुहृत्थी चित्तेइ - ‘अए अणेसणा भुत्त’ त्ति, तक्खणमेव आउंटो संभुत्तो, अक्कप्पसेवणाओ य णियत्ती ॥५७५१॥

सो रायाऽव्वंतिवत्ती, समणाणं सावओ सुविहियाणं ।

पच्चंतियरायाणो, सव्वे सदाविता तेणं ॥५७५२॥ ॥अ॥

अव्वंतीजणवए उज्जेणीणगरी -

कहितो तेसि धम्मो, वित्थरतो गाहिता च सम्मचं ।

अप्पाहियाय बहुसो, समणाणं सावगा होइ ॥५७५३॥ ॥अ॥

अणुयाणे अणुयासी, पुष्कारुहणाह उक्खिरणगाई ।

पूर्य च चेतियाणं, ते वि सरज्जेसु कारेति ॥५७५४॥

अणुजाणं रहजत्ता, तेसु सो राया अणुजाणति, भड्चडमसहितो रहेण सह हिडति, रहेसु पुष्कारुहणं करेति, रहग्गतो य विविधफले खज्जगे य कवहुगवत्थमादी य उक्खिरणे करेति, अनेसि च चेइयघरट्टियाणं चेइया पूर्य करेति, ते वि रायाणो एवं चेव सरज्जेसु कारावेति ॥५७५४॥

इमं च ते पच्चंतियरायाणो भणति -

जति मं जाणह सामि, समणाणं पणमथा सुविहियाणं ।

दव्वेण मे ण कज्जं, एयं सु पियं कुणह मज्झं ॥५७५५॥

गच्छह सरज्जेसु, एवं करेह ति ॥५७५५॥

वीसज्जिता य तेणं, गमणं घोसावणं सरज्जेसु ।

साधूण सुहविहारा, जाया पच्चंतिया देसा ॥५७५६॥

तेण संपइणा रण्णा विसज्जिता, सरज्जाणि गंतुं अमाघातं घोसंति, चेइयघरे य करंति, रहजाणे य । अंवदमिलकुडकमरहट्टता एते पच्चंतिया, संपतिकालातो आरब्ध सुहविहारा जाता ।

संपतिणा साधू भणिया - गच्छह एते पच्चंतियविसए, विबोहेणा हिडह ।

ततो साधूहि भणियं - एते ण किंचि साधूण कप्पाकप्पं एसणं वा जाणंति, कहं विहरामो ? ॥५७५६॥

ताहे तेण संपतिणा -

समणभड्भावितेसुं, तेसुं रज्जेसु एसणादीहिं ।

साहू सुह पविहरिता, तेणं चिय मद्दगा ते उ ॥५७५७॥

समणवेसधारी भडा विसज्जिया, बहू, ते जहा साधूण कप्पाकप्पं तहा तं दरिसंतेहि एसणसुद्धं च भिक्खगहणं करेतेहि जाहे सो जणो भावितो ताहे साधू पविट्ठा, तेसि सुहविहारं जातं, ते य भद्दया तप्पभिई जाया ॥५७५७॥

उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो, स पत्थिवो णिज्जितसत्तुसेणो ।

समंततो साहुसुहप्पयारे, अकासि अंचे दमिले य घोरे ॥५७५८॥

उदिण्णा संजायवला, के ते?, जोहा, तेहि आउलो-बहुवस्ते इत्यर्थः । तेण उदिण्णाउलसेणं सिद्धा सेणा जस्स सो उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो । उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणत्तणतो चेव विपक्खभूता सत्तुसेणा ते निज्जिया जेण स पत्थिवो णिज्जियसत्तुसेणो सो अंचडविडाईसु अकासि कृतवान् सुहविहारमित्यर्थः ॥५७५८॥

जे भिक्खु दुगुत्थियकुलेसु असणं वा पाणं वा स्वाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥५७५९॥

जे भिक्खु दुग्गुच्छियकुलेसु वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥५०॥२८॥

जे भिक्खु दुग्गुच्छियकुलेसु वसहिं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥५०॥२९॥

जे भिक्खु दुग्गुच्छियकुलेसु सज्झमायं उद्दिंसइ, उद्दिंसतं वा सातिज्जति ॥५०॥३०॥

जे भिक्खु दुग्गुच्छियकुलेसु सज्झमायं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥५०॥३१॥

जे भिक्खु दुग्गुच्छियकुलेसु सज्झमायं पडिच्छइ, पडिच्छतं वा सातिज्जति ॥५०॥३२॥

चउलहुं, तेसि इमो भेदो सरूव च -

दुविहा दुग्गुच्छिया खलु, इत्तरिया होंति आवकहिया य ।

एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुन्वीए ॥५७५६॥

“इत्तरिय” ति -

सूयगमतगकुलाइं, इत्तरिया जे य होंति निज्जुहा ।

जे जत्थ जुंगिता खलु, ते होंति य आवकहिया तु ॥५७६०॥

इत्तरियति सुत्तणिज्जुहा - जे ठप्पा कथा । सलायपडिय ति आवकहिया, जे जत्थविसए जात्थाहि-
जुंगिता जहा दक्खिणावहे लोहकारकल्लाला, लाडेमु णडवरुं डचम्मकारादि । एते आवकहिया ॥५७६०॥

इमे य दोसा -

तेसु असणवत्थादी, वसही वा अहव वायणादीणि ।

जे भिक्खु मेण्हेज्जा, विसेज्ज कुज्जा व आणादी ॥५७६१॥

असणवत्थादियाणं गृहणं, वसहीए वा विसेज्ज पविसति, वायणादिसज्झमायं कुज्जा, तस्स आणादिया
दोसा ॥५७६१॥

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तहेव कुच्छा य ।

तेसि वि होति संका, सव्वे एयारिसा मण्णे ॥५७६२॥

सर्वसाधनो नीचेत्यादि अयसः, अभोज्यसंपदकं न कश्चित् प्रयजतीति एवं परिहाणी, अभोज्येमु
अस्मादिगृहणं दृष्ट्वा धर्माभिमुखा पूर्वप्रतिपन्नता वा विपरिणमते, श्रवणाकादिसमाप्ता इति बुधुप्पत्ता, जेसु वि
मेण्हेइ तेसि वि संका - सव्वे एयलिंगधारिणो एते “एयारिस” ति ग्रम्हे सरिसा ॥५७६२॥

इमो भववादी -

असिन्ने ओमोयरिए, रायदुहे भए व गेलण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, अयाणमाणे वि वितियपदं ॥५७६३॥

एतेहि असिन्नादिहं कारणेहि जया वेप्पति तदा पणपपरिहाणीए ॥५७६३॥

जाहे चउलहुं पत्तो ताहे इमाए जयणाए गेण्हति -

अण्णत्थ ठवावेउं, लिंगविवेगं च काउ पविसेज्जा ।

काउण व उवयोगं, अदिट्ठे मत्ताति संवरितो ॥५७६४॥

सो दुग्गुच्छितो असणवत्त्यादी अण्णसागारियं अण्णत्थ मुण्णघरादिमु ठवाविज्जति, तन्निम गते पच्छा गेण्हति । अहवा - रसोहरणाविउवकरणं अण्णत्थ ठवेतुं सरवलादिपरलिणं काउं जहा अयसादिदोसा ण भवन्ति तथा पविसिउं गेण्हति । अहवा - मज्झिमादी विअणकाले दिग्भावलोपणं काउं अण्णोण अदिस्सतो मत्तयं पत्तं वा वासकप्पमादिणा सुट्ठु आवरेत्ता पविसति गेण्हइ य, वत्थादियं पि जहा अविसुद्धं तथा गेण्हति, वसहि अण्णत्थ भलमत्तो बाहि सावयतेणभएमु वसहि गेण्हइज्ज, जहा ण णज्जति तथा वसति । सज्जायं ण करेति । रायदुद्धा-दिमु अग्निगमो अण्णसागारिए सज्जायभाणधम्मकहादी वि करेज्ज ॥५७६४॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढवीए णिक्खिवइ,
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३३॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा संथारए णिक्खिवइ,
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३४॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वेहासे णिक्खिवइ
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३५॥

पुढवि-तण-वत्थमातिमु, संथारे तह य होइ वेहासे ।

जे भिक्खू णिक्खिवती, सो पावति आणमादीणि ॥५७६५॥

पुढविगहणातो उव्वट्ठगादिभेदा दट्ठ्वा, दन्मादितणसंथारए वा, वत्थे, वत्थसंथारए वा, कंवादिफलहंसंथारए वा, वेहासे वा दोरणे उल्लंघेइ, एवमादिपाराण अण्णदरेण ओ णिक्खिवइ तस्स चउलहुं, तस्स आणादिया य दोसा, संजमायविराहणा य ॥५७६५॥

तत्थ संजमे -

तक्कंतपरोप्परओ, पलोड्डुल्लिणे य भेद कायवहो ।

अहि-मूसलाल-विच्छुय, संचयदोसा पसंगो वा ॥५७६६॥

मुण्णे भत्तपाणे चउरिदियाओ घरकोइलातो तक्केति, तं पि मज्जारा, एवं तक्कंतपरपारो डेण्हंतं वातादिबेसेण वा पलोड्डुल्लि छक्कायविराहणा, आयपरिहाणी य वेहासट्ठितं मूसगादिछिणे आयभेदो छक्कायवहो वा आयपरिहाणी य । एसा संजमविराहणा ।

इमा आयविराहणा -

अहिस्स मूसगस्स वा उस्सिचमाणस्स लाला पडेज्ज, पीससंतो वा विसं मूचेज्ज, विच्छुगाइ वा पडेज्ज, विसं वा मूचेज्ज, जे वा सण्णिहिंसंवा दोसा तत्थ वि णिक्खिस्से ते चेव दोसा, पसंगतो सण्णिहि पि दुवेज्जा ॥५७६६॥

કિં ચ જો મત્તપાણં ણિન્નિસવહ -

સો સમણસુવિહિયાણં, કપ્પાઓ અવિચિતો તિ ણાયન્વો ।

દસરાતમ્મિ ય પુણ્ણે, સો ઉવહી ઉવહતો હોતિ ॥૫૭૬૭॥

સમણકપ્પો તમ્મિ ઘવગથો ઘપગતઃ સમણકપ્પાતો વા ઘવચિમો, એવં ણિક્ષેવંતસ્સ દસરાતે ગતે જમ્મિ પાદે જં મત્તાદિ ણિન્નિસવહ તં ઉવહતં હોઈ, જો ય ઉવહી ણિન્નિસતા અન્નદ્વિ દસરાઈ ઘાઢિત્તેહિં સોવિ ઉવહતો મવતિ ॥૫૭૬૭॥

ઓવદ્ધપીઠફલ્લયં, તુ સંજયં ઠવિય મત્તપાણં તુ ।

સુવિહિયકપ્પાવચિતં, સેયત્થિ ચિવજ્જણ સાહુ ॥૫૭૬૮॥

સંધારાદિયાણં વંધે જો પનસસ્સ ણ મુવતિ સો વદ્ધો ણિક્ષિત્તમત્તપાણા ય જો સો સુવિહિયકપ્પાતો ઘવગતો, જો સેયત્થી સાહુ તેણ વજ્જેયન્વો, ણ તેણ સહ સંયોગો કાયન્વો ॥૫૭૬૮॥

હમો ઘવવાઓ -

વિતિયપયં મૈલ્લણે, રોહગ અદ્ધાણ ઉત્તિમદ્દે વા ।

એતેહિ કારણેહિં, જયણાણ ણિક્ષિવે મિક્સુ ॥૫૭૬૯॥

મિલાણકજ્જવાયદો ણિક્ષિવતિ, રોહો વા સંકુલસહીએ વેહાસે કરેતિ, અદ્ધાણે વા સાગારિણ મુંજમાણો ઉત્તિમદ્દવવળસ્સ વા કરણિજ્જં કરેતો ણિક્ષિવતિ ॥૫૭૬૯॥

એવમાદિકારણેહિં ણિક્ષિવંતો હમાણ જયણાણ ણિક્ષિવતિ -

દૂરગમણે ણિસિં વા, વેહાસે હરહા તુ સંધારે ।

ધૂમીણ ઠવેજ્જ વ ણં, ઘણવંધ અમિક્સુ ઉવઓગો ॥૫૭૭૦॥

દૂરં ગંતુકામો ણિસિં વા જં પરિવાતિજ્જતિ તં વેહાસે દોરથેણ ણિક્ષિવતિ. “હરહ” તિ પ્રાસણે ગંતુકામો પ્રાસણે વા કિંચિ લોચમાદિકાઝકામો તત્થ સંધારે ધૂમીણ વા ઠવેતિ, વકારો વિગમ્પે, જકારો પાલપૂરણ । તં પિ ઠવેતો ઘણં ખીરેણ વંધઈ, પિપીલિગમયા છગ્ગણાદીહિં વા લિપઈ, અમિક્ષણં ચ ઉવઓગં કરેતિ ॥૫૭૭૦॥

જે મિક્સુ અણ્ણતિત્થીહિં વા ગારત્થીહિં વા સદ્ધિં મુંજઈ, મુંજંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૩૬॥

જે મિક્સુ અણ્ણતિત્થીહિં વા ગારત્થીહિં વા સદ્ધિં આવેદિય પરિવેદિય મુંજઈ,

મુંજંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૩૭॥૩૭॥

અણ્ણઉત્પિયા તત્ત્વનિષાદિ વંધના, સ્થિતિયા ગારત્થા, તેહિં સદ્ધિં એગમાયણે ખોયણં એગુ-તિદિસિ-ટ્ટિતેસુ આવેદિયં, સમ્વદિસિટ્ટિતેસુ પરિવેદિયં, અહવા - ઘાઢ મર્યાદયા વેષ્ટિતઃ । દિસિવિદિસાસુ વિચ્છિદ્ધણ-ટ્ટિતેસુ પરિવેષ્ટિતઃ । અહવા - એગપતીણ સમંતા ઠિણસુ આવેષ્ટિતાઃ, દુમાતિસુ પતીસુ સમંતા પરિટ્ટિયાસુ પરિવેષ્ટિતઃ ।

ગિહિ-અણ્ણતિત્થિણ્ણહિં વ, સદ્ધિં પરિવેદીણ વ તમ્મજ્ઞે

જે મિક્સુ અસણાદી, મુંજેજ્જા આણમાદીણિ ॥૫૭૭૧॥

अण्णउत्थिण्हि समं भुञ्जति अण्णउत्थिवाण वा मज्जे ठितो परिवेद्धितो भुञ्जति, आणादिया दोसा, मोहसो चउलहुं पच्चित्तं ॥५७७१॥

विभामतो इमं -

पुव्वं पच्छा संयुय, असोयवाई य सोयवादी य ।

लहुगा चउ जमलपदे, चरिमपदे दोहि वी गुरुगा ॥५७७२॥

पुव्वसंयुया असोय-सोयवाति य, पच्छासंयुया असोय-सोय ति । एतेसु चउसु पदेसु लहुगा चउरी ति, जमलपदं वि कालतवेहि विसेसित्तं ति जाव चरिमपदं । पच्छासंयुतो सोयवादी तत्थ चउलहुगं तं कालतवेहि दोहि वि गुरुगं भवति ॥५७७२॥

थीसुं ते चिय गुरुगा, छल्लहुगा होंति अण्णतिथीसु ।

परउत्थिणि छग्गुरुगा, पुव्वावरसमणि सत्तइ ॥५७७३॥

एयासु चेव इत्थीसु पुरपच्छमसोयसोयासु चउगुरुगा कालतवेहि विसेसिता । एतेसु चेव अण्णतिथियपुरिसेसु चउसु छल्लहुगा कालतवविस्सिद्धा । एयासु चेव परउत्थिणीसु छग्गुरुगा । पुव्वसंयुयासु समणीसु छेदो, अवर ति पच्छसंयुयासु समणीसु अद्वम ति मूल ॥५७७३॥

अयमपरः कल्पः -

अहवा वि णालबद्धे, अणुव्वओवासए व चउलहुगा ।

एयासुं चिय थीसुं, णालसम्मे य चउगुरुगा ॥५७७४॥

णालबद्धेण पुरिसेण अणालबद्धेण य गहिताणुव्वतो वा सावणेण, एतेसु दोसु वि चउलहुगा । एयासुं चिय दोसुं इत्थीसु णालबद्धे य अविरयसम्महिद्धिम्मि एतेसु वि चउगुरुगा ॥५७७४॥

अण्णालदंसणिथिसु, छल्लहु पुरिसे य दिट्ठआमट्ठे ।

दिट्ठिथि पुम अदिट्ठे, मेहुणि भोती य छग्गुरुगा ॥५७७५॥

इत्थीसु अणालबद्धासु अविरयसम्महिद्धीसु दिट्ठाभट्ठेसु पुरिसेसु एतेसु दोसु वि छल्लहुगा, इत्थीसु दिट्ठाभट्ठासु पुरिसेसु अ अदिट्ठाभट्ठेसु 'मेहुणि ति माउलपिउ-स्सयधाता, मोइय ति पुव्वमज्जा, एतेसु चउसु वि छग्गुरुगा ॥५७७५॥

अद्धिट्ठाभट्ठासुं थीसुं संभोगसंजती छेदो ।

अमणुण्णसंजतीए मूलं थीफाससंबंधो ॥५७७६॥

इत्थीसु अदिट्ठाभट्ठासु संभोइय-संजतीसु य एयासु दोसु वि छेदो, अमणुण्ण ति असंभोइय-संजतीसु मूलं, इत्थीहि सह भुञ्जतस्स फासे संबंधो, आयपरोभयदोसा, दिट्ठे संकातिया य दोसा, जति संजतिसंतितो समुदेसो तो चउलहुं अधिकरणं वा ॥५७७६॥

पुव्वं पच्छाकम्मे, एगतरदुगुंछ उड्डुमुट्ठाहो ।

अण्णोण्णामयगहणं खद्धग्गहणे य अचियत्तं ॥५७७७॥

१ मेहुणि मामाकी तथा भूआ की लङ्की तथा साली (गत्नी की बहिन) ।

पुत्रकर्म-संज्ञतेण सह भोज्यं हृत्यपादादिमुहं करेइ, संज्ञतो भुंजिस्सइ ति अधिकतरं रंधावेति ।
पञ्चाकर्म "कोवि एसो" ति सत्तेलप्राणं करेज्ज, पच्छित्तं वा पडिबज्जेज्ज, संज्ञतेण वा भुत्ते अपहृत्पंते
अण्णं वि रंधिज्जा, संज्ञतो गिही वा एगतरं जुगुच्छं करेज्ज, विलिगभावेण वा उट्ठुं करेज्ज, अण्णेण दिट्ठे
उट्ठाहो भवति, कासादिरोगो वा संकमेज्ज, अधिकतरसङ्गेण वा अधिकतरं भवेज्ज ॥५७७७॥

एवं तु भुंजमाणं, तेहिं सद्धिं तु वणिण्वा दोसा ।

परिवारितमज्झगते, भुज्जंते लहुग दोस इमे ॥५७७८॥

परिवारितो जति भुंजइ तो वल्लहं ॥५७७८॥

इमे य दोसा --

परिवारियमज्झगते, भुंजंते सव्व होंति चउलहुगा ।

गिहिमत्तचहुगादिसु, कुरुकुयदोसा य उट्ठाहो ॥५७७९॥

मज्जे ठितो जणस्स परिवारियो जइ भुंजइ, अहवा -- समंता परिवारियो दोण्हं तिण्हं वा जइ
मज्झगयो भुंजइ, सव्वपागारेहिं चउलहुं, गिहिभायणे य ण भुंजियव्वं तत्थ भुंजतो आयारायो भस्सइ ।

"कंसेसु कंसापाएमु" -- सिलोमो ।

मत्तगचहुगादिसु य भुंजत्तस्स उट्ठाहो भवति, कजियदवेण य उट्ठाहो, इयरेण आउक्कायावराहणा,
बहुदवेण य कुरुकुयकरणेण उपिलावणादि दोसा, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा एतेहिं सद्धिं परिवेदिण वा ण
भुंजियव्वं ॥५७७९॥

चितियपद सेहसाहारणे य गेलण्ण रायदुट्ठे य ।

आहार तेण अट्ठाण रोहए भयलंभे तत्थेव ॥५७८०॥

पुव्वसंभुतो पच्छासंभुतो वा पुव्वं एगभायणो आसी, से तस्स णेहेण आगतो जति ण भुजति तो
विपरिणमति, अतो सेहेण समं भुंजति, परिवेदितोवि तेसागग्गु मा एतेसि सक्का भविससति -- "किं एस
अप्पसागारियं समुद्दिसति ति अग्गे बाहिं करोति" बाहिभावं गच्छे, अतो परिवेदितो भुंजति । साहारणं वा
लद्धं तं ण चेव भुंजियव्वं, अह कक्कळं प्रोमं ताहे वेत्तुं वीसुं भुंजति, अह दाया न देइ, ते वा न देंति, ताहे
तेहिं चेव सद्धिं परिवुडो वा भुंजति ।

गिलाणो वइ वेज्जस्स पुरतो समुद्दिसेज्ज, जयणाए कुरुकुयं करेज्ज ।

रायदुट्ठे रायपुरिसेहिं णिज्जंतो तेहिं परिवेदितो भुंजेज्ज ।

आहारतेणगेसु तेसि पुरयो भुंजेज्ज ।

अट्ठाणतेणसावयभया सत्थस्स मज्जे चेव भुंजति ।

रोहणे सव्वेसि एक्का वसहो होज्जा, बोहिगादिभए जगेण सह कंदगाइमु अच्छति, तत्थ तेसि पुरतो
समुद्दिसेज्ज ।

ओमे कहिंवि सत्तागारे तत्थेव भुंजंताण लभति, भायणेसु ण लभति तत्थेव भुंजेज्ज ।

सागारिए एक्को परिवेसणं करे चहुगाइमु संतरं संभुंजति, गाउं दुविहदवेण कुरुकुयं करेइ सव्वेसु
अहासंभवं । एस जम्हा ॥५७८०॥

जे भिक्षु आयरिय-उवज्झायाणं सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता इत्थेणं
अणणुणवेत्ता धारयमाणो गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्झइ॥५०॥३८॥

आचार्य एव उपाध्याय आयरिय-उवज्झायाणो भणति, केसिचि आयरियो केसिचि आयरिय-
उवज्झातो । अहवा - जहा आयरियस्स तहा उवज्झायस्स वि न संघट्टेज्जति । पातो सव्वाऽफरिस्सि ति
अविणतो । इत्थेण अणणुणवति - न हस्तेन स्पृष्ट्वा नमस्कारयति मिथ्यादुष्कृतं च न भाषते, तस्स वउलहुं ।
सेज्जासंथारगहणातो इमे वि गहिया -

आहार उवहि देहं, गुरुणो संघट्टियाण पादेहि ।

जे भिक्षु ण खामेति, सो पावति आणमादीणि ॥५७८१॥

आहारे ति - जत्थ मत्तमे भत्तं धारितं, उवहि ति - कप्पादी, सेसं कंठं ॥५७८१॥

कहं पुण संघट्टेति ?, भणति -

पविसंते णिक्खमंते, य चंक्रमंते व वावरंते वा ।

चेट्ठणिक्खणाऽऽउटण, पसारयंते व संघट्टे ॥५७८२॥

पवे वा चंक्रमतो विस्सामणाविवावारं करंतो, सेसं कंठं ॥५७८२॥

बोदगाह - "उत्तं आहारउवघिदेहस्स य अघट्टणं । संथारगभूमो किं ण संघट्टिज्जति ? को वा उव-
करणातिसंघट्टिएमु दोसो ?,

आचार्य ग्राह -

कमरेणु अबहुमाणो, अविणय परितावणा य इत्थादी ।

संथारगहणमआ, उच्छुवणस्सेव वति रक्खा ॥५७८३॥

कमेसु ति-पदेसु जा रेणू सा संथारगभूमोए परिसडति, उवकरणे वा लगति, अबहुमाणो अविणयो
य संघट्टिए कप्पो, अण्णं च उच्छुवणे रक्खियल्ले वति रक्खति - ण भंजणं देति, तस्स रक्खणे उच्छुवणं
रक्खितं चेव, एवं संथारगस्स असंघट्टणे गुरुस्स देहातिया दूरातो चेव परिहरिता । संजमायविराहणा य,
आयरियं च अवमण्णतेण संजमो विराहिओ ।

कहं ? जेण तम्मि चेव आणदंसणचरित्ताणि अधोणाणि -

"जे यावि मंदे ति गुरुं" वृत्तं ।

आयविराहणा - जाए देवयाए आयरिया परिगहिता सा विराहेज्ज, अण्णो या कोइ आयरिय
पक्खितो साधू उट्टेज्जा, तत्थ असंखडादी दोसा ॥५७८३॥

चित्थियपदमणप्पज्जे, ण खमे अविकोविते व अप्पज्जे ।

खित्तादोसणं वा, खामे आउट्टिया वा वि ॥५७८४॥

अणप्पज्जो सेओ वा अजाणंतो ण खामेति, आयरियं वा खित्तादिवितं सारवेंतो दित्तचित्तं वा
उवेज्ज संघट्टेज्जा, ओसणं वा "मं एए ओसणमिति परिभवति" ति उज्जमेज्जा, एवं आउट्टियाए वि संघट्टेज्जा
पच्छा समावेइ ॥५७८४॥

जे भिक्खु पमाणाइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥३६॥

गणणाए पमाणेण य, हीणतिरित्तं व जो धरेज्जाहि ।

ओहोवग्गह उवही, सो पावति आणमादीणि ॥५७८५॥

उवधी दुविहो — ओहोवही उवग्गहितो य । एक्केक्को तिविहो — जहण्णो मज्झिमो उवकोसो य । तत्थ एक्केक्के गणणपमाणं पमाणपमाणं च, तं हीणं अधिकं वा जो धरेति । तत्थ ओहो — सुत्तभणियं चउलहं । विभागतो — अण्णाअत्थेण उवधिणिष्कण्णं आरभयपरितावणादी दोसा, जम्हा एते दोसा तम्हा ण हीणा-तिरित्तं धरेयव्वं ॥५७८५॥

जिण-थेराणं गणणातिपमाणेण जाणणत्थं भण्णति —

दव्वप्पमाणगणणाइरेग परिकम्म विभूसणा य मुच्छा य ।

उवहिस्स य प्पमाणं, जिणथेर अधक्कमं वोच्छं ॥५७८६॥

जिणथेराणं इमं पायणिज्जोगपमाणं —

पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया ।

पडलाइ रयत्ताणं, च गुच्छओ पायनिज्जोगो ॥५७८७॥ कंथा

इमं जिणकप्पियाणं सरीरोवहिप्पमाण —

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती ।

एसो दुवालस विहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥५७८८॥ कंथा

इमं जहण्णमज्झिमसुक्कोसाण कप्पाण य प्पमाणं —

चत्तारि उ उवकोसा, मज्झिमगा जहण्णगा वि चत्तारि ।

कप्पाणं तु पमाणं, संडासो दो य रयणीओ ॥५७८९॥

संडासो त्ति कुंडडो, रयणि त्ति दो हत्था, एवं दीहत्तणेण, वित्थरेण दिवट्ठु रयणि । अहवा — जिणकप्पियाणं कप्पपरिमाणं दीहत्तणेण संडासो वित्थारेण दोणि रयणीओ, एस आदेसो वक्खमाणो ॥५७८९॥

इमं पत्तगबंधस्स पमाणप्पमाणं —

पत्ताबंधपमाणं, भाणपमाणेण होइ कायव्वं ।

जह गंठीम्मि कयम्मी, कोणा चउरंगुला होंति ॥५७९०॥

जं च समचउरसं तस्स जा बाहिरतो परिही तेण भायणप्पमाणेण पत्तगबंधो कायव्वो, जं पुण विसमं तस्स जा परिही महंततरी तेणप्पमाणेण पत्तगबंधो कायव्वो, अहवा — गंठीए कयाए जहा पत्तगबंध-कण्णं चउरंगुला भवंति — गंठीए अतिरित्ता भवंतीत्यर्थः ॥५७९०॥

इमं रयताणस्स पमाणप्पमाणं —

रयताणपमाणं भाणपमाणेण होइ निष्कण्णं ।

पायाहिणं करंतं, मज्जे चउरंगुलं कमह ॥५७९१॥

मज्झि त्ति - मुहंताओ मुहंताओ जहा दो वि अंता चउरंयुलं कमंति एयं रयताणप्पमाणं ॥५७८१॥

अहवा - जिणकप्पियस्स कप्पप्पमाणं इमं -

अवरो वि य आएसो, संडासो सोत्थिए निवण्णे य ।

जं खंडियं दढं तं, छम्मासे दुब्बलं इयरं ॥५७८२॥

आदेसो त्ति - प्रकारः । संडासो त्ति कप्पाण दीहप्पमाणं, एयं जाणुसंडासगातो आदत्तं पुते पढिच्छादेतो जाव बंधं एयं दीहत्तणं । सोत्थिए त्ति - दो वि बोधव्वकण्णे दोहि वि हत्थेहि वेत्तुं दो वि बाहुसीसे पावति ।

कहं ? उच्यते - दाहिणेणं वामं बाहुसीसं, एवं दोहं वि कलादीण हृदयपदेसे सोत्थियागारो भवति । एयं कप्पाण बोधव्वं ॥५७८२॥

एत्थ आएसेण इमं कारणं -

संडासखिड्डेण हिमाइ एति, गुत्ता अगुत्ता वि य तस्स सेज्जा ।

हत्थेहि तो गेण्हिय दो वि कण्णे, काऊण खंधे सुवई व भाई ॥५७८३॥

जिणकप्पियाण गुत्ता अगुत्ता वा सेज्जा होज्जा, ताए सेज्जाए उवकुडुप्रणिबिद्वस्स संडासखिड्डे सु गही हिपवातो वा आगच्छेज्ज, तस्स रक्खणट्ठाते, तेण कारणेण एस पाउरणविही, कप्पाण एयं पमाणं भणियं - "दो वि कण्णे" त्ति दो वि वत्थस्स कण्णे वेत्तुं निवण्णो गित्तणो वा सुवति भायति वा । सो पुण उवकुडुतो चेव अच्छइ प्रायो जग्गति य ।

केई भणांति - उवकुडुओ चेव गिहाइओ सुवइ ईतिमेत्तं ततियजाये ।

सो पुण केरिसं वत्थं गेण्हति ? जं "खंडियं" त्ति छिण्णं जं एवकातो पासाउ, तं च जं छम्मासं षरति जहण्णेणं तं दढं गेण्हति, "इयरं" त्ति जं छम्मासं ण षरति तं दुब्बलं ण गेण्हति ॥५७८३॥ एयं गच्छणिग्गयाणं पमाणं गतं ।

इदाणि गच्छवासीणं प्रमाणं प्रमाण-प्रमाणं च भण्णात्ति -

कप्पा आतपमाणा, अट्ठाइज्जा उ वित्थडा हत्थे ।

एवं मज्झिम माणं, उक्कोसं होति चत्तारि ॥५७८४॥

उक्कोसेण चत्तारि हत्था दीहत्तणेयं एयं पमाणं अणुगहत्थं धेराण भवति, पुहुत्ते वि छ अंयुला समाधिया कज्जति ॥५७८४॥

मज्झिमुक्कोसएसु दोसु वि पमाणेसु इमं कारणं -

संकुचित तरुण आतप्पमाण सुवणे ण सीतसंफासो ।

दुहतो पेल्लण थेरे, अणुचिय पाणादिरक्खी य ॥५७८५॥

तरुणभिक्खू बलवंतो, सो संकुचियपाओ सुवति, जेण कारणेणं तस्स ण सीतस्पर्शो भवति तेण तस्स कप्पा आयप्पमाणा । जो पुण वेरो सो खीणबल्लो ण सक्केति संकुचियपादो सुविजं तेण तस्स अहिवप्पमाणा

कप्पा कप्पति । “पेल्लणं” ति अकक्रमणं “दुहयो” ति — सिरपादातेसु दोसु अ पासेसु एवं तस्स सीतं ण भवति । सेहस्स वि अणुच्चिए सुवणविहिम्मि एवं चेव कप्पाण पमाणं कब्बति । अवि य पाणदया कया भवति, न मङ्गकप्पुल्या कीडासी पविसंतीति ॥५७६५॥

इमं पडलाण गणणप्पमाणं —

तिविधम्मि कालखेदे, तिविधा पडलाओ होंति पादस्स ।

गिम्ह-सिसिर-वासासुं, उक्कोसा मज्जिम जहण्णा ॥५७६६॥

जे दढा ते उक्कोसा, उडुब्बला मज्जिमा, दुब्बला जहण्णा, सेसं कंठं ।

गिम्हासु तिणिण पडला, चउरो हेमंति पंच वासासु ।

उक्कोसगा उ एए, एत्तो पुण मज्जिमे वोच्छं ॥५७६७॥

गिम्हासु चउ पडला, पंच य हेमंति छच्च वासासु ।

एए खलु मज्जिमा य, एत्तो उ जहन्नओ वुच्छं ॥५७६८॥

गिम्हासु पंच पडला, छप्पुण हेमंति सत्त वासासु ।

तिविहंमि कालखेए, पायावरणा भवे पडला ॥५७६९॥

तिन्नि वि गाहाओ कंठाओ कायव्वाओ ।

इमं रयोहरणं —

घणं मूले थिरं मज्जे, अग्गे मद्वजुत्तयं ।

एगगियं अम्भुसिरं, पोरायामं तिपासियं ॥५८००॥

हृत्थग्गहपदेसे मूल भण्णति, तत्थ घणं वेडिज्जति, मज्जंति रयहरणपट्टगो सो य दढो, मज्जमो वा मज्जंसी दढो, अग्गा दसाओ ताओ मद्वामो कायव्वाओ, एगगियं दुगादिखंडं न भवति, अम्भुसिरं ति रोमवहुलं न भवति, वेडियं अगुट्टपम्बेत्तं तिभागे तज्जायदोरेण बद्धं तिपासियं ॥५८००॥

भण्णति —

अप्पोल्लं मिउपम्हं, पडिपुण्णं हत्थपूरिमं ।

तिपरियल्लमणिस्सिट्ठं, रयहरणं धारए एगं ॥५८०१॥

अप्पोल्लं-अम्भुसिरमित्यर्थः, मृदुबलं, पडिपुण्णं प्रमाणतः बत्तीसंगुलं सह शिसेज्जाए, हत्थपूरिम-णिसेज्जाए तिपरियल्लं वेडिज्जति, “अणिसिट्ठं” ति उगगहा अणिसिट्ठं धरिज्जति ॥५८०१॥

उण्णियं उट्ठियं वावि, कंबलं पायपुच्छणं ।

रयणिप्पमाणमिचं, कुज्जा पोरपरिग्गहं ॥५८०२॥

उण्णिय-कंबलं उट्ठियकंबलं वा पायपुच्छणं भवति । रयणि ति हत्थो, तप्पमाणो पट्टगो ॥५८०२॥

संथारुत्तरपट्टो, अट्टाइज्जा य आयया हत्था ।

दोण्हं पि य वित्थारो, हत्थो चउरंगुलं चेव ॥५८०३॥

उण्णिघो संथारपट्टो, खोमिघो तप्पमाणो उत्तरपट्टो, सेसं कंठयं ॥५८०३॥

इमो चोलपट्टो -

दुगुणो चउगुणो वा, हत्थो चउरंस चोलपट्टो य ।

थेरजुवाणाणट्ठा, सण्हे धूलंमि य विभासा ॥५८०४॥

दढो जो सो दीहत्तणेण दो हत्था वित्थारेण हत्थो सो दुगुणो कतो समचउरंसो भवति, जो दढ-
दुब्बलो सो दीहत्तणेण चउरो हत्था, सो वि चउगुणो कम्पो हत्थमेसो चउरंसो भवति, एगुणं ति गणणप्पमाणे,
उण्णिघा एमा गिसिज्जा पमाणप्पमाणेन हत्तप्रमाणा तप्पमाणा चेव तस्स अंतो पच्छादणा खोमिया गिसेज्जा
॥५८०४॥

चउरंगुलं वितत्थो, एयं मुहणंतगम्स उ पमाणं ।

बीओवि य आएसो, मुहप्पमाणेण निष्फनं ॥५८०५॥

त्रितियप्पमाणं विकणकोणमहं गामिगमुहं पच्छादेति जहा किकाडियाए गंठी भवति ॥५८०५॥

गोच्छयपादट्ठवणं, पडिलेहणिया य होइ णायव्वा ।

तिण्हं पि उ पमाणं, वितत्थि चउरंगुलं चेव ॥५८०६॥ कंठा

जो वि दुवत्थ तिवत्थो, एगेण अचेलतो व संथरती ।

ण हु ते खिसंति परं, सव्वेण वि तिण्णि घेतव्वा ॥५८०७॥

जिणकप्पियाण गहणं, थेरकप्पियाण परिभोगं प्रति, जो एगेण संथरति सो एयं गेण्हति परिभुजति वा ।
जो दोहि संथरति सो दो गेण्हति परिभुजति वा, एवं ततिमो वि ।

जिणकप्पियो वा अचेलो जो संथरति सो अचेलो चेव अच्छति, एस अग्निग्गह्विसेसो भजिघो ।
एतेण अग्निग्गह्विसेसद्विण अधिकतरवत्थो ण हीलियव्वो ।

किं कारणं ? जम्हा जिणाण एसो घाणा, * जेण वि तिण्णि कप्पा घेतव्वा ।

थेरकप्पियाणं जइ घपाउएण संथरति तहाव तिण्णि कप्पा णियमा घेतव्वा ॥५८०७॥

कप्पाण इमो गुणो -

अप्पा असंथरंतो, निवारिओ होति तिहि उ वत्थेहिं ।

गिण्हति गुरू विदिण्णे पगासपडिलेहणे सत्त ॥५८०८॥

सीतादिना असंथरंतस्स तं असंथरणं वत्थपरिभोगेण निवारितं भवति । ते यं वत्थे गुरुणा घावरिएण
दिण्णे गेण्हति, पगासपडिलेहणं ति अचोरहरणिज्जे, उक्कोसेण सत्त गेण्हति ॥५८०८॥

इयं उस्तग्गतो, अववादियं च प्रमाणं -

तिण्णि कसिणे जहण्णे, पंच य दढदुब्बला य गेण्हज्जा ।

सत्त य परिजुण्णाइं, एयं उक्कोसयं गहणं ॥५८०९॥

कसिणं त्ति वण्णातो जुत्तप्पमाणा धम्ममसिणा, जेहि सविवा अंतरितो न दोसइ तारिसा, जहण्णेण तिण्णि गेण्हति । पंच ददुब्बले, परिजुणो सत्ता गेण्हइ ॥५८०६॥

भिण्णं गणणालुत्तं, पमाण-इंगाल-धूमपरिसुद्धं ।

उवहिं धारए भिक्खु, जो गणचित्तं न चित्तेइ ॥५८१०॥

भिण्णं त्ति अदसं सगलं न भवति, गणणप्पमाणेण पमाणप्पमाणेण य जुत्तं गेण्हइ । इंगालो त्ति रागो, धूमो त्ति दोसो, तेहि परिसुद्धं - न तेहि परिसंजतीत्यर्थः ॥५८१०॥ जो सामण्यभिवक्खु तस्सेयं वत्थप्पमाणं भणियं ।

जो पुण गणचित्तगो गणावच्छेदगादि तस्सिमं पमाणं -

गणचित्तगस्स एत्तो, उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य ।

सब्बो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महा (ज) णस्स ॥५८११॥

गणचित्तगो गणावच्छेदगो तस्स जहणमज्झिमुक्कोसो सब्बो वि मोहितो उवग्गहितो वा, महाजणो गच्छो ॥५८११॥

आलंबणे विसुद्धे, दुग्गुणो तिग्गुणो चउग्गुणो वा वि ।

सब्बो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महाणस्स ॥५८१२॥

आलंबति जं तं आलंबणं, 'त' दुविधं - दब्बे रज्जुमादो, भावे णाणादी । इह पुण भावे दुल्लभ-वत्त्वादिदोसे तत्थ जो गणचित्तगो सो दुग्गुणं पडोयारं तिग्गुणं वा चउग्गुणं वा, अहवा - जो अतिरित्तो मोहितो उवग्गहितो सब्बो गणचित्तगस्स परिग्गहो भवति, महाजणो त्ति गच्छो तस्स आवत्तिकाले उवग्गहकरो भविस्सइ ॥५८१२॥ गणणप्पमाणेति गयं ।

इदाणि अइरेगहीणे त्ति -

पेहा-उपेहकता दोसा, भारो अहिकरणमेव अतिरित्ते ।

एते हवंति दोसा, कज्जविवत्ती य हीणम्मि ॥५८१३॥

अतिरेग पडिलेहत्तस्स सुत्तादिपलिमथो, अपेहत्तस्स उवहिणिक्कणं, अपरिभोमे अनुपभोगत्वात् अधिकरणं भवति, हीणे पुण कज्जविवत्ति विणासो भवति ॥५८१३॥ हीणाइरित्ते त्ति गयं ।

इदाणि परिकम्मणे त्ति -

परिकम्मणे चउमंगो, कारण विही वित्तिओ कारणे अविही ।

णिककारणम्मि य विही, चउत्थो निक्कारणे अविही ॥५८१४॥

कारण अणुण विहिणा, सुद्धो सेसेसु मासिया तिण्णि ।

तव-कालेहि विसिद्धा, अंते गुरुगा य दोहि पि ॥५८१५॥

सुद्धो कारणे विहीए एस पडमंगो, एत्थ अणुणो त्ति परिकम्मे त्ति सुद्धो त्ति ण पच्छित्तं । सेसेसु तिसु भंगेसु पत्तेयं मासलहं । वित्तियभंगे कालगुरं । तत्तियभंगे तवगुरं । अंतिल्लो चउत्थमंगो तत्थ तवकालेहि

दोहि वि गुरु । परिकम्पयति वा सिक्कयति वा एगदं । एगसरा ङडी उज्जट्टणि घग्गरसिक्कणि य एसा भविही,
असकटगदुसरिया य विही ॥५८१५॥

इदानीं “विभूसा” ति -

उदाहडा जे हरियाहडीए, परेहि धोतादिपदा उ वत्थे ।

भूसाणिमित्तं खलु ते करेते, उग्घातिता वत्थ सवित्थरा उ ॥५८१६॥

“उदाहड” ति अगिया “हरिया हडिया” सुते । परेहि ति तेणगेहि जे धोताती पदा कता ते जति
अपणा विभूसावडियाए करेति तं जहा धोवति वा, रयति वा, घट्टेति वा, मट्ट वा करेति, विवरित्तरगेहि
वा रयति तस्स अउलहं । सवित्थरगहणातो धोतादिपदे करेत्तस्स जा आयविराहणा तासु जं पच्छित्तं तं च
भवति ॥५८१६॥

विभूसां करेत्तस्स इमो अभिप्पाओ -

मलेण घत्थं बहुणा उ वत्थं, उज्झाड्ढो हं चिमिणा भवामि ।

हं तस्स धोवमि करेमि तत्ति, वरं ण जोगो मलिणाण जोगो ॥५८१७॥

मलिनं वस्त्रं तेन बाण्डं विरूपो ह्यये, यस्माद्विरूपोऽहं ह्यये तस्मात्तस्य वस्त्रस्य धोतव्ये “तत्ति”
ति - जेण तं धोवति. गोमुत्तातिणा तं उदाहरामि, “वरं ण जोगो” ति - वरं मे अवत्थगस्स कप्पति
अच्छिउ, ण य मलिगेहि वत्थेहि सह संजोगो ॥५८१७॥ कारणे पुणे धोवतो सुद्धो ।

चोदगो भणाति - णणु धोवत्तस्स । “विभूसा इत्यीससंगो” सिलोगो ।

आयरिओ भणइ -

कामं विभूसा खलु लोभदोसो, तहावि तं पाहणतो ण दोसो ।

भा हीलणिज्जो इमिणा भविस्सं, पुण्विड्डिमादी इय संजती वि ॥५८१८॥

कामं चोदगभिण्यायस्स अणुमयत्थे, खलु अवधारणे, जा एसा विभूसा - एस लोभ एवेत्यर्थः, तहावि
तं वत्थं “मुविभूसितं” कारणे काऊण पाउरणे ण दोसो भवति ।

रायाइड्डिंमं जो इड्डिं विहाय पव्वइओ सो चित्ति - “मा इमस्स धव्वइजणस्स इहलोकपडि-
बट्ठस्स इमेहि मलिणवत्थेहि हीलणिज्जो भविस्सामि ति । एस सावसत्तो जेण तं तारिस्सं विभूतिं परिचज्ज
इमं अवत्थं पत्तो “किमणं तवेण पाविहिति” ति, एवं संजती वि हिडइ अच्छति वा गिच्चं पंडरपडपाउया
॥५८१८॥

ण तस्स वत्थादिसु कोइ संगो, रज्जं तणं चेव जहाय तेणं ।

जो सो उवज्झाइय वत्थसंगो, तं गारवा सो ण चणइ मोत्तुं ॥५८१९॥

जो सो इड्डिंमं पव्वतितो ण तस्स वत्थादिसु कोइ संगो ति वा बंधणं ति वा एगदं । कहं णज्जति
जहा संगो णत्थि ?, उचयते - जतो तेण रज्जं बहुगुणं तृणमिव जडं । सेसं कटं ॥५८१९॥ विभूसाति मयं ।

१ गा० ५७८६ । २ रूहकल्पे सू० ४५ । ३ विचित्तं इत्यपि पाठः । ४ दशवै० अ० ८ गा० ५७ ।
५ सूईभूयं इत्यपि पाठः । ६ किमणेण इत्यपि पाठः ।

इदानीं 'मुच्छ त्ति -

महद्दणे अप्पघणे व वत्थे, मुच्छिज्जती जो अविवित्तभावो ।

सइं पि नो भुंजइ मा हु भिज्जे, वारेति वण्णं कसिणा दुगा दो ॥५८२०॥

बहुमुल्लं अप्पमोल्लं वा अविवित्तभावो ति अभिसुद्धभावो, अविवित्तो - लोहिलमित्यर्थः । तं पद्धानवस्थं ण सयं भुंजति, जो घणं वारेइ परिभुंजतं तस्स पच्छित्तं, "कसिणा दुगा दो" त्ति, कसिण त्ति संपुष्णा, दुगा दो चउरो - चउपुरुमित्यर्थः ॥५८२०॥

वत्थे इमाणि मुच्छाकारणाणि -

देसित्तल्लं पम्हजयं मणुण्णं, चिरायणं दाइ सिणेहतो वा ।

लब्भं च अण्णं पि इमप्पभावा, मुच्छिज्जती एव भिंसं कुसत्तो ॥५८२१॥

देसित्तल्लं जहा पौड्वर्धनकं, पम्हजयं जहा पूरवुड्ढावारगो, सप्पं भूलं तदेस-परदेसं वा, मणस्स जं रुक्खइ तं मणुण्णं, चिरायणं आयसियपरंपरागयं, दाइति विकारार्थे जेण वा तं दिण्णं तस्स सिणेहतो ण परिभुंजति, इमेण वा अप्पच्छेजेण एयप्पभावाओ घणं पि लब्भामो एवं मुच्छाएण परिभुंजति, एवं त्ति एवं "भिंसं" अत्यर्थं कुत्तितं सत्त्वं यस्य भवति स कुसत्त्वो अल्पसत्त्व इत्यर्थः, एवं भिंसं कुसत्त्वो लोभं करोतीत्यर्थः ॥५८२१॥ वत्थे त्ति गतं ।

इदानीं पायं भणामि ; तस्स इमाणि दाराणि -

दव्वप्पमाणअतिरेग हीणदोसा तहेव अववादे ।

लक्खणमलक्खणं ति विह उवहि वोच्चत्थ आणादी ॥५८२२॥

को पोरिसीए काले, आकर चाउल जहण्ण जयणाए ।

चोदग असती असिव, प्पमाणउवओग छेदण मुहे य ॥५८२३॥

पमाणाइरेगवरणे, चउरो मासा हवति उग्घाया ।

आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमा-ऽऽयाए ॥५८२४॥

द्रव्यपात्रं, तस्य दुविधं प्रमाणं - गणणप्पमाणं पमाणप्पमाणं च । दुविहस्स वि पमाणस्स अतिरेगवरणे चउलहुगा । सेसं कंठया ।

गणणाते पमाणेण व, गणणाते समत्तओ पडिग्गहओ ।

पलिमंथ भरुड्डुग, अतिप्पमाणे इमे दोसा ॥५८२५॥

दुविहं पमाणं, तस्य गणणप्पमाणेण दो पादा - पडिग्गहो मत्तगो य । ग्रह एत्तो तिगादिमत्तिरित्तं धरेति तो परिक्कम्पण-रंमण पडित्तेहणादित्तु सुत्तत्थालिमंथो पद्धानं बहुतो भारो उह्ङ्कश्च जनहास्यो भवति - 'ग्रहो ! आरवाहिता इमे' ॥५८२५॥

‘दुष्पमाणाश्चित्ते वि इमे दोसा -

भारेण वेयणाते, अभिहणमादी ण पेहए दोसा ।

रीयादि संजमम्मि य, छक्काया भाणभेदम्मि ॥५८२६॥

भारो भवति, भारकतस्स य वेयणा भवति, वेयणाए य अहिंती गोणहत्थिमाइ ण पस्सति, ते अभिहणीज्जा, वडसालक्खणाणमाह वा न पेहइ, इरिवउत्तो वा न भवइ, अणुवउत्तो वा छक्काए विराहेज्ज, अणुवउत्तो वा भायणभेयं करेज्जा । ॥५८२६॥

इमे ‘अइरेगदोसा । “अइरेग” ति पमाणप्पमाणातो -

भाणप्पमाणगहणे, भुंजण गेलण्णभुंज उज्झमिता ।

एसणपेल्लण भेदो, हाणि अडंते दुविध दोसा ॥५८२७॥

भाजनं प्रप्रमाणं - भाणप्पमाणंति तं, अतिबुद्धं गेहति । तस्मि भरिए जइ सक्कं भुंजति तो हा(तो)देज्ज वा मारेज्ज वा गेलसं वा कुज्जा. अह ण भुंजति तो उज्झमिता ग्रहिकरणादी दोसा । भायणं भरेमि ति अलम्भमाणं एसणं पेलित्ता भरेति, भरिए अतिभारेण पच्चुप्पित्ता भजति, भायणेण विणा अप्पणो कज्जपरिहाणी, भायणट्ठा अडतस्स भायणभूमीजंतस्स दुविह ति - आयसंजमविराहणा दोसा भवति ॥५८२७॥

हीणदोसंति अस्य व्याख्या -

हीणप्पमाणवरणे, चउरो मासा हवंति उग्धाता ।

आणादिया य दोसा, विराहणा संजमा-SSयाए ॥५८२८॥

जं पडिभाहणमत्तगप्पमाणं भणियं ततो जति हीणं वरेति ततो पडिगहणे चउलहुं, मत्तगे मासलहुं ॥५८२८॥

किं चान्यत् -

ऊणेण ण पूरिस्सं, आकंठा तेण गेहती उभयं ।

मा लेवकडं ति ततो, तत्थुवओगं न भूमीए ॥५८२९॥

ऊणेणं ति प्रमाणतो एतेण भरिएण वि ण पूरेस्संति ण संपरिस्संति ताहे कण्णाकणि भरेति, उभयं ति कूरं कुसणं च, अहवा - भत्तं पाणं वा । तस्मि अतिभरिए मा पत्तबंओ लेवाडिस्सति ति - तदुवओणेण भूमीए उवओगं न करेति ॥५८२९॥

अणुवत्तस्स य इमे दोसा -

खाणू कंटग विसमे, अभिहणमादी ण पेहती दोसा ।

रीया पगलित तेणग, भायणभेदे य छक्काया ॥५८३०॥

अणुवत्तो खाणुणा दुक्खाविज्जति, कंटगेण वा विज्जति, विसमे जा पडति, मवादिजा वा अवि-
हणाति । एसा आयविराहणा । रीयादी संजमविराहणा कंठ्या ॥५८३०॥

१ गा० ५८२० द्वा० २ । २ गा० ५८२० । ३ गा० ५८२० ।

अह्वा इमे दोसा —

‘हीणप्पमाणधरणे, चउरो मासा हवन्ति उग्घायया ।

आणादिया य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥५८३१॥ कंठ्या

गुरुमाइयाण अदाणे इमं पच्छित्तं —

गुरु पाहुणए दुब्बल, बाले बुद्धे गिलाण सेहे य ।

लाभा-SSलाभऽदाणे, अणुकंपा लाभवोच्छेदो ॥५८३२॥

गुरुगा य गुरु-गिलाणे, पाहुण-खमण य चउलहू होंति ।

सेहम्मि य मासगुरु, दुब्बल जुव (य) ले य मासलहुं ॥५८३३॥ कंठ्या

गुरुमादियाण इमा विभासा —

अप्प-परपरिच्चाओ, गुरुमादीण तु अदेत-दंतस्स ।

अपरिच्छित्ते य दोसा, वोच्छेदो णिज्जराऽलाभो ॥५८३४॥

डहरभायणभरियं गुरुमादियाण जति देति तो अप्पा चत्तो, अह ण देति तो गुरुमादिया परिचत्ता ।
दुब्बलो सभावतो रोगतो वा न तरति हिडिउ तस्स दायव्वं ।

“लाभाऽऽलोभ” ति अस्य व्याख्या — “अपरिच्छित्ते य दोसा”, जस्स हीणप्पमाणं भायणं सो
लेत्तपडित्तेहणे पयट्ठितो, स तेण खुडुलगेण भायेण किहू लाभं परिकलउ, ताहे जे अपरिक्खित्ते लेत्ते दोसा, ते
मंदपरिक्खिए वि गच्छस्स य आगयस्स अलभन्ते जं असंयरणं जा य परिहाणी सा सव्या खुडुलभाणगाहिणो
भवति, अदाणे वा पवण्णाण संखडी होज्जा तत्तय पज्जत्तियलाभे लभमाणे किहि गेण्हउ ? तं भायणं येवेण
वेव भरियं ।

अह्वा — “अणुकंपलाभवोच्छेदो” ति — छिन्नादाणे वा कोइ अणुकंपाए वा जं जं अडिज्जति
तं भायणं भरेति, तत्तय गच्छसाधारणकरं भायणं उडुयेव्वं, हीणभायणे पुण अडिज्जते लाभस्स वोच्छेदो
णिज्जराए य अलाभो भवति ।

अह्वा — सट्ठाणंवि धयादिदब्बे लभमाणे खुडुलभायणेण लाभवोच्छेदं करेज्ज निज्जराए वा
अलाभं पावेज्ज ॥५८३५॥

इमे य डहरभायणे दोसा —

लेवकडे वोसट्ठे, सुक्के लग्गेज्ज कोडिए सिहरे ।

एते हवन्ति दोसा, डहरे भाणे य उड्डाहो ॥५८३५॥

तेण अतोव पाहुडियं ताहे तेण वोसट्ठं, तेण अतिपलोट्टमाणेण लेवाडिज्जति । अह्वा — मा येवं
भनं देहीति, ताहे सुक्कस्स चप्पाचप्पं भरेड, तं च सुक्कं भतं लग्गेज्ज अजिणं हवेज्ज । कोडियं ति चप्पियं
चपिज्जतं वा भजेज्ज, सुक्कभतस्स वा सिहरं करेत्तो भरेज्ज, तं जणो दट्ठं भणति — अहो ! असंतुट्ठा । पच्छदं
कंठं ॥५८३५॥

१ गायधमविका प्रतिभाति । २ गा० ५८३२ । ३ गा० ५८३२ ।

धुवणाऽधुवणे दोसा, बोसद्धंते य काय आतुसिणे ।

सुकखे लम्माऽजीरग कोडित सिह भेद उट्ठाहो ॥५८३६॥

बोसद्धंतेण षं सेवाहितं तं जति भोवति तो उम्मावणादी दोसा, यद्द ह भोवति तो रातीभोयणभंगो ।
अहवा - बोसद्धे पगलंते पुढवादी खक्कायविराघणा ।

अहवा - बोसद्धंते उसिणेण दग्धं प्रायविराहणा, पच्छदं गतायं । अपिज्जते उसिहरभरिणे
य बहि कोड ति उट्ठाहो, जम्हा एवमादी दोसा तम्हा जुत्तपमाण पादं घेतव्वं ॥५८३६॥

केरिसं पुण तं जुत्तपमाणं !, अत उच्यते -

तिणिण विहत्थी चउरंगुलं च भाण मज्झिमपमाणं ।

एतो हीण जहणं, अतिरेगतंरं तु उक्कोसं ॥५८३७॥

उक्कोसतिसामासे, दुगाउअद्धानमागओ साह ।

चउरंगुलऊणं भायणं तु पज्जत्तिथं हेट्ठा ॥५८३८॥

एयं चेव पमाणं, सविसेतंरं अणुग्गहपवत्तं ।

कंतारे दुब्भिकखे, रोहगमादीसु भतियव्वं ॥५८३९॥

एयाओ जहा पट्टुहंसणे तहेव ॥५८३९॥

“अववाय” ति अस्य व्याख्या -

अण्णाणे गारवे लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।

लहुओ लहुया गुरुगा, चउत्थ सुद्धे उ जाणओ ॥५८४०॥

पच्छा अववायं भणीहामि, जइ इमेहि धरेति तो इमं पच्छितं पच्छद्वगहियं जहसंखं - अण्णाणेण
मासलहुं, गारवेण चउलहुं, लुद्धस्स चउगुरुगा । असंपत्ती जाणणे दो वि सुद्धा ॥५८४०॥

तत्थ अण्णाणस्स वक्खणं -

हीणा-उतिरेगदोसे, अयाणमाणो उ धरति हीण-उहियं ।

पगतीए थोवभोई, सति लाभे वा करेतोमं ॥५८४१॥

पुब्बदं कंठं । इमं गारवस्स वक्खणं - पगतीए पच्छद्वं, पगती स्वभावो य, स्वभावतो चेव
थोवभोइ । अहवा - तव्वते वि ओमं करेति, वरं मे थोवाति ति जणवातो भविस्सइ ॥५८४१॥

इस्सरनिक्खंतो वा, आयरिओ वा वि एस उहरेणं ।

अतिगारवेण ओमं, अतिप्पमाणं इमेहिं तु ॥५८४२॥

ईसरो को वि एस जेण उहरेण भायणेण भिक्खं हिडइ, आयरियत्ते ण गारवेण वा उहरेमाणं
येप्पति ॥५८४२॥

अतिष्पमाणं इमेण गारवेण धरेद् -

अग्निगूहियबलविरिञ्चो, वेयावच्चं करेद् अहं समणो ।

बाहुबलं च अती मे, पसंसकामी महल्लेणं ॥५८४३॥

महल्लभायणे वेयावच्चं करेद् - एवं मे जाधू पससिस्सति, अहंवा - साहुजणो वा भणिस्सद् -
“एयस्स विसिट्ठं बाहुबलं जेण महल्लेण भायणेण भिक्खं हिद्द” ॥५८४३॥

‘लुद्धस्स व्याख्या -

अंतं न होइ देयं, थोवासी एस देह से सुद्धं ।

उक्कोसस्स व लभे, कहि धेच्छ महल्ल लोभेणं ॥५८४४॥

सुडलभायणे गहिए घरंगणे वि ठितं दट्ठु घरसामी भणति - “एयस्स अंतपंतभत्तं ण देयं” ।

अहंवा भणेज्ज - “एस थोवासी, जेण एस सुडलएणं गेण्हति” ।

अहंवा भणेज्ज - “एयस्स सुद्धं देह” । “सुद्धं” ति उक्कोसं, “शात्योदनपढमदोच्चंगादी सुद्धो चेव ।

महल्लं इमेण कारणेण गेण्हति - “उक्कोसं लभमाणं पभूतं सामण्यं वा समुदागियं लभमाणं
करय गेण्हिस्सामि” ति एवं लुद्धत्तणेण महल्लं गेण्हति ॥५८४४॥

“असंपत्ति” दारं चउत्थं, तस्स इमं वक्खणं -

जुत्तपमाणस्सऽसती, हिण-ऽतिरिचं चउत्थो धारेति ।

लक्खणजुतहीण-ऽहियं, नंदी गच्छद्दुता चरिमो ॥५८४५॥

पुव्वद्धं कंठं । “जाणगे” ति अस्य व्याख्या - लक्खणपच्छद्धं, जं लक्खणजुत्तं तं जाणगे हीणं वा
अहियं वा धरेति, णाणादिगच्छद्दुतिनिमित्तं ।

अहंवा - गच्छस्स उवग्गहकरं गंदीभायणं, “चरिमो” ति जाणगे सो धरेति न दोसो ॥५८४५॥
अववाए ति गयं ।

इदाणि “लक्खणमलक्खणे” ति दारं -

वद्धं समचउरंसं, होति थिरं थावरं च वण्णं च ।

हुंडं वायाइद्धं, भिक्खं च अधारणिज्जाइं ॥५८४६॥

वृत्ताकृति उच्छ्वनकुक्षिपरिधितुल्यं चतुरस्रं दृढं स्थिरं स्थावरं अप्रतिहारिकं एतेहि गुणेहि जुत्तं
धर्मा । अहंवा - अणोहि वि वण्णादिगुणेहि जं जुत्तं तं धर्मा, एयं लक्खणजुत्तं ।

इमं अलक्खणं - विसमसंठियं हुंडं अणिक्खणं तुप्पडयं वाताइद्धं जं च भिण्णं, एते अलक्खणा
॥५८४६॥

संठियम्मि भये लाभो, पतिट्ठा सुपतिट्ठिते ।

निव्वणे कित्तिमारोगं, वण्णद्धे णाणसंपया ॥५८४७॥

१ गा० ५८४० द्वा० ३ । २ व्यञ्जनादि । ३ गा० ५८४० द्वा० ४ । ४ गा० ५८४० द्वा० ५ ।

५ गा० ५८२० द्वा० ५ ।

हुंडे चरितभेदो, सबलंमि य चित्तविन्ममं जाणे ।

दुप्पुते खीलसंठाणे, गणे य चरणे य नो ठाणं ॥५८४८॥

पउमुप्पले अकुसले, सव्वणे वणमाइसे ।

अंतो बहिं व दड्ढे, मरणं तत्थ निहिसे ॥५८४९॥

सुसंठाणसंठाण भत्तादि लाभो भवति, जं पुत्तसगबवेण सुपइद्वियं तेण चरणे गणे आयविरादिपदे वा मुप्पतिद्वितो भवति । जस्स पातस्स वणे नत्थि तेण पातेण शिव्वणो भवति, किंती जसो य भवति, 'आरोणं' च से भवति । पवालसण्णिमेण वण्णेण जं अड्डं ति जुत्तं तेण णाणं भवति । जं हुंडं तेण चरित्तविराहणा भवति, मुखतरचरित्ताइयारा भवति । सबलं चित्तविन्ममं तेण चित्तविन्ममो चित्तादिचित्तो भवति । पुप्पमं भूले न सुपइद्वियं दुप्पुतं कोप्परागारं खीलसंठियं, एरिसे गणे चरणे वा ण यिरो भवति । अहवा — हिंडं तो चेव अच्यति ।

अंतो बहिं व दड्ढे, पुप्फगं भिण्णे य चउगुरु होंति ।

इयरन्धिण्णे लहुगा, हुंडादिसु सत्तय लहुओ ॥५८५०॥

हुंड सबले सव्वण, दुप्पुत वातिद्ववण्ण हीणे य ।

कीलसंठाणे वि य, हुंडाई होंति सत्तेते ॥५८५१॥

जं अंतो बहिं वा दड्ढं तत्थ मरणं गेलणं वा तं गेण्हते चउगुरु । पुप्फगमउक्के णाभिभिण्णे एवं चेव । इयरं ति — जं अण्णकुक्षिमादिसु भिण्णं तत्थ चउलहुं । हुंडे वाताइडे दुप्पुते खीलसंठाणे भवण्णइडे सबले सव्वणे एतेसु भासलहुं ॥५८५१॥ लवक्खणमलवक्खण ति गत ।

इदाणि “तिविहं उवहि” ति —

तिविहं च होति पादं, अहाकडं अण्ण-सपरिकम्मं च ।

पुव्वमहाकडगहणे, तस्सअसति कमेण दोण्णितरे ॥५८५२॥

तिविहं पादं — ताउयं दाहयं महियापायं च । पुणो एवकेक्कं तिविहं — अहाकडं अण्णपरिकम्मं बहुपरिकम्मं च । गहणकाले पुव्वं अहाकडं गेण्हियव्वं, तस्स असति अण्णपरिकम्मं, तस्स असति बहुपरिकम्मं ५८५२॥

इदाणि “वोच्चत्य” सि —

तिविहे परुवितम्मि, वोच्चत्ये गहण लहुग आणादी ।

छेदण-भेदण करणे, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५८५३॥

जो एस अहाकडाइयो गहणकमो भणिमो, एयाओ जं वोच्चयं विवरीयं गेण्हति ।

अहाकडस्स जोणं यकाजं जो अण्णपरिकम्मं बहुपरिकम्मं वा गेण्हति तस्स चउलहुं, अन्नं च उ सपरिकम्मे पादे वि छेयण-भेयणं तं करंतस्स जा य छेयण-भेयणादिगा आयविराहणा संजमविराधणा व पडमुद्देसगे भणिया, सव्वेव इहं अपरिसेसा सहारोवणाए भाणियव्वा ॥५८५३॥

१ रोणं वा से न भवति । २ गा० ५८२० डा० ६ । ३ गा० ५८२१ डा० ६ ।

बितियद्दारमाहा आदिदारे 'कोत्ति अस्य व्याख्या -

को गेण्हति गीयत्थो, असतीए पादकप्पिओ जो उ ।

उत्सग्ग-उववातेहिं, कहिज्जती पादगहणं से ॥५८५४॥

को पादं गेण्हति ? जो गीयत्थो सो गेण्हति । गीयत्थस्स भ्रमति जेण पादेसणा सुत्तयो गहिओ सो पादकप्पिओ गेण्हति । तस्स वि असति जो मेहावी तस्स पादेसणा उत्सग्गववाएहिं कहिज्जति, सो वा गेण्हति ॥५८५४॥

इदाणि "पोरिसि" त्ति -

हुंडादि एगबंधे, सुत्तत्थे करंतो मग्गणं कुज्जा ।

दुग्ग-तिगबंधे सुत्तं, तिण्हुवरिं दो वि वज्जेज्जा ॥५८५५॥

अं हुंडं आदिसदातो दुप्पुतं खीलसंठियं सबलं एगबंधं च, एताणि परिमुजंतो सुत्तत्थं करंतो अहाकडादि मग्गज्ज । अइ पुण दुग्गबंधणं तिगबंधणं वा पादं से, तो सुत्तपोरिसि काउं अत्थपोरिसि वज्जेत्ता मग्गति ।

अह पादं से तिगबंधणाओ उवरिं वउसु ठाणेषु बढं, एरिसे पादे दो वि सुत्तत्थपोरिसिओ वज्जेत्ता आदिच्छुदयाओ चेव आढवेत्ता मग्गति ॥५८५५॥ पोरिसि त्ति गयं ।

इदाणि "काले" त्ति दारं ।

अहाकडादियाणं कं केत्तियं मग्गियव्वं ?

चत्तारि अहाकडए, दो मासा हुंति अण्णपरिकम्मे ।

तेण परिमग्गिउणं, असती गहणं सपरिकम्मे ॥५८५६॥

चत्तारि मासा अहाकडं मग्गियव्वं, चउहि मासेहिं पुणोहिं तस्स अलाभे अण्णे दो मासा अण्णपरिकम्मे मग्गति, तेण परिमग्गिउणं त्ति अहाकडकालाओ परतः अण्णपरिकम्मे एनियं कालं मग्गति, एते छम्मासे बितियस्स वि अलभे ताहे सपरिकम्मे मग्गियव्वं ॥५८५६॥

केच्चिरं कालं ?, अत उच्यते -

पणयालीसं दिवसे, मग्गित्ता जा ण लब्भते तत्तियं ।

तेण परेण ण गेण्हति, मा पक्खेणं रज्जेज्जा ॥५८५७॥

पणयालीसं दिवसे बहुपरिम्मे गेण्हति, ततो परं न गेण्हति, जेण पण्यरसेहिं दिवसेहिं वरिसाकालो आस्सति । मा तेण पक्खकालेण परिकम्मेणं रंमणं रोहवणं च न परिवारिज्जति ॥५८५७॥ काले त्ति गयं ।

इदाणि "आकरे" त्ति । अहाकडं कहिं मग्गियव्वं ?, अत उच्यते -

कुत्तीय-सिद्ध-णिण्हग, -पवज्जुवासादिस अहाकडयं ।

कुत्तियवज्जं बितियं, आगरमादीसु वा दो वि ॥५८५८॥

कुत्तियावणे भगति, सिद्धं त्ति सिद्धपुत्तो जो पव्वतिउकामो कते उक्करोणे वाचाओ उप्पण्णो ताहे तं पडिग्गहणादि साधूणं देज्जा, णिण्हयस्स वा, एवं च समणस्स वा पासे लब्धति ।

समणोवासघो वा पडिमं करेजं घरं पक्खागघो पडिग्गहणं साधूणं देज्ज, अहाकइ एतेषु स्थानेषु प्राप्यते ।

अप्यपरिकम्मं कतरेषु प्राप्यते ? प्रश्नोच्यते “कुत्तियवज्जं बित्तिमं” — कुत्तियावणं वज्जेउं सिद्धपुत्ता-दिषु अप्यपरिकम्मं लब्धति । अहवा — “आगरमादीषु वा दो वि” त्ति अप्यपरिकम्मं ॥५८५८॥

कानि च तानि आगरमादीनि स्थानानि ? अतस्तेषां प्रदर्शनार्थं उच्यते —

आगर गदी कुडंगे, वाहे तेणे य भिक्खु जंत विही ।

कत कारितं व कीतं, जति कप्पति तु विप्पति अज्जो ! ॥५८५९॥

आगराड्डताण इमं वक्खाणं —

आगर पल्लीमादी, णिच्चुदग-गदी कुडंग ओसरणं ।

वाहे तेणे भिक्खे, जंतं परिभोगस्संसत्तं ॥५८६०॥

आगरो भिल्लपल्ली भिल्लकोट्टं वा, “नदि” त्ति जेषु गामनगरंतरेषु नदीओ साउएहि संतरिज्जंति णिच्चोदगातो, तासि चैव गदीणं कुलेषु जे वच्छकुडंगा तेषु वा विज्जंति तुदीओ, वाहतेणपल्लीषु वा, अहवा — वाहतेणा अडावि गच्छंता लाउए उदगं घेतुं गच्छंति, भिक्खट्ठा भिक्खयरो लाउयं गेण्हेज्ज, गुलजंतसालादिषु वा उस्सिचणट्ठा भत्ततेलादिआवणट्ठा वा लाउयं गेण्हेज्जा । एतेषु आगरादिषु जं लब्धति तं विधीए गेण्हति, अण्णं च जं एतेषु चैव परिभुज्जमाणं तं गेण्हति, जेण तं असंसत्तं भवति ॥५८६०॥

आगरादिषु ओभट्टं पुच्छियं च “कस्सेयं, कस्सट्ठा वा कयं” त्ति ।

स पुच्छितो भणाति — “कय कारिपच्छद” अस्य व्याख्या —

तुम्भट्ठाए कतमिणं, अन्नस्सट्ठाए अहव सट्ठाए ।

जो धेच्छति व तदट्ठा, एमेव य कीय-पामिच्चे ॥५८६१॥

तुम्भट्ठाए कयं वा, तुम्भट्ठाए वा कारितं, अण्णस्स वा साहुस्स भिक्खतरस्स वा सट्ठाए कयं ।

अहवा — सट्ठाए त्ति अण्णो सट्ठाए, अहवा — जो चैव गेण्हति तस्सट्ठाए कयं जावतिगमित्थयं । अहाकम्मे भणियं एवं कीयगडपामिच्चादिषु वि भणियव्वं ; अण्णो वि उगमदोसा जहासंभयं सोहेयव्वा, एसणदोसा य । जं सुद्धं तं वेप्पइ, असुद्धं तं वज्जेयव्वं ॥५८६१॥ आगर त्ति गयं ।

इदानीं “चाउले” त्ति —

चाउल उण्होदग तुवर कूर फुसणे तहेव तक्के य ।

जं होति भावितं कप्पती तु भइयव्वं तं सेसं ॥५८६२॥

चाउलसोवणं तुवरो कुसुभगोदगादी भइयव्वं ॥५८६२॥

‘सेसंति अस्य व्याख्या -

सीतोदगभावितं अविगते तु सीतोदण गेहंति ।

मज्ज-वस-तेल्ल-सप्पी, -महुमातीभावियं भइतं ॥५८६३॥

परिणए पुण सीतोदगे गेहंति, पज्जादिएसु जति निक्खारेउं सक्कति तो वेप्पइ, इयरहा न वेप्पइ ।

एस भयणा ।

अहुवा - विवडभावितं जत्थ दुग्गुच्छियं तत्थ न वेप्पइ, अदुग्गुच्छिए वेप्पति ॥५८६३॥

ओभासणा य पुच्छा, दिट्ठे रिक्के मुहे वहंते य ।

संसट्ठे णिक्खित्ते, सुक्खे य पगास दट्ठूणं ॥५८६४॥

ओभासण ति जहा वत्थरस्स “कस्सेयं, किं वासी, किं वा भवस्सति, कत्थं वा भासी?”—एवं पुच्छा ।

सुद्धे गहणं ।

पुणो सीसो पुच्छइ - “दिट्ठादिपदे” ।

आयरिओ आह - अविट्ठातो दिट्ठं खेमतरं ।

कहं?, उच्यते - अदिट्ठे देये किं काए संघट्ठेतो गेहंति ण वा? अहुवा - कायाणं उवरि ठवियत्तयं होज्ज, अहुवा - बीजाती छूडा होज्ज, दिट्ठे पुण सव्वं दीसइ, एएण कारणेण दिट्ठं वरं, णो अदिट्ठं ।

“किं रिक्कं, अणरिक्कं तं वेप्पतु?” जं दहिस्सीरादीहि अणरिक्कं तं वेप्पइ ।

इयरं प्राउक्कायादीहि अणरिक्कं तत्थ कायवहो होज्ज, रिक्के वि कृणुमाती भवति ।

“किं कयमुहं वेप्पइ अकयमुहं?” कय मुहं वेप्पइ ।

“वहंतयं, अवहंतयं?”

जं तत्थकमादि फासुएणं वहंतयं तं वेप्पति, णावि जं प्राउक्कायादीहि ।

“किं संसट्ठं, असंसट्ठं गेहउ?” जं फासुदब्बेणं संसट्ठं तं वेप्पइ ।

“उक्खित्तं, णिक्खित्तं”? एत्थ उक्खित्तं कप्पति ।

“सुक्कं, जल्लं”? फासुएण उल्लं पसत्थं ।

“पगासमुहं, अपगासमुहं”? पगासमुहं कप्पति ।

अहुवा - “पगासट्ठियं अपगासट्ठियं”? पगासट्ठियं कप्पति । “दट्ठूणं” ति जहा मुद्धं तदा चक्खुणा पडिलेहेति, जदि न पडिलेहेइ ताहे तसबीयादी होज्ज ॥५८६४॥

जइ तसबीयादी होज्ज, ताहे इमं पुणो जयणं करेइ -

ओमंथ णाणमादी, पुच्छा मूलगुण-उत्तरगुणसुं ।

तिट्ठाणे तिक्खुत्तो, सुद्धो ससणिद्धमादीसु ॥५८६५॥

“ओमत्थ” ति पयस्स विभासा -

दाहिणकरेण कण्णे, घेतुत्ताणे य वाममणिबंधे ।

वट्ठेति तिणिण वारा, तिणिण तले तिणिण भूमीए ॥५८६६॥

कण्यं तस्स मुहं । कण्यो वेत्तुं हृत्यं उत्ताणयं काउं, तं पायं कण्यगहियं वामबाहुमणिबंसप्यदेसं संघट्टेति त्ति तिणि वारा प्राहणति । जत्थ जइ बीयं तसा वा दिट्ठा तो ण कप्पति, अहं दिट्ठा ताहे हृत्यतमे ततो वारा प्राहणति । तत्थ वि तस-बीए विट्ठे ण कप्पति, अविट्ठेसु पुणो भोमंययं भूमोए तिणि वारा पप्फोडेति ॥५८६६॥

१पाणमादी, एयस्स विभासा तिट्ठाणे तिकवुत्तो खोडिए समाणे -

तस बीयम्मि वि दिट्ठे, ण गेण्हती गेण्हती उ अदिट्ठे ।

गहणम्मि उ परिसुद्धे, कप्पति दिट्ठेहि वि बहहि ॥५८६७॥

गहणकाले परिसुद्धे जइ पच्छा तसबीयं वा पासति, ससणिद्धाणि वा पासति, तहावि तं मुद्धं चेव, न परिट्ठवेति ।

अन्ने पुण भणंति - जइ तज्जाए बीए जीव सत्त कुणमा ताव न परिट्ठवेद । अहं बहुतरं पासइ तज्जाए तो गहणकाले मुद्धवि सपडिग्गहमाताते परिट्ठवेति । अतज्जाएसु बहूसु वि ठियेसु ण परिट्ठवेद, ते अतज्जाए सडियं जयणाए फडेंति ॥५८६७॥

“पुच्छा मूलगुणउत्तरगुणेषु” त्ति सीसो पुच्छति - तस्स के मूलगुणा, के वा उत्तरगुणा ? मुहकरणं मूलगुणा, मोयकरणं उत्तरगुणा ।

एत्थ मूलगुणउत्तरगुणेहि चउभंगो कायव्वो ।

पढमभंगे चउगुरुं तवकालगुरुं, बितियभंगे चउगुरुं चेव तवगुरु ।

ततियभंगे चउलहुं चउगुरुं । चउत्थो सुद्धो । “चाउल” त्ति गयं ।

इदाणि “जहणजयण” त्ति दारं -

पच्छित्त पण जहण्णे ते णेउ तव्वुद्धिए उ जयणाए ।

जहण्णा उ सरिसवादी, तेहि तु जयणेतर कलादी ॥५८६८॥

पच्छित्तं पणं जहणं असंतासति तववुद्धिजयणाए गिण्हति, अहंवा - सरिसवाती बीया जहण्णा, तेहि छंभागकरवद्धिजयणाए गेण्हति । इयरे त्ति बादरा कलादी, कस त्ति चणगा ॥५८६८॥

इयाणि एसेवत्थो विवरिज्जति हृत्यपमाणं काउं -

छंभागकए हत्थे, सुहुमेसु पढमपव्व पंचदिणा ।

दस बितिते रातिदिणा, अंगुलिमूलेसु पण्णरस ॥५८६९॥

हत्थो छंभाए कीरइ, पढमपव्वा एको भागो, बितियपव्वा बितियभागो, अंगुलिमूले ततियो, आउरेहा चउत्थो, पंचमो अंगुट्ठबन्धे, सेसो छट्ठो । एस पढमपव्वमेत्तेसु सुहुमबीएसु पंचराइदिया, बितियपव्वमेत्ते दसराइदिया, अंगुलिमूलमेत्तेसु पण्णरस ॥५८६९॥

वीसं तु आउलेहा, अंगुट्ठयमूले होति पणुवीस ।

पसतिम्मि होति मासो, चाउम्मासो भवे चउसु ॥५८७०॥

आयुरेहमेतेषु वीसं राइदिया, अगुदुबुधमेतेषु पणुवीसं, पसतीए मासलहुं, चउसु पसतीसु चउलहुं ॥५८७०॥

एसेव गमो णियमा, थूलेसु वि वितियपव्वमारद्धो ।

अंजलि चउक्क लहुगा, ते विय गुरुगा अणतेसु ॥५८७१॥

मासमाविसु थूलेसु वितियपव्वमेतेषु पणसं, अंजुलिमूले दस, आयुरेहाए पण्णरस, अंगुदुमूले वीसा, पसतीए भिण्णमासो, अंजलीए मासलहुं, चउसु अंजनीसु चउलहुं । एते चेव पच्छिता सुहुमथूरेसु अणतेसु गुरुगा कायव्वा ॥५८७१॥

णिककारणम्मि एते, पच्छिता वण्णिया उ वितिएसु ।

णायव्वणुपुव्वीए, एसेव य कारणे जयणा ॥५८७२॥

जा एसा पच्छित्तुडुडु भणिया णिककारणे, कारणे पुण मेण्हंतस्स सेव जयणा पण्णादिगा भवति ।

जइ पुण अहाकडे पढमपव्वपमाणा बीया अणपरिकम्म च सुदं लभति ।

एथ अणबहुचित्तिए कतरं घेतव्वं ? भणति - अहाकड घेतव्वं, णो अणपरिकम्मं । एवं वितियपव्वा-
विसु वि वत्तव्वं ॥५८७२॥

जाव -

वोसट्ठं पि हु कप्पति, वीयादीणं अहाकडं पायं ।

ण य अप्प सपरिकम्मा, तदेव अप्पं सपरिकम्मा ॥५८७३॥

वोसट्ठं ति भरियं, अहाकडं आगंतुगाण भरियं पि कप्पति, ण य अणपरिकम्मं बहुपरिकम्मं वा । एवं अणपरिकम्मं पि आगंतुगाण भरियं कप्पति ण य बहुपरिकम्मं सुदं ॥५८७३॥

इमं जयणाए णिच्छतो छडेति -

थूले वा सुहुमे वां, अवहंते वा असंथरंतम्मि ।

आगंतुग संकामिय, अप्पवहु असंथरंतम्मि ॥५८७४॥

सुलाण वा चण्णादियाण बीयाण सुहुमाण वा सरिसवादिमाण भरियं होज्जा तस्स य जति पुव्वभायणं, णवरं-तं ण वहति । “असंथरं” ति अपज्जजित्तियं वा भायणं, भायणस्स वा अमावो, ताहे तम्मि असंथरे अणबहुअं तुलेत्ता बहुगुणकरे ति काउं अहाकडं, आगंतुगाण बीयाण भरियं ति आगंतुगे संकामेत्ता जयणाए अणत्थ, अहाकडं चेव मेण्हति ण दोसो ॥५८७४॥ जयणं ति गता ।

इदंणि “चोदगो” ति -

थूल-सुहुमेसु वोत्तुं, पच्छित्तं तेसु चेव भरितेसु ।

जं कप्पति त्ति मणियं, ण जुज्जते पुव्वमवरेणं ॥५८७५॥ कट्ठा

आचार्यं आह - “असति असिव” ति -

चोदग ! दुविधा असती, संताऽसंता य संत असिवादी ।

इयरो उ आमियादी, कप्पति दोसुं पि जा भरिते ॥५८७६॥

संतासती जस्य नामे गगरे विसर्पे वा भायणे मत्थि तत्थंतरा वा मसिवं, सग्गामे वा भेसु कुलेसु मत्थि तेसु वा मसिवं, भोमोयरियादीणि वा तत्थंतरा वा एसा संतासती ।

अहवा - संतासती मत्थि भायणं, गवरं - तं ण बहति ।

अहवा - संतासती मसंयरम्मि ति मत्थि भायणं, डहरं ण संयरति ; तेण इयर ति मसंतासती सा इमा - “आमिय” ति, पलीवए दड्डुं पातं, तेणेहि वा हडं, रायदुट्टेण वा हडं, मग्गं वा, सब्बहा मग्गावो पातस्स, एवमादिकारणेहि कप्पति दोसु वि असतीसु अहाकडं पादं आगंतुगबीयाण मत्थियं घेतुं, ण य सुद्धं अपपरिकम्मं । जं पुण मए भणियं पच्छित्तं तं दुविहाए असतीए मग्गावे जो गेण्हति तस्स तं भवति । अहाकडे जइ विधीए दोसा तहावि तं बहुपुणकरं, अपपरिकम्ममि पुण सुद्धं पि बहुदोसकरं ॥५८७६॥

कहं ? उच्यते -

जो तु गुणो दोसकरो, ण सो गुणो दोस एव सो होती ।

अगुणो वि य होति गुणो, जो सुंदर णिच्छओ होति ॥५८७७॥

एवं इह पि अपपरिकम्मे सुद्धेवि दोसा, अहाकडे वीयस्स सहिए दुट्टे वि गुणो चेव ।

कहं ? उच्यते - अहाकडे जति वि ताणि आगंतुगबीयाणि जयणाए अण्णात्थ संकामैतस्स अप्पो संघट्टणादोसो, तहावि ण य सुतत्थपल्लिमंभो, ण य छेदणादिआतोवचायदोमा । अण्णो य इमो नवरं - गुणो, तत्थणादेव घेतुं हिडियव्व । एवं तं सदोसं पि बहुपुणं । अपपरिकम्मे पुण एवं चेव विवरीयं भाणियव्व, अतो तं सपुणं पि सदोसं ॥५८७७॥ असति मसिव ति मयं ।

इदाणि “पमाण-उवओग-छेदण” ति तिणिण वि पदे जुगवं भणति -

पादं सामण्णेण वा उवकरणं जइ अहाकडं पमाणजुत्तं वा ण लब्भति, तो तं पमाणजुत्तं कायव्वं, उवउत्तेण छेतुं इणमेव ।

जतो भणति -

असति तिगे पुण जुत्तजोग ओहोवधी उवग्गहिते ।

छेदण-भेदणकरणे, सुद्धो तं निज्जरा विउत्ता ॥५८७८॥

असति ति अहाकडस्स “तिगे” ति तिव्विवासा “जुत्तो जोगो” अहाकडं तयो वारा माणितमिस्सव्वे, पुण ति अवधारणे । किं अवधारेति ? उच्यते - तिण्हं वाराण परमो अपपरिकम्मेव गेण्हति । एस ओहिए उवग्गहिए वा पादे, वत्थे अण्णम्मि वा उवहिम्मि विही गेण्हियव्वो । एवं क्रमागते अपपरिकम्मे उवउत्तो छेदणभेदणं करोति विसुद्धो, ण तत्थ पच्छित्तं । तं विहिं “अनेक्खंतस्स, प्रस्युत निज्जरा विपुला भवति ॥५८७८॥

चोदगाह - “णणु अपपरिकम्ममादिसु घेप्पमाणेसु छेदणादिकरणे आयसंजमविराहुणा भवति ।”

आचार्याह -

चोदग ! एताए चिय, असती य अहाकडस्स दो इतरे ।

कप्पंते छेदणे पुण, उवओगं मा दुवे दोसा ॥५८७९॥

हे चोदग ! जा एसा दुविहा संतासतासती भणिया ताए अहाकडस्स असतीते दो इतर ति

अपपरिकम्पं बहुपरिकम्पं च कल्पते चेत्, तेषु पुन खेदणादि करतो सुदुःख उत्तो करेति, वा दुवे दोसा भविस्संति, आयसंजमविराहणादोसा इत्यर्थः ॥५८७६॥

अत्यैवार्थस्य अपरः कल्पः -

अहवा वि कओ गेणं, उवओगो ण वि य लब्भती पढमं ।

हीणअधियं वा लब्भइ, पमाणओ तेण दो इयरे ॥५८८०॥

उवओगो ति मग्गजोगे पढमं ति अहाकडं, अहवा - लब्भइ अहाकडं तं पमाणतो हीणं प्रहिणं वा लब्भइ, तेण कारणेण "दो इतरे" ति, "इतर" ति - अपपरिकम्पं सुद्धं पमाणदुत्तं गेण्हति, तस्मादति हीणपमाणादरेगलंभे वा बहुपरिकम्पं सुद्धं कुत्तपमाणं वेपति ॥५८८०॥

इमं च अपपरिकम्पं पदुच्च भण्णइ -

जह सपरिकम्पलंभे, मग्गंते अहाकडं भवे विपुला ।

णिज्जरमेवमलंभे, बितियस्सितरे भवे विपुला ॥५८८१॥

जहा सपरिकम्पे ति अपपरिकम्पे सुद्धे कुत्तपमाणे लब्भमाणे वि अहाकडं मग्गंतस्स णिज्जरा विपुला भवति, तथा पढमस्स ति अहाकडस्स अलंभे इयरे ति - अपपरिकम्पं मग्गंतस्स विपुला णिज्जरा भवति ।

अहवा - एतीए गाहाए चउत्थं पादं पढंति "वीयस्सितरे भवे विउल" ति । बितियं अपपरिकम्पं, तस्स अलाभे इयरे ति बहुपरिकम्पं, तं मग्गंतस्स णिज्जरा विउला भवति, पढमबितियाण अलंभे संतासंतासतीए वा ॥५८८१॥

अहवा - जत्थ ते लब्भंति तत्थिमे कारणा -

असिवे ओमोयरिण, रायदुद्धे भए व गेलण्णे ।

सेहे चरित्त सावय-भए व ततियं पि गेण्हज्जा ॥५८८२॥

जत्थ अहाकडं पादं अपपरिकम्पं वा लब्भति तत्थ असियं, अंतरे वा परिरयमणं च णत्थि, एवं ओमरायदुद्धं बोहिगादीण वा मयं गिलाणपडिबंघेण वा तत्थ न गग्गइ, सेहस्स वा तत्थ सागारियं चरित्तभेदो ति, तत्थंतरा वा चरित्ताओ उवसंभंति, सीहादितावयमयं तत्थ अंतरा वा, एवमादिकाणोहि अगच्छंती ततियं । ततियं ति - बहुपरिकम्पं सत्वाणे चैव गेण्हति ॥५८८२॥

गयमत्थं सीहावल्लोयणेण भणति -

आगंतुगाणि ताणि य, सपरिकम्पे य सुत्तपरिहाणी ।

एएण कारणेणं, अहाकडे होति गहणं तु ॥५८८३॥

चरियं परिकम्पंतस्स सुत्तपरिहाणी । शेषं गथायं ॥५८८३॥ पमाण उवओगछेयणं ति गतं ।

इदाणि "मुहे" ति दारं -

बितिय-ततिएसु नियमा मुहकरणं होज्ज तस्सिमं माणं ।

तं पि य तिविहं पादं, करंडयं दीह वडुं च ५८८४॥

वितियं अणपरिकम्भं, (ततियं बहुपरिकम्भं) एतेसु नियमा मुहकरणं, तं च मुहं तिविहं - करंडाकृति, दोहं ति मोलबगं, वट्टं ति समचउरस्सं ॥५८८४॥

तेसि मुहस्स इमं माणं -

अकरंडगम्भि भाणे, हत्थो 'उड्डं जहा ण घट्टेति ।

एयं जहण्यमुहं, वत्थुं पप्पा ततो विसालं ॥५८८५॥

अकरंड मोलबगो समचउरस्सं वा, एतेसु मुहपमाणं हत्थो पविसंतो निष्फिडंतो वा जहा उड्डं ग्रहं य ण घट्टेति - ण सृष्टशतीत्यर्थः । एयं सब्बजहणमुहपमाणं । अतो परं वत्थुं ति महते महंततरं विसाले विसालतरं मुहं कज्जति, जं पुण करंडाकृति तस्स विसालमेव मुहं कज्जति । अण्णहा तं दुक्कणयं भवति ॥५८८४॥ एस पडिग्गहो भणितो ।

इदाणि मत्तगो भणति -

अत्राह चोदकः - न तित्थकरेहि मत्तगो अण्णतो ।

कहं ? यस्मादुक्तं -

दव्वे एगं पादं, वुत्तं तरुणो य एगपादो उ ।

अण्णोवही पसत्थो, चोदेति न मत्तओ तम्हा ॥५८८६॥

उवकरणदञ्जोमोयस्सिए भणियं - "अणो वत्थे एगे पाए चियस्तोवगरणसज्जणया" । तथा चोक्तं - "अजे भिक्खू तरुणे वलवं जुवाणे से एगं पादं धरेज्ज" तथा चोक्तं - "अण्णोवही कलहविवज्जणां य, विहारचरिया इसिणं पसत्था" ।

चोदगो भणति - जम्हा एवं बहुमुयं, अण्णोसु वि सुत्तपदेसु भणियं, तम्हा ण मत्तगो वेत्तव्वो

॥५८८६॥

आयरियाह -

जिणकप्पे सुत्तेतं, सपडिग्गहकस्स तस्स तं एगं ।

नियमा धेराणं पुण, वितिज्जओ मत्तओ भणिओ ॥५८८७॥

एगवत्तपादादिया जे सुत्तपदा चोदेसि, एते सपडिग्गहस्स सपाउरणस्स य जिणकप्पियस्स सुत्ता १. धेराणं पूण नियमा पडिग्गहस्स वितितो मत्तगो भवति, स तित्थयरेहि चेइ अण्णतो, अण्णोवहिगहणातो दुपत्तो अण्णोवही चेइ, जतो तित्थमिति बहुत्तं, तम्हा विट्ठं मत्तगहणं ॥५८८७॥ तं अग्रेण्हेते पच्छित्तं ।

इमे य दोसा -

अग्गहणे वारत्तग, पमाण हीणाऽहियसोही अक्खाए ।

परिमोह गहण वितियपद लक्खणादी मुहं जाव ॥५८८८॥

१ उड्डं, इति हृत्कल्पे गा० ४०६० । २ गा० ५८२३ । ३ उव० सू० १८० । ४ आवा० भूत० २
अ० ६ उ० १ सू० १५२ । ५ दस० पू० २ गा० ५

अग्गहणे त्ति अस्य व्याख्या -

मत्तगग्गेण्हणे गुरुणा, मिच्छत्तं अप्प-परपरिचाओ ।

संसत्तग्गहणम्मि य, संजमदोसा मुणेयव्वा ॥५८८६॥

मत्तगं अग्गेण्हणे चउगुरुणा पच्छित्तं, गवसद्धादि मिच्छत्तं गच्छे ।

कहं ? उच्यते - तेण चैव पडिग्गहणे णिल्लेवंतं दट्ठुं दुट्ठिदुधम्मे त्ति, जति पडिग्गहे आयरियादीणं गेण्हति अप्पा चत्तो, अहं अप्पणो गेण्हति तो आयरियादी पदा चत्ता ।

मत्तगअभावे संसत्तभत्तपाणं कहि गेण्हउ ? अहापडिलेहिं पडिग्गहे चैव गेण्हति, तो संजम-
विराहणा सवित्थरा भागियथा । 'छक्काय च० गाहा ॥५८८६॥

“वारत्त” त्ति अस्य व्याख्या -

वारत्तग पव्वज्जा, पुत्तो तप्पडिम देवथलि साह ।

पडिचरणेगपडिग्गह, आयमणुच्चालणा छेदो ॥५८८७॥

वारत्तपुरं नगरं तत्थ य अमग्गसेणो राया, तस्स अमच्चो वारत्तगो णाम । सो घरसारं पुत्तस्स णिसिउं पव्वइतो । तस्स पुत्तेण पिउभत्तीए देवकुलं करित्तु रयहरणमुहपोत्तिपडिग्गहधारी पिउपडिमा तत्थ ठाविया । तत्थ थलीए सत्तागारो पवात्ततो । तत्थ एणो साधू एगपडिग्गहधारी तत्थ थलीए पडिग्गहए भिक्खं घेत्तुं, तं भोत्तुं, तत्थेव पडिग्गहे पुणो पाणगं घेत्तुं सण्णं बोसिरिउं, तेणेव पडिग्गहणे णिल्लेवेति ।

तेसि सत्ताकारणित्तताणं चित्ता - कहं णिल्लेवेइ त्ति, पडियरतो दिट्ठो, तेहिं णिच्छूढो । तेहिं य ताणि भायणाणि अणिकाइयाणि अणणाणि छड्डियाणि, तस्स अण्णेसि च साधूणं वोच्छेओ तत्थ जातो, उट्ठाहो य ॥५८८७॥

इमं 'मत्तगस्स पमाणं -

जो मागहओ पत्थो, सविसेसतरं तु मत्तगपमाणं ।

दोसु वि दज्जग्गहणं, वासावासेसु अहिगारो ॥५८८८॥

मगहाविसणं पत्थो त्ति कुलवो । दोसु वि त्ति उणुवद्धे वासामु य । कारणे असणं पाणगदज्जं वा गेण्हति ।

अण्णे पुण भणंति, - दोसु वि त्ति - पडिग्गहे भत्तं, मत्तगे पाणगं । इहं पुण मत्तगेण वासावासासु अधिकारो । वासामु पढमं चैव जत्थ धम्मलासोत्ति तत्थ पाणगस्स जोगो कायव्वो ।

कि कारणं ? कयाति वग्घारियवामं पडेज्ज, जेण घराघो घरं न सक्केति मंचरिउं, ताहे विणा दब्धेण लेवाडो भवति, तम्हा पढमभिवक्तातो चैव पाणगं मग्गियव्वं । अहवो - वासामु संसज्जति त्ति तेण सोहिअइ त्ति अतो तेण अधिकारो ॥५८८८॥

अथवा इमं पमाणं -

सुक्खोन्नल ओदणस्सा, दुगाउतद्धानमागओ साह ।

भुंजति एगट्ठाणे, एतं खलु मत्तगपमाणं ॥५८८९॥

१ पीठिकायाम् गा० ४६ । २ गा० ५८८८ । ३ गा० ५८८८ ।

अप्येण तत्तिमो मुखोयणो, अहवा - मुखो चैव मोदणो अणभायणगहितेण सिम्मणेण जे पज्जतिओ भवइ, एयं मत्तमस्स पमाणं ॥५८६२॥

अथवा इमं पमाणं -

भतस्स व पाणम्म व, एगतरागस्स जो भवे भरिओ ।

पज्जत्तो साहुस्मा, एतं किर मत्तगपमाणं ॥५८६३॥ कंथा

मनसो जुत्तप्पमाणो येत्तवो, हीणप्पमाणे अनिरित्ते वा बहू दोसा ॥५८६३॥

एत्थ 'हीणे त्ति दारं -

तस्मिमे दोसा -

उहरस्स एते दोसा, ओभायण खिसणा गलंते य ।

छण्हं विराहणा भाणभेयो जं वा गिलाणस्स ॥५८६४॥

ओभायणा, चप्पाचप्पि भरेमाणं दट्ठुं भणाति - इमे दरिद्रा दुक्खभग्गा पव्वइत ति । अहवा - चप्पाचप्पि भरेमाणं दट्ठुं भणाति -- इमे असंनुट्ठु ति, खीमंति अयत्तिलोभगिक्खे ति वा भणाति, अतिभारिय-गलंतं य पुढवादिद्वक्कायविराहणा लेवाडिज्जति, तत्थ पुव्वणापुव्वणे दोसा ।

अहवा - लेवाडणभया तत्पुव्वमारेण खानुमादी ण पेहति, अतो भायणविराहणा । चप्पाचप्पि वा करेयस्स भायणविराहणा । गिलाणमादियाण वा अप्पज्जनं भवति तेण तेसि विराहणा ॥५८६४॥

अहवा इमे उहरे दोसा -

पडणं अवंगुत्तम्मि, पुढवी-तसपण-तरुणादीणं ।

अणिज्जंतं गामंतरातो गलणे य छक्काया ॥५८६५॥

कण्ठाकर्णिण भरिते लेवाडणभएणं अवंगुत्तं ति तत्थ पुढविकाया तसा तरुप्फाडया पडेज्ज, अहवा - गामंतरातो अतिभरिए अणिज्जने परिगणमाणे छक्काया विराहिज्जति ॥५८६५॥ हीणे स्ति गतं ।

इदाणि 'अधिगे त्ति दारं -

अहियस्स इमे दोसा, एगतरस्सोगहम्म भरियम्मि ।

सहसा मत्तगभरणे, भारो व विगिचणियमादी ५८६६॥

प्रमाणाधिके इमे दोसा - एगतरस्स मि भतस्स पाणम्म वा पडिगहे भरिते पच्छा मत्तगे गह्जं करेज्ज, सहसा तम्मि मत्तगे भरिए अतिभाणे खानुमादिए दोसे ण पेहेइ, अणं च दोसु वि भरितेसु विगिचणिया दोसा, सह ण विगिचति तो अतिखट्ठेण गेवणादिया दोसा ॥५८६६॥ अधिगे त्ति गयं ।

अह्हा एते दोसा तम्हा हीणइरित्ते वज्जेउं पमाणत्तो येत्तवो । तं च अप्पणट्ठा ण परिभुजति । मादरियादीणट्ठा परिभुजति ।

अह्णिक्कारणे अप्पणट्ठा परिभुजति, तो इमं 'पच्छिक्तं -

जति भोयणमावहती, दिवसेणं तत्तिया चउम्मासा ।

दिवसे दिवसे तस्स उ, वितिएणाऽऽरोवणा भणिता ॥५८६७॥

१ गा० ५८८८ । २ बत्थ इत्यपि पाठः । ३ गा० ५८८८ । ४ गा० ५८८८ ।

एगदिवसेग जत्ति ए वारे मत्तगेण भत्तपाणं भाणेति तत्तिया चउलहुमा भवति, दिवसे दिवसे ति वीप्सायां, बितियादिदिवसेसु पच्छित्तुडुडी दरिसेति - जत्तियवारा भाणेति ततो से बितिएण आरोवणा कज्जति, चउलहुस्स भवितियं चउमुत्तं तं बितियवारे दिज्जति, एवं उवरि रि णेत्तं, घट्टमे दिवसे पारं चियं पावति ॥५८६७॥ सोही गया ।

इदाणि 'अववादे ति -

अण्णाणे गारवे लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।

लहुओ लहुओ गुरुमा, चउत्थो सुद्धो य जाणओ ॥५८६८॥

एरिसा जहा पडिग्गहे मणिया तहेव मत्तगे वि भाणियत्वा ॥५८६८॥

इदाणि 'परिभोगो ति दारं ।

मत्तगो णो अप्पणट्ठा परिभुजइ, आयरियादीणट्ठा परिभुजइ -

आयरिय बाल बुद्धा, खमग गिलाणा य सेह आपसा ।

दुल्लभ संसत्त असंथरम्मि अट्ठाणकप्पम्मि ॥५८६९॥

आयरियस्स य गिलाणस्स य मत्तगे पाउम्मं घेप्पइ, सेहबालादियाण अणहिवंताण मत्तगे मत्तं वेप्पइ पाउम्मं वा । अहवा - बालादिया पडिग्गहय ण सक्कंति वट्ठावेत्तं, ताहे मत्तगेण हिंइति । गच्छट्ठा वा दुल्लभदत्तं घतादिमं पडुप्पण्णं मत्तगे गेण्हेज्जा । तत्थ वा संसज्जति भत्तपाणं तत्थ मत्तगे गेण्हेज्जति भत्तपाणं, तत्थ मत्तए घेतुं सोहेति, पच्छा पडिग्गहे सुब्बइ । भोमादि असंथरणे वा, असंथरणे पडिग्गहे भरिए अणम्मि य सक्कंते मत्तगे गेण्हेज्जा । अट्ठाणं कप्पे अट्ठाणकप्पो अट्ठाणे विधिरित्त्यर्थः । कप्पगहणं कारणे विधीए अट्ठाणं पडिक्खेति दंसेति, तत्थ असंथरणे पडिग्गहे भरिए मत्तगे गेण्हेति ॥५८६९॥ परिभोगि ति मत्तं ।

"अगहणपदवितियपदलक्खणादि मुहं जाव" ति - एतेसि पदाणं अत्थो जहा पडिग्गहे ।

तहावि अक्खरत्थो भण्णति - गहणे ।

मत्तगं को गेण्हेति ? वितियपदं असिवादिकारणेहिं सत्थाणे चेव अप्पबहुपरिकम्मं गेण्हेति । *लक्खणादि दारा जहा पडिग्गहे तहा मत्तगे वि वत्तत्वा, मुहकरणं च, अप्पपरिकम्मं सपरिकम्मं च लेवेयत्वं ।

तत्थ लेवग्गहणे इमा विही -

हरिए बीए चले जुत्ते, वत्थे साणे जलट्ठिते ।

पुढवीअंपातिमा सामा, महावाते महिताऽमिते ॥५८७०॥

ओहिणज्जुत्तिमादीसु अणेगमो गतत्था । एम उवहो अव्वोकहो भणियो ।

विभागतो पुण उवही दुविहो - ओहिमो उवग्गहितो य । जिणाणं परिहारविमुद्धियाणं महालंदियाणं पडिमापडिक्खणाणं, एतेसि ओहितो चेव उवही ।

जिणकप्पिया दुविहा - पाणिपडिग्गहो, पडिग्गहधारी य ।

पाणिपडिग्गहो दुविहा - पाउरणवज्जिया, सहिया य ।

१ गा० ५८८८ । २ गा० ५८८८ । ३ गा० ५८२१, ५८२२ पायोक्तानि द्वाराणि ।

पाउरणवज्जियाणं दुविहो - रयहरणं मुहपोत्तिया य ।

पाउरणसहियाणं तिविहं, चउत्थिहं, पंचविहं ।

पडिग्गह्धारी वि पाउरणवज्जिओ पाउरणसहितो वा ।

पाउरणवज्जियस्स नवविहो ।

पाउरणसहियस्स दसविहो एक्कारसविहो बारसविहो य ।

परिहारविसुद्धिगामी गियमा पडिग्गह्धारी पाउरणं । धितिसंययणमभिग्गह्वितेसओ भवजिज्जं ।
अहात्तदियाण वितेसो गच्छे पडिबद्धा अप्पहिबद्धा वा होज्ज ।

इमं थेरकप्पियाणं -

चोदसगं पणुवीसा, ओहोवधुवग्गहो यऽणेगविहो ।

संथारपट्टमादी, उभयो पक्खे वि नायव्वो ॥५९०१॥

थेरकप्पियाणं ओहोवहो चोदसविहो ।

संजतीण ओहोवहो पणुवीसविहो ।

उभयपक्खे सि साधुसाधुणेणं उवग्गहिओ उवहो संथारपट्टादि एणेगविहो भवति ॥५९०१॥

जे भिक्खु अणंतरहियाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि,
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खु ससणिद्धाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए,
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टियमक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४१॥

जे भिक्खु ससरक्खाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खु मट्टियाकडाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्षू चित्तमंताए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्षू सिलाए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्षू लेलूए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्षू कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४७॥

जे भिक्षू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा भामवलंसि वा
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्षू कुलियंसि वा भित्तिसि वा सिलंसि वा लेलुसि वा
अंतलिकखजायंसि वा दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले
उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४९॥

जे भिक्षू खंभंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ।

तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥सू०॥५०॥

पुढवीमादी कुलिमादिएसु थुणादिखंधमादीसु ।

तेसुच्चारदीणि, परिट्ठवे आणमादीणि ॥५६०२॥

आदिसहातो ससजिद्धसरवसादी जे सुत्तपदा भणिता तेसु उच्चारपासवणं परिदुर्बलस्स आयसंजम-
विराहणा भवति, आणादिया य दोसा । चउलहुं पञ्चित्तं । एतेसु पुढवादी पदा जहा तेरसमे उद्देशमे वक्साया
सहा भाणिपव्वा । णवरं — तत्थ ठाणानि भणिषा, इहुं उच्चारपासवणं भाणियव्वं ॥५६०२॥

इमो अववातो —

वितियपदमणपज्जे, ओसण्णाइणरोहगद्धाणे ।

दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसिरणं होति जयणाए ॥५६०३॥

पणपज्जे स्तित्तित्तादि, ओसणं ति चिरायतणं अपरिभोग “आइणं”, जणो वि तत्थ वोसिरति,
रोहगे वा तं मण्णायं, दुब्बलो वा साधु, गहणिदुब्बलो वा, यद्विलं गंनुमसमत्थो वा, गिलाणो वा असमत्थो,
एते वोसिरति । जयणाए वोसिरति, जहा आयसंजयविराहणा ण भवतीत्यर्थः ॥५६०३॥

‘देहडो सीह थोरा य. ततो जेट्ठा सहोयरा ।

कणिट्ठा देउलो णणो, सत्तमो य तिइज्जगो ।

एतेसि मज्झिमो जो उ, मंदे वी तेण वित्तिता ।

॥ इति गिमीह-विसेसचुण्णीए सोलसमो उद्देशओ समत्तो ॥

सप्तदश उद्देशकः

उक्तः षोडशमः । इदानीं सप्तदशमोद्देशकः । तस्मिन् संबन्धो -

आतपरे वावत्ती, खंधादीएसु वोसिरंतस्स ।

मा सच्चिय कोतुहला, बंधंताऽऽरंभो सत्तरसे ॥५६०४॥

खंधादिएसु उच्चारपासवर्णं करंतस्स आवविराहणा पडंतस्स ह्वेज्ज, उभएण पडंतेण कुंथुमादि विराहिज्जति, मा सच्चयेव आयपरविराहणा कोउममादीहि तण्णमादिबंधंतस्स भविस्सति । अतो सत्तर-समस्स आरंभो ॥५६०४॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्टपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधइ, बंधंतं वा सातिज्जति ॥५६०१॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्टपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधेल्लगं सुयइ, सुयंतं वा सातिज्जति ॥५६०२॥

तसपाणतण्णमादी, कोतुहल्लपडियाए जो उ बंधेज्जा ।

तणपासगमादीहि, सो पावति आणमादीणि ॥५६०५॥

तसपाणमो वन्धमादि मेदुरं, आणादी चउलहुं च ।

तण्णग-वाणर-वरहिण, चगोर-हंस-सुगमाइणो पक्खी ।

गामारण चउप्पद, दिट्ठमदिट्ठा य परिसप्पा ॥५६०६॥

तण्णगगहणातो इमे वि पक्खिणो गहिता-वरिहणो ति-मोरो, रक्तपादो दीर्घंघ्रीवो जलचरो पक्खी चकोरो, घणं वा किं चि किंसोरादि वामेयण, भुगदि वा आरणं दिट्ठपुव्वं वा अदिट्ठपुव्वं च, गउलादि वा, भुगपरिसप्पं, सप्पादि वा उरपरिसप्पं, एवमादि बंधति सुयति वा ॥५६०६॥

बंधंमुयणे वा इमं कारणं -

दिस्सिहिति चिरं नद्धो, जयणादि चउप्पडंत दुप्पस्स ।

गमणपुत्तादिकुतुहल, सुयति च जे बारसे दोसा ॥५६०७॥

વિતિયપદમણપ્પજ્ઞે, વંધે અવિકોવિતે ય અપ્પજ્ઞે ।

જાણંતે વા વિ પુણો, કજ્જેસુ બહુપ્પગારેસુ ॥૫૬૦૮॥

વિતિયપદમણપ્પજ્ઞે, મુંચે અવિકોવિતે વ અપ્પજ્ઞે ।

જાણંતે વા વિ પુણો, કજ્જેસુ બહુપ્પગારેસુ ॥૫૬૦૯॥

ઉત્સગો યવવાતો ય જહા બારમમે ઉદ્દેસમે તહા માગિયવ્વો ।

જે ભિક્ષુ કોઠહલ્લપડિયાણ તળમાલિયં વા મુંજમાલિયં વા મેંડમાલિયં વા
મયળમાલિયં વા પિંછમાલિયં વા દંતમાલિયં વા સિંગમાલિયં વા
સંઘમાલિયં વા હટ્ઠમાલિયં વા કટ્ટમાલિયં વા પત્તમાલિયં વા
પુપ્ફમાલિયં વા ફલમાલિયં વા વીયમાલિયં વા હરિયમાલિયં વા
કરેદ્ધ, કરેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩॥

જે ભિક્ષુ કોઠહલ્લપડિયાણ તળમાલિયં વા મુંજમાલિયં વા મેંડમાલિયં વા,
મયળમાલિયં વા પિંછમાલિયં વા દંતમાલિયં વા સિંગમાલિયં વા,
સંઘમાલિયં વા હટ્ઠમાલિયં વા કટ્ટમાલિયં વા પત્તમાલિયં વા,
પુપ્ફમાલિયં વા ફલમાલિયં વા વીયમાલિયં વા હરિયમાલિયં વા,
ધરેદ્ધ, ધરેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪॥

જે ભિક્ષુ કોઠહલ્લપડિયાણ તળમાલિયં વા મુંજમાલિયં વા મેંડમાલિયં વા,
મયળમાલિયં વા પિંછમાલિયં વા દંતમાલિયં વા સિંગમાલિયં વા
સંઘમાલિયં વા હટ્ઠમાલિયં વા કટ્ટમાલિયં વા પત્તમાલિયં વા,
પુપ્ફમાલિયં વા ફલમાલિયં વા વીયમાલિયં વા હરિયમાલિયં વા
પિણદ્ધદ્ધ, પિણદ્ધતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫॥

તળમાદિમાલિયાઓ જતિયમેત્તા ઉ આહિયાસુત્તે ।

તાઓ કુતૂહલેણ, ધારેતં આણમાદીણિ ॥૫૬૧૦॥

વિતિયપદમણપ્પજ્ઞે, કરેજ્જ અવિકોવિતે વ અપ્પજ્ઞે ।

જાણંતે વા વિ પુણો, કજ્જેસુ બહુપ્પગારેસુ ॥૫૬૧૧॥

જે ભિક્ષુ કોઠહલ્લપડિયાણ અયલોહાણિ વા તંબલોહાણિ વા તત્તલોહાણિ વા,
સીસલોહાણિ વા રુપ્પલોહાણિ વા સુવણ્ણલોહાણિ વા,
કરેતિ, કરેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬॥

અયમાદી 'આગરા સ્વલુ, જતિયમેત્તા ઉ આહિયા સુત્તે ।

તાઈં કુતૂહલેળં, 'માલેતે આણમાદીણિ ॥૫૬૧૨॥

વિતિયપદમળપ્પજ્ઞે, કરેજ્ઞ ઓવિકોવિતે વ અપ્પજ્ઞે ।

જાળંતે વા વિ પુણો, કજ્ઞેમુ બહુપ્પગારેસુ ॥૫૬૧૩॥

જે મિક્સુ કોઠહલ્લપડિયાણ અયલોહાણિ વા તંવલોહાણિ વા તડયલોહાણિ વા
સીસલોહાણિ વા રુપ્પલોહાણિ વા સુવળ્ણલોહાણિ વા
ધરેંડ, ધરેંતં વા સાતિજ્ઞજ્ઞ ॥સૂ.॥૭॥

જે મિક્સુ કોઠહલ્લપડિયાણ અયલોહાણિ વા તંવલોહાણિ વા તડયલોહાણિ વા
સીસલોહાણિ વા રુપ્પલોહાણિ વા સુવળ્ણલોહાણિ વા
પિણદ્દહ, પિણદ્દતં વા સાતિજ્ઞજ્ઞ ॥સૂ.॥૮॥

❀

❀

❀

જે મિક્સુ કોઠહલ્લપડિયાણ હારાણિ વા અદ્દહારાણિ વા ઇમાવલિં વા મુત્તાવલિં વા
કળમાવલિં વા રયણાવલિં વા કળમાણિ વા તુડિયાણિ વા કેઝરાણિ વા
કુંડલાણિ વા પટ્ટાણિ વા મડડાણિ વા પલંચસુત્તાણિ વા સુવળ્ણસુત્તાણિ વા
કરેતિ, કરેંતં વા સાતિજ્ઞજ્ઞ ॥સૂ.॥૯॥

જે મિક્સુ કોઠહલ્લપડિયાણ હારાણિ વા અદ્દહારાણિ વા ઇમાવલિં વા મુત્તાવલિં વા
કળમાવલિં વા રયણાવલિં વા કડમાણિ વા તુડિયાણિ વા કેઝરાણિ વા
કુંડલાણિ વા પટ્ટાણિ વા મડડાણિ વા પલંચસુત્તાણિ વા સુવળ્ણસુત્તાણિ વા
ધરેંડ, ધરેંતં વા સાતિજ્ઞજ્ઞ ॥સૂ.॥૧૦॥

જે મિક્સુ કોઠહલ્લપડિયાણ હારાણિ વા અદ્દહારાણિ વા ઇમાવલિં વા મુત્તાવલિં વા
કળમાવલિં વા રયણાવલિં વા કડમાણિ વા તુડિયાણિ વા કેઝરાણિ વા
કુંડલાણિ વા પટ્ટાણિ વા મડડાણિ વા પલંચસુત્તાણિ વા સુવળ્ણસુત્તાણિ વા
પિણદ્દહ પિણદ્દતં વા સાતિજ્ઞજ્ઞ ॥સૂ.॥૧૧॥

કડમાદી આભરણા, જતિયમેત્તા ઉ આહિયાસુત્તે ।

તાઈં કુતૂહલેળં, 'માલેતે આણમાદીણિ ॥૫૬૧૪॥

વિતિયપદમળપ્પજ્ઞે, માલે અવિકોવિતે વ અપ્પજ્ઞે ।

જાળંતે યા વિ પુણો, કજ્ઞેમુ બહુપ્પગારેસુ ॥૫૬૧૫॥

૧ લોહ, इत्यपि पाठः । २ कुब्बते, इत्यपि पाठः । ३ परिहृते, इत्यपि पाठः ।

जे भिक्षू कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयरणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणमकंताणि वा कणमखंसियाणि वा कणमचित्ताणि वा कणमविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ, करेतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१२॥

जे भिक्षू कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयरणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणमकंताणि वा कणमखंसियाणि वा कणमचित्ताणि वा कणमविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा धरेइ, धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्षू कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयरणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणमकंताणि वा कणमखंसियाणि वा कणमचित्ताणि वा कणमविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

अजिणादी वत्था खलु, जत्थियमेत्ता उ आहियामुत्ते ।

ताइं कुतूहलेणं, परिहंते आणमादीणि ॥५६१६॥

चित्थियपदमणप्पज्जे, परिहे अविकोविते व अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६१७॥

जे भिक्षू इत्यादि । करेति धरेति निगद्वेति, एयं लोहं सुत्ते आभरणं सुत्तं, अङ्गणादि जाव वत्थमुत्तं ।

एतेसि सुत्ताण भासगाहण य अत्थो जहा सत्तमुद्देशगे तथा भाणियव्वो, णवरं— तत्थ माउगाभस्स मेहुणपडियाए करेति, इह पुण कोउयपडियाए करेति । इह चउलहुं पच्छितं । सेसं उस्सगाववादेहि सविस्थरं तुल्लं, णवरं— अत्रवादे कज्जेमु बडुप्पगारेसु ति जहा ओमे तण्णमालियाओ दाणसद्दादियाण अम्मत्थिओ करेति विनकयट्ठा वा काउ धरेति, कारणे परत्तिगट्ठिते वा पिण्डति । एवं सेसा वि उवउज्जितं भावेयव्वा ॥५६१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा यमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा यमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोल्लावेज्ज वा उवट्ठावेज्ज वा
उल्लोल्लावेतं वा उवट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोल्लावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

❀

❀

❀

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पथोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स —

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संवाहावेज्ज वा पलिमहावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेन्नेण वा चएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा
मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्वेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पथोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

❀

❀

❀

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरणं तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेज्ज वा विच्छिंदावेज्ज वा
अच्छिंदावेतं वा विच्छिंदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरणं तिकखेणं सत्थजाएणं अच्छिंदावित्ता विच्छिंदावित्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जा निग्गंथी निग्गंथस्स -

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,

अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
 अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
 पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता सीओदगवियडेण वा
 उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पथोयावेज्ज वा
 उच्छोलावेत्तं वा पथोयावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स --

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
 सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पथोयावेत्ता
 अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेज्ज वा विलिंपावेज्ज वा
 आलिंपावेत्तं वा विलिंपावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स --

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
 सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पथोयावेत्ता
 अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेत्थेण वा
 षएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा
 अब्भंगावेत्तं वा मक्खावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स --

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
 सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पथोयावेत्ता
 अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेत्थेण वा
 षएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेत्ता मक्खावेत्ता
 अन्नयरेणं धूवणजाएणं धूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा
 धूवावेत्तं वा पधूवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

❀

❀

❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अंगुलीए निवेसाविय निवेसाविय नीहरावेइ
नीहरावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाओ नहसिहाओ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं जंघरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं कक्खरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं संसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं चक्खुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥



जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आर्षंसावेज्ज वा
पर्षंसावेज्ज वा, आर्षंसावेतं वा पर्षंसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥
* * *

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा
मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जा निगंथी निगंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, कूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जा निगंथी निगंथस्स -

दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जा निगंथी निगंथस्स -

दीहाइं अच्छिपत्ताइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

❀

❀

❀

जा निगंथी निगंथस्स -

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जा निगंथी निगंथस्स -

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पल्लिमद्दावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पल्लिमद्दावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जा निगंथी निगंथस्स -

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घण्ण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

❀

❀

❀

जा निगंथी निगंथस्स -

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्रेण वा कक्केण वा उल्लोल्लावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोल्लावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदग्गवियडेण वा उसिणोदग्गवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पथोथावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पथोथावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

❀

❀

❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

गामाणुगामं दइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

आमज्जनं सकृत् पुनः पुनः प्रमार्जनं ।

जा समणि संजयाणं, गिहिणो अहवा वि अण्णतित्थीणं ।

पादप्पमज्जणमादी, कारेज्जा आणमादीणि ॥५६१८॥

आदिमहातो सत्राधनादिसुता पंच, कायसुता छ, वणसुता छ, गंडसुता छ, पालुकिमिसुतं, गहसिहा रोमाती-मंसुसुतं च एते तिण्ण, दत्तसुता तिण्ण, उत्तरोट्ट [नासिगा] सुतं च, अचिच्छतामज्जणसुता तिण्ण (छ) भमुहसुतं, सेयसुतं, अचिच्छमलातिमुतं, सीसदुवारियसुतं च । एते (एग) अत्तालीसं सुता 'तत्तिमोद्देसगममेण भाणियन्वा । तत्थ समं करण, इह पुण णिमंथीणं समणस्स अण्णतित्थिएण गारत्थिएण कारवेति ति विसेसो ॥५६१८॥

इमं अधिकयसुते भणति -

समणाण संजतीहिं, अस्संजतएहि तह गिहत्थेहिं ।

गुरुगा गुरुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५६१९॥

संजतीभी जति समणस्स पायप्पमज्जणादी करेति तो चउगुहगा, असंजतीभी ति गिहत्थीभी जति करेति तत्थ वि चउगुहगा, गिहत्थपुरिसा जति करेति तो चउलहुगा, आणादिणो य दोसा भवति ॥५६१९॥

मिच्छत्ते उड्ढाहो, विराहणा फासभावसंबंधो ।

पडिगमणादी दोसा, भुत्ताभुत्ते य णायव्वा ॥५६२०॥

इत्थिवाहि कीरतं पासित्ता कोइ मिच्छत्तं मच्छेज्जा, एते काव्हिय ति काइं । संजमविराहणा य । इत्थिफासे मोहोदयो परोपरभो वा फासेण भावसंबंधो हवेज्जा, ताहे पडिगमणं अण्णतित्थियादि दोसा । अहवा - फासतो जो भुत्तभोगी सो पुववरयादि संभरिज्जा । अहन्ना - चित्तिज्ज एरिसो मम भोइयाए फासो, एरिसो वा मम भोइया प्रासि । अभुत्तभोइस्स इत्थिफासेण कोउणदि विभासा ॥५६२०॥

दीहं च णीससेज्जा, पुच्छा किं एरिसेण कहिएणं ।

मम भोइयाए सरिसी, सा वा चलणे वदे एवं ॥५६२१॥

सो वा संजभी संजतीए पमज्जमाणीए दीहं णीससिज्जा ।

ताहे सा पुच्छति - किमेयं दीहं ते णीससिधं ?

सो भणति - कि एरिसेण कहिएणं ति ? निव्वचे कहेइ, "मम भोइयाए सरिसी तुमं ति ।" सा वा चलणे पमज्जंती दीहं णीससेज्जा । पुच्छा कहणं च एवं चेव । एते संजतीहिं दोसा ॥५६२१॥

एते चेव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।

आतपरभोहुदीरण, बाउस तह सुत्तपरिहाणी ॥५६२२॥

गिहत्थीसु अतिरित्तदोसा - पच्छकम्मं इत्ये सीतोदकेण पक्खासेज्जा, पादामज्जणादीहि य उज्जलवेसस्स अण्णो मोहो उदीज्जेज्जा, सोभामि, [वा] ग्रह को मे एरिसं ण कामेति ति गव्वो हवेज्ज, तं वा उज्जलवेसं दट्ठुं अण्णोहि इत्थियाणं मोहो उदिज्जेज्ज, सरीरबाउसत्तं च कत्तं भवति, जाउ तं करेति ताव सुत्तत्थपलियंथो भवेज्जा ॥५६२२॥

१ तृतीयोद्देशके तु १६ संख्यकसूत्रादारभ्य ६१ संख्यकसूत्रपर्यन्त ५३ संख्याकानि सूत्राणि भवन्ति ।

संपातिमादिघातो, विवज्जओ चेव लोपपरिवाओ ।

गिहिण्हि पच्छकम्मं, तम्हा समणेहि कायव्वं ॥५६२३॥

पमज्जमणी संपातिमे अघिषाएज्जा अजयत्तेणे । “विवज्जतो” ति साधुणा विभूमापरिवज्जिएण होयव्वं, भणियं च “विभूसा इत्थिसंभो” सिलोभो, एयस्स विवरीयकरणं विवज्जतो भवति । लोप-परिवादो ति, जारितं सेवेसग्गहणं एरिसेण अनिवृत्तेन भवितव्यं । एवमादि इत्थोमु दोसा । गिहत्थपुरिसेसु वि इत्थिफासादिया मोत्तुं एते चेव दोसा पच्छकम्मं च ॥५६२३॥

इमे य दोसा –

अयते पप्फोडेंते, पाणा उप्पीलणं च संपादी ।

अतिपेत्तलणम्मि आता, फोडण खय अट्ठिभंगादी ॥५६२४॥

संजओ अजयणाए पप्फोडेंतो पाणे अभिहण्जेज्ज, बहुणा वा दवेण धोवंतो पाणे उप्पिलावेज्ज, खिल्लरब्धे वा संघातिमा पडेज्ज । एस संजमविराधणा ।

आयविराधणा इमा – तेण गिहिणा अतीव पेत्तिलओ पादो ताहे संघी विकरेज्ज, फोडणं ति गित्थरमत्तेण णहादिणा वा खयं करेज्ज, अट्ठि वा भजेज्ज ॥५६२४॥

एते चेव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।

गिहिण्हि पच्छकम्मं, कुच्छा तम्हा तु समणेहि ॥५६२५॥

गतार्था । किं चि विसेसो – पुव्वद्वेण गिहत्थो भणिता, पच्छद्वेण गिहत्था । दो वि पाए पप्फोडेंतो कुच्छं करेज्ज, कुच्छंतो य पच्छाकम्मसंभवो । जम्हा एते दोसा तम्हा समणाण समणेहि कायव्वं, समणीण समणीहि कायव्वं, णा गिहत्था अण्णतितिया वा छदेयव्वा ॥५६२५॥

वितियपदमणप्पज्भो, अट्ठाणुच्चाते अप्पणा उ करे ।

सज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥५६२६॥

अणप्पज्भो कारवेज्जा, अणप्पज्भस्स वा कारविज्जति, अट्ठाणे पडिक्कणो वा अतीव उच्चाओ पमज्जणादिपदे अप्पणो चेव जयणाए करेज्ज, अप्पणो असत्तो संघेहि कारवेज्जा ॥५६२६॥

असती य संजयणं, पच्छाकडमादिण्हि कारेज्जा ।

गिहि-अण्णतित्थिएहिं, गिहत्थि-परतित्थितिविहाहिं ॥५६२७॥

असति संजयणं पच्छाकडेंहि कारवेत्ति । तयो साभिग्गहेहि, ततो णिरभग्गहेहि । ततो अहाभग्गहि । ततो णियत्तएहि मिच्छदिट्ठीहि । ततो अभिग्गहियमिच्छादिट्ठीहि । ततो अण्णतित्थिएहि मिच्छदिट्ठिपादिण्हि । पुव्वं असोयवादीहि, पच्छा सोयवादीहि । ततो पच्छा “गिहत्थिपरतित्थितिविहाहि” ति । ततो गिहत्थोहि णालवद्धाहि अणालवद्धाहि, तिविधाहि येरमउत्तमतत्तणीहि, एवं परतित्थिणीहि वि संजतीहि वि एवं चेव । ॥५६२७॥

एसो चेव अत्थो वित्थरतो अण्णति, ततो पच्छा “गिहत्थिपरतित्थितिविहाहि” ति, गिहत्थो दुविहा – णालवद्धा अणालवद्धा य ।

१ दशवै० अ० ८ पा० ५७ ।

ततो इमाहि गिहत्वीहि णालबद्धाहि -

माता भगिणी धूया, अज्जियणीयन्लयाण असतीए ।

अणियल्लियथेरीहि, मज्झ-तरुण-अण्णतित्थीहि ॥५६२८॥

माता भगिणी धूया अज्जिया गत्तुगी य । एतेसि असतीते एयाहि चेव अण्णतित्थिणीहि, एतेसि असतीए णालबद्धाहि गिहत्वीहि तिविधाहि कमेण घेर-मज्झम-तरुणीहि, तद्यो एयाहि चेव अण्णतित्थियाहि तिविधाहि ॥५६२८॥

तिविहाण वि एयासिं, असतीए संजतिमातिभगिणीहि ।

अज्जियभगिणीणऽसती, तप्पच्छाऽविसेसतिविहाहि ॥५६२९॥

अणालबद्धाणं घेर-मज्झम-तरुणीणं असति संजतीतो माता भगिणी धूया य अज्जियणत्तुममादितातो करेति, ततो पच्छा अवसेसातो अणालबद्धातो तिविहायो घेर-मज्झम-तरुणीयो करावेति करेति वा ॥५६२९॥

एयम्मि चेव अत्थे अण्णावरियकथा इमा गाहा -

माता भगिणी धूया, अज्जिय णत्तीय सेसतिविहा उ ।

एतासिं असतीए, तिविहा वि करेति जयणाए ॥५६३०॥

एयासिं असतीए त्ति मायभगिणिमादियाणं असति सेसतिविहाउ त्ति अणालबद्धातो •संजतीतो तिविधातो घेरमज्झमतुरुणीयो, जयणा जहा फाससंबद्धाणि ण भवति तथा कारवेति करेति वा ॥५६३०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा

आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संवाहावेज्ज वा पलिमद्वावेज्ज वा

संवाहावेतं वा पलिमद्वावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा

भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उवट्टावेज्ज वा

उल्लोलावेतं वा उवट्टावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

❀

❀

❀

जे निगमंथे निगमंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संबाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संबाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णव्वणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्वेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા ફૂમાવેજ્જ વા
રયાવેજ્જ વા ફૂમાવેતં વા રયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૭૬॥



જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યંસિ વળં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા
આમજ્જાવેજ્જ વા પમજ્જાવેજ્જ વા
આમજ્જાવેતં વા પમજ્જાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮૦॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યંસિ વળં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા
સંબાહાવેજ્જ વા પલિમદાવેજ્જ વા
સંબાહાવેતં વા પલિમદાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮૧॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યંસિ વળં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા તેલ્લેણ વા ઘણ વા
વસાણ વા ણવળીયણ વા મક્કલાવેજ્જ વા મિલિંગાવેજ્જ વા
મક્કલાવેતં વા મિલિંગાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮૨॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યંસિ વળં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા
લોદ્ધેણ વા કક્કેણ વા ઉલ્લોલાવેજ્જ વા ઉચ્ચટ્ટાવેજ્જ વા
ઉલ્લોલાવેતં વા ઉચ્ચટ્ટાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮૩॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યંસિ વળં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા
સીઓદગવિયડેણ વા ઉમ્મિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્ચ્છોલાવેજ્જ વા
પથોયાવેજ્જ વા, ઉચ્ચ્છોલાવેતં વા પથોયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮૪॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

કાર્યંસિ વળં અણ્ણઉત્થિયણ વા ગારત્થિયણ વા ફૂમાવેજ્જ વા
રયાવેજ્જ વા, ફૂમાવેતં વા રયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮૫॥



जे निगमंथे निगमंथीए —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेज्ज वा विच्छिदावेज्ज वा
अच्छिदावेतं वा विच्छिदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८६॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा आंसयं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८७॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता मीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पथोयावेज्ज वा
उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८८॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
मीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पथोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलियणजाएणं आलिपावेज्ज वा विलिपावेज्ज वा
आलिपावेतं वा विलिपावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

जे निगमंथे निगमंथीए —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता

સીઓદગવિયહેણ વા ઉસિણોદગવિયહેણ વા ઉચ્છોલાવેત્તા પધોયાવેત્તા
અન્નયરેણં આલેવણજાણં આલિંપાવેત્તા વિલિંપાવેત્તા તેન્લેણ વા
ઘણ વા ઘસાણ વા ણવળીણ વા અબ્મંગાવેજ્જ વા મક્સાવેજ્જ વા
અબ્મંગાવેતં વા મક્સાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૦॥

જે નિગમંથે નિગમંથીણ —

કાર્યસિ ણંદં વા પિલ્લં વા અરહ્યં વા અસિયં વા ભગંદલં વા,
અણ્ણઉત્થિણ વા મારત્થિણ વા અન્નયરેણં તિક્કલેણં સત્થજાણં
અચ્છિદાવેત્તા વિચ્છિદાવેત્તા પૂયં વા સોણિયં વા નીહરાવેત્તા દિસોહાવેત્તા
સીઓદગવિયહેણ વા ઉસિણોદગવિયહેણ વા ઉચ્છોલાવેત્તા પધોયાવેત્તા
અન્નયરેણં આલેવણજાણં આલિંપાવેત્તા વિલિંપાવેત્તા તેન્લેણ વા
ઘણ વા ઘસાણ વા ણવળીણ વા અબ્મંગાવેત્તા મક્સાવેત્તા
અન્નયરેણં ધૂવણજાણં ધૂવાવેજ્જ વા પધૂવાવેજ્જ વા
ધૂવાવેતં વા પધૂવાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૧॥

જે નિગમંથે નિગમંથીણ —

પાલુકિમિયં વા કુચ્છિકિમિયં વા અણ્ણઉત્થિણ વા મારત્થિણ વા
અંગુલીણ નિવેસાવિય નિવેસાવિય નીહરાવેદ
નીહરાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૨॥

જે નિગમંથે નિગમંથીણ —

દીહાઓ નહસિહાઓ અણ્ણઉત્થિણ વા મારત્થિણ વા
કપ્પાવેજ્જ વા સંઠવાવેજ્જ વા
કપ્પાવેતં વા સંઠવાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૩॥

જે નિગમંથે નિગમંથીણ —

દીહાઈં જંધરોમાઈં અણ્ણઉત્થિણ વા મારત્થિણ વા
કપ્પાવેજ્જ વા સંઠવાવેજ્જ વા
કપ્પાવેતં વા સંઠવાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૪॥

જે નિગમંથે નિગમંથીણ —

દીહાઈં કક્કલરોમાઈં અણ્ણઉત્થિણ વા મારત્થિણ વા
કપ્પાવેજ્જ વા સંઠવાવેજ્જ વા
કપ્પાવેતં વા સંઠવાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૫॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं संसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं चक्खुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

*

*

*

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आघंसावेज्ज वा
पघंसावेज्ज वा, आघंसावेतं वा पघंसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छेलावेज्ज वा
पथोयावेज्ज वा, उच्छेलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

*

*

*

जे निगंथे निगंथीए —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मंथाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा
मंथाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

ઉદ્ધે અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા તેલ્લેણ વા ઘણ વા
વસાણ વા ણવળીએણ વા મક્કલાવેજ્જ વા મિલ્લિંગાવેજ્જ વા
મક્કલાવેતં વા મિલ્લિંગાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦૪॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

ઉદ્ધે અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા લોદ્ધેણ વા કક્કેણ વા
ઉલ્લોલાવેજ્જ વા ઉવ્વટ્ટાવેજ્જ વા
ઉલ્લોલાવેતં વા ઉવ્વટ્ટાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦૫॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

ઉદ્ધે અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા અપ્પણો સીઓદમવિયડેણ વા
ઉસિણોદમવિયડેણ વા ઉચ્છોલાવેજ્જ વા પધોયાવેજ્જ વા
ઉચ્છોલાવેતં વા પધોયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦૬॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

ઉદ્ધે અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા કૂમાવેજ્જ વા
રયાવેજ્જ વા, કૂમાવેતં વા રયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦૭॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીસ્સ —

દીહાઈં ઉત્તરોટ્ટાઈં અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા
કપ્પાવેજ્જ વા સંઠવાવેજ્જ વા
કપ્પાવેતં વા સંઠવાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦૮॥

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

દીહાઈં અન્હિપ્પત્તાઈં અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા
કપ્પાવેજ્જ વા સંઠવાવેજ્જ વા
કપ્પાવેતં વા સંઠવાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦૯॥

ૐ

ૐ

ૐ

જે નિર્ગંથે નિર્ગંથીએ —

અચ્છીણિ અણ્ણઉત્થિએણ વા મારત્થિએણ વા
આમજ્જાવેજ્જ વા પમજ્જાવેજ્જ વા
આમજ્જાવેતં વા પમજ્જાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૧૦॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१११॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा जवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिलिंगावेतं वा सातिज्जति ॥सू॥११२॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११३॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उप्पिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू॥११४॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा ग्यावेज्ज वा
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११५॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाई भुमगरोमाई अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११६॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाई पासरोमाई अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११७॥

जे निगंथे निगंथीए -

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११८॥

जे निगंथे निगंथीए -

कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा सल्लं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११९॥

जे निगंथे निगंथीए -

गामाणुगामं दूहज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीसदुवारियं कारावेह, कारावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२०॥

मुत्ता एषकृत्तालीसं ततिमोहसगमेण जाव सीसदुवारेति सुत्तं ! अत्थो पूर्ववत् ।

एसेव गमो णियमा, णियमंथीणं पि होइ णायळो ।

कारावण संजतेहि, पुच्चे अवरम्मि य पदम्मि ॥५६३१॥

संजतो गारत्थिमादिहि संजतीणं पादमज्जणाती कारवेति, उत्तरोद्धुसुत्तं ण संभवति, अलक्षणाए वा संभवति ॥५६२९॥

जे निगंथे निगंथस्स सरिसगस्स अंतो ओवासे संते ओवासे

न देह, न देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२१॥

णिगयगंथो अंतो वसहीए अतसंजमगुणादीहि तुल्लो सरिसो संतमिति विज्जमाणं ओवासो ति - अयमासो - स्थानमित्यर्थः । अदेतस्स चउलह ।

इमो सरिसो -

ठितकप्पम्मि दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहमण्णतरे ।

उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिसकप्पो स सरिसो उ ॥५६३२॥

दसविहो ठियकप्पो इमो -

आचेलक्कुदेसिय, सेज्जायर रायपिंड किङ्कम्मे ।

वय जेड्ड पडिक्कमणे, भासं पज्जोसवणकप्पे ॥५६३३॥

इयस्स वि 'आचेलको धम्मो, इयस्स वि उदेसियं ण कप्पइ ; एवं सेज्जायरपिंडो रायपिंडो य ।

कितिकम्मं दुविधं - अम्भुद्वाणं बंदणं च । तं दुविहं पि इमोवि जहारुहं करेति, इमो वि जहारुह । अघवा - कितिकम्मं सव्वाहि संजतीहि अज्जदिविषयस्स वि संजतस्स कायव्वं दो वि तुल्लमिच्छति ।

१ आचेलको, इत्यपि पाठः ।

इमस्स वि पंच महज्जयाणि । जो पढमं पंचमहज्जयाकूडो सो जिहो सामाए वा ठविओ । इमस्स वि इमस्स वि
अडयारो होउ मा वा, उअयसंके इमस्स वि इमस्स वि पठिक्कमति । उदुबद्धे मासं मासं एयत्थं अज्जंति
इमस्स वि इमस्स वि । चत्तारि मासा वासासु पज्जोसवणकप्पे ण विहरंति इमस्स वि इमस्स वि । एसो
दसविहो ठियकप्पो ॥५६३३॥

ठवणाकप्पो दुविहो - अकप्पठवणाकप्पो सेहठवणाकप्पो य -

आहार उवहि सेज्जा, अकप्पिएणं तु जो ण गिण्हावे ।

ण य दिक्खेति अण्डा, अडयालीसं पि पडिक्कुट्टे ॥५६३४॥

आहार-उवहि-सेज्जं अकप्पियं ण गिण्हति । एव अकप्पठवणा । सेहठवणाकप्पो - अट्टारसं पुरिसेसु,
वीसं इत्थोसु, दस णपुसेसु, एते अडयालीसं ण दिक्खेइ णिक्कारणे ॥५६३४॥

सो वि इमो 'उत्तरगुणकप्पो -

उगमविसुद्धिमादिसु, सीलंगेसुं तु समणधम्मोसु ।

उत्तरगुणसरिसकप्पो, विसरिसधम्मो विसरिसो उ ॥५६३५॥

पिडस्स जा विसोही ॥ गाहा ॥

तस्य उगमसुद्धं गेह्ति, आदिसद्दामो उप्पायणएसणातो, समितीमो पंच, भावणा बारस, तवो
दुविहो, पडिमा बारस, अभिगहा दब्बादिया, एते सीलंगगहणेण सहिया । अहवा - सीलंगगहणाओ
अट्टारससीलंगसहस्सा । एयम्मि ठितकप्पे उत्तरगुणकप्पे वा जो सरिसकप्पो सो सरिसो भवति, जो पुण एतेसि
ठाणाणं अण्णपरे वि ठाणे सीदति सो विसरिसधम्मो भवति ।

अहवा - ठियकप्पे दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहे, गियमा सरिसो । उत्तरगुणे पुण केसु विसरितो
चेव, जहा तवपडिगभिगहेसु ॥५६३५॥

अहवा सरिसो इमो -

अण्णो वि य आएसो, संविग्गो अहव एस संभोगी ।

दोसु वि य अधीगारो, कारणे इतरे वि सरिसाओ ॥५६३६॥

जो संविग्गो सो सब्बो चेव सरिसो, अहवा - जो संभोइमो सो सरिसो । अहवा - कारणं पप्प
इयरे ति - पासत्यअसंभोहिता ते वि सरिसा भवंति ॥५६३६॥

जो तस्स सरिसगस्स तु, संतो वा से ण देति ओवासं ।

णिक्कारणम्मिं लहुया, कारणे गुरुमा य आणादी ॥५६३७॥

संतमोवासं निक्कारणियमगयस्स जइ ण देति तो चउलहुं । संतमोवासं कारणियमगयस्स जइ न
देइ तो चउशुक्, आणादिया य दोसा ॥५६३७॥

इमे कारणा जेहि आमओ -

उदगागणितेणोमे, अट्ठाण गिलाण मावयपउट्टे ।

एतेहि कारणिओ, णिक्कारणिओ य विवरीओ ॥५६३८॥

अण्णगामे सण्णगामे वा अण्णवसधीए साधु ठिता, तेमि सा वसती उदकेन प्लावितः अण्णगिणा वा दइडा ते आगगा, तेण-सावयमुदुदुहि वा उवहुविज्जमाणा सरणमागया, अट्ठाणपडिक्कणा वा, वेज्जोसहकम्भेसु वा गिलाणट्ठमागयस्स एवमादिएहि पयोपणेहि जो आगतो सो कारणिमो । मतो विवरोमो दप्पतो आगतो गिक्कारणिमो ॥५६३८॥

वसहि अभावे बहि वसंतस्स इमे दोसा -

कूयरदंसमसोससीता, सावय-वाल-सतक्करगा वा ।

दोस बहु वसतो बहितो जे, ते सविसेस उव्विति अदंते ॥५६३९॥

कुच्छियचरा कुचरा पारदाटिकादि तेहि उवहुविज्जति, दंसमगादीहि वा सज्जति, उम्मादि वा जलं सीतं वा पडति, सीहादिसावण सप्पादियालेण वा सज्जइ, तक्करे ति चोरा तेहि वा मुस्संति हरिज्जति । एवमादि बहि वसते बहुदोसा । जे तस्स साधुस्स बहि वसतो दोसा ते सव्वे उव्वेति ति - अवति अदंतस्स । जं तेसु पच्छित्तं तं सव्वं अदंतस्स भवतीत्यर्थः ॥५६३९॥

किं चान्यत् -

एगद्धा संभोगो, जा कारुवकारिता परोप्परओ ।

अविचित्ताऽवच्छल्ला, हवंति एवं तु छेदो य ॥५६४०॥

अविचित्ताभावा अदंतस्स अवच्छलता य भवति, संभोगवोच्छिन्ती, साहम्मियवच्छस्सवोच्छिन्ती वा, अहवा - पवयणवुच्छिन्ती वा, तम्हा साहुणा साहुस्स दइमोहिण होयव्वं ॥५६४०॥

जति एककमाणजिमित्ता, निहिणो वि हु दीहसोहिया होंति ।

जिणवयणबाहिभूया, धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥५६४१॥ कंठ्या

किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुंजिऊण समणेणं ।

सक्का हु एककमेक्के, निगणं पि व रक्खितो देहो ॥५६४२॥

आवत्तीए जहा अप्पं रक्खति तथा अण्णो वि आवत्तीए रक्खयव्वो ॥५६४२॥

एवं खेते अखेत्ते वा वसवाए वासो दातव्वं । असंथरणे खेते वि अन्नगच्छस्स अवगासो दातव्वो ।

जतो भण्णति -

अत्थि हु वसभग्गामा, कुदेस-णगरोवमा सुहविहारा ।

बहुगच्छुवग्गहकरा, सीमाछेदेण वसियव्वा ॥५६४३॥

अत्थि ति-विज्जए वसभग्गामो नाम जत्थ उट्ठवडे आयरिमो अप्पवित्तिमो गणावच्छेमो अप्प-तत्तिमो एस् पंच, एतेण पमाणेणं जत्थ तिणि गच्छा परिवसति एयं वसभखेतं ।

बासासु आयरिमो अप्पतत्तितो, सणावच्छेत्तितो अप्पवउत्थो एते सत्त, एतेणं पमाणेण जत्थ तिणि गच्छा परिवसति एयं वसभखेतं । एते एककवीसं, एयं वसभखेतं । कुच्छिमो देसो कुदेसो उव्वमिज्जति जो गमो कुदेस-णगरोवमो, सो य सुहविहारो सुलभभत्तपाणं वसधी वत्थं गिरुवएवं अ नुप्रभृतिवहूवं पुव्वभणिं सत्थप्पमाणेण उव्वमाहे वट्ठति, ते य बहुगच्छा जति सम टिया तो स.धारणं खेतं ।

तत्थ सीमच्छेदेण वसियव्वं, इमो सीमच्छेदे -

तुम्हं सचित्तं, अम्हं अचित्तं ।

अहवा—तुम्ह बाहि, अम्ह अतो । तुम्ह इत्थी, अम्ह पुरिसा ।

अहवा—तुम्ह सगामो अम्ह वाताहुडा कलेहि वा वाडगसाहाहि वा उम्हामोहि ।

अहवा—जं लब्धति तं सर्वं सामर्थ्यं ।

अहवा—जो जं साही तस्स तं । एवं सीमच्छेदेण वसियव्वं, ओ अधिकरणं कायव्वं । परस्से वि सत्तियव्वेण सीमच्छेदो कायव्वो । खित्तएण वि अमायाविणा भवियव्वं ॥५८३॥

भवे कारण ण देजा वि —

वित्तियपदं पारंचिय, असिव गिलाणे य उत्तमहे य ।

अव्वोच्छित्तोवासे, असति णिककारणे जतणा ॥५८४॥

पारंचिय असिवस्स इमा विभासा —

पारंचिओ ण दिज्ज व, दिज्जति व ण तस्सुवस्सए ठाओ ।

दुविहे असिवे बाहि, ठितपडियरणं च ते वा वी ॥५८५॥

पारंचिओ अणोसि अणो ठाणं ण देज्जा, पारंचियस्स वा ठाओ न दिज्जति, असिवगहियस्स ण दिज्जति, असिवगहियो वा वसहीए ठाणं ण देज्ज, असिवगहियस्स अणवसहिठियस्स वेयावच्चं कायव्वं, अणवसहिठियो वा असिवगहियाण वेयावच्चं करेइ । दुविहं पुण असिवं । चउभगे पच्छिमा जा दो भगा साहु अभहा ॥५८४५॥

इयाणि गिलाण उत्तिमट्टाण विभासा —

अतरंतमिगावण्हि, मिगपरिसा वा तरंतो अण्णत्थ ।

एमेव उत्तिमहे, समाहि पाणादि उभयम्मि ॥५८४६॥

जेसि अतरंतो अत्थि सो य आगंतुगो मिगो अगोयत्थो होज्ज अपरिणामो वा ताहे सो अणवसहीए ठविज्जति. अहवा — गिलाणो आगमो वत्थव्वाण य मिगपरिसा ताहे सो गिलाणो अणत्थ ठविज्जति, एवं उत्तिमट्टपडिवणो वि समाहिमिमितं पाणादि दायव्वं । तत्थ “उभयम्मि” ति जति आगंतुगो मिगो तो अणवसहीए ठविज्जति । अह वत्थव्वमपरिसा मिगा तो उत्तिमट्टपडिवणो अणवसहीए ठविज्जति ॥५८४६॥

अव्वोच्छित्तिविभासा इमा —

छेदसुतणिसीहादी, अत्थो य गतो य छेदसुत्तादी ।

मंतनिमिच्चोसहिपाहुडे, य गाहंति अण्णत्थ ॥५८४७॥

णिसीहमादियस्स छेदसुत्तस्स जो अत्थो आगतो मुत्तं वा मोक्कनाणि वा पच्छित्तविहाणाणि मताणि वा जोणिपाहुडं वा गाहंतो अभत्थ वा गाहंति अणत्थ वा ते मिगा ठविज्जति, जत्थ वसहीए वा दिज्जति तत्थ मिगाण ओवासो ण दिज्जति ।

एव तः णिककारणे पारंचियादयाण ओवासो ण दिज्जते ॥५८४७॥

इमा अवकादे अववादो — पुणो इमं कारणमविविखण्णं असिवादिके पारंचियादीण वि ओवासो दिज्जति —

१ गा० ५८४७ । २ गा० ५८४७ ।

जा निगन्धी निगन्धीए सरिसियाए अंते ओवासे संते ओवासे-

न देह न देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२२॥

एसेव गमो णियमा, निगन्धीणं पि होइ नायव्वो ।

पुव्वे अवरे य पदे, एगं पारंचियं मोत्तुं ॥५६४८॥ कठ्ठा

णवरं - भववादपदे संजतीण पारंपियं गत्ति ।

जे भिक्खू मालोहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२३॥

मालोहडं पि तिविहं, उडूमहो उभयओ य णायव्वं ।

एक्केक्कं पि य दुविहं जहण्णमुक्कोसयं चेव ॥५६४९॥

उडूमालोहडं विभूमादिस्, अहोमालोहडं भूमिघरादिस्, उभयमालोहडं मंचादिस्, समश्रेणिस्थितः, अहवा - कुडिमादिस् भूमिद्वितो मधोसिरो जं कट्ठति । अगतेलेहि ठाउ जं उत्तारेइ तं जहणं । पीढगादिस् जं आरोहु उत्तारेइ तं सव्वं उक्कोसं ॥५६४९॥

भिक्खू जहण्णयम्मी, गेरुत्त उक्कोसयम्मि नायव्वो ।

अहिदसण मालपडणे, एवमादी तहिं दोसा ॥५६५०॥

निक्कताओ उभारिउकामा साहुणा पडिसिद्धा तच्चवन्नियट्ठा गिण्हइ अहिणा ढक्का मया । मालाओ उभारिउकामा साहुणा पडिसिद्धा परिव्वायगट्ठा उत्तारेंती दडिया, जंतखीलेण पोट्टं काडियं मया ॥५६५०॥

इमे उक्कोसे उदाहरणा -

आसंद पीढ मंचग, जंतोदुक्खलपडंत उभयवहो ।

दोच्छ्रेय-पदोसादी, उट्टाहमणा णिवातो य ॥५६५१॥

सेसं पिंडणिज्जुत्ति-अणुसारेण भाणियव्वं ।

इमा सोही -

सुत्तणिवातो उक्कोसयम्मि तं खंधमादिसु हवेज्जा ।

एतेसामण्णतरं, तं सेवंतम्मि आणादी ॥५६५२॥

उक्कोसे चउलहुं, जहणो मासलहुं, सेमं कठं ।

इमं वितियपदं -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे मए व गेलण्णे ।

अद्धाणरोहए वा, जयणामहणं तु गीयत्थे ॥५६५३॥

अणोणसो गतत्था । णवरं-गीयत्थो पणवपरिहाणीए जयणाए गेण्हइ ॥५६५३॥

जे भिक्खू कौट्टियाउत्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

उक्कुज्जिय निक्कुज्जिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२४॥

पुरिसप्यमाणा हीणाधिया वा विनसल्लमती कोट्टिया भवति, कलिजो णाम वंसमयो कडवत्तो मट्ठती वि भण्णाति । अण्णे भण्णाति - उट्ठियाउवरि कृत्तिकरणं उक्कुज्जियं, उट्ठिए तिरियहुत्तरणं भवकुज्जियं, उहरिय ति - पेठियमादिमु अरुमिडं ओमारति । अथवा - कायं उच्चं करेज्जा उक्कज्जियहंडायत्तं तद्धं गृण्हाति, कायं उट्ठं कृत्वा गृण्हाति - उण्णमिय इत्यर्थः ।

कोट्टियमादीएसुं, उभओ मालोहंडं तु णायव्वं ।

ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति वितियपयं ॥५६५४॥

एवं उभयमालोहंडं दसियं कृत्वा ते चेव दोसा वितियपयं च ।

जे भिक्खु मट्ठिओलित्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

उब्भिंदिय निब्भिंदिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२५॥

अथपाणिषादिभाषणे कूटं तं पिहितं सरावणादिना मट्ठियाए उल्लिख्यं तं उब्भिंदियं दंतस्म जौ गेण्हइ तस्म चउल्लहं ।

पिहितुब्भिण्णकवाडे, फासुम अफासुमे य बोधव्वे ।

अफासु पुढविमादी, फासुगळ्ळमणादिदहरए ॥५६५५॥

उब्भिण्णं दुविधं - पिहुभिण्णं वा कवाडुभिण्णं च ।

पिहुभिण्णं दुविधं-फासुयं अफासुयं च । जं तं फासुयं तं अचिरां वा मीसं वा । अफासुयं पुढविमादि-
खसु काएसु जहासंभवं भाणियव्वं । जं फासुयं छगणेण अहवा - वत्थेण चम्मेण वा दहरियं । दहरपिहि-
उब्भिण्णे मासलहं, मेसपिहुभिण्णेसु चउल्लहं, अण्णेसु चउगुहं, परित्तमीसेसु मासलहं, अण्णेतमीसेसु मासगुहं,
साहुगिमित्तं उब्भिण्णे कयविककतेसु अचिकरणं कवाडपिहितुब्भिण्णं कुचियवेधे सालए वा आवत्तणपेठियाए वा
तसमःदिविराषणा । सेसं जहा पिडणिज्जुत्तीए ॥५६५५॥

एतंसामणगतं, पिहितुब्भिण्णं तु गेण्हती जौ तु ।

सो आणा अणक्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥५६५६॥ कंथा

असिवे ओमोयरिए, रायदुड्ढे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाया रोहए वा, जयणा महणं तु गीयत्थो ॥५६५७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविपत्तिद्वियं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२६॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउपत्तिद्वियं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२७॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तेउपत्तिद्वियं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२८॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सत्तिकायपतिट्ठियं पडिग्गाहंति
पडिग्गाहंतं वा सातिज्जति ॥५६०॥१२६॥

सच्चित्तमीसएसुं, काएसु य होति दुबिहनिक्खित्तं ।

अणंतर-परंपरे वि य, विभासियव्वं जहा सुत्ते ॥५६५८॥

पुत्रदारी काया ते दुविधा - सच्चित्ता मोसा वा । सचित्तं मु अणंतरणिक्खित्तं परंपरणिक्खित्तं वा ।
मोसं वि अणंतरणिक्खित्तं परंपरणिक्खित्तं वा । पिडणिज्जुत्तिगाहासुत्ते जहा तथा सवित्थरं भाणियव्वं ।
आयागन्नितियसुयक्खवे वा जहा सत्तमे पिडेसणासुत्ते तथा भाणियव्वं ॥५६५८॥

मुत्तणिवातो सच्चित्तऽणंतरे तं तु गेण्हती जो उ ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥५६५९॥

परित्तमचित्ते मु अणंतरणिक्खित्ते चउलहुं, एत्थ सुत्तं णिवयति । सचित्तपरंपरे मासलहुं, मीसअणंतरे
मासलहुं परंपरे पणमं, अणंते एते वेव गुरुणा पच्छित्ता ॥५६५९॥

चोदगाह -

तत्थ भवे णणु एव, उक्खिप्पंतम्मि तेसि आसासो ।

संजतिणिमित्ते घट्टण, थेरुवमाए ण तं जुत्तं ॥५६६०॥

पुत्रादिकायाण उवणि ठियं जं तम्मि उक्खिप्पंतं णणु तेसि आसासो भवति ?

आचार्याह - तम्मि उक्खिप्पंतं आ संघट्टणा मा संजयगिमित्तं, ताण य अण्णसंघयणाण संघट्टणाए
महंती वेदसा भवति ॥५६६०॥

एत्थ थेरुवमा -

जरज्जरो उ थेरो, तरुणेणं जमलपाणिमुद्धतो ।

जारिसंधेदण देहे, एगिदियघट्टिते तह उ ॥५६६१॥

जहा जरजुण्णदेहो थेरो बलवता तरुणेण जमलपाणिणा मुद्धे आहते जारिसंवेयणं
वेयति, ततो अधिकतर ते संघट्टिता वेणं अणुहवन्ति, तम्हा ण जुत्तं जं तुमं भणसि ॥५६६१॥

इमं वित्तियपदं -

असिथे ओमोयरिए, रायदुद्धे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥५६६२॥

पूर्ववत् । गीयत्थो इमाए जयणाए गहणं करंति - पृथ्वं मीसे परंपरद्वितो गेण्हति, ततो मीसे
अट्ठरो, ततो मच्छित्ते परंपरे, ततो सचित्ते अणंतरे, एवं अणंतकाए वि, एस परित्तान्तेसु कमो दरिसिओ
॥५६६२॥

गहणे पुण इमा जयणा -

पृथ्वं मीसपरंपर, मीसे ततो अणंतरे गहणं ।

सच्चित्त परंपरऽणंतरे य एमेव य अणंते ॥५६६३॥

पुत्रं परितो भीसे परंपरद्वितो गेष्ठति, ततो भीसग्रणंतपरंपरं, ततो सचित्तपरितपरंपरं, ततो
ग्रणंतभीसग्रणंतं, ततो ग्रणंतसचिन्तपरंपरं, ततो परित्तसचित्तग्रणंतं, ततो ग्रणंतसचित्तग्रणंतं आहारे
भगिषं ॥५६६३॥

आहारे जो उ गमो, णियमा सो चेव होइ उवहिम्मि ।

णायन्वो तु मतिमता, पुत्रे अवरम्मि य पदम्मि ॥५६६४॥ कंठ्या

जे भिक्खू अचुसिणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सुप्पेण वा
विहुणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा
साहाभंगेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा
हत्थेण वा मुद्देण वा फुमिच्चा वीइच्चा आहट्ट देज्जमाणं पडिग्गाहेइ
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३०॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उसिणुसिणं पडिग्गाहेइ
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३१॥

जे भिक्खू असणादी, उसिणं णिव्ववियसंजयट्ठाए ।

विहुवणमार्इएहिं, पडिच्छए आणमादीणि ॥५६६५॥

“णिव्वविय” ति उल्लवेऊअ, सेमं कंठ्या ।

उसिणे घेप्पंते इमे दोसा—

दायम-माहगडाहो, परिसडणे काय-लेव-णासो य ।

डज्झति करोति पादस्स छट्ठणे हाणि उट्ठाहो ॥५६६६॥

परिसडंते वा भूमिंते छवकायवहो, अचुसिणेण वा आणस्स लेवो डज्झति, उसिणे दिज्जमाणे वा करे
डज्झमाणो पायं तं छट्ठेज्ज, तम्मि भग्गे असति भायणस्स अप्पणो हाणो, बहु अमणादि परिट्टवियं दट्ठु
“बहि फोड” ति उट्ठाहो । जणो वा पुच्छति — “कहं डड्ढो” ? ति । मंजयस्स भित्तं देज्जमाणो जणे कुसने
उट्ठाहो ति ॥५६६६॥

इमो अववादो —

असिवे ओमोयरिए, रायदुडे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण रोहए वा, काले वा अतिच्छमाणम्मि ॥५६६७॥ पूर्ववत्

काले अतिच्छमाणे ति जाव तं परिकमेण सीतीभवति ताव प्राइसो उक्कथमं गच्छति । यतो
मृगदीहिं तुरियं सोयसिज्जति, ण, दोसो ॥५६६७॥

उसिणे पुण कारणे घेप्पंते इमा जयणा —

णिण्हति णिमीनितुं वा, सज्झए महीय वा उव्वेऊअं ।

पत्ताअंधगते वा, घोलणमहिते व जतणाए ॥५६६८॥

उपवसिता पदत्रयिणं नहा न उज्जति तथा गेहति । अहवा -- वचने मंचिहाए वा मज्जे भूमीए वा शब्दे ज्येता गेहति । पतत्रयधवतो वा गेहति । अच्युसिणं न पादद्वितं चोत्तेह, वा लेवो उज्जिहति । एवमए नममए कारणे गेहंतो घटोसो ॥१६६॥

ने भिक्षू उस्सेइमं वा संसेइमं वा चाउलोदमं वा वालोदमं वा तिलोदमं वा
तुमोदमं वा जवोदमं वा आगामं वा सोवीरं वा अंनंजियं वा
सुद्वनियउं वा अद्दुणा धोयं अणंजितं अपरिणयं अन्नकंजजीवं
अविद्वत्त्वं पडिग्गाहे पडिम्माहेतं वा सातिज्जति । ॥२॥१३२॥

ठस्सेतिमणादीया, पाणा कुचा उ अचिया सुचे !

तेसिं अण्णतरायं, मेव्हते आण्णदीणि ॥५६६॥

उत्तिष्ठं वीतोदये शुच्यति तं उस्मेदमप्यम्बं । नं पुष उत्तिष्ठं जेव उव्वरि वीतोदयेण जेव
 तिच्चिं तं उमेदम् । अह्वा - नसेत्तिम्, तिना उह्वापित्तिम् सिण्णं नत्ति वीतोदया धोवन्ति तो नसेत्तिम् जण्यति ।
 चाटणाप धोवन् चात्तोदयं । अणुया धोत्तं अविज्जासधोत्तं । रक्तो अण्वोयुम् । नं जीवेण सिण्णमुक्तं तं ककत्तं,
 न ककत्तं अयकत्तं, अनेनं निशं वा इत्थं । जम्बवज्ज्वरत्तं तं परिणम्, न वरिणम् अपरिणम् -
 स्वभाववर्जकमित्यर्थः । नं वण्णधरत्तमहेहि कमेहि ध्वस्तं तं विण्णत्तं, अयेणवा वा ध्वस्तं विण्णत्तं,
 न निट्ठं अविट्ठं, तवेण स्वभाववर्जकमित्यर्थः । अह्वा - एह एवदिवा । चाटिणं वेण्णत्तं न उत्तम्,
 क्कत्तं वा दोहा ॥२६६॥

उत्सेहमस्य इमं वनखाणं -

सीतोद्गमि कुच्यति, दीनमप्यदी उसेइयं पिद्वं ।

संसेद्वयं शुभं तिला, सिन्धु कुर्वन्ति वत्सुदए ॥१६७०॥

मरुद्विषाए उस्सेइया सीवया मोकोदो । कुम्यति । उस्सेइये उदहरणं, जहा-सिद्धं । अस्सा-
द्विषा उस्सेइयायस हेतुं यासि तं उस्सेइयं । अन्त्यं मत्तायम् ॥१६७॥

पदमुस्तेतिगुदयं, अक्षयकृष्णं च होति केसिचि ।

नं तु य जुज्वति जग्धा, उतिषं योषं ति वा दंदो ॥१६७१॥

[illegible][illegible]

इमो चाउत्तोदे विहो -

इदं चित्तिं तत्तिं, चाउलउदं तु होति सम्भित्तं ।

नेम परं तु चउत्ये. सुचमिनातो इहं ममितो ॥३६७२॥

इदमिति नानि वाच्योदयः एवं विषयः विस्तारः भवति, तेन न च अत्रानि भवितुम् । अत्र
अन्यथा वाच्यं कथं न भवितुम् । अतः नानि विस्तारः किं भवितुम् ।

અળે પુણ - તતિય વા ચાહલસોધને સુત્તણિવાયમિચ્છતિ, જેન તત્થ મહું ધારિણયં, ધોવં પરિણયમિતિ ॥૫૬૭૭॥

જં ઉસ્સેતિમાદિ મિસ્સં તસ્મિમો મહુણવિહી -

કાલેણં પુણ કપ્પતિ, અંબરસં વળ્ણગંધપરિણમં ।

વળ્ણાતિવિગતલિંગં, ણજ્જતિ વુક્કંતજીવં તિ ॥૫૬૭૮॥

તં ઉસ્સેતિયં ચિરકાલં અચ્છંતં જયા રસતો અંબરસં, વળ્ણતો વિવળ્ણં, મંથમ્મો અળ્ણગંધં, કાસતો ચિવિસલ્લં, એવં તં ઉદગં વળ્ણાદિવિગતલિંગં દટ્ઠું ણજ્જતિ જહા વિગયજીવં તિ તહા વેપ્પતિ ।

ચોદગાહ - “જેસિ કુદ્ધં ગમણાદિકં જીવલિંગં તે ણજ્જતિ, જહા વિગયજીવો તિ । પુદ્ધવાદી પુણ અન્વતજીવલિંગો કહ પાતા, જહા વિગતજીવં ?” તિ ॥૫૬૭૯॥

આચાર્યાહ -

કામં સલ્લ ચેતણ્ણં, સવ્વેસેગિંદિયાણ અન્વતં ।

પરિણમો પુણ તેસિ, વળ્ણાદિ રૂપાણસજ્જ ॥૫૬૮૦॥

પુવ્વદ્ધં કંઠં । પચ્છદ્ધં દમ્મો પ્રત્યો-વટ્ઠમજ્જકત્થો ચિધણેણ જહાસંસં અપમજ્જક ચિરકાલોવલક્ષિતા જહા વળ્ણાદી તહા તેસિ અન્વમિચારી અજીવસે પરિણમો લક્ષિજ્જતિ ॥૫૬૮૧॥

એમેવ ચાહલોદે, પદમે ચિતિ-તતિય તિણ્ણિ આણ્ણા ।

તેણ પરં ચિરયોતં, જહિં સુતં મીસયં સેસં ॥૫૬૮૨॥

ચાહલોદયે વિ જે પદમચિતિતા ચાહલોદયો તે અટ્ટુણા ધોતા મીસા । “તેણ પરં ચિર ધોયં જહિં સુતં” તિ તેણ પરં ચહત્થાદિ ચાહલોદયં તં ચિરધોયં પિ સચિતં, જહિં સુતં ણિવયતિ તસ્માદ્દહ્યમેવ । જં પુણ “મીસયં સેસં” તિ તમ્મિં દમે તિણ્ણિ અપાગમિયા આદેસા -

તત્થેયો ભણતિ - ચાહલા ધોવિતા જત્થ તં ચાહલોદયં છુમ્મતિ તત્થ જાતો કણ્ઠો કુસિતામ્મો લગ્ગામ્મો તામ્મો ય જાવ સુક્કંતિ તાવ તં મીસં, “તેણ પરં” તિ - તાસુ સ્વકાસુ તં અચિતં ભવતીત્યર્થઃ । ૧ ।

અવરો ભણતિ - ચાહલા જાવ સિચ્છંતિ તાવ તં મીસં, તેણ પરં અચિતં પૂર્વવદ્ । ૨ ।

અવરો ભણતિ - તમ્મિં ચાહલોદયે જે વુઠ્ઠુપ્રા તે જાવ અચ્છતિ તાવ મીસં, તેણ પરં અચિતં પૂર્વવદ્ । ૩ ।

આચાર્યાહ - “તેણ પરં ચિરધોયં” તિ એતે અક્કરા પુણો ચારિજ્જંતિ, જેણ કુસિતામ્મો સિ(સી)યકાલે ચિરં પિ અચ્છન્તિ । ગિધ્ધકાલે સહું સુસંતિ, ચાહલા વિ નહું ચિરેણ વા સિચ્છંતિ. વુઠ્ઠુપ્રા વિ ચિરં નોવાણ અચ્છન્તિ, પવાણ સહું વિણસંતિ, “તેણ” તિ તેણ કારણેણ એતે અપાદેસા । “પરં” તિ એતેસિ આણ્ણાણં રૂપં વરં પ્રધાનં આગમિતં આદેસંતરં - “જં જાણેજ્જ ચિરાધોતં” સિલોગો । બહુપ્પસણં ય ચત્તીયં દંસણેણ ય અચિતં જાણેત્તા ગેણ્ઠતિ । જત્થ “ચાલધોવણ” તિ આલાવગો-ચમરિવલ્લા ધોધવતિ તત્કાલીહિં, પચ્છા તે ચમરા સુદ્ધોદયેણ ધોવતિ । તત્થજિં પદમચિતિયત્તિયા મીસા, જં ચ પચ્છિમં તં સચિતં, તત્થ સુત્તનિવાનો । અટ્ટવા ચાલધોવણં સુરો માલિજ્જતિ જાણ કંઠલીણ સા પચ્છા ઉદયેણ ધોવદ્. તત્થ વિ પદમાતિ ધોવણા મીસા.

૧ દશવં અ ૫ ૩૦ ૧ ગા ૦ ૭૬ । ૨ ગા ૦ સૂત્ર ૧૨૨ ।

पच्छिमा सचिता, तस्मि सुत्तणिवातो । अह्वा - वालघोवणं रलघोरेकत्वात् वारागामदुग्धो, सो सककविषादि-
भाविता घोषवृद्ध, तत्थ वि पदमाटी मीसा, पच्छिमा सचिता, तस्मि सुत्तणिवातो । सन्वेसु मीसं कालेण परिणयं
गेज्जं ॥५६७५॥

इमं वितियपदं -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्टे भए व गेलण्णे ।

अद्वाण रोहए वा, जयणा गहणं तु मीयत्थे ॥५६७६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाई वागरेइ

वागरेतं वा सातिज्जति ॥५६७७॥

जहा मे करपादेसु तेहा गिन्वत्तिता, चंदनककुसादी दीसति सुसंठाणे, सुपमाणता य देहस्स, तहा
मे प्रवस्सं पायरिएण भवियव्वं, जो एवं वागरेइ तस्स चजलहं भाणादिया य ।

ते लक्खणा इमे -

माणुम्माणपमाणं, लेहसत्तवपुअंगमंगाई ।

जे भिक्खू वागरेति, आयरियत्तादि आणादी ॥५६७८॥

माणस्स उम्माणस्स य इमा विभासा -

छुड्ढेति तो य दोणं, छूढो दोणीए जो तु पुण्णाए ।

सो माणजुतो पुरिसो, ओमाणे अद्भमारगुरु ॥५६७९॥

माणं नाम पुरिसप्पमाणतो ईसिअतिरित्ता उट्टिया कीरइ सा पाणियस्स समणिबद्धा भरिज्जति,
पच्छा तत्थ पुरिसो पक्खिप्पति, जति द्रोणो पाणियस्स छुहेति तो माणजुतो पुरिसो, अह्वा - पुरिसं
छोद्वण पच्छा पाणियस्स भरिज्जति तस्मि पुरिसे ओसिते जइ सा कुंडो द्रोणं पाणियस्स पडिच्छइ तो माणजुतो ।
उम्माणे ति जति तुलाए भारोविअो अद्भमारं तुलति तो उम्माणजुतो भवति ॥५६७९॥

अद्भसतमंगुलुच्चो, समुहाई वा समुस्सितो णवओ ।

सो होति पमाणजुतो, संपुण्णंगो व जो होति ॥५६८०॥ कंठ्या

लेह ति प्रस्य व्याख्या -

मणिवंधाओ पवत्ता, अंगुट्टे जस्स परिगता लेहा ।

सा कुणति धनसमिद्धं, लोगपहाणं च आयरियं ॥५६८०॥ कंठ्या

सत्तवपुअंगममाणं इमा विभासा -

सत्तं अदीणता खलु, वपुतेओ जस्स ऊ भवइ देहे ।

अंगा वा सुपड्डा, लक्खण सिरिचच्छमा इतरे ॥५६८१॥

सत्तं प्रधानं महंतीए वि भावदीए जो अदीणो भवति सो सत्तमंतो । वपू णाम तेयो सो जस्स
अत्थि देहो सो वपुमंतो । अद्भंगं ताणि जस्स सुपत्तिमुसंठाणणि, अंगगति ति उवंगणि ताणि वि जस्स

अद्विते गणपते प्रायश्या कालयथा । तत्र ये वसन्तं अन्नं अलक्ष्मणजुतं ठवितं कामा, ताहे सो अलक्ष्मणजुतो अणोहि अणावेति -

अप्यणो वा भणति - प्रायश्यापदजो देहसंपदं मे वेच्छह । अहं प्रायश्या वि अलक्ष्मणजुतं ठवेउकामो, तत्र वि एयं चेव अण्यं पमासेति - समासमणो जारिसो सुते भणियो तारिसं ठवेह, सरीरसंपदाते सारोहादिजुतो ठवेयव्वो । एवं 'जाणंतो वि भणेज्जा ॥५६८६॥

जे भिक्खू गाएज्ज वा हसेज्ज वा वाएज्ज वा गण्चेज्ज वा अभिणवेज्ज वा
हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं उक्कुट्टसीहनार्यं वा करेह
करेतं वा सातिज्जति ॥५६८७॥

सरकरणं सरसंवारो वा येयं, मुहं विष्फालिय सविकारकहक्कहं हसनं, संखमादि प्रायोज्जं वा वाएज्ज, पाद-जंघा-ऊरु-वाडि-उदर-बाहु-अंगुलि-अङ्ग-गयण-अमहादिविकारंकरणं नृत्यं, पुष्कारकरणं, उक्किट्टसंघयणसति-अपणो उट्टो उट्टो वा भूमि अष्फालेता सीहस्सेव गायं करेति, हयत्स सरिसं गायं करेह हयहेसियं । वापरस्स सरिसं किलिकिलितं करेति, अण्यं वा गयणजिआदिजीवकतं करेतस्स अउलहं प्राणादिथा य दोसा ।

जे भिक्खू गाएज्जा, गण्चे वाएज्ज अभिणवेज्जा वा ।
उक्किट्टहेसियं वा, कुज्जा वग्गेज्ज वीणादी ॥५६८७॥

अहिण्यो परस्स सिक्खावणा, नृत्यविकार एव बलितं ढिठिकवत्, जावतिण्य मुहं विष्फालेता गीयउक्कुट्टिमादिथा करेति ॥५६८७॥

तेसु इमे दोसा -

पुच्चाभयप्पकोवो, अभिणवसलं च अण्णगहणं वा ।

अस्संपुडणं च मवे, गायणउक्किट्टिमादीसु ॥५६८८॥

आमयो ति रोगो सो उवसंतो पकुप्पति, अहिणवं वा सुलं उण्णज्ज, "अन्नगहण" ति गलणस्स उअणो 'कण्णवुप्पेसु सरणीतो मतातो तासु वातसंभगहितासु य अणापतं मुहजंतं हवेज्ज, अहंवा - अण्णगहणं बधन्विउ ति काउं रायादिणा वेप्पेज्जा, मुहं वा अस्संपुडं वातसिभदोसेण अच्चेज्जा ॥५६८८॥

एते चेव य दोसा, अस्संपुडणं मुहत्तु सेसेसु ।

अण्णतरइंदियस्स व, विराहणा कायमुट्ठाहो ॥५६८९॥

मेमा जे गण्चणादिता पदा तेसु वि एते चेव दोसा । मुहस्सवि असंपुडणं एककं भोत्तुं अण्णतरं वा हत्थपादादि सोतादि वा उक्किट्टेत्तो लुसेज्जा, एवमादिथा प्रायविराहणा । गायणादिषु वा पाणजातिमुहपवेत्ते मविराहणा । गण्चणादिषु उक्किट्टेत्तो पाणविराहणं करेज्ज अभिहणेज्ज वा । एवं कायविराहणा । एयासु प्रायसंजमविराहणासु सट्ठाणवच्छित्तं, गेय-अण्चणादिषु सविगारो भणित्तो वा पं जतो ति जणो मण्णेज्जा, उट्ठाहं वा करेज्जा ॥५६८९॥

वित्तियपदमणप्पज्जे, पसत्थजोमे य अतिसयप्पमत्ते ।

अट्ठाण वसण अभियोग बोहिण तेणमादिषु वा ॥५६९०॥

वित्तादिअणप्पज्जे सेहो वा अजाणंतो गीतादि करेज्ज ॥५६९०॥

“पसत्यजोए” ति अस्य व्याख्या --

एस पसत्यो जोगो, सहप्पडिबद्धे वाए गाए वा ।

अण्णो वि य आएसो, धम्मकहं पवत्तयंतो उ ॥५६६१॥

कारणद्विधा सहपडिबद्धाए वसहीए तत्त्व गेयं करेति, आओज्जं वा वाएति, मा अण्णो अण्णंति मोहुभवेण विसीति हवेज्ज ।

अहवा - समोसरणद्विषु पुच्छगवायणं करेत्तो गंधवेण कज्जति ॥५६६१॥

“अतिसय पत्ते” ति अस्य व्याख्या --

केवलवज्जेसु तु अतिसएसु हरिसेण सीहणायादी ।

उक्किट्ठ मेलण विहे, पुव्वच्चसणं व गीतादि ॥५६६२॥

वीतरागत्वात् न करोति, नेव केवलातिसउप्पत्ति वज्जेत्ता मेसेसु अवधिलंभादिएसं अतिसएसु उपाण्णसु हरिमितं सीहणायं करेज्ज । अण्णत्थ वा पडिडियत्तेण स वेइयासु आरुढो सीहणाय करिज्जा । *अट्ठाणपडिवण्णा महत्तलमत्तेण परोपरं किञ्चित्ता मिलणट्ठो उक्किट्ठसहं संकरिज्जा । “वसण” ति कस्म ति पुव्वं गिहिकावे गीतादिगं आसि, तं न पव्वनितोवि वसणाओ करेज्जा, रायादिअभिओगेण वा ॥५६६२॥

अहवा -

अभिओगे कविलज्जो, उज्जेणीए उ रोधसीसो तु ।

बोहियतेणे महरा, खमएणं सीहणादादी ॥५६६३॥

समारअभिओगओ जहा कविलेण कयं तहा करिज्ज । अहवा - जहा रोहसीसेण उज्जेणीए रायपुरोहिममुयाभिओगतो कयं । बोहियतेणेसु जहा महराए खमएण सीहणा दो कपो तहा करेज्ज ॥५६६३॥

जे भिक्खु भेरि-सदाणि वा पडह-सदाणि वा मुरव-मदाणि वा मुइंग-सदाणि वा नंदि-सदाणि वा भत्तलरि-सदाणि वा वल्लरि-सदाणि वा डमरुग-सदाणि वा मड्डय-सदाणि वा सदुय-सदाणि वा पएम-सदाणि वा मोलुइ-सदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सदाणि कण्णमोयपडियाए अभिसंधारंइ अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू.१३५॥

जे भिक्खु वीणा-सदाणि वा विवंचि-मदाणि वा तुण-सदाणि वा बव्वीसग-मदाणि वा वीणाइय-सदाणि वा तुंबवीणा-सदाणि वा ओडय-सदाणि वा ढंकुण-मदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा तयाणि सदाणि कण्णमोयपडियाए अभिसंधारंइ अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३६॥

१ गा० ५६६० । २ गा० ५६६० । ३ पडिणयत्तणेण सावयाइसु आरुढो इत्यपि पाठः । ४ गा० ५६६० । ५ कुक्कुडिय, इत्यपि पाठः । ६ गा० ५६६० ।

जे भिक्खु ताल-सदाणि वा कंसताल-सदाणि वा लिच्छिय-सदाणि वा
गोहिय-सदाणि वा मकरिय-सदाणि वा कच्छभि-सदाणि वा
महइ-सदाणि वा सणालिया-सदाणि वा बलिया-सदाणि वा
अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा भुसिराणि कण्णसोयपडियाए
अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१३७॥

जे भिक्खु संख-सदाणि वा संस-सदाणि वा वेणु-सदाणि वा खरमुहि-सदाणि वा
परिलिस-सदाणि वा वेवा-सदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा
भुसिराणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१३८॥

असं शृंगं, वृत्तः शंखः, दीर्घाकृति स्वल्पा च संखिगा । खरमुखी काहसा, तस्स मुहत्थाणे खरमुहाकारं
बद्धमयं मुहं कज्जति । परिपिरित्ता तत्ततोणसलाभातो सु (भु) सिराधो जमलापो संपा (वा) तिज्जति । मुहमूले
पणमुहा मा संसागारेण वाइजमाणी जुगवं तिणि सदे परिपिरित्ती करेति ।

अण्णे भणति — गुजापणवो मठाण भवति । संसा मायमाण भवति । मेरिआगारसंकुडमुही दुहुंभी ।
महरपमाणी मुरजो । सेसा पसिदा ।

ततवितते पणभुसिरे, तत्त्विवरीते य बहुविहे सदे ।

सहपडियाइ पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ॥५६६४॥

प्राग्विणीयमादि तत्तं, नीणातिसरिम् बहुवंतीहि वितत्तं । ग्रहवा-तंतीहि तत्तं, मुहमउवादि वितत्तं ।
पण उज्जउलकुडा, भुसिरं वंसादियः । तत्त्विवरीया कंसिग-कसालग-भल-तालजल-वादिना, जीवरुतादयश्च
बहवो तत्त्विवरीया ॥५६६४॥

वितियपदमणप्पज्जे, अभिधारज्जिकोविते व अप्पज्जे ।

जाणंतं था वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६६५॥

कज्जेसु बहुप्पगारेसु ति जहा जे अभिवोवसमणपयुत्ता ससत्ताहानिया तेसि सवणट्ठते अभिसंधारेज्जा
गममाण वाचवतीण, जहा मेरिसहस ॥५६६५॥

जे भिक्खु वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्फलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा
निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा सराणि वा
सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१३९॥

जे भिक्खु कच्छाणि वा महणाणि वा नूसाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा
पच्चयाणि वा पच्चयविदुग्गाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१४०॥

*

*

*

२६

જે મિક્સ્ ગામાણિ વા નગરાણિ વા સેદાણિ વા કલ્વહાણિ વા મહંવાણિ વા
 દોળમુહાણિ વા પટ્ટણાણિ વા આગરાણિ વા સંવાહાણિ વા
 સન્નિવેસાણિ વા કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ,
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૧॥

જે મિક્સ્ ગામ-મહાણિ વા નગર-મહાણિ વા સેદ-મહાણિ વા કલ્વહ-મહાણિ વા
 મહંવ-મહાણિ વા દોળમુહ-મહાણિ વા પટ્ટણ-મહાણિ વા આગાર-મહાણિ વા
 સંવાહ-મહાણિ વા સન્નિવેસ-મહાણિ વા કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ,
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૨॥

જે મિક્સ્ ગામ-વહાણિ વા નગર-વહાણિ વા સેદ-વહાણિ વા કલ્વહ-વહાણિ વા
 મહંવ-વહાણિ વા દોળમુહ-વહાણિ વા પટ્ટણ-વહાણિ વા આગાર-વહાણિ વા
 સંવાહ-વહાણિ વા સન્નિવેસ-વહાણિ વા કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ,
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૩॥

જે મિક્સ્ ગામ-પહાણિ વા નગર-પહાણિ વા સેદ-પહાણિ વા કલ્વહ-પહાણિ વા
 મહંવ-પહાણિ વા દોળમુહ-પહાણિ વા પટ્ટણ-પહાણિ વા આગાર-પહાણિ વા
 સંવાહ-પહાણિ વા સન્નિવેસ-પહાણિ વા કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ,
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૪॥

જે મિક્સ્ આસ-કરણાણિ વા હત્થિ-કરણાણિ વા ઉટ્ટ-કરણાણિ વા
 ગોળ-કરણાણિ વા મહિસ-કરણાણિ વા સૂયર-કરણાણિ વા કળ્ણસોય-
 પડિયાએ અભિસંધારેહ, અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૫॥

જે મિક્સ્ આસ-જુદ્ધાણિ વા હત્થિ-જુદ્ધાણિ વા ઉટ્ટ-જુદ્ધાણિ વા ગોળ-જુદ્ધાણિ વા
 મહિસ-જુદ્ધાણિ વા કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ,
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૬॥

જે મિક્સ્ ઉજ્જૂહિયદ્ધાણાણિ વા હય-જૂહિયદ્ધાણાણિ વા ગય-જૂહિયદ્ધાણાણિ વા
 કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ, અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૭॥

જે મિક્સ્ અભિસેય-દ્ધાણાણિ વા અક્લાય-દ્ધાણાણિ વા માણુમ્માણ-દ્ધાણાણિ વા
 મહયા હય-નદુ-ગીય-વાહય-તંતી-તલ-તાલ-તુહિય-પહુપ્પવાહય-
 દ્ધાણાણિ વા કળ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેહ,
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૮॥

जे भिक्खु डिचराणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा
महासंगामाणि वा कलहाणि वा कोलाणि वा कण्णसोयपडियाए
अभिसंधारेइ, अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥४०॥१४६॥

जे भिक्खु विरुवरुवेसु महुरसवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा
मज्झिमाणि वा डहराणि वा अलंदियाणि वा सुअलंक्रियाणि वा
गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा
भोहंताणि वा त्रिउलं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
परिभायंताणि वा परिभुजंताणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥१५०॥

जे भिक्खु इहलोइएसु वा रुवेसु, परलोइएसु वा रुवेसु, दिट्ठेसु वा रुवेसु, अदिट्ठेसु वा
रुवेसु, सुएसु वा रुवेसु, असुएसु वा रुवेसु, विभाएसु वा रुवेसु,
अविन्नाएसु वा रुवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्जइ अज्जोववज्जइ सज्जंतं
रज्जंतं गिज्जंतं अज्जोववज्जंतं वा सातिज्जति ॥४०॥१५१॥

॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥

एते बोद्धसुता जहा बारसमे उद्देशे भणित्ता तहा इहं पि सत्तरसमे उद्देशे भणियन्ता ।

वप्पादी जा विह लोइयादि सहादि जो तु अभिघारे ।

तं चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति वित्तिपदं ॥५६६६॥

विसेसो तत्थ चक्खुदंसणप्रतिज्जा, इहं पुण कण्णसवयपडियाए गच्छति, वप्पादिणु ठाणेषु ये
सहा ते अभिघारेणं गच्छति ॥५६६६॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुणीए सत्तरसमो उद्देशो सम्मत्तो ॥

अष्टादश उद्देशकः

भणिमो सत्तरसमो । इदानीं अट्टारसमो इमो भण्णति । तस्सिमो संबंधो -

सदे पुण धारेउं, गच्छति तं पुण जलेण य थलेण ।

अलपगतं अट्टारे तं च अण्ठा गिवारेति ॥५६६७॥

संज्ञादिसद्दे अभिघारंतो गच्छंतो जलेण वा गच्छति थलेन वा गच्छति । इह जलगमणेण अभिघारो, अधवा - जलेण गमणं अणाट्टए ण गंतव्वं । एयं अट्टारसमे गिवारेति । एस संबंधो ॥५६६७॥

अणेण संबधेणागयस्स इमं पढमसुत्तं -

जे भिक्खू अण्ठाए गावं दुरुहइ दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१॥

गो अट्टाए, धण्डुः । दुरुहइ ति विलगइ ति आरभति ति एगट्ठं । गाणादिया दोसा चउलहुं ।

बारसमे उद्देसे, नावासंतारिमम्मि जे दोसा ।

ते चेव अण्ठाए, अट्टारसमे निरवसेसा ॥५६६८॥

अण्ठे दसेति -

अंतो मणे किरिसिया, गावारुदेहिं वच्चइ कहं वा ।

अहवा गाणातिजदं, दुरुहणं होतऽण्ठाए ॥५६६९॥

केरिसि अन्नंतरं ति वक्खुदंसणपडियाए आरभति, गमणकुतूहलेण वा दुरुहति, अहवा - नाणाबि-जदं दुरुहंतस्स सेसं सव्वं अण्ठा ॥५६६९॥

अववादेण आगाढे कारणे दुप्पहेज्जा ।

थलपहेण संघट्टादिजलेण वा जइ इमे दोसा हवेज्ज -

बित्थियद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जुवहिमगरवुज्जमण, पात्रोदग तं पि जयणाए ॥६०००॥

एस बारसमुद्देशे जहा, तहा भाणियव्वा । सुत्तं दिट्ठं, कारणेण विलगियव्वं ।

केरिसं पुण नावं विलम्भाति ? केरिसं वा ण विलम्भाति ?

अतो सुत्तं गण्णति -

जे भिक्खु नावं किण्ह किणावेइ, कीयं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥४०॥२॥

जे भिक्खु नावं पामिच्चवेइ पामिच्चावेइ, पामिच्चं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥४०॥३॥

जे भिक्खु नावं परियट्ठेइ परियट्ठावेइ, परियट्ठं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥४०॥४॥

जे भिक्खु नावं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥४०॥५॥

जे अण्णना कीणइ, अण्णेण वा कीणावेइ, किणंतं अणुमोदति वा न्हु ।

पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चंतं अणुमोदेति न्हु । पामिच्चं नाम उच्छिन्नं । जे नाव परियट्ठेति
३; न्हु । इहरियणावाए महल्लं नावं परिणावेति - परिवर्तयतीत्यर्थः । महल्लाए वा इहरं परावर्तयति ।

अण्णस्स वा वसा अण्णेतु सङ्गण गेति न्हु । अणिसट्ठा पडिहारिया गहिता अण्णो कए कण्णे तं
साधुण सम्पेति साधुण वा गेति न्हु ।

एतेहि मुत्तपदेहि सव्वे उग्गम-उप्पादण-एसणादोसा य सुचिता ।

तेण नावणिज्जुत्ति अण्णइ -

नावा उग्गमउप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य ।

इंगालभूमकारण, अट्ठविहा नावणिज्जुत्ती ॥६००१॥

उग्गमदोसेसु जे चउलह ते जहा संमयं, नावं पटुव वा ।

उच्चत्तभच्चिए वा, दुविहा किण्णना उ होति नावाए ।

हीणाहियणावाए, मंडगुरुय य पामिच्चे ॥६००२॥

साधुमट्ठाए उच्चाए नावं किणाति सर्वथा आत्मीकरोतीत्यर्थः । भत्तीए ति - माडएणं वेण्हति ।
अण्णना ते नावा हीणप्पमाणा अहियप्पमाणा वा । अह्वा - मंडगुरु ति - जं तत्त्व मंडभारो विज्जति तं
गुरुं साह य णो क्षमिहित्ति, ता एवमादिक्खेहि नावं पामिच्चेति । अह्वा - सा नावा स्वयमेव गुरुत्वात्
क्षीघ्रगामिनीत्यर्थः ॥६००२॥

दोण्ह त्रि उवट्ठियाए, जत्ताए हीण अहिय सिम्वट्ठा ।

णावापरिणामं पुण, परियट्ठियमाहु आयरिया ॥६००३॥

दो वणिया जत्ताए नावाहि उवट्ठिता, तत्त्व य एगस्स हीणा, एगस्स अहिया, तो परोप्यरं नावा-
परिणामं करोति - नावा नावं परावर्तयतीत्यर्थः । अह्वा - मंदगामिनी क्षीघ्रगामिन्या परावर्तयति । एवं
साध्वयमपि ॥६००३॥

एमेव सेसणसु वि, उप्पायण-एसणाए दोसेसुं ।

जं जं जुज्जति सुत्ते, विमसियच्चं दुवत्ताए ॥६००४॥

कीयगहालीणावासुत्तेसु जं जं जुज्जति तं तं पिउणिज्जुत्तिए भाणियच्चं-दुवत्ता बायालीसा, सोलस उप्पमदोसा, सोलस उप्पायणदोसा, दस एसणदोसा, एते मिलिवा बातासा उप्पमउप्पायणसुत्ता तिणि बारा गता ।

संजोगादियाण चउल्लं इमा विभासा ।

संजोए रणमादी, जले य भावाए होति भाजं तु ।

सुहगमणित्तिमालं, छट्ठीसोमादिसुं धूमो ॥६००५॥

साधुमट्टाए रणमादि किं चि कट्टं संजोएति, मासणमज्जदूरगमणा जलपामाणं साधुप्पमाणाधो व होणं जुलमधियप्पमाणेण वा होउज्ज । सुहगमणि ति रामेण इंगाससरिखं चरणं करेति, भावाममणे छट्ठी हवह, दुट्ठा बाह्या वा नावायणं मरीरसंखोहो भवति । कपो, मुच्छा, सिरसी व । एवमादी दोसा चरणं धूमधणेण समं करेति ॥६००५॥

कारणे विलगियच्चं, अकारणे चउल्लं सुणेयच्चं ।

किं पुण कारण होज्जा, अस्सिवादि थलासती दुरुहे ॥६००६॥

भाषाइकारणेण य दुरुहियच्चं, निक्कारणे चउल्लं, अस्सिवाइकारणे वा मच्छंस्स ॥६००६॥
तं नावातारिमं चउल्लिहं—

नावासंतारपहो, चउल्लिहो वणितो उ जो पुब्बिं ।

णिज्जुचीए सुविहिय, सो चेव इहं पि भायच्चो ॥६००७॥

णिज्जुत्तीपेहं इमस्सेव जहा पेढया अउवकायाविगारेण भाणिया तहा भाणियच्चो ॥६००७॥

तिरिओ याणुज्जाणे, समुहगामी य चेव नावाए ।

चउल्लहुगा अंतगुरु, जोय मद्धद जा सपदं ॥६००८॥

तत्र इव ॥६००८॥

वीथपथ तेण भावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जुवहिमगर बुज्झण, नावोदग तं पि जयणाए ॥६००९॥

हारसमे पूर्ववत् ॥६००९॥

जे भिक्खु थलाओ नावं जले ओकसावेइ ओकसावेतं वा सातिज्जति ॥६०१०॥

थलस्थं जले करेति ।

जे भिक्खु जलाओ नावं थले उक्कसावेइ उक्कसावेतं वा सातिज्जति ॥६०११॥

जलस्थं थले करेति ।

જે ભિક્ષુ પુષ્પં ણાવં ઉસ્સિંચદ્દ ઉસ્સિંચંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૮॥

જે ભિક્ષુ સ્પષ્પં ણાવં ઉપ્પિલાવેદ્દ ઉપ્પિલાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૯॥

“સ્પષ્પ” તિ - કદમે સુત્તા, ઉપ્પિલાવેદ્દ તિ - તતો ઉક્કળતિ ।

માહેદ્દ જલાઓ થલં, જો વ થલાઓ જલં સમોગાદે ।

સ્પષ્પં વ ઉપ્પિલાવે, દોસા ને તં ચ ચિત્તિયપદં ॥૬૦૧૦॥

દોસા જે વારસમે મળિતા તે મવતિ, ચિત્તિયપદં ચ જં તત્ત્વેત મળિયં તં ચેવ માણિયજ્ઞ ॥૬૦૧૦॥

જે ભિક્ષુ ઉવદ્ધિયં ણાવં ઉત્તિમં વા ઉદગં વા આસિંચમાણિં વા ઉવરુવરિ વા
કજ્જલાવેમાણિં પેહાણ હત્થેણ વા પાણ વા અસિપત્તેણ વા
કુસપત્તેણ વા મઠ્ઠિયાણ વા ચેલેણ વા પઢિપિહેદ્દ
પઢિપિહંતં વા સાદ્દિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૦॥

જે ભિક્ષુ પાલિણાવિયં કટ્ટુ ણાવાણ દુરુહદ્દ દુરુહંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૧॥

જે ભિક્ષુ ઉઢ્ઢાગમિણિં વા નાવં અહો ગામિણિં વા નાવં દુરુહદ્દ
દુરુહંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૨॥

જે ભિક્ષુ જોયણવેલાગામિણિં વા અઢ્ઢાયાયણવેલાગામિણિં વા નાવં દુરુહદ્દ
દુરુહંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૩॥

જલનાવા વલાણ હીરતિ, દીઠરજ્જુણ તઢંસિ રુક્ષે વા કીલગે વા ચઢ્ઢં વા મુત્તિતા વાહેજ્ઞ,
સુભમાણિં વા વલેજ્ઞ, ઉત્તિયેણ વા મરિતં મરણ્ણમાણીં વા જો ઉવત્તિચત્તિ, સવલપાણિયસ્સ વા મરેતિ રિત્તં
વા, ચિમિતો ગચ્છત્તિ તિ પાણિયસ્સ મરેતિ, । તસ્સ ચ ઉલહું ।

ઉચ્ચદ્ધપવાહેતી, ચંચદ્દ વુજ્જમદ્દ ય મરિય ઉસ્સિંચે ।

રિત્તં વા પૂરેતિ, તે દોસા તં ચ ચિત્તિયપદં ॥૬૦૧૧॥ કંઠ્યા

જે ભિક્ષુ નાવં આકસદ્દ આકસાવેદ્દ આકસાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૪॥

જે ભિક્ષુ નાવં સેવેદ્દ સેવાવેદ્દ સેવાવંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૫॥

જે ભિક્ષુ ણાવં રજ્જુણા વા કઢ્ઢેણ વા કઢ્ઢુદ્દ, કઢ્ઢુંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૬॥

જે ભિક્ષુ ણાવં અલિત્તણ વા પપ્પિહણ વા વંસેણ વા પલેણ વા વાહેદ્દ,
વાહેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૭॥

જે ભિક્ષુ નાવાઓ ઉદગં માયણેણ વા પઢિગઢ્ઢણેણ વા મત્તેણ વા
નાવાઉસ્સિંચણેણ વા ઉસ્સિંચદ્દ ઉસ્સિંચંતં વા સાતિજ્જતિ ॥૨૦॥૧૮॥

નાવાણ ઉત્તિમં ત્રાવ નિહિતં સાતિજ્જતિ ।

एतेसि सुत्ताणं पदा सुत्तसिद्धा चेव तहावि केइपदे सुत्तफासिया फुसति -
 नावाए खिवण वाहण, उस्सिंचण पिहण साहणं वा वि ।
 जे भिक्खु कुज्जा ही, सो पावति आणमादीणि ॥६०१२॥

अण्णभाषट्ठितो जलट्ठितो तड्ठितो वा जावं पराहुत्तं खिवति, णावण्णतरणयणप्पगारेण, जयणं वाहणं भण्णति । उत्तिगादिणावाए चिट्ठमुदगं अण्णयरेण कच्चादिणा उस्सिंचणएण उस्सिंचइ । उत्तिगादिणा उदमं पविसमाणं हत्थादिणा पिहेति । एवमण्णया करेति, अण्णस्स वा कहेति, आणादि चउलहुं च ॥६०१२॥

एतेसु अण्णेसु य सुत्तपदेसु इमं वितियपदं -

वितियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जोवहिभगरबुज्झण, णावोदग तं पि जयणाए ॥६०१३॥ पूर्ववत्

आकड्ढणमाकमणं, उक्कसणं पेल्लणं जओ उदगं ।

उड्ढमहतिरियकड्ढण, रज्जू कट्ठम्मि वा थेत्तुं ॥६०१४॥

अण्णो तेण आकड्ढणमागमणं उदगं तेण प्रेरणं उक्कसणं, “उड्ढ” ति णदीए समुद्दे वा वेला पाणियस्स प्रतिकूलं उड्ढं, “अह” ति तस्सेव उदगस्स ओतोऽनुकूलं अहो भण्णति, नो प्रतिकूलं नो अनुकूलं विवितिरिच्छं विगियं भण्णति, एयं उड्ढं अहं तिरियं वा रज्जुए कट्ठम्मि वा थेत्तुं कड्ढंति ॥६०१४॥

तणुयमलित्तं आसत्थपत्तसरिसो पिहो हवति रुंदो ।

वंसेण थाहि गम्मति, चलएण वलिज्जती णावा ॥६०१५॥

तणुतरं दीहं अलितागिती ‘अलित्तं, आसत्थो पिप्पलो तस्स पत्तस्स सरिसो रुंदो पिहो भवति, वंसो वेणू तस्स अश्वदुभेज पादेहि पेरिदा णावा गच्छति, जेग वामं दक्खिणं वा वालिज्जति सो चलणो रण्णं पि भण्णति ॥६०१५॥

मूले रुंद अकण्णा, अंते तणुगा हवंति णायच्चा ।

दक्खी तणुगी लहुगी, दोणी अहिज्जती तीए ॥६०१६॥

पुण्वदं कंठं । लहुगी जा दोणी सा तीए दक्खीए वाहिज्जति, णावाउस्सिंचणं च दुगं (उत्तं चलणं) दक्खगादि वः भवति, उत्तिगं णाम छिद्रं तं हत्थमादीहि पिहेति ॥६०१६॥

सरतिसिगा वा विप्पिय, होति उ उसुमत्तिया य नम्मिस्सा ।

सोयतिमाइ दुमाणं, वातो छल्ली कुविंदो उ ॥६०१७॥

अह्वा - सरस्स छल्ली ईतिगि ति तस्सेव उवरि तस्स छल्ली सो य मुंगो दम्मो वा, एते वि विप्पित ति कुट्टिया पुणो मट्ठियाए सह कुट्टिज्जति एव उसुमट्ठिया, कुमुमट्ठिया वा, मोदती गुलबंजणी, आदिसद्दाओ वड-पिप्पल-आसत्थयमादिणाण वक्को मट्ठियाए सह कुट्टिज्जति सो कुट्टिविदो भण्णति, अह्वा - चेलेण सह मट्ठिया कुट्टिया चेलमट्ठिया भण्णति ।

एवमाईहि तं उत्तिगं पिहेति जो, तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ॥६०१७॥

જે ભિક્ષુ નાવં ઉત્તિગેણ ઉદગં આસવમાણં ઉવરુચ્ચરિં કજ્જલમાણં પલ્લોય
હત્થેણ વા પાણેણ વા આસત્થપત્તેણ વા કુસપત્તેણ વા મઢિયાણ વા
ચેલકળ્લેણ વા પઢિપેહેઢ પઢિપેહેતં વા સાતિજ્જતિ ॥૪૦॥૧૬॥

ઉત્તિગેણ ગાતાણ ઉદગં આસવતિ પેહે તિ પ્રંથ્ય ઉવરુચ્ચરિ કજ્જલમાણિ તિ અરિજ્જમાણં વેક્ષિતા
પરસ્સ દાણંતિ આણાદિયા ચ્ચલહુ ચ ।

ઉત્તિગો પુણ છિહ્મં, તેણામય ઉવરિણ કજ્જલ્લં ।

ચિતિયપદેણ દુરુહો, ગાતાણ મંડભૂતો વા ॥૬૦॥૧૮॥

પુલ્લહં ગતાર્થ । અસિવાદિગાણાદિકારણેહિ દુરુહો ગાત્તં જહા મંડં નિશ્વાવારં તહા ગિન્વાવારભૂતેય
અવિયથ્વં । સવ્વસુત્તેસુ જાણિ [વા] પઢિસિદ્ધાણિ તાણિ કારણારુહો સવ્વાણિ સયં કરેજ્જ વા કારવેજ્જ વા,
તે તથ સાધુણો ગિન્વાવાર દટ્ઠુ કોદ પઢિણોઓ જલે પલ્લિવેજ્જ ॥૬૦॥૧૮॥

અહવા -

નાવાદોસે સવ્વે, તારેયવ્વા ગુણેહિ વા અધિઓ ।

પવયણપભાવઓ વા, એગે પુણ વેતિ ગિમ્મંથી ॥૬૦॥૧૯॥

એવં વચ્ચંતસ ગાતાણ સંયવો હવેજ્જ જહા તેસિ માકંદિયદારાણં ગાતાણ દોસો તિ, ધિન્ના સા
ગાતા ।

ઇયદુદ્ધરાણિ ગાઢે, યાવઇવત્તો સબ્બલલુહ્લો ડ ।

સહસા ગિન્વુડમાણો. ઉદ્ધરિયવ્વો સમત્થેણ ॥

એસ જિણાણં આણા, યમુવદેમો ડ ગણધરાણં ચ ।

એસ પઢિણા તસ્સ વિ, જં ઉદ્ધરતે દુવિહગચ્છં ॥

જો અતિસેસવિસેસપણ્ણો તેણ સવ્વો નિત્યારિયવ્વો, અતિસેસપ્રભાવે સારોરવલસમત્થેણ વા તે સવ્વે
ગિત્થારિયવ્વા । અહ સવ્વે ણ સવ્વકેતિ તાહે એવ્વકેવકં હાવંતેણ, જો પવયણપભાવગો સો પુલ્લં તારેયવ્વો ।

અણ્ણે પુણ ભળંતિ જહા - ગિમ્મંથી પુલ્લં તારેયવ્વા ॥૬૦॥૧૯॥

ઇમા પુરિસેસુ કેવલેસુ જયણા -

આયરિણ અભિસેગે, ભિક્ષુ સુહુદે તહેવ થેરે ય ।

ગહણં તેસિં ઇણમ્મો, સંજોગકમં તુ વોચ્છામિ ॥૬૦॥૨૦॥

જહ સમત્થો એતે ચેવ સવ્વે વિ તારેડં તો સવ્વે તારેતિ ।

અહ ણ સવ્વકેતિ તાહે યેરવજ્જા ચ્ચરો ।

અહ ણ તરતિ તાહે યેરલુહુવજ્જા તિણિ ।

અહ ણ તરતિ તાહે આયરિય અયિસેગા દોણિ ।

અહ ણ તરતિ તાહે આયરિયં ॥૬૦॥૨૦॥

દો આયરિયા હોજ્જ, દો વિ તિત્થારેતુ ।

अहं न तरइ ताहे इमं भण्णति —

तरुणे निष्फण परिवारे, सलद्धि ए जे य होति अग्भासे ।

अभिसेगम्मी चउरो, सेसाणं पंच चेव गमा ॥६०२१॥

आयरिओ एगो तरुणो, एगो घेरो । जो तरुणो सो नित्थारेयव्वो ।

दोवि तरुण घेरो वा एकूओ सुत्तथे निष्फणो, एक्को अनिष्फणो । जो निष्फणो सो नित्थारिज्जति ।

दोवि निष्फणा भणिफणा वा । एक्को सपरिवारो, एक्को अपरिवारो । जो सपरिवारो सो नित्थारिज्जति ।

दोवि सपरिवारा तो उक्कोसलद्धीतो जो भत्तवत्थसिस्सादिएहि सहितो सो नित्थारिज्जति । दोवि सलद्धिया वा तथ्य जो अग्भासतरो सो नित्थारिज्जति, मा दूरत्थं । समीवं जं सं जाव जाहिंति ताव सो हडो । इयरो वि जाव पव्वेहिंति ताव हडो । दोण्ह वि चुक्को तम्हा जो आसणो सो तारेयव्वो ।

अभिसेगे पुण चउरो गमा भवति — तरुणे सपरिवारो सलद्धी आसणो य, जम्हा सो गियमा निष्फणो तम्हा तस्स निष्फणा निष्फणं इति न कर्त्तव्यं ।

सेसाणि भिवसूयेरखुड्डाणं जहा आयरियरस तरुणादिया पंच गमा तहा कायव्वा ।

अण्णे पंच गमा एवं करेति — तरुणे निष्फण परिवारे सलद्धि ए अग्भासे ।

अहंवा पंच गमा — तरुणे निष्फण परिवारे सलद्धी अग्भासे यलवासी । जो यलविसयवासी तं नित्थारेति; सो अतारयो । जलविसयवासी पुण तारयो भवति, य सहसा जलस्स बीहेति ॥६०२१॥

इदाणि गिरगंथीण पत्तेयं भण्णति —

पवत्तिणिं अभिसेगपत्तं थेरि तह भिक्खुणी य खुड्डी य ।

अभिसेगाए चउरो, जलथलवासीसु संजोगा ॥६०२२॥

जहा साहण भणियं तहा साहुणीण वि भाणियव्वं ॥६०२२॥ एस पत्तेमाणं विओ ।

इमा मीसाणं —

सव्वत्थं वि आयरिओ, आयरियाओ पवत्तिणी होति ।

तो अभिसेगपत्तो, सेसेसु इत्थिया पढमं ॥६०२३॥

दोसु वि वग्गेसु जुगवं आवइपत्तेसु इमा जयणा — जति समत्थो सव्वाणि वि तारेउं तो सव्वे तारेति । अहं असमत्थो ताहे एगदुगालिपरिहाणीए, जाहे दोण्ह वि असमत्थो ताहे सव्वे अक्खंनु आयरियं पढमं नित्थारेइ, ततो पवत्तिणी, ततो अभिसेगं, सेसेसु इत्थिया पढमं, ति भिवसूणि पढमं ततो भिक्खुं, खुड्ढि ततो खुड्ढं, थेरि ततो घेरं । एत्थअपबहूचिता कायव्वा — सुणिपुणो होऊणं लघेऊणुत्तविहि बहुगुणवेट्ठं (वड्ढं) करेजा ।

भणियं च —

“बहुवित्थरमुत्सगं, बहुतरमववायवित्थरं णाउं ।

जह जह संजमबुड्ढी, तह जयसू णिज्जरा जह य” ॥

प्राथम्यवज्जाणं को परिवारे ? भणति - माया पिया पुत्तो माया भणिणो सुद्धा भूया, अण्णे
व संबंधिणो मित्ता तदुवसमणिकलता य ।

जे भिक्खू नावाओ नावागयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेहि, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू नावाओ जलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेहि, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू नावाओ पंकगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेहि, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू नावाओ थलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेहि, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

णावागयस्सेव दायगस्स हत्थातो पडिग्गाहेहि तस्स चउलहं ।

अण्णेषु तिसु भणेषु भिक्खू णावागतो चेव, दायगो जल-पंक-थलगतो । एतेसु चउरो भंगा ।

अण्णेषु चउभणेषु भिक्खू जलगतो, दायगो णावा-जल पंक-थलगतो ।

अण्णेषु चउसु भिक्खू पंकगओ, दायगो णावा-जल-पंक-थलगओ ।

अण्णेषु चउसु भिक्खू थलगतो, दायगो णावा-जल-पंक-थलगतो ।

एते सब्बे सोलससु वि पत्तेयं चउलहं । णावागते दायगे पडिसेहो, जेण सो सचित्तमाउकाय-
परंपरपत्तिद्वो जलपंकथला सचित्ता मोसा वा, तो पडिसेहो ।

तत्थ कभं दरिसेह -

नावजले पंकथले, संजोगा एत्थ होति णायव्वा ।

तत्थ गएणं एक्को गमणागमणेण चित्तिओ उ ॥६०२४॥

एतेसु णाव-जल-पंक-थलपदेसु ठितो भिक्खू दायगस्स सट्ठाण-परट्ठाणसंजोगेण ठियस्स हत्थाओ गेण्हंतस्स
दुगसंजोगाभित्तावं अमुंचतेण सोलस भंगा कायव्वा पूर्ववत् ।

“तत्थ गएणं एक्को” ति णावाकूओ णावागयस्स हत्थातो गेण्हति एस पडमभंगो, णावागतो
असगयस्स हत्थदायगस्स अच्छमागस्स जलद्वियस्स हत्थातो गेण्हति, एवं पंकथलेसु वि गमणागमणेण तत्तिय-
चउत्थ भंगा, एवं तेसभंगा वि बारस उरउज भाणियव्वा ॥६०२५॥

एत्तो एगतरेणं, संजोगेणं तु जो उ पडिग्गाहे ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधणं पावे ॥६०२५॥

कंथा । सोलससो भंगो थलगओ, थलगतस्स ममुद्दस्स अंतरधीवं संभवति, सा पुदवी सचित्ता
मोसा वा ससण्णिदा वा तेज पडिसिज्जति ॥६०२५॥

इमं वितियपदं -

असिवे ओमोयरिए, रायदुहे भए व गेलण्णे ।

अद्धान रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥६०२६॥

जयणा पणमपरिहाणे, मीसपरंपरठितादि वा जयणा भाणिञ्चा ।

जे भिक्खु वत्थं किणइ किणावेइ कीयं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खु वत्थं पामिच्चेति, पामिच्चावेति पामिच्चमाहट्ठ दिज्जमाणं
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खु वत्थं परियट्ठेइ, परियट्ठावेइ, परियट्ठियमाहट्ठ दिज्जमाणं
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खु वत्थं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडमाहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खु अतिरेग-वत्थं गणिं उदिसिय गणिं समुदिसिय
तं गणिं अणापुच्छिय अणामंतिय अणमणस्स वियरइ,
वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खु अइरेगं वत्थं खुडगस्स वा खुडियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा
अहत्थच्छिण्णस्स अपायच्छिण्णस्स अनासच्छिण्णस्स अकण्णच्छिण्णस्स
अणोडुच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ, देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खु अइरेगं वत्थं, खुडगस्स वा खुडियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा
हत्थच्छिण्णस्स पायच्छिण्णस्स नासच्छिण्णस्स कण्णच्छिण्णस्स
ओडुच्छिण्णस्स असक्कस्स न देइ, न देतं वा सातिज्जति ॥सू॥३०॥

जे भिक्खु वत्थं अणलं अधिरं अभुवं अवारणिज्जं धरेइ,
धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खु वत्थं अलं धिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ,
न धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खु वण्णमंतं वत्थं विवण्णं करेइ, करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खु विवण्णं वत्थं वण्णमंतं करेइ, करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्षू “नो नवए मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ तेल्लेण वा घएण वा
णवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिल्लिगेज्ज वा
मक्खेतं वा भिल्लिगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्षू “नो नवए मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ लोद्धेण वा कक्केण वा
चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा
उल्लोल्लेतं वा उव्वल्लेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्षू “नो नवए मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्षू “नो नवए मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ बहुदेवसिएण तेल्लेण वा
वएण वा णवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिल्लिगेज्ज वा
मक्खेतं वा भिल्लिगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्षू “नो नवए मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ बहुदेवसिएण लोद्धेण वा
कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा
उल्लोल्लेतं वा उव्वल्लेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

जे भिक्षू “नो नवए मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ बहुदेवसिएण सीओदगविय-
डेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्षू “दुब्भिमग्गे मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ तेल्लेण वा घएण वा
नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिल्लिगेज्ज वा
मक्खेतं वा भिल्लिगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जे भिक्षू “दुब्भिमग्गे मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ लोद्धेण वा कक्केण वा
चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा
उल्लोल्लेतं वा उव्वल्लेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्षू “दुब्भिमग्गे मे वत्थे लद्धे” ति कट्ठ सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

१ पधोवेज्ज इत्यपि पाठः । २ पधोवेज्जतं इत्यपि पाठः ।

जे भिक्खू “दुब्भिमगंधे मे वत्थे लद्धे” ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू “दुब्भिमगंधे मे वत्थं लद्धे” ति कट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोल्लेतं वा उव्वल्लेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू “दुब्भिमगंधे मे वत्थं लद्धे” ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदग-
वियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

❀

❀

❀

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिमगंधे वत्थे लद्धे” ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिमगंधे वत्थे लद्धे” ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोल्लेतं वा उव्वल्लेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिमगंधे वत्थे लद्धे” ति कट्टु
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिमगंधे वत्थे लद्धे” ति कट्टु बहुदेवसिएण
तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिमगंधे वत्थे लद्धे” ति कट्टु बहुदेवसिएण
लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोल्लेतं वा उव्वल्लेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिमगंधे वत्थे लद्धे” ति कट्टु बहुदेवसिएण
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

જે ભિક્ષુ અર્ણવરહિયાં પુઢવીં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૩॥

જે ભિક્ષુ સસણિદ્રાં પુઢવીં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૪॥

જે ભિક્ષુ સસરક્ષાં પુઢવીં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૫॥

જે ભિક્ષુ મઙ્ગિયાકઢાં પુઢવીં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૬॥

જે ભિક્ષુ ચિત્તમંતાં પુઢવીં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૭॥

જે ભિક્ષુ ચિત્તમંતાં સિલાં પુઢવીં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૮॥

જે ભિક્ષુ ચિત્તમંતાં લેતૂં દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે
વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા,
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૫૯॥

જે ભિક્ષુ કોલાવાસંસિ વા દારૂં જીવપહિટ્ટિં સઅંદે સપાણે સવીં સહરિં
સઓસ્સે સઉદ્દં સઉત્તિગ-પણમ-દમ-મઙ્ગિય-મન્નકઢાસંતાણમંસિ
દુબ્બંધે દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે વત્થં આયાવેજ્જ વા
પયાવેજ્જ વા આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૦॥

જે ભિક્ષુ ધૂળંસિ વા મિહેલુયંસિ વા ઉસુયાલંસિ વા આમવલંસિ વા દુબ્બંધે
દુન્નિશ્ચિત્તે અનિકંપે ચલાચલે વત્થં આયાવેજ્જ વા પયાવેજ્જ વા
આયાવેતં વા પયાવેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૬૧॥

- जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिरि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अंतलिक्ख-
जायंसि वा दुब्बद्धे दुब्बिखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥
- जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा
पासायंसि वा दुब्बंधे दुब्बिखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥
- जे भिक्खू वत्थातो पुढविकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥
- जे भिक्खू वत्थाओ आउक्कायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥
- जे भिक्खू वत्थातो तेउकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥
- जे भिक्खू वत्थातो कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुष्पाणि वा
फलाणि वा नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥
- जे भिक्खू वत्थातो ओसहि-बीयाणि नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥
- जे भिक्खू वत्थातो तसपाणजाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥
- जे भिक्खू वत्थं कोरेइ, कोरावेइ, कोरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥
- जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामंतरंसि वा
गामपहतंसि वा वत्थं ओभासिय ओभासिय जायइ
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥
- जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा परिसामज्झओ
उडुवेत्ता वत्थं ओभासिय ओभासिय जायइ
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥
- जे भिक्खू वत्थनीसाए उडुबद्धं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

જે ભિક્ષુ વત્થનીસાણ વાસાવાસં વસઈ, વસંતં વા સાતિજ્જતિ ॥મૂ.૦॥૭૪॥

॥ તં સેવમાણે આવજ્જઈ ચાઉમ્માસિયં પરિહારદ્વાણં ઉગ્ધાઈયં ॥

ચોદસમે ઉદેસે, પાતમ્મિ ઉ જો ગમો સમક્કલાઓ ।

સો ચેવ નિરવસેસો, વત્થમ્મિ વિ હોતિ અદ્ધારે ॥૬૦૨૭॥

મુક્તાણિ ૧પણ્ણીસં ઉચ્ચારેયવ્વાણિ જાવ સમત્તો ઉદેસગો । એતેસિ અત્થો ચોદસમે, જહા ચોદસમે પાર્દ ભણિતં તહા અદ્ધારસમે વત્થં ભાણિયવ્વં ।

॥ ઇતિ વિસેસ-ણિસીહચુણ્ણીણ અદ્ધારસમો ઉદ્દેસઓ સમત્તો ॥

૧ અતુર્દશગોદેશકાનુસારેણ તુ પચ્ચત્તવારિશત્પૂત્રાણિ ભવન્તિ ।

एकोनविंशतितम उद्देशकः

भण्णो भट्टारसमो । इदाण एक्कोणवीसइमो भण्णति । तस्सिमो संबंधो -

वत्थत्था वसमाणो, जयणानुत्तो वि होति तु पमत्तो ।

अन्नो वि जां पमाओ, पडिसिद्धो एस एकूणे ॥६०२८॥

जो उदुवद्धे वाणावामे वा वत्थदु वसति, सो जति जयणानुत्तो तहावि सो पमत्तो लभति । एवं भट्टारसमस्स भंतसुने पमातो दिट्ठो । इहावि एगुणवीसईमस्स आदिमुत्ते पमाओ चेव पडिसिज्झति । एस भट्टारसमाणो एगुणवीसइमस्स संबंधो ॥६०२८॥

अहवा चिरं वसंतो, संथवणेहेहि किणति तं वत्थं ।

अक्कीतं पि ण कप्पति, वियडं किमु कीयसंबंधो ॥६०२९॥

चिर ति वारित्तनो चउरो मासे, सेयं कंठं ।

इमं पढमसुत्तं -

जे भिक्खु वियडं किण्ड, किणावेइ, कीयं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ

पडिग्गाहेनं वा मानिज्जति ॥सू०॥१॥

कीय किणाविय अणुमोदितं च वियडं जमाहियं सुत्ते ।

एक्केक्कं तं दुविहं, दव्वे भावे य णायच्चं ॥६०३०॥

अपणा किणति, अण्णेश वा किणावेइ, साहुअट्ठा वा कीयं परिभोग्गो अणुजैगति, अण्णं वा अणुमोद, आणादिया दोसा चउलहुं च । सो कीयो दुविधो - अपणा परेण च । एक्केक्को पुणो दुविहो - दव्वे भावे य । शेषं पूर्ववत् । परभावकीए मासलहुं । जं अपणा किणति, एस उप्पायणा । जं परेण किणावेइ, एस उगमो ॥६०३०॥

एएसामण्णतरं, वियडं कांतं तु जो पडिग्गाहे ।

सो आणा अणयत्थं, मिच्छत्तविराघणं पावे ॥६०३१॥

कंठा । विगडगहणे परिभोगो वा अकप्पगहणं अकप्पपडिसेवा य संजमविराहणा य ।

जता भण्णति -

इहरह वि ता न कप्पइ, किमु वियडं कीतमादि अविमुद्धं ।

असमितिऽगुत्ति गेही, उड्ढाह महव्वसा आता ॥६०३२॥

इहरहा प्रकीर्तं । किं पुण कीयं ? , उगमदोसकुलं सुदुत्तरं ण कप्पइ । वियडत्ते पंचसु वि समितोसु असमितो भवति, गुत्तोसु वि अगुतो, तस्मि लद्धसायस्स अवरिच्चावो गेही, जणेण पाते उट्ठाहो, पराधीणो वा महक्खए मंजेज्ज ॥६०३२॥

कहं ? उच्यते -

वियडत्तो छक्काए, विराहए भासती तु सावज्जं ।

अगडागणिउदएसु अ, पडणं वा तेसु वा वेप्पे ॥६०३३॥

पराहीणत्तणमो छक्काए विराहेज्ज, मोसं वा भासेज्ज, अदत्तं वा गेण्हेज्ज, भेदुणं वा सेवेज्ज, द्विरुणादिपरिग्रहं वा करेज्ज । अयविराहणा इमा - अगडे ति कूवे पडेज्ज, पलिते वा डज्जिक्खज्ज, उदगेण वा पेरेज्ज, तेगे वा कसाएण वा णिवकासति तो वा तेहि वेप्पइ ॥६०३३॥

अहंवा - कारणे पत्ते गेण्हेज्जा -

भित्तिपदं गेलण्णे, विज्जुवदेसे तद्देव सिक्खाए ।

एतेहि कारणेहि, जयणाए कप्पती वेत्तुं ॥६०३४॥

वेज्जोवएसेण गिलाणट्ठा वेप्पेज्ज, कस्सति कीति वाही तेणेव उवसमति ति ण दोसो । गिलाणट्ठा वा वेज्जो आणितो, तस्सट्ठा वा विप्पेज्ज. एकप्यं वा सिक्खतो गृह्यं करेज्ज ॥६०३४॥

कहं ? उच्यते -

संभोइयमणमंभोइयाण असतीते लिंगमादीणं ।

एकप्यं आहेज्जमाणो, सुद्धासति कीयमादीणि ॥६०३५॥

एकप्यो सिद्धियव्वो सुसतो अद्वयो वि सगुरुस्स पासे, असति सगुरुस्स ताहे सगणे, सगणस्स वि असति ताहे संभोतितान सणासे सिक्खति । असति संभोतितान ताहे अण्णसंभोतियाण सणासे, तेसि पि असतीए लिंगमादियाण पासे एकप्यं अविज्जति । तस्स य लिंगस्स तं विगडवसणं हवेज्ज, सो अण्णणा चेव उप्पाएउ । अहं सो उप्पाएउं सुतत्थे ण तरति दाउं ताहे स साधू उप्पाएइ सुदं, जति सुदं ण लब्धत्ता ताहे कीयमादि गेण्हेज्जा ॥६०३५॥

जे भिक्खु वियडं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ पामिच्चं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खु वियडं परियट्ठेति परियट्ठावेइ परियट्ठियं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेति,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खु वियडं अच्छेज्जं अणिमिट्ठं अभिहटं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

एतेसि सखं पूर्ववत् जहा पिडणिज्जुत्तीए, एतेसु पच्छित्तं चउल्लहं, जं च दुमुद्धियपडिग्गाहणे पच्छित्तं भवति, ऋ ।

एमेव तिविहकरणं, पामिच्चे तह य परियट्ठे ।

अच्छिज्जे अणिसिट्ठे, तिविहं करणं णवरि णत्थि ॥६०३६॥

तिविहं करणं कृतं कारितं अनुमोदितं च, अच्छिज्जअणिसिट्ठेसु तिविहं करणं भवति, सेसं मव्वं वित्तियपदं च पूर्ववत् ॥६०३६॥

जे भिक्खु गिलाणस्सऽट्ठाए परं तिहं दियडदत्तीणं पडिग्गाहेह,
पडिग्गाहेनं वा सातिज्जति ॥सु०॥५॥

दत्तीए पमाणं पसती, तिहं पसतीणं परेण चउत्था पसती गिलाणकज्जे वि ण सेत्तव्वो, जो मेहति तस्स चउलहं ।

जे भिक्खु गिलाणस्सा, परेणतिहं तु वियडदत्तीणं ।

गिण्हेज्ज आदिएज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥६०३७॥

तिहं दत्तीणं परतो गहणे वि चउलहं । “आदिएज्ज” ति पिवत्तस्स वि चउलहं ॥६०३७॥

तिहं दत्तीणं परतो गहणे आदियणे वा इमे दोसा -

अप्पच्चओ य गरहा, मददोसा मेहिवट्ठुणं खिसा ।

तिहं परं मेहते, परेण तिण्हाइयंते य ॥६०३८॥

अप्पच्चओ ति गहा एस पव्वइओ होउं वियडं गिण्हति आदियति वा तहा एस अणं पि करेति मेहुणादियं । “गरह” ति एस णूणं गियकुलजातितो ति । मददोसा-पीते पलवति बगह वा । पुणो पुणो गहणे वा वियडं मेहो बड्ढति । खिसा—धिरत्थु ते एरिसपव्वज्जाए ति ॥६०३८॥

दिट्ठं कारणगहणं, तस्स पमाणं तु तिणिण दत्तीओ ।

पातुं च असागरिय, सेहादि असंलवंतो य ॥६०३९॥

तिणिण दत्तीओ तिणिण पसतीओ लकारिओ ताओ पाउं असागरिये अच्छति, “णिण्हतो ति णगायते पलवति णच्चइ वा । अभाविद्यसेह अपरिण गेहि सडि उल्लावणं न करेति गिहीहि वा ॥६०३९॥

वियडत्तस्स उ वाहिं, णिग्मांतु ण देति अह बला णीति ।

जयणाए पत्तवासे, गायणे व लवंते आसमवि ॥६०४०॥

जइ जुत्तमेत्तपीएण अतिरित्सेण वा मत्तो वियडत्तगो ँति मत्तो पराधीणओ वाहिं णिग्माच्छेण्ण तो ण देति से णिग्मांतु, बला णितो “जयण” ति बहा ण पीडिज्जति सहा “पत्तवासे” ति-बज्जइ । अह पत्तवासितो ओक्कलो वा गाएज्जा पलवेज्ज वा तो “आसमवि” ति आसं सुहं तं पि सिविज्जति ॥६०४०॥

अववादतो तिहं दत्तीणं अतिरित्तमवि मिण्हेअ -

वित्थियपदं गेलण्णे, विज्जुवदेसे तहेव सिक्ख्वाते ।

गहणं अतिरित्तस्सा, वेज्जुवदेसे य आइयणं ॥६०४१॥

गेलण्णट्ठा वेज्जुवदेसेण सिक्खाए वा एतेहि कारणेहि गहणं अतिरित्तस्स भातियणं पि, अतिरित्तस्स गेलण्णसिक्खाहि विसेसतो वेज्जुवदेसेण ।

तं पुण इमेसु ठाणेषु कमेण गेण्हेज्जा -

“गहणं पुराणसावग, सम्म अहाभद दाणसद्धे य ।

भाविक्खुलेसु ततो, जयणाए तत्तु परल्लिगे” ॥१॥

जे भिक्खू वियडं गहाय गामाणुगामं दूइज्जइ, दूइज्जंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६॥

त्रियडेण हत्थगतेण जो गामाणुगामं दूइज्जइ गच्छइ, तरस्स आणादी चउलहं च ।

कारणओ सग्गामे, सइलामे गंतु जो परग्गामे ।

आणिज्जा ही वियडं, णिज्जा वा आणमादीणि ॥६०४२॥

कारणओ वियडं घेत्तव्वं, तं पि सग्गामे “सति” ति लब्धमाणे जो परगामतो आणति, सग्गामाओ वा परगामं गेज्जा, तस्स आणादिया दोसा ॥६०४२॥

इमे य -

परिगल्लण पवडणे वा, अणुपंथियगंधमादि उड्डाहो ।

आहारैतरतेणा, किं लद्ध कुतूहले चेव ॥६०४३॥

परिगल्लंते पुढवातिच्छक्काया विराहिज्जंति, पडियस्स वा भायणभम्मे य छक्कायविराहणा, अहंवा - परिगल्लंते पडियस्स वा छड्डिते अणुपंथियो वा पडिपंथियो वा गंधमाघाएज्ज, सो य उड्डाहं करेज्ज, अंतरा वा आहारैतेणा भायणं उग्गाडेज्जति, दट्ठुं आदिएज्ज उड्डाहं वा करेज्ज । इयरे त्ति उवकरण-तेणा ते वा कुतूहलेण भायणं उग्गाडेज्जा, किं लद्धं ति ? ते वा उड्डाहं करेज्ज ॥६०४३॥

जम्हा एवमादिया दोसा -

तम्हा खलु सग्गामे, घेत्तणं बंधणं घणं कुज्जा ।

एत्तां चिय उवउत्तो, गिहीण दूरेण संवरित्तो ॥६०४४॥

खलुसद्धो सग्गामावधारणे, स्वग्राम एव गृहीतव्यं, सग्गामासति परगामातो आणियव्वं, कारणे वा परगामं गेयव्वं इमेण विहिणा - संकुडमुदभायणे ओमंथियं सरावं घणवीरबंधणं कुज्जा, पंथं उवउत्तो गच्छति, जहा णो परिगल्लति पववल्लति वा । गिहीण य एयंतज्जत्तण हेडोवाएण दूरतो गच्छति, तं पि भायणं वास-कप्पादिणा सुसंवृत्तं करेति ॥६०४४॥

अववादकारणेण परगामे नेति, आणवेति वा -

चितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवदस्से तदेव सिक्खाए ।

एतेहि कारणेहि, जयण इमा तत्थ कायव्वा ॥६०४५॥ पूर्ववत्

एवमादिकारणेहि गेण्हंतस्स इमा जयणा -

पुराणेषु सावतेसु, व सणि-अहाभद-दाणसद्धेसु ।

मज्झत्थकुलीणेषु, किरियावादीसु गहणं तु ॥६०४६॥

पुर्वं पुराणस्म हत्यातो घेषइ, तस्स भवति गहिताणुश्वतसावगस्स, ततो अविरयसम्मदिट्ठस्स, ततो अहंदाहस्स, ततो दाणसहुस्स । मज्झत्था जे णो अहंदा सायणं पडिवणा णो अण्येसि, ते य बातिकुलीणा । एत्थ कुलीणो सभावद्धितो दिट्ठे य सहसेत्थयः । क्रियां वदति क्रियावादीति वेज्जेत्थयः ॥६०४६॥

खेत्ततो पुण इमेसु गहणं -

गिहि-कुल-पाणागारं, गहणं पुण तस्स दोहि ठाणेहिं ।

मागारियमादीहि उ, आगादे अन्नसिंगेणं ॥६०४७॥

दोहिं ठाणेहिं गहणं, गिहेत्ति पुराणादियण गिहेसु, “पाणागार” ति-कल्लालावणे, गिहासइ पच्छा कल्लालावणे । “गिहे” ति पुर्वं सेज्जातरगिहातो आणज्जति जे दूराणयणे दोसा ते परिहरिया भवति, सेज्जातरगिहासति पच्छा णिवेसणतो वाडग-साहि-सगाम-परगामातो य । जत्थ सलिंगेण उट्ठाहो तत्थ परलिंगेण गहणं करोति ॥६०४७॥

अदिट्ठमस्सुतेसु, परलिंगेणेतरं सलिंगेणं ।

आसज्ज वा विदेसं, अदिट्ठपुव्वे वि लिंगेणं ॥६०४८॥

जत्थ गधरे गामे वा सो साधू ण केणइ विट्ठो वण्णागारेहिं वा सुतो तत्थ परलिंगेण ठितो गेण्हइ । “इतरं” ति - जत्थ पुण सो परलिंगद्धितो वि पच्चभण्णज्जति तत्थ सलिंगेण वा गेण्हति । अहवा - “आसज्ज वा वि देसं” - ति जत्थ देसे ण गज्जति कि एतेसि वियडं कप्पं अकप्पं ति, ण वा लोगो गरहति, तत्थ सलिंगेण गेण्हति । “अदिट्ठपुव्वे” ति-जत्थ गाम-णगरानिसु ण विट्ठपुव्वो तत्थ वा सलिंगेण गेण्हति ॥६०४८॥

जे भिक्खु वियडं गालेइ, गालावेइ, गालियं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

परिपूयगादीहि गालेति तस्स चउलहुं आणादीया य दोसा ।

जे भिक्खु वियडं तू, गालिज्जा तिपिदकरणजोगेणं ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराथणं पावें ॥६०४९॥

अणवणो गालेइ, अण्णेण वा गालावेइ, गालेतमणुमोदेति एव तिपिदकरणं, सेसं कंडं ।

इमे दोसा -

इहरह वि ताव गंधो, किमु गालेतम्मि जं उज्झिमिया ।

खोलेसु पक्कसम्मिय, -पाणादिविराथणा चेव ॥६०५०॥

“इहरह” ति-अगालिज्जंतस्स वि गंधो, गालिज्जते पुण सुट्ठुनरं गंधो खोलपक्कसेसु उज्झिज्जमाणेसु उज्झिमिया भवति, मज्झस्स हेट्ठा घोषगिमादिकिट्ठिमंखेलो सुराए किण्णिमादिकिट्ठिमं पक्कसं अण्णं च खोलपक्कसेसु छट्ठिज्जमाणेसु अक्खिगपिपोलिया विराथणा, मधुविदोवत्खाणयो य प्राणिविराथणा ॥६०५०॥

वितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएमे तहेव सिक्खाए ।

एतेहिं कारणेहिं, जयण इमा तत्थ कातव्वा ॥६०५१॥

कारणे इमाए जयणाए गेण्हेज्जा -

पुव्वपरिगालियस्स उ, गवेसणा पढमताए कायव्वा ।

पुव्वपरिगालियस्स व, असतीते अप्पणा मालं ॥६०५२॥

रिधु पुव्वपरिति कंथः ॥६०५२॥

सब्बे वियडसत्ता जहा णिहोस-सदोसा भवति तहा आह -

कारणगहणे जयणा, दत्ती दृतिज्जमालणं चेव ।

कीतादी पूण दप्पे, कज्जे वा जोगमकरेत्ता ॥६०५३॥

दत्तीमुत्तं दृढज्जणामुत्तं मालणामुत्तं च एते सुत्ता कारणिया, एतेसु कारणेसु विवडं वेण्ड, गहणे णिहोसो जयणं करेत्तोऽजयणं करेत्तस्स दोसा भवति । कीयगड-पामिच्च-परियट्ठि-अच्छेज्जादिया पुण सुत्ता दप्पतो षडिसिद्धा, दप्पतो गेण्हेतो सदोसा, कज्जे अववादतो गेण्हेतो जति तिणिण वारा सुद्धस्स जोगं ण पउजति पणगपरिहाणी वा न पउजति तो सदोसा ॥६०५३॥

जे भिक्खु चउहिं संभाहिं सक्कायं करेइ करेत्तं वा साइज्जइ, तं जहा

पुव्वाए संभाए, पच्छिमाए संज्भाए, अवरण्हे, अद्वरत्ते ॥६०॥८॥

तासु जो सक्कायं करेइ तस्स चउलहुं आणाविया य दोसा ।

पुव्वावरसंभाए, मज्झण्हे तह य अद्वरत्तम्मि ।

चतुसंभासज्झायं, जो कुणती आणमादीणि ॥६०५४॥

संक्कासु अपाढे इमं कारणं -

लोए वि होति गरहा, संक्कासु तु गुज्झणा पवियरंति ।

आवासग उवओगे, आसासो चेव खिन्नाणं ॥६०५५॥

लोइयवेइसामादियाणा य संक्कासु पाढो गरहियो, अन्न संक्कासु गुज्झण ति देवा ते विवरंति ते पमत्तं छलेज्ज, संक्काए सज्झायविणियदुचित्तो प्रावासगो उवउत्तो भवति, सज्झायखिण्णस्स य तं वेत्तं आसासो भवति, णाणायारो य विराहितो, णाणविराहणं करेत्तेण संजमो विराहितो, जम्हा एत्तिया दोसा तम्हा णो करेज्जा ॥६०५५॥

कारणे वा करेज्ज -

चित्तियाऽऽगाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहि, जयणाए कप्पती कार्तुं ॥६०५६॥

आगाढजोगो महाकप्पसुयाइउट्ठुं पडिमुणावणणिमित्तं संक्कासु कट्ठिज्जेज्जा, अहवा - आगाढकारणा सागारियादि ॥६०५६॥

तेसि इमा विभासा -

जं जस्स जियं सागारियम्मि णिसिमरणे जेण जग्गंति ।

अहिणवगहिदम्मि एते, पडिपुच्छं नत्थि उभयस्स ॥६०५७॥

“साधारण” ति-सहपडिबद्धाए वसधीए ठिता तत्थ जस्स जं सुयं कालिणं उक्कालिणं बाएइ ति सो तं संभाए परियट्ठेति । “कालगतो” ति — कोइ साधू निसीए मग्गो लदहु राग्गो जग्गियब्बं, तत्थ जेण सुत्तेण रसिएण णायमादिणा कडिज्जतेण जग्गति तं संभासु वि कडिज्जति, गिलाणो वा ओसही पीओ जेण जग्गति तं कडिज्जति । “असति” ति किंचि अज्जपणं कस्सइ गुरुणो समीवाधो गहितं सो गुरू कालगतो, तस्स व अहिणवगहियस्स सुत्तत्थस्स अण्णतो पडिपुच्छं पि णत्थि अतो तं संभासु वि परियट्ठेति ॥६०५५॥

“वोच्छेदि” ति अस्य व्याख्या —

वोच्छेदे तस्सेव उ, तदत्थि सेसेसु तं समुच्छिण्णे ।

अणुपेहाए अबलिओ, घोससु यं वा वि सहेणं ॥६०५८॥

कस्स इ आयरियस्स किंचि अज्जपणं अत्थि, अण्णोसु तं वोच्छिण्णं, सो संभासु असंभाकाले वा परियट्ठेति, मा ममं पि वोच्छिज्जिहिति । अहवा — तस्स समीवातो पढतो लहुं पढामिति संभासु वि पढति, मा वोच्छिज्जिहिति ति । संभासु कारणे अणुपेहियब्बं । जो पुण अणुपेहाए ण सक्कैति सो सहेण वि पढेज्जा । अहवा — तं घोससहेण घोसेयब्बं, तं पि जयणाए, जहा अण्णो अपरिणामयो ण जाणति ॥६०५८॥

जे भिक्खु कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ

पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥६०॥६॥

जे भिक्खु दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ

पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥६०॥१०॥

कालियसुयस्स उक्काले संभासु वा असंभाए वा तिण्हं पुच्छाणं परेण पुच्छइ तस्स चउलहुं । दिट्ठिवायस्स संभासु असंभाए वा सत्तण्हं परेण पुच्छंतस्स डू ।

तिण्हुवरि कालियस्सा, सत्तण्ह परेण दिट्ठिवायस्स ।

जे भिक्खु पुच्छाणं, चउसंभं पुच्छ आणादी ॥६०५६॥

चउसु संभासु अणायरीए वा तस्स आणादी ॥६०५६॥

पुच्छाते पुण कि पमाणं ?, अतो अण्णति —

पुच्छाणं परिमाणं, जावतियं पुच्छति अपुणरुत्तं ।

पुच्छेज्जा ही भिक्खु, पुच्छ णिसज्जाए चउभंगो ॥६०५७॥

अपुणरुत्तं जावतियं कडिउ पुच्छति सा एगा पुच्छा ।

एत्थ चउभंगो —

एक्का णिसेज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ सुद्धो ।

एक्का णिसेज्जा अणेगाओ पुच्छाओ; एत्थ तिण्हं वा सत्तण्हं वा परेण चउलहुगा ।

अणेगा णिसिज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ वि सुद्धो ।

अणेगा णिसिज्जा अणेगा पुच्छा, एत्थ वि तिण्हं सत्तण्हं वा परेण पुच्छंतस्स चउलहुगा ॥६०५८॥

१ गा० ६०५६ । २ गा० ६०५६ । ३ गा० ६०५६ ।

अहवा तिणिण सिलोगा, ते तिसु णव कालिएतरे तिगा सत्त ।

त्रथ य पगयसमत्ती, जावतियं वाचिओ गिण्हे ॥६०६१॥

तिहि सिलोगेहि एगा पुच्छा, तिहि पुच्छाहि णव सिलोगा भवति, एवं कालियसुयस्स एगतरं ।
दिट्ठिवाए सत्तसु पुच्छासु एगवीसं सिलोगा भवति । अहवा - जस्य पगतं समप्यति घोवं बहुं वा सा एगा
पुच्छा । अहवा - जत्तिवं आयरिएण तरइ उच्चारितं वेत्तुं सा एगा पुच्छा ॥६०६१॥

चितियागाहे मागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहिं कारणेहिं, तिण्हं सत्तण्ह व परेणं ॥६०६२॥

कम्हा दिट्ठिवाए सत्त पुच्छातो ?, अतो भणति -

नयवातसुहुमयाए, गणिते भंगसुहुमे णिमित्ते य ।

गंथस्स य बाहुल्ला, सत्त कया दिट्ठिवातम्मि ॥६०६३॥

णगमादि सत्तणया, एक्केक्को य सयविट्ठो, तेहिं सभेदा जाव दव्वपरूवणा दिट्ठिवाए कज्जंति सा
णयवादसुहुमया भणति । तह परिकम्मसुत्तेसु गणियसुहुमया, तहा परमाणुमादीसु वण्णमंघरसफात्तेसु एगगुण-
कालगादिपज्जवभंगसुहुमता । तहा अट्ठंगमादिणिमित्तं, बहुविट्ठयरत्तणतो दिट्ठिवायगंयस्स य बहुप्रत्तणतो सत्त
पुच्छाओ कताओ ॥६०६३॥

जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेतं वा साइज्जइ, तं जहा -

इंदमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे ॥सू०॥११॥

रंक्षण-पयण-खाण-पाण-नृत्य-गेय-प्रभोदे च महता महामहा तेसु जो सज्झायं करेइ तस्स चउनहुं ।

जे भिक्खू चउसु महापाडिवएसु सज्झायं करेइ करेतं वा साइज्जइ, तं जहा -

सुगिम्हयपाडिवए आसाढीपाडिवए

आसोयपाडिवए कत्तियपाडिवए वा ॥सू०॥१२॥

एतेसिं चेव महामहाणं जे चउरो पाडिवयदिवसा, एतेसु वि करेतस्स चउनहुं ।

चतुसुं महामहेसुं, चतुपाडिवदे तहेव तेसिं च ।

जो कुज्जा सज्झायं, सो पावति आणमादीणि ॥६०६४॥ कत्था

के पुण ते महामहा ?, उच्यते -

आसाढी इंदमहो, कत्तिय-सुगिम्हओ य वोधन्वो ।

एते महामहा खलु, एतेसिं चेव पाडिवया ॥६०६५॥

आसाढी - आसाढपोणिमाए, 'इह लाडेसु सावणपोणिमाए भवति इंदमहो, आसोयपुणिमाए
कत्तियपुणिमाए चेव, सुगिम्हातो चेतुपुणिमाए । एते अंतदिवसा गहिया । आदित्तो पुण जस्य विसए

१ 'इह' अनेन जायते लाटदेशीयोऽयं-वृत्तिकार इति ।

अतो दिवसातो महामहो पवतति ततो दिवसातो आरम्भ जाव अंतदिवसो ताव सज्जातो ण कायव्वो । एसिं
वेव पुण्णिमाणं अणंतरं जे बहुलपडिवगा चउरो तेवि वज्जेयव्वा ॥६०६५॥

पडिसिद्धकाले करेतस्स इमे दोसा -

अन्नतरपमादजुत्तं, छलेज्ज अप्पिड्डिओ ण पुण जुत्तं ।

अद्दोदहिट्ठिती पुण, छलेज्ज जयणोवउत्तं पि ॥६०६६॥

सरागसज्जतो सरागसज्जतो इंदियविसयादि अण्णतरे पमादजुत्तो हवेज्ज, विसेसतो महामहेसु तं
पमादजुत्तं पडिणीयदेवता अप्पिड्डिमा सित्तादि छलण करेज्ज ; जयणाजुत्तं पुण साहुं जो अप्पिड्डितो देवो
मदोदभीमो ऊणट्ठिइत्ति सो ण सक्केति छलेउं - अद्दमागरोवमठितितो पुण जयणाजुत्तं पि छलेति, अत्थि से
सामत्थं, तं पि पुण्वेवसंबंधसरणतो कोति छलेज्ज ॥६०६६॥

चोदगाह - "बारसविहम्मिवि तवे, सभित्तर बाहिरे कुसलदिट्ठे ।

ण वि अत्थि ण वि य होही, सज्जायसमो तवोकम्म ॥"

किं महेसु संभासु वा पडिसिज्जति ?, आचार्याह -

कामं सुओवओगो, तयोवहाणं अणुत्तरं भणितं ।

पडिसेहितम्मि काले, तहावि खलु कम्मबंधाय ॥६०६७॥

दिट्ठं महेसु सज्जायस्स पडिसेहकारणं ।

पाडिवएसु किं पडिसिज्जइ ?, उच्यते -

छणियाऽवसेसएणं, पाडिवएसु वि छणाऽणुमज्जति ।

महवाउलत्तणेणं, असारिताणं च सम्माणो ॥६०६८॥

छणस्स उवसाहियं जं मज्जवाणादिगं तं सर्व्वं णोवभुत्तं, तं पडिवयासु उवभुज्जति, अतो पडिवतासु
वि छणो अणुसज्जति । अण्णं न महदिणेसु वाउलत्तणतो जे य भित्तादि ण सारिता ते पडिवयासु संभारिज्जति
ति छणो वट्ठति, तेसु वि ते चेव दोसा, तम्हा तेसु वि णो करेज्जा ॥६०६८॥

बित्तियागादे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती कातुं ॥६०६९॥ कंठ्या

जे भिक्खू पोरिसिं सज्जायं उवाइणावेइ उवाइणावेत्तं वा साइज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू चउकालं सज्जायं न करेइ न करेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

कालियमुत्तस्स चउरो सज्जायकाला, ते य चउपोरिसिण्णिकणा, ते उवातिणावेति लि - जो
तेसु सज्जायं न करेइ तस्स चउलहुं आणादिणो य दोसा ।

अंतो अहोरत्तस्स उ, चउरो सज्जायपोरिसीओ उ ।

जे भिक्खू उवायणति, सो पावति आणमादीणि ॥६०७०॥

अहोरत्तस्स अंतो अणंतरे, सेसं कंठ्या ॥६०७०॥

चाउक्कालं सज्जायं अकरेंतस्स इमे दोसा ।

पुण्वगहितं च नासति, अपुण्वगहणं कञ्चो सि विकहाहिं ।

दिवस-निसि-आदि-चरिमासु चतसु सेसासु भइयव्वं ॥६०७१॥

मुत्तत्थे मोत्तं देस-भत्त-राय-इत्यिकहादिसु पमत्तो अञ्छति अणुणेंतस्स पुण्वगहितं नासति, विकहा-
पमत्तस्स य अणुण्वं गहणं णत्थि, तम्हा णो विकहासु रमेज्जा ।

दिवसस्स पढमचरिमासु णिसीए य पढमचरिमासु य-एयासु चउसु वि कालियसुयस्स गहणं गुणणं च
करेज्ज । सेसासु त्ति दिवसस्स वितियाए उक्कालियसुयस्स गहणं करेति अत्थं वा सुणेति, एसा चेव भयणा ।
ततियाए वा भिक्खं हिइइ, अह ण हिइति तो उक्कालियं पडति, पुण्वगहियमुक्कालियं वा सुणेति, अत्थं वा
सुणेइ । णिसिस्स विइयाए एसा चेव भयणा सुवइ वा । णिसिस्स ततियाए णिहाविमोवत्तं करेइ, उक्कालियं
गैह्मति गुणेति वा, कालियं वा सुत्तमत्थं वा करेति । एषं सेसासु भयणा भादेयव्वा ॥६०७१॥

चाउक्कालियसज्जायस्स वा अकरणे इमे कारणा -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्धान रोहए वा, कालं च पडुच्च नो कुज्जा ॥६०७२॥

अस्य व्याख्या --

सज्जायवज्जमसिवे, रायदुट्ठे भय रोहग असुद्धे ।

इतरमवि रोहमसिवे, भइत्तं इतरे अलं भयसु ॥६०७३॥

“सज्जायवज्जमसिवे” त्ति - लोके असिवं वा साधू अप्पणा वा गहितो तत्थ सज्जायं ण पटुवेंति
आवस्सगादि उक्कालियं करेति । रायदुट्ठे बोहिगभए य तुण्हिक्का अञ्छति, मा णज्जिहामो, तत्थ कालिग-
मुक्कालियं वा ण करेति । अहवा - “रायदुट्ठे भय” त्ति-णिविक्खवा भत्तपाणे पडिसेहे य ण करेति सज्जायं ।
उक्करण (सरीर) हरे दुविषमेरवे य ण करेति, मा णज्जिहामो त्ति । रोषणे असुद्धे काले वा ण करेति ।
इयरमवि आवस्सगादि उक्कालियं, जत्थ रोषणे अचियत्तं अविदेण य गहिया तत्थ तं पि ण करेति । इयरे
त्ति - ओमोदरिया तत्थ भयणा - जइ वितियजामादिसु वेलासु ण करेति सज्जायं, अह ण फब्बति
पच्छुत्तियवेलातो आदिक्कोदयाओ आरद्धा ताव हिइति जाव अवरण्हो त्ति । गेलण्णाणुसु ‘अलं भयसु’ त्ति-
जइ गिलाणो सत्तो अद्धानिणेण वा न खिण्णो तो करेति, अह असत्ता तो ण करेति । अहवा - गिलाण-
पडियरगा वा ण करेति, कालं वा पडुच्च णो कुज्जति । असुद्धे वा काले ण करेति । अणुपेहा सव्वत्थ
अविहत्ता ॥६०७३॥

जे भिक्खू असज्जाइए सज्जायं करेइ, करेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

अभिज्जमि कारणे सज्जाओ ण कीरति तं सव्वं असज्जाइयं, तं च बहुविहं वक्खमाणं, तत्थ
जो करेइ तस्स चटलहुं आणाओगे अणवत्था मिच्छत्तं आयसंजमविराहणा य ।

तत्तिसमे भेदा -

असज्जायं च दुविहं, आतसमुत्थं च परसमुत्थं च ।

जं तत्थ परसमुत्थं, तं पंचविहं तु नायव्वं ॥६०७४॥

आयसमुत्तं चिद्वत् ताव उर्वरि भणिहति अणंतरमुत्ते, जं परसमुत्तं तं इमं पंचविहं ॥६०७५॥

संजमघाउप्पाते, सा दिव्वे वुग्गहे य सारीरे ।

घोसणयमेच्छरणो, कोह छलिओ पमाएणं ॥६०७५॥

एयम्मि पंचविहे असज्झाए जो सज्झायं करेति तस्सिमा आयसंजमविराहणा । दिट्ठतो-घोसणय मेच्छरणो त्ति ॥६०७५॥

अस्य व्याख्या -

मेच्छमयघोसणणिवे, हियसेसा ते तु डंडिया रण्णा ।

एवं दुहओ डंडो, सुर पच्छित्ते इह परे य ॥६०७६॥

खिहपतिट्ठितं नगरं, जियसत्तू राया । तेण सविसए घोसावितं जहा - मेच्छो राया ग्रामच्छति, तं ग्रामनगराणि मोत्तुं समासण्णे दुग्गेसु ठायह, मा विणस्सिहिह । जे ठिया रण्णो वयणेण दुग्गादिसु ते ण विणट्ठा । जे पुण न ठिता ते मेच्छेसु विलुत्ता, ते पुण रण्णा आणाभंगो मम कयो त्ति जं किंचि हियसेसं पि तं पि डंडिता । एवं असज्झाए सज्झायं करेत्तस्स दुहतो डंडो इह भवे "सुर" त्ति देवताए छलिज्जति, परभवं पडुच्च णाणादिविराहणा पच्छित्तं च ॥६०७६॥

इमो दिट्ठतोवणओ -

राथा इव तित्थकरो, जाणवता साधु घोसणं सुचं ।

मेच्छो य असज्झाओ, रतणघणाइं च णाणादी ॥६०७७॥

जह राथा तहा तित्थकरो, जहा जणपदजणा तहा साधु, जहा आघोसणं तहा सुत्तपोरिसिक्करणं, जाणिसा मेच्छा तारिसा असज्झाया, जहा रयणघणावहारो तहा णाणदंसणचरणविणासो । तं पि सव्वं उव-
व्वचारेयव्वं ॥६०७७॥

"कोति छलिओ, पमादेण" ति अस्य विभासा -

थोवाऽवसेसपोरिसि, अज्झयणं वा वि जो कुणति सोच्चा ।

णाणादिसारहीणस्स तस्स छलणा तु संसारे ॥६०७८॥

मज्झार्तं करेत्तस्स बोवावसेसगो उद्देसगो अज्झयणं वा, तो पोरिसी आगय त्ति सुत्ता, अहुवा -
असज्झाइयं कालवेसा वा सोच्चा वि जो पाउट्टियाए सज्झायं करोति सो णाणादिसारहीणो भवति ।
अणायारत्थो य देवताए छलिज्जति, संसारे य दीहकासं परिवट्ठेति, पमादेण वि करेत्तो छलिज्जति चेव,
दुक्खं संसारे अणुभवति ॥६०७८॥

जं तं संजमोवघाति तं इमं तिविहं -

महिया य भिण्णवासे, सचिचरजो य संजमे तिविहे ।

दव्वे खेचे काले, जहियं वा जश्चिरं भव्वं ॥६०७९॥

पंचविहसज्जायस्स किं कहं परिहरियव्वमिति तप्पसाहगो इमो दिट्ठतो -

दुग्गादि तोसियणिषो, पंचण्हं देति इच्छियपयारं ।

गहिण य देति मोल्लं, जणस्स आहारवत्थादी ॥६०८०॥

एगस्स रण्णो पच पुरिसा, ते बहुसमरलद्धविजया । अण्णया तेहि अक्खंतविसमं दुग्गं गहितं । तेसिं तुट्ठो राया । इच्छियं णगरे पयारं देति, जं ते किञ्चि असणादिगं वत्थादिगं वा जणस्स गेण्हति तस्स वेणइयं (वेयणियं) सव्वं राया पयच्छति ॥६०८०॥

एगेण तोसिततरो, गिहमगिहे तस्स सव्वहिं पयारो ।

रत्थादीसु चउण्हं, एवं पढमं तु सव्वत्थ ॥६०८१॥

तेसिं पंचण्हं पुरिसाणं एक्केण राया तोसिततरो, तस्स गिहाण रत्थासु सव्वत्थ इच्छिय-पयारं पयच्छति । चउण्हं रच्छामु चेव इच्छियपयारं पयच्छइ । जो एते दिण्णप्पयारे आसाएज्ज तस्स राया डडं करेति । एमं दिट्ठतो ।

इमो उवसंचारो - जहा पंच पुरिसा तथा पंचविहमसज्जायं, जहा सो एगो अन्नमरहिततरो पुरिसो एवं पढमं संजमोवधातित सव्वहा णासांतज्जति, तम्मि वट्टमाणे ण सज्जामो ण पडिलेहणादिका काइ चिट्ठा कीरइ, इतरेसु चउसु असज्जइएसु जहा ते चउरो पुरिसा रच्छामु चेव अणसायणज्जा तथा तेसु सज्जामो चेव ण कीरइ, सेसा सव्वा चिट्ठा कीरइ, आक्खमादिउक्कासियं पडिउज्जति ॥६०८१॥

***महियादिति विहस्स संजमोवधातिस्स इमं वक्खान -**

महिया तु गब्भमासे, सच्चित्तयो तु ईसिआयंबो ।

वासे तिण्णि पगारा, बुब्बुय तव्वज्ज फुसिता य ॥६०८२॥

महियस्ति भूमिया, सा य कसियंमरगसिरादिषु गब्भमासेषु भवति, सा य पडणपमकालं चेव सुट्टम-तणयो सव्वं आउक्कायभावितं करेति, तत्थ तत्कालसमयं चेव सव्वचेट्ठा गिरुज्जति । ववहारसच्चित्तो पुट्टविकासो भारणो वा उट्ठमो आगतो सच्चित्तरयो भवति, तस्स लक्खणं - वण्णतो ईसि आयंबो दिसंतरेसु दीसति, सोवि गिरंजरपाएण तिण्हं दिणाणं परतो सव्वं पुट्टविकायभावितं करेति, तत्पातासंकासंभवच्च । भिन्नवासं तिविहं - बुब्बुयाइ, जत्थ वासे पडमाणे उदगबुब्बुया भवति तं बुब्बुयवरिसं, तेहि वज्जितं तव्वज्जियं । सुट्टमफूसारेहि पडमःणेहि फुसियं वरिसं, एतेसु जहासंखं तिण्णि-पंच-सत्तदिणपरमो सव्वं आउक्कायभावियं भवइ ॥६०८२॥

संजमपायस्स सव्वभेदाणं इमो चउज्जितो परिहारो - “दव्वे खेत्ते” पच्छइ अस्य व्याख्या -

दव्वे तं चिय दव्वं, खेत्ते जहि पडति जच्चिरं कालं ।

ठाणभासादिभावे, मोत्तुं उस्सास उम्मेसं ॥६०८३॥

दव्वतो तं चेव दव्वं ति महिया सच्चित्तरयो भिन्नवासं च परिहरिज्जति । “जहियं व” ति -- जहि खेत्ते महियादी पडति तेहि चेव परिहरिज्जति । “जच्चिरं” ति - पडणकालातो पारम्भ जच्चिरं

१ गा० ६०७६ । २ गा० ६०७६ । ३ गा० ६०७६ । ४ गा० ६०७६ ।

कालं पठति तच्चिरं परिहारो । “मच्चं” ति — भावतो “ठाणभासादि” ति — काउत्सगं ण करंति, ण य भासंति । आदिसद्भासो गमणागमनं पठितेहणसज्झायादि ण करंति । “मोत्तुं उत्सासउत्सेसं” मोत्तुं ति णो पठिमिज्झंति उत्सासादिया असकयत्वात् बोवितव्याघातकरवाच्च, रोषा क्रिया सर्वा निषिद्धयते । एस उत्सगपरिहारो । आतिष्णं पुण सच्चित्तरए तिणि मिण्णवासे तिणि पंच सत्त, अतो परं सज्झायादि ण करंति ।

अत्रे भणति — बुद्धुयावरिते अहोरत्तं, तच्चज्जे दो अहोरत्ता, फुसियवरिते सत्त, अतो परं आउत्सगभाविते सच्चवेदुा गिरुज्झति ॥६०८१॥

वासत्ताणाऽऽवरिया, णिककारणे ठंति कज्जे जतणाए ।

हत्थऽच्छिगुलिसण्णा, 'पोत्तोवरिया व भासंति ॥६०८४॥

णिककारणे वा सकप्पकंबलीए पाउया रेणिदुया सच्चमंतरे चिट्ठंति, अवत्सकायवे वा कज्जे वत्तवे वा इमा जतणा हत्थेण भूमादिअच्छिन्नकारेण वा अंगुलीए वा सण्णेति — “इमं करेहि, मा वा करेहि” ति । अहवा — एवं णावगच्छति मुहपोत्तिय अंतरिया जयणाए भासंति. गिलाणादिकज्जेसु वा सकप्पपाउमा गच्छंति ॥६०८४॥ संजमघाति ति गत्तं ।

इदाणि — “उत्पाए” ति दारं — अन्मादिविकारवत् विश्रसा परिणामतो उत्पातो पांसुमादी भदति ।

पंथ य मंस रुहिरं, केस-सिल-बुद्धि तह रयुग्घाए ।

मंसरुहिरऽहोरत्तं, अवसेसे जच्चिरं सुत्तं ॥६०८५॥

पंसुवरिसं मंसवरिसं रुहिरवरिसं, केसति — बालवरिसं, करयादि वा सिलावरिसं, रयुग्घायपयडणं व । तेसि इमो परिहारो — मंसरुहिर अहोरत्तं सज्झासो ण कीरइ, अवसेसा पंसुमादिया जच्चिरं-कालं पठति तत्तियं कालं सुत्तं णदिमादियं ण पठति ॥६०८५॥

पंसुरउग्घातणे इमं वक्खाणं —

पंसु अचिच्चरयो रयुग्घातो धूलिपडणमव्वत्तो ।

तत्थ सवाए णिव्वायए य सुत्तं परिहरंति ॥६०८६॥

धूमागारो आपंडुरो रयो अचित्तो य पंसु भण्णइ, महास्कन्धावारगमनसमुदता इव विश्रसा-परिणामतो समंता रेणुवतनं रयुग्घातो भण्णइ, अहवा — एस रयो, उग्घातो पुण पंसुरत्ता भण्णति, एतेसु बातसहितेसु असहितेसु वा सुत्तपोरिसि ण करंति ॥६०८६॥

कि चान्यत् —

सामाचिते तिणि दिणा, सुगिम्हते निभिल्वंति जति जोगं ।

तो तम्मि पडंते वी, कुणंति संवच्छरज्झायं ॥६०८७॥

एते पंसुरपुग्घाता सामाविगा हवेज्ज, असाभाविका वा । तत्थ असाभाविगा जे गिग्घायभूमिकपं चंदोपरागादिदिव्सहित्ता, एरिसेसु असाभाविगेसु कते वि उत्सगे ण करंति सज्झायं । “सुगिम्हा” ति —

१ पोत्तरिया इति जूणि । २ निव्वपिाराः । ३ मा० ६०७५ ।

अइ पुण वेत्तसुद्धपक्खदसमीए अवरण्हे ओयं णिक्खिक्खंति इममीओ परेण जाव पुण्णिमाए एत्थंतरे तिण्णि दिवा उवहराए अविस्तरउत्थादावणं काउस्सग्ग करेति, तेरसिमादिसु वा तिसु दिणंसु तो साभाविक्के पढते वि सज्झायं संवत्सरं करेति, अहं तं उस्सग्गं ण करेति, तो साभाविक्के वि पढते सज्झायं ण करेति ॥६०८७॥
उप्पाय ति गय ।

इदाणि "सादेव्वे" ति - स दिव्वेण सादिब्बं दिव्वकृतमित्यर्थः ।

गंधव्व दिसा विज्जुग, गज्जिते जूव जक्ख आलिच्चे ।

एक्केक्कपोरिसी गज्जियं तु दो पोरिसी हणति ॥६०८८॥

गंधव्वणगरविज्जव्वणं दिसाहाहकरणं विज्जुगभवणं त्वकापहणं गज्जियकरणं जूवगो वक्खमाणो जक्खालितं जक्खदितं आगासे भवति, तत्थ गंधव्वणगरं जक्खदितं च एते नियमा दिव्वकया, सेसा चयणिउजा, जतो फुडं ण गज्जति । तेण तेसिं परिहारो । एते गंधव्वादिया सत्थे एक्कं पोरिसि उवहणंति, गज्जियं तु पोरिसि दुयं हणइ ॥६०८८॥

दिसिदाहो छिण्णमूलो, उक्क सरेहा पगामजुत्ता वा ।

संभा छेदावरणो, तु जूवओ सुक्के दिण तिण्णि ॥६०८९॥

अन्यतमदिगंतरविभागे महाणगरप्रदोतमिवोद्योतः किन्तु उवरि प्रकाशमधस्तादंघकार ईदृग् छिण्ण-मूलः दिग्दाहाः । उक्कालवक्खणं सदेहवणं रेहं करेती जा पडइ सा उक्का, रेहविहिता वा उज्जोयं करेती पडति सा वि उक्का । "जूवगो" ति संज्झप्पभा य चंदप्पमा जेण जुयवं भवति तेण जूवगो, सा य सज्झप्पभा चंदप्पभाविरिया फिट्ठती ण गज्जति सुक्कपक्खपडिवयादिसु दिणंसु. संक्रोच्छेदे स भणज्जमाणे कालवेले ण मुणंति, अतो तिण्णि दिणे पातोसियं कालं ण वेण्हंति, तेसु तिसुवि दिणंसु पातोसियसुत्तपोरिसि ण करेति ॥६०८९॥

केसि चि होत्तओमाहा, उ जूयओ ताव होंति आइण्णा ।

जेसि तु अणाइण्णा, तेसिं दो पोरिसी हणति ॥६०९०॥

जगस्स सुभासुभमत्वणमित्तुप्पादो अवितथो आदिच्चकरणधिकारजणिओ आइच्चमुदयत्थमे आयवो किण्ह सामो वा सगुद्विंसठितो डंडा अ मोहं ति एस जूवगो, सेसं कंथ ॥६०९०॥

किं चान्यत् -

चंदिमसूरुवरारो, णिग्घाए गुजिते अहोरत्तं ।

संभाचतुपाडिवए, जं जहि सुगिम्हए नियमा ॥६०९१॥

चंदसूरुवरारो गहणं भण्णति, एवं वक्खमाणं सार्धं निरञ्जं वा व्यंतरकृतो महागजितसमो ध्वनि-निर्घातः, तस्सेव विकारो गुजमानो महाध्वनिः, गुजितं सामण्यतो, एतेसु वउसु वि अहोरत्तं सज्झाओ ण कीरइ । णिग्घाऽगुजितेसु विसेसो - बितियदिणं जाव सा वेला विज्जति, गो अहोरत्तछेदेण छिज्जति, जहा भण्णेसु ससज्झाईणसु ॥६०९१॥

१ गा० ६०७५ । २ तेसिं किर पोरिसी तिग्गि । (आ० नि०) । ३ आताअः ।

सम्भावामो ति अणुदिते सूरिए, सज्जमण्हे, अत्थमण्णे, अहुरतो य - एवासु चउसु सज्जकायं ण करेति । दोसा पुञ्चुत्ता । चउण्हं म्हाप्पहेसु चउसु पाडिबएसु सज्जकायं ण करेति पुञ्चुत्तं, एवम् अण्णं पि जत्तिव ज्ञाणंति “अ” ति महं जाणेज्जा । “जहि” ति गामणगरादिस्तु तं पि सत्थ वज्जेज्ज । सुगिम्हो पुण सव्वदथ णियमा भवइ । एतथ अणागाढजोयं णियमा णिक्खिवन्ति । आगाढं ण णिक्खिवन्ति णपडंति पुण ॥६०९१॥

२चंदिम-सूरिमणं ति अस्य व्याख्या -

उक्कोसेण दुवालस, अट्ट जहण्णेण पोरिसी चंदे ।

सूरो जहण्ण बारस, पोरिसि उक्कोस दो अट्टा ॥६०९२॥

चंदोदयकाले चेव गहिमो, संदूसियरातीए चउरो, अण्णं च अहोरत्तं एवं दुवालस । अहवा - उप्पायमण्णे सव्वरातीयं गहणं सगहो चेव णिव्बुडो, संदूसियरातीए चउरो, अण्णं च अहोरत्तं एवं बारस । अहवा - अजाणया अम्मच्छण्णे संकाते ण नज्जति किं वेत्तं गहणं ?, परिहरिता राती पमाए दिट्ठं सगहो निव्वुडो, अण्णं च अहोरत्तं, एवं दुवालस । एवं चंदस्स सूरस्स अत्थमण्णो सगहनिव्वुडो उवहवरातीए चउरो, अण्णं च अहोरत्तं परिहरति, एवं बारस ।

अह उदेंतो गहिती तो संदूसियमहोरत्तस्स अट्ट, अण्णं च अहोरत्तं परिहरति एवं सोलस । अहवा - उदयवेलागहिमो उप्पादियमण्णे सव्वदिणे गहणं होउं सग्गो चेव णिव्वुडो संदूसियमहोरत्तस्स अट्ट, अण्णं च अहोरत्तं एवं सोलस । अहवा - अम्मच्छण्णे ण णज्जाति किं वेत्तं होहिंति गहणं, दिवसतो संकाए ण पदियं, अत्थमणवेलाए दिट्ठं गहणं सग्गो णिव्वुडो संदूसियस्स अट्ट, अण्णं च अहोरत्तं, एवं सोलस ॥६०९२॥

सगहणिव्वुड एवं, सूरादी जेण होतअहोरत्ता ।

आहणं दिणमुक्के, सोचिय दिवसो य रादी य ॥६०९३॥

सगहणिव्वुडे तं अहोरत्तं उवहतं । कहं ? उच्यते “सूरादी जेण अहोरत्ता,” सूरुदयकालाभो जेण अहोरत्तस्स आदी भवति तं परिहरितुं संदूसितं अण्णं पि अहोरत्तं परिहरियव्वं । इमं पुण आदिण्णं चंदो गहितो रातीए चेव मुक्को, तीसे चेव राईए तेसं चेव वज्जणिज्जं, जम्हा आगामिसूरुदए अहोरत्तसमत्ती । सूरस्स वि दिया गहितो दिया चेव मुक्को, तस्सेव दिवसस्स तेसं राती य वज्जणिज्जा । अहवा-सगहणिव्वुडे विधी अण्णितो ।

ततो सीसो पुच्छति - “कहं चंदे दुवालस, सूरे सोलस जामा ?”

आचार्याह - “सूराती जेण होति अहोरत्ता”, चंदस्स णियमा अहोरत्तदे गते गहणसंयवो अण्णं च अहोरत्तं एवं दुवालस, सूरस्स पुणो अहोरत्तातीए संदूसियमहोरत्तं परिहरिणं, अण्णं पि अहोरत्तं परिहरि-व्वं एवं सोलस ॥६०९३॥ सादेव्वेत्ति गतं ।

इदानीं कुग्गहे ति दारं -

कुग्गहडंडियमादी, संखोभे डंडिए व कालगते ।

अणरायए व समए, जच्चिर णिदोच्चअहोरत्तं ॥६०९४॥

“कुग्गहडंडियमादि” ति अस्य व्याख्या -

सेणहिंवि भोइ महयर, पुंसिन्धीणं च मल्लजुद्धे वा ।

लोढादि-भंडणे वा, गुज्जमुड्डाहमचियत्तं ॥६०९५॥

डंडिप्सु डंडिप्सु य वुण्हो, आदिसदातो सेणाहिबस्स सेणाहिबस्स य । एवं दोण्हं भोइयाणं, दोण्हं महत्तराणं, दोण्हं पुरिसाणं, दोण्हं इत्थीणं, मल्लाण वा जुद्धं पिट्ठायगलोदुभंजणेण वा । आदिसदातो विसयपसिद्धासु 'संसुहलामु । विग्गहा प्रायो व्यंतरबहुला, तत्थ पमत्तं देवया छलेज्ज । "उड्डाहो" हा निदुक्ख ति, जणो भणंज - अग्गे भावइपसाणं इमे सज्जायं करेति ति यच्चियत्तं हवेज्ज । विसयसंलोभो परचक्रामये । डंडिए वा कालगए भवति । "अणराए" ति रण्णो कालगते णिडभएवि जाव अण्णो राया न ठविज्जति । "सभए" ति जीवत्तस्स वि रण्णो बोहिगेहि समंततो अमिदुयं जच्चिरं समयं तत्तियं कात्तं सज्जायं ण करेति । जइवसं सुअं णिडोच्चं तस्स पुरतो ग्रहोरत्तं परिहरति ॥६०६५॥ एस डंडिए कालगते विधी ।

सेसेसु इमा विधी -

तद्विवसभोयगादी, अंतो सत्तण्ह जाव सज्जाओ ।

अणाइस्स य हत्थसयं, दिट्ठविवित्तमि सुद्धं तु ॥६०६६॥

गामभोइए कालगते तद्विवसं ति ग्रहोरत्तं परिहरति ।

आदिसदातो -

महत्तरपगते बहुपक्खिते, व सत्तघर अंतरमते वा ।

णिदुक्ख ति य गरहा, ण करेति सणीयमं वा वि ॥६०६७॥

गामरट्टमहत्तरे अधिकारणिज्जुतो बहुसम्मतो य पगतो "बहुपक्खिते" ति बहुसयणो वाडगमाधि- अधिको सेज्जातरो य अण्णमि वा अणंतरघरातो आरब्भ जाव सत्तमघर, एतेसु मएसु ग्रहोरत्तं सज्जाओ ण कीरति । अह करेति तो णिदुक्ख ति काउं जणो गरहति, अक्कोसेज्ज वा णिच्छुमेज्ज वा । अणसदेण वा सणियं सणियं करेति अणुपेहेति वा । जो पुण अणाहो मतो तं जति उच्चिण्णं हत्थसयं वज्जेयव्वं, अणुभिण्णं असज्जायं ण भवति, तह वि कुच्छियं ति काउं आयरणओ व दिट्ठं हत्थसयं वज्जिजति ॥६०६७॥

जइ तस्स णत्थि कोइ परिट्ठवेतो ताहे -

सागारियादिकहणं, अणिच्छे रत्ति वसभा विगिंचंति ।

विकिखण्णे व समंता, जं दिट्ठं सदेतरे सुद्धा ॥६०६८॥

सागारियस्स आदिसदातो पुराणस्स सङ्गुस्स अहामहस्स वा कहिज्जति - "इमं छड्डेह, अहं सज्जाओ ण सुज्झइ ।" जति तेहि छड्डियं तं सुद्धं । अह ते णेच्छति ताहे अणो वसहि "गम्मति । अह अण्णा वमही ण लब्धति ताहे वसभा अणसागारियं परिट्ठवेति । एस अभिण्णे विधी ।

अह भिण्णे काकसाणादिहं समंता विदिखणं तम्मि दिट्ठिविवित्तमि सुद्धासुद्धं असदभावं गवेसं- तेहि ज दिट्ठं तं सहं विवित्तं छड्डियं । "इयर" ति अदिट्ठं तम्मि तत्थसये विसुद्धा सज्जायं करेताण वि ण पच्छित्तं । एत्थ एयं पसंगतोऽभिहितं ॥६०६९॥

इयाणि सारीरं -

सारीरं पि य दुविहं, जाणुस-तेरिच्छगं समासेणं ।

तेरिच्छं पि य तिविहं, जल-थल-खयरं चउद्धा तु ॥६०६९॥

१ अंतासु (आ० वु०) अंमुमलाभसु इत्यपि पाठः । २ गा० ६०६४ । ३ गा० ६०६४ ।

४ गा० ६०६४ । ५ मग्गति इत्यपि पाठः । ६ गा० ६०७५ ।

एत्य माणुसं ताव चिट्ठु, तेरिच्छं ताव भणामि—त तिविधं मच्छादियाण जलजं, गवादियाण थलजं, मयूरादियाण सहचरं । एतेसि एक्केककं दब्बादि चउव्विहं ॥६०६६॥

एक्केककस्स वा दब्बादिओ इमो चउहा परिहारो —

पंचेदियाण दब्बे, खेत्ते सट्ठिहत्थ पोग्गलाइणं ।

तिकुरत्थ महंतेगा, णमरे बाहिं तु गामस्स ॥६१००॥

दब्बतो पंचेदियाण सहिरादि दब्बं असज्जाइयं । खेतमो सट्ठिहत्थज्जंतरे असज्जाइयं, परतो ण भवति । अहवा—खेततो पोग्गलाइणं पोग्गलं मंसं तेण सखं प्राकिणं व्याप्तं तस्सिमो परिहारो, तिहि कुरत्थाहि अंतरियं सुज्झति, आरतो ण सुज्झति । महंतरत्थाए एक्काए त्रि अंतरियं सुज्झति, अणंतरियं दूरद्धितं ण सुज्झति । महंतरत्था रायमणो जेण राया बलसमणो गच्छति देवजाणरहो वा विविधा संवहणा गच्छति, सेसा कुरत्था । एसा णमरविधी ।

गामस्स णियमा बाहिं, एत्य गामो अत्रिमुद्धणेनमणयदरिसणेण सीमापज्जंतो, परम्पामसीमाए सुज्झन्तीत्यर्थः ॥६१००॥

काले तिपोरिसज्जुव, भावे सुत्तं तु नंदिमादीयं ।

सोणिय मंसं चम्मं, अट्ठीणि य होति चत्तारि ॥६१०१॥

तिरियं च असज्जाइयं संभवकालातो जाव ततिय पोरिसी ताव असज्जाइयं, परतो सुज्झइ । अहवा अट्ठजामा असज्जाइयं, ते जत्थ पायणं तत्थ भवति ।

भावतो पुण परिहरंति सुत्तं, तं च णदिमणुओगदारं तंदुलवेयालियं चंदगवेज्जमं पोरिसी-मंडलमादी । अहवा — “अउद्धा उ” ति — असज्जाइयं चउव्विहं, मंसं सोणियं चम्मं अट्ठि च ॥६१०१॥

मंस-सोणिउक्खित्तमसे इमा विधी —

अंतो बहिं च धोतं, सट्ठी हत्थाण पोरिसी तिणि ।

महाकाये अहोरत्तं, रद्धे वृद्धे य सुद्धं तु ॥६१०२॥

साधुवसही सट्ठीहत्थाणं अंतो बहिं च धोवति । भंगदर्शनमेतत् — अंतो धोतं अतो पक्कं, अंतो धोतं बहिं पक्कं, बहिं धोतं वा अंतो पक्कं । अंतगहणातो पढमबित्तिया भंगा, बहिरगहणातो ततियभंगो, एतेमु तिसु वि असज्जायं । जम्मि पदेसे धोतं प्राणेउं वा रद्धं सो पदेसो सट्ठीए हत्थेहि परिहरियव्वो । कालतो तिणि पोरिसीमो ॥६१०२॥

बहिधोतरद्ध सुद्धो, अंतो धोयम्मि अवयवा होति ।

महाकाए चिरालादी, अविग्गिणं के इ गेच्छंति ॥६१०३॥

एस चउत्थो भंगो । एरिसं जति सट्ठीए हत्थाणं अज्जंतरे प्राणियं तहावि तं असज्जायं ण भवति, पढम-बित्तियभंगेसु अंतो धोवित्तु णीए रद्धे वा तम्मि धोतदुणे अवयवा पडंति तेण असज्जायं । ततियभंगे बहिं धोवित्तु अंतो व णीए मंसमेव असज्जाइयं ति । तं च उक्खित्तमंसं प्राइणपोग्गलं न भवइ । ज हाकसाणादीहि अणिवारायविपरकिणं णिउज्जति तं प्रातिणपोग्गलं भाणियव्वं । महाकालो पंचिदिमो जत्थ इतो न अयायण

अन्वेष्यं । खेतयोः सद्भिः हत्वा, कालतो ग्रहोरत्तं, एव ग्रहोरत्तच्छेदो । सूक्ष्म ए रद्धं पक्कं मंसं असज्जमाद्यं
ण भवति, जल्य असज्जमाद्यं पडितं तेण पदेसेण उदगवाहो 'बूढो, तस्मिं पोरिसिकाले अपुण्णे
विसुद्धं आधायणं ण सुज्जति । "महाकाय" ति अस्य व्याख्या - महाकायं पच्छदं, मूसवादी
महाकायो स बिरालादिणा हतो, जति तं अभिणं च वेगिलिउं वेत्तुं वा सट्ठीए हत्वाणं बाहिं गच्छति तो के इ
आयरियासज्जमाद्यं गेच्छति, धितपक्खो पुण असज्जमाद्यं चैव ॥६१०३॥

ठियपक्खो पलाए सुज्जति, अस्य व्याख्या -

मूसादि महाकायं, मज्जारादी हताऽऽवयण केती ।

अविभिण्णे गेण्हेतुं, पढंति एगे जति पलाति ॥६१०४॥ गतायां

तिरियं च असज्जमायाधिकार एवं इमं भणति -

अंतो बहिं च भिणं, अंडयं बिंदुं तद्वा विआता य ।

रायपहं वूढं सुद्धे, परवयणं साणमादीणि ॥६१०५॥

अंतो बहिं च भिणं अंडयं ति अस्य व्याख्या -

अंडयमुज्झिय कप्पे, ण य भूमिं खणंति इहरहा तिणिण ।

असज्जमाद्यप्पमाणं, मच्छियपादो जहिं बुद्धे ॥६१०६॥

साधुवसधीतो सट्ठीहत्वाणं अंतो भिणं अंडयं असज्जमाद्यं, बाहिंभिणो ण भवति । अहवा - साधुवसट्ठीए
अंतो बाहिं वा अंडयं भित्तं वा उज्झिय ति वा एगदुं, तं च कप्पे वा उज्झितं भूमीए वा, जति कप्पे तो
तं कप्पं सट्ठीए हत्वाणं बाहिं गेउं बोवति ततो सुद्धं । अह भूमीए भिणं तो भूमीए खणितुं ण छट्ठिजति, ण
सुज्जतीत्यर्थः । इहरहा ति तत्पत्ये सट्ठिं हत्वा तिणि य पोरिसीओ परिहरिजति ।

इदाणि "बिंदु" ति असज्जमाद्यस्स किं बिंदुप्पमाणमेतेण हीणेण अधिकतरेण वा असज्जमाओ
भवति ? ति पुच्छा ।

उच्यते - मच्छिताए पादो जहिं बुद्धति तं असज्जमाद्यप्पमाणं ॥६१०६॥

इदाणि "वियाय" ति -

अजरायु तिणिण पोरिसि, जराउगाणं जरे चुते तिणिण ।

रायपहं बिंदुं मलिते, कप्पति अण्णत्थं पुण वूढे ॥६१०७॥

जरा जेसि ण भवति ताणं पसूताणं वसुनिमादिपाणं तासि पसूदकालाओ आरब्धं तिणिण पोरिसीओ
असज्जमाओ मोत्तं ग्रहोरत्तच्छेदं आसण्णपसूयाएवि ग्रहोरत्तच्छेदेण गुज्जति । गोमादिजरापुजाणं पुण जाव जरे
लवति ताव असज्जमाद्यं, जरे चुते तिणिण । जाहे जरं पडितं ततो पडणकालातो आरब्धं तिणिण पहरा परि-
हरिजति । "रायपहं वूढमुद्धं" ति अस्य व्याख्या - "रायपहं बिंदु" पच्छदं, साधुवसट्ठीए आसण्णेण
गच्छमाणस्स तिरियं चस्स जइ सट्ठिजति मलितो ते जइ रायपहंतरिता तो सुद्धो, अह रायपहे चैव बिंदुं
मलितो तद्वा वि कप्पति सज्जमाओ काउं । अह अण्णम्मि पहे अण्णत्थं वा पडितं तं जइ उदगबुद्धिवाहेण बाह-
रियं ओ सुद्धं, पुण ति विगेषाद्यं प्रवर्धनं, पलीवणसेण वा दद्धे सुज्जति ॥६१०७॥

१ गा० ६१०६ । २ गा० ६१०७ । ३ जहिं न बुद्धे (आ० नि०) । ४ गा० ६१०६ । ५ गा० ६१०५ ।
६ गा० ६१०५ ।

“परवयणं” साणमादीणि त्ति परो त्ति चोदमो, तस्स इमं वयणं, “जइ साणो पोमलं समुद्दिस्सिता जाव वसहिंसमीवे चिट्ठइ ताव असज्झाइयं । आदिस्सहातो मज्जारती” ।

आचार्याह -

जति फुसति तहिं तुंडं, जति वा लेच्छारिएण संचिकखे ।

इहरा ण होति चोदग !, वंतं वा परिणतं जम्हा ॥६१०८॥

साणो भोतुं मंसं लेच्छारिएण तुडेण वसहिंसासण्णेण गच्छंतो, तस्स गच्छंतस्स जइ तुंडं रहिरमादी-
जितं खोडादिषु फुसति, तो असज्झायं । अहवा - लेच्छारियत्तुंडो वसहिं-आसण्णे चिट्ठइ तहपि असज्झाइयं ।

“इहरह” त्ति - आहारिएण हे चोदग ! असज्झातियं ण भवति, जम्हा तं आहारियं वंतं
अवंतं वा आहारपरिणामेन परिणयं, आहारपरिणयं च असज्झाइयं ण भवति, अणं परिणामतो मुत्त-
पूरिसादि वा ॥६१०८॥ तेरिच्छं गतं ।

इदानीं आणुस्सयं -

माणुस्सयं चतुद्धा, अट्ठिं मोत्तूण सत्तमहोरत्तं ।

परियावण्णविवण्णे, सेसे तिग सत्त अट्ठेव ॥६१०९॥

तं माणुस्सयं असज्झायं चउज्जिहं - चम्मं मंसं रहिरं अट्ठि च । अट्ठिं मोत्तुं सेसस्स तिविषस्स इमो
परिहारो - खेततो हत्यसत्तं, कालतो महोरत्तं, जं पुण सरीरातो चेव वण्णादिषु आगच्छति परियावणं
विवणं वा तं असज्झाइयं ण भवइ । ‘परियावणं’ जह्वा रहिरं चेव पूषपरिणामेन ठियं, विवणं खदिर-
कल्लसमाणं रसगादिषु च, सेसं असज्झाइयं भवति । अहवा - सेसं अगारी रिउसंभवं तिणिं दिणा, बीयायाणे
वा - जो सावो भो सत्त वा अट्ठ वा दिणे असज्झाइयं भवति ॥६१०९॥

बीयायाणे कहं सत्त अट्ठ वा ?, उच्यते -

रत्तुककडाओ इत्थी, अट्ठदिणे तेण सुक्कड्हिते ।

तिण्ह दिणाण परेणं, अणोउत्तं तं महारत्तं ॥६११०॥

गिसेगकाले रत्तुकडयाए इत्थियं पसवेइ तेण तस्स अट्ठ दिणा परिहरियव्वा, सुक्काधिगतणतो
पुत्तिं पसवति तेण तस्स सत्त दिणा । जं पुण इत्थीए तिण्हं रिउदिणाणं परेण भवति तं सरोगजोणित्थीए
महारत्तं भवति । तस्समुत्सगं काउं सज्झायं करेति । एस रहिरे विही ॥६११०॥

जं वुत्तं *अट्ठिं मोत्तूण त्ति, तस्स इदानीं विथी इमो भण्णति -

दंते दिट्ठे विमिचण, सेसट्ठी बारसेव वरिसाणि ।

आमितसुट्ठे सीयाण पाणमादी य रुद्धरे ॥६१११॥

जति दंतो पडितो सो पयत्ततो गवेसियव्वो, जइ धिट्ठो तो हत्यसतातो परं विमिचयव्वो । अह
ण दिट्ठो तो उग्घाडकाउस्समं काउं गच्छायं करेति । सेसट्ठितेसु जीवमुत्तकदिणारंभातो हत्यसतज्जमंतरट्ठितेसु
बारस वरिसे असज्झातियं ॥६१११॥

१ गा० ६१०५ । २ साधु इत्यपि पाठः । ३ गा० ६०९९ । ४ गा० ६१०६ ।

“આમિતસુદ્ધે સીતાણ” તિ અસ્ય વ્યાખ્યા -

સીતાણે જં દદ્ધુ, ણ તં તુ મોર્ચુ અણાહ ણિહતાઈ ।

આહંબરે ચ રુદ્ધે, માદિસુ હેદ્ધુદ્ધિયા વારા ॥૬૧૧૨॥

પુલ્લબ્દ, “સીયાણિ” તિ મુસામે જાણિ ચિયગારોચિય દદ્ધુણિ ણ તં તુ પ્રદિતં ઇસજ્ઞાયાં કરેતિ, જાણિ પુણ તત્થ ધણત્થ વા અણાદ્ધકલેવગણિ પદિદ્ધુવિયાણિ, સણ’હાણિ વા રૂંધાદિષ્ઠા ॥૬૧૧૨॥ ‘ણિહ્ય’ તિ-
ણિવિશ્વયા તે અસજ્ઞાતિયં કરેતિ, “પાળ” તિ - માતંગા તેસિ આહંબરો જક્કો હિરિમિક્કો વિ ધણ્ણતિ
તસ્સ હેદ્ધા સજ્જોમતપ્પદ્ધિણિ ઠવિજ્જંતિ, એવં રુદ્ધરે, માતિધરે । કાલતો બારસ વરિસા । સ્વેતતો હૃત્યસતં
પરિહરણિજ્જા ॥૬૧૧૨॥

આવાસિતં વ વૃદ્ધ, સેસે દિદ્ધુમ્મિ મગ્ગણ વિવેગો ।

સારીરગામપાડગ, સાહીઉ ણ ણીણિયં જાવ ॥૬૧૧૩॥

એતીએ પુલ્લબ્દસ્સ ઇમા વિભાસા -

અસિવોમાધયણેસું, બારસ અવિસોહિતમ્મિ ણ કરેતિ ।

આમિયવૃદ્ધે કીરતિ, આવાસિતમગ્ગિતે ચેવ ॥૬૧૧૪॥

જં સીયાણદુર્ણં જત્ય વા અસિવશ્ચોમમતાણિ બહુણિ છુદ્ધિયાણિ । આધયણં તિ - જત્ય વા મદ્ધાસંગામ-
મતા બહુ, એતેસુ ઠાણેસુ અવિસોધીએ કાલતો બારસ વરિસા, સ્વેતશ્ચો હૃત્યસતં પરિહરંતિ સજ્ઞાયાં ણ કરેતીત્યર્થઃ
અહ એતે ઠાણા દવગ્ગિમાદિણા દદ્ધા । ડદગવાહો વા તેણ વૃદ્ધો, ધામણયરે વા આવામંતેણ ધાપગો ધરદુણા
સોધિતા । ‘સેસ’ં પિ જ મિહીહિ ન સોધિતં પચ્છા તત્ય સાધુ ઠિતા ધાણો વસહી સમંતેણ મગ્ગિતા જં દિદ્ધું
તં વિગિચિત્તા અવિદ્ધે વા તિણિ દિણે ઉચ્ચાદ-ઉચ્ચામં કરેતા અસદ્ધાવા સજ્ઞાયાં કરેદ્ ॥૬૧૧૪॥

“સારીરગામ” પચ્છદ્ધ ઇમા વિભાસા -

હરગામમ્મિ મતે, ણ કરેતી જા ણ ણીણિયં હોદ્ધ ।

પુરગામે વ મહંતે, વાડગસાહી પરિહરંતિ ॥૬૧૧૫॥

“સારીર” તિ મયસરીરં તં જાવ હરગામે ણ ણિષ્કેદિયં તાવ સજ્ઞાયાં ણ કરેતિ । અહ ણયરે
મહંતે વા ગામે તત્થ વાડગસાધીતો વા જાવ ણ ણિષ્કેદિતં તાવ સજ્ઞાયાં પરિહરંતિ । મા સોગો નિદ્ધુસક્ષેતિ
ઉદ્ધાહં કરેજ્જા ॥૬૧૧૫॥

ચોદગાહ - “સાહુવસહિસમીવેણ મતસરીરસ્સ જહ પુફવત્થાદિ કિંચિ પઠતિ તં અસજ્ઞાયાં ?”

આચાર્ય આહ -

ણિજ્જંતં મોત્તૂણં, પરવયણે પુષ્પમાદિપડિસેહો ।

જમ્હા ચડપ્પગારં, સારીરમચ્ચો ણ વજ્જેતિ ॥૬૧૧૬॥

મતસરીરં ઉચ્ચો વસચોએ હૃત્યસયજ્ઞમંતરત્ય જાવ ણિજ્જંતિ તાવ તં અસજ્ઞાયાં, સેસા પચ્ચયણ-
મણિયા પુષ્પાદિં પડિસેહેયત્થા તે અસજ્ઞાયાં ન ભવંતિ । જમ્હા સારીરમસજ્ઞાયાં ચ ઉચ્ચિહં - સોણિયં મંસં
પ્રદિયં વચ્ચં વ । અમો તેસુ સજ્ઞાયાં ન વજ્જણિજ્જો ॥૬૧૧૬॥

૧ સા ૦ ૬૧૧૧ । ૨ ગા ૦ ૬૧૧૨ । ૩ ગા ૦ ૬૧૧૩ ।

एसो उ असज्झाओ, तव्वज्जियभातो तत्थिमा मेरा ।

कालपडिलेहणाए, गंडगमरुण दिट्ठंतो ॥६११७॥

एसो संजमघासादितो पंचविहो असज्झाओ भणितो, तेहि चैव पंचहि वज्जितो सज्झाओ भवति । तथा स्ति तम्मि सज्झायकाले इमा वक्खमाणा मेर स्ति समाचारी - पडिक्कमित्तु जाव वेला ण भवति ताव कालपडिलेहणाए कयाए गहणकाले पत्ते गंडगदिट्ठंतो भविस्सति । गहिते सुद्धे काले पट्टवणवेलाए भग्गदिट्ठंतो भविस्सति ॥६११७॥

स्यादुद्धिः किमर्थं कालग्रहणं ?, अत्रोच्यते -

पंचविहमसज्झायस्स जाणणट्ठाए पेहए कालं ।

चरिमा चउभागवसे, सियाइ भूमिं ततो पेहे ॥६११८॥

पंचविहं संजमघासादयं १जइ कालं अघेतु सज्झायं करेति तो चउलट्ठगा, सम्हा कालपडिलेहणाए इमा सामाचारी-दिवसचरिमपोरिसीए चउभागावसेसाते कालग्रहणभूमीअः ततो पडिलेहेयव्वा । अहवा - ततो उच्चारवासवणकालभूमी य ॥६११८॥

अहियासिया तु अंतो, आसण्णे मज्झ दूर तिण्णि भवे ।

तिण्णेव अण्हियासिय, अंतो १ छच्छच्च बाहिरतो ॥६११९॥

अंतो निवेशणस्म तिण्णि उच्चारअधियासिययंडिले आसण्ण-मज्झ-दूरे पडिलेहेति, अणधियासिय-यंडिले वि अंतो एवं चैव तिण्णि पडिलेहेति, एवं अंतो यंडिल्ला । बाहिं पि निवेशस्स एवं चैव छ भवति एत्थ अधियासियदूरतरे अणधियासिया आसण्णतरे कायव्वा ॥६११९॥

एमेव य पासवणे, बारस चउवीसतिं तु पेहिता ।

कालस्स य तिण्णि भवे, अह सरो अत्थमुवयाति ॥६१२०॥

पासवणे वि एतेणैव कमेणं बारस, एते सव्वे चउवीसं । अतुरियमसंभत उवउत्तो पडिलेहिता पच्छा तिण्णि कालग्रहणयंडिले पडिलेहेति । जहण्णेणं हत्थारिते । “अह” स्ति अणंतरं यंडिलपडिलेहजोपाणंतर-मेव सरो अत्थमेति, ततो भावस्सगं करेति ॥६१२०॥

तस्सिमो विघो -

अह पुण णिव्वाधार्यं, आवासंतो करेति सव्वे वि ।

सट्ठादिकहणवाघाततो य पच्छा गुरू ठंति ॥६१२१॥

अहमित्यन्तरं सूरत्यमणानंतरमेव आवस्सगं करेति, पुनर्विशेषणे दुविघमावस्सगकरणं विसेसेति-णिव्वाघातिमं वाघातिमं च । जइ णिव्वाघातं तो सव्वे गुरूसहिता भावस्सगं करेति । अह गुरू सट्ठेमु धम्मं कहेंति तो भावस्सगस्स साहूहिं सह करणिजजस्स वाघातो भवति, जम्मि वा काले तं करणिजजं आसितस्स वाघातो भवति, ततो गुरू णिरज्जधरो य पच्छा चरित्ताऽयारजाणट्ठा उस्सगं ठायति ॥६१२१॥

सेसा उ जहासत्ती, आपुच्छित्ताण ठंति सट्ठाणे ।

सुत्तथसरणहेतुं, आयरिए ठितम्मि देवसियं ॥६१२२॥

१ असज्झादयजाणणट्ठाए कालं पेहए, - इइ संउज्झड । २ छच्छच्च इत्यपि पाठः ।

સેસા સાધુ ગુરું આપુચ્છિતા ગુલ્હાણસ્સ મગ્ગતો ણાસખ્ખદૂરે અહારાતિણિં જં જસ ઠાણં તસ્ય પહિવકમંતાણ હમા ઠવળા ।

ગુરુ પચ્છા ઠાયંતો મજ્જેગ ગંતું સઢ્ઢાણે ઠાયતિ ।

જે વામતો તે અણંતર સબ્બેગ ગંતું સઢ્ઢાણે ઠાયતિ ।

જે કાહિણતો અણંતર સબ્બેગ તં ચ અણાયયં ઠાયતિ ।

મુત્તત્થસરણહેલં તત્થ ય પુલ્લામેવ ઠાયંતા કરેમિ મંતે સામાતિયમિતિ મુત્તં કરેતિ ।

જાહે ગુરુ પચ્છા સામાદયં કરેતા વોસિરામિ ત્તિ મળેતા ઠિતાં ઇસ્સમ્મં તાહે પુલ્લદિયા દેવસિયા-
દ્યારે ચિતેતિ ।

અળે મળેતિ — જાહે ગુરુ સામાદયં કરેતિ, તાહે પુલ્લદિયા પિ તં સામાદયં કરેતિ; સેસં
કચ્છ ॥૬૧૨૨॥

જો હોજ્જ ડ અસમત્થો, બાલો ગુલ્હો ગિલાણ પરિંતો ।

સો વિક્કહાણે વિરહિઓ, ઠાણ્જા જા ગુરુ ડંતિ ॥૬૧૨૩॥

પરિંતો પાહુગમાદિ સો વિ સજ્જાપચ્છાણારો અચ્છદ્ધ, જાહે ગુરુ ડંતિ તાહે તે વિ બાલાદિયા
તિ ॥૬૧૨૩॥

એતેણ વિહિણા —

આવાસગ કાતૂણં, જિણોવદિદ્ધં ગુરુવણ્ણેણં ।

તિણિ ધુઈ પહિલેહા, કાલસ્સ હમો વિહી તત્થ ॥૬૧૨૪॥

જિણેહિ ગણધરાણં ઉવદિદ્ધં, તત્થો પરંપરેણ જાવ અપ્પં ગુરુવણ્ણેણ અગતં, તં કાવં આવસગં અતે
તિણિ ધુતીતો કરેતિ । અહવા — એગા એગસિલોદયા, વિતિયા વિનિલોદયા, તતિયા તિસિલોદયા, તેસિં સમત્તોએ
કાલપહિલેહણવિધી હમા કાયચ્છા ॥૬૧૨૪॥

અચ્છડ તાવ વિધી, હમો કાલમેદો તાવ વુચ્ચતિ —

દુવિદ્ધો ય હોતિ કાલો, વાધાતિમ એતરો ય ણાયચ્છો ।

વાધાઓ વંધસાલાણ ઘટ્ટણં સઢ્ઢકહણં વા ॥૬૧૨૫॥

પુલ્લદં કંઠં । જો પ્રતિરિત્તવસહી બહુકપ્પપહિસેવિતા ય સા વંધસાલા, એલો ણિતપ્પતિતાણં ઘટ્ટણે
પઢણાદિવાવાતયોસા સઢ્ઢકહણેણ વેલાતિવકમદોસા ॥૬૧૨૫॥

એવમાદિ —

વાધાતે તત્તિઓ સિં, દિજ્જતિ તસ્સેવ તે ણિવેદેતિ ।

ણિન્નાધાતે દોણિ ડ, પુલ્લદિ ડ કાલ ઘેચ્છામો ॥૬૧૨૬॥

તમ્મિ વાધાતિરે દોણિ જે કાલપહિલેહણા ણિમગચ્છાતિ તેમિ તત્તિમો ઉવચ્છાયાદિ દિજ્જતિ । તે
કાલગાહિણો અપુચ્છણ મંદિસાવણ કાલપવેયણ ચ સત્ત્વં તસ્સેવ કરેતિ, એથ મંડગદિદ્ધંતો ન ભવતિ । હમરે
ઉવડત્તા ચિદ્ધતિ । મુદ્ધે કાલે તસ્થેવ ઉચ્છાયાસ પવેયતિ, તાહે ડંઢધરે બાહિ કાલપહિયરમો ચિદ્ધદ્ધ, દ્યારે —
દુયમાવિ અંતો પવિસતિ, તાહે ઉવચ્છાયાસ સમીવે સબ્બે જુમવં પટ્ટવેતિ, પચ્છા એલો ડંઢધરો અતીતિ, તેણ
પટ્ટવિતે સજ્જાય કરેતિ ॥૬૧૨૬॥

निष्वाधातो पच्छद्धं अस्यार्थः -

आपुच्छण कितिकम्मे, आवासित खलिय पडिय वाधाते ।
इंदिय दिसाए तारा, वासमसज्झाइयं चेव ॥६१२७॥

निष्वाधाए दोण्णि जणा गुरुं पुच्छंति - कालं चेच्छामो, गुरुणा भवमणुणा, कितिकम्मं ति वदणं दाउं इदं येतुं उवउत्ता आवस्सियमासज्जं करेता पमज्जंता य गिग्गच्छंति । अंतरे य जइ पक्खलंति पडंति वा वत्थादि वा विलग्ननि कितिकम्मादि किंचि वितहं करेति, गुरु वा किंचि पडिच्छंतो वितहं करेति तो कालवाधातो । इमा कालभूमीए पडियरणविधी - इयिह उवउत्ता पडियरंता । “दिसं” ति जत्थ चउरोवि दिसामो दिसंति, उडुम्मि तिणि तारा जति दीसंति । जइ पुण अणुवउत्ता भणिट्ठो वा इंदियविसयो । दिस ति दिसामोहो विसामो तारगामो वा ण दीसंति, वासं वा पडति असज्झाइयं च जातं, तो कालवधो ॥६१२७॥

किंच -

जति पुण गच्छंताणं, स्त्रीतं जोतिं च तो णियचेति ।
निष्वाधाते दोण्णि उ, अच्छंति दिसा णिरिक्खंता ॥६१२८॥

तेसि चेव गुरुसमिवातो कालभूमी गच्छंताणं जं अंतरे जति स्त्रीयं जोती वा कुसइ तो णियसंति, एवमादि कारणेहि अवाहता ते निष्वाधातेण दो वि कालभूमीए गता संधासगादि विधीए पमज्जिता णिसण्णा उवट्ठिया वा एकैकतो दो दिसामो णिरिक्खंता मच्छंति ॥६१२८॥

किं च तत्थ कालभूमीए ठिता -

सज्झायमच्चित्तेता, कणमं दट्ठूण तो नियडंति ।
पत्तेय डंडधारी. मा बोलं गंडए उवमा ॥६१२९॥

तत्थ सज्झायं भकरंता मच्छंति, कालवेलां च पडियरंता । जइ गिम्हे तिणि, सिसिरे पंच, वासासु सत्त कणमा पिक्खेज्जा तथा वि नियतंति । अह निष्वाधाएण पत्ता कालग्गाहणवेलाए ताहे जो डंडधारी सो अंतो पविसित्ता साहुसमीवे भणाति - बहुण्डिपुण्णा कालवेला, मा बोलं करेह । तत्थ ‘गंडगोवमा पुव्वभणियां कज्जति ॥६१२९॥

‘गंडघोसिते बहुएहि सुतम्मी सेसगाण दंडो उ ।

अह तं बहुहिं न सुयं, तो डंडो गंडए होति ॥६१३०॥

जहा लोगे गोमादिगंडगेणाघोसिए बहुहिं सुए थेवेसु भसुए गोमादि किच्च भकरंतो सुदंडो भवति, बहुहिं भसुए गंडगस डंडो भवति । तथा इहं पि उपसंहारेयव्वं ॥६१३०॥

ततो डंडधरे णिग्गते कालग्गाही उट्ठेइ, सो कालग्गाही इमेरिसो -

पियधम्मो ददधम्मो, संविग्गो चेव वज्जभीरू य ।

खेयणो य अभीरू, कालं पडिलेहण साहु ॥६१३१॥

पियधम्मो ददधम्मो य । ०२थ च उभंगो, तत्थ इमो पदमो भंगो - णिच्च संसारभउविगचित्तो संविग्गो,

१ गा० ६११७ । २ आघोसिते (भाव० यु०) ।

वज्र-पात्रं तस्स भीरु वज्रभीरु, जहा तं ण भवति तहा जयति, एत्थ कायविहिजाणमो खेपणो, सत्तमंतो
अभीरु एरिसो सामू कालं पडिलेहेइ, पडिज्जगति - गृह्णातीत्यर्थः ॥६१३१॥

ते य तं वेलं पडियरेंता इमेरिसं कालं ति -

कालो संभा य तहा, दो वि समर्थेति जह समं चेव ।

तह तं तुलेति कालं, चरिमदिसिं वा असज्जायं ॥६१३२॥

संभाए धरेंतोए कालमगहणमादत्तं, तं कालमगहणं संभाए जं सेसं एते दो वि जहा समं समर्थेति
तहा तं कालवेत्तं तुलेंत, अहवा - तिसु उत्तरादियासु संभं गेहति । “चरिम” ति अवरा तीए बदनप-
संभाते दि गिण्हति न दोसो ॥६१३२॥

सो कालग्माही वेत्तं तुलेत्ता कालभूमोओ संदिसावणनिमित्तं गुरुपादमूलं गच्छाते ।

तत्थ इमा विधी -

आउत्तपुण्वभणिते, अणपुच्छा खलिय पडिय वाधाते ।

भासंतमूढसंकिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ॥६१३३॥

जहा गिगच्छमाणो आउत्तो गिग्मातोतहा पविसंतो वि आउत्तो पविसाते, पुण्वनिगतो चेव जह
अणपुच्छाए कालं गेहति पविसंतो वि जति खलति पडति वा एत्थ वि कासुवधाते । अहवा “वाधाए” ति
किरियासु वा भूढो अनिघातो लेटुटुट्टात्तादिणा । भासंतमूढपच्छदं - सांन्यासिकं उवरि वक्ष्यमाणं, अहदा - एत्थ
वि इमो अत्थो भागियव्वो - बंदणं देंतो अणं भासंतो देति बंदणं दुमो ण ददाति, किरियासु वा भूढो, प्रावत्तादिमु
वा संका - “कया ण कय” ति, बंदणं देतस्स इंदियविससो वा अमणुण्णमागमो ॥६१३३॥

गिसीहिया णमोक्कारे, काउस्सगगे य पंचमंगलए ।

कितिकम्मं च करेत्ता, बित्तिओ कालं च पडियरती ॥६१३४॥

पविसंतो तिणिण गिसीहियाओ करेति, णमो खमासमणानं ति णमोक्कारं करेति, इरियावहियाए
पंच उस्सासकालियं उस्सगं करेति, उस्सारिए णमो अरहंताणं ति पंचमंगलं चेव कइदति, ताहे कितिकम्मं
बारसावत्तं बंदणं देति, भणति य - संदिमह पादोसियं कालं गेह्णामो, गुरुयणं गेहहे ति । एवं जाव कालग्माही
संदिसावेत्ता आगच्छति । ताव बित्तिउ ति डडधरो सो कालं पडियरेति ॥६१३४॥

पुणो पुण्वुत्तेण विधिणा गिग्मातो कालग्माही -

ओचावसेसियाए, संभाए ठाति उत्तराहुत्तो ।

चउवीसग दुमपुण्णिय, पुण्वि य एककेक्क य दिसाए ॥६१३५॥

उत्तराहुत्तो उत्तराभिमुखो डडधरोवि बामपासे रिउ इतिरिमं डडधरो पुण्वभिमुखो ठाति
कालमगहणनिमित्तं च अटुत्सास काउस्सगं करेति, अण्णे पंचसासियं करेति, उस्सारिए चउवीसग दुमपुण्णियं
सामण्णपुण्वयं च, एए तिणिण अक्खलिए अणुपेहेत्तां पक्खा पुव्वा एए चेव तिणिण अणुपेहेइ, एवं दक्खिणाए
॥६१३५॥

अवराए य गेहंतस्स इमे उवधाया जाणियव्वा -

बिंदू य छीय परिणय, सगणे वा संकिए भवे तिण्हं ।

भासंत मूढ संकिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ॥६१३६॥

गेहंनस्स बह्वं भग्नो उदणं विद् पडेज, अण्णं परेण वा जतिं छीतं, अज्झमणं कहुं तस्स अति अण्णो भावो परिणतो अनुपपुत्तेत्यर्थः । समणे सगच्छे तिष्ठं साधूणं गज्जिए संका एवं विज्जुतादिसु ॥६१३६॥

भासंत पच्छदस्स पूर्वन्पस्तस्य इमस्य च विभासा -

मूढो य दिसज्झमणं, भासंतो वा वि गेण्हति न सुज्झे ।

अण्णं च दिसज्झमणं, संकंतोऽणिट्ठविसए य ॥६१३७॥

दिसामोहो संजातो । अहंवा - मूढो दिसं पडुच्च अज्झमणं वा । कहं ?, उच्यते - पदमे उत्तराहु-
त्तेण ठायव्वं सो पुण पुव्वहुत्तो पदमं ठायति । अज्झमणेषु वि पदमं चउवीसत्यधो सो पुण मूढत्तमो दुमपुप्पिकं
सामन्नपुप्पिव वा कड्ढति, फुडमेव जणाभिलाषेण भासंतो कड्ढइ, बुहुवुडेतो वा गेण्हइ, एवं न सुज्झइ ।
“संकंतो” ति पुव्वं उत्तराहुत्तेण ठाउं ततो पुव्वहुत्तेण ठायव्वं, सो पुण उत्तराधो अवराहुत्तो ठायति,
अज्झमणेषु वि चउवीसत्यधो अण्णं चेव बुद्धिपायारकहादि अज्झमणं संकमति, अहंवा - संकति किं
अभुगीए दिसाए ठितो “ण व” ति ?, अज्झमणे वि किं कड्ढव्वं न व ति ? “इदियविसए य अमणुण्णे” ति
अणिट्ठो पत्तो, जहा सोऽदिण रुदितं वत्तरेण वा अट्ठहासं कृतं, रुवे विभीसगादिविकृते रुवं दिट्ठं, गंधे कलेव-
रादिगंधो, रसस्तत्रैव, रसं अग्निज्वालादि, अहंवा - इट्ठे रागं गच्छइ, अणिट्ठे इदियविसएसु दोसं,
एवमादि उवघायवज्जियं कालं वेत्तुं कालगिदेणाए गुरुसमीवं गच्छति ॥६१३७॥

तस्स इमं भणति -

जो वच्चंतम्मि विधी, आगच्छंतम्मि होति सो चेव ।

जं एत्थं णाणत्तं, तमहं वोच्छं समासेणं ॥६१३८॥

एसा गाहा भद्वाहुकया ।

एईए अतिदेसे कए वि सिद्धसेणलाममणो पुव्वदस्स भणियं अतिदेसं वक्खानेति -

आवस्सिया गिसीहिय, अकरण आवडण पडणजोतिक्खे ।

अपमज्जिते य भीते, छीए छिण्णे व कालवहो ॥६१३९॥

जति गितो आवस्सियं न करेति पविसतो वा गिसीहियं, अहंवा - अकरणमिति आसज्जं न करेति
कालभूमीतो गुरुसमीवं पट्टियस्स जति अतरेण साणमज्जारासी छिदति, सेसा पदा पुव्वभणिता । एतेसु सव्वेसु
कालवधो भवति ॥६१३९॥

गोणादिकालभूमी, व होज्ज संसप्पगा व उट्ठेज्जा ।

कविहसिय विज्जु गज्जिय, जक्खालित्ते य कालवहो ॥६१४०॥

पडमयाए गुरुं आपुच्छित्ता कालभूमिं गतो, जति कालभूमीए गोणं गिसण्णं संसप्पगा वा उट्ठिता
वेवलेज्ज तो गियत्तए, जइ कालं पडिलेहंतस्स गेहंतस्स वा गिवेदणाए वा गच्छंतस्स कविहसिमादी, एएहि
कालवधो भवति, कविहसितं नाम भागासे विक्कतरूपं गुलं वाणरंतरिस्स हासं करेज्ज, सेसा पदा गयत्ता ॥६१४०॥

कालग्गाही पिब्वाघाएण गुरुसमीवमाणो -

इरियावहिया हत्थंतरे वि मंगलनिवेदणं दारे ।

सव्वेहि वि पट्टविए, पच्छा करणं अकरणं वा ॥६१४१॥

अइ वि सुखस्त हृत्यंतरनिते कालो गहितो तहापि कालपवेदणाए इरियावहिया पडिक्कमियन्वा,
पंडुस्सासमेत्तं कालं उस्सम्भां करेइ, उस्सारिए वि पंचमंगलं ठियाण कइइइ, ताहे वरणं दाउं कालं निवेदेति ।
मुद्धो पाउसिगकाले ति ताहे इंडधरं मोत्तुं सेसा सव्वे जुगवं पटुवेंति ॥६१४१॥

किं कारणं ?, उच्यते पुत्रं 'जम्मरुगदिट्ठं'तो ति —

सन्निहिताण वडारो, पटुवित पमादि णो दए कालं ।

बाहिट्ठिते पडिच्चरण, पविससि ताहे य इंडधरो ॥६१४२॥

वडो वंटयो विभागो एगट्ठं । आरिओ आगारितो सारितो वा एगट्ठं । वडेण आरितो वडारो, जहा
सो वडारो सण्णिहिताण मरुताण लब्धति न परोक्खस्स तहा देसकहादिपमादेस्स पच्छा कालं ण देति ॥६१४२॥

‘बाहिट्ठिते’ पच्छदं कंठं । ‘सव्वेहि वि’ पच्छदं, अस्य व्याख्या —

पटुवित वंदिते ताहे पुच्छति केण किं सुतं भंते ! ।

ते वि य कहंति सव्वं, जं जेण सुतं च दिट्ठं वा ॥६१४३॥

इंडधरेण पटुविते वंदिए एवं सव्वेहि वि पटुविते पुच्छा भवति — ‘अज्जो केण किं सुयं दिट्ठं वा ?
इंडधरो पुच्छति — अणो वा । ते वि सव्वं कहंति, जति सव्वेहि अणियं — ‘ण किंचि दिट्ठं सुयं वा’ तो सुद्धं,
करेति सज्झायं । अह एणेण वि फुडं ति विज्जमादि दिट्ठं, गज्जितादि वा सुतं, ततो अमुद्धे ण करेति ॥६१४३॥

अह संकितो —

एक्कस्स दोण्ह वा संकितम्मि कीरइ ण कीरइ तिण्हं ।

सगणम्मि संकिते पर-गणम्मि गंतुं न पुच्छंति ॥६१४४॥

जति एणेण संदिद्धं सुतं वा तो कीरति सज्झाओ, दोण्ह वि संदिद्धे कीरइ, तिण्हं विज्जुमादिसंवेहे
ण कीरइ सज्झातो, तिण्हं अणोणासंवेहे कीरइ, सगणसंकिते परगणवमणतो सज्झाओ ण कायओ । खेत्तविभा-
गेण तेसिंहेव असज्झादयसंभवो ॥६१४४॥

“जं एत्थ णाणत्तं तमहं वोच्छं समासेण” ति अस्यार्थः —

कालचउक्के णाणत्तगं तु पादोसियाए सव्वे वि ।

समयं पटुवयंती, सेसेसु समं व विसमं वा ॥६१४५॥

एयं सव्वं पादोसिकाले अणियं । इदंणि चउसु कालेसु किंचि सामण्यं, किंचि विमेषियं अणामि-
पादोसिए इंडधरं एक्कं मोत्तुं सेसा सव्वे जुगवं पटुवेंति । सेसेसु तिसु अइत्तरत्त वेरत्तिय पाभाति ए य समं वा
विसमं वा पटुवेंति ॥६१४५॥

किं चाग्यत् —

इंदियमाउत्ताणं, हणंति कणगा उ तिणिण उक्कंसं ।

वासासु य तिणिण दिसा, उदुबद्धे तारगा तिणिण ॥६१४६॥

सुदृष्टु इदियउवत्तेहि सञ्चकाले पडिजागरियव्वा वेतव्वा । कणगेसु कालसंज्ञाकमो विसेसमो ? भण्णति - तिणिण १सिग्गमुवहणंति त्ति तेण उक्कोसं भण्णति, चिरेण उक्कासो त्ति तेण सत्त जहण्णे, सेसं भण्णितं ॥ ६१४६ ॥

अस्य व्याख्या -

कणगा हणंति कालं, ति पंच सत्तेव विसिसिरवासे ।

उक्का उ सग्गेहागा, पगासजुत्ताव नायव्वा ॥ ६१४७ ॥

कणगा गिम्हे सिसिरे पंच वासासु सत्त उवहणंति, उक्का एक्का चेव उवहणंति कालं कणगो सग्गेहो पगासविरहितो य, उक्का महंतरेहा पगासकारिणी य, अहवा - रेहविरहितोति फुलिगो पहासकारो उक्का चेव ॥ ६१४७ ॥

“वासासु य तिणिण दिसा” अस्य व्याख्या -

वासासु व तिणिण दिसा, हवंति पभातियम्मि कालम्मि ।

सेसेसु तिसु वि चउरो, उडुम्मि चतुरो चतुदिसिं पि ॥ ६१४८ ॥

जत्थ ठितो वासकाले तिणिण विदिसा पेक्कइ, तत्थ ठितो पभातियं कालं गेण्हति, सेसेसु तिसु वि कालेसु वासासु चेव । जत्थ ठितो चउरो दिसाविभागे पेच्छति तत्थ ठितो गेण्हइ ॥ ६१४८ ॥

“उडुवड्ढे तारगा तिणिण” ति अस्य व्याख्या -

तिसु तिणिण तारगाओ, उडुम्मि पाभाइए अदिट्ठे वि ।

वासासु अतारागा, चउरो छन्ने निविट्ठो वि ॥ ६१४९ ॥

तिसु कालेसु पाउसिते अट्ठरत्तिए य जहण्णेण जति तिणिण तारगा पेक्कंति तो गेण्हति, उडुवड्ढे चेव अन्नादिसंथडे जति वि एक्कं पि तारं ण पेक्कंति सहा वि पभातियं कालं गेण्हति, वासाकाले पुण चउरो वि काला अन्मसंथडे तारासु अट्ठोसंतीसु गिण्हति ॥ ६१४९ ॥

“छण्णे णिविट्ठो वि” ति अस्य व्याख्या -

ठागासति बिंदूसु व, गेण्हति विट्ठो वि पच्छिभं कालं ।

पडियरति बहिं एक्को, गेण्हति अंतठिओ एक्को ॥ ६१५० ॥

जति वसहिंस बाहि कालगाहिंस ठामो णट्ठिय ताहे अंतो छण्णे उडट्ठितो गेण्हति, अह उडट्ठियस्स वि अंतो ठामो णट्ठिय, ताहे अंतो छण्णे चेव णिविट्ठो गेण्हति । बाहि ठितो य एक्को पडियरति, वासबिंदूसु पडंतीसु गियमा अंतो ठिमो गिण्हइ, तत्थ वि उडट्ठिमो निसण्णो वा, नवरं - पडियरगो वि चेव ठिमो पडियरइ । एस पाभाइए गच्छुवग्गहट्ठा अववायविही, सेसा काला ठागासति न वेत्तव्वा, आइण्णओ वा जाणियव्वं ॥ ६१५० ॥

कस्स कालस्स कं दिसं अभिमुहेहि पुव्वं ठायव्वमिति भण्णात -

पादोसिय अट्ठरत्ते, उत्तरदिसि पुव्वपेइए कालं ।

वेरत्तियम्मि भयणा, पुव्वदिसा पच्छिमे काले ॥ ६१५१ ॥

१ गा० गिम्हेउ, इत्यपि पाठः । २ गा० ६१४६ । ३ गा० ६१४६ । ४ गा० ६१४६ ।

पादोसिए अद्वरत्तिए णियमा उत्तरमुहो ठाति, वेरत्तिए भयणि ति इच्छा, उत्तरमुहो पुव्वमुहो वा,
पाभातिए पुव्वं - णियमा पुव्वमुहो ॥६१५१॥

इदाणि कालगगहणं पभाणं भण्णति -

कालचउक्कं उक्कोसएण जहण्णेण तिगं तु बोधव्वं ।

बितियपदम्मि दुगं तु, मातिट्ठाणा विमुक्काणं ॥६१५२॥

उत्सग्गे उक्कोसेण चउरो काला वेप्पंति, उत्सग्गे वेव - जहण्णेण तिगं भण्णति । “बितियपदं”
ति - अववादो, तेण कालदुगं भवति, भयायाविनः कारणे सगृह्णानस्येत्यर्थः । अहवा - उक्कोसेण चउक्कं
भण्णति । अहवा - जहण्णे हाणिपदे तिगं भवति, एकम्मि अग्रहिते इत्यर्थः । बितिए हाणिपदे दुगं भवति,
द्वयोरग्रहणादित्यर्थः । एवं भयायाविणो तिणि वा अग्रेहंतस्स एक्को भवति । अहवा - मायाविमुक्तस्य
कारणे एकमपि कालं अ गृह्णतः न दोषः, प्रायश्चित्तं वा न भवति ॥६१५२॥

कहं पुण कालचउक्कं ?, उच्यते -

फिडितम्मि अद्वरत्ते, कालं वेत्तुं सुवन्ति जागरिता ।

ताहे गुरु गुणंती, चउत्थे सव्वे गुरु सुवन्ति ॥६१५३॥

पादोसियं कालं वेत्तुं पोरिणं काउं पुण्णपोरिणीए सुत्तपाढी सुवन्ति, अद्वरत्तिया उक्कालियपाढिणो
य जागरन्ति जाव भद्वरत्तो । ततो फिडिए अद्वरत्ते कालं वेत्तुं ते जागरिता सुवन्ति, ताहे गुरु उट्ठिता गुणंति
जाव चरिमो जामो पत्तो । चरिमे जामे सव्वे उट्ठिता वेरत्तियं वेत्तुं सज्जयं करन्ति ताहे गुरु सुवन्ति । पत्ते
पाभातिते काले जो पभातियकालं वेच्छिहिति सो कालस्स पडिक्कमिउं पाभाइयकालं गेण्हइ, सेसा कालवेलाए
पलस्स पडिक्कमन्ति, तन्नो भावस्सयं करन्ति । एवं चउरो काला भवन्ति ॥६१५३॥

तिणिण कहं ?, उच्यते - पाभातिते अग्रहिते सेसा तिणिण भवे ।

अहवा -

गहितम्मि अद्वरत्ते, वेरत्तिय अग्रहिते भवे तिणिण ।

वेरत्तिय अद्वरत्ते, अतिउवओगा भवे दुम्भि ॥६१५४॥

वेरत्तिए अग्राहिए सेसेसु गहितेसु तिणिण, अद्वरत्तिए वा अग्रहिते तिणिण, पादोसिए वा अग्रहिते
तिणिण ।

दोणिण कहं ?, उच्यते ।

पादोसियमद्वरत्तिएसु गहिएसु सेसेसु अग्रहिएसु दोणिण भवे ।

अहवा - पादोसिए वेरत्तिए य गहिते दोणिण ।

अहवा - पादोसितपभातितेसु गहिएसु सेसेसु अग्रहिएसु दोणिण, एस कण्यो विकम्भे । पादोसिएण
वेव अणुवहतेण उवओगसो सुपडिजग्गिएण सव्वकाले पडंति ण दोसो ।

अहवा - अद्वरत्तियवेरत्तियगहिते दोणिण ।

अघवा - अद्वरत्तियपभातिएसु गहितेसु दोणिण ।

अहवा - वेरत्तियपभातिएसु दोणिण । जया एक्को ततो अणतरो गेण्हति ।

कालचउक्ककारणा इमे - कालचउक्कगहणं उत्सगगतो विही चेव ।

अहवा - पाधोसिए गहिए उवहते अङ्कुरते वेत्तुं सज्जायं करेति, तम्मि वि उवहते वेरतियं वेत्तुं सज्जायं करेति, पाभातितो दिवसट्ठा वेत्तव्वो चेव एवं कालसज्जायं दिट्ठं । अणुवहते पुण पाउसिते सुपडि-जग्गिते सज्जराति पढंति, अङ्कुरतिएण वि वेरतियं पढंति, वेरतिएण अणुवहते सुपडिजग्गितेण पाभातियममुद्धे दिट्ठं दिवसतो वि पढंति ।

कःलचउक्के अण्णहणकारणा इमे - पादोसियं ण गेण्हति, असिवाधिकारणतो ण सुज्जति वा, पादो-सिएण वा सुपडिजग्गितेण पढंति ति ण गेण्हइ, वेरतिय कारणतो ण सुज्जति वा पादोसिय अङ्कुरतिएण वा पढंति ति ण गेण्हति, पाभातितं ण गेण्हति, कारणतो ण सुज्जति वा ॥६१५४॥

इदार्णि पाभातितकालगहणे विधिपत्तेयं भणामि -

पाभाइतम्मि काले, संचिक्खे तिण्णि छीयरुण्णाइं ।

परवयणे खरमादी, पावासिय एवमादीणि ॥६१५५॥

पाभातियम्मि काले गहणविधी य ।

तत्थ गहणविधी इमा -

णवकालवेल्ससे, उवग्गहिय 'अट्ठया पडिक्कमते ।

ण पडिक्कमते वेगो, नववारहते धुवमसज्जाओ ॥६१५६॥

दिवसतो सज्जायविरहियाण देसादिकहासंभवे वज्जणट्ठा, मेहावीतराज य पलिभंगवज्जणट्ठा, एवं सज्जसिमणुगहट्ठा णवकालगहणकाला पाभातिए अण्णगुण्णाया, अतो णवकालगहवेलाहि पाभातियकालगहाही कालस्स पडिक्कमति, सेसा वि तं वेल्स उवउत्ता चिट्ठति कालस्स तं वेल्स पडिक्कमति वा ण वा । एगो णियमा ण पडिक्कमइ, जइ छीयरुयादीहि न सुज्जिहिति तो सो चेव वेरतियो पडिग्गहिओ होहिति ति, सो वि पडिक्कतेमु घुरस्स कालं वेदिता अणुविए सूरिए कालस्स पडिक्कमते, जति य वेल्समाणो णववारा उवहमो कालो तो अजति जहा धुवमसज्जाइयमति, न करेति सज्जायं ॥६१५६॥

नववारगहणविधी इमो ।

"संचिक्ख तिण्णि छीयरुण्णाणि" ति अस्य व्याख्या -

एक्केक्को तिण्णि वारा, छीतादिहतम्मि गेण्हती कालं ।

चोदेति खरो बारस, अणिट्ठविसण व कालवहो ॥६१५७॥

एक्कम्म गेण्हतो छीयद्यादिहते संचिक्खति ति गहणा विरमतीत्यर्थः, पुणो गेण्हइ, एवं तिण्णि वारा । ततो परं अण्णो अण्णम्मि षड्विंशे तिण्णि वारा । तस्स वि उवहते अण्णो अण्णम्मि षड्विंशे तिण्णि वारा । तिण्हं अस्सतीते दोण्णि जणा णववाराओ पूरेति । दोण्ह वि अस्सतीए - एक्को चेव णववाराओ पूरेति । षड्विंशे वि अस्सतीते तिसु दोसु वा एक्कम्मि वा गेण्हति ।

"परवयणे खरमादि" ति अस्य व्याख्या - "चोदेति खरो पञ्चदशं ।

चोदमाह -

"जइ रुदितमण्हि कालवहो ततो खरेण रडिते बारस वरिते उवहम्मउ । अण्णेसु वि अणिट्ठविसण-विसणसु एवं चेव कालवहो भवति ॥६१५७॥

१ उवगहितट्ठयाए इत्यपि पाठः । २ गा० ६१५५ ।

आचार्याह—

चोदग माणुसणिट्ठे, कालवहो सेसगाण तु पहारे ।

पावासियाए पुब्बं, पण्णवणमणिच्छे उग्घाडे ॥६१५८॥

माणुससरे णणिट्ठे कालवहो, सेसगतिरिया तेसि जति णणिट्ठो पहारसहो मुणिज्जति तो कालवहो ।

“पावासिय” अस्य व्याख्या — पावासिया पच्छदं, जति पभातियकालमगहनवेलाए पावासिय-
अज्जा पतिणो भुणं संभरंती दिणे दिणे रुवेज्जा तो तीए रुवणवेलाए पुव्वतरो कालो घेतव्वो । अह सा पि
पव्वसे रुवेज्ज ताहे दिवा गंतुं पण्णविज्जति, पण्णवणमणिच्छेए उग्घाडणकाउत्सर्गो कीरति ॥६१५८॥

एवमादीणि सति अस्य व्याख्या —

वीसरसद्वृत्ते, अव्वत्तग-डिभगम्मि मा गिण्हे ।

गोसे दरपट्टवित्ते, तिगुण च्छीयऽण्णहिं पेहे ॥६१५९॥

अव्वत्तायेण रुवणं तं वीसरस्सरं सण्णति, तं उवहणते । जं पुण मधुरसदं चोलमाणं च नोवहणइ ।
जाव अजंपिरे ताव अव्वत्तं, तं अण्णेणवि विस्सरसरेण उवहणति, महंतउत्संभरोवणेण वि उवहणति ।
पाभातिगकालमगहनविधी गया, इयाणि पाभातियदुवण विधी -

“गोसे दर” पच्छदं, गोसि सति उदिते आदिच्चे दिसावलोयं करेता पट्टवेंति । दरपट्टवित्ति सति अद
पट्टवित्ते जति छीयादिणा अणं पट्टवणं अण्णो दिसावलोयं करेता तत्थेव पट्टवेंति, एवं तित्तियवाराए वि ॥६१५९॥

दिसावलोयकरणे इभं कारणं -

आइण्णपिसित महिगा, पेहंता तिणिण तिणिण ठाणाइ ।

णववार सुते कालो, हतो चि पढमाए ण करेंति ॥६१६०॥

आइण्णपिसियं आतिण्णपोम्मलं तं काकमादीहिं आणियं होज्ज, महिया वा पडिउमारद्धा,
एवमादि एगट्ठाणे तयो वारा उवहसे हत्थसयदाहिं अण्णं ठाणं गंतुं पेहति पडिलेहति पट्टवेंति ति वुत्तं भवति,
तत्थ वि पुव्वुत्तविहाणेण तिणिण वारा पट्टवेंति । एवं बित्तियट्ठाणे वि असुद्धे ततो वि हत्थसयं अण्णं ठाणं गंतुं
तिणिण वारा पुव्वुत्तविहाणेण पट्टवेंति, जइ सुद्ध तो करेति सज्झायं णववारा । सुत्तादिणा हते णियमा
हतो कालो, पढमाए पोरिसीए ण करेंति सज्झायं ॥६१६०॥

पट्टवितम्मि सिलोगे, छीते पडिलेह तिणिण अण्णत्थ ।

सोणित्त सुत्त पुरीसे, घाणालोगं परिहरिज्जा ॥६१६१॥

जया पट्टवणातो तिणिण दु अज्झयणा सम्मत्ता तदा उवरि एणो सिलोगो रुडिडयव्वो, तम्मि समत्ते
पट्टवणे समप्पति ॥६१६१॥ “एतव्वज्जो भातो” बित्तियपादो गतत्थो ।

“सोणिय सति अस्य व्याख्या —

आलोगम्मि चिलिमिली, गंधे अण्णत्थ गंतुं पकरेंति ।

वाधातिम कालम्मी, गंडगमरूणा णवरि णत्थि ॥६१६२॥

१ गा० ६१५५ । २ गा० ६१५५ । ३ छीए छीए तिगी पेहे (भाव०वृ०) । ४ गा० ६१६१ ।
५ गा० ६१६३ ।

अथ सज्जम्... करंतेहि सोणियविरिकका दिस्संति तत्थ ण करंति सज्जम्, कडगं विलिमिलो वा भंतरे दाउं करंति । अथ पुण सज्जम् भव करंताण भुत्तपुरीसकलेवरदियाण य गंधो, अण्णम्मि वा असुभयधे प्रागच्छते तत्थ सज्जम् ण करंति, अण्णत्थ गंतुं करंति । अण्णं पि बंधणसेहणादि आलोणं परिहरिज्जा । एयं सज्जं विव्वाधातकासे भणितं । वावातिमकाले वि एवं चेव ; णवरं - गडगमरुमदिहुता ण भवति ॥६१६२॥

एतेसामण्णतरे, असज्जमाते जो करेइ सज्जम् ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधणं पावे ॥६१६३॥

वितियागादे सागारियादि कालगत अहव वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहि, जयणाए कप्पती काउं ॥६१६४॥

दो वि कंठाग्रो ॥६१६३, ८४॥

जे भिक्खु अप्पणो असज्जमाइए सज्जम् करेइ,

करंते वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अप्पणो सरीरसमुत्थे असज्जमातिते सज्जमाग्रो अप्पणा ण कायव्वो, परस्स पुण कायव्वो, परस्स पुण वायणा दायव्वा । महंतेसु गच्छेसु, अवाउलत्तणग्रो समणीण य णिच्चोउयसंभवो मा सज्जमाग्रो ण भविस्सति, तेण वायणसुत्ते विही भण्णति ।

आयसमुत्थमसज्जमाइयस्स इमे भेदा -

अवाउलाण णिच्चोउयाण मा होज्ज निच्चसज्जमाग्रो ।

अदिसा भगंदलादिसु, इति वायणसुत्तसंबंधो ॥६१६५॥

आतसमुत्थमसज्जमाइयं तु एगविहं होति दुविहं वा ।

एगविहं समणाणं, दुविहं पुण होति समणीणं ॥६१६६॥

एगविहं समणाणं तं च वणे भवति, समणीणं दुविहं वणे उदुसंगवे च ॥६१६६॥

इमं वणे विहाणं -

धोतम्मि य निप्यगले, बंधा तिण्णेव होति उक्कोसा ।

परिगलमाणे जयणा, दुविहम्मि य होति कायव्वा ॥६१६७॥

पडमं विय वणे हत्थसयस्स बाहिरतो धोविजं णिपरगलो कतो ततो परिगलंते तिण्णि बंधा उक्कोसेण करंते वाएति । दुविहं वणसंभव उउयं च, दुविहे वि एवं पट्टगजयणा कायव्वा ॥६१६७॥

समणो उ वणे व भगंदले व बंधेक्कका उ वाएति ।

तह वि गलंते छारं, दाउं दो तिण्णि वा बंधे ॥६१६८॥

“वणे धोयणिप्यगले हत्थसयबाहिरतो पट्टग दाउं वाएइ, परिगलमाणेण निण्णे तम्मि पट्टगे तस्सेव उवरि छारं दाउं पुणो पट्टगं देति वातेति य, एवं तत्तिपि पि पट्टगं बंधेज्जा वायणं च देज्ज, ततो परं परिगलमाणे हत्थसयबाहिरं गंतुं वण पट्टगे य धोविजं पुणो एतेणेव क्रमेण वाएति । अहवा - अण्णत्थ गंतुं पडति ॥६१६८॥

एमेव य समणीणं, वणम्मि इतरम्मि सत्तबंधा उ ।

तह वि य अठायमाणे, ओऊणं अहव अण्णत्थ ॥६१६६॥

इयरंति उडुअं एवं चेव, णवरं - सत्तबंधा उवकोसेण कायव्वा, तह वि भट्ठते हत्थसयबाहिरतो वोविउं पुणे दाएति, अहवा - अण्णत्थ पवति ॥६१६६॥

एतेसामण्णतरे, असज्झाए अप्पणो व सज्झायं ।

जो कुणति अजयणाए, सो यावति आणमादीणि ॥६१७०॥

आणादिया य दोसा भवति ।

इमे य -

सुयणाणम्मि य भत्ती, लोगविरुद्धं पमत्तल्लणा य ।

विज्जासाहण वइगुण्य धम्मयाए य मा कुणसु ॥६१७१॥

सुयणाणे अणुवचारतो अभत्ती भवति । अहवा - सुयणाणमत्तिरागेण असज्जातिते सज्झायं मा कुणसु, उवदेसो एस-अं लोगधम्मविरुद्धं च तं ण कायव्वं । भविहीए पमत्तो लब्धमति तं देवया छलेज्ज । जहा विज्जासाहणवइगुण्ययाए विद्या न सिज्झति तहा इहं पि कम्मल्लभो न भवइ । वैगुण्यं वैधर्मता - विपरीतभावे-त्यर्थः । “धम्मयाए य” सुयव्वमत्स एस धम्मो अं असज्झाइए सज्झायवज्जणं ण करंतो सुयणाणायां विराहेइ, तम्हा मा कुणसु ॥६१७१॥

चोदकाह - “अति दंतप्रट्टिमंससोणियादी असज्झाया, णणु देहो एयमतो चेव, कहं तेण सज्झाअं करेह ?”

आचार्याह -

कामं देहावयवा, दंतादी अवजुता तह विवज्जा ।

अणवजुता उ ण वज्जा, इति लोगे उत्तरे चेवं ॥६१७२॥

कामं चोदराभिप्यायअणुमयत्थे सज्जं, तम्मयो देहोवि । सरीराद्यो अवजुतं ति पृथग्भावा ते वज्जणिज्जा, जे पुण अणवजुता तत्थत्था ते ण वज्जणिज्जा, इति उपप्रदर्शने । एवं लोके दृष्टं, लोकोत्तरेऽप्येवमित्यर्थः ॥६१७२॥

किं चान्यत् -

अम्भंतरमललिचो, वि कुणति देवाण अच्चणं लोए ।

बाहिरमललिचो पुण, ण कुणइ अवणेइ य ततो णं ॥६१७३॥

अम्भंतरा मूत्रपुरीषादी, तेहि चेव बाहिरे उवलित्तो कुणइ तो अयणं करेइ ॥६१७३॥

किं चान्यत् -

आउट्टियावाराहं, सन्निहिता ण खमए जहा पडिमा ।

इय परलोए दंडो, पमत्तल्लणा य इति आणा ॥६१७४॥

जा य पडिमा सणिहिय ति-देवयाभिमिट्ठिता, सा जति कोइ अणाहिएण आठट्ठित ति जाणतो
बाहिरमललितो तं पडिमं छिवति, प्रक्खणं वा से कुणइ तो ण खमइ, खेलादि करेइ, रोगं च जणेइ, मारेइ वा ।
इय ति - एवं जो असज्झाए सज्झायं करेति तस्स णाणायावरिराहुणाए कम्मबंधो, एस से परलोइओ दंडो,
इह लोए पमत्तं देवता छलेज्ज स्यात् । अणादिविराघणा वा धुवा वेव ॥६१७४॥

कोइ इमेहि अप्पसत्थकारणेहि असज्झाए सज्झायं करेज्ज -

रागा दोसा मोहा, असज्झाए जो करेज्ज सज्झायं ।

आसायणा तु का से, को वा भणितो अणायारो ॥६१७५॥

रागेण दोसेण वा करेज्ज । अहवा - दरित्तणमोहमोहितो भणेज्ज - का प्रमुत्तस्स णाणस्स आसायणा ?
को वा तस्स अणायारो ? - नास्तीत्यर्थः ॥६१७५॥

एतेसि इमा विभासा -

गणिसइमाइमहितो, रागे दोसेण ण सहती सई ।

सच्चमसज्झायमयं, एमादी होति मोहाओ ॥६१७६॥

महिओ ति हृष्टपुष्टनदितो, परेण गणिवायगो बाहरिज्जतो भवति, तदभिलाषी असज्झातिए एवं
सज्झायं करेइ, एवं रागे । दोसेण - कि वा गणी बाहरिज्जति वायगो ? अहं पि अविज्जामि जेण एयस्स
पडिसवत्तिभूतो भवामि, जम्हा जीवसरीराययवो - असज्झायमयं न अदृष्टातीत्यर्थः ॥६१७६॥

इमे दोसा -

उम्मायं च लभेज्जा, रोगायकं च पाउणे दीहं ।

तित्थकरभासियाओ, खिप्पं धम्माओ भंसेज्जा ॥६१७७॥

क्षित्तादिगो उम्मातो, चिरकालिगो रोगो, प्रासुषाती प्राबंधो - एस वा पावेज्ज, धम्माओ भंसी,
मिच्छादिट्ठो वा भवति, चरित्ताओ वा परिवडति ॥६१७७॥

इह लोए फलमेयं, परलोए फलं न देंति विज्जाओ ।

आसायणा सुयस्स य, कुव्वति दीहं तु संसारं ॥६१७८॥

सुयणाणायावरिविचरीयकारी जो सो णाणावरणिज्जं कम्म बंधति, सद्दुदयामो य विज्जाओ
कयोवचाराओ वि फल ण देंति-ण सिद्धयंतीत्यर्थः, विधीए अकरणं परिभवो एवं सुतासादणा, अविधीए
वट्ठतो गियमा अट्ठ कम्मवगतीओ बंधइ, हस्तट्ठितियाओ दीहठिईओ करेइ, मंदाणुभावा य तिक्वाणुभावाओ
करेइ, णप्पपदेसाओ य बहुपदेसाओ करेति, एवंकारी य गियमा दीहं संसारं णिव्वत्तेति । अहवा -
णाणायावरिराहुणाए दंसणविराहणा, णाणदंसणविराहणाहि गियमा वरणविराहणा । एवं तिण्हं विराहणाए
अमोवलो, अमोक्खे गियमा संसारो ॥६१७८॥

वित्तियागाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एएहि कारणेहि, कप्पति जयणाए काउं जे ॥६१७९॥ एवंवत्

सच्चत्थ अणुप्पेहा, अप्रतिसिद्धादित्यर्थः ।

जे भिक्खु हेट्ठिल्लाईं समोसरणाईं अवाएत्ता उवरिल्लाईं समोसरणाईं वाएइ,
वाएंतं वा सातिज्जति ॥४०॥१७॥

आवासगमादीयं, सुयणार्णं जाव बिंदुसाराओ ।

उक्कमओ वादेत्ते, पावति आणाइणो दोसा ॥६१८०॥

जं जस्स आदीए तं तस्स हिट्ठिल्लं, जं जस्स उवरिल्लं तं तस्स उवरिल्लं, जहा दसवेयात्तिस्सा-
वस्संमं हेट्ठिल्लं, उत्तरज्जमणाग दसवेयात्तिंमं हेट्ठिल्लं, एवं णीयं आब बिंदुसारेति ॥६१८०॥

सुत्तत्थ तदुभयार्णं, ओसरणं अहव भावमादीणं ।

तं पुण नियमा अंगं, सुयस्संधो अहव अज्जमयणं ॥६१८१॥

समोसरणं णाम मेलणी, सो य सुत्तत्थार्णं, अहवा - जीवादि णवपदत्वभावाणं । अहवा -
दव्यखेतकासभावा, एए जत्थ समोसडा सब्बे अतिथित्तुत्तं भवति, तं समोसरणं भण्णति ।

तं पुण किं होज्ज ? उच्चते-अंगं, सुयस्संधो, अज्जमयणं, -हेसगो । अंगं जहा आचारो तं अवाएत्ता
सुयगबंधं वाएति । सुयस्संधो-जहा आबस्सयं तं अवाएत्ता दसवेयात्तिवसुयस्संधं वाएति । अज्जमयणं जहा सामासितं
अवाएत्ता चउवीसरत्थयं वाएति, अहवा - सत्थपरिणं अवाएत्ता लोगविजयं वाएति । उद्देसमेसु जहा सत्थ-
परिणाए पढमं सामन्तउद्देसियं अवाएत्ता पुढविककाउद्देसियं वितियं वाएति । एवं सुत्तेसु वि दटुब्बं । अहवा -
दोसु सुयस्संधेसु जहा अंभचेरे अवाएत्ता आचारमे वाएति । सवत्थ उक्कमतो । एवं तस्स आणादिया दोसा
चउलहुगा य, अत्थे चउगुरू भण्णति, पमत्तं देवया छलेज्ज ॥६१८१॥

इमो य दोसो -

उवरिसुयमसइहणं, हेट्ठिल्लेहि य अमावितमत्तिस्स ।

ण य तं भुज्जो गेण्हति, हाणी अण्णेसु वि अवण्णो ॥६१८२॥

हेट्ठिल्ला उस्सग्गमुता तेहि अमाविस्स उवरिल्ला अवावदसुया ते ण सहहति अतिपरिणामगो
भवति, पच्छा वा उस्सग्गं न रोचेइ अतिवकामेयं ति काउं तं ण गेण्हति । अण्णं उवरिगेण्हति एवं आदिसुत्तस्स
हाणी नासमित्थयः । आदिसुत्तवज्जितो उवरिसु अट्ठागेण य पयत्तेण बहुसुत्तो भण्णति, पुच्छिज्जमाणी य पुच्छं
ण णिव्वहति, आरिसो एस अणाययो तारिसा अण्णं वि एवं अण्णोति वि अवण्णो भवति, जम्हा एवमादी दोसा
तम्हा परिवारेणो दायव्वं ॥६१८२॥

इमो अववातो -

णाऊण य वोच्छेदं, पुण्वगते कालियाणुजोगे य ।

सुत्तत्थ तदुभय वा, उक्कमओ वा वि वाएज्जा ॥६१८३॥

पियधम्म-ददधम्मस्स, निस्सग्गतो परिणामगस्स, संविगसभावस्स, विणीयस्स परममेहाविणो -
एरिसस्स कालियसुत्ते पुण्वगए च मा वोच्छिज्जउत्ति उक्कमेण वि देज्ज ॥६१८३॥

जे भिक्खु णववंभचेराईं अवाएत्ता उवरिसुयं वाएइ

वाएंतं वा सातिज्जति ॥४०॥१८॥

णवदंभचेरगहणेणं सव्वो आयारो महितो, अहवा - सव्वो चरणाणुओगो तं अवाएत्ता उत्तमसुतं वाएति, तस्स आणादिया दोसा चउलहुं च ॥६१८२॥

किं पुण तं उत्तमसुतं ? उच्यते -

छेयसुयमुत्तमसुयं, अहवा वी दिट्ठिवाओ भण्णइ उ ।

जं तहि सुत्ते सुत्ते, वणिज्जइ चउइ अणुओगो ॥६१८३॥

पुव्वदं कंठं । अहवा - बंभचेरादी आचारं अवाएत्ता धम्माणुओगं इसिभासियादि वाएति, अहवा - सूरपणत्तियाइगणियाणुओमं वाएति, अहवा - दिट्ठिवातं दवियाणुओमं वाएति, अहवा - जदा चरणाणुओमो वातितो तदा धम्माणुओमं अवाएत्ता गणियाणुओमं वाएति, एवं उक्कमो चारणयाए सव्वो वि भासियव्वो, एवं सुत्ते ।

अत्थे वि चरणाणुओगस्स अत्थं अहहेत्ता धम्मादियाण अत्थं कहेति ० ० । आदेसयो वा चउत्तेरु ।

छेदसुयं कम्हा उत्तमसुत्तं ?, भण्णति - जम्हा एत्थ सपायच्छित्तो विधी भण्णति, जम्हा य तेण चरणविसुद्धी करेति, तम्हा तं उत्तमसुतं ।

दिट्ठिवाओ कम्हा ?, उच्यते - जम्हा तत्थ सुत्ते चउरो अणुओगो वणिज्जति, सव्वहिं णवविहीहि दव्वा दंसिज्जति, विविधा य इहीओ भतिसत्ता य उप्पज्जति, तम्हा तं उत्तमसुतं । एवं सुत्तस्स उक्कमवायणा चज्जिया ॥६१८३॥

अत्थस्स कंहं भाणियव्वं ?, उच्यते -

अपुहुत्ते अणुओगो, चत्तारि द्वार भासई एगो ।

पुहुत्ताणुओगकरणे, ते अत्थ तओ उ बुच्छिआ ॥६१८४॥ कंथा

अहवा - सुत्तवायणं पडुच्च कमो भण्णति, णो अट्ठं पट्टवणं ।

कम्हा ?, जम्हा सुत्ते सुत्ते चउरो अणुओगो दंसिज्जति ।

उक्तं च -

अपुहुत्ते व कहेत्ते, पुहुत्ते बुक्कमेण वाययंतम्मि ।

पुव्वभणिता उ दोसा, वोच्छेदादी मुणयेव्वा ॥६१८६॥ कंथा

णवरं - वोच्छिज्जति एगसुत्ते चउण्हमणुओगणं जा कहणविधी सा पुहत्तकरणेण वोच्छिज्जणा, ण संपयं पवत्तइ णज्ज वा, अहवा - तेति अत्थाण कहणसरूवेण एगसुत्ते ववत्थाणं वोच्छिज्जणं पृथक् स्थापित-मित्थर्थः ॥६१८४॥

केण पुहत्तीकयं ?, उच्यते -

बलबुद्धिमेहाधारणाहाणीं णाउं विज्जं दुव्वलियपूसमित्तं च पडुच्च -

देविंदवदिएहिं, महाणुभागेहि रक्खि अज्जेहिं ।

जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८७॥ कंथा

के पुण ते चउरो अणुओगो ?, उच्यते -

कालियसुयं च इसिभासियाणि तइयाए सूरपणत्ती ।

जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८८॥ कंथा

अह्वा - किं कारणं णयवज्जितो चरणोणुभोगो पदमं दारठवियं ? उच्यते -

णयवज्जिओ वि हु अलं, दुक्खक्खयकारओ सुविद्वियाणं ।

चरणकरणाणुभोगो, तेण कयमिणं पदमदारं ॥६१८६॥ कंठ्या

शिष्याह - “कालियसुयं आभारादि एक्कारस भंगा, तत्थ पक्कणो घायारगतो ।

जे पुण भंगबाहिरा छेयसुयज्जयणा ते कत्थं अणुभोगे वत्तन्वा ? उच्यते -

जं च महाकप्पसुयं, जाणि य सेसाईं छेदसुत्ताईं ।

चरणकरणाणुभोगो, त्ति कालियछेओवगयाणि य ॥६१८७॥

आवस्तयं दसवेयालियं चरणधम्मगणियदवियाणं पुहत्ताणुभोगे ।

कमठवे कारण इमं -

अपुहत्ते वि हु चरणं, पदमं वण्णिज्जते ततो धम्मो ।

गणितं दवियाणि वि ततो, सो चेव गमो पुहत्ते वी ॥३१६१॥ कंठ्या

तेसु पुण जुगवं वण्णिज्जमाणेसु इमा विधी -

एक्केक्कम्मिउ सुत्ते, चउण्ह दाराण आसि तु विभासा ।

दारे दारे य नया, गाहगगेण्हंतए यप्प ॥६१८२॥

सुत्ते सुत्ते चउरो दारं त्ति अणुभोगा, पुणो एक्केक्को अणुभोगो णएहिं चित्तिज्जति, ते य नया गाहगं पडुव गिण्हंतगं वा संखेववित्थरेहिं दट्ठन्वा -

अइ गाहगो णातुं समत्थो गिण्हंतगो वि समत्थो तो सव्वणएहिं वित्थरेणवि भासियव्वं, बित्थियभंने गेण्हंतगवसेण वत्तव्वं, तत्थियभंने जत्थियं वुत्तं तस्स धारणसमत्थो तत्थियं भासति, चरिसे दोष्णि वि जं मुत्तागुरूवं अपुहत्ते पुहत्ते वा ॥६१८२॥

ते चउरो अणुभोगा कहुं विभासिज्जति ? उच्यते -

समतं त्ति होति चरणं, समभावम्मि य ठितस्स धम्मो उ ।

काले तिकालविसयं, दविए वि गुणो णु दव्वण्णू ॥६१८३॥

तुलाधरणं व समभावकरणं । चरणसमभावद्वियस्स णियमा विमुद्धिसक्खो धम्मो भवति । काले णियमा तिकालविसयं चरणं, जम्हा समयखेस्से कालविरहितं न किंचिमस्मि । अह्वा - तिकालविसयं त्ति पंचत्थिकाया अह्वा धुवे गित्थियया सासती तहा चरणं भुवि च भवति भविस्सति य । दव्वाणुभोगे चरणञ्जिता ।

किं दव्वो-गुणो त्ति ? दव्वद्विताभिप्पाएण चरणं दव्वं, पज्जद्विताभिप्पाएण चरणं गुणं, अह्वा - पढमतो सामाइयगुणं पडिवत्तीतो पुव्वमेव चरणं लब्धमिति, चरणद्वितस्स धम्माणुभोगो लभति, चरण-धम्मद्वियस्स गणियाणुभोगो विज्जति, ततो तिमणुभोगभावित्थिरमत्तिस्स दव्वाणुभोगो य णयविधीहिं दंसिज्जति ॥६१८३॥

इदं च वण्यति -

एत्थं पुण एक्केक्के, दारम्मि गुणा य होतंआया य ।

गुणदोसदिट्ठसारो, णियत्तत्ति सुहं पवत्तत्ति य ॥६१८४॥

गृह्येति एतेसि अणुश्रोगाण अत्यकहणे, पुन विसेसणे ।

किं विसेसेति ? एकैकके अणुश्रोगे गुणा दरिसिज्जन्ति ।

आवाय त्ति - दोसा य कहं ? उच्यते - पडिसिद्धं वायरंतस्स विहिं अकरेतस्स य इहपर-
लोइयदोसा, पडिसिद्धवज्जेतस्स विहिं करेतस्स इहपरलोइया गुणा । चरणाणुवचयभवणं गुणसारो, चरण-
विजातो कम्पुवचयभवणं च दोससारो, एवं गुणदोसदिट्ठसारो दोसट्ठाणेषु सुहं णिवत्तति, गुणठाणेषु य सुहं
पवत्तते । अहवा - णयवादेसु एगंतगाहे दिट्ठदोसो सुहं णिवत्तति, अणेगंतगाहे य दिट्ठगुणो सुहं पवत्तति
॥६१९५॥

अतो अणुइ -

अपुहुत्ते य कहेंते, पुहुत्ते पुक्कमेण वाययंतम्मि ।

पुव्वभणिता उ दोसा, वोच्छेदादी गुणेयव्वा ॥६१९५॥

अणुश्रोगाण अपुहुत्तकाले पुहुत्तं विणा कारणे ण कायव्वं, पुहुत्ते णाकारणेण उक्कमकरणं कायव्वं ।
अहवा - करेति पडिसिद्धं तो इमातो आदिसुत्ते जे वोच्छेदादिद्या दोसा कुत्ता ते भवन्ति ॥६१९५॥

आयारे अणहीए, चउण्ह दाराण अण्णतरुं तु ।

जे भिक्खु वाएती, सो पावति आणमादीणि ॥६१९६॥

सुयकडादी चरणाणुश्रोगे दट्ठव्वो, सेसं कंठ ।

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुश्रोगे य ।

सुत्तत्थजाणणं, अप्पा बहुयं तु णायव्वं ॥६१९७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खु अपत्तं वाएइ वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खु पत्तं वाएइ वाएतं ण वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

अपात्रं आयोस्यं अभाजनमित्यर्थः, तपडिपक्खो पत्तं ।

जे भिक्खु अपत्तं वाएइ वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खु पत्तं ण वाएति ण वात्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

अप्राप्तकं क्रमानधीतश्रुतमित्यर्थः, पडिपक्खो पत्तं, प्राणादी चउलहुं वा । एते चउरो वि सुत्ता
एगट्ठा वक्खाणिज्जन्ति ।

केरिसं अपात्रं ? उच्यते -

तित्तिणिए चलच्चित्ते, गाणंगणिए य दुव्वलच्चरित्ते ।

आयरिय पारिभासी, त्रामावट्ठे य पिसुणे य ॥६१९८॥

तित्तिणीइ त्ति अस्य व्याख्या - दुविघो तित्तिणो दव्वे भावे य ।

तेंदुरुयदारुयं पिव, अग्निहितं तिडित्तिडेति दिवसं पि ।

अह दव्वन्तित्तिणो भावतो य आहारुवहिसेज्जासु ॥६१९९॥

जं भग्गीए सुद्धं तिडीतिडेति तं दववतितिणं । भावतितिणो दुविहो वयणे रसे य, वयणे तितिणो कयाकएसु किं भणितो चोदितो वा दिवसं पि तिडितिडितो भच्छति । रसतितिणो तिविहो - आहारं उवहि सेज्जासु ॥६१६६॥

तस्य आहारे इमो -

अंतोवहिसंजोयण, आहारे बाहि खीरदहिमादी ।

अंतो तु होति तिविहा, भायण हत्ये मुहे चेव ॥६२००॥

आहारो दुविहो - बाहि अंतो य । तस्य बाहि खीरं दधि वा लंघिता हिंत्तो चेव तं खीरं कलमसालिप्रोदणं उप्पाएत्तो खंडमादि वा संजोएत्तो बाहि संजोयणं करेति ।

अंतो ति वसहीए, सा तिविहा - भायणे हत्ये मुहे ति वा । तस्य भायणे - जस्य कलमसालिप्रोदणो तस्य खीरं दधि वा पक्खिवति, हत्ये तलाहणादिणा पिडविगतिमादियं हत्यट्ठियं वेहेत्ता मुहे पक्खिवति, पुब्बं मुहे तलाहणादि पक्खिवत्ता पच्छा पिडविगति पक्खिवति ॥६२००॥

एमेव उवहिसेज्जा, गुणोवगारी य जस्स जो होति ।

सो तेण जो अतंतो, तदभावे तितिणो णाम ॥६२०१॥

उक्कोसं अतरकप्पं लद्धं उक्कोसं चेव चीलपट्टकं उप्पाएत्ता तेण सह परिभोगेण संजोएति । एवं सेसोवहि पि, एवं सेज्जं प्रकवाडं लद्धं कंवाडेण सह संजोएति ।

जं जस्स आहारादि तस्स पुणोवगारी भलभंतो तितिणो भवति ॥६२०१॥

इदाणि चचलचित्ते त्ति अस्य व्याख्या -

गति ठाण भास भावे, लहुओ मासो य होति एक्केक्के ।

आणाइणो य दोसा विराहणा संजमागाए ॥६२०२॥

चपलो गतिमादितो चउक्विहो, चउसु वि पत्तेयं मासलद्धं पच्छित्तं ॥६२०२॥

तस्य गतिट्ठाणचवलाण इमा विभासा -

दावद्विओ गतिचवलो उ थाणचवलो इमो तिविहो ।

कुड्ढादसइं फुसती, भमति व पादे व णिच्छुभति ॥६२०३॥

गतिचवलो दुयं गच्छति - तुरित्तगामीत्यर्थः । णिसण्णो पट्ठिवाहुळुक्करचरणदिहं कुहुयंवादिहं णेगसो फुसइ, णिसण्णो य हत्यो आसणं अभुंचतो सभंता भमति । हत्यपादाण पुणो पुणो य संजोयणं विक्खेव व करेति, गायस्स वा कपं ॥६२०३॥

भासाचवलो इमो -

मासचवलो चउद्धा, असत्ति अलियं अमोहणं वा वि ।

असभाजोगमसब्भं, अणहितं तु असमिक्खं ॥६२०४॥

असन्मप्लावी असमिक्षियप्लावी अदेसकालप्लावी । असत्ति, अलियं जहा गो अश्वं बवीति, अधवा - असत्ति असोमणं च असन्भावत्यं, जहा व्यामाकतंदुलमात्रोऽयमात्मा । अपठिता जे ते असन्मा तेसं जं जं जोभां तं तं असन्म ।

अहवा - जा विदुसभा न भवति सा असन्मा, तीए जं जोम तं असन्म, तं च ग्राम्यवचनं ककंशं कटुकं निष्ठुरं जकारादिकं वा ।

बुदीए अणूहियं पुव्वावरं इहपरलोयगुणदोसं वा जो सहसा मणइ, सो असमिक्षियप्लावी ॥६२०४॥

अदेसकालप्लावी इमो -

कज्जविचिंति दट्ठुण भणति पुवं मते तु विण्णातं ।

एवमिणं ति भविस्सति, अदेसकालप्लावी तु ॥६२०५॥

अदेसकालप्लावी-जहा भायणं पडिक्कमियं अट्टकरणं पि से कयं लेवितं क्कं, ततो पमाएण तं भणं ताहे सो अदेसकालप्लावी - "मए पुवं चेव पायं, जहा एयं अज्जिहति" ॥६२०५॥

इमो भावचवलो -

जं जं सुयमत्थो वा, उद्दिट्ठं तस्स पारमप्यत्तो ।

अण्णोणसुतदुमाणं, पल्लवगाही उ भावचलो ॥६२०६॥ कंथा

इदाणि गाणंगणितो -

छम्मासे अपूरेत्ता, गुरुगा बारससमा तु चतुलहुगा ।

तेण परं मासो उ, गाणंगणि कारणे भइतो ॥६२०७॥

निककारणे गणातो अण्णं गणं संकमतो गाणंगणिओ, सो य उवसंपण्णो छम्मासे अपूरित्ता गच्छति तो चउगुरं, बारसवरिसे अपूरित्ता गच्छइ तो चउलहुगा, बारसण्हं वरिसाणं परतो गच्छंत्तस्स मासलहुं । एवं निककारणे गाणंगणितो । कारणे अतितो, अत्र भयणा सेवाए गाणंगणियत्तं कारणज्जं । दारं ॥६२०७॥

इदाणि दुब्बलचरणो -

मूलगुण उत्तरगुणे, पडिसेवति पणममादि जा चरिमं ।

धितिवलपरिहीणो खलु, दुब्बलचरणो अणट्ठाए ॥६२०८॥

सब्बजह्णो चरणावराहो जह्मन पणगं भवति, तदादी जाव चरिमं ति पारंशितावराहं पडिसेवितो अणट्ठा चरणदुब्बले ॥६२०८॥

किं च -

पंचमहव्वयभेदो, छक्कायवहो तु तेणऽणुण्णातो ।

सुहसीलवियत्ताणं, कहेति जो पवणणरहस्सं ॥६२०९॥

सुहे सीलं व्यक्तं येषां ते सुहसीलवियत्ता, ते पासत्वादी मंदबम्मा । अहवा - मोक्खसुहे सीलं जं तम्मि विगतो प्राया जेसि ते सुहसीलवियत्ता ॥६२०९॥

१ गा० ६२०२ । २ गा० ६२०२ । ३ गा० ६१६७ । ४ गा० ६१६७ ।

आयरियपारिभासी इमो —

डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्मेहो दमग मंदबुद्धी य ।

अवि यऽण्णलामलद्धी, सीसो परिभवति आयरियं ॥६२१०॥

इमे डहरादिपदभावेसु कुतं आयरियं कोह आयबद्धो सूयाए असूयाए वा भणति । तत्त्व सूया पर-
भावं अतवयदेसेण भणति-जहा अज्ज वि डहरा अम्हे, के आयरियत्तस्स जोग्गा ? असूया परं हीणभावनकुलं
फुडमेव भणति । जहा को वि वयपरिणतो नि पक्कबुद्धी डहरं गुरुं भणति — अज्ज वि तुमं यणदुदमंघियमुद्धो
स्वंतो भत्तं मयसि, केरिसमायरियत्तं ते ? एवं उत्तमकुलो हीणाहियकुलं, मेहावी मंदमेहं, ईसरो पब्बतिमो
दरिद्रपब्बतियं, बुद्धिसंण्णो मंदबुद्धि, लद्धिसंण्णो मंदलद्धि । दारं ॥६२१०॥

इदाणि ^२वामावट्टो —

एहि भणितो त्ति वच्चति, वच्चसु भणिओ त्ति तो समुल्लिपति ।

जं जह भणितो तं तह, अकरंतो वामवट्टो उ ॥६२११॥

याम विवट्टति त्ति वामवट्टो, विवरीयकारीत्यर्थः । दारं ॥६२११॥

इदाणि ^३पिसुणो —

पीतीसुण्णो पिसुणो, गुरुमादि चउण्ह जाव लहुओ य ।

अहवा संतासंते, लहुओ लहुगा मिहं गुरुगा ॥६२१२॥

अलिंएदराणि अक्खंते पीतिसुण्णं करेति त्ति पिसुणो, पीतिविच्छेदं करेतीत्यर्थः । तत्त्व जइ
भायरिओ पिसुणत्तं करेइ तो चउगुरुं, उवज्जायस्स चउलहुं, भिक्खुस्स मासगुरुं, लुहुस्स मासलहुं । अहवा —
सामण्णतो जति संजतो संजएसु पिसुणत्तं करेइ तत्त्व संतेण करेत्तस्स मासलहुं, असंतेण चउलहुगा । अह संजतो
गिहत्थेसु पिसुणत्तं करेइ एते चेव पच्छित्ता गुरुगा भाणियव्वा, मासगुरुं संते, असंते ० ० ॥६२१२॥

अहवा — इमे अपात्रा अप्राप्ताश्च इहं भणति, किञ्चि अल्लत्तस्स वि एत्थेव भणति —

आदीअदिट्ठभावे, अकडसमायारिए तरुणधम्मे ।

गल्लित पइण्ण णिण्हयि, छेदसुते वज्जिते अत्थं ॥६२१३॥

“आदीअदिट्ठभाव” त्ति अस्य व्याख्या —

आवासगमादीया, धूयकडा जाव आदिमा भावा ।

ते जेण होत्तऽदिट्ठा, अदिट्ठभावो भवति एसो ॥६२१४॥ कंआ

“अकडसामायारि” त्ति अस्य व्याख्या —

दुविहा सामायारी, उवसंपद मंडली य बोधव्वा ।

अणलोइतम्मि गुरुगा, मंडलिसामायारिं अओ वोळ्ळं ॥६२१५॥

उपसंपदाए तिविधा — भाषोपसंपदा दंसणे य चरणे य । तं घण्णगणातो भाषयं अणालोपावेत्ता
अणुवर्त्तणं वा जं परिमुञ्जति वाएइ वा तस्स चउगुरुं । मंडलिसामायारी दुविधा — सुत्तमंडली अत्थमंडली
य ॥६२१५॥

तेसु इमा विधी —

सुत्तम्मि होति भयणा, पमाणतो या वि होइ भयणाओ ।

अत्थम्मि तु जावतिया, सुणेंति थोवेसु अणे वि ॥६२१६॥

दो चेव निसिज्जाओ, अक्खानेक्का बित्तिज्जिया गुरुणो ।

दो चेव मत्तया खलु, गुरुणो खेले य पासवणे ॥६२१७॥

मज्जण निसेज्ज अक्खा, कितिकम्मुस्सग्गवंदणं जेट्ठे ।

परियागजातिसु य सुणण समत्ते भासती जो तु ॥६२१८॥

सुत्तमंडलीए गिसेज्जा कज्जति वा ग वा, वसभाणुगो एकप्ये चिट्ठितो वाएय त्ति । अहवा —
भयणा सद्धे कंबलसो दैत्ति वा न वा । अघवा — पमाणतो भयणा, जाहे गुरु णिमणो ताहे तस्स विहिणा
कितिकम्मं बारसावत्तं दैत्ति, पच्छा अणुधीगस्स पाठवण उस्सणं करेत्ति, तं उस्सणं पारेत्ता ततो मुक् दिट्ठविहिं
धारवत्तेसु करेत्ता पच्छा जेट्ठस्स वंदणयं दैत्ति, अद्दा जेट्ठो परियागजाईसु ण वेत्तव्वो । सुणेंताण जो गहणधारणाकुतो
समतं वक्खाने जो भासती — पडिमणतीत्यर्थः सो जेट्ठो, ततो सुणेंता कालवेलाए अणुधोगं विसज्जेत्ता गुरुस्स
वंदणं दैत्ति, पुणो वंविता कालस्स पडिक्कमंति ॥६२१८॥

अवित्तहकरणे सुद्धा, वित्तहकरेंताण मासियं लहुगं ।

अक्खनिसिज्जा लहुगा, सेसेसु वि मासियं लहुगं ॥६२१९॥

जं सदोसं तं वित्तहकरणं, तत्त्व मासलहुं, अक्खनिसिज्जाए विणा अत्थं कहेत्तस्स सुणेंताण चउलहुं,
सेसेसु वि पमज्जणादि अकरणे मासलहुं खेव, एवं सव्वं अवित्तहुं सामायारि जो न करइ सो अक्कडसामायारी ।

इदार्णि “तरुणधम्मो” त्ति —

तिण्हारेण समाणं, होति पक्कप्पम्मि तरुणधम्मो तु ।

पंचण्ह दसाकप्पे, जस्स व जो जत्तिओ कालो ॥६२२०॥

“सम” त्ति बारसा, पक्कप्पो गिनीहज्जभयं । तरुणो अविपक्वः, जस्स वा सुत्तस्स जो कालो भणितो
तं अपूरेंतो तरुणधम्मो भवति । बारं ॥६२२०॥

इदार्णि “अगव्विय” त्ति, अविणीतो णियमा गव्वितो त्ति ।

अतो भणति —

पुरिसम्मि दुव्विणीए, विणयविहाणं ण किंचि आइक्खे ।

न वि दिज्जति आभरणं, पलियत्तियकण्हत्थस्स ॥६२२१॥

विणयविहाणं सुधं, पलियत्ति तं छिण्णं । सेसं कंठवं ।

मद्वकरणं णाणं, तेणेव य जे मदं समुच्चियंति ।

ऊणगभायणसरिसा, अगदो वि विसायते तेसिं ॥६२२२॥ कथा

इदानीं “पइण्णो त्ति, सो दुविहो-पइण्णपण्हो पइण्णविज्जो य -

सोतुं अणभिययाणं, कहेति अमुगं कहिज्जए अत्थं ।

एस तु पइण्णपण्हो, पइण्णविज्जो उ सव्वं पि ॥६२२३॥

गुरुसमीचे सुणेता अणभिययाणं कहेति । अगधीयसुधो अगीतो अपरिणामगो य - एतेसि उद्देसुद्देसं कथितो पइण्णपण्हो भणइ । जो पुण आदिरतेण सव्वं कहेति सो पइण्णविज्जो ॥६२२३॥

तेसिं कहंतस्स इमे दोमा -

अप्यच्चओ अकित्ती, जिणाण ओवातमइलणा चेव ।

दुल्लभबोहीयत्तं, पार्वति पइण्णवागरणा ॥६२२४॥

सो अपात्रः अप्राप्तः, अव्यक्तानां च काले अविधीए छेदसुतादि घणरुहस्स तं कहिज्जंतं अप्यच्चयं करेति । कहं ? उच्यते - एते चिचय पुव्वं उस्सगो पडिसेहे कथिता इह अववादे अणुणं कहेति, एवं अप्यच्चओ अविस्सासो भवति, एते वि घम्मकारिणो ण भवतीत्यर्थः । पडिसिद्धसमायरेण व्रतभंगो व्रतभंगकारिणो त्ति अकित्ती । जिणाण आणा ओवातो भण्णति, तस्स भतिलणा पडिसिद्धस्स अणं कहेतेण पुव्वावरविह्वं उस्मत्तवयणं च दंसियं । सुयधम्मं च विराहेतो दुल्लभबोधि णिवल्लोइ पइण्णपण्हो पइण्णविज्जो वा ॥ दारं ॥६२२४॥

इयाणि २णिण्हयि त्ति -

सुचत्थतदुभयाइं, जो धेत्तुं निण्हवे तमायरियं ।

लहु गुरुग सुत्त अत्थे, गेरुयनार्यं अबोही य ॥६२२५॥

सुत्तस्स वायणायरियं णिण्हवति ० ० । अत्थस्स वायणायरियं तिण्हवति ० ० । “गेरुय” त्ति परिआजको, जहा तेण सो ण्हाविधो निण्हविधो पडिओ य असण्णातो । एवं इह णिण्हवंतस्स छलणा, परलोगे अबोधिलाभो । एते सव्वे तित्तिणिगादिगा अदिट्ठभावादिया यं प्रपत्तभूता कांतं अवायणिज्जा ॥६२२५॥

किं अकज्जं ? उच्यते -

उवहम्मति विण्णाणे, न कहेयव्वं सुतं च अत्थं वा ।

न मणी सतसाहस्सो, आवज्जति कोच्छुभासस्स ॥६२२६॥

उवहयं त्ति - सदोसं स्वसमुत्था मति, गुरुवदेसेण जा मती तं विण्णाणं । अहवा - मतो चेव विण्णाणं । भासो त्ति - संकुतो । कोच्छुभो मणी सतसाहस्सो कोच्छुभासस्स अयोग्यत्वात् णो विज्जइ, ॥६२२६॥

एवं जम्हा तित्तिणिगादि अजोग्गा -

तम्हा ण कहेयव्वं, आयरिएणं तु पवयणरहस्सं ।

खेत्तं कालं पुरिसं, नाऊण पगासए गुज्भं ॥६२२७॥

पवयणरहस्सं भववादपवं सच्चं वा छेदसुत्तं । भववायतो खेतकालपुरिसमायं च णाउं अपात्रं पि वाएज्ज । खेतयो भद्राणे लद्धिसंपणो समरथो गच्छुवगहकरोति काउं अपात्रं तं पि वाएज्जति । एवं काले वि भोमादिसु परिणामपुरिसो वा वाइज्जति । भावे गिलाणादियाण उवगहकरो गुहस्स वासहायस्स सहामो । वोच्छेते वा मसइ पत्ते अपत्ते वि वाएज्जा । एवमादिकारणेसु भरत्तदुट्ठो पवयणरहस्सं पवाएज्ज ॥६२२७॥

एते होति अपत्ता, तच्चिवरीता हवन्ति पत्ता उ ।

वाएते य अपत्तं, पत्तमत्राएते आणादी ॥६२२८॥

ये एते तित्तिगिगादी अपत्ता, एतेसि पडिपुच्छभूता मव्वे पात्राणि भवन्ति । तम्हा अपात्रे बहू दोसा तम्हा ण वाएयव्व, पात्र वाएयव्वं, भण्णहा करणे आणादिया दोसा ॥६२२८॥

तेसु विसतेसु इमं पच्छित्तं—

अव्वत्ते य अपत्ते, लहुगा लहुगा य होति अपपत्ते ।

लहुगा य दव्वर्तित्तिणे, रसर्तित्तिणे होतज्जुग्घाया ॥६२२९॥

वयसा भवत्तं अपात्तं अपापत्तं उवकरणं तित्तिणि च एते वाएतस्स चउलहुगा । रसर्ति आहारर्तित्तिणे वउगुग्घा भवन्ति, मा उस्सगणिच्छित्तं ॥६२२९॥

मरेज्ज सह विज्जाए, कालेण आगते विदू ।

अपपत्तं च ण वातेज्जा, पत्तं च ण विमाणए ॥६२३०॥

कालेण आगए त्ति आधानकालादारभ्य प्रतिसमयं कालेनागतः यावन्मरणसमयः, अत्रान्तरे अपात्रं न वाचयेत्, पात्रं च न विमानयेदिति ॥६२३०॥

अपात्रस्य इमो भववातो—

चित्तिपदं गेलण्णे, भद्राणसहाय असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहि, वाएज्ज विदू अपत्तं पि ॥६२३१॥

जहा पूर्वं तहा वक्तव्यं ।

अहवा—अपात्रे अण्णं इमं भववादकरणं—

वाएतस्स परिजित्तं, अण्णं पडिपुच्छगं च मे गत्थि ।

मा वोच्छिज्जतु सच्चं, वोच्छेदे पदीवदिट्ठतो ॥६२३२॥

जरस समीवातो गहियं सो मतो, अण्णमो तस्स पडिपुच्छं पि गत्थि, अतो परिजयट्ठा अपात्रं पि वाएज्जा । सयं वा मरंतो वत्तस्स अभावे मा सच्चं मव्वहा वोच्छिज्जउत्ति, वोच्छिणी पदीवदिट्ठतो ण भवन्ति, तम्हा अपत्तं वाएज्ज । अपत्तायो पत्तेसु संचरिस्संति पदीवदिट्ठतेण—जहू दीवा दीवसयं० कंथ्या ॥६२३२॥

जो पात्रं ण वाएति तस्सिमे दोसा—

अयसो पवयणाहाणी, सुत्तत्थाणं तहेव वोच्छेदो ।

पत्तं तु अवाएते, मच्छरिवाते सपक्खे वा ॥६२३३॥

अवाप्तस्स अयसो चि -- एस दुद्धादी ईहति वा क्विचि, मुहा वा सव्वं कितिकम्मं कारवेचि,
भावसंगहेणं वा अक्कज्जं तेणं गच्छो से सयहा पुट्ठो, एवमादि अयसो । पत्रयणं वा उव्वण्णो, तस्स हाणी । कहं ?
आयमसुण्णे तित्थे ण पव्वयति कोति । सेसं कठं ॥६२३३॥

कारणेन पात्रमपि न वाचयेत् -

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तद्वा समासज्ज ।

एतेहिं कारणेहिं, पत्तमवि विद् ण वाएज्जा ॥६२३४॥

“दव्वे खेत्ते य” ति अस्य व्याख्या -

आहारादीणऽसती, अहवा आयंविस्स तिविहस्स ।

खेत्ते अद्धाणादी, जत्थ सज्जाओ ण सुज्जेज्जा ॥६२३५॥

आयंविस्सवारए आयंविस्स अयसि ण वाएति, तिविहं - ओदनकुम्भासत्तुणा वा । खेत्तप्रो
अद्धाणपडिक्खणो ण वाएति, जत्थ वा खेत्ते सज्जाओ ण सुज्जति, जहा दइदोसभगवती ण सुज्जति ॥६२३५॥

कालभावपुरिसे य इमा विभासा -

असिवोमाईकाले, असुद्धकाले व भावगेलण्णे ।

आतगतं परगतं वा पुरिसो पुण जोगमसमत्थो ॥६२३६॥

असिवकाले भ्रमकाले य सुद्धे वा काले असज्जाइए ण वाएजा । भावे अण्णो गिलाणो “परगयं व”
ति वाइज्जमाणे वा गेलणं णाउं, अहवा - परगिलाणवेयावच्चवावहे पुरिसो वा जोगस्स असमत्थो ण वाइज्ज,
एवमादिकारणेहिं पत्तो वि ण वाइज्ज ॥६२३६॥

जे भिक्खू अव्वत्तं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वत्तं न वाएइ, न वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२४॥

अव्वंजणजातो खलु, अव्वत्तो सोलसण्ह वरिसेणं ।

तच्चिवरीतो वत्तो, वातेतिगरेण आणादी ॥६२३७॥

जाव कव्वसादिसु रोमसंभवो न भवति ताव अव्वत्तो, तस्संभवे वत्तो । अहवा - जाव सोलसवरितो
ताव अव्वत्तो, परतो वत्तो । जइ अव्वत्तं वाएति, इयरं ति वत्तं न वाएति । तो आणादिआ दासा चउलहुं व
॥६२३७॥

अव्वत्ते इमो अववादी -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुयोमे य ।

सुत्तत्थ जाणएणं, अप्पाबहुयं मुणेयव्वं ॥६२३८॥

अववादे वत्तो इमेहिं कारणेहिं न वाएज्जा -

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तद्वा समासज्ज ।

एतेहिं कारणेहिं, वत्तमवि विद् ण वाएज्जा ॥६२३९॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू पत्तं न वाएइ न वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२६॥

अप्राप्तं एयस्स भत्तो अप्राप्तसूत्रे गत एव, “अदिट्ठ भावे” ति । तथा वि इह असुण्णत्थं भण्णति
अव्वत्तसुत्तस ।

अप्राप्तसूत्रे चउभंगो भाणियव्वो -

परियाएण सुतेण य, वत्तमव्वत्ते चउक्क भयणा उ ।

अव्वत्तं वाएते, वत्तमवाएति आणादी ॥६२४०॥

परियायो दुविहो - जम्मणओ पवज्जाए य । जम्मणओ सोलसण्हं वरिसाणं आरतो अव्वत्तो,
पवज्जाए तिण्हं वरिसाणं पक्कप्पस्स अव्वत्तो । जो वा जस्स सुत्तस्स कालो बुत्तो तं अपावेत्तो अव्वत्तो, सुएण
भावस्सग्गे अणधीए दसवेयालीए अव्वत्तो, दसवेयालीए अणधीए उत्तरज्जमयणाणं अव्वत्तो, एवं सर्वत्र ।

एत्थ परियायसुत्ते चउभंगो कायव्वो । पढमभंगो दोसु वि वत्तो, वित्तिओ सुएण अव्वत्तो, तत्तिओ
वएण अव्वत्तो, चरिओ दोहि वि । अव्वत्ते वाएतस्स पढमभंगित्थं अवाएतस्स आणादिया य दोसा चउलहुं च
॥६२४०॥

अप्राप्तो पि वाएयव्वो इमेहि कारणेहि -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगए कालियाणुयोगे य ।

एएहि कारणेहि, अव्वत्तमवि पवाएज्जा ॥६२४१॥ पूर्ववत्

प्राप्तं पि न वाएइ, इमेहि कारणेहि -

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तथा समासज्ज ।

एएहि कारणेहि, पत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२४२॥ पूर्ववत्

अव्वत्ते अप्राप्तछेदसुत्तं वाएज्जमाणे इदं दोसदंसगं उदाहरणं -

आमे धडे निहितं, जहा जलं तं धडं विणासेति ।

इय सिद्धं तरहस्सं, अप्पाहारं विणासेइ ॥६२४३॥

निहितं पक्खित्तं, सिद्धं कहियं । अग्गा आहारता जत्थ तं अप्पाहारं, अप्पाहारणसामर्थ्यमित्यर्थः ।

जे भिक्खू दोण्हं सरिसगाणं एक्कं संचिक्खावेइ, एक्कं न संचिक्खावेइ,

एक्कं वाएइ, एक्कं न वाएइ, तं करंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

सरिस ति तुल्ला, तेसि उ तुल्लत्तणं वक्खमाणं । तं सरिसं एक्कं वाएइ, एक्कं न संचिक्खावेति,
तस्स आणादिया दोसा चउलहुं च ।

एगं संचिक्खाए, एगं तु तहि पवायए जो उ ।

दाण्हं तु सरिसयाणं, सो पावति आणमादीणि ॥६२४४॥ गताया

सादृश्यं इमेहि—

संविग्गा समणुष्णा, परिणामग दुविह भूमिपत्ता य ।

सरिस अदाणे रागो, बाहिरयं णिज्जरा लाभो ॥६२४५॥

दो वि संविग्गा सति संविगते समणुष्णत्ति, दो वि संभोइता सति संविगसमणुष्णाते, दोवि परिणामगा सति संविगसमणुष्णापरिणामगत्ते । दो वि दुविधभूमीःत्ता । दुविधभूमी — वएण सुएण य । वएण वंजणजातका, सुएण जस्स सुत्तस्स जावइए परियाए वायणा वुत्ता तं दो वि पत्ता, जहा आयासरस्स तिण्णि संवच्छराणि, सूयगडदसाण पंचसंवत्सराणि, एवमादिसरिसाण एक्कं संचिक्खावेइ, एक्कं वाएइ सुत्ते ० ० । अत्थे ० ० । सरिसाण चेव एक्कस्स अदाणे दोसो लब्धति, वितियस्स दाणे रागो लब्धति । जत्तस ण दिज्जति सो बाहिरभावं गच्छइ, तत्पच्चयं च णिज्जरं ण लब्धति, अण्णं च सो पदोसं गच्छति, पटुटो वा जं काहिति तण्णिप्पण्णं ॥६२४५॥

भवे कारणं जेण एक्कं संचिक्खावेज्ज —

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तथा समासज्ज ।

एएहि कारणेहि, संचिक्खाए पवाए वा ॥६२४६॥

दव्वखेत्तकालभावाण इमा विभासा—

आयंबिल्लिणिवितियं, एगस्स सिगा ण होज्ज वितियस्स ।

एमेव खेत्तकाले, भावेण ण तिण्ण हट्ठेक्को ॥६२४७॥

दव्वं आयंबिल्लं णिवितियं वा असणादि दोण्ह वि ण पटुप्पति, एवं कक्खल्लेत्ते वि असणादिगं ण पटुप्पति, ओमकाले वि दोण्हं ण लब्धति, भावे एक्को ण तिण्णो ति गिलाणो, हट्ठं ति अगिलाणो, तं वादेति गिलाणं संचिक्खावेइ ॥६२४७॥

अहवा सयं गिलाणो, असमत्थो दोण्ह वायणं दाउं ।

संविग्गादिगुणजुओ, असहु पुरिसो य रायादी ॥६२४८॥

पुव्वद्धं कंठं । अहवा — भावतो संविग्गादिगुणजुताण वि तत्त्वेक्को असहु । असहु ति सभावतो चेव जोगस्स असमत्थो राया च रायमंती, एवमादी पुरिसो कुसुपभावितो जाव भाविज्जति ताव संचिक्खा-विज्जति ॥६२४८॥

जो धरिज्जति, सो इमं वुत्तं धारिज्जति —

अण्णत्थ वा वि णिज्जति, भण्णति समत्ते वि तुज्झ वि दल्लिस्सं ।

अण्णे ण वि वाइज्जति, परिकम्म सहं तु करेति ॥६२४९॥

जइ वा असहु तो तं परिकम्मणेण सह करेति जाव, ताव धरेति । इयरं पुण वाएइ, सेसं कंठं ।

जे भिक्खु आयरिय-उवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइयइ,

आइयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

गिर ति वाणी वयणं, तं पुन सुत्ते चरणे वा । जो तं प्रायस्त्रि-उच्चरन्नाहं प्रदत्तं गेहति तत्पु सुत्ते
हु । अत्ये ह्वा । चरणे पुनरुत्तरुणं सुत्ते गेहतिहं पाच्छत्तं ॥६२४६॥

दुविहमदत्ता उ गिरा, सुत्त पदुच्चा तहेव य चरित्तम्मि ।

सुत्तत्थेसु सुत्तम्मि, भासादोसे चरित्तम्मि ॥६२५०॥

जा सुत्ते गिरा सा दुविघा - सुत्ते अत्ये वा । चरणे सावज्जदीसजुत्ता भासा ॥६२५०॥

कहं पुन सो अदिण्णं आइयत्ति ?, उच्यते -

रातिणियमारवेणं, बहुस्सुत्तमतेण अन्नतो वा वि ।

गंतुं अपुच्छमाणो, उभयं पण्णावदेसेणं ॥६२५१॥

तस्स किञ्चि सुयत्थसदिट्ठं, सो सव्वरातिणिओ हं ति गारवेण ओमे ण पुच्छति, सीसत्तं वा न करेइ,
सव्वबहुसुओ वा हं भणामि, कहमणं पुच्छत्तं एवमादिगारवट्ठितो अणतो वि ण गच्छति, गतो वा ण
पुच्छति, ताहे जत्थ सुत्तत्वाणि वाइज्जंति तत्थ चिलिमिलिकुडकडतरिओ वा ठिओ अण्णावदेसेण वा गतागतं
करंतो सुत्ते, उभयं पि अण्णावदेसेणं ॥६२५१॥

एसा सुत्त अदत्ता, होति चरित्ते तु जा ससावज्जा ।

गारत्थियभासा वा, डडुर पलिकुंचिता वा वि ॥६२५२॥

चरित्ते डडुरसरं करेति, आलोपणकाले पलिउचेति, कताकते वा अत्ये पलिकुंचति । सेसं कंठं
॥६२५२॥

बित्तिओ वि य आएसो, तवतेणादीणि पंच तु पदाणि ।

जे भिक्खु आतियती, सो पावति आणमादीणि ॥६२५३॥

तवतेणे वतितेणे, रूवतेणे य जे नरे ।

आयारभावतेणे य, कुब्बई देवकिविसं ॥ (दत्त० अ० ५ गा० ४६)

एतेसि इमा विभासा--

खमओ सि ? आम मोणं, करेति को वा वि पुच्छति जतीणं ।

धम्मकहि-वादि-वयणे, रूवे णीयन्लपडिमा वा ॥६२५४॥

सभावदुब्बलो भिक्खागओ अणत्थ वा पुच्छिओ "तुमं सो खमओ ति भते ?" ताहे सो भणति-
आमं, मोगेण वा अच्छति । अहंवा भणति - को जतीसु खमणं पुच्छ । वइतेणे ति "तुमं सो धम्मकही
वादी नेमिस्सिओ गणी वायगो वा ?" एत्थ वि भणति - आमं, तुहिक्को वा अच्छति ति । भणति रूवे - "तुमं
अहं सयणी सि ?" अहंवा - "तुमं सो पडिमं पडिक्खणमासी ?" एत्थेव तहेव तुहिक्कादी अच्छति ॥६२५४॥

बाहिरठवणावलिओ, परपच्चयकारणाओ आयारं ।

महुराहरणं तु तहिं, भावे गोविंदपव्वज्जा ॥६२५५॥

आयारतेणे मथुरा कौंड्यइल्ला उदाहरणं ते भावसुणा । परपच्चयतिणिमित्त बाहिरकिरियासु
सुद्ध उज्जता जे ते आयारतेणा । भावतेणे जहा गोविंदवायगो वादे अजिजिओ सिद्ध तहरणदुयाए पव्वज्जम-

भ्रुवगतो, पच्छा सम्मत्तं पडिवण्णो । एवमादि गिराणं अदिताणं णो गहणं कायब्बं । एक्कं ताव पियब्बंसो कतो भवति । पुसावादादिया च चरणम्भंसदोसा ॥६२५५॥

एतेसामण्णतरं, गिरं अदत्तं तु आतिए जो तु ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विरावणं पावे ॥६२५६॥ कंथ

आवणसङ्काण पच्छित्तं च ॥

भवे कारणं ते अदत्तं पि आदिएजा -

वितियपदमणप्पज्झे, आतिए अत्रिकोविते व अप्पज्झे ।

दुदाइ संजमट्ठा, दुल्लभदब्बे य जाणमवी ॥६२५७॥

खित्तादिचितो वा आइएज्ज, सेहो वा अजागंतो, 'दुदाइ' ति उवसंपन्नाण वि न देइ तस्स, उवसंपण्णो प्रणवसंपण्णो वा जत्थ एणेइ वक्खाणेइ वा कस्सति तत्थ कुट्टं तरिओ मुणति गयागयं व करंतो । 'संजमट्ठेउं व' ति अच्छित्तो कइ मिया दिट्ठ ति पुच्छिओ, दिट्ठा वि न दिट्ठ ति भण्णज्ज । जत्थ वा संजय-भासाते भासिज्जमाणा सागारिका संजयभासाओ गेण्हेज्जा तत्थ अविदिण्णाते गारदिवगभासाए भासेज्जा । आयरियस्स गिलाणस्स वा सयपागेण वा सहस्सपागेण वा दुल्लभदब्बेण कज्जं तदट्ठा णिमित्तं पवण्णज्ज, प्रण्णं वा किंचि संयववयणं भण्णज्ज, तदट्ठा जेव तेणादि वा पंचपदे भण्णज्ज ॥६२५७॥

जे भिक्खु अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएइ,

वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खु अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा पडिच्छइ

पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खु पासत्थं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खु पासत्थं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खु ओसन्नं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खु ओसन्नं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खु कूसीलं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खु कूसीलं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खु नितियं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खु नितियं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खु संसत्तं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खु संसत्तं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४०॥

तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ।

एतेसि वायणं देति पडिच्छति । नावतेणो वा सव्वेसु ग्रहाण्छंदवज्जिणएसु चउलहुं, ग्रहवा - ग्रथे
हुं । ग्रहाण्छंदे चउगुरुं सुत्ते. ग्रथे हुं ।

अण्णपासंडी य गिही, सुहसीलं वा वि जो पवाएज्जा ।

अहव पडिच्छति तेसिं, चाउम्मासाओ पोरिसिं ॥६२५८॥

पोरिसिं ति सुत्तपोरिसिं ग्रथपोरिसिं वादंतस्स, तेसिं वा समीवातो पोरिसिं करंतस्स, अहवा -
एक्को पोरिसिं वाएंतस्स ।

अणेगासु इमं -

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेदो पहावती ।

छेदेण छिण्णपरियाण, ततो मूलं ततो दुगं ॥६२५९॥

सत्तदिवसे चउलहुं तवो, ततो एक्कं दिवसं चउलहुंछेदो, ततो एक्केक्कदिवसं मूलणवटुपारंभिया ।
अहवा - तवो तहेव चउलहुं छेदो सत्तदिवसे । सेसा एक्केक्कदिवसं । अहवा - तवो तहेव छुगुरुछेदो सत्तदिवसे,
सेसा एक्केक्कं । अहवा - चउलहुं तवो सत्तदिवसे, ततो चउगुरु तवो सत्तदिवसे ?, ततो छल्लहुं तवो
सत्तदिवसे, ततो छगुरु तवो सत्तदिवसे, ततो एते चेव छेदो सत्त सत्त दिवसे, ततो मूलणवटुपारंभिया
एक्केक्कदिणं । अहवा - ते च्चेव चउलहुंगादिवा सत्त दिवसिगा, ततो छेदा लहुपणगादिगा सत्त सत्त दिवसिगा
सत्त दिवसे णेपव्वा जाव छगुरु, ततो मूलणवटुपारंभिया एक्केक्कदिवसं ॥६२५९॥

गिहिअण्णतित्थिएसुं इमे दोसा -

मिच्छत्तथिरीकरणं, तित्थस्सोभावणा य गेण्हते ।

दंते पवंचकरणं, तेणेवअखेयकरणं च ॥६२६०॥

कहं मिच्छत्तं थिरतरं ?, उच्यते - ते तं दट्ठुं तेसिं समीवे गच्छत्तं मिच्छद्दिट्ठी चित्तेति - इमे
चेव पहाणतरा जाता, एते वि एतेसिं समीवे सिक्खंति । लोगो दट्ठुं भणाति - एतेसिं प्रपणो प्रागमो णत्थि,
परसंतिताणि सिक्खंति । निस्तारं पवयणंति ओभावणा । अह तेसिं देति तो ते सदृसत्थादिभाविता भट्टाजणमध्ये
दट्ठं चोरं खुज्जाविलियासणए करीसए पिलुमए ति एवमादिपवंचणं करंति उट्ठाहं च । अहवा - तेणेव
सिक्खिएण अवखेवे ति चोयणं करेज्ज हूसेज्ज वा ॥६२६०॥

गिहिअण्णतित्थियाणं, एए दोसा उ दंत गेण्हते ।

ग्रहण-पडिच्छणदोसा, पासत्थादीण पुब्बुत्ता ॥६२६१॥

कंथा । णवरं - पासत्थादिषु ग्रहणपडिच्छणदोसा जे ते पण्णरसमे उद्देशमे वुत्ता ते दट्ठव्वा ।
बंदण-पसंजणादिथा तेरसमे । जम्हा एते दोसां तम्हा गिहिअण्णतित्थिया वा ० वाएयव्वा ॥६२६१॥ परपासं-
दिलक्खणं - जो अण्णाणं मिच्छत्तं कुव्वंतो कुतित्थिए वाएति, जिणवयणं च णाभिगच्छति सो परपासंडी ।

जो पुण गिहिअण्णतित्थिओ वा इमेरिसो -

णाणे चरणे परूवणं, कुणति गिही अहव अण्णपासंडी ।

एएहि संपउत्तो, जिणवयणं सो सपासंडी ॥६२६२॥

णाणदंसणचरित्ताणि परूवेति, जिणवयणं च रोएति सो सपासंडी चेव, सो वाइज्जइ जं तस्स जोमं ।

एएहि संपउत्तो, जिणवयणमएण सोग्गतिं जाति ।

एएहि विप्पमुक्को, गच्छति गति अण्णतित्थीणं ॥६२६३॥

जो अण्णतित्थियाणुरुवागिती तं गच्छति । सेव' कंथ' ।

भवे कारणं वाएज्जा वि -

पव्वज्जाए अभिमुहं, वाएति गिही अहव अण्णपासंडी ।

अववायविहारं वा ओसण्णुवगंतुकामं वा ॥६२६४॥

गिहि अण्णपासंडि वा पव्वज्जाभिमुहं सावगं वा छज्जीवणियं ति जाव सुसतो, भवतो जाव पिडेसणा, एस गिहत्थादिमु अववादो । इमो पासत्थादिमु अववादो ति उवसपदा उज्जयविहारीणं उवसपण्णो जो पासत्थादी सो अववादविहारठितो तं वा वाएज्ज । अहवा - पासत्थादिगाण जो संविग्गविहार उव-
गंतुकामो - अण्णुट्टिउकाम इत्यर्थः । तं वा पासत्थादिभावरहितं चेव वाएज्जा, जाव अण्णुट्टेति ॥६२६४॥

एवं वायणा दिट्ठा, तेसि समीवातो महणं कहं होज्ज ? उच्यते -

चित्थियपद समुच्छेदे, देसाहीते तहा पक्कप्पम्मि ।

अण्णस्स व असतीए, पडिक्कमंते व जयणाए ॥६२६५॥

जस्स भिक्खुस्स गिरुद्धपरियाओ वट्ठति, गिरुद्धपरियाओ णाम जस्स तिण्णि वरिसाणि परियायस्स संपुण्णाणि, तस्स य आयारपक्कप्पो अविज्जियव्वो । आयरिया य कालगता, एसेव समुच्छेदो, अहवा - कस्सइ साहुस्स आयारपक्कप्पस्स देसेण अण्णधीते समुच्छेदो य जातो, एतेसि सव्वो आयारपक्कप्पो पढमस्स वित्थियस्स देसो इवस्स अहिज्जियव्वो ॥६२६५॥

सो कस्स पासे अहिज्जियव्वो ?, उच्यते -

संविग्गमसंविग्गे, पच्छाकड सिद्धपुत्त सारुवी ।

पडिकंते अण्णुठिते, असती अण्णत्थ तत्थेव ॥६२६६॥

सगच्छे चेव जे गीयत्था, तेसि असति परगच्छे संविग्गमणुअसगासे, तस्स असति ताहे अण्णस्स, "अण्णस्स वि असतीए" ति अण्णसंभोइयस्स वि असति णिआदिउक्कमेणं असंविग्गेमु । तेसु वि णित्थियादिट्ठाणाओ आलकहाए पडिक्कमावितो, अणिच्छि जाव अहिज्जइ ताव पडिक्कमावित्ता तहावि अणिच्छे तस्स व सगासे अहिज्जइ । सव्वत्थ वंदणादीणि ण हावेइ । एसेव जयणा । तेसि असतीए पच्छाकडो ति जेण चारितं पच्छाकडं उअव्वसंतो भिक्खं हिइइ वा न वा ।

सारुविगो पुण सुविकल्लवत्थपरिहिओ मंडमसिहं धरेइ अभज्जो अ पत्तादिमु भिक्खं हिइइ ।

अण्णे भण्णति - पच्छाकडा सिद्धपुत्ता चेव, जे असिहा ते सारुविगा । एसि सगासे सारुविगाइ पच्छाणुलोमेण अथिजति, तेसु सारुविगादिमु पडिक्कंते अण्णुट्टि ए ति सामात्थिकडो वत्तारोपिता अण्णुट्टिओ, अहवा - पच्छाकडादिणु पडिक्कंतेसु । एते सव्वे पासत्थादिआ पच्छाकडादिआ य अण्णं खेतं गेउ पडिक्कमाविजति, अणिच्छेमु तरां वि ति ॥६२६६॥

"देसाहीते" ति अस्य व्याख्या -

देसो सुत्तमहीयं, न तु अत्थतो व असमत्ती ।

असति मण्णमणुण्णे, इतरेतरपक्खियमपक्खी ॥६२६७॥

पुन्यं कंठं । “असति भणुणभणुणे” ति पयं गयत्थं ति । “इतरेतर” ति असति गितियाण इतरे संसत्ता, तेसि असति इतरे कुसीला एयं गेयव्वं, एसो वि अत्थो मतो चेव । तेसु वि जे पुन्यं संविभपक्खितं पच्छा संविभपक्खिणसु इमेरिसा जे पच्छाकडादिया मुंडगा ते । पच्छाकडादिया जावज्जीवाए पडिक्क-माविज्जति, जावज्जीवमणिच्छेसु जाव अहिज्जति ॥६२६७॥

तहवि अणिच्छेसु -

मुंडं च धरेमाणे, सिंहं च फेडंत णिच्छ ससिहे वी ।

लिंगेण असागरिए, ण वंदणादीणि हावेति ॥६२६८॥

जति मुंडं धरेति तो रद्धोहरणादी दम्बलियं दिज्जति जाव उद्देशात्ती करेइ, ससिहस्स वि सिंहं फेडेतुं एमेव दम्बलियं दिज्जति, सिंहं वा णो इच्छति फेडंत तो ससिहस्सेव पासे अधिज्जति, सलिंगे ठिमो नेव असागरिए नदेसे सुयपूय ति काउं वंदणाइ सव्वं ण हावेइ, तेण विचारेयव्वं ॥६२६८॥

पच्छाकडयस्स पासत्थादियस्स वा जस्स पासे अधिज्जति ।

तत्थ वेयावच्चकरणे इमो विही -

आहार उवहि सेज्जा, एसणमादीसु होति जतियव्वं ।

अणुमोयण कारावण, सिक्खति पदम्मि सो सुद्धो ॥६२६९॥

जति तस्स आहारादिया अत्थि तो पहाणं । अह गत्थि ताहे सव्वं अण्णया एसणिज्जं आहाराति उप्पाएव्वं ॥६२६९॥

अण्णया असमत्थो -

चोदेति से परिवारं, अकरेमाणे मणाति वा सद्धे ।

अव्वोच्छित्तिकरस्स उ, सुयमत्तीए कुणह पूयं ॥६२७०॥

दुविहासती य तेसि, आहारादी करेति सव्वं तो ।

पणहाणी य जयंतो, अत्तट्ठाए वि एमेव ॥६२७१॥

जो तस्स परिवारो, पासत्थादियाण वा सीसपरिवारो, सद्धा वि संता ण करेति, असंता वा गत्थि सद्धा, एवं असतीए सो सिक्खणो आहारादी सव्वं पणपरिहाणीते जयणाते तस्स विसोहिक्कोडीहि सयं करेत्तो मुज्झति । अण्णो वि एमेव पुन्यं सुद्धं गेण्हति, असति मुद्धस्स पच्छा विसोहिक्कोडीहि गेण्हतो सिक्खइ । अवकादपदेण विसुज्झइ ॥६२७१॥

॥ इति विसेस-णिसीहत्तुणीए एगूणवीसइमो उद्देशओ समत्तो ॥

विंशतितम उद्देशकः

भणिओ एगूणवीसइमो उद्देशो । इदाणि वीसइमो भणइ । तस्सिमो संबंधो -

हत्थादि-वायणंते, पडिसेहे वितहमायरंतस्स ।

वीसे दाणाऽऽरोवण, मासादी जाव छम्मासा ॥६२७२॥

पणपरस्स हत्थकम्ममुत्तं जाव वायणंतं मुत्तं, एत्थ वितहमायरंतस्स विट्ठमेयं एगूणविंसाए वि उद्देशेसु
आवज्जणपच्छित्तं, तेसि आवज्जाणं वीसतिमउद्देशे दाणपच्छित्तेणं वज्जरो ण्णाति - दाणत्तेण पच्छित्तस्स
मारोवणा दाणारोवणा । मारोवणत्ति - चडावणा, अहवा - जं दव्वदिपुरिसविभागेण दाणं सा आरोवणा ।
तं च कस्स ? कहं ? पायरियपुवज्जभायाणं कताकत्तकरणाणं, भिक्खूण वि गीतमगीताणं, थिरकयकरणसंघयण-
संघणाणेश्वराणं य गच्छंगताणं च सव्वेसि तेमि इह दाणपच्छित्तं भणइ, तं च इह मुत्ततो मासादी जाव
छम्मासा, णो पणमादिभिण्णमासंता, ते वि अत्थतो भाणियञ्जा ॥६२७२॥

एत्तेण सव्वेणामागस्स इमं पढममुत्तं -

जे भिक्खू मासियं परिहारद्वाराणं पडिसेविता आलोएज्जा-

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं,

पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ॥सू०॥१॥

जे जिहमे, भिदिर् विदारणे, धुव इति वयंणः आख्या, तं भित्तीति भिक्षुः, भिक्षणशीलो वा
भिक्षुः, भिक्षाभोगी वा भिक्खू । मासान्निष्कनं मासि । यथा - कोशिकं, द्रौणिकं । अहवा - माणेत्यतो वा
मासो, जइहा समयदिकालमाणाई असति तइहा मासे समयवत्तियमुत्तं भाणा तत्रान्तर्गतादित्यर्थः । अहवा -
दव्वसंतकालभावमाणा असतीति मासो । दव्वतो जत्तिया दव्वा मासेणं असति, सेतथो जावत्तियं सेतं मासेण
असति । कालतो तीसं दिवसा, भावतो जावत्तिया सुत्तत्थादिया भावा मासेणं गेहति । परिहरणं - परिहारो
वज्जणं ति वुत्तं भवति । अहवा - परिहारो वज्जणं ति वुत्तं भवति, तं प्रायश्चित्तं । ४। गतिनिवृत्ती, तिष्ठन्त्य-
स्मिन्निति स्थानं, इह प्रायश्चित्तमेव ठाणं, तं प्रायश्चित्तठाणं अणेगप्पगारं मूलत्तरदप्पकप्पजयाजय
भेदप्रभेदभिण्णं सव्वति । आइ-अर्यादा वचने, लोक-दर्शने, आलोयणा णाम जहा अप्पणो जाणति तहा
परस्स पामडं करेइ । परि सव्वतो भावे कुच्च-कोटिल्ले, तस्स पलिकुच्चणे ति खवं भवति, रलयोरैवयम् इति
कूटवा, न पलिकुच्चणा अपलिकुच्चणा, तस्सेवं अपलिकुच्चियं आलोएमाणस्स मासियं लहुणं गुरुणं वा पडिसेएणा-
णिष्कणं दिज्जति । जो पुण पलिकुच्चियं आलोएइ तस्स जं दिज्जाति पलिउंचणमासो ग मग्गाणिष्कणो गुरुणो
दिज्जति । एस मुत्तथो ।

इदार्णि एसेवत्यो सुतफासियणिज्जुत्तीए वित्यरेणं भण्णति -

जे त्ति व से त्ति व के त्ति व, णिदेसा होति एवमादीया ।

भिक्षुस्स परूवणया, जे त्ति कओ होति णिदेसो ॥६२७३॥

जे त्ति वा, से त्ति वा, के त्ति वा एवमादी । णिदेसवायगा भवन्ति । जे-कारस्स णिदेसदरिसणं - 'जे असंतएणं अभक्खाणेणं अभक्खाइ' इत्यादि । से-मारो जहा -- "से गामंसि वा" इत्यादि । के-कारो जहा - "कयरे आगच्छति दित्ते रुवे" इत्यादि ।

चोदगाह - कि कारणं सेसणिदेसे भोत्तु जेकारेणं निहेसं करेइ ?

आचार्याह - एत्थ कारणं भण्णइ - सेगारस्स णिदेसो पुव्वपगडापेक्खी जहा -- "भिक्षू वा" इत्यादि । ककारो संसयपुच्छाए वा भवति, जहा - "किं कस्स केण व कहं केवचिर कइहिं" इत्यादि । जेमारो पुण अणिहिट्ठवायगुदेसे जहा - "जेणेव जं पडव्व" इत्यादि, अहवा - जहा इमी चेव जेगारो उस्तगववायद्विएण पडित्तेवियं व त्ति न निहिट्ठं गुहं लहुं वा जपणाजयणाहि वा तेण जेगारेण निहेसो कृतेत्यर्थः अहवा - जेकारेण अणिहिट्ठभिक्षुस्सट्ठा निहेसो ॥६२७३॥

सो भिक्षू चउव्विहो इमो -

नामं ठवणा भिक्षू, दव्वभिक्षू य भावभिक्षू य ।

दव्वे सरीरभविओ, भावेण उ संजतो भिक्षू ॥६२७४॥

नाप भिक्षू, जस्स भिक्षूत्ति नामं कयं ।

ठवणा भिक्षू चित्रकर्मलिहितो ।

दव्व भिक्षू दुविधो, आगमतो नो आगमतो य । आगमतो जाणए अणुवओनो दव्वमिति वचनात् । नोआगममो जाणगादितिविधो, दोणि वि भासित्ता तत्त्वतिरित्तो एगभवियादितिविधो, एगभविमो नाम जो गेरइयतिरिए य - मणुपदेवेसु वा अणतरं उव्वट्ठिता जत्थ भिक्षू भविस्सति तत्थ उव्वज्जिहिंति, वट्ठाउओ नाम जत्थ भिक्षू भविस्सइ तत्थ आउयं बद्धं, अभिमुट्ठणामगतो नाम जत्थ भिक्षू भविस्सति जत्थ उव्वज्जिकामो समोहतो पदेसा णिच्छूढा । अहवा - सयणधणादिपरिचव्वयं पव्वजामिमुहो मच्छमाणो । गओ दव्वभिक्षू ।

इदार्णि भावभिक्षू । सो दुविधो - आगमतो नो आगमतो य । आगमतो जाणए भिक्षुसदोवयुत्ते, नो आगमतो इहलोगिण्णिवासो संवेगभावित्तमत्तो संजमकरणुजतो भावभिक्षू ॥६२७४॥

चोदगाह - त्वयोक्तम् -

भिक्षुखणीलो भिक्षू, अण्णे वि ण ते अणण्णवित्तिता ।

णिणिसिएणं पात्तं, पिसितालंभेण सेसाउ ॥६२७५॥

"भिक्षाहारो वा भिक्षू", एवमन्ये रक्तपटादयोऽपि - भिक्षवो भवन्ति" ।

आचार्याह - न ते भिक्षवः । कुतः ? , येन तेषां भिक्षावृत्तिरित्येषा न भवति । ग्राहृतमपि आधाकर्मदोषयुक्ता च तेषां वृत्तिः प्रसंजादि, अन्यान्यवृत्तयश्च नैन ते भिक्षवो न भवन्ति । तस्मात् साधव एव भिक्षवो भवन्ति, येन साधूनामाधाकर्मदोषवर्जिता निरुपधा वृत्तिः । "अण्णवित्तिता" - अण्ण-

वृत्तयश्च, भिक्षां भुक्त्वा नास्त्यन्या साधूनां वृत्तिः । एत्थ आयरिमो णिप्पिसिएण दिट्ठं करेति, सपिसियं जो भुंजति सो सपिसिमो, जो ण भुंजति सो णिप्पिसिमो । “पिसियालभेण सेसा य” ति - जे पुण भणति - “णिप्पि (पिप) सा वयं जाव पिसियस्स अलाभो” ति, एवं भणता सेसा न निप्पिसिया भवतीत्यर्थः ॥६२७३॥

इमे वि एयस्सेव अत्थस्स पसाह्णा दिट्ठता -

अविहिंस बंभचारी, पोसहिय अमज्जमंसियाऽचोरा ।

सति लंभ परिच्चाती, होति तदक्खा ण पुण सेसा ॥६२७४॥

अह्वा कोइ भणेज्जा - अहिसगोइहं जाव मिए ण पस्सामि ।

अण्णो कोति भणेज्ज - बंभचारी अहं जाव मे इत्थो ण पटुप्पज्जति ।

अह्वा एवं भणेज्ज - आहारपोसही हं जाव मे आहारो ण पटुप्पज्जइ ।

अह्वा कोति भणेज्ज - अमज्जमंसवृत्ती हं जाव मज्जमंसे ण लहामि ।

अह्वा कोति भणेज्ज - अचोरकवृत्ती हं जाव परच्छिद्धं न लभामि ।

एते असतिलंभपरिच्चाणिणो वि णो तदक्खा भवन्ति, तेण अत्थेण अक्खा जेसि भवति ते तदक्खा अहिसगा इत्यर्थः, सेसा अनिवृत्तचित्तास्तदाख्या न भवन्ति, ते उ रक्तपटाइयो न भवन्ति भिक्षवः, ससावज्ज-भिक्षामतिलंभपरिव्याप्तिः साधक एव भिक्षवो भवन्ति । “सेसे” ति भिक्षुगणहणे वा साधूण चरणादियाग इमो विसेसो ॥६२७४॥

भण्णति -

अह्वा एसणासुद्धं, जहा गेण्हंति भिक्षुणो ।

भिक्षं णेवं कुलिंगत्था, भिक्षजीवी वि ते जती ॥६२७५॥

“एसणासुद्धं” ति - उग्गमादिमुद्धं, पच्छाणुपुक्खिगहणं वा एयं, सेसं कंठं । अह्वा - ते चरणादि-कुलिगी न केवलं भिक्षुवृत्तुपजीवी ॥६२७५॥

जाव इमाणि य भुंजति -

दग्गुद्देसियं चेव, कंदमूलफलाणि य ।

सयं गाहा परत्तो य, गेण्हंता कह भिक्षुणो ॥६२७६॥

“एणं ति - उदगं, “उद्देसियं” ति तमुद्दिश्य कृतं, “कंद” इति मूल-कंदादी, पथिन्यादि मूला, आम्नादि फला, एयाणि स्वयं गेण्हंता कहं भिक्षुणो भवन्ति ? इत्युक्तं भवति ॥६२७६॥

जो पुण सण्णिच्छियभिक्षू इमेरिसी वृत्ती भवन्ति -

अच्चित्ता एसणिज्जा य, भिता काले परिकिखता ।

जहालद्धविसुद्धा य, एसा वित्ती उ भिक्षुणो ॥६२७६॥

अगरहिता अगरहियकुलेसु वा भत्तिबहुमाणपुर्व्वं वा विज्जमाणी यि ता वातालीसदोसविसुद्धा एसणिज्जा भत्तदृष्टमाणजुता भिता । “काले” ति दिवा । अह्वा - गामगयरदेसकाले । अह्वा ततियापोरिसीए

दायगादिदोषविसुद्धा । परिवर्षिता "जहालद्धा" नाम संजोयणादिदोषवर्जिता, एरिसवृत्तिगो भिक्खु भवति ॥६२७॥ "भिक्षुणसीले" ति गतं ।

इदानीं "भिनत्ति" ति भिक्षु — "भिदिर्" विदारणे, "क्षुष" इति कर्मण आख्यानं, तं भिनत्तीति भिक्षुः, एष भेदको गृहीतः सो दुब्बिहस्स भवति — दब्बस्स य भावस्स य । भेदकग्रहणान्न तज्जातीय-द्वयं सूचितं -- भेदणं भेत्तव्वं च ।

जतो भण्णति — "दब्बे य भाव" गाहा ।

तत्थ —

दब्बे य भाव भेयण, भेदण भेत्तव्वगं च तिविहं तु ।

णाणाति भाव-भेयण, कम्म सुहेगट्ठतं भेज्जं ॥६२८०॥

दब्बे तिविहो — दब्बभेदको दब्बभेयणाणि दब्बभेयव्वं । दब्बभेदको रत्तकारादि, दब्बभेदणाणि परमुमादीणि, दब्बतो भेत्तव्वं कट्टुमादियं । भावे भावभेदको भिक्षुः, भावभेदणाणि णाणादीणि, भावभेत्तव्वं कम्मं ति वा, सुहं ति वा, वोणं ति वा, कट्टुसं ति वा, वज्जं ति वा, वेरं ति वा, पंको ति वा, मलो ति वा, एते एगट्ठेता । एवं जाव भेज्जं भवति ॥६२८०॥

इमानि भिक्षोरेकार्थिकानि शक्रेन्द्रपुरन्दरवत् भिक्षु ति वा जति ति वा खमग ति वा तवस्स ति वा भवते ति वा ।

एतेसि इमा व्याख्या —

भिदंतो वा वि खुयं, भिक्खु जयमाणओ जई होइ ।

तवसंजमे तवस्सी, भवं खवेतो भवंतो ति ॥६२८१॥

भिनत्ति भिक्षुः । यती प्रयत्ने । तपः सन्तापे, तप मस्यास्तीति तरस्वी । अहवा — अधिकरणाभिधानादिदं सूचितं — तपसि भवः तापसः । अहवा — तपः संयमासना तवस्सी नारकादिभवाणमंतं करोती भवंतो । नारकादिभवे वा श्रपयतीति क्षपकः, एत्थ भावभिक्षुणा अधिकारो ॥६२८१॥ भिक्षु ति गयं ।

इदानीं मासो तस्स णामादिछक्कओ णिक्खेवो —

नामं ठवणा दविए, खेत्ते काले तहेव भावे य ।

मासस्स परूवणया, पगतं पुण कालमासेणं ॥६२८२॥

णामठवणागो गताओ, दब्बमासो दुब्बिहो — प्रागममो णोसगमयो । प्रागममो जाणमो अणुवउत्तो । जो प्रागमतो जाणमसरीयं भवियसरीरं, जाणमभियअइरितो इमो —

दब्बे भविओ णिव्वित्तिओ य खेत्तम्मि जम्मि वण्णणया ।

काले जहि वण्णिज्जइ, णव्वत्तादी व पंचविहो ॥६२८३॥

भविओ ति एगमविओ बद्धाउ अभिमुहणामगोत्तो य । अहवा — ज्ञाशरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्तः । "णिव्वित्तिओ" ति — मूलगुणणिव्वित्तितो उत्तरगुणणिव्वित्तिओ य । तस्य मूलगुणणिव्वित्तो जेहि जीवेहि तपदमताए णामगोत्तस्स कम्मस्स उदएण मासदब्बस्स उदएण मासदब्बपाउगगाइं दब्बाइं गहिमाइं ।

१ सू० १ सू० ।

सत्तगुणमिद्वत्तणाणिद्वत्तितो चित्रकर्मणि मासत्वं वा लिहितो । जम्मि खेत्ते मासकण्णो कीरइ, जम्मि वा खेत्ते ठविजइ जम्मि वा खेत्ते वणिजइ, सो खेत्तमासो । कालमासो जम्मि वा कालमासो ठविजइ । अहवा — कालमासो सावणभद्वयादी । अहवा — सलक्खणणिक्कणो णक्खत्तादी पंचविहो इमो — णक्खत्तो चंदो उडु आइच्चो अभिवड्ढितो य ॥६२८२॥

तन्थ णक्खत्तचंदा इमे —

अहोरत्ते सत्तवीसं, तिसत्तसत्तट्ठिभाग णक्खत्तो ।

चंदो अउणत्तीसं विसट्ठि भागा य वत्तीसं ॥६२८४॥

णक्खत्तमासो सत्तावीसं अहोरत्तो, “तिसत्त” ति एकवीसं च सत्तसट्ठिभागा — एस लक्खणधो य परिमाणधो य णक्खत्तमासो । चंदमासो अउणत्तीसं अहोरत्ते वत्तीसं च विसट्ठिभागे ॥६२८४॥

उडुमासो तीसदिणो, आइच्चो तीस होइ अद्धं च ।

अभिवड्ढितो य मासो, पगतं पुण कम्ममासेणं ॥६२८५॥

उडुमासो तीसं चेव पुष्पा दिणा । आदिच्चमासो तीसं दिणा दिणद्धं च । अभिवड्ढितो अहिमासो भण्णति । एतेसि पंचण्हं पदणं इह पगतं ति अधिकारो कम्ममासेणं, कम्ममासो ति उडुमासो ॥६२८५॥

अभिवड्ढियस्स इमं पमाणं —

एक्कत्तीसं च दिणा, दिणभागसयं तहेक्कवीसं च ।

अभिवड्ढितो उ मासो, चउवीससतेण छेदेणं ॥६२८६॥

एगत्तीसं दिवसा, दिवसस्स चउवीससयखंडियस्स इगवीसुतरं ३१३३ च भागसत्तं एयं अधिमासगणपमाणं ति । एतेसि च णक्खत्तादीयाण मासाणं उप्पत्ती इमा भण्णति —

अमीइमादी चंदो चारं चरमाणो जाव उत्तरासाढाण अंतं यमो ताव अट्ठारसत्ता तीसुत्तरा सत्तसट्ठो भागाणं भवति, एतावता सल्लणक्खत्तमंडलं भवति ॥ ६२९० ॥ एतेसि सत्तसट्ठोए चेव भागो, भागलद्धं सत्तावीसं अहोरत्ता अहो रत्तस्स य इगवीसं सत्तसट्ठिभागा २७ हेतु एस णक्खत्तमासो परिमाणलक्खणधो । अहवा — एयं चेव फुडतरं भण्णति — अभियस्स चंदयोगो इगवीसं सत्तसट्ठिभागा । अक्खरे छण्णक्खत्ता पण्णरस मुहुत्ता भोगामो एतेसि छण्हं सनभिसा भरणी महा अस्सेसा साती जेट्ठा य । एतेसि छण्हं तिणि अहोरत्ता ।

अण्णे छण्णक्खत्ता पण्णालमुहुत्तभोगी तं जहा — तिणि उत्तरा, पुणस्वसु, रोहिणी, तिसाहा य । एते णव अहोरत्ता । तिण्हं मज्जे मेवित्ता बारस जाता ।

अण्णे पण्णरस णक्खत्ता तीसमुहुत्तभोगी, तं जहा — अश्लिणी, कर्त्तिया, मिगसिर, पुस्स, मघा तिन्नि पुक्का, हल्य, रिता, प्रगुयाहा, मूल, सवण, षणिट्ठा, रेवती य, एते पण्णरस अहोरत्ता । बारस मिलिता जाया सत्तावीस सव्वे । लक्खमंडलपरिभोगकालो णक्खत्तमासो भण्णति ।

इदंणि चंदमासो, तस्म मिदरसणं, तंजहा — सावण बहुलपडिबयात्तलो आरक्ख जाव सावणपोणिमा समतो — एस परिमाणतो चंदमासो । एवं भद्वतादितो वि सेसा दट्ठव्वा ! लक्खणधो पुण आसाढपोणिमाए वतिककंताए सावणबहुलपडिबयाए हट्ठमुहुत्तसमयपढमाओ अभितित्स भोगो पवत्तति चदेण सह । इमो णव मुहुत्ते चउवीसं विसट्ठिभागे छावट्ठि सत्तसट्ठि चोणिमाओ य ।

एते इमेण विहिणा भवन्ति—जे अभीयरस इगवीसं सत्तसट्ठी भागा ते सह च्छेदेण बासट्ठीए गुणिता जाता तेरससया बिउत्तरा, अंसाणं छेदो इगतालीसं सत्ता चउप्पण्णा (३३ + ६२ = ९५) तेण भागे ण देइ त्ति अंसा तीसगुणा कायव्वा, १३०२ + ३० = ३६०६०

४१५४

$$६ \frac{१६७४}{४१५४} + ६२ = \frac{१०३७८८}{४१५४} \quad ६२ = \frac{१६७४}{५७} = २९ \frac{६६}{६७}$$

तेहि भागेहि ते लद्धं नव मुहुत्ता, ६ सेसं बासट्ठीए गुणयव्वं, एत्थ उ वट्ठो (छेदो) कज्जति-बासट्ठिभागेण, एकतालीसताणं चउप्पण्णाण बासट्ठिभागेण सत्तसट्ठी ३३ भवन्ति, एक्केण गुणितं एत्थिं ६ चेव सत्त सट्ठीए ६७ भागे हि ते लद्धं चउवीसं बासट्ठिभागा ३३ छावट्ठं च सेसचुणीया भागा ३३। एत्थ अभीति—भोगे सवणादिया सव्वे णक्खत्तभोगा छोढव्वा जाव उत्तरासाढाणं असंपत्तो, तत्थ इमा रासी जाता अट्ठसया एगूणविसुत्तरा ८१६ मुहुत्ताणं, चउवीसं च बासट्ठिभागे ३३ छावट्ठि चुणीया भागा। ६६ एत्थ पुणो अभीतिभोगो य छोढव्वो, सवणभोगो य सम्मत्तो ३०, धणिट्ठाणय छव्वीसं २६ मुहुत्ता बायालीसं बावट्ठिभागा दो य चुणिण्या ४२, ६२, २ भागा, ताहे इमो रासी, एयम्मि ८८४, ६०, ६२, १३२, ६७ भुत्तै। सावणपोणिमा सम्मत्ता।

एत्थ चउतीसुत्तरसयस्स सत्तसट्ठीए भागो हायव्वो, दो लद्धा, ते उवरि पक्खित्ता, जाता बाणउतीए बावट्ठिभाग त्ति काउं बावट्ठिए भातिता एक्को लद्धो सो उवरि पक्खित्तो, सेसा तीसं बावट्ठिभागा ठिता ८८५ जे पंचासीया अट्ठसया मुहुत्ताणं तेसि ३० तीसाए भागा लद्धा एगूणतीसं अहोरत्ता, जे सेसा पण्णरसा मुहुत्ता ते ६२ बासट्ठीए गुणिता जाता णवसया तीसुत्तरा, एत्थ जे ते सेसा तीसं बावट्ठिभागा ते पक्खित्ता जाया णवसया सट्ठी ६६०। एयस्स भागो तीसाए, लद्धा बत्तीसं, बिसट्ठिभागा एते अउणत्तीसाए अहोरत्ताण हेट्ठा ठविया विसट्ठित्ता छेदसहिता। एवं एसो चंदमासो अउणत्तीसं दिवसा विसट्ठिभागा य बत्तीसं भवन्ति।

इदाणि उडुमासो भणन्ति—एक्कं अहोरत्तं बुड्डीए बावट्ठि भागे छेत्ता तस्स एक्कसट्ठी भागा चंदगतीए तेहि समत्ती भवन्ति।

रुहं पुण ?, उच्यते—जति अट्ठारसहि अहोरत्तसहि सट्ठेहि अट्ठारसतीसुत्तरासया लब्धन्ति तो एक्केण अहोरत्तेण किं लब्धामो। एवं तेरासियकम्मे कते आगयं एगसट्ठिहं बावट्ठिभागा ३३ अहो रत्तस्स, एसो एक्कसट्ठी तीसाए तिहीहि मासो भवति त्ति तीसाए गुणयव्वं, ताहे इमो रासी जातो १८३०। एयस्स एगसट्ठीए भागो हायव्वो लद्धा तीसं तिही, एसो एवं उडुमासो णिष्कण्णो, एस चेव कम्ममासो, सहाणमासो य भणन्ति। एस चेव रासी बावट्ठिहितो चंदमासो वि लब्धन्ति।

इदाणि आइच्चमासो भणन्ति। सो इमेण विहिणा आणेयव्वो—आदिक्को पुस्सभागे चउमु अहोरत्तेसु अट्ठारससु य मुहुत्तेसु दक्षिणायणं पवत्तति, सो य अण्णणो चारेण सव्वणक्खत्त-मंडलचार चरित्ता जाव पुणो पुस्सस्स अट्ठ अहोरत्ता चउवीसं मुहुत्ता भुत्ता।

एस सव्वो आइच्चस्स णक्खत्तभोगकालो विडेयव्वो, इमेण विहिणा—

सयभिसयभरणीयो, अट्ठा अस्सेस साति जेट्ठा य।

वच्चन्ति मुहुत्ते एक्कवीसति छच्च अहोरत्ते ॥

तिण्णुत्तरा विसाहा, पुणव्वसू रोहिणी य बोधव्वा।

गच्छन्ति मुहुत्ते तिण्णि चेव वीसं च अहोरत्ते ॥

प्रवसेसा णक्खत्ता, पण्णरस वि सूरसहगया अंति ।
बारस चेव मुहुत्ते, तेरसय समे अहोरसे ॥
अभिति छच्च मुहुत्ते, चत्तारि य केवले अहोरसे ।
सूरेण समं गच्छइ, एत्तो करणं च वोच्छामि ॥

एयं सव्वं मेलिय इमं अहोरत्तरासी भवति ॥३६६॥

एयं आदिच्चं वरिसं । एयस्स बारसहि भागो भागलद्धं आदिच्चमासो । अह्वा - पंचगुणस्स सहीए भागो भागलद्धं तीसं अहोरत्ता, अहोरत्तस्स य अद्धं, एस आदिच्चमासो पमाणयो लक्खणतो य । एत्थ वि सव्वमासा अप्पणो भागहारेहि उप्पज्जति ।

इदार्णि अभिवद्धिओ -

छच्चेव अतीरित्ता, हवति चंदम्मि वासम्मि ।
वारसमासेणते, अट्ठाइज्जेहि पूरितो मासो ॥
एवमभिवद्धितो खलु, तेरसमासो उ बोधव्वो ॥

वर्षमिति वाक्यशेषः ।

सहीए अतीताए, होति तु अधिमासगो जुगद्धम्मि ।
बावीसे पक्खसते, होई बितिओ जुगंतम्मि ॥

अह्वा - णक्खत्तादीमासाण दिग्गण य ण इमातो पंचविहातो पमाणवरिसदिवसरासीतो अट्ठारस-
सन्तीमुत्तराओ आणज्जति । तेसु पंचपमाणो वरिसा इमे - चंदं चंदं अभिवद्धियं पुणो चंदं अभिवद्धियं ।
तेसिमं करणं - चंदमासो एगुणतीसं २६ दिवसे, दिवसस्स य बासट्ठिभागा वत्तीसं इइ, एस चंद मासो ।

बारमासवरिसं ति - एस बारसपुणो कज्जति, ताहे इमं भवति अडयाला तिणिसया दिवसाणं,
विसट्ठिभागाण य तिणिसया जुनसीया, ते बावद्धे भइया लद्धा छदिवसा, ते उवरि पक्खत्ता जाताः तिणि सता
चउण्णा, ३५४ सेसा बारस, ते येयंसा अद्धेण उवट्ठिता जाया एगतीस भागा इइ, एयं चंदवरिसपमाणं ।
“तिणि चंदवरिस ति तो तिपुणं कज्जति, तिपुणकयं इमं भवति बासट्ठिहियं दिगमहस्सं, एगतीसविभागा
य अट्ठारस” । एयं तिण्ह चंदवरिसाणं पमाणं । एत्तो अभिवद्धियकरणं अणति सो एकतीसं दिणाति एकवीससयं
चउवीससयं भागार्ण, एरिस “बारस मासा वरिस” ति काउं बारसहि गुणयव्वा, पुणि ए इमो रासी, तिणि
सया बोहत्तरा दिग्गणं चउवीससया भागा बोदससया बावण्णा, छेदेण भातिते लद्धा एक्कारस, ते उवरि
छूढा जाता तिणिसया दिवसाणं तेसीया हिट्ठा अट्ठासीति सेसया, ते सच्छेया चउहि उवट्ठिता जाया एकती-
सभागा बावीसं, एयं अभिवद्धियवरिसपमाणं ।

“दो अभिवद्धियवरिस” ति ३एस रासीदोहि गुणयव्वो, दोहि गुणि ए इमो रासी सत्तसया छावट्ठा
दिवसाण इगतीस भागा य चवोयाला ए एकतीसभातियालद्धो तत्थेक्को, सो लवरि छूढो, जाया सत्तसया सत्तट्ठा
एकतीसतिभागा य तेरसा । ७६७, इइ । एस अभिवद्धियवरिसरासी प्रवभणियचंदवरिसरासिस्स मेलितो ।
कहं ?, उच्यते - दिवसा दिवसेसु, भागा भागेषु । ताहे पंचवरिसरासी “सरत्तविपुद्धो भवइ उ” अट्ठारससया
तीमुत्तरा ॥१८३०॥ एस धुवरासी ठाविज्जति । एयाओ धुवरासीओ सव्वमासा णक्खत्तादिया
उप्पाइज्जति अप्पप्पणो भागहारेहि ।

१-१०३२ ।	२-३१	३७२ ।	३-३८३	२२ ।
१८	१२१	१४५२		३१
३१	१२४	१२४		

जघ्नो भणितं —

भा-ससि-रितु-सूरमासा, सत्तट्टि वि एगसट्टि सट्टी य ।
 अभिवट्टियस्स तेरस, भागाणं सत्त चोयाला ॥६२८७॥
 सत्तट्टिं णक्खत्ते, छेदे बावट्टिमेव चंदम्मि ।
 एगट्टि अ उडुम्मि सट्टीं पुण होइ आइच्चे ॥६२८८॥
 सत्तसया चोयाला, तेरसभागाण होति नायच्चा ।
 अभिवट्टियस्स एसो, नियमा छेदो मुण्येयव्वो ॥६२८९॥
 अट्टारसया तीसुत्तरा उ ते तेरसेसु संगुणिता ।
 चोयाल सत्तमइया, छावट्टितिगिवट्टिया य फलं ॥६२९०॥

भा इति णक्खत्तमासो, ससि त्ति चंदमासो, रितु ति वा कम्ममासो वा एगट्टं, सूरमासो य, एतेसि मासाणं जहासंस्स भागहारा इमेरिसा — सत्तसट्टी विसट्टि एगसट्टी सट्टी य अभिवट्टियस्स मासस्स भागहारो सत्तसया चोयाला तेरसभागेण । एतेसि इमा उप्पत्ती जइ तेरेसिहि चंदमासेहि बारस अभिवट्टियमासा लब्धमंति तो बावट्टीए चंदमासेहि कति अभिवट्टियमासा लब्धमासो एवं तेरासिए कते भागतं सत्तावणमासो मासस्स य तिणि तेरसभागा, एते पुणो सबणिमा जाता सत्तमया चोयाला तेरसभागाणं ति, एतेहि अट्टारसण्हं सयाणं तीसुत्तराणं तेरसगुणिताण २३७६० भागो हयव्वो, लद्धं एककोसं दिणा, मेसं सत्तसया छव्विसा ते छहि उवट्टिया जाया मयं एकवीसुत्तरं अंसाणं, छेदे वि मयं चउवीसुत्तरं, एस अभिवट्टियवरिसबारसभागे अधिमासगो । जो पुण ससिसूरगतिविसेसणिप्फणो अधिमासगो सो अउणत्तीसं दिणा विसट्टिभागा य बत्तीसं भवति ।

कहं ?, उच्यते — “ससिणो य जो विसेसो आइच्चवस्स य हवेज्ज मासस्स तीसाए संगुणितो अधिमासगो चंदो । आइच्चमासो तीसं दिणा तीसा य सट्टिभागा, चंदमासो अउणत्तीसं दिणा विसट्टिभागा य बत्तीसं । एतेसि विसेसे कते सेसमुद्धरिं एककोसं वासट्टिभागा अण्णे तीसं चेव वासट्टिभागा, एते उवट्टिया परोप्परं छेदगुणकाउं एगस्स सरिसच्छेदो नेट्टो असेसु पक्खित्ता तेसु वि छेयं सवट्टिएसु एगसट्टि वासट्टि भागा (उ) जाया अहोरत्तस्स, एस एको तिही सोमगतीए सो तीसगुणितो विसट्टिभातिगो चंदमासपरिमाणणिप्फणो अहिमासगो भवति ।

अहवा — इमेण विहिणा कायव्वं — जइ एककेण आइच्चमासेण एक्का सोमतिही लब्धमंति तो तीसाए आदिच्चमासेहि कतितिही लब्धमासो, भागतं तीसं सोमतिहीयो, एस आदिच्चचंदवरिसअभिवट्टियस्समासे य प्रतिदिनं प्रतिमासं च कला वडुमाणी तीसाए मासेसु मासो पूरति ति, एसो अधिमासगो चंदमासपमासो चंदो अधिमासगो भणति, एवं चेव अभिवट्टिं पुडुच्च अभिवट्टियवरिसं भणति ।

भणियं च सूरपणत्तीए — “तेरस य चंदमासो, एसो अभिवट्टियो त्ति नायव्वो” वर्षमिति वाक्यशेषः । तस्स बारसभागे अधिमासगो अभिवट्टियवर्षमासेत्यर्थः । अथवा — अधिमासगण्यमाणं इमं एगतीसं दिणा अउणत्तीसं मुहुत्ता विसट्टि भागा एस सत्तरसा, एते कहं भवति ? उच्यते — जं एगवीस-उत्तरसयं अंसाणं तीसगुणं कायव्वं तस्स भागो सयेय चउवीस उत्तरेण भागलद्धं अउणत्तीसं मुहुत्ता, सेसस्स अद्वे ताव दो, तस्य विसट्टि भागा सत्तरस भवति, एव वा एकतीसदिनसहितं अधिकमासपमाणं । एसो पंचविहो कालमासो भणति ॥६२९०॥

इदाणि भावमासो सो दुविहो आगमतो णो आगमतो य -

मूलादिवेदञ्चो खलु, भावे जो वा विद्याणतो तस्म ।

न हि अग्निगाणञ्चोऽग्नी-णाणं भावो ततोऽण्णो ॥६२९१॥

जो जीवो घण-मास-मूल-कंद-पत्त-पुण्फ-फलादि वेदेति सो भावमासो, जो वा आगमतो उवउत्तो मास इति पदत्वजाणघो ।

चोदगाह - “ण हि अग्निगाणञ्चो अग्नि” ति नस्त्वग्निज्ञानोपयोगतः आत्मा अग्न्याख्यो भवति ।

एवमुक्ते चोदकेनाचार्याह - “णाणं भावो ततो णऽण्णो” ति णाणं ति ज्ञानं, भावः अग्निगमः उपायंग इत्यनर्थितरमिति कृत्या अग्निद्वयोरप्युक्त आत्मा तस्मादग्निद्वयभावादप्यो न भवति ॥६२९१॥

एव्य छविहो भासणिक्खेवो, कालमासेण अविहारो तस्य वि उडुपासेण, सेसा सीसस वि कोवणट्ठा भणिया मासे ति गयं ।

इदाणि “परिहारे” ति, तस्म इमो णिक्खेवो -

णामं ठवणा दविए, परिगम परिहरण वज्जणोग्गहे चैव ।

भाववण्णे सुद्धे, णव परिहारस्स नामाहं ॥६२९२॥

भावपरिहारो दुविधो कज्जति (भाववणपरिहारो सुद्धो य) भाववणपरिहारितो एस चरित्ताइयारो । अहवा - भावपरिहारितो दुविधो पसत्थो अपसत्थो य । पसत्थे जो अणाणमिच्छादि परिहरति, अपसत्थो जो णाणदसणचरित्ताणि परिहरति । एवं भावे तिविहे कज्जमाणं दसविहो परिहारनिक्खेवो भवति २ ॥६२९२॥

एतेसि इमा व्याख्या - णामठवणातो गतातो, वतिरित्तो दव्वपरिहारो ।

कंटगमादी दव्वे, गिरिनिदिमादीसु परिहरो होति ।

परिहरण धरण भोगे, लोउत्तर वज्ज इत्तरिए ॥६२९३॥

लोगे जह माता ऊ. पुत्तं परिहरति एवमादी उ ।

लोउत्तरपरिहारो, दुविहो परिभोग धरणे य ॥६२९४॥

जो कट्ठादीणि परिहरति आदिगहणेणं ज्ञाणं विससणादी । परिगमपरिहारो णाम जो गिरि नदि वा परिहरतो जाति, आदिगहणातो समुद्मडवि वा । परिगमो ति वा पज्जहारो ति वा परिहरो ति वा एगट्ठं । परिहरणं परिहारो दुविहो लोइयो लोउत्तरो य । तस्य लोये इमो - “लोगे जह” पुव्वदं कंठं ।

लोउत्तरपरिहारो दुविहो - परिभोगे धरणे य । परिभोगे परिभुजति पाउणिज्जतीत्यर्थः । आरणपरिहारो नाम जं संभोविज्जति पडिलेहिज्जति य, ण य परिभुजति ।

१ सू० १ । “भावपरिहारो दुविहो य पसत्थो । अपसत्थो जो अणाणमिच्छादिहो परिहरति भाववणपरिहारितो एव तद्विधो भवति, भावतामान्यतो षट्ठविधो भवति । अहवा - सुद्ध परिहारितो एस अणदमारो, भावव परिहारितो एस चरित्तायारो ।” अथ पाठ स्तावत् टात्पत्राकितप्रती टिप्पणीरूपेण सूचितः ।

ठाण निसीय तुअट्टण, उड्ढाती विरति सच्च देसे य ।

संजमठाणमसंखा, पग्गह लोगीतर दो पणगा ॥६२६८॥

“उड्ढ” ति तज्जातीयग्गहणातो निसीयणुयट्टणा वि गहिता, तेषि उड्ढाणं आदि तं पुण काउस्सग्गं निमीयणं उवविमणं तुअट्टणं संगिहणं उ । “विरति” ठाणं दुविधं—देसे सच्चे य, तस्य देसे सावयाणं अणुव्वया पंच, सच्चे साधूण महव्वया पंच । ३वमहिहाणं उवस्सग्गो जस्स वा जं आवस्सहट्टाणं । “संजमठाण” ति वा अणभवसायठाणं ति वा परिणामठाणं ति वा एगट्ठं । एत्थ पढमसंजमट्टाणे पजय-परिमाणं सव्वागासदेसग्गं, सव्वागासपदेसहि अणंतपुणितं पढमं संजमट्टाणं पजवग्गेण भवति । ततो ब्रितियादि-संजमट्टाणा उववरिविसुद्धीए अणंतभागाहिमा गेया, एवं लक्खणा सामण्णतो संजमठाणा असंखेज्जा । विभागतो सामातियच्छेदसंजमठाणा दो वि सरिसा असंखेज्जे ठाणे गच्छति, ततो परिहारसहिता ते चेव असंखेज्जठाणे गच्छति, ताहे परिहारितो बोच्छिज्जति । तदुपरि सामातियच्छेदोवट्ठावगिमा अण्णे असंखेज्जठाणे गच्छति, ताहे ते बोच्छिज्जति । तदुवरि सुट्ठमसंपरायसंजमठाणा केवलकालतो अंतोमुहुत्तिया असंखेज्जा भवति, ततो अणतपुणं एगं अहवसायं संजमट्टाणं भवति । इमा ठवणा । “पग्गहठाण” दुविहं— लोइयं, इतरं लोउत्तरं । “दो पणग” ति लोइयं पंचविहं ॥६२६८॥

तं जहा -

रायाउमच्च पुरोहिंय, सेट्ठी सेणावती य लोगम्मि ।

आयरियादी उत्तरे, पग्गहणं होइ उ निरोहो ॥६२६९॥

राया जुवराया अमच्चो सेट्ठी पुरोहितो । उत्तरे पग्गहे ठाणं पंचविहं— आयरिए उवग्गए पवत्ति थेरो गणावच्छेद । प्रक्खेग ग्रहं, प्रकृष्टो वा ग्रहः, प्रधानस्य वा ग्रहणं प्रग्रह इत्यर्थः ॥६२६९॥

इदाणि जोहट्टाणं पंचविहं इमं—

आलीढ पच्चलीढे, वेसाहे मंडले समपदे य ।

अचले य निरेयकाले, गणणे एगादि जा कोडी ॥६३००॥

वामुत्थं अगग्गो काउं दाहिणं पिटुतो चामहस्येण घणं घेतूण दाहीणेण ४अपगच्छइ ति आलीढं । तं चियं विवरीयं पच्चालीढं । आलीढं अंतो पग्गहतातो काउं अगतले बाहि जं रहट्ठिग्गो वा जुज्झइ त वहाहं । जागुरुज्जे य मंडले काउं जं जुज्झइ तं मंडलं । जं पुण तेसु चेव जागुरुसु आयतेसु समपादट्ठितो जुज्झति तं समपादं । अण्णे भणति—जं एतेसि चेव ठाणाणं जहासंभवं चलिपठितो पासतो पिटुतो वा जुज्झति तं छट्ठं चलिपणम ठाणं ।

“अचलट्टाणं” नाम जहा— परमाणुयोगलेण भंते ! निरेय कालतो केवचिरं होति ?, जट्ठणेण एक्कं समयं, उवकोसेण असंखेज्ज कालं, असंखेज्जा उस्सप्पिणि ओसप्पिणीओ । निरेया निश्चल इत्यर्थः । एवं दुपदेसादियाण वि वत्तव्वं । “एगगण” ति गणियं, तस्स ठाणा प्रगेगविहा, जहा एक्कं दहं सतं सहस्सं दससहस्साइं सयसहस्सं दहसतसहस्साइं कोडी । उवरि पि जहासंभवं भाणियव्वः ॥६३००॥

१ गा० ६२६५ । २ गा० ६२६५ । ३ गा० ६२६५ । ४ पदवान्मुखमपसरति । ५ गा० ६२६५ ।

६ गा० ६२६५ ।

इवाणि “संधणा” सा दुविहा - दन्वे भावे य ।

पुणो एक्केक्का दुविहा - छिण्णसंधाणा अछिण्णसंधाणा य ।

तत्थ दन्वे “छिण्णमछिण्णसंधणा” इमा -

रज्जुमादि अछिण्णं, कंचुगमादीण छिण्णसंधणया ।

सेट्ठिदुगं अछिण्णं, अपुव्वगहणं तु भावम्मि ॥६३०१॥

मीसाओ ओदइयं, गयस्स मीसगमणे पुणो छिण्णं ।

अपसत्थं पसत्थं वा भावे पगतं तु छिण्णेणं ॥६३०२॥

जं सूत्रं वा मुंजं वा रज्जुं अछिण्णं सधेति सा अछिण्णसंधणा । अण्णोणखंडाणं इमा छिण्णसंधणा । अहं कंचुगादीणं । भावसंधणा दुविहा - छिण्णा अछिण्णया य, तत्थ अछिण्णसंधणाए सेट्ठिदुगं उवसामण-सेदी खवगसेदी य । उवसामणसेदीए पविट्ठो अण्णताणुबंधिपमिइ आदत्तो उवसामेउं न यक्कइ ताव जाव सत्त्वं मोहणिज्जं उवसामितं । खवगसेदीए वि एवं चेव अपुव्वभावगहणं करेत्तो न यक्कइ ताव जाव सत्त्वं मोहं खवियं । एसा अछिण्णसंधणा । एवं अपसत्थाओ वि पसत्थसम्मतभावं संकतस्स जं पुणो अपसत्थमिच्छता-दिभावं संकमति । एसा अपसत्थछिण्णभावसंधणा ।

अहवा - भावद्वारा ओदइय-उवसमिय-खइय-खओवसमिय-परिणामिय-सत्तिवाइयाणं अप्पपणो भाव-संरूढाणं भण्णइ । एत्थ अधिकारो भावद्वाराणं, तत्थ वि छिण्णभावसंधणाए ।

कहं ? उच्यते - जेण सो पसत्थभावाओ अपसत्थं भावं गओ, तत्थ य मासिवाति आवणो, पुणो आलोयणापरिणओ पसत्थं चेव भावं संधेति ॥६३०२॥

इयाणि पडिसेवणा, सा इमा दुविहा -

मूलत्तर पडिसेवणा, मूले पंचविह उत्तरे दमहा ।

एक्केक्का त्रि य दुविहा, दप्पे कप्पे य नायव्वा ॥६३०३॥

मूलगुणातिवारपडिसेवणा उत्तरगुणाइयारपडिसेवणा य । मूलगुणातिवारे पाणातिवायादि पंचविहा । उत्तरगुणेषु दसविहा इमा - पिडस्स जा विवोही, समितीलो ६, आवणाओ य ७, तवो दुविहो ८, पडिमा ९, अभिगहा १० ।

अहवा - अणागयमतिकंतं कोडिसहिं गियट्ठियं चेव सागारमणागारं परिमाणकइ गिरवसेसं संकेयं अट्ठापच्चक्खणां चेति ।

अहवा - उत्तरगुणेषु अणेगविहा पडिसेवणा कोहातिया । मूलत्तरेसु दुविहा पडिसेवणा । सा पुणो एक्केक्का दुविहा - दप्पेण कप्पेण वा ॥६३०३॥ दप्पकप्पग पुव्वभण्णिता ।

सीसो पुच्छति -

किह भिक्खु जयमाणो, आवज्जति मासियं तु परिहारं ।

कंटगपहे व छलणा, भिक्खु वि तहा विहरमाणो ॥६३०४॥

पुव्वद्धं कंठं आयारियो भणति - कंटगपहे व पच्छद्धं कंठं ॥६३०४॥

किं चान्यत् —

तिक्खम्मि उदग्गवेगे, विसम्मि वि विज्जलम्मि वच्चंतो ।

कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जह पावती यडणं ॥६३०५॥ पूर्ववत्

दृष्टान्तोपसंहार —

तह समणमुविहिगाणं, सव्वपयत्तेण वी जयंताणं ।

कम्मोदयपच्चतिया, विराहणा कस्सइ हवेजा ॥६३०६॥

अण्णा वि हु पडिसेवा, सा उण कम्मोदएण जा जतणा ।

सा कम्मवस्तयकरणी, दप्पाऽजय कम्मजणणी उ ॥६३०७॥ पूर्ववत्

पुनरप्याह चोदक — किमेकान्तेनैव कर्मोदयप्रत्यया प्रतिसेवना उतान्योऽपि कश्चित्प्रतिसेवनाया अस्ति भेदः ? उच्यते, अस्तीति ब्रूमः । यतमानस्य या कलिका प्रतिसेवना सा कर्मोदयप्रत्यया न भवति, न य तत्त्व कम्मबंधो, जतो तं पडिसेवतस्स वि कम्मसमो भवति । जो पुण दप्पेण कप्पेण वा पत्ते अजयणाए पडिसेवना सा कम्म जयेति — कम्मबंधं करोतीत्यर्थः ।

यतश्चैवं ततः इदं सिद्धं भवति —

पडिसेवणा वि कम्मोदएण कम्ममवि तं निमिचागं ।

अण्णोण्हउसिद्धी, तेसि वीयंकुराणं व ॥६३०८॥

कंठ्या । पडिसेवणाए हेऊ (कम्मोदयो, कम्मोदयहेऊ) पडिसेवणा, एवमेषामन्योऽप्यहेतुत्वं, तस्यापि प्रसाधको दृष्टान्तः — यथा बीजांकुरयोः ॥६३०८॥

विट्ठा पडिसेवणा कम्महेतु पमादमूला या, सा य सेतमो कहं हुज्जा ? , उवस्सये बहि वा विवारादि-
जिगयस्स । कालतो दिया वा रातो वा । भावमो दप्पेण वा कप्पेण वा अजयणाए पडिसेवति । मासातिमिति-
चारपत्तेण संवेगमुवगएण आलोयणाः पउंजियज्जा । इमं च चित्तेण णज्जति केवलं जीवितघातो भविस्सति ।
ससल्लभरणेण दीहसंसारी भवति ति काउं भण्णति -

तं ण स्वमं खु पमादो, मुहुत्तमवि अच्चित्तुं ससल्लेणं ।

आयरियपादमूले, गंतूणं उद्धरे सल्लं ॥६३०९॥

आलोयणाविहाणेण पच्चित्तकरणेण य अतिवारसल्लं उद्धरति विसोधयतीत्यर्थः, ॥६३०९॥

जम्हा ससल्लो न सिज्झति, उद्धरियसल्लो य सिज्झइ ।

तम्हा तेण इमं चितियव्वं —

अहयं च सावराही, आसो इव पत्थिओ गुरुसगासं ।

वइतंगामे संखडिपत्ते आलोयणा तिविहा ॥६३१०॥

अण्णाणं अतिवारसल्लसल्लियं णाउं तस्स विसोहणद्वं गुरुसमीवे प्रप्रियो । कहं च ? , उच्यते
अश्ववत् । तं च गुरुसमीवं गच्छंतो वइयाए खडादाणियगामे वा संखडीए वा अपडिबज्जतो गच्छइ, गुरुसमीवं
पत्तो आलोयणं देति, सा य आलोयणा तिविहा इमा — विहारालोयणा, उवसंपयालोयणा, अवराहालोयणा
य ॥६३१०॥

आसे इव औपम्ये अस्य व्याख्या -

सिग्धुज्जुगती आसो, अणुवत्तति सारहिं ण अत्ताणं ।

इय संजममणुवत्तति, वइयाइ अवकिओ साहू ॥६३११॥

सिग्धं मंदं वा उज्जुक्कं वा वक्कं वा सारहिस्स छंदमणुवत्तमाणो गच्छति, णो य सप्पच्छेदं चारि पाणियं वा अणुयत्तइ । एवं माघू वि जहा जहा संजमो भवति तहा तहा संजममणुवत्तमाणो गच्छइ, णो वइयादिसु सायासोक्खट्टया पडिक्कन्तो वइयादिसु वा ण वक्केण गहेण गच्छति । आलोयणपरिणओ जति वि अगालोतिण कालं करेति तहावि आराहणो विसुद्धत्वात् ॥६३११॥

तत्थ विहारालोयणा इमा -

आलोयणापरिणओ, सम्मं संपट्टिओ गुरुसगासे ।

जइ अंतरा उ कालं, करेज्ज आराहओ तहउवि ॥६३१२॥

पक्खिथ चउ संवच्छर, उक्कोसं वारसण्ह वरिसाणं ।

समणुष्णा आयरिया, फड्डगपतिया वि विगडेंति ॥६३१३॥

मंभोतिया आयरिया पक्खिण आलोएति, रायणियस्स ।

राइणितो वि ओमरातिणियस्स आलोएति ।

जति पुण राइणिओ ओमो जाजोयत्थो चाउम्भासिए आलोएति । तत्थ वि असतीते संवच्छरिए आलोएति । तत्थ वि असतीते जत्थ मिलति गीयत्थस्स उक्कोसेण वारसहिं वरिसेहिं दूरातो वि गीयत्थसमीवं गंतुं आलोएयव्वं । फड्डगवतिया वि आगतुं पक्खियादिगु मूलायरियस्स आलोएति ॥६३१३॥

तं पुण ओहविभागे, दरभुत्ते ओह जाव भिणो उ ।

तेण परेण विभाओ, संभमसत्थादिसुं भइतं ॥६३१४॥

तं विहारालोयणं ओहेण विभागेण वा देति । तत्थ ओहेण जे साधु समणुष्णा "दरभुत्ते" ति भोसु आदत्ताणं पाहुणता आगता ते आगतुया ओहेण आलोएति, जइ य अतियारो पणमं दस गणरस वीस भिणमासो य तो ओहालोयणं दाउं भुजति । अह भिणमासातो परेण अइयारो मात्तादितो भवति तो वीसु समुद्दिस्सिता विभागेण आलोएति । "संभमसत्थादिसुं भवितुं" ति संभमो अगिमंभमादि सत्थेण वा समं भत्ताण अंतरा सत्थसंणिवेसे पाहुणया आगया होज्ज, मरयो य चउत्तकामो, ते य मासादिसा . णा, आयणाणि य णत्थि जेमु वीसु समुद्दिस्सितं, ताहे ओहेणं आलोएत्ता एककट्ठं समुद्दिस्सिता पच्छा विभागेणं आलोयव्वं विस्तारेणेत्यर्थः ॥६३१४॥

इदाणि आलोयणाए कालनियमो भण्णति -

ओहे एगदिवसिया, विभागतो एगण्णेगदिवसा तु ।

रत्ति पि दिवसओ वा, विभागओ ओहओ दिवसे ॥६३१५॥

ओहालोयणा णियमा एकदिवसता, अप्पावराहत्तणओ आसणभोयणकालत्तणओ य । विभागा-लोयणा एगदिवसिया वा होज्ज, अण्णेगदिवसिया वा होज्ज ।

कहं पुण अणेगदिवसिया वा होज ? बहुमवर/हतणयो । बहु आलोएयव्वं आवरिया वावडः होजा, ण यहं वेत्तं पडिच्छति । आलायगो वा वावडो होज । एवं अणेगदिवसिता भवति । विभागालोयणा नियमा दिवसतो रति वा भवति । ओहालोयणा नियमा दिवसतो, जेण रातो ण भुंजति ॥६३१५॥

ओहालोयणाए इमं विहाणं—

अप्या मूलगुणेमुं, विराहणा अप्पउत्तरगुणेमुं ।

अप्या पासत्थाइमु, दाणग्गह संपओगोहा ॥६३१६॥

कह्या, एवं आलोएया मंडलीए एक्कटुं समुद्धिमंति ॥६३१६॥

विहारविभागालोयणाए इमं कालविहाणं—

भिक्षवाति-णिग्गामुं, रहिते विगडेति फडुगवती उ ।

सव्वसमक्खं केती, ते वीसरियं तु कहयंति ॥६३१७॥

प्रादिग्गहणेयं विचारभूमि विहारभूमि वा जाहे सोसपडिच्छया णिमया ताहे फडुगवती एणाणियस्स माययिस्स आलाएति ।

कइ आयरिया भणंति—जह फडुगवती गेहादियाणं सव्वसमिक्ख आलोएति ।

कि कारण ? उअये—जं कतिच विस्सरियं पदं होज्ज तं ते सारेद्वि—कहयंतीत्यर्थः ।

तं पुण केरिस आलोएति ? काए वा परिआओण ? अत उच्यते—

मूलगुण पढमकाया, तेमु वि पढमं तु पंथमादीसु ।

पादप्पमज्जणादी, वितियं उल्लादि पंथे वा ॥६३१८॥

दुविहो अवराहो—मूलगुणावराहो उत्तरगुणावराहो य । एत्थ पढमं मूलगुणा आलोएयव्वा, तेमु वि मूलगुणेसु पढमं पाणातिवातो, तत्थ वि पढमं पुढविककायविराधणे जा पंथे वच्चतेण विराहणा कया, अडिल्लामो अयडिल्लं अयडिल्लं अयडिल्लं संकमतेण पदा ण पमज्जिता, ससरक्खे मट्टियादिहत्थमतेहि वा भिक्षवग्गहणं कत्तं, एवमादि पुढविककायविराधणं आलेएति । ततो आउक्काए उदउल्लेहि हत्थेहि मत्तेहि भिक्षवग्गहणं कयं, पंथे वा अजयणाए उदयमुत्तिणो, एवमादि पाउक्काए ॥६३१८॥

ततिए पतिट्ठियादी, अभिचारणवीयणादि वायुम्मि ।

बीतादिघट्ट पंचमे, इंदिय अणुवातिओ छट्ठे ॥६३१९॥

ततिए त्ति-तेउक्काए परंपरादिपतिट्ठियगहिं सजोतिववहीए वा ठितो एवमादि तेउक्काए । वाउक्काए जं धम्मत्तेण बाहिं णिमांतु वातो अभिचारेउं भत्तादि सरीरं वा वीयणादिणा वीवियं, एवमादि वाउक्काए । पंचमे वणस्सत्तिकाए बीयादिमंघट्टणा कया, भिक्षादि वा गहितं, एवमादि वणस्सत्तिकाए । "छट्ठे" त्ति तसकाए, तत्थ इंदियाणुवाएण आलोए, पुव्वं वेइदियाइयारं ततो तेइदि-वउरिदि-पवेइदियाइयारं । एवमादि पाणातिवाओ ॥६३१९॥

दुब्भासियहसितादी, वितिए ततिए अजाइतो गहणे ।

घट्टण-पुव्वरतादी, इंदिय आलोण मेहुण्णे ॥६३२०॥

विगिए मुसावाए, तत्थ किञ्चि दुग्भासितं भणितं, हासेण मुसावाओ भासिओ, एवमादि मुसावाए । सतिए त्ति अदत्तादाणे, तत्थ अयाचियं तण्डगलादि गहियं होज्जा, उग्गहं वा अणणुणवेत्ता कात्तियादि बोत्तिरितं होज्ज, एवमादि अदिग्गादाणे । मेहुणे, चेतिते महिमादिमु जणसम्मदे इत्थिसंघट्टणफासो सात्तिअओ होज्ज, पुक्कवरयकीलियादि वा अणसरियं होज्ज, इत्थीण वा वयणाणि मणोहराणि इदिआणि वट्ठु ईसि त्ति रागं गतो होज्ज, एवमादि मेहुणे ॥६३२०॥

मुच्छातिरित्त पंचमे, छट्ठे लेवाड अगय सुंठादि ।

उत्तरभिक्षवऽविसोही, असमित्तं च समितीसु ॥६३२१॥

परिगहे उवकरणादिमु मुच्छा कया होज्ज, अतिरित्तोवही वा गहितो होज्ज । “पंचमे” त्ति परिगहे एवमादि । “छट्ठे” त्ति राईभोयणे, तत्थ लेवाडगपरिवाओ कयो होज्ज, अगतं किञ्चि सुंठादि वा सण्हियं किञ्चि पणिभुत्तं होज्ज, एवमादि रात्तीभोयणे । एवमादि मूलगुणेसु आलोयणा । उत्तरगुणेसु अविगृह्णभिक्षगहणं कयं होज्ज, समितीसु वा असमित्तो होज्ज, सुन्नीसु वा अगुत्तो ॥६३२१॥

संतम्मि य बलविगिए, तवोवहाणम्मि जं न उज्जमियं ।

एस विहारवियडणा, ओच्छं उवसंपणाणत्तं ॥६३२२॥

कंज्या । गता विहारालोयणा ।

इदाणि उवसंपदालोयणा भण्णति -

एगमणेमा दिवसेसु होति ओहेण पदविभागो य ।

उवसंपयावराहे, णायमणायं परिच्छंति ॥६३२३॥

सा उवसंपदालोयणा समणुण्णाण वा असमणुण्णाण वा, तत्थ समणुण्णाण सगासे समणुणो उवसंपयज्जंतो दुग्गमित्तं उवसंपज्जति ॥६३२३॥

जतो भण्णति -

समणुण्णदुग्गमित्तं, उवसंपज्जंते होइ एमेव ।

असमणुण्णेणं णवरिं, विभागतो कारणे भइत्तं ॥६३२४॥

सुत्तट्ठा दंसणचरित्तट्ठा जेण ते चरणं प्रति सरिसा चेव । “एमेव” त्ति जहा विहारालोयणा दट्ठा उवसंपदालोयणं देतो एगदिवसेण वा अणेगदिवसेसु वा ओहेण वा पदविभागेण वा एवं समणुणो उवसंपदालोयणं देति । “अण्ण” इति अण्णसंभोइओ असमणुणो वा असंविमो तेसु अण्णद्वय उवसंपज्जंतेसु तिगनिमित्तं उवसंपदा णाणदंसणचरित्तट्ठा, विभागालोयणा य, ण ओहती । संभमसत्थादिसु वा कारणेसु ओहेण वि देति एस भयणा । अवराहे वि एवं जो विसेसो भण्हित्ति सो उवसंपज्जमाओ दुविहो - णाओ अणाओ वा, जत्थ जो णज्जत्ति सो ण परिक्षिज्जत्ति, जो ण णज्जत्ति सो आवस्सगाईहि पएहि परिक्षिज्जत्ति । एये उवरि वक्खमाणं ॥६३२४॥

दियरातो उवसंपय, अवराहं दिवसओ पसत्थम्मि ।

उव्वाते तद्विसं, तिण्हं तु वइक्कमे गुरुगा ॥६३२५॥

उवसंपदालोयणा सा (ओहेण) विभाणेण वा (ओहेण) सा दिवसतो, न रात्रौ । आ पुण अवराहाऽऽ लोयणा सा विभाणेण दिवसतो, न रात्रौ । दिवसतो वि विट्ठिवति वातादिदोसवज्जिते “पसत्थे” दव्वातिमु य पसत्थेसु, एयं पि वक्खमाणं, अवराहे वि ओहालोयणा अववादकारणे भतियव्वा ॥६३२५॥

“उव्वातो” ति पच्छद्धं अस्य व्याख्या -

पढमदिणे म विफाले, लहुओ बितिय गुरु ततियए लहुगा ।

तस्स विकहणे ते च्चिय, सुद्धममुद्धो इमेहिं तु ॥६३२६॥

अमणुणो ओ उवसंपज्जणहुवाए आगमो आयरियो तं जति पढमदिवसे ण विफालेति न पृच्छती-
त्यर्थः । कुतो आगतो ? कहिं वा गच्छति ? किं गिमितं वा आगतो ?” एवं अपुच्छमाणस्स तद्विवसं मासलहुं,
बितियदिवसे जति ण पुच्छति चउलहुं, “तिण्ह तु वडवकमे गुरुगा” इति चउत्थदिवसे जति ण पुच्छति न्ह ।

सो वि पुच्छिओ भणति - “कहेहामि” मासलहुं, बितियदिवसे मासलहुं, ततियदिवसे ४ (ल),
चउत्थदिवसे अकहेतस्स चउगुरुगा । अहवा - “तद्विवसे” ति पढमदिवसे “उव्वाते” आत्ता इति कृत्वा ण
पुच्छितो आयरियो सुद्धो । अह बितियदिवसे ण पुच्छति तो मासगुरुं । ततिए ण पुच्छति चउलहुं, चउत्थे
दिवसे चउगुरुं । एव तेण पुच्छिण वा अक्खायं जेण कज्जेण आगमो । तस्स पुण आगंतुगस्स आगमो सुद्धो
अमुद्धो वा हवेज्ज, एत्थ चत्तारि भंगा । इमेण विट्ठणा भंगा कायव्वा - गिगमणं पि आगमणं पि अमुद्धं । एवं
चउरो भंगा कायव्वा । तत्थ गिगमो इमेहिं कारणेहि अमुद्धो भवति ॥६३२६॥

अहिकरण विगति जोए, पडिणीए थद्ध लुद्ध णिद्धम्मे ।

अलमाणबद्धवेरो, सच्छंदमती परिहियव्वे ॥६३२७॥

‘अहिकरणे’ ति अस्य व्याख्या -

गिहिसंजयअहिकरणे, लहुगा गुरुगा तस्स अप्पणो छेदो ।

विगती ण देति वेत्तुं, भोचुद्धरितं च गहिते वि ॥६३२८॥

जति गिहत्थेण समं अहिकरणं काउं आगमो तं आयरियो संणिण्हइ तो चउलहुगा । अह संजएण
समं अहिकरणं काउं आगतं संणिण्हइ तो चउगुरुगा, तस्स पुण आगंतुगस्स पंचराइदियो छेदो । अहवा -
पुद्धो अपुद्धो वा इमं भगेज्ज - “विगति” ति “विगती ण” पच्छद्धं ॥६३२८॥

किं च -

ण य वज्जिया य देहो, पगतीए दुब्बलो अहं भंते ! ।

तम्भावितस्स एण्हिं, ण य गहणं धारणं कत्तो ॥६३२९॥

सो य आयरियो विगतिगिण्हणाए ण देति जोअवाहीणं । “अगहिं” ति अणोहिं भुत्तुद्धरियं तं पि
माणजाणइ, किं वा भगवं अग्ने ण पव्वजितवसभस्स तुल्ला, अणं च अग्ने सभावेणेव दुब्बला विगतीए बलामो
अणं च अग्ने विगतिभावियदेहा इदाणि तस्स अभावे ण यलामो, ण य सुत्तत्थे वेत्तुं समत्था, पुव्वगहिणं वि
धरितुं समत्था ण भवामो ॥६३२९॥

१ गा० ६२२७ । २ गा० ६२२८ ।

“जोगे पडिणीए” त्ति दो दारे जुगवं वक्खामेति -

एगंतरणिच्चिगती, जोगो पच्चस्थिको व तहि साहू ।

चुक्कखलितेसु गेण्हति, छिद्धाणि कहेति तं गुरुणं ॥६३३०॥

पुच्छिग्रो भणाति - तस्स आयरियस्स एगंतरउवासेण जोगो वुज्झइ. एगंतर आयवित्तेण वा, जोगवाहिस्स वा ते आयरिया विगति ण विसज्जति, एवमादि कव्वडो जोगो त्ति तेण आगमो । पुच्छिग्रो वा भजेज - तम्मि गच्छे एगो साधू मम “पच्चस्थिको” त्ति - पडिणीग्रो । कहं चि सामायारिजोगे चुक्केति, वीरुरिए खलिते वि दुप्पडिलेइहदिके गेण्हति, अच्चत्वं खरटेति, चुक्कखलिताणि वा धवराहपदच्छिद्दाणि गेण्हति, से य गुरुणं कहेति, पच्छा ते गुरुो मे खरटेति । अहवा - मणाभोगा चुक्कखलिताणि भणंति, जं पुण आभोगमो मसामायारि करेइ तं छिद्धं भणति ॥६३३०॥

इदाणि “घट्ट-लुद्ध” दो वि भण्णति -

चंकमणादी उट्ठण, कडिगहणे भाओ णत्थि थद्धेवं ।

उक्कोस सयं भुंजति, देतप्पणेसि तु लुद्धेवं ॥६३३१॥

आयरिया जइ वि चक्रमणं करेति तहावि अणुद्वेयत्वा, आदिग्गहणातो जइ वि काइयभूमि गच्छंति. आगच्छति वा, एवमादि तत्तण अणुद्वेयताणं अमहं कडोमो वाएण गहितामो, अणुद्वेयवलिमयेण य अमहं सज्जामो तत्तण सरेति । अह ण अणुद्वेयो सो पच्छित्तं देति खरटेति वा, एवं यद्धो भणाति ।

जो लुद्धो सो भणाति - जं उक्कसयं किंचि वि तिहरिणिलुगादि लब्धति तं अप्पमा भुजति, अण्णेति वा बाल-वुड्डु दुब्बल-पाट्ठण्णगाण वा देति, अमहे ण लब्धामो, लुद्धो एवं भणाति ॥६३३१॥

“णिद्धम्म अलसे” दो वि जुगवं भणाति -

आवासियमज्जणया, अकरण अति उगगडंड णिद्धम्मे ।

बालादट्ठा दीहा, भिक्खाज्जलसिओ य उन्भामं ॥६३३२॥

जो णिद्धमो सो पुच्छिग्रो भणति - जइ कहिं चि आवासिता निसीहिया वा ण कज्जति ण पमज्जति वा, णितो पविसंतो वा । इडंगादि वा णिक्खिवंतो ण पमज्जति, तो आयरिया “उग्गो” - दुट्ठति कुतं भवति, पच्छित्तं देति, अहवा - उग्गं पच्छित्तइडं देति, गिरणुकपा इत्यर्थः ।

जो आलस्सिमो सो भणाति - अप्पणो पज्जते वि बालवुड्डाणं मट्ठाए दीहा भिक्खायरिया तम्मि गच्छे हिडिज्जइ, लुड्डलकं कक्खडं वा तं खेतं दिणे दिणे “उन्भामं” ति भिक्खायरियं गम्पइ प्रतिदिनं आमन्तरं गम्पत इत्यर्थः ।

अपज्जते आगया गुरु भणंति - “किमिह वसहोए महाणसो जं अपज्जते आगता ? वच्चह पुणो, हिडह खेतं, कालो भायणं च पट्ठण्ह,” एवमादि दीहभिक्खायरियाए अस्थितो आगतोमिनि ॥६३३२॥

अणुबद्धवेरो य सच्छंदो य दो वि जुगवं भणाति -

पाणसुणगा य भुंजति, एककु अंसंसडेवमणुबद्धो ।

एक्कल्लस्स ण लब्भा, चलितुं पेवं तु सच्छंदो ॥६३३३॥

१ भस्तिनः ।

अणुबद्धवेरो भगति - येवं वा बहु वा असंखडं काउं जहा सुणगा पाणा वा परोपरं तत्तण्णादेव -
एकभायगे भुजति एवं तत्त संजया वि, णवरं - मिच्छादुक्कडं दाबिज्जति । अहे उ ण सबकेमो हियत्वेवं
सल्लेणं तेहि समं समुत्तिसिउं । एवं प्रागगो अणुबद्धवेरो भगति ।

जो सच्छंदो सो भगति - सण्णाभूमि पि एगाणियस्स गंतुं ण देति, णियमा संघाउसहिंएहि गंतव्वं ।
तं असहमागो प्रागगो हं । एते अधिकरणादिए पदे आयरितो सोउं परिचचमइ, न संशुण्हातीत्यर्थः ॥६३३३॥

अधिकरणादिएहि पदेहि आगयस्स इमं पच्छित्तं -

समणऽधिकरणे पडिणीय लुद्ध अणुबद्धवेरे चउगुरुमा ।

सेसाण होंति लहुगा, एमेव पडिच्छमाणस्स ॥६३३४॥

जो समणहिं सममधिकरणं काउं प्रागतो, जो य भगति-तत्त मे पडिणीतो साहू, जो य लुद्धो, जो
अणुबद्धवेरो, एतेसु चउमु चउगुरुमा, सेसेसु छसु गिहियधिकरणे य चउलहुगा । जो य आयरिओ एते
पडिच्छति तस्स वि एवं चेव पच्छित्ता ॥६३३४॥

अहवा - जे एते दोसा बुत्ता एतेसि एक्केण वि णागयो होज्ज ।

इमेहि दोसेहिं प्रागगो होज्ज -

अहवा एगेऽपरिणते, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥६३३५॥

एस सोलसमे व्याख्यातो, तथापि इहोच्यते -

एककल्लं मोत्तूणं वत्थादिअकप्पिएहि सहितं वा ।

सो उ परिसा व थेरा, अहऽण्णसेहादि वट्ठावे ॥६३३६॥

आयरियं एगाणि मोत्तुं ण गंतव्वं, भसणवत्थादिअकप्पिया सेहसहिं च मोत्तुं ण गंतव्वं ।
“अप्पाहारे” णाम जो आयरिओ संकियसुत्तथा, तं चेव पुच्छिउं वायणं देति, तारिसं वि मोत्तुं ण गंतव्वं ।
“थेरं” ति अजंगमं गुरुं, परिसा वा से थेरा, तेसि सेहाण थेराण य अहं चेव वट्ठावगो आसि ॥६३३६॥

तत्त गिलाणो एगो, जप्पसरीरो तु होति बहुरोगी ।

णिद्धम्मा गुरुआणं, न करेति ममं पमोत्तूणं ॥६३३७॥

तत्त वा गच्छे एगो जरदिणा गिलाणो, तस्स अहं चेव वट्ठावगो आसी । बहूहिं साहारणरोगेहि
जप्पसरीरो भगति तस्सवि अहं चेव वट्ठावगो आसी । मंदधम्मा गुरु आणं न करेति मम पुण एयस्स करेति ।
सजय गिहीहिं वा सह अधिकरणं काउं प्रागतो, गुरुस्स वा केणइ सह अधिकरणं वट्ठति ॥६३३७॥

एतारिसं विउसज्जं, विण्णवासो ण कप्पती ।

सीसपडिच्छायरिए, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥६३३८॥

पुव्वदं वठं । एरिसं मोत्तुं जइ सीसो प्रागगो पडिच्छयो वा, जो य पडिच्छइ आयरिओ तेसि इमं
पच्छित्तं ॥६३३८॥

एगो गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुमा उ सीसगादीणं ।

सेसे सीसे गुरुमा, लहुय पडिच्छे गुरु सरिसं ॥६३३९॥

जो एगामि गुरुं मोत्तुं आगमो, गिलाणं वा मोत्तुं, अधिकरणं वा काउं आगमो, एतेसु सीसस्स पडिच्छ-
यस्स पडिच्छमाणस्स य आयरियस्स तिण्हवि चउगुहा । जेण अण्णे सेसा अपपरिणय अण्णाहार येर बहुरोग मंदघम्मा
य-एतेसु जइ सीसो आगमो चउगुहा, ग्रह पडिच्छतो तो चउलहुगा, गुरुस्स भयणा । “सरिं व” ति जइ सीसं
वेण्हति तो चउगुहा, पडिच्छतो चउलहुगा ॥६३३॥

ग्रहवा पाहुडे इमं -

सीसपडिच्छे पाहुड, छेदो राइंदियाणि पंचेव ।

आयरियस्स उ गुल्हा, दो चेव पडिच्छमाणस्स ॥६३४०॥

सीसस्स पडिच्छयस्स वा अधिकरणं काउं अण्णगच्छे संवसंतस्स पंचराइदिअ छेदो भवति, गुरुस्स
पडिच्छमाणस्स चउगुहा । एते पढमभगे गिणम-दोसा भणिता, आगमो वि ते असुद्धो भवति, वइयादिसु
पडिबज्जंतो आगतो तत्थ वि पच्छित्तं वत्तव्वं ॥६३४०॥ एस पढमभंगो गतो, वितियभंगो वि एरिसो
चेव, णवरं आगमो सुद्धो ।

इमे उक्कमेण ततिय-चउत्थभंगा -

एतदोसविमुक्कं, वतियादी अपडिबद्धमायायं ।

दाउण व पच्छित्तं, पडिबद्धं वी पडिच्छेज्जा ॥६३४१॥

इमो चउत्थो भंगो । एतेसु जे अधिकरणादी गिणमदोसा तेसु वज्जितो आगमणदोसेसु व
वइयादिसु अपडिबद्धभक्तमागमो जो, एस चउत्थभंगिल्लो सुद्धो ।

ततियभगे गिणमदोसेसु सुद्धो आगमणदोसेसु वइयादिसु जो पडिबज्जंतो आगमो तं ण पडिच्छति ।
अववादतो वा तस्स पच्छित्तं दाउं पडिच्छति, ण दोषेत्यर्थः ॥६३४१॥

सुद्धं पडिच्छिउणं, अपरिच्छिण्णे लहुग तिणिण दिवसाइं ।

सीसे आयरिए वा, पारिच्छा तत्थिमा होति ॥६३४२॥

यथोक्तदोषरहितं सुद्धं पडिच्छित्ता तिणिण दिवसाणि परित्यज्यन्वो-कि धम्मसहितो ण व ति, जइ ण
परिच्छति तो चउलहुगा, अण्णायरियाभिप्रायेण वा मासलहुं । सा पुण परिकत्ता उभयो पि भवति ॥६३४२॥

एत्थ पढमं ताव तस्स परिकत्ता भण्णति -

आवासग सज्झाए, पडिलेहण भुंजणे य भासाए ।

वीयारे गेलन्ने, भिक्खग्गहणे परिच्छति ॥६३४३॥

केई पुव्वणिसिद्धा, केई सारेंति तं न सारेंति ।

संविग्गो सिक्ख मग्गति, मुत्तावलिमो अणाहोऽहं ॥६३४४॥

केइ ति साहू अवराहपदा वा संबज्जति, तस्स उवसंपदकालाभो पुव्वणिसिद्धा “अवजो ! इमं इमं
च न कायव्व”, जत्थ जहू पमादेंति ते सारिज्जति ति वुत्तं भवति, णो उवसंपज्जमाणं तेसु गिसिद्धपदेसु
वट्टमाणं सारेंति ॥६३४४॥

तत्थ आवस्सए ताव इमेण विहिणा परिकिज्जइ -

हीणाहियविवरीए, सति च बले पुव्वगतं चोदेति ।

अप्पणए चोदेती, न ममं ति इहं सुहं वसितुं ॥६३४५॥

हीणं गाम काउस्सग्गमुत्ताणि दरकङ्कितानि करेत्ता अण्णीहिं साधूहिं चिरवीसट्ठीहिं वोसिरइ, अग्रिकं नाम काउस्सग्गमुत्ताणि अतितुरितं कङ्कुत्ता अण्णपेहणट्ठाए पुव्वमेव वोसिरइ, उस्सारिए वि रायणिणं पच्छा उस्सारेति, विवरीए ति पाओसियकाउस्सग्गा पभातिए जइ करेति, पभाइए वि पाओसिए जं करेति ।

अहवा - सूरं अत्यमिते चैव णिव्वाघाते सह आयरिएण सव्वसाहूहिं पडिक्कमियव्वं, अह आयरियाणं सइडातिधम्मकहा वाघातो होज्ज तो बालवुड्डगिलाणमसइ णिसेज्जधरं च मोत्तुं सेता सुत्तत्थ-ज्जरणट्ठता काउस्सग्गेण ठायंति, जे पुण सति बले पुव्वं काउस्सग्गे गोहूति थेरा तेसु अप्पणाए चोदेति, जो पुण परिकिज्जइ सो ण ओइज्जइ पमादेतो । ताहे जइ सो एवं च सति "सुट्ठु जं मे ण पडिचोदेति, सुहं अञ्छामि" सो पंजरअग्गे णायव्वो, ण पडिच्छिज्जव्वो ॥६३४५॥

अह पुण मं ते ण पचोदेति ति काउं "संविग्गो सिक्खं मग्गति" पच्छद्धं अस्य व्याख्या -

जो पुण चोइज्जंतो, दट्ठूण ततो नियत्तती ठाणा ।

भणति अहं भे चत्तो, चोदेह ममं पि सीदंतं ॥६३४६॥

जति पुण सो भणति जेमुठाणेसु अहं पमादेमि तेसु चैव ठाणेसु अप्पणो सीसा पमादेमाणा पडिचो-इज्जंतो, अहं तु ण पडिचोइज्जामि "अणाहोइहं" - परिचत्तो, ताहे संविग्गविहारां इज्जंतो आसेवणभिक्खं मग्गतो अप्पणो चैव ततो ठाणाओ णियत्तति, अहवा - छिण्णमूत्तावल्लिपगासाणि अंभूणि विणिमुयमाणे आयरियाणं पादेसु पडिओ भणाति - मा मं सरणमुवगयं पडिच्चयह, मम पि सीदंतं चोएह ॥६३४६॥ एसा ताव आवस्सयं पडुच्च, परिकखा गता ।

इदाणि सज्जाय-पडिलेहण-भुंजण-भासदारा पडुच्च परिकखा भणति -

पडिलेहणसज्जाए, एमेव य हीण अहिय विवरीए ।

दोसेहि वा वि भुंजति, गारत्थियदडूरा भासा ॥६३४७॥

पडिलेहणकालतो हीणं अहिय वा करेति अहवा - खोडगादीहं हीणं अहियं वा करेति, विवरीयं गाम मुहपोत्तियादी पडिलेहेति, अहवा - एए रय्हणं ति पच्छिमं पडिलेहेति, अवरण्हे पढमं अप्पणो - पडिलेहेत्ता सेहगिलाणपरिणि पच्छा आयरियस्स एव वा विवरीयं । सज्जाए वि हीणं - अणागताए कालवेसाए कालस्स पडिक्कमति, अहियं अतिच्छिन्नाए कालवेसाए कालस्स पडिक्कमति, बंदणातिकिरियं हीणातिरित्तं करेइ, विवरीयं पोसिपाढं उग्गाडकालियपोसिओ पग्गिट्टेति, वा विवरीयं करेइ, "सत्तविह-आलोवगविहोते ण भुंजति, कायसिगालक्कतिपादिदोमेहि वा भुंजति, सुरसराविदोतेहि वा भुंजति, सावज्जादि भासा वा भासति, एतेसु चोदणा तहेव भाणियव्वं जहा आवस्सए भणता ॥६३४७॥

सेसाणि तिण्णि दाराणि एगमाहाए वक्खानेति -

थंडिल्लसमागारी, हावेति अतरंतगं न पडिजग्गे ।

अभणिओ भिक्ख ण हिंडइ, अणेमणादी व पेल्लेति ॥६३४८॥

गा० ६३४४ । २ गा० आलोकादिविधिना सूत्रोक्तेन न भुंक्ते ।

ચંદિલ્લે પાદપમજ્જના ઇગ્ગલગહ્ણા દિસાલોગાદિસામાયારિ પરિહાવેતિ, ધિલાણં ણ પહિજ્જમાહ, ધિલાણસસ વા સેલમત્તાદિ વેયાવચ્છં ણ કરેતિ, ધિવચ્છં ણ હિહહ, દરહિહતો વા સળિયટ્ટહ, કોટસેણ વા સળિયટ્ટહ, ધિણેસણાણ વા યેણહિતિ ॥૬૩૪૮॥

તસ્સ પુણ ઇમાઓ ઠાણાઓ આગમો હોજ્જ -

જયમાણપરિહવેતે, આગમણં તસ્સ દોહિ ઠાણેહિં ।

પંજરમગ્ગઅભિમુદ્દે, આવાસયમાદિ આયરિણં ॥૬૩૪૯॥

સો જયમાણસાધુણ મૂલાઓ આગમો હોજ્જ, પરિહવેતાણ વા મૂલાઓ આગમો હોજ્જ, પરિહવિતા નામ વાસત્યાદી, તથા જો જયમાણગાળં મૂલાતો આગતો સો ગાળદંસણદ્વાર વા આગતો, પંજરમગ્ગો વા આગતો । જો પુણ પરિહવેતાણ મૂલાતો આગતો સો ચરિત્તદ્વાર ઉજ્જમિતકામો । અહવા - ધણુજ્જમિતકામો વિગાળદંસણ-દ્વાર । અહવા - જો જયમાણેહિતો આગમો સો પંજરમગ્ગો, જો પુણ પરિહવેતેહિતો આગતો સો પંજરાભિમુદ્દો । એતેસુ દોસુ વિ આગણસુ આયરિણં આવાસયાદિપરિચ્છા કાયવ્વા ॥૬૩૪૯॥

આહ પંજર ઇતિ વોર્ણઃ ? અતઃ ઉચ્ચતે -

પણગાદિ સંગહો હોતિ પંજરો જાય સારણડ્ડણોણે ।

પચ્છિત્તચમદ્દણાદી, ધિવારણા સડણિદિટ્ઠંતો ॥૬૩૫૦॥

આયરિઓ ઉવજ્જાતો પવત્તી થેરો ગણાવચ્છેલિતો એતેહિ પંચહિ પરિમાહિતો ગચ્છો પંજરો મળ્લતિ, આદિગહ્ણાઓ ધિવચ્છુ-વસહ-સુહુ-સુહુગા ય થેવપતિ । અહવા - જં આયરિયાદી પરોપ્પરં ચોદંતિ મિત્તં મધુરં સોવાલંભં વા સરપ્પસાદીહિં વા ચમદેસા પચ્છિત્તદાણેણ ય અસામાયારીમો ધિયત્તિ ત્તિ એસો વા પંજરો । પંજરમગ્ગો પુણ એયં ચેવ અસહંતો ગચ્છમ્મો યોતિ । “ગચ્છમ્મિ કેઈ પુરિસા કારણ ગાહા કંઠા ।

“જહ સડણ પંજરે દુક્કલં અચ્છતિ તહા” -

એત્થ સડણદિટ્ઠંતો કજ્જતિ - જહા પંજરત્થસ્સ સડણસ્સ સલાગાદીહં સચ્છંદગમણ ધિવારિજ્જતિ એવં આયરિયાદિ પુરિસગચ્છપંજરે સારણસલાગાદિયં સામાયારિ ઉમ્મમ્મગમણં ધિવારિજ્જતિ । એત્થ જે સંધિગ્ગાણં મૂલાઓ ગાળદંસણદ્વાર આગતા, જે ય પરિહવેતાણ મૂલાઓ આગયા ચરિત્તદ્વાર એતે સંગેભિયવ્વા । જે પુણ પંજરમગ્ગા ગાળદંસણદ્વાર આગતા, જે પરિહવેતાણ મૂલાઓ ગાળદંસણદ્વાર આગયા, એતે ન સંધિગ્ગિયવ્વા ॥૬૩૫૦॥

એત્થ જે સંધિગ્ગિયવ્વા તે યોગો વા હોજ્જ, અણેગા વા ।

જતો મળ્લતિ -

તે પુણ એગમણેગાણેગાળં સારણં જહા કપ્પે ।

ઉવસંપદ આઉટ્ટે, અવિઉટ્ટે અણ્ણહિં ગચ્છે ॥૬૩૫૧॥

તત્થ જે અણેગા તેવિ સોદંતાળં કારણા જહા કપ્પે મળ્લિતા “ઉવસેસો સારણા ચેવ તતિતા પડિસારણા” ઇત્યાદિ, “પટ્ટિજ્જતં વત્થં અતિરુચ્છવ્વકુંકુમમિલી જતા” ઇત્યાદિ । જો પુણ યોગો સો અસામાયારિ કરેતો ચોદિતો જહ આઉટ્ટિતો તસ્સ ઉવસંપદા મળ્લતિ, “અવિઉટ્ટે” ત્તિ - જતિ ણ આ ઉટ્ટિતો, મળ્લતિ “અણ્ણહિં ગચ્છે” તિ ॥૬૩૫૧॥ એસા આગયાળં પરિચ્છા ગતા ।

૧ ‘જે પુણ’ ઇતિ વૂર્ણો ।

अहवा - एयं पच्छदं - अण्णा भण्णति - तेण वि आगंतुणा मच्छो परिच्छियव्वो आवस्सगमा-
दीहि पुव्वभाणयदारोहि । गच्छिल्लमाणं जति किंचि आवस्सगमारोहि सीदंतं पस्सइ तो आयरियात्तीणं वहेति,
जति सो कहिए सम्मं आउट्टति ति तं साधुं षोदेति पच्छित्तं च से देति तो तस्य उवसंपदा । अह कहिते सो
आयरिओ तुसिणीओ अच्छति भणति वा - किं तुज्झ, णो सम्मं आउट्टति ? तो अविउट्टे आयरिए अण्णाहि मच्छति
अन्वओपसंअतेत्यर्थः, ॥६३५१॥

ततियभंगिल्ले इमा पडिच्छणविही -

णिग्गमणे परिसुद्धो, आगमणे असुद्धे देति पच्छित्तं ।

णिग्गमण अपरिसुद्धे, इमा उ जयणा तहि होति ॥६३५२॥

ततियभंगिल्लस्स वडयादिसु पडिबडस्स सुद्धस्स जं आवणो तं पच्छित्तं दाउं पडिच्छति । जति
पूण पढमवित्तज्जेण वा भण्णे अहिकरणादीहि एगे अपरिणयादीहि वा आगता, जे य पंजरभग्गा, जे परिहा-
वेंतेसु णाणदंसणट्ठाते आगता ते ण संगिण्हियव्वा, न य कुडं पडिसेहिज्जति ॥६३५२॥

तेसि इमा पडिसेहणजयणा -

णत्थि संकियसंघाडमंडली भिक्खु बाहिराणयणे ।

पच्छित्त विओसग्गे, णिग्गयमुत्तस्स छण्णेणं ॥६३५३॥

‘णत्थि संकिय’ अस्य व्याख्या -

णत्थेयं मे जमिच्छह, सुत्तं मए आम संकियं तं तु ।

न य संकियं तु दिज्जइ, णिस्संकसुते गवेसाहि ॥६३५४॥

जं एतं सुत्तत्थं तुज्जे इच्छह एयं मम णत्थि । अह सो भणति - अण्णसमीवे सुत्तं मए जहा तुज्जे
एयं अत्थि, अहवा भणति - मए चेव तुमं बायणं देता सुता । आयरिओ भणति - आमं ति सत्त्वं,
इदाणि तं मे संकितं जातं, ण य दाणजोग्गे, ण य संकियसुत्तत्थं दिज्जति, आगमे पडिसिद्धं, पच्छ अण्णतो
जत्थ णिस्संकं सुत्तं ॥६३५४॥

तं संघाडए ति जो संघाडयस्स उव्वयाति सो भण्णति -

एक्कल्लेण ण लब्भा, वीयारादी वि जयण सच्छंदे ।

भोयणसुत्ते मंडलि, अपदंते धी णिओअंति ॥६३५५॥

अहं एरिसा सामायारी ओ संघाडएणं विणा लब्भति सण्णभूमिमादि णिगंतं, एसा सच्छंदेण
जयणा । “मंडलि” ति जो सो अणुबद्धवेरतणेण आगलो सो इमाए जयणाए पडिसेहिज्जति । जो य
सुत्तमंडलोए उव्वियाति, “भोयण” पच्छदं, अहं सामायारी अवस्सं मंडलीते समुद्धिसियव्वं, सुत्तत्थमंडलीसु
जति ण पडति ण सुणेति वा तहावि मंडलीए उव्विहो अच्छति, ण सच्छंदेण अच्छित्तं लब्भति ॥६३५५॥

अलसं भणति बाहि, जति हिंसि अम्ह एत्थ बालाती ।

पच्छित्तं हाडहडं, अवि उस्सगं तहा विगती ॥६३५६॥

“आहिराणयणे” ति जो बालस्त्रियसत्तणेण आगतो सो इमाए पडिसेहिज्जति, बलसितो भणति — अहं एत्थ सल्ले बाल-गिलाण-बुद्धावि हिंइति, जति दिणे दिणे भिक्खायरियं करेसि तो अत्थ पच्छित्तंति । जो निषम्मो “अइउग्गदंडो आयरिमोति” एतेहि कारणहि आगतो सो इमाए जयणाए पडिसेहिज्जति सो अहं सामायारी जइ दुण्णमज्जियादीणि करेति तो वि अहं हाइहंडं पच्छित्तं दिज्जति, हाइहंडं णाम तत्कालं चेव दिज्जति ण कालहरणं कज्जति । “अविउत्सग्गो” ति जो सो अविगती णाणुजाणति ति आग्गो, सो भणति-अहं सामायारी जोगवाहिणा विगतिकाउत्तग्गं अकरेतेण पडिपच्चं । “तह” ति —

किं चान्यत् — अहं सामायारी जोगव हिणाऽजोगवाहिणा वा विगती न गृहीतव्या इत्यर्थः । अहवा — “तह” ति जं सो कारणं दीवेति तस्स तद्देव प्रतिलोमं उवण्णसिज्जति ॥६३५६॥

एत्थ चोदग आह —

तत्थ भवे मायमोसो, एवं तु भवे अणज्जवजुतस्स ।

वुत्तं च उज्जुभूते, सोही तेलोक्कदंसीहिं ॥६३५७॥

तत्रेति या एषा णिग्गमे असुद्धे उवाएणं पडिसेहणा भणिता । अत्र कस्यचिन्मतिः स्यात् — एवं पडिसेहंतस्स माया भवति मुसावायं च भासति, जेण विज्जमाणं सुत्तं णत्थि ति भणति । संकियं वा, एवं संघाडगादिमु अणज्जवं अरिजुत्तं करेमाणो मायामुसावाएण यं जुत्तो भवति अणज्जवयणजुत्तो वा, उवत्तं च — “सोही उज्जुभूतस्स य” कारण — सिक्खेकोऽयं, तं च अणज्जवं अकरेमणस्स संज्जनसोही ण भवति ।

आचार्याह — ण मायामुसावायो य, जतो कारणे मायामुसावातो य अणुणायो । इमं च कारणं-णिग्गमणं से असुद्धं, तेण उवायपडिसेहो कम्मो ॥६३५८॥

किं च —

एसा उ अग्गीयत्थे, जयणा गीते वि जुज्जती जं तु ।

विदेसकरं इहरा, मच्छरिवादो य फुडरुक्खे ॥६३५८॥

एवं अग्गीयत्था पडिसेधिज्जति, गीयत्था पुण फुडं चेव भणति, ते सामायारी जाणंत किह् अणत्थियं दोसं वा कहंति, तेषु वि यं जं मायामुसावादकारणं जुज्जति तं च कायच्चं । अग्गीयत्थाण पुण “इहर” ति फुडं भणत्ताणं विदेसकरं भवति, चित्ति य, एते मच्छरभावेण ण देति सुत्तत्थे । सपक्खजणे य न एवं प्रदानेण मच्छरभावो भवति । सम्भूयदोसुच्चरणं फुडं, णेहवज्जियं रुक्खं, अहवा — फुडमेव रुक्खं तं च अधिकरणदि रागादिणा वा दोसेण आगतो ति ण पडिच्छामो, एत्थ मच्छरभाव अयसो संपज्जति ॥६३५९॥

एतेसि पडिच्छाण इमो अववातो —

णिग्गमसुद्धमुवाए ण वारितं मेण्हेती समाउट्ठं ।

अहिकरण पडिणिअणुबद्धे, एवाग्गि जठं ण संगिण्हे ॥६३५९॥

अत्र प्रकारलोपो दृष्टव्यः, एवं णिग्गमो असुद्धो जस्स सो उवाएण जयणाए वारिमो ण पडिच्छत्त इत्यर्थः । अहवा — दोसा जहा वारणाग्गो ण उत्पज्जति तथा उवाएण वारितो प्रतिषिद्ध इत्यर्थः । पडिसिद्धो जइ सो भणइ “मिच्छामि सुक्कडं, ण पुणो एव काहं, जं वा भणइ तं करेमि, सुक्को मे पावभावो दुग्गइवट्ठो इहलो ए वि गरहिता” एवं आउट्ठो मेणिहयव्वो । तत्थ वि इमो ण मेणिहयव्वो-जो अधिकरणं वाउमागतो, जो अ पडिणीग्गो ति भणतो, जो य अणुबद्धरोसो जेण आयरिमो एगादि भावेण जो ॥६३५९॥

१ गा० ६२५३ । २ गा० ६२५३ । ३ उत्त० अ० ३ गा० १२ ।

पडिणीए इमो अववादो -

पडिणीयम्मि वि भयणा, गिहम्मि आयरियमादिदुट्टम्मि ।

संजयपडिणीए पुण, ण होति तं खाम भयणा वा ॥६३६०॥

इमा भयणा, कोति गीयत्थो आयरियस्स पटुट्ठो, आदिगहणेण उवज्ज्जय-पत्रत्ति-वेर-गणावच्छेदग-भिवसूण, सो उवसामिज्जते वि णोवसमति, तस्स भएण आगतो स मिण्हियव्वो । जइ पुण संजतो मे पटुट्ठो पडिणीय त्ति भणेज्जा तो ण होइ उवसंपदा, ण पडिच्छिज्जति त्ति वुत्तं भवति । अह्वा सो भणति - गच्छ, तं खामेवं आगच्छ । जइ वुत्तो गतुं तं ण खामेति तो ण पडिच्छिज्जति, गयस्स वा सो ण खमति तो पच्छागतो पडिच्छिज्जति । अह्वा सो भणेज्ज - मए आगच्छमाणेण खामितो ण खमति तो पडिच्छियव्वो जेव, एसा भयणा ॥६३६०॥

इदंणि जे अविमुट्ठणिग्गमा - उवाएण वारितः वि ण गच्छति, जे य विसुट्ठणिग्गमा पडिच्छिता वि सीदति, तसि वीसिणविहो इमो ।

“णिग्गयसुत्तस्स छण्णेण” ति वयणा, जया भिवसादिगतो होति तदा छट्ठेता गच्छति । सुत्तस्स वि आयरिया दिवसतो सोज्जं पव्वइए वि रातो पढमपोरिसीए संवेत्ता तस्स पुण अक्खेवणा कहा कहिज्जति ताव जाव णिहावसंगतो ज हे पासुत्तो ताहे संजता उट्ठावेत्ता तं सुत्तं छट्ठेता वच्चति । छण्णेण ति अप्पसा-गारियं मतं मतेति, नो अपपरिणयाणं तप्पक्खिमायं । वच्चतो ण य कहेंति जहा णस्सियव्वं, मा रहस्स भेदं काहिति । जति सो चेव पच्छा समाउट्ठो आगतो जो य सुट्ठणिग्गमो य एते दंसआदयाणं ति एगट्ठा आगतो पडिच्छियव्वो ।

तत्थ दंसण-णाणेषु पुव्वद्वगहितो इमो विधी -

वत्तणा संघणा चेव, गहणं सुत्तत्थ तदुभए ।

वेयावच्चे खमणे, काले आयकहादि य ॥६३६१॥

एते वत्तणादिपदा सगच्छे असतीए वक्खेवण वा णत्थि परज्ज्जे पुण जत्थ वत्तणादिया णियमा अत्थि तत्थ उवसंपदा, पुव्वगहियस्स पुणो पुणो अन्नभस्सणा वत्तणा, पुव्वगहियविसरियस्स मुक्कसारणा संघणा, अपुव्वस्स गहणं, एते तिणि विगप्पा सुत्ते, अत्थे वि तिणि उभए वि तिणि, एए णव विगप्पा । उत्तरचरणोवसंपदट्ठा उवसंजतो वेयावच्चकरणसमकरणट्ठया वा उपसंपज्जति, ते पुण वेयावच्चखमणे कालतो आयकहाते त्ति जावजीवं करेइ, आदिगहणाओ इतरिय वा कालं करेज्ज ॥६३६१॥

तत्थ दंसणणाणा इमे, इमा य तेसु विही -

दंसणणाणे सुत्तत्थ तदुभए वत्तणादि एककेके ।

उवसंपदा चरित्ते, वेयावच्चे य खमणे य ॥६३६२॥

दंसणविसोहया जे सुत्ता सत्थाणि वा तेसु सुत्तेसु वत्तणा संघणा गहणं, एवं अत्थे तिसं, तदुभए तिसं, “एककेके” ति - एव दंसणे णवविगप्पा, आयारादि ए णाणे एवं चेव विगप्पा । चरित्तोवसंपदा इमा दुविहा - वेयावच्चट्ठता खमणट्ठा वा ॥६३६२॥

सुट्ठं पुण अपडिच्छंतस्स इमं पच्छितं -

सुट्ठपडिच्छणे लहुगा, अकरेंते सारणा अणापुच्छा ।

तीसु वि मासो लहुओ, वत्तणादीसु ठाणेषु ॥६३६३॥

जं गुरुसमाप्ते सुतत्त्वं तं मे गहितं गुरुहिं अणुणाग्रो, विहीए आपुच्छित्ता बइदादिमु अपडिबज्जं तो आयतो, परिच्छितो सुद्धो य, जे तं न पडिच्छति आयरिओ तस्स चउलहुं ।

जो विदू पण्णो वत्तणाणिमित्तं सो जति वत्तणं ण करेति तो से मासलहुं, एव संवणगहणेसु वि ।
आयरिओ वि जइ तं उपसंपण्णं दूरादिसु अच्छत्तं ण सारेति, ण चोदेति तस्स वि वत्तणादिसु ठाणेसु मासलहुं ।

अथे पुण अकरेत-प्रसारंताणं तिसु वि वत्तणादिसु ठाणेसु पत्तेयं मासगुरुं । उभए वि पच्छित्तं ।
जम्हा एते दोसा तम्हा गुरुणा सारेयन्वा - “अज्जो ! जट्ठं प्रागतो तं वत्तणादिकं न करेसि” ॥६३६३॥

“अणापुच्छ” त्ति अस्थ व्याख्या -

अणुणुणाऽणुणाते, देत पडिच्छत्तं भंगचउरो तु ।

भंगतिए मासलहु, दुद्धतोऽणुणाते सुद्धो उ ॥६३६४॥

अणुणाग्रो अणुणुणातेण सह वत्तणं करेति, एवं चउभंगो कायव्वो, एवं संवणगहणेसु वि चउभंगो, एथ आदिल्लेसु तिसु भंगेसु देते गेण्हंताणं सुत्ते मासलहुं । तवकालविसेसितं अथे मासगुरुं । चउत्तयभंगो पुण दुद्धतोऽणुणातत्तणग्रो सुद्धो ॥६३६४॥ णाणे त्ति गयं ।

इदाणि दंसणं -

एमेव दंसणे वी, ववणमादी पदा उ जइ णाणे ।

सगणामंतण-खमण, अणिच्छमाणं न उ णिओए ॥६३६५॥ पुब्बज्जं कंठं

इदाणि चरित्तोवसंपदा सा दुविधा - वेयावच्चे खमणे य ।

तत्थ वेयावच्चोवसंपदाए इमा कारावणविही -

तुल्लेसु जो सलद्धी, अण्णस्स व वारएण इच्छंते !

तुल्लेसु य आवकही, तस्साणुमते व इत्तरिए ॥६३६६॥

आयरियाणं एवको गच्छे वेयावच्चकरो, भवरो अण्णगमातो पच्छा आयतो भणति - अहं मे वेयावच्चं करेमि, तत्थ कतरो कारविज्जति ?, “तुल्लेसु” तत्थ जति दो वि तुल्ला कालतो वि इत्तरिया तत्थेयो सलद्धी सो कारविज्जति, अहवा - दो वि भावकही तत्थ वि जो सलद्धी सो कारविज्जति । अह दो वि इत्तरिया दो वि सलद्धिया, एथ आगंतुगो उवज्झायदीण अण्णस्स वेयावच्चं कारविज्जति, अणियं च - “उवज्झायवेयावच्चं करमाणे समणे णिगंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।” अहवा - जति वत्थव्वो वेयावच्चकरो इच्छति तो वारोवारेण कारविज्जति, आगंतुगो वा कालं पडिक्खा-विज्जति जाव पुब्बिल्लस्स इत्तरकालो सम्पपइ, आवकहीसु वि दोसु सलद्धिएसु एवं वारयं मोचुं । अहवा - एवको इत्तरिओ एवको भावकही “तुल्लेसु” त्ति लद्धीए एथ आवकही कारविज्जति, इत्तरिओ अण्णस्स सणिउज्जति, अहवा - सो वत्थव्वो भावकही भणति तुमं ताव वीसमाहि एवं दुत्तो जति इच्छति तो तस्स अण्णमते आगंतु इत्तरिओ कारविज्जइ, तम्मि अणिच्छे णो कारविज्जति, सो समत्ते गच्छिहिति, पच्छा ह्यरो ण काहिति, तम्भो आयरिओ उभयभट्टो भविस्सइ । अह इत्तरिओ भावकहितो य य दो वि अलद्धिसंपणा तत्थ आवकहिणा कारेयव्वं, ह्यरो अण्णस्स सणिउज्जति विसज्जिज्जइ वा । अह

इत्तरिभो सलद्धी, भावकही भणति - “वीसमाहि ता तुमं एस इत्तरिभो सलद्धी करेतु, पच्छा तुमं वेव काहिसि ।” भणिच्छे एका वेव काहिति, इत्तरिभो भण्यस्स वा कारविज्जति, दो वि वा संबुता करेति । अह इत्तरिभो सलद्धी भावकही सलद्धी एत्य भावकहिणा कारवेयव्वं, इत्तरिभो भण्यस्स कारविज्जइ, भणिच्छे पडिसेहिज्जइ ॥६३६६॥

अह वत्थव्ववेयावच्चकरणे अणुणाभो कारवेइ, तस्स अणापुच्छाए अणं वेयावच्चकरं ठवेति तो इमे दोसा -

अणुण्णाते लहुगा, अचियत्तमसाह जोग्गदाणादी ।

णिज्जर महती हु भवे, तवस्सिमादीण उ करेते ॥६३६७॥

वत्थव्व-भावकहि-वेयावच्चकरस्स अणापुच्छा आगंतु इत्तरिया वेयावच्चकर ठावेति, अणुण्णातो वा वेयावच्चकरं ठवेइ ती चउलहुगा ।

अण्णे भणति - अणापुच्छाए वेयावच्चकरे ठविए मासलहुं, अणुण्णातो वेयावच्चकारवणे चउलहुं । वत्थव्ववेयावच्चकरस्स वा अचियत्तं, अचियत्तेण वा असंखटं करेज्जा । “मसाह” ति - ण कहेति सो पुव्ववेयावच्चकरो उड्डकटो जेसु कुलेसु आयरियादीणं पाउगं लभति ते ण कहेति, सल्लकुलाणि वा ण कहेज्ज, तम्हा सो इत्तरिभो भणति - खमगादितवस्सीणं तुमं करेहि, तेसं पि कज्जमाणे महंती णिज्जरा भवति ॥६३६७॥ वेयावच्चे ति गयं ।

इदाणि “खमण” ति -

तत्थिमं गाहापच्छदं “सगणामंतण” इत्यादि, जो अणमणाभो खमणदुयाभो उवसंपज्जति सो दुविहो - अविगिटो विगिटो । अट्टमादि विगिटो, दोसु वि उवसंपज्जंतेसु सगणो आयरिएण आमंतेयव्वो अपुच्छि-यव्वो ति युत्तं भवति - अज्जो ! एस खमणकरणदुया आगतो कि पडिच्छिज्जति उभ पडिसिज्जउ ति, तेसि अणुमए पडिच्छिज्जइ भणिच्छेसु पडिसिज्जइ । ण वा ते अणिच्छमाणे तस्स वेयावच्चे बल्ल णिभोएति ॥६३६७॥

जो पडिच्छिभो सो पुच्छियव्वो - तुमं कि अविगिटुं करेसि विगिटुं वा ? तेण एगत्तरे कहिते पुणो पुच्छिज्जइ - तुमं अविगिटुं करेत्ता पारणदिणे केरिसो भवसि ? सो भणइ - गिलाणोवमो, ण य सज्जाय पडिलेहणादियाण जोगाण समत्थो भवामि ।

तस्सिभो उवदेसो -

अविकिट्टकिलामंतं, भणति मा खमं करेहि सज्जायं ।

सक्का किलामिउं जे, विकिट्ठेणं तहिं वितरे ॥६३६८॥

अविगिटुतवकरणकिलामंतं भणति - (मा) तुमं खमणं करेहि, ण वट्टति तव खमणं काजं, सज्जायकरणे वेयावच्चे वा उज्जुत्तो भवाहि, सज्जायमणिज्जते विसउजेपव्वो । अह गिलाणोवमो ण भवति ततो पडिच्छियव्वो ।

जो पुण विकिट्ठलमभो सो जइ ण किलिस्सति - सज्जायपडिलेहणादि जोमे य सव्वे समयेव अहीणमतितरिते करेति - सो पडिच्छियव्वो ।

जो पुण विगिट्ठेणं किलिस्सति तत्थिमं गाहापच्छदं - “सक्का किलामिउं” सक्का इति युत्तं, जइ वि विगिटुतवकरणे गिलाणोवमो भवति तहावि तत्थ वितरंति ति तनकरणे अणुजाणंतीत्यर्थः ॥६३६८॥

विगिद्धतवकरणे जो गिलाणोवमो भवति तत्थिमा सामायारी -

अण्णपडिच्छणे लहुगा, गुरुग गिलाणोवमे अडंते य ।

पडिलेहण संथारग, पाणग तह मत्तगतिगम्मि ॥६३६६॥

अस्य विभाषा -

दोण्णेकतरे खमणे, अण्णपडिच्छंतस्संथरे आणा ।

अप्पत्तिय परितावण, सुत्ते हाणअण्णहिं वतिमो ॥६३७०॥

“क्षेण्” ति - तम्मि अविगिद्धविगिद्धाणं अण्णतरो खममो होज्ज, अह्वा - विगिद्धो अगिलाणोवमो होज्ज । एतेसि खमगाणं अण्णयरे खमगे गच्छे विज्जमाणे जति आयरिमो अण्णं खमगं गच्छे अणापुच्छाए पडिच्छति तो चउसहुं ।

दोण् वि खममाण जुगवं पारणदिणे पज्जत्तपारणमस्स असंथरणं हवेज्ज ।

हुगादिसमगवेयावच्चकरणे वाक्काण वेलातिक्कमे वेयावच्चकरणे असंथरणं हवेज्ज ।

असंथरता य जं एसणादि पेलेज्ज तण्णिप्पणं पावति, आणादिणो य दोसा । असंथरे य अकज्जमाणे व परितावणादि दुक्कसं हवेज्जा, सिस्सपडिच्छणा वि चित्तेज्जा - इह अण्णेणखमगवेयावच्चकरणेणं अण्णं सुत्तत्थपरिहाणी, अतो अण्णं गणं “वद्दमो” ति - गच्छेज्ज, ॥६३७०॥

गणअणापुच्छाए खमगे पडिच्छित्ते गणे य अकरेमाणे आयरियस्स य इमं पच्छित्तं दोसा य ।

“गुरुग गिलाणोवमे अडंते य” अस्य व्याख्या -

गेलण्णतुल्ल गुरुगा, अडंते परितावणादि सयं करणे ।

णेसण-गहणागहणे, दुगद्ध हिंडंत मुच्छा य ॥६३७१॥

तेसु गच्छित्तलेसु वेयावच्चं अकरेतेसु जइ खमगो गिलाणोवमो जाओ ता आयरियस्स चउगुरुगा, “अहते” “सयं” “दुगद्ध” ति भत्तपाणट्ठा वा सयमेव हिंडंतो खुहापिपासादि सीउण्णे वा पडिलेहणा दिकिरियं वा सयमेव करंतो परिस्समेण जं अणागाद्धादि परियाविज्जति, मुच्छावि वा पावति, तत्थ चउसहुगादि जाव चरिम पावति । परियाविज्जंतो अणेसणिज्जं गेण्हति, एत्थ वि गुरुस्स तण्णिप्पणं, अह ण गेण्हति तो अण्णं अडंतस्स परियावणादि णिप्पणं ॥६३७१॥

सीसो पुच्छति - कि तस्स चउव्विहाहारविसयस्स कायव्वं ।

आचार्यहि - “पडिलेहण” पच्छदं, उवगरणं से पडिलेहिषव्वं, संथारमो सो कायव्वो, पाणगं से आणेउ दिज्जति, पारणदिणे भत्तं पि से आणेउ दिज्जति । उच्चारपासवणखेलमत्तमो य एते तिण्णि ढोइज्जति परिद्विज्जति य, अण्णा एवमादि दोसा गणिणो तण्हा गच्छं आपुच्छिता समणुष्णाते खमगं पडिच्छति ।

अह णत्थि गच्छे खममो तो पडिच्छियव्वो नेव, पडिच्छियस्स य सव्वं सव्वपयत्तेण कायव्वं णिज्जरट्ठा । तं परिकखासुद्धं जा तिण्णि दिवसे किमागतो ति अणापुच्छिता अणालोवेत्ता

१ गा० ६३६६ । २ गा० ६३६६ ।

वा संवसावेति तो इमं पच्छित्तं साववादं भण्णइ -

पढमदिणाणापुच्छे, लहुगो गुरुगा य हुंति वितियम्मि ।

ततियम्मि होंति लहुगा, तिण्हं तु वतिकमे गुरुगा ॥६३७२॥

पढमदिणे मासलहुं ति, वितिए मासगुरुं, ततिए चउलहुं ति, परतो चउत्तादिदिण्णोसु चउगुरुगा ॥६३७२॥

अववातो - अतो कज्जे तिणिण दिणा बहुतरं च कालं तं संवसावेता वि अपच्छित्ती ।

जतो भण्णति -

कज्जे भत्तपरिण्णा, गिलाण राया य धम्मकह वादी ।

छम्मासा उक्कोसा, तेसिं तु वतिकमे गुरुगा ॥६३७३॥

कुल गण संघकज्जेहिं वावडो आयरितो भत्तपञ्चखातो वा साधु तस्स लोगो एति, तत्थ आयरिओ धम्मकहकहणेण वावडो गिलाणराया वावडो, राया वा धम्मट्ठो एइ, तस्स धम्मो कहेयव्वो, वादी वा गिणिण्हियव्वो, एवमादिकारणेहिं वावडो आयरिओ होज्ज, एवं जाव छम्मासा ण पुच्छेज्ज, आलोयणं वा ण पडिच्छेज्ज, ॥६३७३॥

एवमादिकज्जवावडो वा इमं जयणं करेज्ज -

अण्णेण पडिच्छावे, तस्सऽमतिं सयं पडिच्छए रत्तिं ।

उत्तरवीमंसाए, खिण्णो वा गिसिं पि ण पविसे ॥६३७४॥

जइ अत्थि अण्णो गीयत्थो आलोयणारिहो सो संदिस्सिज्जति-तुमं पुच्छिज्जसिं आलोयणं पडिच्छाहि । अहं णत्थि गीयत्थो ताहे सयमेव रत्तिं आलोयणा पडिच्छयव्वा । अहं परप्पवादिगिण्हिण्हट्ठा जहा सिरिगुत्तस्स छलुगस्स पराजयट्ठा उत्तरवीमंसं करेतस्स रामो वि परिच्छणा णत्थि, दिवा परिस्समकिण्णो वा रातो सुवत्ति एवं रातो वि ण पडिच्छति जाव उक्कोसं छम्मासा । जति य छम्मासे पुण्णे ण पुच्छति आलोयणं वा ण पडिच्छति तो चउगुरुगा भवति ।

अण्णे भण्णति - छण्हं परतो पढमे दिणे मासलहुं, वितिए मासगुरुं, ततिए चउलहुं, परतो चउगुरु ति ॥६३७४॥

अथवा एत्थ वि अववाताववातो भण्णति -

दोही तिहिं वा दिणेहिं, जति छिअति तो ण होति पच्छित्तं ।

तेण परमणुणवणा, कुलादि रण्णो व दीवन्ति ॥६३७५॥

जति छण्हं मासार्णं परतो गिरसं दोहिं तीहिं वा दिणेहिं कज्जसमत्ती भवति तो तेसु वि पच्छित्तं न भवति, अहं तेसु वि कज्जसमत्ती न भवति ताहे छम्मासासमत्तीए चेव कुलादिया अणुणविज्जेति रण्णो वा दीविज्जति ति "अहं कल्ले इमेण कज्जेण अक्खणितो गो आममिसं ति, विदितं भवतु तुज्जं, परप्पवाइणो वा" । जइ एवं न कहेति तो चउगुरुगा ॥६३७५॥

सोवि सुद्धो आलोयगो विवभंतो कहं आलोयणं करेति ? उच्यते—

आलोयण तह चेव तु, मूलुत्तर णवरि विगडिते इमं तु ।

इत्थं सारण चोयण, निवेयणं ते वि एमेव ॥६३७६॥

“तह चेव” ति जहा संभोइयाणं विहारालोयणाए भणियं तहा भाणियव्वं । “मूलुत्तरे” ति — पुव्वं मूलगुणातिवारं, णवरं-इमो विसेसो, “विगडिते” ति आलोए एगतो िता विभिण्णे वा साहुणो वदित्ता भणति — आलोयणा मे दिण्णा, इच्छामि सारणं वारणं चोयणं च मे काउं । तेहि वि पडिभाणियव्वं-नुमं पि अज्जो ! अहं सारेज्जसि चोएज्जसि य ॥६३७६॥ उवसंपदालोयणा गया ।

इदार्णि अवराहालोयणा यत्र प्रकृतं —

एमेव य अवराहे, किं ते ण कया तहिं चिय विसोही ।

अहिगरणादि कहयती, गीतत्थो वा तहिं णत्थि ॥६३७७॥

“एमेव” ति जहा विहारउवसंपदालोयणामु विही भणितो तहेव इमं पि जाव पुटो वा भणति — अहं अवराहालोयगो आगतो ।

तहै आयरिएहिं भाणियव्वं — किं ते ण कया तेहिं चिय विसोची ? ततो कहेति-प्रधिकरणं मे कयं तत्थ, आदिगहणेणं विगति संघाडगादी कथेति । अहवा भणति — तत्थ गीतत्थो णत्थि, ॥६३७७॥

एत्थ अहिकरणादिअविमुद्धकरणेसु आयरिएण भाणियव्वो —

ण वि य इहं परियरगा, खुल खेतं उगमवि य पच्छित्तं ।

संकितामादी व पदे, जहकमं ते तह विभासे ॥६३७८॥

पडियरगा नाम अवराहावणस्स पच्छित्ते दिण्णे गिलायमाणस्स णत्थि वेयावच्चगरा । खुलत्तेणं णाम मंदभिवस्सं जत्थ वा घयादि उवगहदव्वं न लभति, एत्थ था न धम्मसङ्गो लोगो । अहवा भणाइ — अहं उगं पच्छित्तं देसो ।

“णत्थि संकिय” — (गाथा ६३५३)

“संकियमादी य पए” ति ।

हेट्ठा व्याख्याता एवं व्याख्येया इत्यर्थः । इह संकियस्स आत्वं ण याणाभि, किह पच्छित्तं दिज्जति ? विस्सरियं वा पच्छित्तं, एवं संकियादिपदा जहक्कमेण पच्छित्ताभिलावेण भाणियव्वा । अहवा — ते संकितादि-पदे “जहक्कमं” ति — जहासंभवं ते विभासिज्जति ॥६३७८॥

एवं असुद्धं पडिसेहेत्ता सुद्धं पडिच्छति । तस्स विही जं तं हेट्ठा भणियं — “अवराहे दिवसतो पसत्थम्मि” तं इदार्णि भणति ।

अवराहालोयणा णियमा विभागेण दिवसतो वव्वादिसु देति, जतो भणति —

दव्वादि चतुरभिग्गह, पसत्थमपसत्थ ते दुहेक्कैक्का ।

अपसत्थे वज्जेउं, आलोयणमो पसत्थेसुं ॥६३७९॥

दव्वखेतकालभावं च अभिगिज्ज देति, एते य दव्वादिया पसत्था वा अपसत्था वा होज्जा, अपसत्थादीणि वज्जेता पसत्थेहिं आलोएयव्वं ॥६३७९॥

एत्थ पदमे अपसत्था -

भग्गवरे 'कुड्डे'सु य, रासीसु य जे दुमा य अमणुण्णा ।

तत्थ ण आलोएज्जा, तप्पडिपक्खे दिसा तिण्णि ॥६३८०॥

जत्थ खंभतुलाकुट्टादि किं चि पडितं तं भग्गघरं, कुट्टगहणातो वा भिण्णकुट्टसेतं, पाठांतरेण वा रुद्धरं ॥६३८०॥

एयं अप्सत्थत्वेत्तमगहणं, रासिदुमभगहणं अप्सत्थदव्वमगहणं । अस्य व्याख्या -

अमणुण्णधण्णरासी, अमणुण्णदुमा य होति दव्वस्मि ।

भग्गघर रुद्ध ऊसर-पवात दट्टादि खंचस्मि ॥६३८१॥

अमणुण्णधण्णा तिलमासकोट्टवादी । अमणुण्णदुमा एते -

णिप्पत्त कंटइल्ले, विज्जुहते खार कडुय दट्टे य ।

अयं तंब तउय कयवर, दव्वे धण्णा य अपसत्था ॥६३८२॥

स भावतो करीरपलासादिया वा अणो पत्तसाडकाने णिप्पत्ता, अग्घाडगवत्थुलमोक्खादिया खारखखा, गेहिणिकुड्ढगिवादिया कडुरुक्खा, अयादि लोहदव्वा, अणस्सत्थ रासी सव्वे वज्जणिज्जा, अंगारतुयभुमचीवरादी अग्गेगदव्वणिगरो कयवरो, मागतिलकोट्टवादिया अपसत्था धण्णा, एते दव्वयो भणित्ता

खेतत्रो भग्गघरादि रुद्धरं महादेवघरं दुग्गमादि घरा य, जत्थ वा भुमकुट्टं हिरणादिकुट्टो वा, ऊसरं ति ऊसरभूमी, विण्णटंका तटी प्रपातं, दवादिदट्टा वा भूमी, जत्थ एयं खेतत्रो अप्सत्थत्वं ॥६३८२॥

इमं कालतो -

पडिकुट्टेल्लगदिवसे, वज्जेज्जा अट्टमिं च नयमिं च ।

छट्ठिं चउत्थिं वारसिं च दोहं पि पक्खणां ॥६३८३॥ कंठ्या

भावतो इमं अप्सत्थं -

संभागतं रविगतं, विट्ठेरं सग्गहं विलंबिं च ।

राहुहतं गहभिण्णं, च वज्जए सत्त णक्खत्ते ॥६३८४॥

जम्म उदिते सूरौ उदेति तं संभागतं, जत्थ सूरौ ठितो तं रविगतं, जं सूरस्म पिट्ठतो अणंतरं तं विलंबी ।

अण्णे भणति - जं सूरस्म पिट्ठतो अगतो वा अणंतरं तं संभागतं । जं पुण पिट्ठतो सूरगततो तं ति तं (?) विलंबी । जं जत्थ गमणकम्मसमारभादिसु अणभिहितं तं विट्ठेरं विगतद्वारमित्यर्थः । जं क्रूरग्रहेण कालान्तं तं सग्गहं, जत्थ रविसमीप गहणं आसी तं राहुहतं, मज्जेग जस्स गहो गतो तं गहभिण्णं, एते सप्त वि णक्खत्ता चंदजोगजुत्ता आलोयणादिसु सध्वपयत्ते वज्जणिज्जा ॥६३८४॥

एतेसु इमं फलं -

संभागतस्मि कलहो, होति कुभत्तं विलंबिणक्खत्ते ।

विट्ठेरे परविजयो, आइच्चगते अणेव्वाणी ॥६३८५॥

१ रुद्धेसु इत्यपि पाठः । २ राहुगतं इत्यपि पाठः ।

जं सम्गहम्मि कीरइ, णक्खत्ते तत्थ गुग्गहो होति ।

राहुहतम्मि य मरणं, गहभिण्णे सोणिउग्गालो ॥६३८६॥

एयातो दोवि कंठातो । एते अप्पसत्थदब्बादिया । एतेसु णो आलोएज्जा ॥६३८६॥

तप्पडिपक्खे दब्बे, खेत्ते उच्छुवण चेइयधरे वा ।

गंभीर साणुणादी, पयाहिणावत्तउदए उ ॥६३८७॥

तप्पडिपक्खं ति - अप्पसत्थाण दब्बादियाण प्रतिपक्षाः पसत्था दब्बादिया, तेसु आलोएज्ज । तत्थ दब्बे सालिमादिनसत्त्वषण्णरासीसु, हिण्ण-सुवण-वणि-रयण-वितियर-विदुमरातिसमीवे वा, खेत्तो उच्छुकरण-समीवे सालिकरणे नेतिपधरे पत्तुप्फलोववेत्ते वा आरामे गंभीरे, जत्थ वा खेत्ते पडिसदो भवति तं साणुणातो अत्थ वा णदीए पदाहिणावत्तं उदणं बहति पठमसरे वा ॥६३८७॥

कालतो -

उत्तदिणसेसकाले, उद्धट्ठाणा गहा य भावम्मि ।

पुव्वदिस उत्तरा वा, चरंतिया जाव णवपुव्वी ॥६३८८॥

उत्तदिणः श्रुद्धीमादीते वज्जेता सेसा वित्तिवादी दिवसा पसत्था, तेसु वि व्यतिवातादि दोसवज्जितेसु पसत्थकरणमुहत्तेसु, भावतो उच्छट्ठाणगतेसु गहेसु - रविस्स *मेसो उच्चो, सोमस्स *वसभो, अंगारस्स *मगरो, बुहस्स *कण्णा, विहस्सतिस्स *कक्कड्धो, *सीणो सुक्कस्स, *तुलो सणिच्छरस्स । सव्वेति गहाण अप्पणो उच्छट्ठाणातो जं सत्तमं तं तीर्यं । अह्वा - भावतो पसत्थं बुद्धो सुक्को बहस्सती ससी य । एतेसि रासि-होरा-अक्कणअंसतेसु ॥ उदिएसु सोम्मण्हबलाइएसु य आलोएज्जा । सो पुण आलोएतो आलोयणारिहो वा तिण्हं दिसाणं अन्नयरीए अभिमुहो ठाति उत्तरा पुव्ववरंतिया य, सा इमा जाए दिसाए तित्तयकरो केवली मणपज्जवणाणो ओहिणाणो बोद्धसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा बुभे पहाणो आयरिओ जतो विहरति ततो हुत्तो पडिच्छति आलोएति वा ॥६३८८॥

आलोएतस्स इमा सामायारी -

णिसेज्जाऽसति पडिहारिय कितिकम्मं काउ पंजलुक्कुडओ ।

बहुपडिसेवऽरिसेसु य, अणुणवेउ' णिसज्जगतो ॥६३८९॥

अप्पणिसेज्जकप्पेहि अप्पयिभुत्तेहि पयिभुत्तेहि णिसेज्जं करेति, असति अप्पणिसेज्जाणं अण्णस्स संतिया पडिहारकप्पा वेत्तुं करेति । तत्थ जति आयरिओ पुव्वहुत्तो णिसीयति तो आलोयणो दाहिणओ, उत्तरा-हुत्तो णिसीयति तो इयरो वामतो पुव्वहुत्तो ठाति, चरंति य । दिसाभिमुहो ठावितो विहोए वारसावत्तं बंदणं दाउं कयंजली उस्सग्गउत्तकुडुयठिओ आलोएइ । जइ पुण तस्स बहुपडिसेवणत्ताओ चिरेण आलोयणा समप्पिहिइ, न सक्केइ तच्चिबं उक्कुडुओ ठाउं, अरिसावुपस्स अरिसाओ खुभेज्जा, तो गुहं अणुणवेत्ता णिसिज्जाए उक्कगहिय पादपुच्छे वा जहाह्णे ठाविओ आलोएति ॥६३८९॥

किं पुण तं आलोइज्जति ?, उच्यते - च उव्वहं इदं दब्बादी -

चेयणमचित्तदब्बे, जणवयमग्गे य होति खेत्तम्मि ।

णिसिदिण-सुमिक्ख-दुम्भिकखकाल-भावम्मि हिडितरे ॥६३९०॥

द्व्यतो अक्षितं सक्षितं मोक्षं वा अक्षयिणं किञ्चि पडिसेवियं होज्जा । खेतओ जणवते वा धद्धाने वा । कालतो दिया वा राओ वा सुभिवखे वा दुम्भिवखे वा । मावतो हट्ठेण वा गित्ताणेण वा, जयणाए अजयणाए वा, दप्पओ कप्पओ वा ॥६३९०॥

आलोयणाए इमे गुणा -

लहुताल्हादीजणयं, अप्पपरणियत्ति अज्जवं सोही ।

दुक्करकरणं विणओ, णिस्सल्लसं च सोहिगुणा ॥६३९१॥

जहा मारवाहो ओहरियभरोख्ख आलोइए उद्धरियसल्लो लहु भवति, अतिवारधम्मतवियम्भस चित्तस्स आलोयणाए णिस्सल्लो चित्तस्स प्रल्हादणं जतयति पल्हादित्ति बुल्लं भवति, आलोयणकरणओ सयं दोसेहि णियत्तत्ति तं पासित्ता अणो वि आलोयणाभिमुहा भवति, अतिवारपसंगतो वि णियत्तिमा भवति, जं रहे परिलेवितं परस्स आलोएतेण अज्जव त्ति अमायावित्तं कयं मयति, अतिवारपकमल्लिणस्स अप्पणो चरणस्स वा सोही कता भवति, दुक्करकरणं च ।

कहं ? उच्यते - ण दुक्करं जं पडिसेवितं, तं दुक्करं जं आलोइयति, अहूवा - जं पडिसेवितं तं जीवस्स मंमारमुद्दाणुकूलं न दुक्करं, तथो जं चित्तविविक्तिकरणं तं दुक्करकरणं त्ति अप्पतेण गुरुस्स विणओ कतो भवति, चरित्तविणओ वा एस कओ भवति, ससल्लो य अप्पा णिस्सल्लो कओ । आलोयण त्ति वा सेहिति वा एगट्ठु ॥६३९२॥

तेणं पुण आलोयतेण मायामयविप्पमुक्केण -

जह वालो जंपतो, कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणह ।

तं तह आलोएज्जा, मायामयविप्पमुक्को उ ॥६३९३॥ कंथा

जो आलोयणारिहो सो इमो दुविहो -

आगमपुण्यवहारी, आगमतो छव्विहो उ ववहारी ।

केवलि मणोहि चोइस, त्स णव पुव्वी य णायव्वा ॥६३९४॥

आगमववहारी पुण्यववहारी य. तत्थ जो सो आगमववहारी सो छव्विहो इमो - केवलनाणी ओहिणाणी सणपज्जवणाणी चोइसपुव्वी अभिण्णदमपुव्वी णवपुव्वी य । एते आगमववहारी पच्चक्खणाणिणो वेण जहा अइयारो कतो तं तहा अतिवारं जाणति ॥६३९५॥

तं च आगमववहारिस्स आलोएज्जमाणे जति आलोयणो पडिक्कवति -

पम्हुट्ठे पडिसारण, अप्पडिवज्जंतगं ण खलु सारे ।

जति पडिवज्जति मारे, दुविहोऽतिवारं वि पच्चक्खी ॥६३९६॥

"पम्हुट्ठे" ति - विस्सरिए तं पच्चक्खणाणी णाउं "पडिसारिज्जइ" ति -

ताहे भणति - अमुमं ते विस्सरितं तं आलोणहि ।

अह जाणइ - ण पडिवज्जति तो ण पडिसारेइ । दुविहो अइयारो मूलपुणाइयारो उत्तरपुणाइयारो य । एषं पच्चक्खणाणी सम्मं आउट्टस्स देति पच्छित्तं, अणाउट्टंतस्स ण देति ॥६३९७॥

एते पञ्चस्वववहारी बुता -
सेसा जे ते इमे सुयववहारी -

कप्प-पकप्पा तु सुते, आलोयावेति ते उ तिकखुत्तो ।

सरिसत्थेऽपलिउंची, विसरिस पडिक्कुंचितं जाणे ॥६३६५॥

“कप्पो” ति दसाकप्पववहारा, “पकप्पो” ति णिसीहं, तुशब्दान्महाकप्पमुत्तं महानिशीहं णिज्जुत्तीपेद्वियधरा य, एवमादि सत्थे सुयववहारिणो । ते य सुयववहारी एगवारालोइए पलिउचिते अपलिउंचिए वा विससं ण याणंति, तेण कारणेण “तिकखुत्तो” ति णियमा तिण्णि वारे आलोयावेति । एकं-वारा भणाति - “ण सुट्ठु मए अब्बचारिय,” “णिहावसंगमो” । ततियवाराए भणाति “अणुवउत्तेण किं पि अब्बचारियं, पुणो आलोएहि” । जति तिहि वाराहि सरिसं जेव आलोतियं तो णायव्वं अपलिउंची । ग्रह विसरिसं बुल्लुवतो य आलोएति तो पलिउंचियं जाणियव्वं ॥६३६५॥

तत्थ जो पलिउंची सो इमेण अस्सदिट्ठुतेण चोएयव्वो -

आसेण य दिट्ठतो, चउव्विहा तिण्णि दंडिण जहा ।

सुद्धस्स होति मासो, पलिउंचिते तं चिमं चउन्नं ॥६३६६॥

दन्वादिवचउव्विहपडिसेवणापलिउंची आसमसुयववहारादीहि भाणियव्वो ।

सुणेहि अज्जो ! उदाहरणं, जहा - एकस्स रण्णो आसो सब्बलक्खणजुत्तो धावण-पवण-समत्थो, तस्स आसस्स गुणेण अजेयो सो राया ! सामंतरादणो य सब्बे अज्जो आणवेति ।

ताहे सामंतरायाणो अप्पप्पणो सभासु भणंति - अत्थि कोइ एरिसो पुरिसो, जो तं हरित्ता आणेति ? सब्बेहि भणियं - सो पुरिसपंजरत्थो चिट्ठति, गच्छति वा, ण सककति हाउं । एगस्स रण्णो एगेण पुरिसेण भणियं - जइ सो मारेयव्वो तो मारेमि ति ।

ताहे रण्णा भणियं - “मा अहं तस्स वा भवतु, वावादेहि” ति । तयो तत्थ मतो सो ।

तेण य छणपदेसट्ठितेण पडिक्कल्लव धणुहकंडस्स अंते क्षुद्रकीकंटकं लाएत्ता विट्ठो आसो, तं इसिया कंडग आहणित्ता पडियं, क्षुद्रकीकंटकोवि आससरीरमणुपविट्ठो, सो पभूअजव-जोगासणं चरंतो वि तेण अव्वत्तसल्लेण बाहिज्जमाणो परिहाइउमाढत्तो ।

ताहे वेज्जस्स अक्खातो, वेज्जेण दिट्ठो, भणियं च - गतिय से कोति धाउबिसंवादरोगो, अत्थि से कोइ अव्वत्तसल्लो ।

ताहे वेज्जेण जमगसमगं पुरिसेहि कट्ठमेण आलिपाविओ सो आसो, सो सल्लपएसो अति उप्पहतणतो पढमं सुक्को, तं फाडेत्ता अवणीओ क्षुद्रकीकंटकसल्लो, सो य पणत्तो । वित्तो एवं अणुद्धरियसल्लो मतो ।

इदंणि उवसंहारो - जहा सो आसो अणुद्धरियसल्लो बलं ण गेण्हइ, असमत्थो य जुद्धे मतो य, एवं तुम पि ससल्लो करंतो किण्णिकलावं संजमखुइडं णो करेसि, ण य कम्मणो जयं करेसि, अजए य कम्मणो अणेगाणि जम्मणमरणाणि पाविहिसि, णो य मोक्खसंयं साहेहिसि, तग्हा सब्बं सम्मं आलोएहि ।

अहवा चउव्विहा आलोवगा - अपलिउंचिए पलिउंचियं - एतेसि चउण्हं भगणं पढमतिये सुद्धभावस्स मासमावज्जस्स मासो जेव पच्छित्तं, द्वितियचउत्थेसु माइणो तं च आवाणमासियं इमं च अण्णं मासयुसं मायाणिकण्णं मासियं ॥६३६६॥

स्यान्मतिः — “किं तिष्णं आलोचनायां भारतो माई णोवल्लभति तो (जम्भो) तिष्णिवारा आलोचा-
विज्जति ?

आचार्य आह — एग-द्वारा सुद्धि स्पष्टो न उवल्लभति मायीति, तथाहि फुडतर उवल्लभितिमितं
तिष्णि वारा आलोचाविज्जति पुत्वं च मायाणिष्णं मासगुरुं दिज्जति ति ।

एत्थ इमो दिट्ठो “तिष्णि दंडिएण जहा” अस्य व्याख्या —

अट्ठुप्पत्ती विसरिस, -णिवेयणे दंड पच्छ ववहारो ।

इति लोउत्तरियम्मि वि, कुंचितभावं तु दंडेति ॥६३६७॥

अथस्य उत्पत्तिरथो व्यवहारादुत्पद्यत इति अट्ठुप्पत्ती व्यवहारो भणति—जहा कोइ पुरिसो अण्णा-
तितो रायकरण उवट्ठितो णिवेदेति—अहं देवदत्तेण अण्णातितो, ताहे करण (पद्म) पुच्छति—कहं तुज्झं
कलहो समुत्थितो?, ताहे सो कहेति । कहिए करणपती भणति—पुणो कहेहि, कहिए पुण ततियवारा
कहाविज्जइ, जति तिसु वि सरिसं तो जाणति—सम्भावो कहिओ, अह विसरिसं तो जाणति करण-
पती एस पलिउंचियं कहेइ ति । कीस राजकुले सुसावायं भणति ? अतारेति ति पुत्वं डंडिज्जति,
पच्छा जइ व्यवहारे जियति तो पुणो डंडिज्जइ । एवं सो मायावी वि डंडोवहतो कीरति । इय एव
लोउत्तरे वि अह तिष्णि वारा आलोचावेत्ता जइ पलिउंचो कीस मायं करेहि ति तो मायापच्चवओ मासगुरु
से दिज्जति पुत्वं, पुणो वि से पच्छा जं आवाणो तं दिज्जति, एवं चैव सो सुज्जति, णटिय से अण्णो
सोषणप्पगरो इति ॥६३६७॥

अह आगमववहारी पच्छक्खणाणपच्चयतो पलिउंचियं अपलिउंचियं वा जाणति । जे
पुण सुतववहारी, ते कहं दुरवल्लभं असुभं पलिउंचियभावं अंतोगत जाणति ? अत उच्यते—

आगारेहि सरेहि य, पुच्चावरवाइयाहि य गिराहिं ।

नाउं कुंचितभावं, परोक्खणाणी ववहरंति ॥६३६८॥

आलोचयस्स आगारो ण संविग्गभावोवदसणो, सरोवि से अव्यक्तमविट्ठो खुभियगगरो, पुच्चावर-
वाहता य गिरा । आलोचंते भणति—अक्खियं मे जयणाए पडिसेवियं, ण य तियपरियट्ठं काउं तं गहियं ति,
एवमादिकारणेहि कुंचियभावं नाउं पच्छा आलोचयेण य आलोचिते फुडीकए । एवं परोक्खणाणी ववहारं
ववहरंति ॥६३६८॥

जे भिक्खू दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं

पलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं ॥सू०॥२॥

अस्य व्याख्या—द्वार्या मासाभ्यां निष्पन्नं दोमासियं, तेन जहा मासियसुते । णवरं—इमो
विसेसो, पलिउंचिते तत्तिमो गुहमासो दिज्जति ।

दोमासादिपलिउंचित्तिसु जहक्कमं इमे दिट्ठंता—

कुंचित सल्ले मालागारे मेहे पलिकुंचिते तिगट्ठाणा ।

पंचगमा णेयव्हा, बहूहि उक्खड्डमडाहिं ॥६३६९॥

१ गा० ६३६६ । २ अचतविपट्ठो = अव्यक्तमविस्मृष्टः । ३ पुनः पुनरित्यर्थः ।

दोमासिगपलिकुचियस्स कुचितो दिट्ठतो दिज्जति—कुचितो तावसो, फलाणं अट्ठाए अड्ढवि गमो । तेण णदीए सयं मओ मच्छो दिट्ठो । तेण सो अप्पसागारियं एइत्ता खाइतो । तस्स तेण अणुचियाहारेण अजीरतेणागाढं गेलणं जातं ।

तेण वेज्जो तं पुच्छति—किं ते खाइयं ? जओ रोगो उप्पण्णो ।

तावसो भणाति—फलाई भोत्तुं अण्णं ण किंचि खाइयं ।

वेज्जो भणइ—“कंदादीहि णिक्कसातियं ते सरीरं, षयं पिवाहि ति । तेण पीयं सुदुत्तरं गिलाणीभूतो ।

पुणो पुच्छिओ, वेज्जेण भणियं—“सम्मं कहेहि” ।

कहितं तेण—मच्छो मे खाइतो ।

वेज्जेण संसोहण-वमण-विरेयणकिरियाहि णिक्कसाएत्ता लद्धीओ कओ ।

इमो उवणओ—जो पलिउंचमि तस्स पच्छित्तकिरिया णो सक्केति मुद्धं काउं, सम्मं पुण अतियारोगं आलोए तो तस्स पच्छित्तं मुहकिरिया काउं सक्केति ॥६३६६॥

जे भिक्खू तेमासियं पडिहारट्ठाणं पडिसेवेत्ता आलोएज्जा

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं

पलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं ॥सू०॥३॥

अत्रापि मासिकव्याख्या एव, नवरं—त्रिभिर्मासे निष्पन्नं त्रेमासिकं, पलिउंचिए चउत्थो मासो गुरुभो दिज्जति ।

पलिउंचये य इमो मह्हादिट्ठतो कज्जति । दो रायाणो संगामं संगामेति । तस्स एकस्स रण्णो एको मणूसो सूरत्तणेण अतीववल्लभो । सो य बहूहि सल्लेहिं सल्लिओ । ते तस्स सल्लाई वेज्जो अवणेति, अवणिज्जमाणेहि अतीव दुक्खविज्जइ, एकस्मिं से अंगे सल्लो विज्जमाणो तेण विगूहितो वेज्जस्स दुक्खाविज्जिहामि ति । सो य तेण सल्लेण विवट्ठमाणेण बलं णो गिण्हति, दुब्बलो भवति, पुणो तेण पुच्छिज्जमाणेण णिवंधे कहितं णीणिओ सल्लो, पच्छा बलवं जातो । एत्थ वि उवणओ पूर्ववत् ।

जे भिक्खू चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवेत्ता आलोएज्जा

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चाउमासियं

पलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं ॥सू०॥४॥

अत्रापि तदेव व्याख्यानं, नवरं—पलिउंचणाणिक्कणो पंचमो गुरुप्रमासो दिज्जति ।

इमो य मालाकारदिट्ठतो—दो मालाकारा कोमुदिवारे पुप्फाणि बहूणि उवणित्ता गहेत्ता विहीए उवट्ठिता । तत्थेणेण कयगेमु उवट्ठित्तेसु पागडा कया, तेहि णाउं तेसि मोल्लं दिण्णं, बहू य लाभो लद्धो । जेण पुण ण कयाणि पागडाणि, तस्स न कोइ कयगो अल्लीणी, ते तत्थेय विणट्ठा, ण य लाभो लद्धो । एवं जो मूलगुणउत्तरगुणावराहा ण पागडेति सो पच्छित्तं, गेव्वाणलाभं च ण लभति ।

जे भिक्षू पंचमासियं परिहारद्वानं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स छम्मासियं ॥सू०॥५॥

तथैव व्याख्यानं, नागतं इयं - पलिउंचिये छट्ठो मासो पुण्यो रिज्जति ।

इमो य से 'मेहदिट्ठतो दिज्जति -

चत्तारि मेह गाहा -

गज्जिता णामेगे णो वासित्ता, चउभंगा कायव्वा, एवं तुमं णि आलोएमि त्ति गज्जिता
णिसज्जकरणं वंदणदाणं उज्जमिता आलोवेउमाळितो णो भवराहपाणियं मूचसि, जम्हा पलिउंचियं करेसि,
तम्हा मा विफलं गज्जितं करेहि, सम्मं आलोएहि त्ति ।

“रतिगट्ठाणे” त्ति अस्स व्याख्या - पलिउंचिये आउट्टे समाने सुत्तववहारी पुणो तिण्णि वारा
आलोयवित्ति, जइ पुणो तिहि वारादि सरिसं आलोयित्थं तो जाणति -- “एस सम्मं आउट्टो, जं से दायव्वं तं
देति” ।

अहं विसरिसं तो भणंति - अण्णस्य सोहिं करेहि, णहं तव सक्केमि एरिसियाए अणिच्छिय-
आलोयणाए सक्कावं अयाणतो सोहिं काउं ।

अहंवा सीसो पुच्छति - “एते मासादि छम्मासंता पायच्छित्ताणा कुमो पत्ता ?”

आचार्याह - “रतिगट्ठाणे” त्ति, उग्गमपादणंसणासु जं अकप्पपडिसेवणाए अणायारकरणं तेण
एते मासादिछम्मासंता पायच्छित्ताणा पत्ता इति । अहंवा - णायाइतिगाणायाहेहि तो । अहंवा - आहार-
उवहिसेज्जा अकप्पिएहि तो ।

इदाणि छम्मासियसुत्तस्स अतिदेसकरणं इयं - जम्हा पंचमासिये पलिउंचिये छम्मासा दिट्ठा,
तेसु आरोवणं विहाणं जं, तं चेव छम्मासपडिसेवणाए वि, तम्हा छम्मासियसुत्तं ण पडति, अतिदेसं करेति ।

तेण परं पलिउंचिये वा अपलिउंचिये वा ते चेव छम्मासा ॥सू०॥६॥

“तेण” त्ति तस्स पंचमासियस्स पुरयो छम्मासियं भवति, तस्मिं पडिसेविए आलोयणाकाले जति
अपलिउंचियं आलोएति तो छम्मासित्तं, पलिउंचियं आलोइए वि ते चेव छम्मासा, जहा मासादिसु पलिउंचिये
य मायाणिक्कणो पुण्यो मासो आबत्तोभो अहिणो दिज्जइ तहा छम्मासावत्तोए भवतीत्यर्थः ।

कम्हा ? उच्चये - जम्हा जियकप्पो इमो । जस्स तिथ्यकरस्स जं उक्कोस्सं तवकरणं तस्स
त्रित्ये तमेव उक्कोस्सं पच्छित्तदाणं सेससाधूणं भवति । सत्तिजुत्तेण वि परतो तवो ण कायव्वो,
आसायणभया, चरिमतिव्यकरस्स य अम्हं सव्वुक्कोसा छम्मासिया तवभूमी सूत्रखंड गतं ।

जे भिक्षू बहुसो वि मासियं परिहारद्वानं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ॥सू०॥७॥

जे भिक्खु बहुसो वि दोमासियं परिहाट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं ॥सू०॥८॥

जे भिक्खु बहुसो वि तिमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स तिमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं ॥सू०॥९॥

जे भिक्खु बहुसो वि चउमासियं परिहाट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं पलिउंचिय आलोएमाणस्स
पंचमासियं ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खु बहुसो वि पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स छम्मासियं ॥सू०॥११॥

'तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥सू०॥१२॥

अथ पंचानामपि सूत्राणां सूत्रकं पाद्यापवचार्थमपि दिश्यते "पच" इति संख्या, "गमा" इति सूत्रप्रकारो, ते य मासदुमासादि, "अणेयवे" ति वयणुच्चारणमगणे, 'बहुहि' ति - बहुसु सुता ।

"अखड्डमट्ठाहि" ति बहुसु वक्खाणं, उखड्डमट्ठु ति वा बहुसो ति वा भूयो भूयो ति वा पुणो पुणो ति वा एगट्ठं । एषां पंचानामपि बहुससूत्राणमयमर्थः - त्रिप्रभृतिबहुत्वं तिणिं वारा मासियं पडिसेवेता अपलिउंचियं आलोएइ एवकं चेव मासियं दिज्जइ, अह पलिउंचियं आलोएति तो बितितो मासो मायाणिप्फणो गुरुगो दिज्जति, एवं दोमासियं पि ।

णवरं - तस्मिन् मासो मायाणिप्फणो गुरुगो मासो दिज्जति । सेमामिए तिणिं मासा, चउत्थो मायाणिप्फणो गुरुगो दिज्जति ।

चाउम्मासिए चत्तारि मासा, पंचमो मायाणिप्फणो गुरुगो दिज्जति ।

पंचमासिए पच, छट्ठो मायाणिप्फणो । तेण पर पलिउंचित्ते वा ते ज्जेव छम्मासा, एतत्सूत्र-मुक्तायमेव । एवं मासादिमु एगपडिसेवणसुत्ते पंचसु मासादिमु बहुसु पडिसेवणसुत्तेसु पंचसु वक्खाणिणसु ।

अत्र चोदकाह - 'तुम्हे रागदोसी' ।

किं चान्यत् सूत्रं -

चोदग्ग मा गद्धत्ति कोट्टारतिगं दुवे य खल्लाडा ।

अट्ठाणसेवितम्मि, सव्वेसु वि वेत्तुणं दिण्णं ॥६४००॥

१ दशमसूत्रांशो गृहीतश्चूणिकृता । २ गा० ६३६६ । ३ गा० ६३६६ । ४ गा० ६३६६ ।

बहुएसु एककदाणे, रागो दोसो य एगदाणे उ ।

चोदग एवमगीए, गीयम्मि व अजतसेवम्मि ॥६४०१॥

आचार्याह -

कम्हा अम्हे रागदोसी ?

पुणो चोदगाह - पुब्बदं - "बहुएसु" ति, बहुससुत्ते भासियद्दाणेसु वि बहुसो सेविएसु एककदाणे रागो, एकसि जं सेवितं तं चेव पडिपुणं एकक दंताण तम्मि भे त्थो भवति ।

आयरिओ भणति - "चोदग एवमगीए" पच्छदं, जं आदिसुत्तेसु पंचसु पडिसेवितं तं चेव दिज्जति एय अगीयत्थस्स एवं दिज्जति । जं पुण बहुससुत्तेसु शार्ण भणियं, एयं जो गीयत्थो कारणे अजयणाए सेवति, तस्सेदं दिज्जति ॥६४०१॥

सगलबहुससुत्ताणं विसमपडिसेवणासु समदाणपसाहणद्वा इमो दिट्ठतो दिज्जति -

जो जत्तिएण रोगो, पसमति तं देति भेसमं वेज्जा ।

एवागमसुतनाणी, तं देति विसुज्झते जेणं ॥६४०२॥ कंथा

आचार्य एवाह, "सुत्तं" ति अस्य व्याख्या -

अवि य ह् सुत्ते भणियं, सुत्तं विसमं ति मा भणसु एवं ।

संभवति ण सो हेतू, अत्ता जेणालियं बूया ॥६४०३॥

आयरिओ भणइ - न वयं रागदोसित्ता, जेण सुत्तं चेव कुबं समदाणं भणति ।

चोदगो ति चोदगो भणति, "जं तुमे भणति सुत्ते वुत्तं ति, तं चेव सुत्तं विसमं ति, जेण आदिपंच-सगलसुत्ताणि पंच य बहुससुत्ताणि पुब्बायरविहट्ठाणि, जतो एतेनि दोहू वि पंचगसुत्ताणं विसमा पडिसेवणा समं दाणं" ति ।

आयरिओ भणइ - "चोदग ! जे तुमं भणसि सुत्तं विसमं ति तं "अमा" अस्य व्याख्या, मा भणसु एवं ति । सेसं कंठ । "वीतरागो हि सर्वज्ञः" श्लोकः ॥६४०३॥

पुणो सीसो भणइ - भगवं ! णणु विसमा पडिसेवणा वत्थू कहं वा विसवत्थूसु सुढी समा सवति ?

उच्यते -

कामं विसमा वत्थू, तुल्ला सोहि तधावि खलु तेसिं ।

पंच वणि तिपंच खरा, अतुल्लमुल्ला उ आहरणं ॥६४०४॥

"कामं" अणुमयत्वे, "खलु" सहो इमं अवधारति, विसमवत्थुपडिसेवणासु वि भवति चेव तुल्ला सुढी, सा य समा चेव, समसुद्धिपसाहणत्वं दिट्ठतो इमो, "अगृहमे" ति अन्य व्याख्या - "पंचवणि" पच्छदं, जहा - पंच वणिया समभागसमाइत्ता ववहरति, तेसिं अणया कयाइ समुप्पणं जहा विरिचामो । सव्वम्मि विभत्ते खरा विभयामो ति, ते य "तिपंचखरा" - पणरस ति वुत्तं भवति, ते य विसमभरवहः विसममोल्ला ॥६४०४॥

वे सम्मं विभज्जंता तिण्णि आवडंति, मुल्लतो पुण अतुल्लमुल्ला भवन्ति ।
ताहे ते -

विणिउत्तभंड भंडण, मा भंडह एत्थ एगो सट्ठीए ।

दो तीस तिण्णि बीसग, चउ पण्णर पंच बारसगा ॥६४०५॥

“विणिउत्तभंडि” सि सभंडोवकरणे-विभत्ते विक्रीते रासभणिमित्त भंडिउमारदा । असमत्था य समं अण्णणा विभातियं अण्णं कुसलमुवट्ठिता, तेण य भण्णिता - “मा भंडह, अहं भे समं विभयामि, कहेहि कि को वहति ? कस्स कि मुल्लं ? ति ।

तेहि कहियं - एत्थ एक्को रासभो सट्ठिमोल्लो, सट्ठि च पलसते वहति, दो पत्तेयं तीसमुल्ला तीसपलसतो वाहिणो. एवं तिण्णि बीसा, चत्तारि पण्णरसा पंच बारसा एवं कहिए । तण्ण मुल्लसमा विभत्ता, एगस्स एगो सट्ठिमुल्लो दिण्णो, वितियवणियस्स तीसा दो, तत्तियस्स बीसा तिण्णि, चउत्थस्स पण्णरसमुल्ला चउरो, पंचमस्स पंच बारसमुल्ला । विसमवत्थूसु वि तेण सममुल्ला कया, ण य सो विभयंतो रागदोसिल्लो, ण य वणियाणं अत्थि हाणी ॥६४०५॥

एयस्स इमो उवसंघारो -

कुसलविभागसरिसओ, गुरू य साहू य होति वणिया वा ।

रासभसभा य मासा, मोल्लं पुण रागदोसा तु ॥६४०६॥ कळ्या

णवरं - “मुल्लं पुण रागदोसा उ” ति - जहा रासभद्वयगुणबुद्धिहाणीयो मुल्लस्स बुद्धिहाणी तहा भावे रागदोसबुद्धिहाणीजनितपडिसेवणाहितो पच्छित्तस्स बुद्धिहाणी भवतीत्यर्थः । जतो तिक्करागदोस-संभवसाण सेवते मासट्ठाणे भासो चेव दिज्जति, मदभावस्स दोसु भासियट्ठाणेषु पण्णरस पण्णरस वेत्तुं मासो दिज्जइ, एवं तिसु दस वेत्तुं मासो दिज्जइ, चउसु पत्तेयं षड्ढुमा राइंदिया वेत्तुं दिज्जति, पंचसु छ छ वेत्तुं मासो दिज्जति, एवं सणलडुमासा चेत्ति सुत्ते वि बहुसमुत्ते य कारणा अजयणपडिसेविणो रागदि-बुद्धिहाणीतो य उवउज्ज बहुवित्थरभणियव्वं । “अद्वानसेवितम्मि” ति - गीयत्थेण अद्वानातिकारणे जं सेवितं अजयणाए तत्थ बहू मासा आवण्णो, एतेण एकसरं चेव आलोइता तत्थ पुइणा अजयणमुद्धीणिमित्तं तस्सउवण्णेसि च अणवत्थणिआरणत्थं सव्वेसि मासाणं समविसमेण वा दिवसगहणेण दिवसो वेत्तुं एक्को मासो दिण्णो । अगीयत्थो वि जो मंदणभावो बहुमासे सेवित्ता तिक्कउभवसाणो वा वा दुट्ठकयादीहि आलोइते, तेण णायं एस एक्केण चेव मासेण सुज्झति, तहावि अगीयत्था परिणामयो वा चित्तेज्ज - दोमासियादि आवण्णो हं कहं एक्केण मासेण सुज्झिस्सामि ति ताहे पच्चयकरणद्वताए सुतववहारी सव्वसफलमासकरणत्थं सव्वेसु दिवसे वेत्तुं एकभासं दलाति । आगमववहारी पुण ण दो वि मासा सफला करेइ एक्कं चेव दलाति, बितियं मासं भोसेति, जो पुण तिक्कउभवसाणे णिककारणपडिसेवी तस्स मासादिआवण्णस्स मासादि चेव पडिपुणं दिज्जति । एवं अगीयगीयत्थाण णिककारणे वा पुडो ॥६४०६॥

पायच्छित्ते दिण्णे सिस्सायरियाण पुच्छुत्तरगाहा इमा -

वीसुं दिण्णे पुच्छा, दिट्ठतो तत्थ डंडलइतेणं ।

डंडो रक्खा तेसि, भयजणो चेव सेसाणं ॥६४०७॥

१ गा० ६४०० । २ गा० ६४०० ।

मीसुं पृथक् पृच्छति-अग्नीतमीतार्यं भिक्कारणकारणे वा किं वि सरिसं पच्छितं दिण्णं ति? ॥६४०॥

एतथ “कोट्टागारे” त्ति वयणं, अस्य व्याख्या --

“दिट्ठतो तत्थ दंडलइएणं” ति अस्य व्याख्या --

दंडतिगं तु पुरतिगे, ठवितं पच्चंतपरनिवारोहे ।

भत्तद्वं तीसतीसं, कुंभगहमागमो जेतुं ॥६४०॥

सुणेहि चोदम -- “एगस्स अहिवरणो पच्चंतियराया वियट्ठो । अहिवरणा तस्स आसण्ण-पुरेसु तिण्णि दंडा विसज्जिता, गच्छह णगराणि खख्ह । एतेसु पत्तेयं णगरेसु तेसु पच्चंतियराइणो ते आगतुं रोहिता । तेहि य रोहिएहि स्त्रीणभत्तेहि, जे तेसु पुरेसु अहिवरणो कोट्टागारा तेहि तो पत्तेयं घण्णस्स तीसं तीसं कुंभा गहिआ । तेहि य सो पच्चंतियराओ जितो । आगता रणो समीवं, कहितं, तुट्ठो राया ।

पुणो तेहि कहियं -- तुज्ज कज्जं करतेहिं धन्नं खइय ।

रण्णा चित्तिं-जइ एतेसि दंडो ण कज्जति, तो मे पुणो पुणो उप्पण्णपयोणेहि कोट्टागारा विलुं पिहिति, ण य एतेसि अण्णेसि च भयं भवति ।

तम्हा “दंडो” पच्छदं, अस्य व्याख्या --

कामं ममेतं कज्जं, कतविचीएहि कीस मे गहितं ।

एस पमादो तुब्भं, दस दस कुंभे वहह दंडं ॥६४०॥

सज्जं मम कज्जं तहावि कयवित्तीहि कीस मे घण्णं गहिंयं?, एस तुम्हं पमादो । तेसि अणवत्थपसंगणिवारणत्थं दंडं वत्तेति, देह मे घण्ण ति । एवं भणित्ता पुणो राया अणुगहं करेति, बीस बीस कुंभा तुब्भे मुक्का, दस दस कुंभे छुब्भह कोट्टागारे ॥६४०॥

“अक्खा” त्ति तेहि ते छूढा, चित्तिं च -- “अम्हेहि रणो कज्जं कयं, तहावि डडिया, ण पुणो एवं करिस्सामो” । अण्णेसि पि भयं जायं, एस दिट्ठतो ।

इमो उवसंहारो --

तित्थंकर रायाणो, जइणो दंडा य कायं कोट्टारा ।

असिवादि गुग्गहा पुण, अजयपमादारुवण दंडो ॥६४१०॥

तित्थंकरा रायत्याणीया, साधु दंडत्याणीया, छक्कायत्याणीया कोट्टागारा, विगहत्याणीयाणि असिवादीणि । गीयत्थस्स अजयणाए प्रसंगवारणाणिमित्तं मासादीहि बहुसो सेवितेहि तेहि एक्को मासो दिज्जति, अगीयत्थस्स पुण प्रमादवारणाणिमित्तं दोहि मासेहि दुमासो दिण्णो । अह्वा -- दो वि सफला काउं मासो जेव दंडो दिण्णो ॥६४१०॥

चोदगो भणइ --

बहुएहि वि मासेहिं, एगो जति दिज्जती तु पच्छितं ।

एवं बहु सेवित्ता, एक्कसि विगडेमि चोदेति ॥६४११॥

१ गा० ६४०० । २ गा० ६४०७ । ३ गा० ६४०७ ।

अति गीयत्वस्स कारणं भजयथाए बहुहि मासिएहि सेविएहि एकसराए भालोइयं ति काउं एक्को
मासो दिज्जति, तथा ग्रम्हे वि बहुमासे पडिसेविता एकसराए भालोयामो, तो एकमासो लब्धमो ॥६४११॥

एत्थ आयरिओ भणइ -

मा वद एवं एकसि, विगडेमो सुबहुए वि सेविता ।

लम्भिसि एवं चोदग, देतो खल्लाड खडुमं वा ॥६४१२॥

खल्लाडगम्मि खडुमा, दिण्णा तंबोलियस्स एककेणं ।

सक्कारेत्ता जुयलं, दिण्णं चितिएण वोरवितो ॥६४१३॥

“दुवे य खल्लाड” ति दिट्ठं करेइ,

एक्को खल्लाडो तंबोलियवाणियओ पणं विक्केति । सो एककेण चारभडचोदेण पण्णे
भगितो । तेण न दिण्णा । थेवेसु वा दिण्णेसु रुसिएण चारभडचोदेण खल्लाडसिरे खलुक्का दिण्णा,
“टक्कर” ति वुत्तं भवति ।

वणिण्ण चितियं - “जइ कलहेमि ता मे रुसितो मारेज्ज, तो उवायेण सो वेरणिज्जायणं
करेमि” । वणिण्ण उट्ठेत्ता हट्ठो समाइच्छ वय्यजुयलं च से दिण्णं, पाएसु पडितो, महंतं से तंबोलं ।

चारभडचोदो पुच्छति - “कि कज्जं तुमं न रुट्ठो, पेच्छगं मम पूएसि, पाएसु य पडसि”
ति । वणिण्ण भणियं - “सव्वखल्लाडाण एस ठिई, परमं सुहं च उप्पज्जइ” ।

चारभडचोदेण चितियं - “जदो मे जीवणोवाओ ।

ताहे तेण चितियं - “तस्स एरिसस्स खडुक्कं देमि, जो मे अदरिहं करेज्ज” । ताहे तेण
ठक्कुरस्स दिण्णा, तेण मारितो ॥६४१३॥

एवं तुमं पि चोदग, एकसि पडिसेविट्ठण मासेण ।

मुच्चिहिंसी वितियं पुण, लम्भिहिंसी छेदमूलं तु पच्छित्तं ॥६४१४॥

चोदग ! तुमं पि एकसि पडिसेविए मासिएण मुक्को, आउट्टियाए बहुं सेवतो छेदं मूलं वा
लम्भिहिंसि । अण्णं च सो चोदो एकं मरणं पत्तो, तुमं पुण ससारे अणेगमरणाइं पाविहिंसि ॥६४१४॥

कि चान्यत् ? इमं च तुमं ण याणसि -

दिण्णमदिण्णो दंडो, हितदुहजणणो उ दोण्ह वग्गाणं ।

साहूणं दिण्णसुहो, अदिण्णसुक्खो गिहत्थाणं ॥६४१५॥

दो वग्गा इमे - साहूवग्गो गिहत्थवग्गो य । साहूवग्गो पच्छित्तदंडो दिज्जंतो सुहं जणेंति, अदिज्जंतो
दुक्खं करेति । गिहत्थवग्गो एयं चेव विवरीयं भवति ॥६४१५॥

कहं ? उच्यते -

उद्धियदंडो साहू, अचिरेण उवेति सासयं ठाणं ।

सो चिचयणुद्धियदंडो, संसारपकडूओ होति ॥६४१६॥

१ गा० ६४०० । २ पोट्टेण (व्यव०) । ३ व्यग्रहारे ‘छेदं’ इति पदं नास्ति, तुशब्दात् छेदो गृहीतः ।
४ पवट्टमो (व्यव०) ।

पच्छित्तेण ण्ण उद्धितं पावं भवति तदा विसुद्धवरणो सुखं पावति । अविमुद्धवरणो पुण अण्णाणं संसारं, तेण कहुति — नयत्तपर्यः । संसारभावं वा अण्णाणं, तेण “कड्ढति” — आकर्षतीत्यर्थः ॥६४१६॥

गिहत्था पुण —

उद्धियदंडो गिहत्थो, असण-वसण-रहिओ दुही होति ।

सो च्चियडणुद्धियदंडो, असण-वसण-भोगवं होति ॥६४१७॥

“असणं” भत्तं, “वत्थं” वसणं, तेसि णासाति । इडिओ पुण तेसि अयागी, अडिडिओ पुण भोगी य भवति । जम्हा एवं साधुण पच्छित्तदंडो दिण्णो सुहो, तम्हा जो जेण सुज्झइ तस्स तं एगमणेगभासियं वा अणुरूवं दायव्वमिति ॥६४१७॥

जे भिक्खू मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा

पंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं
पडिसेविता आलोएज्जा —

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं वा दो मासियं वा
तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं

पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा

चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा

तेण परं पलिउंचिय वा अपलिउंचिय वा ते चेव छम्मासा ॥६०॥१३॥

सूत्रे उच्चारिते शिष्याह —

कसिणारुवणा पढमे, बितिए बहुसो वि सेविता सरिसा ।

संजोगो पुण ततिए, तत्थंतिमसुत्त वल्लीव ॥६४१८॥

सिस्सो भणति — मासिगादिमु पंचमु मगलसुत्तगमेसु कसिणारुवणे त्ति जं सेवितं तं चेव सव्वं दिण्णं, ण किंचि विज्झोसितं । आदिमा पंच वि सगलसुत्तगमा सगलसुत्तसामण्ण्यो एकं सुत्तं भवति ।

“बितिय” ति — बहुसाभिवाणसामण्णतो पंच वि बहुसमुत्ता बितियसुत्तं भवति, तत्थ य सरिसा-वराहा मासादो बहुपडिसेविता ते य कोप्पियसेसा पढमसुत्तसमा चेव दिण्णा । एवं एगदोसु सुत्तेसु इमो ततियसुत्तारंभो किमत्वं भणति ?

आचार्याह — बहुविश्वरततियसुत्तप्पदरिसत्थं, जतो भणति — “संजोगो पुण” पच्छदं ।

ग्रहवा — सुत्ते उच्चारिते सिस्साह “ण्णु मासदुमासादिया पुव्वाभिहिता कि पुणो भणति” ?

आचार्याह — ण तुमं हुत्ताभिप्पायं जाणसि —

कसिणारुवणा पढमे, बितिए बहुसो वि सेविता सरिसा ।

संजोगो पुण ततिए, तत्थंतिमसुत्त वल्लीव ॥६४१९॥ कंठ्या पूर्ववत्

जे अत्थतो संजोगसुत्ता भंगविकप्पा वा तेसि भाणियव्वे इमो विही —

आदिमसुत्ते भणिते, पढमे सेसा कमेण संजोगा ।

अतिल्ले पुणं भणिए, आतिल्ला अत्थओ पुव्वं ॥१॥

मज्जे गहिए जे सेसगा तु ते उभयतो भवे गेया ।

तेसि पुव्वापुव्वं, सेसा य ततो कमेणं तु ॥२॥

विभासा — जत्थ सुत्तादिसंजोगेसु जगेसु वा आदित्वा सुत्ते भणिता तत्थ सेसा कमेण प्रत्यतो पच्छा भाणियव्वा । अह सुत्ते अतित्वा पुव्वं भणिता तत्थ प्रत्यतो आदित्वा पुव्वं भाणियव्वा । अह सुत्ते मज्जमगहनं कयं तो प्रत्यतो संजोगा उभयो वि भाणियव्वा । इमं ततियं सुत्तं छव्वीसतिभेदमिणं, तत्थ अतिमं पंचमसंजोगे सुत्तं इमं सुत्तेण गहियं, जे आदिमविगप्पा ते वल्लिदिट्ठंतसामत्यओ गेज्झा, जहा वल्ली अगो वेत्तुं आघट्टिता सव्वा समूलमज्झा आघट्टिज्झइ एवं एतेणं अतिमपंचमसंजोगसुत्तेण सव्वे आदिमा दुगादी संयोगा गहिया भवन्ति, अतोऽयंमिदं सूत्रमारब्धं ।

तत्थ इमे दसदुगसंजोगा, तं जहा —

जे भिक्खू मासियं च दोमासियं च परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं च दोमासियं च

पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं तेमासियं च उच्चारयेव्वं ।

जे भिक्खू मासियं च तेमासियं च । जे भिक्खू मासियं च उम्मासियं च ।

जे भिक्खू मासियं पंचमासियं च । एवं दो मासियं तेमासियं, चाउम्मासियं पंचमासियं च णेयव्वं, तेमासिए चाउम्मासियं पंचमासिया णेयव्वा, चाउम्मासिए पंचमासियं णेयव्वं, एते दस दुअसंजोगा, एवं तियसंजोगे दस, च उकुसंजोगेण पंच, एगो पंचमसंजोगो ॥६४१६॥

सो य इमो सुत्तेणव गहंतो —

जे भिक्खू बहुसो वि मासियं वा, बहुसो वि दोमासियं वा बहुसो वि

तेमासियं वा बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि पंचमासियं वा

एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा

अपलिउंचियं (बहुसो वि) आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा

तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा देज्जा ।

पलिउंचियं (बहुसो वि) आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा

चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा ॥६४०॥१४॥

एवं च उत्थसुत्तं ।

इमा से णिज्जुत्ती —

जे भिक्खू बहुसो मासियाइ सुत्तं विभासियव्वं तु ।

दोमासियं तेमासियं, कयाइ एककुत्तरा बुद्धी ॥६४२०॥

बहुसो ति — त्रिप्रभृति बहुत्वं । किं पुन तं ? बहुसो पडिसेवितं मासियट्ठाणं ति वुत्तं भवति ।
“विभास” ति — व्याख्या, सा य कायव्वा, जहा बहु सगलसुत्ते तथा बहु संजोगसुत्ते वीत्यर्थः । जहा मासियट्ठाणा बहुपडिसेवाते कया तथा दोमासियतेमासियट्ठाणा वि, एवं चउपंचमासिया वि तट्ठव्वा, एणुत्तरबुद्धीए तेसि दुगादिसंजोगा गहिता, सुत्ते पुण पंचसंजोगो गहिओ । जहा ततियसुत्ते अतिम-

संजोगेण दुग्गाइसंजोगा गहिंया तद्वा बहुससंजोगमुत्ते वि भ्रतिससंजोगेण दुग्गादि वा संजोगा सूइया । इहं पि ते
चेव छवीसं संजोगमुत्ता, णवरं - बहुसाभिहाणेण कायव्वा, एवं एतेसु चउसु सुत्तेसु सभेदभिण्णेषु बावद्धि सुत्ता
भणिया । एते य उच्चायाणग्घाएहिं भविसेसिता भणिता ॥६३२०॥

इदाणि पुण एतेसि चेव विशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते—

उग्धाताणुग्धाते, मूलुत्तरदप्यकप्यतो या वि ।

संजोगा कायन्वा, पत्तंगं मीसगा चेव ॥६४२१॥

सगलसुता पंच, बहुससुता पंच, सगलसुते य संजोगसुता ख्वीसं, बहुससुते य संजोगसुता ख्वीसं । एते बावट्टि सुता उषयाभिहाणेण णेयव्वा । एते चेव बावट्टि सुता ऋगुषयाभिहाणेण णेयव्वा । एता तिणि बावटीओ छासीयं सुतसयं । एत्थ तीसं भसंजोगसुता, तेसच्छपणसयं पत्तं संजोगसुताण भवति ।

इदं हि उग्राताणुग्रातमीसगाभिहाणेणं संजोगसुत्ता भाणियब्बा ।

तेसिं इमो उच्चारणविही—

जे भिक्षू उग्घायमासियं च पलिउच्चियं च आलोए उग्घातमासियं च
अणग्घायदोमासियं च ।

एवं उग्धायमासियं अमुयंतेहिं अणुग्धायदोमासियादि वि भाणियन्वा ।

एवं चेव अणुघातमासिते उग्रायतो य दुर्गादिसंजोगा भाणियव्वा ॥६४२१॥

एतथ इमं एगदुगादिपडिसेवणपगारदरिसणत्थं एगदुगादिसंजोगफलआगतवकरणदरिस-
णत्थं च भण्णति --

एत्थ पडिसेवणाओ, एक्कगदुगतिगचउक्कपणएहिं ।

दस दस पंचग एककग, अदुन अणेगाओ णेयाओ ॥६४२२॥

“एत्थं” ति — अतिवर्तते संज्ञोगमुत्तप्तमूहे, अहवा — उष्णतापुष्णघातसंज्ञो वा वक्ष्यमाणे मासदु-
 मासि एगादिपडिसेवणप्रकारा भवन्तीत्यर्थः । तत्थ उष्णतापुष्ण एकपडिसेवणत्वे पंचप्पगारा ते य सुत्त-
 सिद्धा वेव, तेण पच्छद्वेण न गहिंया, दुएसंज्ञो दस, तिगसंज्ञो दस, चउक्कसंज्ञो पंच, पच्चगसंज्ञो एक्को,
 एत्थं अणुष्णतापुष्ण वि एते पत्तेगसंज्ञोगा ।

इदाणि एतेसि मीसगसंजोगो भण्णति -- एत्थ एक्कादि उग्घातिगसजोगट्ठाणा पंच वि
अणग्घातियसंजोगेण पंचगेण पुत्ता जहासस्स इमे जाता ।

पणुवीसं पण्णासा पण्णासा पणवीसं च य, एवं उग्धातियाण एण-दु-ति-चउ-पंचसंजोभेसु अणुग्धातियाण
य एककगजोभे जातं पणपण्णासयं ।

पुणो उग्धातिथान् एग-दु-ति-चउ-पंचसंजोगा अगुग्धातिथदुगसंजोगेहि दसहि सुणिया जहासंख इमे जातु। पण्णासा ।

सत्, पुणो सत्, पुणो पणःसा, दस य, एवं उग्धातिषाः सव्वसंज्ञोगा अणुग्धातिषा दुगः जोगेहि
मिलिया तिणि मया दसुत्तरा भवन्ति ।

पुणो उष्वातियाण सव्वसंजोगा भणुग्वातियतिगसंजोगेहि दसहि युणिया तहि जहासं जाता
पण्णासा, सत्तं, सत्तं, पण्णासा, दस य, एते वि सव्वे मिलिया दसुत्तरा तिण्णिसया भवन्ति ।

पुणो उग्धातियसव्वसंजोगो अणुग्धातियचउक्कसंजोगेहि पंचहि गुणिता जाता जहासंखं पणुवीस पण्णासा पणुवीसं पंच य, एयं पि मिलियं पणपणसयं भवति ।

पुणो उग्धातियसव्वसंजोगा अणुग्धातियसव्वसंजोगेण एक्केण गुणिता जहासंखं पंच दस दस पंच एक्को य, एते सव्वे एक्कतीसं, एवं उग्धाताणुग्धातसगलसव्वमुत्ताण संखेवो णव सया एक्कसट्ठा ।

इदंणि बहुसमुत्तेसु वि मीसा सुत्त संजोगा एतेण चैव विहिणा णव सया एगसट्ठा भवति, सव्वे मीसगमुत्ता संपिडिता अउणवीसं सया बावीसुत्तरा भवति, एते चैवं आदिमच्छासीतसहिया एक्कवीसं सय अट्ठुत्तरा भवति । जम्हा दुविहो अवराहो — मूलगुणे उत्तरगुणे वा, तम्हा एते सव्वे सगलमुत्ता संजोगमुत्ता । मूलगुणावराहाभिहाणेण लद्धा, उत्तरगुणावराहाभिहाणेण वि एत्तिया चैव, जम्हा एवं तम्हा एस रासी दोहि गुणितो जातो चत्तारि साहस्सा दो य सया सोसमुत्तरा ।

जम्हा एतेसु मूलुत्तरगुणेषु दप्पतो कप्पतो य अत्रयणाए अवराहो लब्धमिति तम्हा एस रासी पुणो दुगुणो कज्जति, कते य इमं भवति — अट्ठ सहस्सा चत्तारि सता य बत्तीसहिया भवति । एत्थ जा मीसगमुत्तसंखा सा ततियचउत्थमुत्तेहितो उप्पण्णा संखेवओ भणिता ।

तं चैव बहुवित्थरं दरिसंतो आयरिओ भणति “अदुव अणेगाओ णेयाओ” ति अथवा — ण केवलं पडिसेवणाए एते संजोगमुत्तपगारा भवति ।

अणो वि अण्णं पगारेण पडिसेवणाए अण्येयमुत्तपगारा भवति, ता य पडिसेवणाओ “णेयाओ” ति णायव्वा इत्यर्थः ।

तेसु णिदरिसणं इमं —

जे भिक्खू पंचराइदियं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउचियं आलोएमाणस्स पंच राइदियं ।

पलिउचियं आलोएमाणस्स सपंचराइं मासितं दसगं ।

एवं दस पण्णरस वीस पणुवीसराइदिएसु वि सव्वं भाणियव्वं ।

एवं बहुसाभिलावेण भाणियव्वा, एतेसु वि संजोगे मुत्ता भाणियव्वा ।

एवं सामण्णतो भणितेसु पच्छा उग्धाताणुग्धायमूलुत्तरदप्पकप्पेसु अट्ठ सहस्सा चत्तारि सया य बत्तीससहिता पुंस्वभिहाणेण अणूणभइरित्ता कायव्वा, एत्थ पणगादिराईदिया मासदुमासा-दिएहि सह ण चारेयव्वा, जम्हा उवरि पंचमासातिरेगमुत्तं भाण्हिति, तं च सातिरेगं पणगादि संजोगा भवन्ति, स संयोगसूत्रैव भविष्यतीत्यर्थः ।

एत्थ चोदगो सगलबहुससंजोगमुत्तेसु विगोवितमती भणति — “णणु बहुसमुत्तावत्तिट्ठुमासाविसुत्ता भणिया, अहवा — जत्थ परट्ठाणवुइडो दिट्ठा तत्थ दुमासादिया आवत्ती भवतीत्यत्र निदरिसण जहा एत्थेव दसमुट्ठे सगे लतियमुत्ते ति विहे तवगेलणद्धाणे असंथडे भणियं ।

एग दुग तिणिण मासा, वउमासा पंचमासा छम्मासा ।

सव्वे वि होति लद्धा, एगुत्तरवुड्डिता जेणं ॥

एवं दुमासादिया एते आवत्तिसंभवातो भवतीत्यर्थः । अहवा जम्हा बहुसु मासिएसु अपलिउचियं आलोएमाणस्स मासियं चैव दिट्ठ, दुमासादिएसु वि अपलिउचियं आलोएमाणस्स दुमासातिया चैव, तम्हा वा दुमासादिमुत्ता पुढो कया, ता य आवत्तीओ एमादिदोमासदुट्ठदव्वाभावसंकिलेसाओ वा भवति ।

तत्तु दत्तु सागारियपिडे मासियं, सागारियपिडे हडे दोमासियं, सागारियपिडाहडउदउत्ते तेमासियं
सागारिए विडुहसियउदउत्ताहडे चाउम्मासियं, सागारियपिडुहसिय उदउत्ताहडे पुढविसचितपरपरणिक्खिते व
पवमासियं, तस्मि चैव वयणसंयवसुत्ते छम्मासियं ।

भावतो मदतिवत्तरउभक्खसाण पडिसेवणातो मासदुमासादी भावत्तो भवति, अहवा - भावओ
इमा चउभंगासेवणा

जे भिक्खू मासिए मासियं, मासिए अणेगमासियं ।

अणेगमासिए मासियं, अणेगमासिए अणेगमासियं ।

एवं मासस्स दुमासादिहाणेहि वि सह चउभंगा कायव्वा ।

पच्छा दुमासादियाण वि सट्ठाण-परट्ठाणेहि चउभंगा कायव्वा ।

एत्थ पण्णरस चउभंगा भवति ।

पढमचउभगे वितियचउभगादिसु सीसो इमं पुच्छति -

जहमण्णे बहुसो मासियाइ सेविच्चु बुड्ढती उवरिं ।

तह हेट्ठा परिहायति, दुविहं तिविहं च आमं ती ॥६४२३॥

दुविहं च दोसु मासेसु मासो जाव सुद्धो तिविहं च ।

तिसु मासो जाव सुद्धो चसदा चतुसु पंचसु छसुत्ति एमेव ॥६४२४॥

“जह” ति जेण पगारेण अहं मण्णापि - चित्तेमि ति (अहं) मासियं पडिसेवेत्ता बहुसो मासियाइ
मट्ठाणे पावति ति पुत्त भवति, एवं मासियं सेविक्खता उवरि एयुत्तरबुड्ढी एग दुग ति चउ जाव पारंचियं
पावति ति मण्णापि । कि वा हं मण्णे “तह” ति एतेण पगारेण मामियं पडिसेवेत्ता भिण्णमासादी “हेट्ठाहु”
ति परिहाणी भवति जाव “पणं” ति, अहवा - पारंचियी “हेट्ठाउ” ति परिहाणी जाव पणं ति,
“दुविहं” ति एवं दोमासियाठाणे वि पडिसेवेत्ते उवरि बुड्ढी जाव पारंचियं पावति, हेट्ठाओ वि मासादिपरि-
हाणी जाव पणं ति, पारंचियाओ जाव पणं ति, तिविहं चेति तिसासिए एव उवरिहत्ती बुड्ढी हेट्ठाहुति व
परिहाणी भाणियव्वा, चसदाओ एवं सत्त्वपच्छित्तठाणेसु कायव्व ।

आयरिओ भणति - “ग्राम” ति,, ग्रामशब्द अनुमतार्थो द्रष्टव्यः ॥६४२४॥

पुणरप्याह चोदकः -

केण पुण कारणेणं, जिणपण्णत्ताणि काणि पुण ताणि ।

जिण जाणंते ताइं, चोदग पुच्छा बहुं णाउं ॥६४२५॥

चोदगो पुच्छति - केण कारणेण मासादीठाणे पडिसेवेत्ते पच्छित्तस्स बुड्ढी हाणी वा भवति ति ।

आयरिओ भणति - जिणपण्णत्ताणि बुद्धिहाणि भावकरणाणि ।

सीसो पुच्छति - काणि पुण ताणि भावकरणाणि ।

आयरिओ भणति - रागदोसाणवस्सविबुड्ढी मामियठाणपडिसेवणाते वि पच्छित्तबुड्ढी भवति,
पच्छा वा हरिसायतस्स पच्छित्तबुड्ढी भवति, सिंहव्यापादकस्येव । तेसि चैव रागदोसादिहाणीए पच्छित्ते
वि हाणी दट्ठवा, पच्छा वा हा उट्ठकतादीहि भवति, भृगालव्यापादकस्येव ।

पुणो नोदको पुच्छति — जे मासिगदिठाणा पच्छित्ता ते आलोयकमुहातो चेव जे पुण रागादि-
भाववद्दिहाणिकण्णा ते कहं उवलभति ?

आयरिओ भणइ — जिणा जाणंति ताहं, ते य जिणा केवल-ओहि-मणपजव-चोइस-दस-णवपुक्की य,
एते गियभा जाणति — रागादिहं जहा बुद्धी हाणी वा भवति, जं वा पच्छित्तमावणो, जेण वा विसुम्भति
पणभासित्तिहाणपडिसेवणाए वि जाव पारंशियं देति, पारंशियावत्तिठाअपडिसेविए वि परिहाणीए जाव
पणं देति ।

पुणो चोदगाह — जे छउमत्था कणपकणववहारघारी ते कि न जाणंति ?, बुद्धिहाणिकण्णा
वा पच्छित्तं कहं वा जाणंति ?

आचार्याह — ते वि जाणति, तदुधइहुसुयणाणवमाणतो तिवबुत्तो आलोयावेउं मासियमावणो
बहुसु वा मासिएसु मासियं चेव देति ।

एत्थ पुणो चोदग पुच्छा — “बहु मासिय” ति जं भणइ, एयमहं णाउमिच्छामि ॥६४२४॥

आचार्याह —

तिविहं च होइ बहुगं, जहण्णगं मज्झिमं च उक्कोसं ।

जहण्णेण तिण्णी बहुगा, पंचसयुक्कोस चुलसीता ॥६४२६॥

जे सुत्तणिबद्धा मासिया ते पडुच्च बहु तिविहं जहममज्झिमुक्कोसं, तत्थ जहणं तिणि मासा,
उक्कोसेण पंचमाससया चुलसीया, जे पुण चउरादी ठाणा पंचसया तेसीया, एयं मज्झिमं बहु ॥६४२६॥

इदाणि जहा पच्छित्तं दिज्जति तहा भणति, तहा मासिकादि जाव छम्मासा ताव विणा
ठवणारोवणाए सुत्तेण व दिज्जति, सप्तमासिगादिगा पुणो मज्झिमा पच्छित्ता ।

उक्कोसं च जहा दिज्जति तहा इमेहिं दारेहिं भणति —

ठवणासंचयरासी, माणाइ पभू य केत्तिया सिद्धा ।

दिद्धा णिसीहनामे, सव्वे वि तहा अणाचारा ॥६४२७॥ दार.

“ठवणासंचय” ति दारं, ठविज्जतीति ठवणा, ठवणगहणाओ य आरोवणा एत्थ गहिता, आ
मज्जायाए रोवणा मासादि जाव छम्मासियादाण भित्थयः ।

“संचय” ति ठवणारोवणापगारेहिं अण्णोणमासेहितो दिणो संचिणितो जम्हा छम्मासा दिज्जति.
तम्हा छहं मासाणं संचय ति सण्णा । अथवा — “संचय” ति ठवणारोवणाहिं जे संचयमासा तद्दा ते
ठवणारोवणपगारेण छम्मासा काठं दायव्वा ॥६४२७॥

इमेसि पुरिसाणं —

बहुपडिसेविय सो या-वि अगीओ अवि य अपरिणामो वि ।

अहवा अतिपरिणामो, तप्पच्चयकारणा ठवणं ॥६४२८॥

जेण अगीयत्थपुरिसेण बहुमासिठाणं पडिसेवितं अणं च अपरिणामो अथवा — सो चेव
अगीयत्थो अतिपरिणामो, एतेसि दोण्ह वि पुरिसाण पच्चयकरणत्थं ठवणारोवणपगारेण छम्मासियपच्छित्तं
दिज्जति ॥६४२८॥

जे पुण एतेसि पडिवक्खभूता पुरिसा तेसि णो ठवणप्पगारेण दिज्जति ।

जम्भो भण्णति -

एगम्मिऽणंगदाणे, णेगेसु य 'एगणंगेगणा वा ।

जं दिज्जति तं वेण्हति, मीयमगीओ तु परिणामी ॥६४२६॥

चउमंगविगप्पेण पच्छित्तदाणपढमभगे इमे मीयो अगीसो परिणामगो अपरिणामगो अतिपरिणामगो य सव्वे सम्मं पडिवज्जति, वितियादिभंगेसु गीतो अगीतो वा परिणामगो एते दो वि जं जहा दिज्जति तं तहा सम्मं पडिवज्जति ।

चोदगाह - "पच्छिमो णणु पढमसरिसो जतो अणंगेसु अणंगे चैव दिण्णा सव्वे इत्यर्थः", ।

आचार्याह - ण एवं, सुणेहि - जह महुतधण्णारीसीतो वस्स ति धण्णकुडवे दायव्वे, जं तत्थ कुडवे ठाति तं दिज्जति, जं तत्थ न मायति तं परिसड्ढ, एवं सत्तादिमासपडित्तेवणाए ण सत्तादिमासो चैव दिज्जति छम्मा-साहिमं पडिसाहिता "अणंगे" ति छम्मासा दिज्जति, अववादाओ चउतुट्ठीए पंचमासा दिज्जति, एवं णो पढममंग इत्यर्थः ॥६४२६॥

अगीतो जो अपरिणामगो सो ततियभंगे इमं आसंकेज्ज -

बहुएसु एगदाणे, सो च्चिय सुद्धो ण सेसगा मासा ।

अपरिणते तु संका, सफला मासा कता तेणं ॥६४३०॥

जइ बहुसु मासिएसु पडिमेविएसु थेवं एक्को मामो दिज्जति तो सो अगीतो अपरिणामगो चित्तेणा-संकिज्जं भासेज्ज वा ओ मे दिण्णा मामो सो सुद्धो, सेसा जे मासा ते मे न सुद्धा, तेण तस्स आसंकरिहरणत्थं सव्वमासाण ठवणारोवणप्पगारेण सम-विमम-दिवसमङ्गणेण सफलीकरणं कयं इत्यर्थः ॥६४३०॥

वितियभंगेसु ठवणारोवणमंतरेण पच्छित्तदाणेण इमे दोसा -

ठवणाभेत्तं आरोवण ति इति णाउमतिपरीणामी ।

कुज्जा तु अतिपसंगं, बहुगं सेवित्तु मा वियद्धे ॥६४३१॥

"ठवण" ति असम्भावठवणा, "मात्रा" ण २ः तुल्यवाची, असम्भावठवणाए तुल्यं अपरमाथंभूतं जं तं भणति ठवणाभेत्तं, तं च "आरोवण" ति इति उपप्रदर्शने, एवं अतिपरिणामगो चित्तेजा भासेज्ज वा । अथवा - प्रकृष्येयवणाए वा पसंगं करेज्ज, अउट्ठियाए वा बहुमासादिदाणे सेवित्ता आलोएज्ज, जम्हा वितियभंगे बहु पच्छित्तं ततियभंगे थोवं इत्यर्थः । जम्हा एते दोसा जम्हा ठवणारोवणप्पगारेण सव्वे मासा सफलं करेत्ता छम्मासे दिज्जा से ॥६४३१॥

इदानीं ठवणारोवणप्पमारो भण्णति ।

तस्सिमे चउरो भेदा -

ठवणा वीसिग पक्खिग, पंचिम एगाहिता य णायच्चा ।

आरोवणा वि पक्खिग, पंचिम तह पंचिगेगाहा ॥६४३२॥

१ एगदाणेभंगे (व्यवहार भाष्य) ।

ठवणाठाणा चउरो, तेसि आइजेवा इमे - वीसिया ठवणा, पक्खिया ठवणा, पंचिया ठवणा, एगाहिया ठवणा । आरोवणा वि पक्खियारोवणा, पंचियारोवणा, एगाहिया य आरोवणा ॥६४३२॥

ण जज्जाए का आरोवणा, काय ठवणति, कस्स जाणणत्थं इमं भण्णति -

वीसाए अद्धमासं, पक्खे पंचाहमारुहेज्जाहि ।

पंचाहे पंचाहं, एगाहे चेव एगाहं ॥६४३३॥

वीसाए ठवणा पक्खिमादी आरोवणा, पक्खियाए ठवणाए पंचियादी आरोवणा, पंचियादी ठवणाए पंचियादी आरोवणा, पक्खियाए ठवणाए एगाहियादि आरोवणा ॥६४३३॥

जहण्णुक्कोसदरिसणत्थं इमं भण्णइ -

ठवणा होति जहण्णा, वीसं राइंदियाइ पुण्णाइं ।

पण्णइं चेव सयं, ठवणा उक्कोसिया होति ॥६४३४॥

सव्वजहण्णा ठवणा वीस राइंदिया, ततो अण्णा पणवीसइं राइंदिया, ततो अण्णा तीसं राइंदिया, एवं पंच पंच बुद्धीए जेयव्वं जाव तीसइमा उक्कोसिया ठवणा पण्णइं राइंदियसत्त, ॥६४३४॥

एवं आरोवणाए वि इमाओ -

आरोवणा जहण्णा, पनरसराइंदियाइ पुण्णाइं ।

उक्कोसं सट्ठसयं, दोहि वि पक्खेवओ पंच ॥६४३५॥

“दोहि वि” ति ठवणासु पंच पंच उत्तरं करंतेण जहण्णाओ उक्कोसा पादेयव्वा इत्यर्थः ॥६४३५॥

आदियाण तिण्हं ठवणारोवणाण इमं उत्तरलक्खणं -

पंचण्हं परिवुद्धी, ओवद्धी चेव होति पंचण्हं ।

एतेण पमाणेणं, नेयव्वं जाव चरिमं ति ॥६४३६॥

जो पुण एक्किया ठवणारोवणाओ तेसि उत्तरं एक्को चेव परिठवति, उवक्खरिं बुद्धि उत्तरं ओवद्धि ति तीसत्तिमाओ ठाणाओ हेट्ठा पच्छाणुपुब्बीए हाणी जाव पढमठानं ति । एतेणं पंचयेण वा प्रमाणेन ताव नेयव्वं जाव चरिमं ति, पच्छिमा ठवणारोवणातो उक्कोसा इत्यर्थः । एकैकेके ठवणाठाणे उक्कोसारोवणा जाणियव्वा ॥६४३६॥

लक्खणं इमं -

जाव ठवण उहिट्ठा, छम्मासा ऊणगा भवे ताए ।

आरोवण उक्कोसा, तीसे ठवणाए णायव्वा ॥६४३७॥

छण्हं मात्तणं असीयं दिवससत्तं भवति, तं ठवेसा पच्छा जाए ठवणाए पत्थइ अतिल्लं आरोवणं जाणियत्तए तं इच्छियठवणं असीताओ दिवससयाओ सोहेज्जा, जं तत्थ सेसं सा तीसे ठवणाए उक्कोसा आरोवणा भवतीत्यर्थः । जहा वीसियठवणा असीयसत्तातो मुच्चा सेसं सट्ठं सत्तं, तं वीसितठवणाए उक्कोसिया आरोवणा, पक्खिया से जहण्णा । सेसाओ से अट्ठावीसं अजहण्णुक्कोसा भवति । एवं असीतातो सत्ताओ पणुवीसिया ठवणा सोहिहा सेसं पणपणं सयं पणुवीसियाए ठवणाए उक्कोसिया आरोवणा भवति, वीसिया से जहण्णा । सेसाओ से सत्तावीसमजहण्णुक्कोसिया । एवं तीसादिषु वि उक्कोसारोवणलक्खणं नेयव्वं ॥६४३७॥

इदाणि उक्कोसठवणालवखणं -

आरोवण उद्दिट्ठा, छम्मासा ऊणगा भवे ताए ।

आरोवणाए तीसे, ठवणा उक्कोसिया होति ॥६४३८॥

जहा पक्खिता आरोवणा भसीतातो सतामा मुद्धा, सेस पणसट्ठं सतं तं पक्खियआरोवणाए उक्कोसा ठवणा भवति, बीसिया से जहणा, सेसं भट्ठावीसं भजहुण्णुक्कोसा भवति ।

एवं बितिए आरोवणाठाणे भावते मंतित्वं तीसइमं ठाणं फिट्ठति ।

सतिए आरोवणाठाणे भावते एगुणतीसतिमं ठवणाठाणं फिट्ठति, एवं एक्केक्के उवरि उवरि आरोवणाठाणे ठवणाणं भोवड्डीए एक्केक्कं ठाणं हुसेजा, जाव सट्ठिसयारोवणाए बीसिया चेव एक्का ठवणा भवतीत्यर्थः ॥६४३८॥

पढमे ठवणारोवणठाणे ठाणसंखा इमा -

तीसं ठवणाठाणा, तीसं आरोवणाए ठाणाई ।

ठवणाणं संवेहो, चत्तारि सया य पण्णहा ॥६४३९॥

तीसं ठवणादि काउं पंचुत्तरवुड्डीए जाव पणसट्ठसतं ताव तीसं ठवणाठाणा भवति, आरोवणासु वि पण्णरसाइ काउं पंचुत्तरवुड्डीए चेव जाव सट्ठिसयं ताव तीसं चेव आरोवणाठाणा भवति, एतेसि ठवणारोवणाणं परोप्परं "संवेहो" ति संजोगा, तेमि संजोगाणं संखा इमा - चत्तारि सता पंचसट्ठा भवति ।

कह ? उचयते - बीसियठवणाए पण्णरसादियारोवणाठाणा जाव सट्ठ पयं ताव छम्मासाणयण-कारणं कज्जति ।

एवं बीसियठवणाए तीसं आरोवणमंवेहा भवति ।

एवं पणुकीसियठवणाए पण्णरसादिया आरोवणाठाणा णेयव्वा, जाव पणपणसयारोवण ति, एत्थ एक्कं आरोवणाठाणं हुसितं ।

एवं तीसियठवणाए पण्णरसादि णेया जाव पण्णासं सतं, एत्थ दो आरोवणाठाणा हुसिता ।

एवं उवरिठवणाए आरोवणा भोवड्डीए एक्केक्कं ठाणं हुसेजा, जाव पणसट्ठिसयठवणाए एक्का चेव पण्णरसिया आरोवणा भवतीत्यर्थः ॥६४३९॥

एयस्स ठवणारोवणसंवेहस्स संवग्गफलाण य णिमित्तं आयरिएहि इमो सुहुमो सेट्ठिग-उवाओ उद्दिट्ठो -

गच्छुत्तरसंवग्गे, उत्तरहीणम्मि पक्खिखे आदी ।

अंतिमधणमादिजुयं, गच्छद्दगुणं तु सच्चवणं ॥६४४०॥

एतीए गहाए इमा परिभासा गणियकरणं च, जम्हा पढमं आरोवणाठाणं संवेहओ एक्कं लभति तम्हा तं चेव एक्कं आदी, जम्हा एक्कुत्तरवुड्डीए बितिमादिआरोवणाठाणा सव्वे लभति तम्हा पढमठवणाए उत्तरं पि एक्को चेव, जम्हा य पढमठवणाठाणवुड्डीए तीसं ठाणा भवति तम्हा पढमठवणाए तीसं गच्छो ।

बितियाए ठवणारोवणाठाणे तेत्तीसं गच्छो ।

सतियाए ठवणारोवणाठाणे पणतीसं गच्छो ।

च उत्थे ठवणारोवणाठाणे पण्णसतीसं सयं गच्छो ।

एतेसि गच्छाणं इमो गणयणोवागो — ठवणारोवणविजुत्ता छम्मासा पंचमागभत्तीया जे रूपजुता ठवणापदा तेसु चरिमादेसभागिको । छम्मासदिवसाणं असीतसयं तं पढमेहि ठवणारोवणदिवसेहि विजुत्तं कब्बति, सेसस्स पंचहि भागो हीरइ जे तस्य लद्धा ते रूपजुता कगा, जावतियाते एवतिया पत्तेयं ठवणारोवणपदा भवति । एतं करणं आदित्तेसु ठवणारोवणठागैसु । चरिमे पुण ठवणारोवणठागे एसेव भादेशो, णवरं एकेण भागो हायव्वो ति ।

इदाणि गणयकरणं एक्को आदी, एक्को उत्तरं, तीसं गच्छो । गच्छो उत्तरेण संविम्वउ त्ति — गुणितो तीसा चेव जाता “उत्तरहीणे” त्ति — तीसाओ एक्को उत्तरं पाडितं जाया अउणत्तीसा । तम्मि आदि पक्खित्ता एक्को जाता तीसा चेव, एवं बीसियाए ठवणाए, अंतं घणं सह आदित्तेहि लद्धंति वुत्तं भवति । आदी एक्को सो तीसाए पक्खित्तो जाता एक्कतीसा । “गच्छद्ध” पण्णरस वैहि गुणिया एक्कतीसा जाता चत्तारि य सया पण्णट्ठा, पढमे ठवणारोवणट्ठाणे तं सब्वधणं ति । ॥६४४०॥

अधवाऽयमन्यो विकल्प :-

दो रासी ठावेज्जा, रुवं पुण पक्खिवेहि एगत्तो ।

जुत्तो य देइ अद्धं, तेण गुणं जाण संकलियं ॥६४४१॥

दो रासि त्ति उवरि हेट्ठा य, तीसे ठवियाए एककत्थ रुवं पक्खितं जो रासी तस्य “अद्ध” देति — तस्स अद्धं येत्तव्वं, तेणऽद्धेण इतरो रासी गुणयन्वो, एवं वा सब्वसंवेधफलं देति ॥६४४१॥

इदाणि सब्वट्ठवणारोवणाण दिवसमासाण य लक्खणं सब्वणुवातो भण्णति —

दिवसा पंचहि भविता, दुरूवहीणा हवंति मासाओ ।

मासा दुरूवसहिता, पंचगुणा ते भवे दिवसा ॥६४४२॥

अप्यार्थः — “दिवस” त्ति बीसियठवणा दिवसा पण्णरसादियारोवणादिवसा य ।

इमं णिदरित्तणं — बीसियाए ठवणा पंचहि भाए हिते भागलद्धा चत्तारि, तातो दोणि रुवा तेडिया जाया दोणि मासा, पण्णरसियाए आरोवणाए पंचहि भागेहिते भागलद्धा तिणि मासा ते दुरूवहीणा हया जाओ एक्कमासो ति — ।

इमं दिवसलक्खणं — एते वि य मासा लद्धा ते दुरूवसहिया काउं पंचगुणा कायव्वा, ताहे रासेहितो दिवसमां पुब्बिलपमाणसमं आगच्छइ, एवं सेसानु वि सज्जानु ठवणारोवणानु कायव्वं ॥६४४२॥

इयाणि जहा ठवणाहि छम्मासा काउ पच्छित्तं दिज्जति तहा भण्णति

पढसा ठवणा बीसा, पढसा आरोवणा भवे पक्खो ।

तेरसहिं मासेहिं, पंच तु राइंदिया भोसो ॥६४४३॥

बीसियठवणा पण्णरसियारोवणाहि एयाओ कतिहि मासेसि सेइएहि णिक्कणातो होज्ज ? दिट्ठे तेरसहिं,

कहं ? उच्यते —

ठवणारोवणदिवसमाणाउ विसोहिंनुं जं सेयं । इच्छिपारोवणाए भाए असुज्जमाणे खिवे भोसो । ऋण्णमासाणं असीतं दिवसतं भवति, तम्रो बीसिया ठवणा पण्णरसिया य आरोवणा सोहेयव्वा, सेसं

पण्यालस्यं, एयस्स पण्णरसियाए आरोवणाए भागो दायव्वो, जम्भो अद्दं भागं न देति त्ति ततोभोसो पक्खियव्वो, इमं भोसपक्खेवलक्खणं — “जितियमेत्तेण सो सुद्धं भागं पयच्छए रासी, तत्तियमेत्तं पक्खिव्व भकसिणरोवणाए भोसय्य” । भोस त्ति वा समकरणं त्ति वा एणद्धं, एत्थ पंचज्जभोसा पक्खिता, पच्छा भागे हिते भागलद्धं दसमासा, एत्थ इमं करणलक्खणगाहापुक्काद्धेण भणइ — आरोवणा जतिभो ततिहि गुणते करेज्ज भागलद्धा । जं एत्थ “पढम” त्ति — आरोवणा ततो एककेण गुणिता दस दस चैव भवति, एत्थ — ठवणारोवणासहिता संचयमासा भवति, “एवतिय” त्ति — पुव्वभणितमासाण य करणेण ठवणाए दो मासा आरोवणाए एक्को भासो, एते दससु पक्खिता जाया तेरस संचयमासा ।

इदार्णि इच्छामो गाउं “कतो किं गहिंयं ? त्ति, ठवणाभासे ततो फेडे” ।

सीसो पुच्छइ — तेरसण्हं संचयमासाणं किं कतो मासाभो गहिंयं जेण छम्मासा जाया ? कहुं, वा करणं कतं ?

भणति — तेरसण्हं मासाणं दोणिं ठवणाभासा फेडिता, तत्थ सुद्धा सेसा एक्कारस मासा जाता, एत्थ करणं इमं — “जतिसु ठवणाए भासतत्तियभागं करेइ त्ति पंचगुणं”, एत्थ आरोवणाए एक्को भासो एक्कभागतं एक्कारस चैव, ते त्तिपंचगुणं त्ति कायव्वा, तिणिं य पंच पण्णरस, तेहि एक्कारसगुणिता जाता पंचसट्ठु सयं, एत्थ दोणिं ठवणाभासा पुव्वकरणेण दिवसे काउं पक्खिता बीसं, जातं पंचासीतं सयं, एत्थ पंचराहिया भोसो कभो, सेसं असीयं सयं ।

अथवा — किंचि विसेसेण एयं चैव ग्रहण्यहा भणति — तेरसण्हं संचयमासाणं इच्छामो गाउं एक्केक्काभो मासाभो किं गहिंयं जेण छम्मासा ? जतो भणति — तेरसण्हं मासाणं तिणिं ठवणारोवणाभासा फेडिता जाता तत्थ सुद्धा सेसा दस मासा, एएहितो एक्केक्काभो मासाभो अद्दमासो अद्दमासो गहितो, एते पंच मासा, दोहि ठवणाभासेहितो दस दस राहिया गहिता, आरोवणाभासो एक्को, ताभो पक्खो गहितो, पंच भोसो कभो । कः प्रत्ययः ? एत्थ गाहा — “जज्झमि भवे आरोवणा” गाहा, एसा पढमठवणा, पढममणेण करणलक्खणं भणियं, आरोवणभागलद्धमासाणं पण्णरसहिं गुणियव्वा, ते दस मासा पण्णरसहिं गुणिता जाता पण्णामुत्तरसयं, एतत्तो पंचज्जभोसा सीहितो सेसं पण्यालं मतं । एत्थ ठवणारोवणादिवसा पक्खिता जाय असीयं सयं ॥६४४२॥

पढमा ठवणा बीसा, चितिया आरोवणा भवे बीसा ।

अट्टारस मामेहि, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४४३॥

एसा ठवणारोवणाभो असीयसयाभो सीहिया सेसं चत्तालीससयं, एयस्स बीसियाए आरोवणाए भागे भागलद्धं सत्त मासा आरोवणा, पुव्व करणेण “दोहि मामेहि णिप्फण” त्ति काउं सत्तमासा दोहि गुणियव्वा जाता चोदसमासा, “दिवसा पंचहिं भइया” गाहा ॥६४४३॥

एतेण करणेण दो ठवणाभासा दो य आरोवणाभासा णिप्फणा, एए चत्तारि वि चोहसण्हं मेलिता जाता अट्टारस मासा, कसिणा नाम जत्थ भोसो गत्थि । “कतो मासातो किं गहिंयं” त्ति एत्थ लक्खणं जति एक्कातो मासातो णिप्फणा आरोवणा तो सेवियमासेहितो ठवणारोवणाभासा सोहेयव्वा, अह दुगादि-भासेहितो णिप्फणा आरोवणा तो सेवियमासेहितो ठवणामासा चैव सोहेयव्वा णो आरोवणाभासति । इमा य चितियारोवणा दोहि मासेहि णिप्फण त्ति काउं अट्टारसण्हं मासाणं मज्झातो दोणिं ठवणाभासा सोहिता,

१ मा० आरोवणा जति मासा तत्तिभागं तं करेति पंचगुणं ६४८४ । २ मा० आरोवणा जइ मासा, सइभागं तं करेति पंचगुणं ६४८४ । ३ मा० ६४८५ ।

सेसा सोलस मासा । “दोहि मासेहि आरोवणा णिष्फण्ण” त्ति काउं सोलस दुहा कायव्वा, एक्को अट्ठो उवरि वित्तिओ अट्ठो हेट्ठा ।

हि कारणं एवं कञ्जति ?, उच्यते अत्रो इमं मण्णति -

“जतिभि भवे आरुवणा, तति भागं तस्स पण्णरसहि गुणिए ।

सेसं पंचहि गुणिए, ठवणदिणजुत्ता उ छम्मासा” ॥

पढमातो अट्ठगातो पक्खो पक्खो गहितो, वित्तियातो अट्ठगातो पंच पंच राइदिया गहिता, षवणमासेहितो दस दस राइदिया गहिता ।

कः प्रत्ययः ? उच्यते - “जइभि भवे आरुवणा” गाहा, जे संचयमासातो ठवणमाससुद्धा जइथो आरोवणा आरोवणातो वा जति मासा णिष्फण्णा तत्तिमागा कञ्जति, वित्तियारोवणा दो वा आरोवणामास त्ति तेण सोलसमासा दुहा कत्ता अट्ठ एत्थ एककम्मि अट्ठो पण्णरसच्छित्तराइदियागहिय त्ति पण्णरसगुणो कतो उ जातं वीसुत्तरं सयं । वित्तियट्ठगाओ पंच पंच गहिय त्ति पंच गुणितो जातो चत्तालीसा, चत्तालीसा वीसुत्तरे सते पक्खित्ता जातं सट्ठसयं, एत्थ अवणीयं ठवणमासाणं दोव्ह दस दस राइदिय गहिय त्ति ते वीसं पक्खित्ता जायं असीयसयं ॥६४४४॥

पढमा ठवणा वीसा, तत्तिया आरोवणा उ पणुवीमा ।

तेवीसा मासेहिं, पक्खो तु तहिं भवे ओमो ॥६४४५॥

एथाओ ठवणारोवणाओ असीयसताओ सुद्धा, सेसं पण्णतीसं सयं । एयस्स पणुवीसानेवणाए भागो हायव्वो, जम्हा सुद्धं भागं ण दैति तम्हा पक्खं पक्खित्ता भागलद्धा छम्मासा, तिहि मासेहि आरोवणा णिष्फण्णा तम्हा छम्मासातिगुणा कत्ता जाया अट्ठारस मासा, ठवणारोवणमासपुव्वकरणेण उप्पाएत्ता तत्थेव पक्खित्ता जाता तेवीसं संचयमासा ।

एत्थ इच्छामो णाउं “कतो मासाओ कि पच्छित्तं गहियं” ? उच्यते - सेवितमासेहितो दो ठवणामासा सोहिया, सेसा एककवीसं मासा, एते तिहा ठविज्जति तिन्निसत्तगा पूजा कया तत्थ पढमपुंजातो पक्खो पक्खो गहितो, अरहेहि दोहि सत्तगपुजेहि पंच पंच राइदिया गहिया । दोहि ठवणामासेहितो दस दस राइदिया गहिया । कः प्रत्ययः ?, पढमसत्तगं पण्णरसगुणं काउं पक्खो सोहेयव्वो, सेमं णउती, सेसा दो सत्तगपुंजा मेलिया चउदस भवति, एते चोदस पंचगुणिया सत्तरी हवति, सत्तरी णउतीए मेलिया सट्ठं सत्तं भवति, एत्थं वीसं ठवणादिवसा पक्खित्ता जातं असीतं सत्तं ॥६४४५॥

एवं एया गमिया, गाहाओ होति आणुपुव्वीए ।

एएण कमेण भवे, चत्तारि सया उ पक्खट्ठा ॥६४४६॥

एवं वीसियठवणं अणुयतेण उवहरि आरोवणाए पंच पंच पक्खिवत्तेण णेयव्वं जाव अत्तिमा आरोवणा, एयासु इमं करणविहाणं कायव्वं - असीयातो दिवससयाओ ठवणारोवणदिवसा सोहेयव्वो, पच्छा सेतस्स इच्छिआरोवणाए भागो हायव्वो, जइ सुद्धं भागं ण देइ तो जावति ण सुअइ नावत्तिओ ओसो पक्खियव्वो, पच्छा भागं हिते भागलद्धा मासा जइहि मासेहि आरोवणा णिष्फण्णा तत्तिहिय भागलद्धा मासा गुणयव्वो, ठवणारोवणमासा तत्थेव पक्खियव्वो । एवं पडिसेवणामासम्मं जाणियव्व । एत्थ जं इच्छति णाउं कतो मासाओ कि गहियं त हे संचयमासेहितो ठवणा सोहिया सेसा जे म.सा ते जइहि मासेहि आरोवणा णिष्फण्णा तदए पुंजे करेति, तेसु एक्कातो पुंजातो अट्ठमासो अट्ठमासो गहिओ, तं गुण पण्णरसहि गुणं, सेसा जे पुंजा ते एक्केहि मिलित्ता तेसु एक्केवकातो मासातो पंच पंच राइदिया गहिया, एवं सव्वत्थ

१ गा० ६४८५ ।

इयातेउं कायव्वं, एते दिणा भासीकता परोपरमासाण मेलियव्वा, जइ भोसो पक्खित्तो तो सोहेयव्वो, ठवणामासा एत्थेव पक्खियव्वा एवं छम्मासा भवति ।

कः प्रत्ययः ? पडिसेवणागिमित्तं जातो पुंजातो अद्धमासो गहिओ तं पुंजं पण्णरसहिं गुणिते सेसा पुंजा एकं वा जावतियं गहियं तावतिण गुणेता तत्थेव पक्खिवियव्वा, जति भोसो पक्खित्तो तो सोहेयव्वो, सेसठवणामासो दुल्लवसहिओ काउं पंचहिं गुणेता ते दिवसा पक्खियव्वा ।

एवं असीतं दिवससत्तं भवति ।

एव पणुवीसियाए ठवणाए पक्खियादिआरोवणातो कायव्वातो जाव पणपणं सत्तं ।

एवं तीसियाए वि ठवणाए पक्खियादियारोवणाओ जाव पण्णासं सत्तं भवति ।

एवं ठवणाओ पणगवड्डीए गेयव्वाओ जाव चरिमदुवणा आरोवणाओ पुण पणगहाणीए हावियव्वाओ जाव पक्खिया आरोवण ति । एयाओ सव्वाओ एतेण पुव्वभणियलक्खणेण पुहत्तिया काउं चत्तारि सया पण्णट्ठा गाहाण कायव्वा ॥६४४६॥ इति पठमं ठवणारोवणट्ठाणं सम्मत्तं ।

इदाणि बितियं ठवणारोवणट्ठाणं भण्णति --

दो रासी ठावेजा, रुवं पुण पक्खिवेहि एगत्तो ।

जुत्तो य देइ अद्धं, तेण गुणं जाण संकलियं ॥६४४७॥

तेत्तीसं ठवणपदा, तेत्तीसारोवणाए ठाणाइं ।

ठवणाणं संवेहो, पंचेव सया तु एगट्ठा ॥६४४८॥

कहं तेत्तीसं ठवणारोवणट्ठाणा भवन्ति ? उच्यते असीयातो दिवससत्तातो पठमा पक्खिया-ठवणा, पठमा य पंचिया आरोवणा, एया सोहेता सेसस्स पंचहिं भागो, भागलट्ठं बत्तीसा, तत्थ रुवं पक्खित्तं गुणियं भवन्ति, एस गच्छो एक्को आदी एक्को उत्तरं "गच्छुत्तर" गाहा ॥ (३० २०—६४४९) पूर्ववत् ॥ तेत्तीसं काउं पंचसया एक्कसट्ठा भवन्ति ॥६४४८॥

पठमा ठवणा पक्खो, पठमा आरोवणा भवे पंच ।

चोत्तीसा मासेहिं, एसा पठमा भवे कसिणा ॥६४४९॥

असीयाओ सयाओ एया ठवणारोवणाओ सोहेता सेसस्स पंचहिं भागो, भागलट्ठा बत्तीसं मासा, आरोवणा एक्काओ मासाओ गिण्फण्णति काउं एककेण गुणिया, एत्तिया चेव, पण्णरसियाए ठवणाए पंचहिं भागे भागलट्ठं तिणि मासा, ते दुल्लवहीणा कया जाअं एक्को मासो । पंचियाए वि आरोवणाए पंचहिं भागो भागलट्ठं एक्को मासो, एत्थ णत्थि दुल्लवहीणं तहा वि एत्थ मासो चेव वेप्पति, एए दो वि ठवणारोवणामासा बत्तीसाए मेलिया जाया चोत्तीसं मासा ।

इच्छामो नाउं कत्तो किं गहियं ? बत्तीसाए मासेहिं पंच पंच राइविया गहिया, ठवणारोवण-मासेहितो ठवणारोवणदिवसा गहिया ।

कः प्रत्ययः ? बत्तीसमासा पंचहिं गुणिया काउं ठवणारोवणादिवसा पक्खित्ता असीयं सत्तं भवति । एक्कं वा ठवणामासं फेडित्ता तेत्तीसं पंचगुणा कायव्वा, ठवणादिवसजुत्ता य छम्मासा भवन्ति ॥६४४९॥

१ पट्ठोउया इत्थपि पाठः ।

चदमा ठवणा पक्खो, वित्तिवा आरोवणा भवे दस ऊ ।

अट्टारसहि मासेहि, पंच य राइंदिया भोसो ॥६४५०॥

असीयातो सयाधो एयाधो ठवणारोवणाधो सोहेत्ता सेसे पंच भोसे पक्खिवित्ता दसियाए आरोवणाए भागो भागलद्धं सोलस मासा, आरोवणा एककातो मासातो णिष्फण ति काळं एक्केण गुणियं जाता सोलस वेव, पणरसियाए ठवणाए पंचहि भागो भागलद्धं तिणि दुरूवहोणा कया जातो एक्को भासो, दसियाए आरोवणाए पंचहि भागो भागलद्धं दोणि, जत्थ दुरूवहोणं न होइ भायासं वा भवति तत्थ वि [एक्को भासो नायव्वो, तेण एत्थ वि एक्को भासो, एते दो वि ठवणारोवणामासा सोलसण्हं मेलिता जाता अट्टारस संख्यममासा ।

कतो मासाओ कि गहियं ? अट्टारसण्हं म.साणं सोलसहि मासेहितो दस दस राइंदिया गहिया, ठवणारोवणमासेहितो ठवणा दिवसा बहिता ।

कः प्रत्ययः ? सोलस मासा दस गुणा काळं, पंच उ भोसो सोहियव्वो, सेसा ठवणारोवणदिवसा पक्खिता जायं असीयं सयं ।

अहवा—अट्टारसण्हं एक्कं वा ठवणामासं फेहेत्ता दसगुणा कायव्वा, भोसो पंच सोहियव्वो, ठवणादिम-सहिता छम्मासा हवन्ति ॥६४५०॥

पदया ठवणा पक्खो, ततिया आरोवणा भवे पक्खो ।

बारसहि मासेहि, एसा वितिया भवे कसिणा ॥६४५१॥

असीयातो वतातो एयाधो ठवणा सोहेत्ता सेसं पत्रासं सयं, एयम्स पणरसियाए आरोवणाए भागो भागलद्धं दस मासा, आरोवणा एककाधो मासाधो णिष्फण ति एक्केण गुणियं एत्तिवं वेव, एत्थ दोणि ठवणारोवणमासा पक्खिता जाता बारस मासा ।

कतो कि गहियं ? एक्केकाधो मासाधो पक्खो गहिमो ।

कः प्रत्यय ? बारस मासा पणरसहि गुणिया जातं असीयं सतं, एत्थ सव्वत्थ सयं महणं ॥६४५१॥

एवं एता गमिया, गाहाओ होति आणुपुक्खी ।

एएण कमेण भवे, पंचेव सया उ एगट्ठा ॥६४५२॥

एवं पक्खियं ठवणं अमुयंतेण आरोवणाए उवव्वरि पंच पंच पक्खिवित्तेण आरोवणासु एक्केवकं ठाणं परिहरितेण ताव गेयव्वं जाव वित्तीसत्तिमा आरोवण ति । ताहे बीसियं ठवणं अमुयंसेण एवं वेव गेयव्वं जाव वत्तीसद्दमा आरोवणा । एवं ठवणासु पंच पंच पक्खिवित्तेण आरोवणासु एक्केवकं ठाणं परिहरितेण गेयव्वं जाव पडोउयपुहत्तियकरणेण गाहाणं पंचसया एगसट्ठा जाता । सव्वत्थ जतीहि मासेहि आरोवणाणिष्फणा ततीहि भागलद्धं गुणेयव्वं सेसं उवउज्जिता भणियव्वं ॥६४५२॥ वित्तिपठवणारोवणं सम्मत्तं ।

इदार्णि ततियं भणजति —

पणतीसं ठवणपदा, पणतीसारोवणाए ठाणाइं ।

ठवणाणं संवेहो, छ च्चेव सया भवे तीसा ॥६४५३॥

असीतातो सयाधो पंचिया ठवणा पंचिया आरोवणा य, एयाधो सोहेय्याधो, सेसं सत्तरि सबं, एयस्स पंचहि भागो भागलद्धं चोत्तीसं रुवं पक्खित्तं जायं पणतीसं, एक्को आदिग एक्कोत्तरं पणतीसतो गच्छो । गच्छुत्तर गह्वा (उ० २०, ६४४०) पूर्ववत् गणिएण आनेयया छ सता सीसुत्तरा ॥६४५३॥

पढमा ठवणा पंच य, पढमा आरोवणा भवे पंच ।

छत्तीसा मासेहि, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४५४॥

असीतातो सयाधो पंचिय ठवणा पंचिया उ आरोवणा सोहिया सेसं सत्तरि सतं, एयस्स पंचियाए आरोवणातो भागो, भागलद्धं चोत्तीसं मासा आरोवणा एक्काधो माम्माधो णिष्फणं ति काउं एक्केन गुणिय एत्थियं चेव, पंचयाए ठवणाए पंचहि भागलद्धं एक्को मासो, जत्थ दुक्खहीणा ण होति तत्थ उ हवति सामाविय ति य वयणाधो एक्क एव मासो भवति । एवं आरोवणाए वि, दोष्णि मासा चोत्तीसाए मेलिता जाया छत्तीसं मासा ।

काओ कि गहियं ? एक्केकाधो मासाधो पंच पं । दिवसा गहिया एत्थ वि सत्त्वत्य सयं गहणं ।

कः प्रत्ययः ? छत्तीसेहि मासेहि पंच गुणियव्वा जातं असीयं सतं । ग्रहवो — छत्तीसण्हं मासाणं एक्को ठवणाभासो फेडितो, सेसा पणतीसं, ते पंचगुणा ठवणदिवसजुता छम्मासा भवति ॥६४५५॥

पढमा ठवणा पंचा, चित्तिया आरोवणा भवे दस तू ।

एगुणवीस मासेहि पंच राईदिया भोसो ॥६४५५॥

असीयाको सतातो पंचिया ठवणा दसिया आरोवणा एतातो ठवणाऽरोवणाधो सो सुद्धेता सेसं पणसद्धि सबं, एत्थ पंचज्जकोसो पक्खित्तो, जातं सत्तरि सयं, एयस्स दसियाए आरोवणाए भागो, भागलद्धं सत्तरस मासा आरोवणा, एक्केकातो मासाधो णिष्फणं ति काउं एक्केन गुणियं एत्थियं चेव, ठवणादिवसा पंचहि मइया सामावितो मासो, आरोवणातो वि एक्को मासो, एते दो मासा सत्तरसण्हं मेलिता जाता एक्कोणवीसं मासा ।

कतो कि गहियं ? ठवणाभासातो पंच राईदिया गहिया सेसेहि अट्टारसहि मासेहि एक्केकातो मासाधो दस दस राईदिया गहिता ।

कः प्रत्ययः ? अट्टारस दसगुणिता जातं असीतं दिवससतं, एतातो पंचतो भोसो सुद्धो, सेसं पंचसत्तरिसतं, पंच ठवणादिवसा मेलिता जातं असीतं दिवससतं ॥६४५६॥

पढमा ठवणा पंचा, ततिया आरोवणा भवे पक्खो ।

तेरसहि मासेहि, पंच उ राईदिया ज्जोसो ॥६४५६॥

असीतातो दिवसपतातो पंचियं ठवणं पण्णरसियं आरोवणं एयाधो ठवणाऽरोवणाधो सोहेता सेसं सद्धि सयं पंच भोसं पक्खिविंसा पक्खित्तातो आरोवणातो भागो भागलद्धं एक्कारस आरोवणा, एक्काधो मासाधो णिष्फणं ति काउं एक्केन गुणियं एत्थियं चेव पुक्खकरणेण ठवणाऽरोवणमासे करेता भागलद्धा दो मासा एते एक्कारसण्हं मेलिता जाता तेरस संचयमासा ।

कतो कि गहियं ? बारसमासेहि अट्टमासो गहिमा तेरसमासातो ठवणाभासाधो पंच राईदिया गहिता ।

कः प्रत्ययः ? बारस पण्णरसेहि गुणिता पंच भोसेहि सोहेता सेसं पंचहत्तरं सतं पंच ठवणा दिवसा मेलिता जायं असीयं सयं ॥६४५७॥

एवं एता गमिया, गाहाओ होंति आणुपुब्बीए ।

एएण कमेण भवे, ङ्ग च्चेव सयाइ तीसाई ॥६४५७॥

एवं पचियं ठवणं अमुयतेण आरोवणाए पंच पंच उवहरि पक्खितेण नेयव्वं जाव पणतीसइमा आरोवणा, ताहे पुणे दसियं ठवण काउं एवं वेद नेयव्वं जाव चउतीसइमा आरोवणा ।

एवं ठवणारोवणासु पंच पंच पक्खितेण एक्केक्कं ठाणं परिहावेतेण नेयव्वं जतीहि मासेहि आरोवणा पिप्फणा ततीहि भागलद्धं गुणियव्वं, सेसं उवउच्चित्ता नेयव्वं ॥६४५७॥ ततियठवणारोवणा-ठाणं गयं ।

इदाणि चउत्थं भणति —

अउणासीतं ठवणाण सतं आरोवणाण तह चेव ।

सोलस चेव सहस्सा, दसुत्तरसयं च संवेहो ॥६४५८॥

कहं ?, उच्यते — असीतातो दिवससत्ताओ पढमाठवणारोवणाओ एक्कियाओ सोहेयव्वाओ, सेसं अट्टहत्तरसतं, एयस्स एक्कियाए आरोवणाए भागो भागलद्धं एतियं चेव खवेण पक्खिते अउणासीतं सयं भवति ।

इयाणि संवेहकरणे इमे भणति — ‘‘गच्छुमर’’ गाहा, एक्को आतो, एक्को उत्तरं, अउणासीयं सतं गच्छो, पूर्ववत् गणिते कते भागत सोलसहस्साणि सतं च दहत्तर ॥६४५८॥

पढमा ठवणा एक्को, पढमा आरोवणा भवे एक्को ।

आसीतं माससतं, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४५९॥

असीतातो सतातो एक्किया ठवणं, एक्किया य आरोवणा सोहिता सेसं अट्टहत्तरसतं एक्कियाए आरोवणाए भागो भागलद्धं एतियं चेव । एत्थ एक्को ठवणामासो एवो आरोवणामासो पक्खितो जातं असीयं माससतं ।

काओ किं गहियं?, एक्केक्काओ मासाओ एक्को दिवसो गहिलो, एत्थ वि सव्वत्थं समगहणं ॥६४५९॥

पढमा ठवणा एक्को, वितिया आरोवणा भवे दोण्णि ।

एक्काणउतीमासेहि, एक्को उ तहिं भवे भोसो ॥६४६०॥

एयाओ ठवणारोवणाओ असीतातो सयातो सोहिता सेसं सत्तहत्तरि सयं एयस्स अट्टाए दुतियाए आरोवणाए भागो एक्कं ज्जोसं पक्खित्ता भागलद्धं एक्काणउतिमासा एत्थ ठवणामासो आरोवणामासो य पक्खित्ता जाता एक्काणउति मासा ।

कातो किं गहियं ?, ठवणा मासा एत्थवि सव्वथाहंतो एक्को दिवसो गहितो, णउतिमासेहि दो दो वि दिवसा गहिता ।

कः प्रत्ययः ?, संचयमासेहितो ठवणामासो केडितो सेसा णउतीतो दोहि गुणिया जायं असीयं सयं, एयातो एक्को सुद्धो सेसं अउणासीतं सतं, एक्को ठवणादिवसो पक्खित्तो, एत्थ जायं असीतं सतं ॥६४६०॥

पद्मा ठवणा एक्को, ततिया आरोवणा भवे तिभि ।

इगसट्टीमासेहि, एक्को उ तहिं भवेओसो ॥६४६१॥

तहेव काउं जाव एक्कसट्टि संचयमासा ।

काओ कि गहियं ? उवणामासातो एक्केवको दिवओ गहिओ, सेसेहि सट्टीए मासेहि तिणि
तिणि राइ दिया गहिया ।

कः प्रत्ययः ? एक्कसट्टिमासेहि एक्को ठवणामासो फेडितो सेसा सट्टि, ते तिहि गुणिता जातं
असीयं दिवससत्तं एक्को ओसो सुद्धो, सेसं एगुणासीतं यत्तं, एक्को ठवणा दिवसो पक्खित्तो जायं असीयं
सत्तं ॥६४६१॥

एवं खलु गमिताणं, गाहाणं होति सोलससहस्सा ।

सतमेकं च दसहियं, नेयव्वं आणुपुव्वीए ॥६४६२॥

एवं एक्कियं ठवणं अनुयंतेण आरोवणाए उवरुवरि ठाणे एक्कमारोवयंतेण ताव गेयव्वं जाव
चरिमा अउणासीयसारोवणा ।

एवं दुतिगादिठवणासु वि एगादि आरोवणा गेयव्वा ता जाव जस्स चरिमं ति । एयाओ सव्वाओ
पुव्वकयविहिणं कायव्वा जाव एक्केकपाहा (हो) इगणिबद्धरासिगगाहाणं सोलस सहस्सा सत्तं च दसुत्तरं पुणं
ति । एयासु ठवणारोवणासु मासकरणं करंतेण एगादियासु जाव चउरी पंचसु भागं अदेते मासो चैव चेतव्वो ।

एवं पण्णरसगादिसु दुक्खे असुज्झते दसादिसु य दुक्खे असुद्धे आमासे जाते एक्को चैव मासो
चेतव्वो, जाव चउदस, पण्णरसीवरि विकला जाव उणवीसाए वि एक्कातो मासातो गिप्फणा ति दट्ठव्वा ।

एवं एक्कवीसादिसु केवलपणभागविसुद्धुरुक्खहीणकयमासपमाणेहितो गिप्फणा दट्ठव्वा ।

एवं सव्वत्थं सकलकरणं करंतेण कायव्वं ।

पहं भिण्णियं ठवणारोवणकरणं इच्छति तो इयं कायव्वं—एक्कियं ठवणाए एगादिआसेवणातो
जाव पण्णरस ताव सगलकरणं चैव कायव्वं, जत्थ एक्किया ठवणा सोलसिया आरोवणा एता दो वि असीत-
सतातो सुद्धा, सेसं तेसट्टिसत्तं, एयस्स सोलसहि भागो भागं सुद्धं ण देति ति तेरसपक्खित्तं भागलद्धं
एक्कारस, ते ठविता, सगलच्छेदसहिया इमे ११ । सोलसिवारोवणाए पंचहि भागो भागलद्धं तिणि, ते
दुरुक्खहीणा कता सेसो एक्को मासो मासस्स य एक्को पंचभागो । एस वणिओ मासो पंचगुणो अंसो पक्खित्तो
जाया छ पंच भागा, एक्कियं ठवणाए वि हेट्ठा पंचभागो छेदो दिण्णो १ ।

इदंणि आरोवणा भागलद्धं तं आरोवणमासगुणं कायव्वं, ति काउं अंसो अंसगुणो छेदो
छेदगुणो छहि एक्कारसगुणिता पंचहि एक्को गुणिनो जाया छव्वहि पंच भागा ठवणारोवणमाससहिय ति
कायव्वा, एय एक्को ठवणा पंच भागो, छस्स आरोवणपंचभागो पक्खित्तो, जाया संचयमासाण तेहुत्तरि पंच
भागा— ११ ।

कतो कि गहियं ति ? एक्को ठवणभागो फेडितो सेसं आरोवणभागपरावकीए अंसा अंसगुणा,
छेदो छेदगुणो भागे हिए जं लद्धं तं दोसु ठाणेषु ठवियं तत्थेगो रासो पण्णरसगुणो, बितितो आरोवणाए जति
विगला दिवसा असीतेहि गुणितो पक्खित्तो य ठवणादिवसजुतो ओमपरिसुद्धो असीयं सत्तं भवति, एवं
सत्तरस अट्ठारस अउणवीसियासु वि कायव्व, णवरं— बितियरासो दोहि तीहि चउहि गुणेयव्वो, वीसियाए

१ पणगा..... इत्यपि पाठः ।

सकलकरणं कायम्बं इगवीसियाए वि सव्यं एयं चेव कायम्बं, णवरं— ठवणभागफेडिएसु जं सेखं तं भारोवणभागं परावत्तिथ गुणियं भागहियलद्धे तिसु ठाणेसु ठायम्बं, तत्पेक्को रासी पण्णरसगुणो, बिजिओ विगलदिवसगुणो, ततिओ पंचगुणो, सव्ये एककट्टा मेलिता ठवणदिणजुता म्मेसविसुद्धा असोखं सतं भवति ।

एवं बावीसियासु वि कायम्बं, एगतीसादिसु वि एवं, णवरं— जइ वि विकलमासो लभ्यति तति ठाणत्वं ठवेयम्बं, भारोवणभागहियलद्धं जत्थ दो रासी ठाविता तत्थ एणो पण्णरसगुणो, बितितो नियमा-विगलदिवसगुणो, किं च संचयमासभागेहितो संचयठवणभागफेडियक्का पक्खिसवतेण पुण जइ ठवणादिणा तति सगला पक्खिसवियक्का मासं वा दुरूवसदियं पंचगुणं असंगहियं काउं पक्खिकेआ ।

एवं बितियादिठवणासु वि सोलसियादिभारोवणातो उवठज्ज कायम्बाओ इति ॥६४६२॥ ठवणासं-चए त्ति दारं गतं ।

इदार्णि 'रासि चि दारं ।

एस पच्छित्तरासी कम्भो उप्पण्णो ? अत उच्यते -

असमाहीठाणा खलु, सबला य परिस्सहा य मोहम्मि ।

पलिओवम सागरोवम, परमाणु तम्भो असंखेजा ॥६४६३॥

वीसाए असमाहिठाणेहि, खलुसद्धो संभावणत्वे, किं संभावयति "असंखिज्जेहि वा असमाहि-ठाणेहि" त्ति, एवं एकवीसाए सबलेहि, बावीसाए परिसहेहि, भट्टावीसततिविषाओ वा मोहणिज्जातो, अहवा-वीसाए मोहणिज्जठाणेहितो, एतेहि असंजमठाणेहि एस पच्छित्तरासी उप्पण्णो ।

सीसो पुच्छति - कतिया ते असंजमठाणाइ ? जतिया पलिओवमे वालग्गा ?, णो तिण्ठे समट्ठे । तो जतिया सागरोवमे वालग्गा ?, णो तिण्ठे समट्ठे । तो सागरोवमवालग्गाण एककेकं वालग्गं असंखेज्जखंडं कयं । ते य खंडा संवत्तहारियपरमाणुमेत्ता, एतिया असंजमठाणा ?, णो तिण्ठे समट्ठे, "ततो" ति एतेहितो असंखेज्जगुणा दट्ठ्वा ।

अण्णे भणति - "सुद्धमपरमाणुमेत्ता खंडा कता" । ते य अणंता भवति, तं न भवति, जतो असंजमठाणा असंखेज्जलोगागसमेत्ता भवति, संजमठाणा वि एतिया चेव ॥६४६३॥

३जे जतिया उ..... गहा ॥६४६४॥ कंठ्या

रासित्ति..... गहा ॥६४६५॥ रासि त्ति गतं ।

इदार्णि ३"माण" त्ति, मीयते अनेनेति मानं परिच्छेदो । तं दुविहं - दब्बे भावे य । दब्बे प्रश्नकादि ।

भावे इमं -

बारस अट्ठग छक्कग, माणं भणितं जिणेहि सोहिकरं ।

तेण परं जे मासा, संभट्ठण्णंता परिसडंति ॥६४६६॥

तित्थकरेहि विविहं पायच्छित्तमाणं दिट्ठं, पढमतित्थकरस्स बारसमासा, मज्झिमतित्थकराणं भट्ट-मासा, वट्ठमाणसामिणो छम्मासा, एतो मन्वहियं ण दिज्जति, बहुएहि पडिसेवितं पि एतियं चेव दिज्जति,

१ गा० ६४२७ । २-६४६४, ६५ प्रकर्मते द्वे गाये तूर्णायुपरिनिदिष्टाकारेणैव समुत्तिस्सिते, मूल-भाष्यप्रती तु न कोऽपि निर्देशः । ३ गा० ६४२७ ।

चम्पयाऽसुज्जति । जहा पत्थए मविज्जंते ताव मविज्जति जाव तस्स सिहा आरुहति, सेसं आरुभिज्जंतं पि अधिकं परिसडति । एवं छण्हं मासाणं जं अधियं पडिसेवितं तं ठवणारोवणप्पगारेण संहणमाणं परिसडति, तित्थकरमाणा य एसा अणुगतियव्व त्ति, जहा रणो अप्पणो रज्जे जं माणं प्रतिष्ठापितं जो ततो माणातो अतिरेगमूलं वा करेति सो अवराही डंडिज्जति, एवं जो तित्थकराणं मायं कोवेति सो दोहसंसारी ॥६४६६॥ माणं त्ति मयं ।

इदाणि “पभु त्ति” पच्छित्ते दायव्वे पभु त्ति वा लोमो त्ति वा एगद्वं ।

को पुण सो ?, इमो -

केवल-मणपज्जवणाणिणो य तत्तो य ओहिनाणजिणा ।

चोद्दस-दस-मवपुव्वी, कण्वधर-पकप्पधारी य ॥६४६८॥

केवलणाणी, मणपज्जवणाणी, ओहीणाणी, जिणसहो शुद्धावधिप्रदर्शकः, चोद्दसपुव्वी, अभिण्णदस-पुव्वी, भिण्णेसु ओवड्डीए जाव णवमपुव्वस्स ततियं आमारवत्थुं, कण्वधरवहारधरा, पकप्पो त्ति णिसीहउज्जमयणं ॥६४६७॥

किं च -

धेप्पंति चसदेणं, णिज्जुत्तीसुत्तपेद्वियधरा य ।

आणाधारणजीते, य होति पभुणो य पच्छित्ते ॥६४६८॥

महाहकयणिज्जुत्तीमाहासुतधरा णिसीहकण्वधरवहारपेद्विमाहासुतधरा य, अहवा - सुत्तं धरंति सुतधरा जे महाणिसोहं महाकप्पसुतादि मज्झमणे य धरंति । “माण” त्ति आणाधरवहारी धारणाधरवहारी जीयववहारी एते पच्छित्तदाने पट्ठणो भवंति ॥६४६८॥ पभु त्ति मयं ।

इदाणि “केवत्तिया सिद्ध” त्ति दारं ।

सीसो पुच्छति - “केवत्तिया पच्छित्ता ?”

आयरियाह - दुविहं पच्छित्तदरिसणं - अत्यतो सुत्ततो अ । अत्यतो अपरिमाणा, सुत्ततो इहउज्जमयणे इमे -

अणुग्धाइयमासाणं, दो चेव सया हवंति बावन्ना ।

तिणिण सया बत्तीसा, होति उग्धाइयाणं पि ॥६४६९॥

पदममुद्देसते अणुग्धातियमासातो सखित्तं दोणिण सया बावन्ना भवंति, नितिय-तसिय-वउत्थ-पंच-मुद्देसतेसु मासलहुत्था पच्छित्ता ते सखित्ता तिणिण सया बत्तीसा भवंति ॥६४६९॥

पंच सता जुलसीता, सव्वेसिं मासियाण बोद्धव्वा ।

तेण परं वोच्छामि, चाउम्मासाण संखेवो ॥६४७०॥

उग्धातियमासाणं अणुग्धातियमासाणं एकतो सखित्ताण पंच सया जुलसीता भवति । अतो परं चाउम्मासिते भवामि ॥६४७०॥

छ स्या चोयात्ता, चाउम्मासा य ह्येतऽणुध्याया ।

सत्त स्या चउवीसा, चाउम्मासाण उग्घाया ॥६४७१॥

छट्ट-सत्तम-अट्टम-णवम-दसम-एवकारसमुद्देशे य चाउम्मासिया अणुध्यायिया छ स्या चोयात्ता बुत्ता । (एतेसि सव्वसंखेवो) बारस-तेरस-चोदस-गन्नरस-सोलस-सत्तरस-अट्टारस-एणुणवीमुद्देशेसु उग्घाया चउमासिया सत्तासत्ता चउवीस बुत्ता (एतेसि सव्वसंखेवो) ॥६४७१॥

तेरस सय अट्टट्ठा, चाउम्मासाण ह्येति सव्वेसि ।

तेण परं वोच्छामि, सव्वसमासेण संखेयं ॥६४७२॥

चउलहुगाणं वा चउगुगाणं च सव्वसंखेवो तेरस सत्ता अट्टसट्ठा, अतो परं मासचउमासाण सव्वसंखेवेणं भणामि ॥६४७२॥

णव य सया य सहस्सं, ठाणाणं पडिवत्तिओ ।

वावन्नट्ठाणाई, सत्तरि आरोवणा कसिणा ॥६४७३॥

सहस्सं णव सत्ता वावन्नट्ठिया मासादीनां प्रायश्चित्तस्थानानामित्यर्थः । “सत्तरि आरोवणा कसिणाउ” ति, को अस्याभिसंबंधः ? उच्यते णु एसेव संबंधो ‘केति या सिद्ध’ ति, केवत्तिता आरोवणाओ जहण्णाओ सिद्धा, उक्कोसा य सिद्धा, एवं अजहण्णमणूक्कोसा य कसिणा अकसिणाओ य ।

तस्य पदमे ठवणारोवणठाणे एक्का जहण्णा, वी (नी) सं उक्कोसा, चत्तारिसया चउतीसा अजहण्ण-मणुवकोसाणं ।

बित्तिया ठवणारोवणठाणे एक्का जहण्णा, तेत्तीसं उक्कोसा, सत्तवीसविया पंचसया मज्झाणं ।

तत्तियठाणे एक्का जहण्णा, पणनीसं उक्कोसा, पंचसया चउणउया मज्झाणं ।

चउत्थे ठाणे एक्का जहण्णा, अऽणासीतं सय उक्कोसाणं, पण्णरस सहस्सा णव य सया तीसुत्तर मज्झाणं ।

पदमे ठवणारोवणठाणे सत्तरियारोवणा कसिणा भोसविरहिय ति बुत्तं भवति ॥६४७३॥

ता य इमा—

सव्वासिं ठवणाणं, उक्कोसारोवणा भवे कसिणा ।

सेसा चत्ता कसिणा, ता खलु गियमा अणुक्कोसा ॥६४७४॥

पदमे ठवणारोवणठाणे तीसं ठाणाणि, तस्य एक्केक्काए ठवणाए अतिल्ला आरोवणा उक्कोसिता भवति, सा य गियमा भोसविरहिया, एयाओ तीसं, एवासिं मज्झा जातो आरोवणाओ भोसविरहिताओ तामो चत्तालीसं भवति, एया उक्कोसियाण भेलिताओ सत्तरि भवति, ॥६४७४॥

कत्ताओ पुण ताओ चत्तालीसं भोसविरहिताओ ? उच्यते—

वीसाए तू वीसं, चत्तमसीती य तिण्णि कसिणाओ ।

तीमाए पक्खपणुवीस तीस पण्णाम पणमतरी ॥६४७५॥

वीसियाए ठवणाए वीसिया आरोवणा चत्तालीगिया असीता, एयाओ तिण्णि कसिणाओ । तीसियाते उवणाए इमातो पंच आरोवणातो अज्झोमियातो पक्खिता पणवीसिता तीसिता पण्णासिया पंचसत्तरीया ॥६४७५॥

चत्ताए वीस पणतीस सत्तरी चैव तिणि कसिणाओ ।

पणतालाए पक्खो, पणताला चैव दो कसिणा ॥६४७६॥

पण्णाए पण्णट्ठी, पणपण्णाए तु पण्णवीसा तु ।

सट्ठिठवणाए पक्खो, वीसा तीसा य चत्ता य ॥६४७७॥

चत्तालीसियाए ठवणाए इमाते तिणि आरोवणाओ कसिणातो - वीसिता पणतीसिया सत्तरिया । पण्णालीसट्ठवणाए इमाओ दोणि आरोवणा कसिणातो पक्खिता पणयासा य आरोवणा कसिणा (पणपण्णाए ठवणाए इमाते तिणि आरोवणाओ कसिणाओ - पण्णवीसा, पणपण्णा पण्णट्ठी ।) सट्ठिविक्कताते ठवणाते इमा चत्तारि आरोवणा कसिणा - पक्खिया वीसिया तीसिया चत्तालीसिया य ॥६४७७॥

सत्तरीए पणपण्णा, तत्तो पणसत्तरी य पन्नरसा ।

पणतीसा असीतीए, वीसा पणुवीस पन्ना य ॥६४७८॥

सत्तरीए ठवणाए एक्का पणपणिया आरोवणा कसिणा । पणपणसत्तरियाए ठवणाए दो आरोवणा कसिणातो - पक्खिता पणतीसिया य । असीतिक्कियाए ठवणाए इमाओ तिणि आरोवणाओ कसिणाओ - वीसिया पणुवीसिया पण्णासिया य ॥६४७८॥

णउतीए पक्ख तीसा, पणताला चैव तिणि कसिणाओ ।

सतियाए वीस चत्ता, पंचुत्तर पक्ख पणुवीसा ॥६४७९॥

दस उत्तर सतियाए पणतीसा वीस उत्तरे पक्खो ।

वीसा तीसा य तहा, कसिणाओ तिणि वीसइहि ॥६४८०॥

णउतियाए ठवणाए तिणि आरोवणा कसिणा - पक्खिया तीसिया पणयालीसिया य । सतियाए ठवणाए दोन्नि आरोवणा कसिणा - वीसिया चत्तालीसिया य । पंचुत्तरसतियाए ठवणाए दोन्नि आरोवणा कसिणा - पक्खिया पणुवीसिया य ॥६४७९॥

दसुत्तरगहा दसुत्तरसतियाए ठवणाए एक्का पणतीसिया आरोवणा कसिणा । वीसुत्तरसतिया ठवणाए तिणि आरोवणा (कसिणा -) पक्खिया वीसिया तीसिया ॥६४८०॥

तीसुत्तरे पणुवीसा, पणतीसे पक्खिया भवे कसिणा ।

चत्ताले एगवीसा, पण्णासे पक्खिया कसिणा ॥६४८१॥

वीसियठवणाए तू, एयाओ हवन्ति सत्तरी कसिणा ।

सेसाणउवि जा जत्तिय, नाउणं ता भणिज्जाहि ॥६४८२॥

तीसुत्तरसतियाए ठवणाए एक्का पणुवीसिया आरोवणा कसिणा । पणतीसुत्तरसतियाए ठवणाए एक्केक्का पक्खिया आरोवणा कसिणा । चत्तालुत्तरसतियाए ठवणाए एगवीसा आरोवणा कसिणा । पण पण्णामुत्तरसतियाए एक्का पक्खिया आरोवणा कसिणा । एवं एयाओ सत्तरी कसिणाओ । सेसा पंचाणउया तिणि मया ते अकसिणाओ भवन्ति । सेसामुवि तिसु ठवणप्रारोवणठानेमु उवउज्जिउण कसिणाऽकसिणपमणं भाणियध्वं ॥६४८२॥

१-पञ्चासियाते ठवणाए एक्का पंचसट्ठिना आरोवणा कसिणा । २ बीयाए (व्यव०) ।

अतो परं जेण एयाण सव्वासि सरूवं वणिज्जति तं भणामि —

सव्वासि ठवणाणं, एत्तो सामण्णलक्खणं वोच्छं ।

मासग्गे भोसग्गे, होणाहीणे य गहणे य ॥६४८३॥

“सव्वासि” ति — चउसु ठवणारोवणठणेसु जातो ठवणारोवणाधो अणोण्णवेहुओ भवति ताओ य जहा गज्जति तहा तेसि “सामण्ण” ति — पिडिय अविमिट्ठं सखेवओ य लक्खणं भणामि — लक्खिज्जति ताण सरूवो जेण तं लक्खणं । “मासग्गे” ति — पडिसेवितं, संवयमासाणाम्मां परिमाणमित्यर्थः । “भोसग्गे” ति — सेवितमासाण उपात्तिणिमित्तमेव आरोवणादिवसेहि भागे हीरमाणे कित्तिं पक्खेवं काउं सुद्धं भागं दाहिति ति एयस्स लक्खणं भणियव्वं । “होण” ति विसमग्गहणं, तं संवयमासेहि कहं भवतीत्यर्थः । अहोणग्गहणं नाम समग्गहणमित्यर्थः ॥६४८३॥

आरुवणा जति मासा, ततिभागं नं करे ति पंचगुणं ।

सेसं पंचहि गुणिए, ठवणदिणजुत्ता उ छम्मासा ॥६४८४॥

आरोवणाए जतिमासतद्धा संवयमासा ठवणामाससुद्धसेसा तइभागे कायवा, तत्वेणो भागो “तिपंचगुणे” ति — पणरसगुणो कायव्वो, सेसा भागा सपिडिया पंचगुणा काय वा, ठवणा दिण जुत्ता जति अहिया तो भोसविमुद्धा छम्मासा भवति, एयं कम्मं पणरसादिमु आरोवणासु कायव्वं, एगादिआरोवणासु पुण जाव चोद्दस ताव आरोवणदिणेहि चेव गुणेयव्वं ॥६४८४॥

जतिमि (मि) भवे आरुवणा, ततिभागं तस्स पणरसहि गुणे ।

ठवणारोवणसहिता, छम्मासा होति नायव्वा ॥६४८५॥

“जतिमि” ति — जतियो आरोवणा पद्धम-वित्तिप-ततियादि वा, तत्थ जे संवया मासा लद्धा ते ठवणारोवणमःसविमुद्धा जतित्तिपया आरोवणा तत्तिपभागत्वा ते करेयव्वा, जति एयभागत्वा तो पणरसगुणा ठवणारोवणसहिता भोसविमुद्धा छम्मासा भवति । अथ जेणभागत्वा तो एगभागे पणरसगुणो सेसा पंचगुणा ठवणारोवणदिणसहिया छम्मासा, कच्चिदेवं वतंय्यं ॥६४८५॥

गुणकारेण कसिणाकसिणजाणणत्थं इमं भणति —

जेण तु पदेण गुणिता, होउणं सो ण होति गुणकारी ।

तस्सुवरिं जेण गुणे, होति समो सो तु गुणकारी ॥६४८६॥

“पदेण” ति — एगद्वुगतियादितेहि जेण आरोवणा “गुणिया होउ” ति — गुणिता संतीत्यर्थः । अहवा — ठवणादिणसंजुत्ता “होउ” ति ऊणा अहिया वा भवति ति, सो तस्स गुणकारी ण भवति, जहा पक्खिया आरोवणा दसहि गुणिता वीसिपठवणासंजुत्ता ऊणा छम्मासा, एक्कारसगुणा अहिया भवति तो णायव्वं एतेसि कसिणकरणं न होइ नास्त्येवेत्यर्थः । प्रकसिणत्वात्, “तस्सुवरिं” ति एक्कारसगुणं उवरि ओमत्थग परिहाणोए पक्खिया आरोवणा “जेण गुणे” ति दसगुणिता तीसिय ठवणा होइ । “समो” ति छम्मासितो रासो, एत्थ सो दसको समकरणं पडुच्च गुणकारी भवतीत्यर्थः ।

एवं णवहि अट्ठहि सत्तहि छट्ठि पंचट्ठि चउट्ठि तीहि बीहि एक्केण य पक्खितं आरोवणं गुणेउं जोए ठवणाए संजुत्ता छम्मासा भवति तत्थ सो गुणकारी णायव्वो, तावतिया य पक्खियाए कसिणा लब्धति । एवं वीसियआरोवणादि, णवरं — अट्ठभागाधो ओमत्थियगुणकारी कायव्वो, एवं सेसाओ वि सव्वाओ

गुणकारेहि वेयासियव्वाओ । अघवा - 'जेण पदेण' एतीए गाहाए इमं वक्खणं - जति दोहि गुणा आरोवणा-
दिवसेहि पक्खित्तेहि घर्षेति सतं ण पूरेति तो सो समकरणे गुणकारो ण भवति, ताहे समकरणत्वं तदुपरि
तिमासादीण गुणकारणेहि वेयासेयव्वं ताव जाइ जेण गुणिते ठवणाए पक्खिताए असीयं सयं भवइ, सो
गुणकारो कसिणारोवणमिति सभो भवति । अइ सव्वगुणकारा वेयालिए ऊणं अहियं वा असीयं सतं भवति
ताहे णायव्वं ण एस गुणकारो, अकसिणः य एस णायव्वं ति ॥६४८६॥

अहवा सव्वकसिणजाणणत्वं इमं भण्णइ -

जतिहि गुणा आरोवणा, ठवणाए जुता हवति छम्मासा ।

तावतियारुवणाओ, हवति सरिसाभिलावाओ ॥६४८७॥

जति गुणा आरोवणठवणाए पक्खिताए असीयं सतं भवति सा आरोवणा कसिणा णायव्वा,
तद्विवरीया सव्वा अकसिणा, तेसु इमं करणं - जेण गुणा आरोवणा ठवणादिगसंजुता जतिएण ऊणा अहिवा
वा भवति त चेव तत्थ भोसग्गं, अकसिणा एस णायव्वा ॥६४८७॥

किं च आलोयगमुहातो षड्विंशतिमासम् सोढं तं मासम् जाए ठवणाए संचयमासम् भवति तं
ठवणारोवणं छेति ।

तत्थिमं करणं - उदाहरणं, जहा - अट्टावणं भासा आलोयगमुहातो उवलद्धा, तत्थ
आयरिएण वीसिया ठवणा पण्णाससत्तिमा आरोवणा ट्विता, एयासि ठवणारोवणाण सत्तरं
दिवससतं छम्मासिय असीयदिवससतमाणातो सुद्धं, सेसा दस एतेसि पण्णास सत्तिथी आरो-
वणाए भागो ण सुज्झति ति चत्तालं सतं पक्खित्तं, भागे हिते एक्को लद्धो, एसो एक्को अट्टावीस-
तिमासरोवणति अट्टावीसरोवणमास ति वा अट्टावीसगुणो कतो जाता अट्टावीसं चेव ।

एत्थ चेव इमं भण्णति -

ठवणारोवणदिवसे, णाउणं तो मणाहि मासग्गं ।

जं च समं तं कसिणं, जेणहियं तं च भोसग्गं ॥६४८८॥

ठवणारोवणाण मासे णाउं ताहे संचयमासम् भण्णजाह 'एवतित' णि - दो ठवणाभासा अट्टावीसं
आरोवणमासा एते तीसं, एते अट्टावीसाए मेलियाए तया अट्टावणं संचयमासा, एव सव्वत्थ संचयमासम्
आणियव्वं । जत्थ पुण आरोवणाए भागे हीरमाणे भोसविरहियं समं सुज्झति तं कसिणंति समेत्यपं.,
जत्थ पुण ण सुज्झति तत्थ जावतिएण चेव सुज्झति तावतियं चेव सभोसग्गं जाणियव्व ॥६४८८॥

ठवणारोवणदिवसेहि मासुप्पादणकरणं इमं -

जत्थ उ दुरूवहीणा, ण होति तत्थ उ भवति साभावी ।

एगादी जा चोइस, एगाओ सेस दुगहीणा ॥६४८९॥

सव्वासि ठवणारोवणाण दिवसेहितो मासुप्पादणे तो णियमा पंचहि भागो हायव्वो, भागे हिते जं
सद्धं तं णियमा दुरूवहीणं कायव्वं, जत्थ दुरूवहीणं ण होज्जा जहा एगदियासु ठवणासु जत्थ वा दुरूवहीणं
कते घागासं भवति जहा दसराइदियासु तामु 'साभाविय' ति - ण तेसि कति विहृती वज्जवि, तत्तिपा
चेव ते तेहि संचयमासा ठवणाभासा परिमुद्धा गुणेयव्व ति, अहवा - 'साभाविय' ति - ते एगादिमभाव-
भेदभिण्णा व सव्वे एकातो मासातो णिक्कणा इति, एवं जाव चोइसिता आरोवणा, ततो परं सेसासु
पण्णरसियासु दुगहीणकरणं लब्धमिति ॥६४८९॥

विकलेषु सकलकरणत्वं भणति -

उवरिं तु पंच भइते, जे सेसा के इ तत्थ दिवसा उ ।

ते सब्बे एगाओ, मासाओ होति णायब्बा ॥६६६०॥

पण्णरसियाए उवरि सोलसमादियासु ठवणासु पंचहि भागे हिते उवरि भागसद्धे सेसा एवकगमादी वीसंति, ते लद्धाण पूरणमेव णायब्बा, ण तेसि किञ्चि सकलकरणे पुढो करणं कज्जति, सो चेव एक्को मासो इत्यर्थः ॥६४६०॥

कहं पुण ठवणारोवणमासेहि सब्बं संचयमासेहि वा दिवसगहणं कज्जति ?

एत्य इमं भणति -

होति समे समगहणं, तह वि य पडिसेवणा व नाऊणं ।

हीणं वा अहियं वा, सब्बत्थ समं च गेण्हेजा ॥६४६१॥

होति सामण्ये ठवणारोवणाण दिवसमाणे समे तेसु समं दिवसगहणं भवति, सेमेसु मासेसु समं विसमं वा ।

कहं ? उच्यते - जहा सत्तिया ठवणा सत्तिया चेव आरोवणा, एत्य पुव्वकरणेण छब्बीसं संचय-मासा लब्धंति, एत्य ठवणारोवणमासेसु सत्तिसत्तदिणा गहिया, जे पुण आरोवणाहि लद्धा मासा चउवीसं तेसु एक्कातो मासाओ पंच दिणा गहिता तम्हा दो तत्थ ओसा पडिता, सेसा जे तेवीसं तेसु सत्त चेव दिणा गहिता ।

एवं समासु ठवणारोवणासु समयगहणं दिट्ठं, अण्णासु कत्थति जइ विसमं ठवणारोवणदिवसमा-
“तह वि य” ति — ण पुव्वकरणं कर्तव्यं । “पडिसेवणा” - पडिसेवणमासा भणति, ते य जे ठवणारोवणाए भागे हिते लब्धंति ते पडिसेवणमासा ते णालं जहा छम्मासा पूरति तहा ठवणारोवणासु हीणमस्तिरितं वा दिवसगहणं कायव्वं । कत्थ ति ठवणादिहीणं आरोवणाए अहियं । अण्णत्थ आरोवणाए हीणं ठवणाए अहियं । जहा बीसियासु ठवणारोवणासु बीसियाठवणाए दस दस दिवसा गहिता, दोसु आरोवणमासेसु दुडाविभत्तेसु एक्कातो आरोवणमासातो पण्णरस गहिता वितियातो पंच । एवं अण्णासु वि भावेयव्वं । “सब्बत्थ समं च गेण्हेज्ज” ति - जे आरोवणाहि हियमाणलद्धा मासा जे य ठवणारोवणमासा सब्बेहितो गहणं जहा पक्खिय-ठवणाए पक्खियाए आरोवणाए, एवं पडितासु ठवणारोवणासु, तहा एक्कियासु ठवणारोवणासु, दुयादिसु य ॥६४६१॥

विसमा आरोवणाए, गहणं विसमं तु होइ नायव्वं ।

सरिसे वि सेवितम्मि, जह ओसो तह खलु विसुज्जे ॥६४६२॥

जाओ ठवणातो दिवसमाणेण परोपरतो विसमातो तासु जे संचयमासा लद्धा तेसु पडिसेवनेण जति विसरिसावराहसेवणं कतं तहवि दिवसगहणं करंतेहि विसमं चेव दिवसगहणं कायव्वं, तासु इमा सविस-मत्तणतो चेव विसमगहणं भवति, एवं विसमकसिणासु गहणं दिट्ठं, जा पुण विसमाउकसिणासु गहणं तत्थ य दिवसगहणं करंतेज्ज जहा ओसो विसुज्जति तहा कायव्वं, “खलु” अवधारणे, ओमविसमार्थे, विशेष-प्रदर्शनार्थे वा ॥६४६२॥

एवं खलु ठवणाओ, आरुवणाओ समासओ होति ।

ताहि गुणा तावइया, नायव्व तहेव भोसो य ॥६४६३॥

आरोवणाओ समामओ ति संखेवओ भगिया, अह्वा - पाठंतर "आरोवणाओ विसेसओ होति" ति - एतेहि विसेसो हीणाहियदिवसग्गहणेण णायव्वो । अह्वा - पाठंतर "आरुवणाओ विसेसिता होति" ति ।

कहं पुण ठवणाओ आरोवणाहितो विसेसिज्जंति ?, उच्यते - जहा ठवणमासमुद्धं सेसमासा आरोवणमाससारसभागया ते पण्णरसपणमुणा य कया आरोवणादिणेहि वा गुणिया जाया एवं आरोवणा-दिवसपरिमाणसद्धं तहा ठवणदिणपक्खेवेण छम्मासा पूरंति ति सह पूरणवत्, एवं ठवणादिणेहि विसेसिज्ज-तीत्यर्थः । "ताहि गुणा तावइय" ति - एग-दु-तिमादिणोहि संखाहि आरोवणा गुणिया ठवणादिणसंजुषा जावतियासु छम्मासा भवंति तावतिया उ कसिणा भवंतीत्यर्थः । अथवा - "ताहि गुणा तावइय" ति - इच्छियठवणा-रोवणादिणेहि असीयसयपरिमुद्धं सेसस्स इच्छियासेवणाए भागे हिते जे लद्धा ते एगादि आरोवणमाससंखाहि गुणिया ठवणारोवणमाससंजुषा "तावतिय" ति - संखयमासा भवति । अह्वा - जत्थ संखिसतरं ठवणा-रोवणाहि विणा आरोवणकम्मं काउं इच्छंति तत्थ असीयसयस्स भालोयगमुहाओ जे उवलद्धा पडिसेवियमासा तेहि भागो हायव्वो, ते जेव संवया मासा, जइ सव्वं मुद्धं तो कसिणं णायव्वं, जं च भागलद्धं तं एक्केक्क-मासातो दिवसग्गहणं दटुव्वं ।

कः प्रत्ययः ? उच्यते - जतो ताहि जेव भागहारणरासीहि भागलद्धं गुणितं तावतियं ति असीयं सतं भवति, अह पडिसेवणमासेहि भागे हीरमाणे किंचि तत्थ विकलं भवति ततो तं भागलद्धं भागहारणसंखमित्तेहि ठाणेहि णायव्वं, तत्थ एक्कभागविकलं पक्खेवे सेसा भागतोहि गुणंति, जावतिया भागा तावतित्तेतो रासी भागहारणुणो कज्जति, जो य विगलसम्मिस्सो भागो सो य तत्थ पक्खित्तो ताहे तावतिया जेव भि स्संति - असीतसतमित्यर्थः । "णायव्वं तहेव भोसो य" ति - आरोवणाए भागे हीरमाणे असुज्ज-माणे जो छेदं स विसेसो भोसो णायव्वो ॥६४६३॥

कसिणाए रुवणाए, समग्गहणं तेसु दोइ मासेसु ।

आरुवण अकसिणाए, विसमं भोसो जह विसुज्जे ॥६४६४॥

जा कसिणा आरोवणा सा भोसविरहिय ति वुत्तं भवति, तत्थ आरोवणभागहारहियलद्धमासा जे तेसु एगभागत्थेसु समं दिवसग्गहणं अह दुगादिभागत्थतो पत्तेयं भागेसु समग्गहणं दटुव्वं, अकसिणा रोवणातो णियमा तेसु मासेसु विसमग्गहणं, तं पुण विसमग्गहं भोसवसेण भवति जहा भोसो विसुज्जतीत्यर्थः ॥६४६४॥

इदं दिवसग्गहणलक्खणं -

जइ इच्छसि नाऊणं ठवणारुवणा य तहं य मासेहि ।

किं गहियं तह्विसा, मासेहि तो हरे भागं ॥१॥

ठवणारुवणादिवसाण संतमासेहि सो य (भागो) हायव्वो ।

लद्धं दिवसा जाणे, सेसं जाणेज्ज तन्भाया ॥२॥

जति णत्थि ठवणआरोवणा य णज्जंति सेविता मासा ।

सेवियमासेहि भए (वे.) आसीयं लद्धिमोग्हियं ॥३॥ गतार्थाः

एवं तु समासेणं, भणियं सामणलक्खणं वीयं ।

एएण लक्खणेणं, भोसेयव्वाओ सच्चाओ ॥६४६५॥ कथा

कसिणाकसिणा एता, सिद्धा उ भवे पक्कपनामम्मि ।

चउरो य अतिक्कमादी, सुद्धा तत्थेव अज्झयणे ॥६४६६॥

पक्कपो त्ति गिसीहं, सेसं पुव्वदस्स कंठं । गिसीहणाम त्ति गयं । इदाणि “सव्वे थ तहा अतियारे” त्ति, भइयारगहणातो चउरो अतिक्कमादि दटुव्वा, तेवि तत्थेव गिसीहज्झयणे सपायच्छित्तसक्का सिद्धा ॥६४६५॥

सव्वो एस पच्छित्तगणो अतिक्कमादिमु भवति । ते य अतिक्कमादी इमे -

अतिक्कमे वतिक्कमे चेव अतियारे तह अणाचारे ।

गुरुओ य अतीयारो, गुरुगतरो उ अणायारो ॥६४६७॥

अतिक्कमादियाण इमं णिदरिसण - आहाकम्मेण णिमत्तिओ पडिसुणणे अतिक्कमे वट्ठति, तगणहणमिस्सं पयभेदं करेइ वइक्कमे वट्ठति, तं गेण्हंतो अतियारे वट्ठति, तं भुंजंतो अणायारे वट्ठति । एतेसु जहक्कमं पच्छित्तं इमं - ००० ङ्क । एते तवकालविसेसिना । अतियारठाणा अतिक्कमो गुरु, अतिक्कमतो वतिक्कमो गुरुतरं ठाणं, तमो वि गुरुओ भइयारो, ततो वि गुरुयतरो अणायारो । एवं दोसद्वानपच्छित्त-कम्मबंधेहि गुरुतरो क्रमसः ॥६४६६॥

चोदकाह -

तत्थ भवे ण तु सुत्ते, अतिक्कमादी उ वण्णिया के त्ति ।

चोदग सुत्ते सुत्ते, अतिक्कमादी उ जोएज्जा ॥६४६८॥

चोदको भणति - तत्थ त्ति हत्थादिवायणंतमुत्तगणेषु ण कत्थ त्ति अतिक्कमादी सुत्ते वण्णिता दिट्ठा ? ।

आयरियो भणति - हे चोदग ! णायव्वं सज्जसुत्तेसु अतिक्कमादी ण तुमे दिट्ठा ?, “जोएज्ज” त्ति आयरिएण भाणियव्वा ॥६४६८॥

जतं भणति -

सव्वे वि य पच्छित्ता, जे सुत्ते ते पडुच्चअणायारं ।

थेराण भवे कप्पे, जिणकप्पे चत्तसु वि पदेसु ॥६४६९॥

सव्वेसु वि अतिक्कमादिसु चउसु वि पदेसु धेरकप्पिदाणं पच्छित्ता भत्थि त्ति काउंते जे पच्छित्ता सुत्ते भणिता ते सव्वे धेरकप्पिदाण अणायारं पडुच्च भणिया ।

कह ? उच्यते - जति पडिसुत्ते पदभेदातो णियत्त त्ति गहियं वा परिटुवेति तहावि सुज्झति, अह भुंजति तो अणायारे वट्ठंतस्स पच्छित्तं भवति । जिणकप्पियाणं शुभ अतिक्कमादिसु चउसु वि पदेसु पच्छित्तं भवति, ण पुण एवं काहिति ॥६४६९॥

अत्राह “जति एवं णिसीहे सिद्धं तो णिसीहं कतो सिद्धं ?” उच्यते -
 णिसीहं णवमा पुब्बा, पच्चक्खानस्स ततियवत्थुओ ।
 आचारनामधेज्जा, वीसतिमा पाहुडच्छेदा ॥६५००॥

पुब्बगतेहितो पच्चक्खानपुब्बं णाम णवमपुब्बं, तस्स वीसं वत्थुं, वत्थु ति वत्थुभूतं वीसं अत्था-
 धिकारा, तेसु ततियं आचारणामधिज्जं जं वत्थुं तस्स वीसं पाहुडच्छेदा परिमाणपरिच्छिन्ना, प्राभूतवत् अर्थ-
 छेदा पाहुडच्छेदा भण्णति, तेसु वि जं वीसतिमं पाहुडच्छेदं ततो णिसीहं सिद्धं ॥६५००॥

चोदकाह - सत्थं साधुत्तं, किन्तु -

पत्तेयं पत्तेयं, पदे पदे भासिऊण अवराहे ।

तो केण कारणेणं, दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०१॥

एगत्तवीमाए उद्दंसएसु पदेसु पदेसु पत्तेयं पत्तेयं केसु वि भासलह पच्छित्ता, केसु वि भासयुठं,
 केसु वि चउलहं, केसु वि चउयुठं, एवं सुत्तमो, अत्यमो पुण अवराहपदेसु पत्तेयं पणगादि जाव पारंभियं दातुं तह
 सगलबहुससुत्तपदविधि पत्तेयं पत्तेयं च दत्तेउं दादुडङ्गायपुच्छसलोमगिल्लोममादि सुत्तपदा पत्तेयं वण्णेउं तो कि
 दोसा एगत्तमावण्णा ?, एगत्तं णाम बहुसमासपदावण्णेसु एककं चेव देह, अहवा - बहूहि तहारिहेसु एककं चेव
 छम्मासं देह, गुरुसु वा लहं देह, लहुसु वा गुरुयं, भासिए वा दुमासादि जाव पारंभियं देह, पारंभिए वा हेद्दाहुत्तं
 जाव पणगं देह, तं मा एवं एगत्तं करेह, जहा पत्तेयं परूवणा भावती य तहा पत्तेयं दाणं पि करेह, कारण
 वा वच्चं ॥६०१॥

आचार्याह - मुणेहि एगत्तकारणं -

जिणं चोद्दंस जार्ताए, आलोयणं दुब्बले य आयसिए ।

एतेण कारणेणं, दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०२॥

जिणं पडुच्चं, चोद्दंसपुब्बिमादि पडुच्चं, एगा जाईए पडुच्चं, पलित्ठंणं आलोयणं पडुच्चं, दुब्बले
 पडुच्चं, भापरियं पडुच्चं, एते जिणादिए पडुच्चं दोसाणं एगत्तं भवति ॥६५०२॥

एत्थ जिणादिएसु छसु जट्ठकमेण इमे दिट्ठता -

घयकुडवो य जिणस्सा, चोद्दंसपुब्बिस्स नालिया होति ।

दव्वे एगमणेगे, णिसज्ज एगा अणेगा य ॥६५०३॥

जिणेसुं घयकुडदिट्ठतो, चोद्दंसपुब्बीसुं य णालियदिट्ठतो, जाईए एगं अणेगदव्वदिट्ठतो,
 आलोयमाए एगणेगणिसज्जदिट्ठतो, ॥६५०३॥

तत्थ जिणं पडुच्चं जहा दोसा एगत्तमावण्णा तहा वेज्जपउत्तेणं घयकुडदिट्ठतेणं भण्णति -

उप्पत्ती रोगाणं, तस्समणे ओसहे य विव्भंगी ।

णाउं तिविहामहणं, देति तहा ओसहगणं तु ॥६५०४॥

“उप्पत्ति” ति रोगाणं जिदाणकरणं, तदित्थेन रोगो संबज्जन्ति, “समणे” ति रोगप्रसमनं
 रोगावहारीत्यर्थः । तस्स किं (तोसहतं) रोगप्रसमणं ओसहं, तं जहावणात् विव्भंगी, “विव्भंगि” ति भवेण

ठितं भंगी तच्च नाजं, ततो विगतं तं विभंगी, सो य मिच्छहिट्टी उपपण्यमोही भणति । “तिविहो” ति वक्तुः ।
पिता सिभमो वा तेसि वा सभवायातो सण्णिवानितो भवति । “ग्रामइणं” ति ग्रामतो रोगो, सो ग्रामतो जस्स
अत्थि सो ग्रामती भणुस्सो भणति, तस्स सो विभंगी सब्बद्वयादिकिरियं जाणतो एगो नेगो भोसहसामत्थं
जाणतो रोगिणो उवसंपणस्स तद्वा तं घयाइतोसहणं देति जहा सेसो वातातिरोगो असेसो फिट्ठि ॥६४०४॥

ओसहपयाणे य इमो चउभंगो -

एगेणेगो छिज्जति, एगेण अणेग नेगाहिं एक्को ।

नेगेहिं पि अणेगा, पडिसेवा एव मासेहिं ॥६४०५॥

एक्कोसहेण छिज्जंति केति कुविता वि तिभि वाताती ।

बहुएहिं वि छिज्जंती, बहूहि एक्केक्कओ वा वि ॥६४०६॥

जहा एगेण घयकुडेण एगो वायातिरोगो छिज्जति, तथा एक्केण घयकुडेण “एगेणे” ति
तिणि वायाइलुभिया मंडणभावा छिज्जंति ति । “बहुएहिं वि छिज्जंति” ति बहुएहिं वि घयकुडेहिं बहुं चेव
वायातीलुभियाइ छिज्जति । एस चरिमभंगो । “बहूहि एक्केक्कओ वा वि” ति बहूहि घयकुडेहिं अत्तत्थमवगाढो
एक्केक्को वायाइ वाही छिज्जति । एस ततियभंगो । एवं जेण मासाहेहिं रागाइएहिं मासो सेवितो सो मासेण
सुज्झइ ति, जिणा तस्स मासं चेव देति । ततियभंगे बहुमासा पडिसेविता मंदाणुभ वेण हा दुट्ठुक्कादीहिं य
पयणुक्का जहा मासेणेव सुज्झति ति जिगा तस्स चेव मासं देति, जेण वा पणगादिणा सुज्झति तं देति ।
ततियभंगे तिक्कवक्कवसाणसेविते मासे रागादीहिं वा हरिसायंतस्स मासेण सुज्झति ति जिगा णाउं दुमासादी
देति, रागुक्कवरि वडित्ते जाव पारिवियं देति । चरिमभंगो पुण पडमसरिच्छो । अहवा - बहुसु संचयमासेसु
जिगा छमासं चेव दिति ठवणारोवणवज्जं, एव अणेषु वि भोसहेसु चउभंगो भाणियन्तो ॥६४०६॥

इमो दिट्ठतोवणतो -

धण्णंतरितुल्लो जिणो, णायव्यो आतुरोवमो साह ।

रागा इव अवराहा, ओसहसरिसा य पच्छित्ता ॥६४०७॥

जहा धण्णंतरी तथा जिणो, जहा रोगी तथा साह सावराधी, जहा ते रोगा तथा ते मुत्तर
गुणावराहा, जहा ताणि भोसहाणि तथा मासादी पच्छित्ता । एवं जिणा णाउं जत्तिएणेव सुज्झति ततिय चेव
देति । एवं जिणं च पडुक्क दोसा एवत्तमावण्णा ॥६४०७॥

इडाणि चोद्दसपुव्विं पडुक्क जहा दोसाण एगत्तं तथा भणति -

एसेव य दिट्ठतो, विम्भंगिकतेहिं वेज्जसत्थेहिं ।

भिसजा करेति किरियं, सोहंति तहेव पुव्वधरा ॥६४०८॥

जहा विभंगो रोगोसह चउभंग विकप्पेण अचित्तं किरियं करेति । “भिसज” ति - वेज्जा ते वि
तथा विभंगीकयवेज्जितसत्थाणुसारेण चउविकप्पेण अचित्तं रोगावणयणकिरियं करेति । “एसेव दिट्ठतो” ति -
एसेव चोद्दसपुव्वीण दिट्ठतो कज्जति, जहा ते वेज्जा तथा चोद्दसपुव्वधरा परिहाणीए जाव पुव्वधरा, परिहाणि
णाम णवपुव्वततियवत्थं ति, एए वि जिणामिद्वितागमाणुसारो जिणा इव अचित्तं जेण विमुज्झति त चेव
पच्छित्तं देति ॥६४०८॥

चोदकाह - "जिणा केवलणाणसामत्थतो पच्चवक्खं रागादियान बहुवेहि पस्संता तथा पच्चित्तं देति, चोदसपुक्खी अयेच्छन्तो कहिं दिअ" ?

अत्रोच्यते -

णालीत परुवणता, जह तीई गतो उ णज्जती कालो ।

तह पुव्वधरा भावं, जाणंती सुज्झते जेणं ॥६५०६॥

"णालीत" ति - घटितो उदगमलगीतलविलतो कालो, तीए य घडियाए परुवणा कायव्वा, जहा 'पलित्तयंकए कालणाणे, जहा तीए दिअ रातिकालस्स य कि गतं सेसं वा णज्जति तथा पुव्वधरा दुरुवलक्खं भावं आमपप्पमाणतो जाणंति, भावे य णाए जेण पच्चित्तेण सुज्झति तस्मत्तं हीणमहिंयं वा चउभंग विगल्लेण जिणा इअ पुव्वधरा वि देति, एवं चोदसपुक्खीए पडुक्ख दोसा एदसमावण्णा ॥६५०६॥ चोदसपुक्खीण णालिय ति गयं ।

इदाणि जाति पडुक्ख दोसा जहा एगत्तमावण्णा तथा भण्णति । अत्र दावयं ^३"दब्बे एगमणेग" ति, जाती दुविहा - पच्चित्तजाती दब्बजाती य ।

एत्थ इमे भण्णति -

मासचउमासिएहिं, बहुहि एगं तु दिज्जए सरिसं ।

असणादी दब्बाओ, विसरिसवत्थुओ जं गुरुमं ॥६५१०॥

तस्य पच्चित्तेककजातिय बहुसु लहुमासिएसु सरिसत्तणओ - ^१धम्मयए एक्कं चेअ भासं दिज्जति, एक्कं गुरुमं दिज्जति, लहुगुरुसंजोगे गुरुमं एक्कं ओहाडणं दिज्जति, एवं दु-ति-चउ-पंच-धम्मसिएसु वि सव्वेसु वा आवण्णास्स छम्मासियं एक्कं दिज्जति । दब्बेगजातीए 'असणादी' पच्छदं, एक्कम्मि वा दब्बे अणेगेसु वा दब्बेसु अणेगे पच्चित्ता, "तत्तिवक्कदब्ब" ति - प्रसणं तं अणेगदोसपुटुणिअरिसणं, जहा तं असणं रायपिओ अहडो उटउल्लो आहाकम्मियो य, एत्थ एक्कं चेअ ओहाडणं गुरुतरं आहाकम्मियणिक्कणं चउगुरुं दिज्जति, "अणेगदब्बेसु वि" ति - असणं आहाकम्मियं, पाणं बीयादिवणस्सतिसंघट्टं, खातिमं पूतिमं, सातिमं उदेसियं, अहवा-अणेगदब्बा एक्कं असणं आहाकम्मियं अण्णं प्रसणं कीयगड, अण्णं ठवियं एवं पाणादिया वि भाणियव्वा, एत्थ विसरिसवत्थुसु जं आहाकम्मादि गुरुतरं तं दिज्जति, सेसा तदंतभावपविहा दटुव्वा । एत्थ केति अणारिदिट्ठंतं बहेति, "दोसु वि अविरोहो" ति - अहं आलोयणाए अणिहामो, एवं जातीए एगत्तमावण्णा दोसा, एत्थ छम्मतए सुज्झति । अहवा - जहा अतिपंकावणयणपयुत्तो खारजोमो सेसमलं पि सोहेति तथा ओहाडणपच्चित्तं पि सेसेपच्चित्ते सोहेति ॥६५१०॥ "जातीए" "दब्बे एगमणेगे" ति पयं गयं ।

इदाणि 'आलोयणादिया तिणिण दारा भण्णंति, तेसि इमे दिट्ठता -

आगारिय दिट्ठंतो, एगमणेगे य तेण अवराहा ।

मंडी चउक्कभंगो, सामियपत्ते य तेणम्मि ॥६५११॥

आलोयणाए आगारिदिट्ठंतो, तेण दिट्ठंतो य । दुब्बे भंडिदिट्ठंतो । आयरिए सामितपत्त, तेण दिट्ठंतो

॥६५११॥

१ पादलिप्तसूत्रिके । २ तं समं । ३ गा० २२७ । ४ मंदारियामतया, इत्यपि पाठः । ५ गा० ६५०२ । ६ गा० ६५०३ ।

तत्थ आलोयणविगण्पा इमे -

णिसेज्जा य विथडणे, एगमणेगा य होति चउभंगो ।

वीसरिओसण्णपदे, विति तति चरिमे सिया दो वि ॥६५१२॥

“विथडण” ति - आलोयणाए - एक्का णिसिज्जा, एक्का आलोयणा, एवं चउभंगो । तत्थ पडमो विधीए अविगण्णे असेसाइयारे आलोयणस्स ।

द्वितीयो पम्हट्टाइयारस्स मायाविणो वा, आलोचियवदिअमु पुणो पच्छा सम्मालोयणपरिणयस्स गुरुम्मि तह णिविट्ठे चेव वंदणं दाउ आलोवेति तस्म भवति ।

ततियभंगो बहुणा कालेण उस्सण्णवराहपदस्स बहुपडिसेविस्स वा एगदिणं आलोयणं अवधारैतस्स, अहुवा - गुरुम्मि वा काहगभूमिगतपच्छागते तत्थ णिसीदणं णिसेज्जा एक्का एव आलोयणा भवति ।

चरिमभंगे दो वि संभवति अवराहा विस्सरणं उस्सण्णपदत्तणं च ॥६५१२॥

एत्थ चउसु वि भंगेसु अमायाविणो अणेगावराहस्सऽवि गुरुतरं एककं पच्छित्तं इमेण अगारिदिट्ठेणे -

एगावराहडंडे, अण्णे वि कहेतऽगारि हं मंती ।

एवं नेगपदेसु वि, डंडो लोउत्तरे एगो ॥६५१३॥

जहा एगो रहगारो । तस्स भज्जाए बहू अवराहा कया, ण य भत्तुणा गायव्वा । अण्णया थरं अवाउडदारं मोत्तुं पमायओ सेज्झिल्लियधरे ठित्ता । तत्थ य धरे साणो पविट्ठो । तस्समयं च भत्ता आगओ । तेण दिट्ठो । पच्छा सा अगारी आगया । तं अवराहि ति काउ पिट्ठिउमारद्धो । सा वि चित्तेइ अण्णे वि मे बहू अवराहा अत्थि, ते वि मे णाउं एसमं पुणो पिट्ठिहिति ति इमेण से ते सब्बे कहेमि ।

भणाति -

गावी पीता वासी, त हारिता भायणं पि ते भिण्णं ।

अज्जेव ममं सुहत्तं, करेहि पडवो वि ते हरिओ ॥६५१४॥

गावी वच्छेण पीया, कंसभायणमण्णं वा भग्ग, एवमादिअवराहे स एकसरा कहिएसु तेण सा तं एकवारं पिट्ठिता । एवं लोउत्तरे वि अणेगावराहपदावण्णेसु एगो पच्छित्तदंडो अविरुद्धो । ॥६५१४॥

अधवा - एत्थेव आलोयणत्थे इमो दिट्ठो -

नेगासु चोरियासू, मारणडंडो न सेसगा डंडा ।

एवं नेगपदेसु वि, एगो डंडो ण उ विरुद्धो ॥६५१५॥

एगो चोरो । तेण य बहुगागीता चोरिया कयाओ । कस्स ति भायण हरियं, कस्स ति पडओ, कस्स ति हिरण्णं, कस्स ति सुवण्णं । अण्णया तेण राउले खत्तं खयं, रयणा गहिया, गहिओ य सो आरक्खेण रण्णो उवट्ठुविओ ।

१ इच्छे (इयाणि) ।

तस्समयं अण्णे उवट्ठिता भणति - अम्ह वि एतेण हडं ति ।

रण्णा रयणहारि त्ति काउं सेसचोरियाओ य णाउं तस्स मारणदंडो एक्को आणत्ता, सेसचोरियदंडा तत्थेव पविट्ठा ।

एवं लोउत्तरे वि अण्णेगपदेसु एगडंडो अचिकुट्ठो ।

बित्तियभंगे मायाविणो पुणो आलोएतस्स अणं पि पच्छित्तं दिज्जति । एवं जत्तिया वारा भाई आलोएति तत्तिया पच्छित्त ।

तत्तियभंगे अगडस्स जट्ठिवसं आलोयणा 'समायाति तट्ठिवसं एगपच्छित्तं दिज्जति ।

चरिमभंगे तेण णिसेज्जा कया आलोइयं च भणति य सम्मत्ता मम आलोयणा, दिण्णं पच्छित्तं, उट्ठिता गुरू, पुणो संभरियं तक्खणं चेव यिअज्जं काउं पुणो य आलोइयं, ताहे गुरू अगडस्स भणति तं चेव ते पच्छित्तं, अगडभावा अणं ण देइ । अहवा - साधूणं देवभियालोयणकाले गुरूणं अण्णेग णिस्सिज्जा साधूणं अण्णेग आलोयणाओ, एवं आलोयणं पडुच्च एगत्तमावण्णा ॥६५१५॥

इदाणि 'दुब्बलं पडुच्च भणति । तत्थ अंभडीचउक्कभंगदिट्ठतो । भंडी बलिया बडल्ला बलिया, एवं चउक्कभंगो । पढमभंगे बहु आरुभिज्जति, सेसेसु तिसु भंगेसु इषा विभासा - बित्तिय भंगे जं बडल्ला सक्कति कट्ठिउं तत्तियं आरुभिज्जति । तत्तियभंगे जेण भंडी ण भज्जति । चरिमभंगे उभयं पि जत्तियं तरति तत्तियं आरुभिज्जति ।

एयस्सिमो उवणओ -

संघयणं जह सगडं, धिती उ धुज्जेहि होति उवणीतो ।

विय तिय चरिमे भंगे, तं विज्जति जं तरति वोढुं ॥६५१६॥

सगडसरिच्छ सघयणं, धित्तियदलं बडल्लतुल्लं, एत्थ वि चउभंगो । पढमे सब्बं दिज्जति, बित्ति ए धित्तियणुरूव, तत्ति ए संघयणारुरूव, चरिमे उभयाणुरूव, जं तरति तत्तियं दिज्जति ॥६५१६॥ एवं दुब्बलं पडुच्च दोसाणं एगत्तं ।

इदाणि 'आयरियं पडुच्च भणति, "सामिपत्तेयत्तेणम्मि" त्ति -

णिवमरण मूलदेवो, आसऽहिवासे य पट्ठि ण तु डंडो ।

संकप्पियगुरुदंडो, मुंचति जं वा तरति वोढुं ॥६५१७॥

एगत्थ णगरे राया अपुत्तो मओ, तत्थ य रायचित्तगेहि देवयाराहणमित्तं अस्सो य हत्थी य अट्ठियासिमो । इओ य - मूलदेवो चोरियं करंतो गहिओ, तेहि रज्जचित्तगेहि वज्जो आणत्तो, णगरं हिडाविज्जति । इतो य अस्स हत्थी मुक्का, अट्टारसपवतिपरिवारो दिट्ठो मूलदेवो । अस्सेण हेसियं पट्ठी च उट्ठिया, हत्थिणऽ गुलुगुलाविणं गंधोदगं च करेण घेत्तुं अभिसित्तो खंधे य उट्ठिमो, सामुहपाढएहि य आडट्ठो एस राय त्ति । तस्स चोरियअवराहा सब्बे मुक्का रज्जे ठविओ । एस दिट्ठतो ।

इमो उवणओ - एगस्स बहुसुयस्स अहवा - पच्छित्तदंडो गुरुसं पित्तो गच्छे पायट्ठिओ कालगतो, सो य साधू पायरियजोगो त्ति आयरिमो ठविओ, विगडच्छेयसुत्तत्थतदुमयादीहि संगहो कायव्वो, ताहे जं सक्केति वोढुं तं दिज्जति, अह ण सक्केति तो से सब्बं मुंचति, एवं दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५१७॥

१ समप्यति, इत्यपि पाठः । २ गा० ६५०२ । ३ गा० ६५११ । ४ गा० ६५०२ । ५ गा० ६५११ ।

चोदगाह - साधूवर्त दोसेगतकारण, कि इमाए एहहमेसीए ठवणारोवणआकट्टिविकट्टीए इतो पंच इतो दस ति पच्छिता वेत्तुं दिज्जति, जुत्तं गुरुणा आगममणुसरिता जं पच्छित्तं आरुहं तं ठवणारोवणभंतरेण एकसरु हंदि इमं पच्छित्तं एवं दिज्जउ ।

आजायाह -

चोदग पुरिसा दुविहा, वणिण मरुण णिहीण दिट्ठंतो ।

दोण्ह वि पच्चयकरणं, सव्वे सफला कया मासा ॥६५१८॥

मरुणसमाणो उ गुरु, पूइज्जति मुच्चते य से सच्चं ।

साहू वणिओ व जहा, वाहिज्जति सव्वपच्छित्तं ॥६५१९॥

सुबहूहि वि मासेहिं, छण्ह मासाण परं न दायव्वं ।

अविकोवितस्स एवं, त्रिकोविण्ण अण्णहा होति ॥६५२०॥

वीसं वीसं भंडी, वणमरुसव्वाओ तुल्ल भंडीओ ।

वीसतिभाओ सुक्कं, मरुणसरिच्छो इय अगीओ ॥६५२१॥

हे चोदग ! पुरिसा दुविहा गोया अगीयत्वा य । तत्त्व गीयत्वाणं अगीयपरिणाममाण य आवण्णाणं जतियं दायव्वं तं विणा आकट्टिविकट्टीए दिज्जति ।

तत्त्व दिट्ठंतो वणिणं । तस्स वीसं भंडीओ एगजातियभंडभरियाओ य सव्वाओ समभराओ, तस्स य गच्छतो सुं कण्णे सुं किओ उवट्ठितो - "सुं कं देहि" ति ।

वणिओ भणति किं दायव्वं ?

सुं कितो भणति - वीसतिभाओ ।

ताहे तेण वणिणं सुं किएण य परिच्छित्ता, मा ओरुहणपच्चारुहणतेसु वक्खेवो 'भविस्सति ति काउं एक्का भंडी सुं के दिण्णा ।

एवं सव्वेसि गीयत्वाणं अगीयपरिणाममाण य विणा आकट्टिविकट्टीए दिज्जति ।

जे पुण अगीयत्वा अपरिणामया य धतिपरिणामया य ते जति छण्ह मासाणं परेण आवण्णा, तेसि दोण्ह वि पच्चयकरणट्ठा सव्वे मासा ठवणारोवणविहाणेण सफला काउं दिज्जति ।

एत्थ दिट्ठंतो - मुखमरुओ, तस्स वीसं भंडीओ एक्कभंडतुल्लभराओ । सुं कितेण भणिओ - एक्कभंडीभंडं दाउं वच्चसु, किमहोत्तारणवास्सेवेण ।

मुखमरुओ भणति - ओहरेत्ता एक्केक्काओ वीसतिभागो तेण्हमु, मकिएण तस्स पच्चयट्ठा ओहरेत्ता एक्केक्काओ वीसतिभागो गहितो ।

मरुणसरिच्छा अगीता, सुं कियसरिसां गुरु ॥६५१९-२१॥

अहवा - णिहिदिट्ठंतो इमेसु कज्जेसु अकज्जेसु य जनाजएसु उवसंधारिज्जति, जओ इमं भणति -

अह्वा वणिमरुण य, णिहिलंभणिवेदणे वणियदंडो ।

मरु पूयविसज्जण, इय कज्जमकज्ज जतमजते ॥६५२२॥

एककेणं वणिणं णिहो उक्खणिओ, तं अण्णेहि णाउं रण्णो णिवेदयं, वणिओ दंडिओ णिहो य से हुओ । एवं मरुण वि णिहो लद्धो । रण्णो णिवेदयो । रण्णा पुच्छिओ । तेण सव्वं कहियं । मरुओ पुज्जो स्ति काउं सो से णिहो दक्खिणा दिण्णा ।

“इय” ति — एवं जो कज्जे जयणाकारी तस्स सव्वं मरुणस्सेव मुञ्चति । जो य कज्जे अजय-
णकारी, जे य अकज्जे (जयणाकारी य अजयणाकारी) वा एतेसु [वारपत्तेसु] वणिगस्सेव पच्छित्तं दिज्जति ।
णवरं — कज्जे अजयणाकारिस्स लद्धतरं दिज्जति ॥६५२२॥

अह्वा — जं हिद्वा मणियं जहा आयरियस्स सव्वं मोत्तव्वं तं कीस आयरिओ मुञ्चति ? कीस वा सेसा वाहिज्जति ? एत्थ वा णिहिदिट्ठो ।

जतो इमं भण्णइ —

मरुगसमाणो उ गुरू, पूइज्जति मुञ्चते य से सव्वं ।

साहू वणिओ व जहा, वाहिज्जति सव्वपच्छित्तं ॥६५२३॥

उवसंवारो आयरिएण कायव्वो पुञ्चवत् । आयरियस्स गच्छोवगहं करंतस्स सव्वं पच्छित्तं फिट्ठइ, सेसं कंठं ॥६५२३॥

पुनरप्याह चोदकः — जं तुम्हे सुत्तखण्डं पणवेह इमं — “तेण परं पत्तिउच्चिए वा अपत्तिउच्चिए वा ते चेव छम्मासा”, तं किं एस सव्वस्सेव णियमो अट्ठ पुरिसविभागेण तं भण्णइ ।

आचार्याह —

सुबहूहि वि मासेहि, ‘छण्हं मासाण परं न दायव्वं ।

अविकोवितस्स एवं, विकोविए अण्णहा होति ॥६५२४॥

तवारिहेहि बहूहि मासेहि छम्मासाण परं न दिज्जति, सव्वस्सेव एस णियमो, एत्थ कारणं जम्हा अण्हं वट्ठमाणसामिणो एवं चेव परं पमाणं ठवितं, छम्मासपरतो बहुसु वि मासेसु प्रावण्णसु सव्वे मासा ठवणारोवणप्पमारेण सफला काउं अविकोवितस्स एवं दिज्जति । जो पुण निक्कोवितो तस्स “अण्णह” ति विणा ठवणारोवणाए छम्मासा चेव दिज्जति, सेसं अतिरितं सव्वं छडिज्जति ।

चोदकाह — “जति भगवया तवारिहे उक्कोसं छम्मासा दिट्ठा तो छम्मासातिरितमाससेवीण छेदादि किं न दिज्जति” ?

आचार्याह — “सुबहूहि” गाथा — जो अगोयत्थो अपरिणामतो प्रतिपरिणामतो वा छेदस्स वा अपरिहो छेदादि वा जो ण सहति एतेसिं छम्मासो वरिसबहूहि वि मासेहि प्रावण्णाण छम्मासा चेव ठवणारोवणप्पमारेण दिज्जति । ‘अवि’ पदत्थसंभावेण, एते अविकोविता जति वि छेदमूलात्पत्ता तथा वि छेदो मूलं वा ण दिज्जति, तवो चेव दिज्जति ।

अह्वा — अवि पदत्थसंभावणे, जति पुण अविकोवितो वि आउट्टियाए पंचदियं घातेति दप्पेण वा भेहणं सेवति, तो से छेदो वा मूलं वा दिज्जति । जे पुण एगिदियादिविराहणे अजयणसेवाए वा निवकारणसेवाए

वा अभिव्यक्तेवाए वा छेदमुला पत्ता ते अविकोवियस्स ण दिज्जति, तेसु छम्मासा चेव दिज्जति । जो पुण अविकोवितो तस्स “अण्णह” ति छम्मासोवरि बहुसु मासेसु वा भावणस्स उखातिव । अतियवाराए अणुगधातिव दिज्जति, छेदो ण दिज्जति । ततियवाराए छेदो वि दिज्जति मूलं ण दिज्जति ॥६५२४॥

को पुरिसो पुण अविकोवितो अविकोवितो वा ? भण्णति -

ग्रीओ अविकोवितो खलु, कयपच्छित्तो सिया अग्गीओ वि ।

छम्मासियपट्टवणा, एतस्स सेसाण पक्खेवो ॥६५२५॥

पुव्वदं कंठ । जो वा भण्णो - “अज्जो ! जइ भुज्जो भुज्जो सेविहिस्स तो ते च्छेदं मूलं वा दाहामो”, एसो वि अविकोविदो भण्णति, एसो वि अविकोविदवतहारेण ववहारियव्वो । एतेसि चेव विवरीता जो य पढमताए पच्छित्तं पडिवज्जते - एते अविकोविमा भण्णति । एतए जो अविकोवितो सो जति छसु मासेसु पट्टवितेसु अंतरा जति वि मासियादि पडिसेवति तं तस्स पुव्वठवियद्वम्मासम्स जे सेसा मासा दिग्ग वा अच्छति ताण मज्जे पक्खेवो अणुगहकसिणेण गिरणुगहकसिणेण वा कज्जति ॥६५२५॥

एवं वक्खमाणं “अणिहीण दिट्ठतो” ति एयस्स इमं वा वक्खमाणं -

अहवा भट्ठानिहिम्मि, जो उवचारो स चेव थोवे वि ।

विणयादुपचारो पुण, छम्मासे तहेव मासे वि ॥६५२६॥

अहवेत्ययं विकल्पे, महानिहं लक्ष्यमाणे जारिसो उवचारो कीरइ तारिसो थोवे वि निहिम्मि, एवं अवराहालोयणाए जारिसो छम्मासावराहालोयणाए निसिज्जादि विणयोत्तारो कीरइ तारिसो मासिए वि आदिगहणाओ दव्वाविसु तारिसो य पक्खेवो चेव प्रयत्तो ॥६५२६॥

सीसो पुच्छति - “एवं तवच्छेदमूलारुहं पच्छित्तं कसो उपपज्जइ ?”

गुरु भणइ -

मूलतिचारेहिंतो, पच्छित्तं होति उत्तरेहिं वा ।

तम्हा खलु मूलगुणे, नऽइक्कमे उत्तरगुणे वा ॥६५२७॥

पाणवहादीहिं वा उत्तरगुणेहिं विराहिएहिं एयं पच्छित्तं भवइ तम्हं मूलगुणा ण विराहेववा उत्तरगुणा वा ॥६५२७॥

चोदगो भणइ - “वा” सहोवादानतो इमा अत्यावत्ती उवलविलज्जति -

मूलव्यतिचारा, जयसुद्धा चरणभंसगा होति ।

उत्तरगुणातिचारा, जिणसासणे किं पडिक्कुट्ठा ॥६५२८॥

जति मूलगुणातिचारा चेव चरणभंसका भवन्ति तो साहूणं उत्तरगुणातिचारा चरणभंसगाहणा होता साहूणं जिणसासणे किं पडिक्कुट्ठा ?, तेसि पडिसेवो गिरत्थगो पावति ॥६५२८॥

अत इमं होज्ज -

उत्तरगुणातिचारा, जयसुद्धा चरणभंसगा होति ।

मूलव्यतिचारा, जिणसासणे किं पडिक्कुट्ठा ? ॥६५२९॥

अहं तुभे भणह - उत्तरगुणाद्वारा चरणभ्रंशकः होति तो मूलगुणाद्वारा साधूणं मा पडिसिज्जंतु
अविवाहणत्वाच्च, पडिसेविज्जंतु, ण दोसो ॥६५२६॥

आयरियो भणइ -

मूलगुण उत्तरगुणा, जम्हा भंसंति चरणसेढीओ ।

तम्हा जिणेहि दोन्नि वि, पडिसिद्धा सच्चसाहूणं ॥६५३०॥

मूलुत्तरगुणा जम्हा दो वि पडिसेविज्जमाणा चरणसेढीओ भंशति, तेण कारणेण दोण्ह वि अतिचरणं
जिणेहि पडिसिद्धं । जं पुण 'वाकारओ' अर्थावति घोसेह, तत्थ वाकारो इमं दरिसेइ - मूलगुणा वि पडिसे-
विज्जमाणा चरणओ भंसंति, उत्तरगुणा वि पडिसेविज्जमाणा चरणओ भंसंति, दो वि वा जुगवं सेवमाणा
चरणओ भंसति । अहवा - वागारो इमं अर्थं दरिसेइ - मूलगुणेहि पडिसेविज्जमाणेहि मूलगुणा ताव हता
चेव उत्तरगुणा वि हम्मंति, उत्तरगुणेहि पडिसेविज्जतेहि उत्तरगुणा ताव पडिसेविते चेव हता, मूलगुणा वि हता
लब्धति ॥६५३०॥

कहं ?, उच्यते इमेण दिट्ठतसामत्थेण -

अग्गवातो हणे मूलं, मूलघातो य अग्गमं ।

छक्कायसंजमो जाव, ताव ऽणुसज्जणा दोण्हं ॥६५३१॥

जहा तालदुमस्स अग्गसूतीए हताए मूलो हतो चेव, मूले वि हते अग्गसूतो हता,
एवं मूलुत्तरगुणमु वि उवसहारो ।

एत्थ चोदगाह - 'जति, मूलुत्तरगुणातो अण्णोणविणासो तो णत्थि को य पवयणे मूलुत्तरगुणवारो ।

कम्हा ? जम्हा णत्थि कोति सो संजतो जो मूलुत्तरगुणाण अण्णयरं ण पडिसेवति, अण्णयरपडि-
सेवणाए य दोण्ह वि मूलुत्तराण अभावी, दुण्ह वि अभावे सामादियादिसंजमस्स अभावी, संजमस्स अभावे
पंचण्हं णियंठाण अभावी, एवं ते सच्चं चारित्तातो भंसो लब्धति, अचरित्तं वा तित्थं भवति, सुण्णं वा
पवयणमिति ॥६५३१॥

आचार्याह - 'छक्काय' पच्छदं एत्थस्स इमा वक्खा -

जा संजमता 'जीवेसु ताव मूलगुणउत्तरगुणा य ।

इत्तरिय छेद संजम, नियंठ बकुसा य पडिसेवी ॥६५३२॥

"भूतेसु" ति - जाव छमु जीवणिक्कायेषु संजमता लब्धति ताव "दोण्ह" ति मूलुत्तरगुणाणं
अणुसज्जणा लब्धति, ताव इत्तरसामादिसंजमस्स छेदोवट्ठावणियस्स य अणुसज्जणा लब्धति । जाव य दो
संजमा लब्धति ताव बउसणियंठो पडिसेवणाणियंठो य अणुसज्जति । तम्हा णो सुण्णं पवयणं, ण वा अचरित्तो,
ण वा मूलुत्तरपडिसेवाए सज्जं चारित्ताओ भंसो भवति ॥६५३२॥

मूलुत्तरपडिसेवाए चरित्तभंसे इमो विसेसो -

मूलगुण दइयसगडे, उत्तरगुण मंडवे सरिसवायी ।

छक्कायरक्खणट्ठा, दोसु वि सुद्धे चरणसुद्धी ॥६५३३॥

१ भूतेसु (ब्र०) ।

मूलगुणे दो दिट्ठता—दत्तितो सगडं चं, उत्तरगुणा वि एतेसु दसेयव्वा । उत्तरगुणेषु मंडवदिट्ठतो, एत्थ वि मूलगुणा दसेयव्वा । तत्थ दत्तिते उदगभरिते जइ पंचमहद्वारा जुगवं भुं चंति तो तक्खणा रिक्को दत्तितो भवति । अह पंचमहद्वाराण अण्णयरदारं एक्कं भुं चंति तो कमेण रिक्को भवति । तस्सेव दत्तितस्स जे अण्णे सुट्ठमच्छिद्दा तेसु गलमाणेसु चिरकालेण रिक्को भवति ।

एवं महव्वएसु वि उवसंहारेयव्वं । भणंति य पुरवो एगत्रयभगे सर्वत्रतभंगो भवति, एस णिच्छयतो, ववहारतो पुण तमेवेक्कं भगं, एगभंगेण कमेण चरितं गलइ ।

अण्णे भणंति — दप्पतो चउत्थासेवणे सव्वचरितभंगो, सेसेसु पुण अमिक्खसेवाए महल्लसितियारे वा भंगो भवति ।

सगडस्स पंच मूलंगा—दो चक्का, दो उद्धी, अक्खो य । तेहि अविणट्ठेहि उत्तरगेहि वा वज्ज-कीलकलोहपट्टादीहि य समगं सगडं भारवहणखभं भवति पलोट्टए य । अह तेसि मूलगणं एक्कं पि भज्जति तो न भारखमं भवति ण पलोट्टए य । सेसेहि उत्तरगेहि केहि चि विणा सगडं भारखमं पलोट्टति य । बहूहि पुण उत्तरगेहि वि विसंघातितं ण तहा भारखमं पलोट्टति य ।

एवं चरणे वि मूलुत्तरगुणजुत्तो साधू चरणभरं उव्वहति, सव्वो उवणघो कायव्वो । उत्तरगुण-विराहणाए पुण चिरकालेण चारितं भज्जति ।

कथं ?, उच्यते — मंडवदिट्ठतेणं जहा एरंडमंडवो, तत्थ एगदुगादिसरिसवपक्खेवेण बहूहि पक्खित्तेहि मंडवभंगो न भवति, अह तत्थ महल्लसिलापक्खेवो कज्जति तो तक्खणा भज्जति, एवं चारितमंडवो बहूहि उत्तरगुणेहि कालघो य चिरेण भज्जति, मूलगुणातियारसिलाहि पुण सज्ज चेव भज्जति, आतिगहणाओ सिगय-सालि-तंतुलाइ । जम्हा एवं मूलगुणपडिसेवाए खिप्पं, उत्तरगुणपडिसेवाए य चिरेण चारितभंगो भवति, तम्हा मूलुत्तरगुणा नो मइक्कमेज्जा । कम्हा ?, उच्यते — “छक्कायरक्खणट्ठा”, छक्कायरक्खणे “दो वि” सि — मूलुत्तरगुणा सुट्ठा भवति, तेसु य सुट्ठेसु णियमा चरित्तमुद्धी, चरित्तमुद्धीओ य अभिलसिताराहणा भवति ॥६५३३॥

शिष्याह—“अण्वहद्विधा पंच मूलगुणा तेणज्जे, उत्तरगुणा न याणामो । ते के केवतिया वा” ?

अतो भणंति —

पिंडस्स जा विसुद्धी, समितीओ भावणा तवो दुविहो ।

पडिमा अभिग्गहा वि य, उत्तरगुण मो वियाणाहि ॥६५३४॥

एतेसि कमेण इमा संखा —

तिग बाताला अट्ठ य, णण्वीसा बार बारस च्चेव ।

छण्णउदी दव्वादी, अभिग्गहा उत्तरगुणा उ ॥६५३५॥

पिटविसोही ति विहा — उग्गमा उप्पादणा एसणा य । तत्थुग्गमो सोलसविहो, उप्पादणा सोलसविहा, एसणा दमविहा, एते बायालीसं । इरियादियाओ पंच, मणत्तियाओ तिणि, एयातो भट्ठ समितीओ । महव्वयभावणओ णव्वीसं । तवो दुविहो — अग्निंतरो बाहिरो य, एक्केक्को छविहो य एस दुवालसविहो । भिक्खुपंडमाओ दुवालस, एते सव्वे णवणउत्ति भेदा । अह इरियादियाओ पंच समितीओ कज्जंति तो छण्णउद्दं भेदा भवति । अभिग्गहा संखेवघो चउव्विहा — दव्वलेत्तकालभावभिण्णा अहवा — एक्कं चेव अभिग्गहं दव्वलेत्तकालभावविसिट्ठं गेण्हइ, अभिग्गहा य परिमाणओ णियतति तेण ण एतेसु

पक्वता, ण वा परिमाणमभिहितं ॥६५३५॥ एवं संखेवतो भणिता उत्तरगुणा तेऽतिपसंगतो भणियं ।

इदाणि पगतं भणन्ति - जं ति हेट्ठा एगुणवोसाए उद्देसएसु पच्छित्तं वणिणयं तस्सिमे पुरिसेसु आवत्तिविसेसा -

णिग्गयवट्ठंता या, संचइया खलु तथा असंचइता ।

एक्केक्का ते दुविहा, उग्घात तथा अणुग्घाता ॥६५३६॥

जे ते पावच्छित्तं बहंतगा ते दुविहा - "णिग्गया वट्ठमाणा य ।" णिग्गया णाम जे तवं बोलीणा छेदाविता, वट्ठंता णाम जे तवे चेव वट्ठति । तत्थ जे वट्ठंता ते पुणो दुविहा - "संचतिता असंचइया य ।"

संचतिता णाम जे छण्हं मासाणं परेण पच्छित्तं पत्ता त मत्तमासादि जाव आसीतं सतं मासाणं ति नेति ठवणाभोक्कविशयेण दिवसा वेतुं छम्मासो णिप्पाएत्ता दिज्जति ।

असंचइता णाम जे मास-दुमास-तिमास-चउ-पंव-छम्मासिए वा वट्ठति ।

एते संबइया असंचइया पुणो एक्केक्का दुविधा - उग्घाया अणुग्घाइया य । उग्घाय ति जह्नुगा अणुग्घाय ति गुरुगा ॥६५३६॥

संचयासचइएसु उग्घाताणुग्घाएसु इमो पट्टवणविही -

मामाइ असंचइए, संचइए छहि उ होइ पट्टवणा ।

तेरस पदसंचहिए, संचति एक्कारस पदाइ ॥६५३७॥

तत्थ असंचतिते जो मासं आवण्णो तस्स मासेणं चेव पट्टवणा, एवं दुमासावण्णस्स दोमासिया पट्टवणा, एवं जाव छम्मासावण्णस्स छम्मासिता पट्टवणा । जो पुण संचइयाणण्णो तस्स णियमा छहि चेव मासएहि पट्टवणा । पट्टवणा णाम दाणं । तं दाणमतथसंचवएसु जहासंखं तेरसपद एक्कारसपदं च ॥६५३७॥

कहं तेरसपदा एक्कारस वा ?, उच्यते -

तवतिगं छेदतिगं, मूलतिगं अणवट्ठानतिगं च ।

चरिमं च एगसरयं, पढं तववज्जियं बितियं ॥६५३८॥

असंचए तेरसं पदा इमे - असंचए उग्घायमासमावण्णस्स पढमं मासो दिज्जति, बितियकारे उग्घाय-चउमासो दिज्जति, तइयकारे उग्घाय छपमासतवं दिज्जइ । ते वि उग्घाततवे उग्घाता चेव दिज्जंति ततो, परं तिग्गि वारा छेदं, ततो परं तिग्गि वारा मूलं, ततो परं तिग्गि वारा अणवट्ठं, ततो परं "चरिमं" ति - चारंचियं तं । "एगसरयं" ति एक वार दिज्जति । असंचए अणुग्घातिए वि एवं चेव तेरसपदा भाणि-बज्जा । "पढमं" ति - असंचतितं एयं मय । "तववज्जियं बितियं" ति - पढमतवदुगं जं तेण वज्जिय । "बितियं" ति संबतियं एक्कारसपदियं भवति । अट्ठंता - "पढमतववज्जितं बितियं" ति - पढमतवदुगं जं तेण वज्जियं "बितियं" ति संबतियं एक्कारसपदियं भवति, ॥६५३८॥

ते एक्कारस पदा संचतिए, उग्घातिए इमे -

छेदतिगं मूलतिगं, अणवट्ठतिगं च चरिममेगं च ।

संवट्ठितावराहे, एक्कारस पदा उ संचइए ॥६५३९॥

“संवद्वितावराहे” इति — जं ठवणारोवणणारोण बहुमासेद्वितो दिग्गा वेत्तु ते संवद्विता एकं छम्मासियं णिष्कातियं तं संवद्वितावराहो भणति, तं एकं दाउं ततो परं छेडादिग्गा पूर्ववत् । एवं संचइए उग्घातिए एक्कारसपदा, अणुग्घातिते वि एवं चेव एक्कारम पदा भवति । ॥६५३६॥

एयं पच्छित्तं जे वहति पुरिसा ते तिविहा इमे —

आततर परतरे वा, आततरे अभिमुहे य निक्खिते ।

एक्केक्कमसंचतिए, संचति उग्घातऽणुग्घाते ॥६५४०॥

पढमो आततरो परतरोपि । द्वितीयो आततरो णो परतरो । ततितो परतरो णो आततरो । अण्णे पुण अण्णततरं चउत्थं भणति, सो य भद्वाहुकयणिज्जुति त्रभिप्पाततो ण सम्मओ ।

कम्हा ? उच्यते — जम्हा सो जइ इच्छियं करेति तो आततरसमो दट्ठवो, अह वेयावच्चं करेति तो परतरसमो दट्ठवोति, तम्हा णत्थि चउत्थो पुरिसभेओ । जे पुण चउत्थ पुरिसभेदं भणति ते पुरिसभेद-विकल्पोवल्लभाओ अत्यतो उण अण्णतमपज्जवत्तणतो अविरोहियत्तणओ य संभवतीत्यर्थः । एतेसि इमं सरूव-पडमो सो तववलिओ जाव छम्मासखमणं पि काउं समत्थो, त च तवं करेत्तो आयरियाद्वेयावच्चं पि करेति, सलद्धित्तणतो, तेण एव उभयतरो । आततरो पुण तववलिओ वेयावच्चलद्धी ो णत्थि । परतरस्स पच्छित्तकरणे सामत्थं णत्थि वेयावच्चकरणलद्धी मे अत्थि । चउत्थस्स पुण अण्णतरस्स तववेयावच्चेसु दोमु वि सामत्थं अत्थि, णवरं — जुगवं ण सक्केति काउं, तवं करेत्तो वेयावच्चं ण सक्केति, वेयावच्चं वा करेत्तो तवं ण सक्केति, एवं अण्णततरतो क्कमात् करोतीत्यर्थः । एत्थ जो उभयतरो आततरो य एते दो वि गियमा पच्छित्तवहणभिमुहा भवन्ति, ततिए पुण जाव वेयावच्चं करेति ताव सपच्छित्ते गिक्खित्ते कज्जति । एत्थ एक्केक्के पुरिसे पच्छित्तं जे वहति तं वा गिक्खित्तं । तं संचइयं वा पुणो एक्केक्कं वुविहं — उग्घातं अणुग्घातं ति । ॥६५४०॥ एवं संखेवओ परूवितं ।

इदाणि एसेवत्थो सवित्थरो भणति ।

तत्थ जो पढमो उभयतरो त्ति तस्स आयरिया इमं दिट्ठं कप्पति —

मास जुयल हरिसुप्पत्ती, सोइदियमाइ इदिया पंच ।

मासो दुगतिगमासो, चउमासो पंचमासो य ॥६५४१॥

एक्को सेवगपुरिसो रायं उल्लभति, सो य राया तस्स वित्तिं ण देति । अण्णया तेण राया कम्हि य कारणे परितोसिओ, ततो परं तेण रण्णा तस्स जुट्ठं पतिदिवस सुदण्णमासतो वित्ती कता, पहाणं च से वत्थजुयल दिण्णं ।

एवं तस्स उभयतरस्स दुहा हरिसो जातो, एक्कं मे पायच्छित्तदाणेण अतिदारमणिओ अणा सोहिओ, वित्तियं मुल्लिं वेयावच्चे णिज्जुत्तो णिज्जरा मे भविस्सति ति । एवं सो पायच्छित्तं वहन्तो वेयावच्चं करेत्तो अण्णं पि पायच्छित्तं आवज्जेज्ज ।

कहं ? उच्यते —

सोइदियमादोणं इदियाणं पंचवहं अण्णतरेण आतिग्गहणतो बोहादीहि वाऽऽज्जेज्ज, तं पुण घोवं पणमादो जाव वीसतिरातिदियं, बहु पारंचियादि, औमत्थगपरिहाणीए जाव मासियं, एत्थ थोवे बहुए वा आदण्णस्स भिण्णमासो दिज्जइ ॥६५४१॥

कम्हा ? उच्यते -

तदवल्लिओ सो जम्हा, तेण व अप्पे दिदिज्जए बहुमं ।

परतरओ पुण जम्हा, दिज्जति बहुए वि तो अप्पे ॥६५४२॥

जम्हा सो पायच्छित्ततदोकरणे भित्तिसंयणवल्लितो 'तेण व' ति - तेण विल कारणेण पणगादी अप्पं दि आवणस्स बहुभिण्णमासो दिज्जति । जम्हा पुण सो आयरियादि परं वेयावच्चकरणेण अन्ने तारेइ तेण से पारंशियादि बहु पच्छित्तं आवाणस्स थोवं भिण्णमासो दिज्जति । थोवे बहुए वि आवाणस्स भिण्णमास-
दाणे कारणं भणियं - इंदियादीहि पुणो पुणो आवाज्जनस्स आवात्तीकमो भणति - "२मासो दुगति" पच्छदं,
मासगहणेण भिण्णमासो सगलमासो य गहिओ ॥६५४२॥

एतेसि च भिण्णमासादियाण आवात्तीदाणे इमं परिमाणं -

१'वीसउट्टारस लहु गुरु, भिण्णार्ण मासियाण आवाण्णो ।

सत्तरस पण्णारस, लहुगुरुगा मासिया होति ॥६५४३॥

सो उभयतर्गो पट्टादियपच्छित्तं बहुतो वेयावच्चं च करेणो जति थोवं बहु वा उग्घात्तमणुग्घायं वा आवाण्णो तो तस्स जति उग्घात्तितं पट्टवितं तो से उग्घात्तिते चैथ भिण्णमासो दिज्जति, जति पुणो वि आवाज्जितो से पुणोवि भिण्णमासो दिज्जति, एवं वीस वारा भिण्णमासो दाव्वो । जइ वीसातो परेण आवाज्जेज्ज ततो से थोवे बहुए वा लहुमासो सत्तर वारा दिज्जति, एत्थ थोवं पणगादिभिण्णमासंतं, बहु पुण मासादिपारंशियं तं, एवं दुमासात्तिमु वि, विट्ठल्लठःणा थोवं उदग्गिठःणा बहु भाणियव्वा । ॥६५४३॥

सत्तरसण्ह मासियाण उवरि जतो पुणो वि आवाज्जति तो ३'दुगतियमासो" ति अस्सं व्याख्या -

उग्घात्तियमामाणं, सत्तरसेव य अणमुयंतेणं ।

णेयव्व दोणिण तिणिण य, गुरुगा पुण होति पण्णारस ॥६५४४॥

दोमासियं पि उग्घात्तियं सत्तरसवारा दिज्जति, जइ पुणो वि आवाज्जइ तो तेमासियं पि सत्तर-
वारा दिज्जति ॥६५४४॥

सत्तचउम्मा उग्घाट्ठयाण पंचेव होतउणुग्घाया ।

पंच लहुगा उ पंच उ, गुरुगा पुण पंचगा तिणिण ॥६५४५॥

सत्तरससु तेपासिएसु अइवकत्तेसु जति पुणो आवाज्जति तो चउलहुमं सत्तवारा दिज्जति, तथो वि परं जइ पुणो वि आवाज्जति तो पंचमासियं लहुमं पंचवारा दिज्जति, जइ पुणो आवाज्जइ तो छल्लहुयं एवक वारं दिज्जइ, एत्थ अणो पंचमासियठाणाओ उवरि छम्मासियं न पक्खति, पंचमासिदोवरि छेयत्तियं भणति, तं न भवति, जम्हा एम पच्छित्तवड्ढो अणंतराणंतराणवड्ढीए दिट्ठा तम्हा छम्मासियं वत्तव्वं छम्मासोवरि जइ पुणो आवाज्जति तो तिणिण वारा लहु वेव छेदो दाव्वो । एम अविसिट्ठो वा तिणिण वारा छल्लहु छेदो ।

अहवा - जं चेव तथितियं तं चेव छेदितियं पि मासम्भतरं चउमासम्भतरं छम्मासम्भतरं च, जम्हा एवं तम्हा भिण्णमासादिछम्मासं तेसु छिण्णोसु छेदितियं अतिवक्तं भवति, ततो पि जति परं प्रावज्जति तो तिणिं वारा मूलं दिज्जति ।

जइ पुणो वि प्रावज्जइ तो तिणिं वारा अणवहुं दिज्जति ।

जइ पुणो प्रावज्जइ तो एक वारं पारं चियं पावति । एवं असंचतियं उग्घातियं गतं ।

जइ पुण असंचतियं अणुग्घातियं पट्ठावियं तो एयाओ चेव अइक्कंतमाहाओ सिघावलो-यणेणं अणुसरियव्वा । इमेण अत्येण सो चेव उभयतरगो पच्छित्तं बहूतो जेयावच्चं करंतो प्रावज्जइ अप्पं बहुअं वा तो से गुरुओ भिण्णमासो दिज्जति ।

पुणो प्रावज्जंतस्स सो अट्टारसवारा दिज्जति ।

ततो परं पण्णरसवारा दिज्जति ।

ततो परं पण्णरसवारा मामियं गुरुअ दिज्जति ।

ततो परं पण्णरस चेव वारा दोमासियं गुरुअ दिज्जति ।

ततो परं पण्णरसवारा तेमासियं गुरुअ दिज्जति ।

ततो वि जइ परं प्रावज्जइ तो चउमासियं गुरुं पंचवारा दिज्जति ।

जइ पुणो वि प्रावज्जति पंचमासियं तिणिंवारा दिज्जति ।

जइ पुणो वि प्रावज्जइ तो एक वारं द्वागुरुअ दिज्जति ।

जइ पुणो वि प्रावज्जइ तो छेदितियं, ततो मूलतिगं, ततो अणवहुतियं, ततो परं एकं पारं चियं, एवं असंचतितं अणुग्घातितं ॥६५४५॥

एत्थ असंचतिते उग्घायाणुग्घायावत्तिठाणलक्खणं इमं -

उक्कोसाउ पयाओ, ठाणे ठाणे दुवे परिहवेज्जा ।

एवं दुगपरिहाणी, नेगव्वा जाव तिण्णेव ॥६५४६॥

उक्कोसा उग्घातिया वीसं भिण्णमासपदा भवति, तेहितो दो पडिया, जाया अट्टारस, ते उक्कोसा अणुग्घातियभिण्णमासा भवति, एवं मास-दुग-स-तिमास-चउमास-पचमासठाणेसु ॥६५४६॥ एते आवत्तिठाणा भणिया -

दोण्हं पुण एतेसि इमेण विहिणा -

बारस दम नव चेव तु, सत्तेव जहणगाइ ठाणाइं ।

वीसऽट्टारस सत्तर, पण्णरहाणी मुणेरव्वा ॥६५४७॥

ये सेसा वीसा भिण्णमासाणं अट्ट भोसिया पच्छद्वेण जुनेहितो भोसिवति ते गहिया, पुक्कद्वेण भोसियसेसा गहिया ॥६५४७॥

के पुण भोसिज्जति ? इमे -

अट्ठइ उ अवणत्ता, सेसा दिज्जति जाव तु तिमासो ।

अत्थऽट्ठकावहारो, न होति तं भोसए सत्त्वं ॥६५४८॥

वीसा भिण्णमासाणं अट्ट भोसिया सेसा बारस भवति, एते वि बारस तहेव छम्मासा काउं दायव्वा ।

अट्टारसण्हं अट्ट भोसिता सेसा दस भवति, एते दस तहेव छम्मासा काउं दायव्वा ।
सत्तरसण्हं अट्ट भोसिता सेसा णव भवति, ते वि तहेव छम्मासा काउं दायव्वा ।
पण्णरसण्हं अट्ट भोसिता सेसा सत्त भवति, ते वि तहेव छम्मासा काउं दायव्वा ।

वोसियादि अट्ट भोसिता सेसा बारसादिया जहण्णठाणा माणियव्वा । जत्थ पुण अट्ट ण पूरेज्ज जहा
चउभासपंचमासेसु तत्थ सट्ठं चेव भोसिज्जति । अट्ट ति - अट्टमासिया मज्झिमा तवभूमी, एतीए अणुग्गह-
करणं ति अतो अट्टभागहारेण भोसणा कता, जे बारसादिया जहण्णठ णा ते वि ठवणारोवणप्पगारेण छम्मासे
काउं साणुग्गहं गिरणुग्गहं वा आरोविज्जति ॥६५४८॥

जतो भण्णति -

छहि दिवसेहि गतेहि, छण्हं मासाण होति पक्खेवो ।

छहि चेव य सेसेहि, छण्हं मासाण पक्खेवो ॥६५४९॥

एतीए पच्छदस्स इमो अत्थो -

जे ते भोसियसेसा, छम्मासा तत्थ पट्टवित्ताणं ।

छदिवसूणे छोढं, छम्मासे सेसपक्खेवो ॥६५५०॥

अट्ट ववहारे (भागहारे) कते जे तज्जोसियसेसा बारसादिया तेसु वि ठवणारोवणप्पगारेण अशितं
पडिडाडेत। जे णिष्कातिणा छम्मासा ते तत्थ पट्टवित्ताणंति "तत्थ" ति - जे ते पुच्छपट्टविता छम्मासा ते
छहि दिवसेहि ऊगा वूढा सेसा छदिणा अच्छति, तेसु चेव छसु दिवसेसु जे ते पच्छिमा छम्मासा तेसि
पक्खेवो कज्जति । किं वुत्तं भवति ? तेहि चेव छहि दिवसेहि पच्छित्तेहि पच्छित्तं छम्मासितं खण ति, एवं
दुल्लप्प ति संघयण ति - वसिऊणं पट्टवित्ताणं सगलअणुग्गहकसिणं कतं भवति छहि दिवसेहि गहिएहि
ति ॥६५५०॥

एवं तस्स पुव्वदस्स इमं वक्खणं -

अहवा छहि दिवसेहि, गतेहि जति सेवती तु छम्मासे ।

तत्थेव तेसिखेवो, छदिणसेसेसु वि तहेव ॥६५५१॥

जं छम्मासियं पट्टवितं तस्स छदिवसा वूढा, तेहि अण्णे छम्मासा भावणो ताहे पुव्वपट्टविय-
छम्मासस्स पंचमासा चउवीसं च दिवसा भोसिज्जति, तत्थ पच्छिमछम्मासा पक्खिस्सपति, त पि छदिवसूणं
वहति, एवं पि सगलाणुग्गहकसिणं भवति । अहं छसु दिवसेसु वूढेसु अण्णं छम्मासियं वहति तो गिरणुग्गहं
पच्छित्तं, एवं छदिणा अच्च मासा भवति । छदिणसेसेसु तहेव ति - वितिसंघयणबलियस्स गिरणुग्गह-
कसिणं भावेयव्वं ।

कहं ?, उच्यते - जाहे छदिवसूणा छम्मासा वूढा ताहे अण्णं छम्मासियं भावणा ते छदिणा
भोसिता पच्छिमं छम्मासितं पट्टवितं तं सट्ठं वहति ॥६५५१॥

एवं बारस मामा, छदिवसूणा उ जेडुपट्टवणा ।

छदिवसगतेऽणुग्गह, गिरणुग्गह छागते खेवो ॥६५५२॥

एवं कासतो बारसमासा छहि दिवसेहि ऊगा "जेडु" ति उक्कोसा पट्टवणा भवति, अतो परं
तवारिहे उक्कोसतरा णत्थि, एत्थ साणुग्गहगिरणुग्गहेसु वा इमो पच्छदणियमो - जं आदीए छहि दिवसेहि

गएहि अण्णं छम्मासितं आरोविज्जति तं णियमा सक्कं साणुग्गहं । जं पुण्णं भवसाणे छहि दिवसेहि सेसेहि ते छद्विसा भोसेत्ता अण्णं छम्मासियं आरोविज्जति तं पि णियमा णिरणुग्गहकसिणं । एवं अणुग्गवात्ति ए वि एवं ताव भसंचयि ए वि, उग्गताणुग्गवाते (वि) एवं । णवरं - तस्स आदिमा तवा नत्थि, णियमा छम्मासियं आरोविज्जति, तं पि साणुग्गहणिरणुग्गहं पूर्ववत् ॥६५५३॥

एत्थ साणुग्गहणिरणुग्गहवाणे चोदगाह -

चोदेति रागदोसे, दुब्बलबल्लि ए य जाणए चक्खु ।

भिण्णे खंधग्गिम्मि य, मासचउम्माभेए चेडे ॥६५५३॥

चोदगो भणति - "भगवं ! तुम्हे रागदोसिया । कहां ? उच्यते - जस्स छद्विसूया छम्मासि भोसेह तम्मि भे रामो जाणइ ति, जहा एस बलवं वेयावच्चं करेउ वेयावच्चुवगारगहिया य साणुग्गहं पच्छित्तं देह । जस्स पुण पंचसु मासेसु चउवीसाए य दिणंसु वूढेसु छहिणं भोमेत्ता तवोखीणस्स वि अण्णे छम्मासे आरोवेह, तत्थे वि "जाणए" ति जाणह, जहा एस अतीवतवचभोमितदेवो ण सक्केति वेयावच्चं काउं तेण से णिरणुग्गहं पच्छित्तं देह, एवं च करेत्ता तुम्हे चक्खुमेटं करेह, चक्खुमेटा णाम एवकं अच्छि उम्मिल्लेति, बितियं णिमिल्लेति । एवं एवकं साणुग्गहकरणेण जीवावेह, बितियं णिरणुग्गह करणेण मारेह । किं च एवकस्स किलाम पेक्खह, बितियस्स ण पेक्खह" ति ।

आचार्याह - "भिन्न" ति पच्छदं, ण वय रागदोसिया, सुणेहि अग्निदिट्ठं, - दोदारय-दिट्ठं च ।

"भिण्णे" ति जहा अग्नी अहुरुत्तेरेह पाडित्तमेत्तो जति तम्मि महल्लकट्टपक्खेवो कज्जति तो सो ते डहिउं अपचचलो सिग्घं विहाति - उग्गमाति ति वुत्तं भवति । अहं सो सहिणकट्टुक्खण-मादीहि चुण्णहिं थोव थोवेहि संभुक्किज्जति तो सो ण विहाति, पच्छा जाहे खंधग्गी विपुलो जातो ताहे विउलं पि इंधणं डहिउं समत्थो भवति । एवं तस्स छसु मासेसु पट्ठवियमेत्तेसु छसु दिवसेसु गएसु य जइ अण्णं छम्मासियं दिज्जति सो वि अहुणुभिण्णअग्निव्व विहाइ - विसादं वा गच्छति, जस्स पुण छद्विणसेसे पट्ठविज्जति सो तवल्लिबलाभिहाणो कतकरणत्तणतो ण विहाति, पुणो वि विउलतववहणसमत्थो भवति, खंधग्गीवत् । अहवा -

इमो दुचेडदिट्ठो ।

मासजातचेडो चउमासिओ य । तस्स जति मासजातचेडस्स जावतिओ चउमासजात-चेडस्स पीहगादि आहारो तत्तिओ दिज्जति तो सो अतिमेत्ताहारेण अजीखेण विणस्सति । चउमासजातचेडस्स वि जति मासजातचेडस्स जो आहारो तावत्तिपमेत्तो दिज्जति तो सो वि अप्पाहारत्तणतो अप्पाणं ण संधारेति, खिज्जति वा ।

एवं जस्स आदोए साणुग्गह कत्तं सो मासितचेडतुल्लो असमत्थो बहुपच्छित्तं करेउ । जस्स अवसाणे णिरणुग्गहं सो वि चउमासियचेडतुल्लो पच्छिन्नकरणसहो अप्पेण ण सुज्जति । एवं अहं देताण रागो दोसो वा ण भवति ॥६५५३॥ गतो आयपरत्तरो ।

इदाणि 'अण्णवरत्तरो, सो एयस्सेव अणुसरिसो ति काउं उक्कमेण भण्णति - तस्स इमं सक्कं ।

जहा दो कावोडीओ एगखंघेण बोहुं ण सक्केति - तहा सो वि पच्छित्तं वेयावच्चं च कासं ण तरति, सो य संचतियं असंचतियं वा आवण्णो गुरूण य वेयावच्चकरो णत्थि ताहे से तं आवण्णं निक्खित्तं कज्जति, गुरूण ताव वेयावच्चं करेत्तो जं आवज्जति तं सेसं सखं भोसिज्जति, वेयावच्चे समसे तं निक्खित्तं वाहिज्जति, तं वहंतस्स जमावज्जति तं इमेण विहिणा दिज्जति -

सत्त चउक्का उग्घायाण पंचेय होंतऽणुग्घाता ।

पंच लहुगा उ पंच उ, गुरुगा पुण पंचगा तिणि ॥६५५४॥

सत्तारस पण्णारस, निक्खेवो होति मासियाणं पि ।

वीसट्टारस भिण्णे, तेण परं निक्खिदणया उ ॥६५५५॥

एतेसि अत्थो विचित्तवक्खाणसंभवातो वित्तियाहापच्छाणुपुञ्जीओ पुब्बं भणियव्वो, जति से असंचए उग्घातियं पटुविद्यं तो पुब्बविहिणा लहु वीणं भिण्यमासा, ततो सत्तरस मासा लहु, एवं दुमासतिमासलहु वि, ताहे वित्तियाहात्थो सत्त चउलहु, ततो पंच मासलहु, तिणि ततो छेदमूलणवटुतिगो पारंविद्यं चैकं । अह से अणुग्घातं पटुवित्तं ताहे ट्टारस गुरुभिण्यमासा पण्णारस मासगुरु एवं दुगतिगमासा वि, ततो पंच चउगुरु, ततो पंच मासगा तिणि गुरुगा, ततो तिणि छेदादी । एवं संचइए वि उग्घायाणुग्घाए, णवरं - आदिमनवा ण दिज्जति । एत्थ वि अट्टगापहारादि पूर्ववद् ॥६५५५॥

एक्के आयरिया एवं वक्खाणेंति । अण्णे पुण भणति - अण्णतरतरे जो आयतरो तस्सिमं -

सत्त चउक्का०..... गाहा ।

व्याख्येया पूर्ववत्, परतो से छेदादी । अण्णतरतरे जो परतरो तस्सिमं -

सत्त रस पण्णारस०..... गाहा ।

योवे बहुए वा आवण्णस्य सत्तरस तेमासिया “निक्खेवो” ति पुब्बं दायव्वा, ततो दुमासिया सत्तरस, ततो मासिया सत्तरस, ततो भिण्यमासा लहु वीसं, निक्खिदणियव्वो इत्यर्थः । अतो “परं” ति छेदादिअणुग्घातिए वि तिमासिया य पण्णारस भाणियव्वो अट्टारस भिण्यमासा । अतो परं छेदादी ॥६५५७॥

एवं अण्णतरतरगतो -

इदानीं “आयतरसस्य वि पटुविद्यं असंचतियं संचतियं वा, तं पि एक्केवकं उग्घान-मणुग्घानं वा, तं वहंतो जति थोवं बहु वा इंदियादीहि आवज्जति तो इमं दाणं -

आततरमादियाणं, मासा लहु गुरुग सत्त पंचेय ।

चउ तिग चाउम्मासा, तत्तो य चउच्चिहो भेदो ॥६५५६॥

आततरो जस्स वेयावच्चकरणलढो णत्थि, आदिसहातो परतरे य विहो भणोहामि, तत्थ आततरे आवण्णे सत्तवारा मासिय लहुयं दिज्जति, जइ पुणो आवज्जति तो चत्तारि वारा चउलहुयं दिज्जति, जइ पुणो वि आवज्जइ तो छेदतिय, एवं मूलतिय, अणवटुतित्तं, एक्कं पारंविद्यं । एवं अणुग्घातिए वि, णवरं - पंचवारा मासित्तं गुरुगं दिज्जति, तिणि वारा चउगुरुगं दिज्जति, “ततोय चउच्चिहो भेदो” ति छेदमूलअणवटु पारंविद्यं, एत्थ छेदमूलअणवटु तिगतिगा दटुव्वा, गतो आयतरो ॥६५५६॥

इदाणि परतरो, सो य जस्स वेयावच्चकरणसद्धी अत्थि सो य सव्वहा पच्छित्तस्स अतरो ण भवति, जम्हा णिव्वित्तादिता तरणि काउं तम्हा एत्थ वि एगखंषकावोडोदिट्ठतो भाणियव्वो, अं च भावणो स णिव्वित्तं कज्जति, जाव वेयावच्च करेति, वेयावच्चं करतो जं भावज्जति तं से सव्वं भोसिज्जति, वेयावच्चं समसे तं से पुव्व णिव्वित्तं पटुविज्जति । तं च वहंउस्स जइ इदियादीहि भावज्जति ।

तत्थ दाणे इमातो दो गाहाओ परोपरभाववक्खाणे भावट्टियाओ एगत्थाओ -

सत्त य मासा उग्वाइयाण छ च्चेव होतऽणुग्वाया ।

पंचेव य चतुलहुगा, चतुगुरुगा हांति चत्तारि ॥६५५७॥

आवणो ईदिएहि, परतरए भोसणा ततो परेणं ।

मासा सत्त य छच्च य, पणग चउक्कं चउ चउक्कं ॥६५५८॥

तस्स परतरस्स संचइयासंचइयाए वा उग्वाताणुष्वातीए वा पटुवित्ते पुणो दोववहुए वा भावणस्स सत्त वारा मासियं लहुअं दिज्जति, पुव्वगमेणं पंचवारा चउलहुअं दिज्जति, ततो छेदितियं मूलतियं अणवट्टितियं एक्कं पारंभियं । अह अणुग्वातियं पटुविय तो उग्वातियं अणुग्वातियं वा येवं बहुअं वा भावणस्स छव्वारा मासियं गुरुअं दिज्जति, चत्तारि वारा चउगुहं दिज्जति, ततो छेदितियं मूलतियं एक्कं पारंभियं ॥६५५८॥

“भोसणा ततो परेणं” ति अस्य व्याख्या -

तं चेव पुव्वभणियं, परतरए णत्थि एगखंधादी ।

दो जोए अचएत्ते, वेयावच्चट्टिया भोसो ॥६५५९॥

“पुव्वभणियं” ति - जं अण्णतरतरे भणियं तं चेव परतरे वि भाणियव्वं, तं च उव्वते - कावोडिदिट्ठतेण, दो जोए ण सवक्ते काउं पायच्छित्तं वेयावच्च च ततो से वेयावच्चकरणारंभकानतो परेण जाव वेयावच्चं करेति ताव जं भावज्जति तं से सव्वं परोपकारे ति काउं भोसिज्जइ, एवं एस तवो भणितो, जे जत्थ भिण्णमासादिया मासाइ वा तवट्टाणा भणिया ते चेव छेदे पत्ते छेदा कायव्वा ततो वारा, ततो परं मूलं ॥६५५९॥

केरिसस्स दिज्जति ? अतो भण्णइ -

तवतीयमसदहए, तवबलिए चेव होति परियाए ।

दुब्बल अपरीणामे, अत्थिरं अबहुस्सुए मूलं ॥६५६०॥

मासादि जाव छम्मासा तवं जो वोलिणो - तवेण णो मुज्झति ति वुत्तं भवइ, अणवट्टुपारंभिय-तवाणि वा प्रतिच्छित्तो समपेत्यर्थः । देसच्छेदं पि प्रतिच्छित्तो - तेण वि ण मुज्झति ति तस्स वि मूलं, तवेण पावं मुज्झति ति । तवं जो ण सदहति, अहवा - अगदहमाणं ति मिच्छादिट्ठो त्रयोषु ठारितो पच्छा सम्मतं पडिवअस्स सम्मं आउट्टस्स मूलं, जहा गोविंदवायमस्स । तवबलितो जो तवेण ण किलिस्सइ, तवं काहामि ति पडिसेवति तस्स मूलं । छम्मासिएण वा तवे दिणो भणति - समत्थो हं अणं पि मे देहि तस्स वि मूलं । छेदे वा दिज्जमाणो जस्स य परियाणो ण पूरेति इत्यर्थः । अहवा - छेद परियाणासंभूतति । अहवा भणति - रातिमिओ हं बहुणा विच्छित्तेण परियाणो मे अत्थि दोहो तस्स वि परियाणगट्टियस्स मूलं । दुब्बलो भित्तिसपयेणेहि तवं च काउमसमत्थो वहुं च भावणो तस्स वि मूलं । अपरिणामतो भणति - जो सो तुभेहि

तयो दिष्णो एतेण माह सुभो, तस्स वि मूलं । अयिरो जो चित्तिदुब्बसत्तणमो पुणो पुणो पडिसेवति, अयदुसुमो अणीयस्यो सो य अणवदुगारं चियं वा आबण्यो सत्थेसु एसु मूलं दिज्जति ॥६५६०॥

पुनरवि आयरिमो विसेसं दरिसिउकामो जं हेट्ठा भणियं तं पुणो चोदेति ।

इमं -

जह मण्णे एगमासियं, सेविऊण एगेण सो उ णिग्गच्छे ।

तह मण्णे एगमासियं, सेविऊण णिग्गच्छते दोहि ॥६५६१॥ कंठा

आयरिमो भणति - आसं, एस मासियं पडुच्च आदिल्लगमो गहितो, एतेण सेता वि गमा भूषिता ।

जहा मासं सेविता मासे "णिग्गच्छइ" ति - सुज्जति भणियं भवति, तहा मासं सेविता दोहि मामेहि णिग्गच्छति ति ।

एवं मासं सेविता तिहि णिग्गच्छइ, मासं सेविता चउहि, मासं सेविता पंचहि णिग्गच्छइ, मासं सेविता छेदेण णिग्गच्छइ, मासं सेविता मूलेण णिग्गच्छइ, मासं सेविता अणवद्वेण णिग्गच्छइ, मासं सेविता पारं चिएण णिग्गच्छइ ।

दो-मासियं सेविता दोमासिएण णिग्गच्छे, दोमासियं सेविता जाव चरिमेण णिग्गच्छे ।

तेमासितं सेविता जाव चरमेण णिग्गच्छे ।

एवं चउमासियाए वि सट्ठाणवरद्वारेहि भागियव्वं जाव चरिमेण णिग्गच्छे । एवं पंचमासिए वि जाव चरिमेण णिग्गच्छे ।

एवं छम्मासियाएवि जाव चरिमेण वि णिग्गच्छे । छेदे वि जाव चरमेण णिग्गच्छे । मूले वि जाव चरिमेण णिग्गच्छे । अणवद्वं सेविता अणवद्वेण णिग्गच्छे, अणवद्वं सेविता चरिमेण णिग्गच्छे ॥६५६॥

एवं विसमारोवणं दट्ठु सोसो भणति - मासे सेविए जं मासं चेव देइ तं आवति सत्तं दात्थं । जं पुण मासे सेविए दुमासो वि छेदादि देह, तं कहं को वाच हेतुः ?

आचार्याह -

जिण णिल्लेवण कुडए, मासे अपलिकुंचमाणे सट्ठाणं ।

मासेहि विसुज्झिहत्थी, तो दंति गुरुवएसेण ॥६५६२॥

जिमा केवसिणो, जिणगट्ठाया ओही मणपज्जव ओहस दस नव पुब्बी य गहिता, एते संकिलेस-विसोहीमो आणिक्कण अवराहणिक्कणं मासियं जाव णिक्कणं वा दुमासादि जेण जेण विसुज्झति तं दंति, तत्थ मासाठ्ठमज्जवसाणठिएण मासे पडिसेवि अपलिउंचियं मासोएमाणस्स सट्ठाणं ति मासं चेव दंति, अहवा - मासोएति पलिउंचियं दुमासादियाण वा जे अरिहा अज्जवसाणठिया तत्थ य ठिएण मासो पडिसेवितो सो एस दुमासादिमासेहि विसुज्झिहत्थी ति ताहे जिमा सुतववहारिणो वा गुरुवदेसेण अघिणं दंति पच्चित्तं ।

तत्थिमो दिट्ठतो - "णिल्लेवण कुडए" ति, णिल्लेवणो ति रयणो, सो जहा - जलकुडेहि वत्थं धोवति तहा दिट्ठतो कज्जति ।

अहवा - "लेवो" ति वत्थमलो, "कुडो" ति घडो जलभरितो, एत्थ चउमंगो इमेण विहिणा कायव्वो - एकं वत्थं एक्केण जलकुडेण णिल्लेवं कज्जति, एवं चउमंगो ॥६५६२॥

तस्य पदमवितियभंगेसु वक्त्वाणं इमं -

एककुत्तरिया घडछक्कएण छेदाति होति निग्गमणं ।

एतेहिं दोसबुद्धी, उप्पज्जति रागदोसेहिं ॥६५६३॥

“एगुत्तरिया घडछक्कएण” ति अस्य व्याख्या -

अप्पमलो होति सुची, कोति पडो जलकुडेण एगेणं ।

मलपरिवद्धी य भवे, कुडपरिवद्धी य जाव छ तू ॥६५६४॥

कोइ अप्पमलो पडो पविट्ठो एगेण जलकुडेण घरे चेव धोवति, यतो पदमभंगो । इमो वितियभंगो “मलपरिवद्धीय” ति, जो ततो वि मलिनतरो कठिणमलो वा दो वि दोहिं जलकुडेहिं धोवति, एवं जहा जहा मलपरिवद्धी भवति तहा तहा एगुत्तरजलकुडपरिवद्धी कज्जति, “जाव” अभिप्रेतायं, समेहिं जलकुडेहिं छहिं घडेहिं चेव धोवति ॥६५६४॥

“छेदाति होति निग्गमणं” ति अस्य व्याख्या -

तेण परं सरितादी, गंतुं सोधेति बहुतरमलं तु ।

मलणाणत्तेण भवे, आर्यचण-जत्त-णाणत्तं ॥६५६५॥

जे ततो वि मलिनतरा, सरित्ति ति नदी, ताए यंतु धोवति, आदिसद्दाम्पो हद-कूव-तडागादिसु । वितियादिपदेसु जहा जहा मलणाणत्तं तहा तहा “आर्यचणजत्तणाणत्तं” ति - आर्यचणं नाम गोमुत्तं पमुल्लं ऊतादि उसमादी तम्मि णाणत्तं बहुतरं पचानतरं च करेति, जतो पयतो प्रयत्तो, तस्य वि अक्खोडपिट्ठणादिसु प्रयत्नततरं करोतीत्यर्थः ॥६५६५॥

चरिमततियभंगेसु इमं वक्त्वाणं -

बहुएहिं जलकुडेहिं, बहुणि क्त्याणि काणि यि विसुज्जे ।

अप्पमलाणि बहुणि वि, काणिति सुज्जंति एगेणं ॥६५६६॥

पुब्बडेण चरिमभंगो, पच्छडेण च ततियभंगो, सेसं कंठं ।

इदाणि चउभंगे वत्थजलकुडदिट्ठतो जा भणितो तस्स उवसंहारो भणति - ‘अस्स मासियं येन तं पडिसेवेता’ जो मासेय विसुज्जतीति तस्स मासं चेव वेति । अण्णस्स पुण मासियं पडिसेवतो एतेहिं रागदोसेहिं तिक्कतरेहिं बहुतरा उप्पज्जति, ‘दोसवद्धि’ ति - कम्मवद्धी, तच्चिसुद्धं बहुतरं पच्छित्तं दु-ति-चउ-पंच-छम्मासियं वा वेति । अण्णस्स मासिए ति - रागदोसज्जवसाणसेविए सरितादिसरिच्छेन बहुतरं छेदादि ॥६५६६॥

भगवं ! से जहा से रागदोसबुद्धीनो पच्छित्ते बुद्धी दिट्ठा । किमेवं रागदोसहाणीतो पायच्छित्ते हाणी ? इत्याह -

जह मण्णे दसमं सेविउण निग्गच्छे तु दसमेणं ।

तह मण्णे दसमं सेविउण एगेण निग्गच्छे ॥६५६७॥

“दसमं” ति - पारचियं तं सेविता तेणेव ‘णिगच्छद्’ ति - विसुञ्ज्मतीत्यर्थः । तद्वा दसमं सेविता अत्रमेव णिगच्छद्, णवमं - अणवदु ?

आयरिओ - “आमं ति अणुमयत्वे भवति ।

अण्णे भणंति - “एणे णिगच्छे”, “एणेण” ति मासेण । एत्थ ओदुवुओ अणवत्वात्तिता सव्वे-
ददुव्वा जाव पणं णिव्वित्तिमं वा ॥६५६७॥

अपरितुष्टमनाः शिष्यः पुनरप्याह - “बहुसुत्तं दिट्ठं बहुसु मासेसु पत्तिसेवितेसु अपलित्तचिय
अःओएमाणस्स मासा चेव दिट्ठो, ओ बहूणि मासियाणि सेविता सुत्तेणेव बहू मासा दिण्ण ति ।

अतो पुच्छा इमा -

जह मण्णे बहुसो मासियाणि सेवित्तु एणेण णिगच्छे ।

तह मण्णे बहुसो मासियाह सेवित्तु बहूहि णिगच्छे ॥६५६८॥

अत्राप्याचार्येण आरम्भ इत्यनुमतार्थे वक्तव्यं, किं बहुणा रागदोषावच्छिन्नो एकैककालविद्वाणे सव्व-
पच्छित्तारोवणट्ठाणा ददुव्वा ॥६५६८॥

इहापि केचित् बहुससूत्रे प्रत्येकार्थे इमं गाथाद्वयं पठति -

एगुत्तरिया षडल्लक्कएणं छेदादि होति णिगमणं ।

एएहि दोसवड्डी, उप्पज्जति रागदोसेहिं ॥६५६९॥

जिणणिल्लेवणकुडए, मासे अपलिकुंचमाणे सट्ठाणं ।

मासेहि विसुञ्ज्महिती, तो देंति जिणोवएसेणं ॥६५७०॥

इह एयासु पच्छित्तवुड्डी भाणिऊण पूर्ववत् पुणो एतासु चेव हाणी भाणियव्वा इति ।

पुनरप्याह चोदक -

पत्तेयं पत्तेयं, पदे पदे माणिऊण अवराहे ।

तो केण कारणेणं, हीणञ्महिआ व पट्टवणा ॥६५७१॥

युक्तपदेसु पत्तेयं अवराहे भाणिऊणं पच्छित्तं च ततो किं पुणो अत्तेयं ओए बहूयं, बहुए वा
ओवपच्छित्तं देह, सव्वहा वा ओस करेह, एतीए हीणञ्महिआपट्टवणाए को हेतु ? ॥६५७१॥

आचार्याह -

मण परमोहि जिणं वा, चोहस दसपुव्विं च णवपुव्विं ।

थेरेव समासज्जा, उणञ्महिआ व पट्टवणा ॥६५७२॥

ते परमोहिजिणादिमा पच्चक्खणाणिओ, पच्चक्खं रागदोसहाणी बुड्डी वा पेक्खति, कम्ममंओ य अ
दव्वपत्तिसेवणाणुरूवो रागदोसाणुरूवो भवति, अतो पच्चक्खणाणिओ रागदोसाणुरूवं हीणमहिआं वा पट्टवयंति -
वदतीत्यर्थः ।

शिष्याह - “प्रत्यक्षज्ञानिनो युक्तमेतत्, ये पुनः स्पष्टिरास्ते कथं रागद्वेषवृद्धिं पश्येयुः” ।

आचार्याह - हाणि ताव इमेण आमारमासितेणं थेरा जायंति ॥६५७२॥

हा दुट्ठ कथं हा दुट्ठ कारियं दुट्ठ अणुमयं मे त्ति ।

अंतो अंतो डड्ढत्ति, पच्छात्तावेण वेवंतो ॥६५७३॥

प्राणातिपातादि कृत्वा उत्तरं कालं अंतः पश्चात्तापकरणेन च दह्यते, तत् पश्चात्तापकरणेन — वेपते कथ्यतेत्यर्थः । अत्रोदाहरणं मोक्षोपादकवत् ॥६५७३॥

बुद्धिं पुण इमेहि जाणति -

जिणपण्णत्ते भावे, असदहंतस्स पत्तियं तस्स ।

हरिं वि व वेदंते, तथा तथा वड्ढते उवरिं । ६५७४॥

जिणेहि जीवादिका भावाः प्रकर्षणे प्रतिभेदेन वा ओतुजने श्रुतिता ये ते प्रतिज्ञापिता तेषुः अश्रद्ध-
मानं जहा जमालीवत् ! य पत्तियं अपत्तियं तेषु जिणपण्णत्तेषु वि अग्नीनि कुर्वणस्येत्यर्थः । सर्वथा वा अपत्ति-
पत्तिः अपत्तियं वा तं महानिधिलाभहर्षमिव वेदतो, अहंवा — हर्षगतमिव पापं कुर्वतो तत्कारणहर्षतो वेपते
च यथा ।

यथा स्वचित्तेन जनाभिस्तुतो वा हर्षं गच्छति तथा प्रकृतिस्थितिप्रदेशानुभावा उपरुपरि करोति
वर्धयतीत्यर्थः । अत्रोदाहरणं सिद्धोपादकवत् ॥६५७४॥

इदाणि पंचमच्छट्ठ सुत्ताणं इमो सम्बन्धो भणति - णिसीहस्स पच्छिमे उद्देशगे ति विहभेदा
सुत्ता तज्जहा - आवत्तिस्सुत्ता, आलोयणविधिसुत्ता, आरोवणा सुत्ता य । एएमि एवकेक्के भेदे दस दस सुत्ता,
सब्बे तीसं सुत्ता, तस्य आवत्तिस्सुत्ता जे दस तेसि चउरो सुत्तेणैव भणित्ता । इमे अत्यतो छ भाणियब्बा त जहा -
सातिरेगसुत्तं १ बहुसो सातिरेगसुत्तं २ सातिरेगसंजोगसुत्तं ३ बहुसो सातिरेगसंजोगसुत्तं ४ णवमं सगलस्स
सातिरेगस्स य संजोगे सुत्तं ५ दसमं बहुसस्स बहुससाइरेगस्स य संजोग सुत्तं ६ एवं एतेसु दससु आवत्तिस्सुत्तेसु
भणिएसु तेणैव विहिणा दस आलोयणसुत्ता भाणियब्बा, तेषु वि आदिमेषु अट्ठसुत्तेसु अत्यतो भणिएसु इमं
णवमसुत्तं । तस्य वि अत्यतो एग-दुग-तिगसंजोगेसु भणिएसु इमं चउक्कसंजोगे अतिल्लचउक्कसंजोगसुत्तं -

जे भिक्खु चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा

पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा

एएसि परिहारट्ठाणाणं अन्नययं परिहारट्ठाणं

पडिसेवित्ता आलोएज्जा -

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चउम्मासियं वा, साइरेगं वा

पंचमासियं वा, साइरेगं वा ।

पलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं वा साइरेगं वा, छम्मासियं वा,

तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासि ॥ सू० ॥ १५ ॥

इदाणि छट्ठं बहुससुत्तं च उच्चारियब्बं, तं च दसमेसु चउक्कसंजोगे अतिल्लचउक्कसंजोगे
सुत्तं इमेण विहिणा उच्चारियब्बं -

जे भिक्खु बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेग चाउम्मासियं वा

बहुसो वि पंचमासियं वा, बहुसो वि साइरेगपंचमासियं वा

एतस्मिं परिहारद्व्यापाणं अभयं परिहारद्व्यापाणं पडिसेवित्ता आलोएजा,
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स बहुसो वि चाउम्मासियं वा
बहुसो वि साइरेगं वा, बहुसो वि पंचमासियं वा, बहुसो वि साइरेगं वा
पलिउंचिय आलोएमाणस्स बहुसो वि पंचमासियं वा
बहुसो वि साइरेगं वा, बहुसो वि छम्मासियं वा
तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥५॥१६॥

एतस्मिं आलोयणमुत्ताणं अत्थो पूर्ववत् । इमो विसेसो -

एत्तो णिककायणा मासियाण जह घोसणं पुइविपालो ।
दंतपुरे कासीया, आहरणं तत्थ कायव्वं ॥६५७५॥

“एत्तो” त्ति अतः परं आलोयणाविहाणं भण्यइ । “णिककायणा” णाम मासादि पडिसेवितं जाव
आलोयणादिहस्स ण कज्जति ताद अ णिककायितं भण्यतां ।

अथवा - तं मासादि पडिसेवितं आलोयणविहीए गुरवो णाउं जं मासातिआशेवणाए वि हीणाघयाए
वा जहाइहाए आरोवणाए आरोवयति तं णिककायितं भण्यइ ।

अथवा - केरिसस्स आलोइज्जति एतं इमेण दिहुंतेण णिककाइज्जइ ।

“दंतपुरं दंतवक्के, सच्चवती दोहले य वणयरए ।
धणमित्त-धणसिरीए, पउमसिरी चेव दढमिते ॥

जारिसस्स आलोइज्जति तत्थोदाहरणं इमं -

दंतपुरं णगरं, दंतवक्को राया, तस्स सच्चवती देवी । तस्स दोहलओ - “जति हं सच्चदंतमए
पासाए कीलिज्जा ।” रण्णो कहियं ।

रण्णा अमच्चो आणत्तो - “सिग्घं मे दंते उवहुवेसि ।” तेण वि णयरं घोसावितं - जो
रण्णो दंते कीणति ण देति वा घरे सते तस्स सारीरो दंडो ।

तत्थ णयरं धणमित्तो सत्थवाहो, तस्स य दो भज्जाओ - धणसिरी पउमसिरी य । अणया
तासि दोह्व वि भंडणं जातं । तत्थ धणसिरीए पउमसिरी भणिया - किं तुमं गव्वमुव्वहसि ? किं तए
सच्चवतीए अहिं गो दंतमओ पासादो कतो ?

ताहे पउमसिरीए असग्गाहो गहितो - “जति मे दंतमओ पासादो ण कज्जति, तो मे अलं
जीविणं ।” ण देति धणमित्तस्स आलावं ।

तस्स वयंसो दढमित्तो णाम । तस्स कहियं ।

तेण भणिया - “अहं ते कालहीणं इच्छं पूरेमि” छुट्टाविया असग्गहं ।

ताहे सो दढमित्तो वणचरादीए सम्माणसंगहिए करेति ।

तेहिं भणियं - “किं आणेमो, किं वा पयच्छामो”

तेण भणियं - “दंते मे देह” । तेहिं य ते दंता खड्गपूलगेहि गोविता । सगडं भरियं,
णयरदारे य पवेसिज्जताणं गोणाऽऽकड्डितो दंतो पडिओ, “चोरो” त्ति सहोडो वणयरं गहितो ।

રાયપુરિસેહિ પુચ્છિજ્જતિ કસ્સેતે દંતા, સો ણ સાહતિ । એત્યંતરે દઢમિત્થેણ ભણિયં-“મમ એ દંતા, એસ મે કમ્મકરો ।” વળચરો મુક્કો, દઢમિત્થો ગહિતો । સો રણ્ણાતો પુચ્છિત્થો-“કસ્સેતે દંતા ?” સો ભણતિ “મમ” તિ । એત્યંતરે દઢમિત્થં ગહિયં ણાઉં ધળમિત્થો મ્મગત્થો ।

રણ્ણો પુરતો મ્મણતિ - “મમ એતે દંતા, મમ દંડં સારીરં વા ણિમ્મહં કરેહિ” તિ ।

દઢમિત્થો વિ મ્મણતિ - “અહમેયં ણ જાણામિ, મમ સંતિતા દંતા, મમ ણિમ્મહં કરેહિ” તિ, એવં તે અણ્ણુણાવરાહરક્ષણદ્વિયા ણિરવરાહી રણ્ણા મ્મણિયા - “અમ્મો । મ્મયત્યં કરેહિ ।”

તેહિ સવ્વં જહામ્મયં કરિયં ।

રણ્ણા તુદ્દેણ મુક્કા, ઉસ્સુંકા ।

જહા સો દઢમિત્થો ણિરવરાહી અવિ ય મરણમ્મુલ્લગતો ણ ય વરાહરાહો સિદ્ધો, તહા ડાલોયનારિહેજ અપારિસાટિયા અવિયવ્વં । જહા સો ધળમિત્થો મ્મયત્યં કરેહિ મમેસોવરાહો તિ એવં ધાલોયમેળં મૂલુત્તરાવરાહા અપલિત્તંચમાણે અહદ્વિયા કરેયવ્વા ॥૬૫૭૩॥

પંચમે ય સુતે હમો ય વિસેસો દંસિજ્જતિ -

પળ્ણાતિરેગ જા પળ્ણવીસસુત્તમ્મિ પંચમે વિસેસો ।

આલોયનારિડાલોયઓ ય આલોયણા ચેવ ॥૬૫૭૬॥

એતીએ પુવ્વદ્વસ્સ હમં વક્કણં -

અહન્ના પળ્ણણડહિઓ, માસો દસપક્કસવીસમિળ્ણેણં ।

સંજોગા કાયવ્વા, લહુગુરુમાસેહિ ય અળેગા ॥૬૫૭૭॥

“અહન્ને” ત્યયં વિકલ્પવાચી । કઃ પુનઃ વિકલ્પ ? , ઉચ્યતે - પળ્ણમાતિતા ઠાણા અતિયારતો વ ણિપ્પણ્ણા - માવઓ વા નિષ્પન્ના મ્મવંતીત્થયં । પંચમે સુતે હમો વિસેસો - માસો લહુપક્કગદસગાતિરિત્થો ય કાયવ્વો, એવં દસ પળ્ણરસ વીસ મિળ્ણમાસાતિરિત્થો ય । એવં દોમાસાદિયા વિ પળ્ણમાદિયાતિરિત્થા કાયવ્વા । પુણો પળ્ણાવિદ્દિ લહુગુરુદ્દિ લહુમીસગસંજોગમુત્તા કાયવ્વા, હમેળ વિદ્દિમા -

જે મિલ્લુ ગુરુગલહુગપળ્ણાતિરેગમાસિયં પરિહારદ્વાણં હત્થાદિ ।

જે મિલ્લુ લહુગપળ્ણગદસગાતિરેગમાસિયં પરિહારદ્વાણં હત્થાદિ ।

જે મિલ્લુ લહુગપળ્ણગુરુદસગાતિરેગમાસિયં પરિહારદ્વાણં હત્થાદિ ।

એવં માસિયં લહુપળ્ણં ચ અમ્મયંતેણ આણિયવ્વં જાવ ગુરુમિળ્ણમાસો તિ ।

તત્થો માસિયં ગુરુપળ્ણં ચ અમ્મયંતેણ આણિયવ્વં જાવ ગુરુમિળ્ણમાસો તિ ।

એવં માસિયં અમ્મયંતેણ પળ્ણાદિયાણ સવ્વે દુગસંજોગા આણિયવ્વા ।

તત્થો માસિગસ્સેજ પળ્ણાદિયાણ સવ્વે તિગમંજોગા ચ ઉવકાદિસંજોગા ય જાવ દસગસંજોગો તાવ સવ્વે આણિયવ્વા ।

તત્થો માસગુરુ અમ્મયંતેણ પળ્ણ દસગ પળ્ણરસ વીસમિળ્ણમાસંતાણ લહુગુરુભેદમિળ્ણાણ દુગાદિસંજોગા જાવ દસગસંજોગા તાવ સવ્વે કાયવ્વા । એવં દોમાસિયાદિઠાણેસુ વિ લહુગપળ્ણાદીયાણ સવ્વે સંજોગા કાયવ્વા । એવં અળેગા સંજોગા મ્મવંતીત્થયં । એવં પંચમે વિસેસો ઉવઉચ્ચિય સર્વસ્વરતો આણિયવ્વો । હમે ય એથ પંચમે સુતે આલોયનારિહા આણિયવ્વા -

^२ १आयारवं ^३ आहारवं, ^४ ववहारोव्वीलए ^५ पकुव्वी य ।

^६ णिज्जवगवायदंसी, ^७ अपरिस्सावी ^८ य अट्टमए ॥

पंचविहं आयारं जो मुणइ आयरइ वा सम्मं सो आयारवं ।

आलोइज्जमाणं जो समेदं सव्वं अवघारेति सो आहारवं ।

पंचविहं आगमादि ववहारं जो मुणइ सम्मं सो ववहारवं ।

(आलोयय गृहंतं जो महुंरादिवयणपयोगेहि तहा भणइ जहा सम्मं आलोएति सो उव्वीलगो ।

आलोइए जो पच्छित्तं कारवेति सो पकुव्वी ।

जहा णिववहइ तहा पापच्छित्तं कारवेति सो णिज्जवगो ।

अणालोएतस्स पत्तिउज्जतस्स वा पच्छित्तं च अकरेतस्स संसारे जम्मणमरणादीदुल्लभवोहीयत्तं परलोभावाए दसिसेति, इहलोके च ओमासिवादी, सो अवययदंसी ।

आलोइयं जो ण परिस्सवति अण्वस्स ण कहेति त्ति कुत्तं भवति सो अपरिस्सावी । एरिसो आलोयणारिहो ।

इमेरिसो आलोयगो - २“जाती कुल” गाहा । जातीए कुलेण य संपणो अकिच्चं ण करेति ॥१॥ काऊग वा सम्मं कहेति ॥२॥ विणीयो णिसेज्जादिविणयं सव्वं करेति, सम्मं च आलोएति ॥३॥ गाणी णाणाणुसारेण आलोएइ ॥४॥ अमुगसुतेण वा मे पच्छित्तं दिण्णं सुद्धो गृहमिति दंसणेण सहइति ॥५॥ एषं चारित्तं भवति, संपणो पुणो धतियारं ण करेति, अणालोतिए वा चरित्तं णो मुज्झति त्ति सम्मं आलोएइ ॥६॥ खमादिजुत्तो खमी, युद्धमादीहि वा जेतितो कहे त्ति फलं ण भणति, सम्मं पडिवज्जति, जं पच्छित्तं आरोविज्जति त सम्मं वहतीति ॥७॥ दंतो इदिय णोइदिएहि वा दंतो । ८। अपलिज्जंमाणो आलोएति वहति वा अमायी ॥९॥ आलोएत्ता णो पच्छा परित्तप्पइ, दुट्ठु मे आलोइयं ति अपच्छायावी ॥१०॥ एरिसगुणजुत्तो आलोयगो ।

इमे आलोयगस्स आलोयणादोसा -

^१ ३आगंपइत्ता ^२ अणुभाणइत्ता, ^३ जं ^४ दिट्ठं ^५ बायरं ^६ च ^७ सुहमं ^८ वा ।

^९ छण्णं ^{१०} सट्ठाउलगं ^{११} बहुजण ^{१२} अव्वत्त ^{१३} तस्सेवी” ॥१॥

वेयावच्चकरणेहि आयरियं आराहेत्ता आलोयणं देति ॥१॥

“चरमं घोवं एस पच्छित्तं दाहिंति ण वा दाहिंति” पुव्वामेव आयरियं अणुमेति - “दुव्वलो हं घोवं मे पच्छित्तं देज्जह” ॥२॥

जो धतियारो अण्णेणं कज्जमाणो दिट्ठो त आलोएति, इयरं नो आलोएति ॥३॥

“बायरं” - महंता अवराहा ते आलोएति, सुहमा णो ॥४॥

अहवा - सुहमे आलोएति, नो बायरे ।

जो सुहमे आलोएति सो कहं बायरे ण आलोएति, जो वा बायरे स कहं सुहमे नालोए त्ति ॥५॥

“छण्णं” ति - तहा अवराहे अप्सट्ठेण उच्चरइ जहा अपणा वेव सुमेति, णो गुरु ॥६॥

“सट्ठाकुल” ति - महतेण सट्ठेण वा आलोएति जहा अमीयातिणो वि सुणति ॥७॥

१ व्य० उ० १ गा० ३३८ । २ व्य० उ० १ गा० ३३९ - ३४० । ३ व्य० उ० १ गा० ३४२ ।

बहुजणमञ्जे वा आलोएति, अहवा एकस्स आलोएति पुणो अणोसि आलोएति ॥८॥

"अव्वत्तो" अयीयत्थो तस्स आलोएति ॥९॥

"तस्सेव" ति—जो आयत्थो तेहि चैव अव्वराहपदेहि वट्ठति तस्सालोएति, "एस मे अत्तिमार-
तुल्ले ण दाहिति, ण वा मे खरंटेहिति" ॥१०॥ ति ॥६५७७॥

इदार्णि आलोयणविधी भण्णति—

आलोयणाविहाणं, तं चैव दव्वखेत्तकाले य ।

भावे सुद्धमसुद्धे, ससणिद्धे सातिरेगाइं ॥६५७८॥

आलोयणाविहाणं ज पढमसुत्ते वुत्तं तं चैव सव्वं सवित्थरं इह दव्वखेत्तकालमावेहि पडिसेवितं
माणिअव्वं, पमत्थेहि वा दव्वखेत्तकालमावेहि आलोएयव्वं. पडिसेवितं पुण भावनो सुद्धे वा असुद्धेण
अप्पच्छित्ती सप्पच्छित्ती वा । असुद्धेण सपायच्छित्तं, तं च पायच्छित्तं इह सुत्तं सातिरेगमासो केण भवति ?,
उच्यते— "ससणिद्धे सातिरेगा" इति ॥६५७८॥

अस्य व्याख्या—

ससणिद्ध बीयघट्टे, काएसुं मीसएसु परिठविते ।

इतर सुद्धे सरक्खे, पणगा एमादिया होंति ॥६५७९॥

ससणिद्धेहि हत्यमत्तेहि भिक्खं गेह्णते पणं, एवं जति बीयसंघट्टपरित्ताएसु वा मीसेसु परं।रट्ट-
वियं इतरट्टवियं वा सुद्धमपाहुडियं वा ससरक्खेहि वा हत्यमत्तेहि गेह्णति । एवमादिप्रवराहेसु पणं भवइ ।
एत्थ इमं णिदरिणं—सागारियपिडं ससणिद्धहत्थेहि गेह्णतो सातिरेगमासियं भवति, एवं परित्तायं अणंतर-
णिक्खित्तं बीयसंघट्टं च गेह्णतो, एवमादिमासियं अव्वराहो पणगातिरित्तो भासो भवति ॥६५७९॥

तं च आलोयणारिहो इमेण विहिणा जाणइ देति वा—

ससणिद्धमादि अहियं, तु परोक्खी सो उ देंति अहियं तु ।

हीणाहिय तुल्लं वा, नाउं भावं च पच्चक्खी ॥६५८०॥

जो परोक्खणाणी आलोयणारिहो सो आलोयणमुद्दाओ पणगातिरित्तं मासं सोक्खा पणगातिरित्तं
वेथ मासं देति, जो पुण पच्चक्खणाणी सो पणगातिरित्तं वि मासे आलोइए रागदोसभावानुक्खं कम्मबंधं
जाणिऊणं हीणं अहियं वा पडिसेवणतुल्लं वा पायच्छित्तं देइ ।

इदार्णि आलोयणसुत्ते वि जाहे सगलसुत्ता, बहुससुत्ता वा. सगलसज्जोगसुत्ता, बहुससंजोगसुत्ता य,
एते चउरो सभेदा भगिया भवति—साहे जे पुव्वणिहिट्ठा पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसुत्ता, ते अत्यंतो भगामि ।

तत्थ पंचमं इमं— "जे भिक्खू सातिरेगमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेगत्रिमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेगतिमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेग चउमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेग पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउंचियं आलोएमाणस्स—

साइरेगमासियं साइरेगदोमासियं साइरेगतिमासियं साइरेगचउमासियं ।

साइरेगपंचमासियं ।

पलिउंचिय आलोएमाणस्स साइरेगदीमासितं, सातिरेगतिमासितं ।

सातिरेगचउमासितं सर्गतिरेगपंचमासियं च” । एते पंच सामण्यमुत्ता ।

एवं पंच सातिरेगउवात्तियाण वि भाणियन्वा, सातिरेग अणुवात्तियाण वि पंच, एते पण्णरस वि पंचमं सातिरेगमुत्तं । एवं चैव छट्ठं सुत्तं बहुसाभिलाषेण ज्ञेयम् ।

इदाणि एतेसि चैव दोण्ह वि सुत्ताणं पत्तेयं पत्तेयं संजोगा कायव्वा, जहा पढमवितिय-
सुत्तेसु तहा कायव्वा, ताहे सत्तमद्वया सुत्ता भवन्ति । सत्तमे सुत्ते णव सुत्ता एगद्धा ण भवन्ति । सातिरेग-
सगलसुत्ताणं संजोगसुत्ताणं सव्वसुत्तपिडयं च उप्पणं सुत्तसहस्सं । बहुससातिरेगसुत्तेसु वि एवं चैव एत्तिया
भवन्ति । एते सव्वे एककतो पिडिया एकवीसं सया अट्ठुत्तरा, मूलुत्तरेहि गुणिया बायालीसं सता सोलसुत्तरा ।
दण्यवप्पेहि गुणिता अट्ठसहस्सा चउरो य सता वत्तीसा भवन्ति । एवं आइमेसु चउसु सुत्तेसु अट्ठसहस्स चउरो
य सता वत्तीसा भवन्ति । अट्ठसु वि सुत्तेसु सव्वग्गं सोलससहस्सा अट्ठसता चउसट्ठा भवन्ति । एति सि
भावन्ति सुत्ता आलोयणसुत्तेसु वि एत्तिया चैव, आरोवणसुत्तेसु वि एत्तिया चैव, सम्हा एस रासी तीहि गुणितो
पण्णासं सहस्सा पंच सता बाणउमा भवन्ति ॥६५८०॥

इदाणि णवमं सुत्तं, तं च सगलानं साहियाण य संजोगे भवति, तत्थ मादिमा चउरो सगल-
सुत्ता पंचमादिया अट्ठता चउरो साहियसुत्ता ।

एतेसि सगलसाहियाणं संजोगविधिप्रदर्शनार्थमिदमाह -

एत्थ पडिसेवणाओ, एककग-दुग-तिग-चउक-पणएहिं ।

अककग-सत्तग-अट्ठग,-णवग-दसहिं च णेगाओ ॥६५८१॥

‘एत्थं’ ति सगलसाहियसंजोगसुत्ता णवमे पडिसेवणएगारा इमे एगादिया दस य, तेहि कायव्वा,
तं जहा -

मासितं, सातिरेगमासितं ।

दोमासितं सातिरेगदोमासितं ।

तेमासितं, सातिरेगतेमासितं ।

चउमासितं, सातिरेगचउमासितं ।

पंचमासितं, सातिरेगपंचमासितं ।

एतेसि उच्चारणविधी इमा -

जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं.....सेसं पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सातिरेगमासियं जाव अपलिउंचियं आलोए, सातिरेगमासियं ।

जे सातिरेगदोमासियं जाव अपलिउंचियं आलोए सातिरेगदोमासियं ।

एवं तेमासियादिया वि वत्तव्वा एगादिसंजोगा भाणियन्वा ॥६५८१॥

जहासखं च तेसि एगादियाणं इमे आगयफला -

दस चैव य पणयाला, वीसा य सयं च दो दसहिगाईं ।

दोण्णि सया बावण्णा, दसुत्तरा दोण्णि य सताओ ॥६५८२॥

वीसा य सयं पणयालीसा दस चेव होंति एक्को य ।

तेवीसं च सहस्सं, अट्ठव अणेगाउ नेअआओ ॥ ६५ ॥ ३॥

एत्थ करणोवाओ इमो - एगादेगुत्तरिया पदसंख्यमाणओ ठवेअहि, गुणगारा जस्स वेत्तिवाणि पदाणि ते एगुत्तरवड्ढिता ठवेऊणं तेसि हेट्ठा ताणि चेव विवरीयाणि ठवेयव्वाणि ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १

एत्थ उवरिमा गुणगारा हिट्ठिमो रासी भागहारो, तेसि हेट्ठाओ विवरीओ । एत्थ एककसंजोगं इच्छतेणं अण्णं सगलकवं ठवेऊणं अतिल्लेण दसगुणकारएण गुणेयव्वं, ताहे अतिल्लेण एक्कभागहारेण भागो हायव्वो, भागहारभागलदं दस, एतेसि एककसंजोगा दस लद्धा, एते एगते ठविया । दुगसंजोगं इच्छतेण एते दस णवहि गुणिता दोहि भागेहितो लद्धा, दुगसंजोगा पणयालं, एवं ठाण्ठाणे पडिरासियगुणियहिपमाण-लद्धफलः जाणियव्वं । तिससंजोगे वीसुत्तरं सयं, चउक्कसंजोगे दो सता दगुत्तरा, पंचमसंजोगेण दो सता बावन्ना, छक्कसंजोगे दो सया दसुत्तरा, सत्तसंजोगे सयं वीसुत्तरं, अट्ठगसंजोगे पणयालीसं, णवसंजोगेण दस, दससंजोगेण एक्को, सव्वेसि संखेवो तेवीसं सहस्सं ।

“अट्ठव” ति अट्ठवा - “अणेगाउ” ति अणेगे पडिसेवणादिमुत्तभेदा णेयव्वा ज्ञेया वा ।

कहं ? उच्यते - एते सप्तमणतो भणिया, एते चेव उग्घायाणुग्घाते मूलुत्तरदणकप्पेहि गुणेयव्वं । अघवा - तीसपदाण इमा रयणा कायव्वा, तंजना - मासियं पंचदिणातिरेगमासियं, दसदिणादरेगमासियं, पनरसदिणादरेगमासियं, बीसदिणातिरेगमासियं, त्रिण्णदिणातिरेगमासियं, एवं दुमांसं तिसासे चउमासे पंचमासे य एक्केक्के छट्ठाणा कायव्वा । एते पंच छक्कातोसं ठाणा । एतेसु वि करणं पूर्ववत् कायव्वं ।

सव्वागयफलाण सपिडियाण इमा सुत्तसखा भवति -

‘कोडिसयं सत्तऽहियं, सत्तत्तीसं व होंति लक्खाई ।

ईयालीस सहस्सा, अट्ठसया अहिय तेवीसा ॥

एत्थ वि सामणुग्घाताणुग्घातमीसमूलुत्तरदणकप्पभेदाभिन्ना कायव्वा । णवरं - जरथ मीसो तत्थ उग्घातिया संजोगा एगादिया ठवेउं अणुग्घातिया वि एगादिसंजोगा पुढो ठवेउं, ताहे उग्घायएक्कसंजोगेण सव्वे एगादिअणुग्घाता जोगा गुणिता । एवं मीससंजोगे एक्कसंजोगफला भवति, एवं दुग-तिस-चउक्क-पंचक-संजोगेहि गुणिता दुगादी सफला भवति, एएण लक्खणेण सव्वत्थ मासफला भाणेयव्वा, इमं निदिरसणं - उग्घाति-यस्स दसहि एक्कसंजोगेहि दस अणुग्घाता गुणिया हवति । सत्तं तु एक्कसंजोगे अणुग्घातातिगएहि पणयालीसं दु अणुग्घाता गुणिता अट्ठपंचमसता जाता दुगाणं अणुग्घाए बारससय इगवीससय पणवीस-वीसा इक्कवीससय बारससय अट्ठपंचमसता य एगं सत दस य । एते अणुग्घाताणं संजोगा एक्कगादिया सव्वे ते सम्मिलिता तीससहिया दोणिसया दससहस्सा य ।

अट्ठणा -

“उग्घातितदुगाएहि, पणयालीसाए सव्वसंजोगा ।

अणुग्घातियाण गुणिया, एक्कादितिभेत्तिया रासी ॥

एक्के चउसतपण्णा, पणवीसा दो सहस्स दुग जोगे ।

चउप्पण्णसया नव सहस चउमयपत्राम चउजोगे ॥

सेसा उवरि मुहुत्ता, णेयव्वा दस य पणचत्ता ।
 एते सब्बे मिलिया छायालसहस्स होंति पणतीसा ॥
 उग्घातियदुअएहि, सब्बभोगं अणुग्घाते ।
 अणुग्घात दुएहि, पणयालिसएण सब्बसंजोगा ॥
 अणुग्घातियाण गुणिया, एक्कादित्तिमेत्तिया रासी ।
 बारस चउप्पणसया, चउसया चोइसय सहस्स तियजोए ॥
 पणुवीससहस्साइ, दो य सया हुंति चउजोगे ।
 चत्तऽहिता दोण्णि सता, तीससहस्सा य पंचसंजोगे ॥
 सेसा उवरिमुहुत्ता, जा वीसऽधियं सयं दसए ।
 उग्घातितसंजोगा णुग्घाति य एक्कगातिसंजोगा ॥
 सत्त सया सट्ठऽहिया, बावीस सहस्स लक्खो य ।
 इगवास सया एगे, चउणउति सता दुग्गम्मि पण्णऽहिया ॥
 तिगजोगेऽणुग्घाता, पणुवीस सहस दो य सया ।
 चउचत्तसहस्स सत्तं, चउजोगपणम्मि दुसय बावण्णा ॥
 सेसा उवरिमुहुत्ता, दसगम्मि दमुत्तरा दोण्णि ।
 एवं उग्घाय चउक्कएणं अधिग सत्त दसगेणं ॥
 एगादि अणुग्घाता, गुणियफला सब्बिमो रासी ।
 अट्ठसया तीसहिया, चोइसतयसहस्स दोइ लक्खाइ ॥
 कायव्वसेसगेसु वि, एवं सब्बफला पिडरासी य ।

उग्घाताणुग्घातमीसेगमुत्तसब्बसंखेवो इमे —

मीसगमुत्तसमासे, छायाल सहस्स दस य लक्खाइ ।
 पंचसय अउणतीसा, दस पदं संखित्तसंखेवो ॥

एवं कएसु जे सगलसाहिया संजोगा लब्धंति ते णवमसुत्तभेदा भवन्ति, जे पुण सेसा ते सगलसुत्तभेदा वा साधितसुत्तभेदा वा इत्यर्थः । एवं बहुससुत्ते वि दसमे वक्खमाणं संखा य अपरिसेसा भाणियव्वा । णवरं — बहुसाभिलावो भाणियव्वो, एते य दस सुत्ता बहुभंगाकुला णो इह सब्बभगेहि भणिया, ते य न भणिया अतिविशेषरोत्ति काउं जे न भणिया ते उवउज्जिउं गुरूदेसतो वा भणेज्जाहि ति । गया आलोयणसुत्ता ।

इदाणि आरोवणसुत्ता तत्थवि आदिमा अट्ठसुत्ता सवित्थरा पूर्ववत् ।

इदाणि णवम-दसमा, तेसु वि एगादिसंजोगा पूर्ववत् ।

अंतिल्लचउक्कसजोगे इमे सुत्ता —

जे भिक्खु चाउम्मासियं वा साइंगेचाउम्मासियं वा

पंचमासियं वा सातिरेगपंचमासियं वा

एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं,

ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया-

पुत्विं पडिसेवियं पुत्विं आलोइयं, पुत्विं पडिसेवियं पच्छा आलोइयं,

पच्छा पडिसेविंयं पुव्विं आलोइयं, पच्छा पडिसेविंयं पच्छा आलोइयं ।
 अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं,
 पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं,
 अपलिउंचिए अपलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं
 साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
 से वि कसिणे तत्थेव आरुहियव्वे सिया ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खु बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेगचउम्मासियं वा
 पंचमासियं वा सातिरेगपंचमासियं वा
 एएसिं परिहारट्टाणाणं अन्नयरं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।
 अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवहत्ता करणिज्जं वेयावडियं
 ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहियव्वे सिया
 अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं,
 पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं,
 अपलिउंचिए अपलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं
 साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
 से वि कसिणे तत्थेव आरुहियव्वे सिया । एयं पलिउंचिए ॥सू॥१८॥

जे भिक्खु चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा
 पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा
 एएसिं परिहारट्टाणाणं अन्नयरं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।
 पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवहत्ता करणिज्जं वेयावडियं
 ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहियव्वे सिया
 अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं,
 पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं,
 पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं
 साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
 से वि कसिणे तत्थेव आरुहियव्वे सिया ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खु बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेगचाउम्मासियं वा,
 पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा
 एएसिं परिहारट्टाणाणं अन्नयरं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

पलिउं'चिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवइत्ता काणिज्जं वेयावडियं
ठविए वि पडिसेविच्चा से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया
अपलिउं'चिए अपलिउं'चियं, अपलिउं'चिए पलिउं'चियं,
पलिउं'चिए अपलिउं'चियं, पलिउं'चिए पलिउं'चियं ।
पलिउं'चिए पलिउं'चियं आलोएमाणस्स सच्चमेयं सकयं
साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥६०॥२०॥

(इत्यादि सर्व उच्चारयेयव्वं, एवं बहुसो वि सुत्तं उच्चारयेयव्वं) एते वि तहेव वक्खमाणेयव्वं । यदि
सा एव व्याख्या को विशेषः ? अत उच्यते - हेट्ठिमसुत्तेसु परिहारतवो ण भणिमो ।

इहं परिहारतवो वि भाणिज्जइ -

को भंते ! परियाओ, सुत्तथाभिग्गहो तवोक्कम्मं ।

कक्खडमकक्खडेसु, सुद्धतवे मंडवा दोणि ॥६५८४॥

“को भंते” अस्य व्याख्या -

गीयमगीओ गीओ, अहं ति किं वत्थुं कासवसि (कस्स तवस्स) जोग्गो ।

अगीतो ति य भणिते, थिरमथिर तवे य कयजोग्गो ॥६५८५॥

सो अतिपारपत्तो आलोए पुच्छिज्जइ - किं तुमं गीतो अगीतो वा ?

जति भणइ - अहं गीतो, तो पुणो पुच्छिज्जइ ति - तुमं किं वत्थु ति, आपरिसो उवज्जाम्भो
वसभाति वा ?

अण्णतरे कहिए पुणो पुच्छिज्जति - “कस्स तवस्स जोग्गो” ति - किं तवं कावं अच्छिहसि ?
कस्स वा तवस्स समर्थेय्यः ।

अहं सो भणति - अहं अगीतो, तो पुच्छिज्जति - किं तुमं थिरो थिरो ति ?

थिरो णाम धितिसंघयणेहिं बलवं, अहंवा - दरिसणे पव्वज्जाए वा थिरो घससेय्यवं : इतरो पुण
थिरो ।

अहं भणाति - थिरो हं, तो पुच्छिज्जइ “तवे कवजोग्गो” ति कक्खडतवेहिं संभावितो अभावितो
वा कृताभ्यासेत्यर्थः ।

जति भावितो तो से परिहारतवो दिज्जति, इयरस्स सुद्धतवो ॥६५८५॥

जो सो एवं पुच्छिज्जइ साधू सो सगणिच्चतो अण्णगणातो वा आगतो -

सगणम्मि गत्थि पुच्छा, अण्णगणा आगतं व जं जाणे ।

परियाओ जम्मदिक्खा, अउणचीस वीस कोडी य ॥६५८६॥

जो सगणिच्चो, जो य परगणाओ गीतादिभावेहिं गज्जति, एते ण पुच्छिज्जइ । जो परगणास्सओ ण
जज्जति । परियाओ दुविहो - जम्मपरियाओ दिक्खपरियाओ य । जम्मपरियाओ जहण्णेणं अउणचीसं वासा,
उक्कोमेणं जा देसुणा पुम्बकोडी । दिक्खपरियाओ जहण्णेणं बीसं वासा, उक्कोसेण देसुणा पुम्बकोडी ॥६५८६॥

इदार्णि सुत्तयाणे -

णवमस्स ततियवत्थुं, जहण्ण उक्कोसउणगा दसओ ।

सुत्तत्थभिग्गहा पुण, दब्बादि तवो रयणमादी ॥६५८७॥

सुत्तत्थेण जहण्णेण जेण भधीयं णवमस्स ततियं भायारवत्थुं, उक्कोसेण जाव ऊणगा दसपुब्बा, समतदसपुब्बादियाण परिहारतवो ण दिज्जति ।

कम्हा ? जम्हा वायणादिपंचविहसज्जायविहाणं चेव तेसि महंततरं कम्मणिज्जरठाणं । किं च सगलसुयणाणी महंतं ठाणं णो परिहारतवविहाणेण विभाणिज्जति । किं च अणालावादिपदेसु य सुयस्स अभत्ती भवति । अभिग्गहा दब्बादिमा ।

दव्वतो जहा - मए अज्जकुम्मास। घेत्तव्वा तक्कादि वा एकदव्वं ।

खेत्ततो - एलुयं विवखंभित्ता ।

कालतो - ततियाए पोस्सीए ।

भावतो - हसंती खवती वा ।

तवो य रयणावल्लिमादि, सीह 'निककीलियादि ।

एवमादिगुणजुत्तस्स परिहारतवो दिज्जति । एवमादिगुणविपरिहाणे पुण सुद्धतवो दिज्जति । परिहार-तवो कवसडो दुस्सरेत्यर्थः । अकवसडो सुद्धतवो सुकरेत्यर्थः ॥६५८७॥

सीसो पुच्छति - कम्हा गीतादिगुणजुत्तस्स परिहारो, इतरस्स य सुद्धतवो ?

आयरिओ भणइ - एत्थ दोहि मंडवेहि दिट्ठं करेइ । सेलमंडवेण एरंडमंडवेण य जुत्तो ।

जं भायति तं छुम्भति, सेलमए मंडवे ण एरंडे ।

उभयवल्लि ए वि एवं, परिहारो दुब्बले सुद्धो ॥६५८८॥

जावतिथं भायति तावतिथं सेलमंडवे छुम्भति तथा वि न भज्जति । एरंडमंडवो पुण जावतिथं समति तावतिथं छुम्भति । एवं "उभय" ति जो धितोए सरीरेण य संघयणसंपण्णो गीतादिगुणजुत्तो य तस्स परिहारतवो दिज्जति । "दुब्बलो" ति धितोए संघयणेण वा उभयेण वा दुब्बलो, तस्स सुद्धतवो दिज्जति ॥६५८८॥

परिहारसुद्धतवाणं प्रायश्चित्तं विसेसओ दिज्जति, ततो भन्नति -

अव्विसिट्ठा आवत्ती, सुद्धतवे तह य होति परिहारे ।

वत्थुं पुण आसज्जा, दिज्जति इतरो व इतरो वा ॥६५८९॥

परिहारतवे सुद्धतवे य अव्विसिट्ठा "आवत्ति" ति दोष्णि जणा तुल्लं भावतिठाणं आवण्णा । तस्स "वत्थुं आसज्ज" ति - धितिसंघयणसंपण्णं पुरिसवत्थुं णाउं । "इयरो" ति परिहारो तवो दिज्जति । जं पुणो धितिसंघयणेहि होणं पुरिसवत्थुं तस्स ताए चेव आवत्तीए "इयरो" ति सुद्धतवो दिज्जति । एत्थ अण्णोण्णा-विकसत्तो इयसडा ठित्ता ॥६५८९॥

एत्थ एगावत्तीए विसमदाणपसाहणत्थं इमो दिट्ठतो -

वमण-विरेयणमादी, कक्खडकिरिया जहाऽऽउरे बल्लिए ।

कीरति य दुब्बलम्मि वि, अह दिट्ठतो तवे दुविहो ॥६५९०॥

१ वि (व्यय०) ।

जहा दो जणा सरिसरोगाभिभूया, तस्म जो माउरो बलवं सरीरेण तस्स वमणविरेयणादिका कक्खडादिकिरिया कज्जति । दुब्बलो वि जहा सट्ठति तहा अकक्खडा किरिया कज्जति । “अहं” ति - अयं दिट्ठतो तवे दुविहो उवसंहारणिज्जो - कक्खडाकिरियसमाणो परिहारतवो, सुद्धतवो अकक्खडाकिरियसमाणो ॥६५९०॥

जेसि णियमा सुद्धतवो परिहारतवो वा दिज्जति तन्नियमार्थमिदमुच्यते -

सुद्धतवो अज्जाणं, अगीयत्थे दुब्बले असंघयणे ।

धितिवल्लिए य समण्णा-अयसव्वेसिं पि परिहारो ॥६५९१॥

दुब्बलो धितोए अणुवचित्तेहो रोगादिणा, असंघयणो ति - आदिल्लेहि तिहि संघयणेहि वज्जितो, एतेसि सुद्धतवो दिज्जति । जो धितोए बलवं वज्जकुड्डसमाणो, जो य संघयणेहि समण्णागमो आदिल्लेहि संघयणभावेहि जुतो ति वुत्तं भवति, गीतातिगुणेहि वा समण्णागमो युक्त इत्यर्थः, सव्वेसिं पेसि परिहारतवो दिज्जति, ॥६५९१॥

तस्सिमो विधी - “ठवणिज्जं ठवइता” सुत्तपदं, जं तेण सह णायरिज्जति तं ठवणिज्जं, तं सव्वं गच्छसमक्खं ठविज्जइत्ति - परुविज्जति । अथवा - सव्वा चेव तस्स सामायारी ठवणिज्जा - परुविज्जा इत्यर्थः ।

कहं पुण तं ठविज्जति ?, उच्यते -

विउसग्गो जाणणट्ठा, ठवणा भी (ती) ए य दोसु ठवित्तसु ।

अगडे णदी य राया, दिट्ठतो भीय आसत्थो ॥६५९२॥

तस्स परिहारतवं आवज्जतो आदावेव उस्सग्गो कीरइ । कहं ?, उच्यते - गुरु पुक्खदिसाभिमुहो वा उज्जरदिसाभिमुहो वा चरंतदिसाभिमुहो वा चेइयाण वा अभिमुहो । एवं परिहारतवो वि । णवरं - गुरुस्स वामपासे ईसि पिट्ठतो ते दुवग्गा वि भणति - “परिहारतववज्जणट्ठा करेमि काउस्सग्गं निरुवसग्गवत्तियाए” इत्यादि ताव भणति जाव वोसिरामी ति । पणवीसुस्सासकालं सुभज्जवत्तिया ठिक्का चउवीसत्थं वा धितेत्तं भयोक्कारेण पारेत्ता अन्नल्लियं चउवीसत्थं उच्चरंति ॥६५९२॥

एत्थ सीसो पुच्छति - एस उस्सग्गो कि निमित्तं कीरइ ?, उच्यते - साधूण जाणणट्ठा कीरइ ।

अहवा -

निरुवसग्गनिमित्तं, भयजणणट्ठा य सेसगाणं च ।

तस्सऽप्यणो य गुरुणो, य साहए होति पडिवत्ती ॥६५९३॥

पुक्खं कंठं । सुभेसु तिहिकरणमुद्धत्तेसु ताराचंद्रबलेषु य अप्यणो गुरुस्स य जहा साहए भवति तहा परिहारतवं पडिवज्जइ, ॥६५९३॥ काउस्सग्गकरणं तं ठवणा ठविज्जइ, तस्स आदावेव तं परिहारितं गुरु भणति -

कप्पट्ठिओ अहं ते, अणुपरिहारी य एस ते गीतो ।

पुव्विं कयपरिहारो, तस्सऽसत्तियरो वि दढदेहो ॥६५९४॥

कप्पट्ठातो अहं ते, जाव ते परिहारकप्पो ताव अहं ते वंदणवायणादिसु सहजो ते सेससाहरो । एत्थ कप्पट्ठो कालवाची । अहवा - कप्पभावट्ठितो, अहं ते वंदणवायणादिसु कप्पो अपरिहार्य इत्यर्थः ।

शेषाः साधवः परिहार्याः । अर्थं य से एस गीयरथो साधू पुब्बं कतपरिहारतणमो जाणमो “अणुपरिहारि” ति भिक्षादि जतो जतो परिहारी गच्छति, ततो ततो अणुविदुतो गच्छइ ति अणुपरिहारी भणइ । अहवा - परिहारस्स अणु बोवं पडिलेहणादिसु साहेज्जं करेती ति अणुपरिहारी भणति । “तस्सऽमति” ति - जेण पुब्बं परिहारतवो कतो तस्सासति इयरो ति अकयपरिहारो वि गीयरथो दडसंययणो अणुपरिहारी ठविज्जति ॥६५६४॥

ठवणं ठवेतो आयरितो सेससाधू इमं भणाति—

एस तवं पडिवज्जति, न किं चि आलवति मा य आलवइ ।

अत्तट्ठचित्तगस्सा, वाधातो (मे) न कायव्वो ॥६५६५॥

सवालबुद्धं गच्छं गुरु भ्रामतेउं भणाति—एस साधू परिहारतवं पडिवज्जति, न एत किञ्चि आलवति, तुभे वि एयं मा आलवेज्जइ । अण्णो भट्ठो भत्तट्ठो, सो य भत्तादिमो, तं अण्णो परं चितेति य बालादिताणं ति । अहवा - णिच्छयतो भत्तट्ठो अतिथारमणिं अण्णाणं जट्ठेण पच्छित्तेण विविक्का अणति-वरतो विसोहेतीति अत्तट्ठचित्तयो । एयस्स मे वाधातो इमेहि पदेहि न कायव्वो ॥६५६५॥

आलावण पडिपुच्छण, परियट्ठट्ठाण वंदणम मत्ते ।

पडिलेहण संघाडग, भत्तदाण संभुज्जणा चेव ॥६५६६॥

हे देवदत्त ! इत्यादि आलावो यतार्थः । एस तुब्बे सुत्तमत्थं वा किञ्चि ण पुच्छति, एयं मा पुच्छेज्जइ १, एवं एस तुब्बेहि सह सुत्तं अत्थं वा ण परियट्ठेति २, कालवेलादिसु वा न उट्ठवेति ३, एस तुब्बं वंदणयं य करेति ४, उच्चारपासवणखेलमत्त ए ण वा देति ओहियमत्तगं वा ५, ण य डवकरणादि किं चि पडिलेहेति ६, य वा एस तुब्बं संघाडगमावं करेति ७, य वा भत्तपाणं देति ८, ण वा एस तुब्बेहि सह भुंजेति ९, तुब्बे वि एयस्स एते अत्थे मा करेज्जइ १०, एवं दसहि पदेहि गच्छेण सो वज्जितो सो वि गच्छं वज्जेति ॥६५६६॥

जति गच्छवासी एते पदे अतिचरति तो इमं पच्छित्तं—

संघाडगा उ जाव तु, लहुओ मासो दसण्ह उ पदाणं ।

लहुगा य भत्तपाणे, संभुज्जणे होत्तणुग्धाया ॥६५६७॥

दसण्ह पदाण आलावणपदातो आठत्तं जाव अट्ठमं संघाडगपदे ताव मासलहु पच्छित्तं, जति भत्तपाणं देति तो लहुलहुगा, अथ भुंजति तो वउगुग्धाया ॥६५६७॥

एतेसु जेव परिहारियस्स इमं—

संघाडगा उ जाव तु, गुरुओ मासो दसण्ह उ पदाणं ।

भत्ते पाणे संभुज्जणे य परिहारिए गुरुगा ॥६५६८॥

आलावणपदातो जाव संघाडपदं, एते अतिचरतस्स परिहारियस्स मासगुरुं, अह भत्तं देति संभुज्जति वा तो दोसु वि वउगुग्धाया भवति ॥६५६८॥

कप्पट्टितो सो इमं करोति -

कितिकम्मं तु पडिच्छति, परिणपडिपुच्छणं पि से देति ।

सो वि य गुरुमुवचिद्वति, उदंतमवि पुच्छितो कहए ॥६५६६॥

कितिकम्मं ति वंदणं, तं जति परिहारितो देति तो गुरु पडिच्छति, आलोयणं पि पडिच्छति, परिणपडि - पच्छसे अवरण्हे वा पञ्चवक्काणं से करेति, सुतत्वे पडिपुच्छं देति । "सो वि य" ति - परिहारितो "गुरु" भायरिया ते अम्भुट्टाणादिविणएण "उवचिद्वति" - विणयं करोतीत्यर्थः । "उदंत" - सरीर-बट्टमाणी वत्ता तं गुरुणा पुच्छितो कहेति ॥६५६६॥

एवं ठवणाए ठवियोए "१दोमु ठविएसु" ति - कप्पट्टिते अणुपरिहारिए य । सो परिहारिओ कया इ भीतो होज्ज "कहमहं आत्तावणादीहि मच्छवज्जितो एगागी इमं उगतवं आहामि ? एत्थिं वा कालं मयिस्सामि ?" ति एवं भीओ अग्रडाविदिदुंतेहि आसासेयव्वो ।

जहा - कोति अग्रडे पडितो कहमुत्तरिस्सामि ति भीओ ताहे सो तडत्थेहि आसासिज्जति - मा तुमं बीहेहि, वयं तुमं उत्तारेमो, एस रज्जू आणिज्जइ, एवमासासिउं णिबभओ थाहं बंधति । अह सो भणति - "मओ एस वराओ, ण एयं कोइ उछारेइ", ताहे सो णिरासो अगे मुयति, मरति य । एवं परिहारितो वि आसासेयव्वो ।

जहा कोइ अणदीए अणुसोयं वत्ततो भीओ ताहे सो तडत्थेहि आसासितो थाह बंधइ । अणासासितो णिरासो भया मरति ।

जहा वा कस्सइ "राया रुदो ताहे भीओ मारिज्जिहामि ति ताहे सो अण्णेहि आसासिज्जति - "मा बीहेहि, राया वि अत्तायं न करेति", एवं सो न विद्वति । अह सो भणति - "विणट्टो सि" ताहे विपज्जति ।

एवं परिहारितो वि आणियव्वो - मा भीहि, ग्रहं ते बंधणदायणादिसु कप्पट्टितो, एस ते तवो-किलंतस्स असमत्थस्स अणुपरिहारिओ । एवं आसासितो तवं बहुतो कत्तामिओ विरियायारं अहावंतो परिहारितो अणंतरं किरियं काउमसमत्थो अणुपरिहारियस्स पुरमो इमं भणाति -

उट्टेज्ज णिसीएज्जा, भिक्खं हिंडेज्ज भंडगं पेहे ।

कुविय पियबंधवस्स व, करेइ इतरो वि तुसिणीओ ॥६६००॥

जइ उट्टेज्जं ण सक्कति ताहे अण्णइ उट्टेज्जामि, ताहे अणुपरिहारितो उट्टवेड । एवं णिसीएज्जामि । भिक्खायरियाए जं ण सक्केति तं भिक्खमगुह्णदि सक्कं करेति । ग्रह सज्जहा भिक्खं हिंडिउं ण सक्केति ताहे भणाति - भिक्खं हिंडिज्जामि । तवं उत्तरे अणुपरिहारितो से हिंडिउं देति, भंडगपेहणे वि साहज्जं करेति, तवं वा पडिलेहेति । जहा कोवि प्रियबधुस्स कुवितो जं से करणिज्जं तं सक्कं तुण्हिक्को करेति तहा "इयरो" ति - अणुपरिहारी परिहारियस्स सक्कं करणिज्जं तुसिणीओ करेति ॥६६००॥

चोदगाह - जइ मयं से उप्पज्जइ, एरिसी वा अवस्था भवति, ता कि पच्छित्तं कज्जति ?

कि वाह -

अवसो व रायदंडो, ण य एवं च होइ पच्छित्तं ।

संकरं सरिसव सक्के, मंडय वत्थेण दिट्ठता ॥६६०१॥

१ गा० ६५६२ । २ गा० ६५६२ । ३ गा० ६५६२ । ४ पप्पति, इत्यपि पाठः । ५ गा० ६५६२ ।

अहं अवसेहि रायदंडो सुभति, किमेवं पच्छितं पि ?

आचार्याह - ण एवं रायदंडो दिव अवसेहिं वि वोढव्यो, पच्छितं सवसेहिं इच्छातो वोढव्यं चरणविसुद्धिभित्तं । अहंवा - एवं अहं अवस्स रायदंडो सुभति, जति ण सुभति तो दोसो भवति । पच्छितं पि अवस्सं वोढव्यं, जति ण वहति तो चरणविसुद्धी ण भवति ।

पुनरप्याह चोदकः - 'बहुं आवण्णं सुभउ, येवं पच्छितं किं सुभउ ? किं तत्तिलएण होहिंति' ति ।

आयरिओ भणइ - 'संकर' पच्छदं । संकर ति -

अहं सारणीए खेतो पज्जिज्जते एक्कं वि तिण्णं लग्गंतं णो अवणीयं, तण्णिस्साए अण्णे जग्गा, तेसि तिस्साए पत्तकट्टमादीवि, एवं तम्मि सोते रुद्धे विसोय गयं जलं कुसारदंडणादी पज्जेति ण छेतं सुक्खसस्सं । एवं चरणसोते पच्छित्तसंकरेसु असोहिज्जते सव्वहा चरणणासो भवति । एवं णाउं जं अहं आवज्जति तं तथा सोहेयव्वं ।

अहं वा मंडवे एक्को सरिसवो पक्खित्तो सो णावणीओ, अण्णो वि, एवं पक्खिप्पमाणेहि पक्खिप्पमाणेहि होहिंति सो सरिसवो जेण पक्खित्तेण मंडवो भज्जिहिंति ।

एक येवयेवण आवण्णेण असोहिज्जनेण चरित्तमंडवो वि भज्जिहिंति ।

अहं मंडीए एक्को पासाणो वलियिओ, अहं सरिसवस्स विभासा तथा मंडीए वि । अहंवा - मंडीए एक्कं दारुअं भग्गं, तं ण संठवितं, एवं अण्णं पि, एवं सव्वा मंडी भग्गा ।

एवं चरित्तमंडीए वि उवसंहारो ।

अहं वा सुद्धे वत्थे कज्जलविट्ठु पडिओ, सो ण धोओ, अण्णो वि पडितो सो ण धोतो, एवं पडतेहि अधोयतेहि सव्वं तं वत्थं कज्जलवण्णं जायं ।

एवं सुद्धं चरित्तं येवयेवावत्तीहि असोहिज्जनीहि सव्वहा अचरित्तो भवति ॥६६०१॥

एवं दिट्ठतेहि पच्छित्तदानकारणे पसाहिते चोदकः -

अणुकंपिता व चत्ता, अहंवा सोही न विज्जते तेमिं ।

कप्पट्टगमंडीए, दिट्ठतो धम्मया सुद्धो ॥६६०२॥

चोदगो भणति - एगावत्तीए जस्स सुद्धतवं देह, सो भे अणुकंपितो रागो य । तत्थ जस्स परिहारं सो भे वत्तो दोमो य तत्थ । अहंवा - परलोगं पडुच्च परिहारतवी अणुकंपिओ चरणसुद्धीओ सुद्धतवी चत्तो चरित्तस्स असुद्धतणतो ।

अहंवा - जइ परिहारतवेण सुद्धी तो सुद्धतवइत्ताण सोही ण विज्जति । अहं सुद्धतवेण विसुद्धी भवति ता परिहारतवककल्लडकरणं सव्वं गिरत्थयं ।

एत्थ आयरिया कप्पट्टगमंडीए महल्लमंडीए य दिट्ठं करेति ।

अहं कप्पट्टा अप्पणो सपडियाए धवहरति, सकज्जणिप्फरित्तं च करेति, णो तरंति महल्लमंडीए, कज्जं ति काउं ण वा महल्लमंडीए आरोविज्जति । अहं आरोविज्जति तो सा भज्जति, कज्जं च ण सिज्जति । एवं महल्लगा वि कप्पट्टगमंडीए कज्जं ण करेति, अहं करेति तो पलिमंथो, सकज्जसिद्धी य ण भवति ।

एवं सुद्वतवेणेव सुद्वी भवति, परिहारतवेण भवे भवइ ।

कहं ? उच्यते - “अम्मया सुद्वी” ति अस्य व्याख्या -

जो जं काउ समत्थो, सो तेण विसुज्झते असदभावो ।

गूहितवलो ण सुज्झति, धम्मसभावो चि एगट्ठा ॥६६०३॥

जो साधू “अ” ति सुद्वतवं परिहारतवं वा काउं समत्थो भवति स साधू तेणेव तवेण सुज्झति । असदभावोऽप्येति स्वकीयं प्रतिमायां अकुञ्चमाणो स्वधर्मव्यवस्थितत्वाच्च, जो पुण स्वकीयं गूहितं सो न सुज्झति, जतो तस्स धम्मो ति वा, सभावो ति वा, दो वि एगट्ठा ॥६६०३॥

एतेसु शुद्धपरिहारतवविशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते -

सुद्वतवे परिहारिय, आलवणादीसु कक्खडे इतरं ।

कप्पट्टिय अणुपरियट्ठण वेयावच्चकरणे य ॥६६०४॥

सीसो पुच्छति - सुद्वतपरिहारतवाणं कतरो कक्खडो वा, अक्खडो वा ?

आयरियो भणति - सुद्वतवो आलवणादिहि अक्खडो, इयरो ति परिहारतवो सो अणालवणादीहि कक्खडो । जो पुण तवकालो, तवकरणं वा तं दोसु वि तुल्लं । आवण्णपरिहारं पवण्णस्स जे कप्पट्टितअणुपरिहारिया ठविया तेहि करणिज्जं “वेयावडियं” ति सुत्तपदं ॥६६०४॥

किं पुण तं वेयावडियं, जं कायव्वं ?, अत उच्यते -

वेयावच्चे तिविहे, अप्पाणम्मि य परे तदुभए य ।

अणुसट्ठि उवलंभे, उवगहो चेव तिविहम्मि ॥६६०५॥

दध्देण भावेण वा जं अप्पणो परस्स वा उवकारकरणं तं सव्वं वेयावच्चं । तं च तिविहं - अणुसट्ठो, उवलंभो, उवगहो य । उवदेसपदाणमणुसट्ठो, शुतिकरणं वा अणुसट्ठो । सा तिविहा - आया-पर-उभयाणुसट्ठो, अणुसट्ठो जो अणुसासति, पराणुसट्ठो जो परं अणुसासति, परेण वा अणुसट्ठो ॥६६०५॥

अणुसट्ठीय सुभदा, उवलंभम्मि य मिगावती देवी ।

आयरिओ दोसु वि उवगहोसु सव्वत्थ आयरिओ ॥६६०६॥

पराणुसट्ठीए जहा चंपानयरीए सुभदा गागरजणे अणुसट्ठा “अण्णा सपुण्णा ति” ति । उभयाणुसट्ठी जो अणुसासति परं च अणुसासति ॥६६०६॥

एवं तिविहं पि अणुसट्ठि इमेण गाथाजुयलत्थेण अणुसरेज्जा -

दंडसुलभम्मि लोए, मा अ मत्ति कुणसु दंडिओ मि ति ।

एस दुलहो उ दंडो, भवदंडणिवारणी जीव ॥६६०७॥

कथा । ण केवलं एस दंडो भवणिवारणी, अपि चात्माऽगाचारमलिनो विशोचितः ॥६६०७॥

अवि य हु विसोहितो ते, अप्पाऽगायारमतिलिओ जीव ।

इति अप्प परे उभए, अणुसट्ठि थुइ ति एगट्ठा ॥६६०८॥

साधु कर्म ते जं अण्णाआयारमल्लिणो विसोवितो त्ति एवं वुच्चति । सेसं कंठं ॥६६०८॥

इदानीं “उवलंभो” त्ति -- अणायारकरणोवलंभातो, साधुणा ताव एस पदार्थं उवालंभो भणति ।
सो वि तिविहो -- अण्णाणस्यरे तदुपय य । जं अण्णाणे चैव अण्णाणं उवालंभति, जहा --

तुमए चेव कतमिणं, न सुद्धकारिस्स दिज्जते दंडो ।

इह मुक्को वि ण मुच्चसि, परत्थ अह हो उवालंभो ॥६६०९॥

आयरियादणा जो परेण उवालंभति जहा मियावती देवी अज्जचंदणाए उवालंभ “अकालचारिणि” त्ति काउं । उभयउवालंभो जो अण्णा अण्णाणं उवालंभति आयरियादिणा य उवालंभति, अहवा --
गुरुणा उवलंभमाणां तं गुरुवयर्थं सम्मं पढिक्कजंती पञ्चुपरति, एस उभयउवालंभो ॥६६०९॥

इदानीं उवग्गहो, “उवग्गहो चेव तिविहम्मि” त्ति दब्बतो णाभेगे उवग्गहो नो भावग्गो, नो दब्बग्गो भावग्गो, एगे दब्बतो वि भावतो वि, चउत्तो सुणो ।

तइयभंगविभासा इमा -- “आयरिओ दोसु” पच्छदं ।

अस्य व्याख्या --

दच्चेण य भावेण य, उवग्गहो दच्चे अण्णपाणादी ।

भावे पडिपुच्छादी, करेति जं वा गिलाणस्स ॥६६१०॥

कप्पट्ठितो अणुपरिहारिओ वा असमत्तस्स असगातो अण्णेउं देति । भावे आयरिओ सुते मत्थे वा पडिपुच्छं देह । अहवा -- ज गिलाणस्स कज्जति सो मावत्सुवग्गहो ॥६६१०॥

अहवा “दोसु वि उवग्गहेसु त्ति अस्य व्याख्या --

परिहार णुपरिहारी, दुविहेण उवग्गहेण आयरिओ ।

उवगिण्हति सव्वं वा, सबालवुड्डाउलं गच्छं ॥६६११॥

परिहारियं अणुपरिहारियं च एते दो वि दुविहेण वि दब्बभावोवग्गहेण उवग्गहेति । “सव्वत्थायरिओ” त्ति परिहारियस्स अपरिहारियस्स अणुपरिहारियस्स सबालवुड्डस्स य गच्छस्स दब्बभावेहि सव्वद्वा उवग्गहं करेति ॥६६११॥

एवं परिहारियस्स परिहारतवेण गिलायमणस्स पुव्वं अणुसट्ठो कज्जति, ततो उवालंभो दिज्जति, पच्छा से उवग्गहं कज्जति ।

भणियं च --

“दाण दवावण कारावणे य करणे य कयमणुणा य ।

उवहियमणुवहियविधि जाणाहि उवग्गहं एयं” ॥१॥

अणुसट्ठि-उवालंभ-उवग्गहे तिसु वि पदेसु अट्ठभंगा कायव्वा, जतो भणति --

अहवा णुसट्ठुवालंभुवग्गहे कुणति तिन्नि वि गुरु से ।

सव्वस्स वा गणस्सा, अणुसट्ठादीणि सो कुणति ॥६६१२॥

१ गा० ६६०५ । २ गा० ६६०२ । ३ गा० ६६०६ । ४ गा० ६६०६ । ५ गा० ६६०६ ।

एस षट्ठमो जे, आदित्तेसु वि सत्तसु जत्तियं चेव भणति करेति वा । अहवा - ण केवलं परिहारियस्स करेति 'सो' ति - आयरिओ सव्वस्स गणस्स षट्ठमंगीए अणुसट्ठिमादीणि करेति, अहवा - 'सो' ति - परिहारिओ, गणस्स करोतीत्यर्थः ॥६६११॥

अत्र चोदकः-

आयरिओ केरिसओ, इहलोए केरिसो व परलोए ।

इहलोए अ सारणिओ, परलोए फुडं भणतो उ ॥६६१२॥

छम्मासियं अणुगहकसिणं जो एस उवगहकरो आयरिओ तं चेव णाउमिच्छे केरिसो इहलोए परलोए वा हितकरो ?

आचार्याह - आयरिओ चउव्विहो इमो - इहलोएहिते णामेगो परलोए । एवं चउव्वंगो । पढम-वित्तियमंगवक्खाणं पच्छदं । इहलोगं पडुव्व जो य सारेति, आहारवत्थपत्तादियं च जीमं देति । परलोगहितो जो पमादेंतस्स चोयणं करेइ, ण वत्थपत्तादियं देति । उभयहितो जो चोदेति, वत्थादियं च देति । चउव्वो उभयरहिओ ॥६६१३॥

चोदगाह - "अणु जो भइमभावत्तणओ ण चोएति, सो इहलोए इच्छिज्जति । जो पुण खरपरसं भणतो चंडरुद्धाचार्यावत् चोदेति, ण सो इच्छिज्जति" ।

आचार्याह -

जीहाए विलिहंतो, ण भदतो जत्थ सारणा णत्थि ।

दंडेण वि ताडंतो, स भदतो सारणा जत्थ ॥६६१४॥ कंठा

एतय कारणमिणं -

जह सरणमुवगयाणं, जीवियवक्खोवणं णरो कुणति ।

एवं सारणियाणं, आयरिओ असारओ गच्छे ॥६६१५॥

साधू कहं सरणमुवगया ?, उच्यते - जेग पक्खे पक्खे भणति - "इच्छामि खमासमणो !, कताइं च मे कित्तिक्कमाइं" इत्यादि जाव "तुभं तवतेय सिरीओ (ए) चाउरंताओ संसारकंताराओ साहत्थं (ट्ठ) गित्थरिस्सामि" ति कट्ठे, एवं सरणमुवगता अचोदेंतो परिखयइ ॥६६१५॥

तम्हा तत्तियमणिलो आयरिओ परिहारियस्स अणुसट्ठा ति विहं वेयावच्चं करेति, कारवेइ. अणुमणति य । एवं वेयावच्चे कीरमाणे जं पडिसेवति प्रावज्जतीत्यर्थः । "असे वि कसिणे तत्थेव आरुभियव्वे", एवं सुत्त-पदं कसिणं णाम कुत्तनं निरवशेषं ।

तं इमं छव्विहं -

पडिसेवणा य संचय, आरुवण अणुगइ य चोव्वे ।

अणुघात णिरवसेसे, कसिणं पुण छव्विहं होति ॥६६१६॥

पारं च सतमसीतं छम्मासारुणां छद्दिणगतोहि ।

कालकणिरंतरं वा अणूणमहियं भवे छड्डं ॥६६१७॥

एषां यथासंख्येन इमा विभासा -

पडिसेवणाकसिणं पारं चियं, संख्यकसिणं असीयं माससयं, आरुवणकसिणं छम्मासियं, अणुगगहकसिणं णाम छण्हं मासाणं आरोचियाणं छद्दिवसा गता ताहे अण्णो छम्मासो आवण्णो ताहे जं तेण अद्दवूडं तं भोसितं जं पच्छा आवण्णं छम्मासितं तं वहति, एत्थ पंच मासा चउव्वीसं च दिवसा जेण भोसिया । एयं अणुगगहकसिणं । एत्थेव गिरणुगगहकसिणं भाणियव्वं, जहा छम्मासियं पट्टवि ए पंच मासा चउव्वीसं च दिवसा वूडा ताहे अण्णं छम्मासियं आवण्णो ताहे तं वहति पुव्वित्त्वस्स छद्दिणा भोसो । अणुगवायकसिणं जं कालयं जहा मासगुरुगादि ।

अह्वा - जं गिरंतरं बाणं एत्थ मासलक्षुगादी वि गिरंतरं दिज्जमाणं अणुगवातं भवति, अह्वा - अणुगवातियं तिविहं - कालगुरुं तवगुरुं उभयगुरुं - कालगुरुं जं गिम्हादिकवत्तडे काले दिज्जति, तवगुरुं जं मट्टमादि दिज्जति गिरंतरं वा । उभयगुरुं जं गिम्हे गिरंतरं च । गिरवसेसकसिणं णाम जं आवण्णं । त सव्वं अणूणमतिरितं दिज्जति ॥६६१७॥

एत्थ कयरेणं कसिणेणं तं आरुभियव्वं ? उच्यते -

एत्तो समारुमेज्जा, अणुगगहकसिणेण विण्णसेसम्मि ।

आलोयणं सुणेज्जा, पुरिसज्जातं च विन्नाय ॥६६१८॥

एत्तो त्ति छव्विह (कसिणाणं अणुगगह) कसिणेण आरुभेयव्वं पुव्वित्त्वस्स वि ण सेमदिवसेसु, तं च आलोयणं सुणेता हा दुट्ठुक्कादि पुरिसज्जायं च घितिसंघयणेहि दुक्कसं एवं विन्नाय जति छम्मासियं आवण्णो तो छमु दिवसेसु गतेसु आरोविज्जति । अह् ति व्वज्जवसिएण पडिसेवितं रागायत्तेण आलोचितं घितिसंघयणेहि य बलवत्तो से गिरणुगगहं आरोविज्जति "छद्दिणसेस" ति ॥६६१८॥

इय्याणि पडिसेवणाआलोयणासु चउभंगे इमं सुत्तखंडं उच्चारयेयव्वं - "पुव्वं पडिसेवियं पुव्वं आलोतियं" इत्यादि, अस्यार्थः -

पुव्वाणुपुव्वी दुविहा, पडिसेवणता तहेव आलोए ।

पडिसेवण आलोयण, पुव्विं पच्छा उ चउभंगो ॥६६१९॥

'पुव्वाणुपुव्वि' ति अस्यार्थः - पूर्वस्य यः अनुपूर्वश्च स पूर्वानुपूर्वः,

एत्थ णिन्निणं - एकस्स तो अणु, ते य तिगस्स पुव्वा, दुपस्स तिसि अणु, ते य चउव्वकस्स पुव्वा, एवं सर्वत्र ।

अह्वा - पूर्वं वा अनुपूर्वः स एव पूर्वानुपूर्वी, अनेन अविचारः, जेणं जं पुव्वं पडिसेवितं आलोयणकाले तमेव पुव्वं आलोचितं ति ।

अथवा - सामयिगी सण्णा, जाव अणुपरिवाडो सा पुव्वाणुपुव्वी अण्णति, सा य दुविहा - पडिसेवणाए आलोयणाएय । एयासु पडिसेवणा आलोयणासु पुव्वापच्छुत्तरणविकल्पेण चउभंगो कायव्वो ॥६६१९॥

जहा सुते भंगभावणा इमा -

पुट्वाणुपुट्वा पढमो, विदरीए बितियततियए गुरुओ ।

आयरियकारणा पुण, पच्छा पुच्छा य सुणो उ ॥६६२०॥

पुट्वाणुपुट्वा पढम ति एस पढमो भंगो, अस्य व्याख्या -

पच्छित्तणुपुट्वाए जयणा पडिसेवणा य अणुपुट्वा ।

एमेव वियडणादी, बितिय-ततियमादिणो गुरुओ ॥६६२१॥

पुवं गुरुणि पडिसेविऊण पच्छा लहुणि सेवित्ता ।

लहुए पुत्विं कथयति, मा मे दो देज्ज पच्छित्ते ॥६६२२॥

पुः ४ जं गीयत्पकारणे लहुगुरुपणगादिजयणाए पच्छित्तणुपुट्विं अवलंबतो पडिसेवति । एस पडिसेवणापुट्वा । वियडण ति आलोयणापुट्वा, सा वि एवं चेव जं जहा पडिसेवितं तहा चेव आलोएति ति एस पढमभंगो ।

विदरीतो बितिओ - “पुवं पडिसेवितं पच्छा आलोइयं” ति एस बितियभंगो ।

ततिओ वि पच्छा पडिसेवितं पुवं आलोइयं ति, एएसु विजयततिभंगेसु जं आवणो तं दिज्जति, मायाविणो य काउं मायाणिक्कणं चउगुरुओ मासो दिज्जति । एतेसु वि ततियभंगेसु भावना इमा, एत्थ गुरु ति वृहद् द्रष्टव्यम्, लघु अल्पमिति, सो म मासलहु आदि देति, पुवं सेविऊण पणगादिया पच्छा पडिसेविए पुवं कहयति, मासादिया पुण पच्छा कहयति ।

स्थात् किमेवं कहयति ?, उच्यते - आसंकया “मा मे दो देज्ज पच्छित्ते” ति अजयणणिक्कणं अतियारणिक्कणं च देति ॥६६२२॥

अहवाऽजतपडिसेवि, ति नेव दाहिति मज्झ पच्छित्तं ।

इति दो मज्झमभंगा, चरिमो पुण पढमसरिसो उ ॥६६२३॥

बितियभंगे वा करेति इमं चित्ते - “पणगादिआलोयणं सोउं” “अजयणपडिसेवि” ति गुरुणे न दाहिति, पच्छित्तं भयं वा दाहिति” एवं मायिस्स मज्झमदोभंगसंभवो भवति । अहवा - विससतो ततियभंगस्यो इमो - “आयरियकारणा” (गा ० ६६२०) पच्छित्तं, आयरियादिकारणेण अणं संतुक्कामो आयरिए वा संतुक्कामो आयरियं अणति - इच्छामि मते तुक्केहि अन्नमणुणाओ इमेण कारणेण अमुगं विगति एवरियं कासं आहारेत्तए । एवं तत्थ गीयत्था संभवाओ पुट्वा आलोएत्ता पच्छा पडिसेवति । अहवा - तृतीयभंगो सुन्यो संतव्यः । चरिमभंगो पढमभंगसरिच्छो चेव णायओ ॥६६२३॥

एत्थ जम्हा पढमचरिमा दो वि भंगा अपलिकुचियाभावे बितिय ततिय पलिकुचिताभावे तम्हा इमे अपलिउंचियभावे चउभंगसुत्तखंडं आगतं ।

‘अपलिउंचिते अपलिउंचितं’ इत्यादि चउभंगसुत्त उच्चारयेय्वं ।

पलिउंचण चउभंगो, वाहो गोणी य पढमओ सुद्धो ।

तं चेव य मच्छरिए, सहसा पलिउंचमाणे उ ॥६६२४॥

पलिउंचण इत्यर्थः प्रतिषेधदर्शनार्थः । जहा सूत्रे तथा चउमंगो, क्वचित् सूत्रे आदिचरिमा मंगा मज्झिमा अत्यतो वत्तम्वा ।

प्रसिम्न सूत्रे चउमंगे रहिते वा भिक्खुणिदिट्ठेहि वक्खमाणं किञ्जइ ।

जहा कोई वाहो कस्सइ इस्सरस्स कयवित्तीओ मंसं उवाणेति । अण्णया सो वाहो सुंदरं मंसं घेतुं इस्सरते संपत्थितो, चित्तेइ य सव्वेतं मंसं इस्सरस्स दायव्वमिति । पत्तो इस्सरसमीवं, तेण ईसरेण सुहुमेण आभट्ठो—स्वागतं सुस्वागतं उवविसाहि त्ति, मज्जं च पातितो, वाहेण य तुट्ठेण सव्वं तं मंसं जहा चित्तिं दिण्णं ।

एव को ति सावराही आलोइउकामो धायरियसगासं पट्ठितो चित्तेति य सुहुमबादरा सव्वे अतियारा आलोइयव्वं त्ति पत्तो धायरियसमीवं । धायरिएण वि सुट्ठु आढातितो—“घण्णो सपुण्णो आसि । तं न दुक्करं जं पडिसेवितं, तं दुक्करं जं सम्मं आलोइउअति ।” एवं अप्फालिएण सव्वं जहा चित्तिं आलोइयं, सुट्ठो य, एस पढमभंगो ।

इदाणि वित्तियभंगो, “तं चेव य मच्छरिय” त्ति पच्छद्व —

खरंटणभीओ रुट्ठो, सक्कारं देति ततियए सेसं ।

भिक्खुणि वाह चउत्थो, सहसा पलिउंचमाणो उ ॥६६२५॥

पढमपातो त वित्तियभंगे “तं चेव” ति—तहेव वाहो आगओ, जहा पढमभंगे अपलिउंचमाणो त्ति, तेण वि इस्सरेण कारणे वा मच्छरो से उप्पातितो, “सहस” त्ति—पुव्वावरं अणालोवेउ “कीस उस्सुरे आगतो”? त्ति । तेण खरंटिएण भीओ पुव्वेण रुट्ठेण य पलिउंचियं ण सव्वं मंसं दिण्णं, पलिउंचमाणं वित्तियभंगो भवति ।

आलोयगो वि आगओ । पुच्छिओ—केण कारणेण आगओ त्ति ? भणियं—अवराहं आलोइउं । धायरिएण खरंटितो । कीस तथा विहरियं जहा अवराहं पावह ? , आलोएंतो वा खरंटितो, तेण वि ण सम्मं आलोतितं । एस गतो वित्तियभंगो ।

इदाणि ततियभंगो—“सक्कारं देति ततियए सेसं” ति—तहेव वाहो संपट्ठितो मंसं घेतुं, पुव्वमंसमाणियं पलिउंचियचित्तो चित्तेइ ण सव्वं मंसं मए दायव्वमिति । पत्तो इस्सरसमीवं, इस्सरेण सुट्ठु आढातितो, तेण से सव्वं मंसं दिण्णं ।

एवं आलोयगो वि संपट्ठिओ पडिपहियं साहुं पुच्छति—“अमुगं धायरियं मज्झेण आगतो सि ?” भणति—“आमं” । “केरिसो सो सुहाभिमगो ण व” त्ति ? तेण भणियं—“दुरभिमगो” । तहेव तेण वित्तियं—न सम्मं मए आलोइयव्वं त्ति । आगतो गुरुसमीवं, तेण सम्ममाढातितो पुच्छितो य किमागमणं ? , तेण भणियं आलोएउं । तामहे धायरिएण सुट्ठु उव्वुहिओ घण्णो सि विभासा, तेण तुट्ठेण सम्मं आलोचितं । एस ततियभंगो गतो ।

इदाणि चउत्थभंगो—“भिक्खुजिवाह” पच्छद्व, चउत्थभंगो तहेव आगतो जहा ततियभंगे पलिउंचमाणो, णवरं—आगओ इस्सरेण खरंटितो, तेण खरंटिएण पुव्वपलिउंचियभावेण य सम्मं ण दिण्णं, एवं आलोयगो वि उवणओ कायव्वो ।

इमो गोणीए चउभंगदिट्ठतो । जहा गोणी दोहिउकामा पण्डुया आगया, सामिणा उव-
व्हिता गोभत्तेणं, कंडुतिता, धूमादीहि य उवगगहिया, पलिमत्ताए णिउत्ता सव्वं पण्डुता । एवं
आलोयगविभासा वि ।

नितिया आगया, ण आडिया, पारद्धा य पहारेहि, तीए ण दिण्णं सव्वं खीरं । आलोयगेहि
तहे उवगगो । ततिया गृह्णी दोहिउकामा आगया उवज्झिता पलमेत्ताए णिउत्ता सव्वं पण्डुया, एवं
आलोयगविभासा वि । चउत्था गृह्णी आगता, सामिणा य पहारेहि पारद्धा, ण सव्वं पण्डुया,
आलोयगो वि तहेव त उवगगो ।

इदाणि भिक्खुणिदिट्ठतो — का इ भिक्खुणी कस्स इ पुव्वपरिवियस्स घरं गता, तीए तिरिक्खे
‘खोरं’ दिट्ठं गहियं च तीए, पच्छा से परिणयभावे अप्पेमि ति घरं गता, तेहि आडाइया, सा तुडा तीए
दिण्णं ॥१॥

अण्णाए गहियं चितियं च ताए दाहामि ति, घरं गता, सा य न आडाइया, तेहि खरंटिया य, तीए
न दिण्णं ॥२॥

ततियाए वि गहियं चितियं च नाएण दायव्वं ति, घरं गता, सुस्वागता, आसणादीहि आडातिया,
तीए दिण्णं ॥३॥

चउत्थाए गहियं चितियं च णाएण दायव्वं ति, घरं गता, आडाइया खरंटिता, ण दिण्णं ॥ ४ ॥
“भिक्खुणि दाहं चउत्थो ति” भिक्खुणिवाहोणिमु य एक्केवके चउभंगो, तेसु चउत्थे भंगे पलिउंममाणेसु वि
स्वामिना स्वार्थभंशिना सहसा अणादरो कता खरंटणा वा पयुत्ताए ततो तेहि तथा चितियं भे तहेव
पलिउचित्तमित्यर्थः ॥६६२५॥

पडिरूवगोवसंहारो इमो —

इस्सरसरिसो उ गुरू, साहू बाहो पडिसेदणा भंसं ।

गूमणता पलिउं'चण, सक्कारो वीलणा होति ॥६६२६॥ कंठ्या

मुत्तखंडं इमं — “अपलिउचि” इत्यादि, अस्यायः —

आलोयण ति य पुणो, जा एस अकुंचिया उभयओ वि ।

स च्चेव होति सोही, तत्थे य मेरा इमा होति ॥६६२७॥

आलोयमाणो अपलिउचियं जो आलोएति “उभउ” ति — अपलिउचियसंक्षेपेण अपलिउचियं चैव
आलोतितं, अहवा — पडिसेवणागुलोमेणं पच्छित्तागुलोमेणं य “सच्चेव होइ सोधि” ति — जो एस
अपलिउचिय अपलिउचिय आलोएइ सोऽमाडगिष्कणो तो सुद्धेत्यर्थः । पुनर्विशेषणे । किं विशिनष्टि ?, उच्यते—
आलोएतस्स आलोयणारिहं प्रति तत्थे या मेर ति सामाचारी इत्यर्थः । तं आसणाभिगृहेण अतिपरंतस्स
पच्छित्तं भणति, एवं विभेसेति ॥६६२७॥ अथवा — एसा आलोयणा आयरियसिस्सभावे भवति ।

तेसि सामाचारी इमा —

आयरिए कह सोही, सीहाणुग-वसभ-कील्लुगाणूए ।

अहवा वि सभावणं, निम्मंसुगे मासिगा तिणिण ॥६६२८॥

जथा आलोचनादिहायरेण आलोचना आलोचनं पञ्जति तदा कस्स कहुं सुद्धी प्रसुद्धी वा भवति ?
उच्यते - आयरियो तिविहो - सीहाणुगो वसहाणुगो कोल्लुगाणुगो ।

तस्य जो महंतणिसिज्जाए ठितो सुत्तमत्थं वाएति चिट्ठइ वा सो सीहाणुगो ।

जो एक्कमि कप्पे ठिनो वाएति चिट्ठइ वा सो वसहाणुगो ।

जो रयहरणणिसेज्जाए उवगाहियपादपुच्छेण वा ठितो वाएति चिट्ठति वा सो कोल्लुगाणुगो ।

एवं वसहभिवल्लुगो वि विकप्पेयन्वा, एवं आलोचना वि आयरियवसहभिवल्लुगो विकप्पेयन्वा ।
णवरं - कोल्लुगाणुगे विसो - सदा णिसेज्जाए पादपुच्छेण वा उवकुडुपो वा आलोएति, जइ उवकुडुपो
आलोएति तो सुद्धो । णिसेज्जापादपुच्छेसु भयणा । “अह्वा - वि सभावेण णिम्मंसुय” ति - ग्रहदेवयसं
नियनप्रदर्शनार्थः । स्वको भावः स्वभावः, कोति आयरिओ वसभो वा सभावेण कोल्लुगाणुगो हवेज्ज । अह्वा -
धम्मसद्धाए कोइ नेच्छति सिज्जाए उवविट्ठिउं, तस्स निसिज्जा कायन्वा ण कायन्वा ?, उच्यते - जो होउ
सो होउ तस्स णिसिज्ज काउं आलोचयेण आलोएयन्व, जइ ण करेइ तो पच्छितं पावइ ।

एत्थ दिठ्ठतो णिम्मंसुयेणं रण्णा ।

जहा एको राया णिम्मंसु, णत्थिसे किञ्चि सरीरे रोमं ति । तस्स कासवगो कयवित्ती, णत्थि
से रोमं ति काउं परिभवेण न कताइ कमिज्जाए उवट्ठाति । अण्णया रण्णा भणियं - आणहि छुरभंडं,
कम्मिज्जाहि ति । तेण आणियं. उरथाडियं, दिठ्ठं पमादतो अपडिजगणए सब्बं कट्ठियं, एस मं
परिभवति । छुट्ठणं रण्णा सब्बस्सहरणो कतो, वित्ती य छिण्णा, अण्णो य ठविओ, सो य सत्तमे
दिवसे छुट्ठभंडं सज्जेता उवट्ठाति, सुट्ठेणं रण्णा वित्ती संबट्ठिता भोगाभागी य जातो । एवं जा
णिसेज्जं करेति सो इहलोगे जसं पावति, परलोगे वि कम्म णेज्जरणातो मिट्ठि पावति, जो पुण निसिज्जं न
करेति सो पायच्छित्तदंडं पावति । इमं - “मासिया तिणिण” जत्थ आयरियाती सरिसो सरिसाणुग्रस्स
आलोएइ । तस्य तिणिण मासिया । सीहाणुस्स आयरियस्स सीहाणुगो चेव आयरिओ आलोएति । एयं
एक्कमासियं । वसभस्स वसभाणुगस्स वसभो चेव वसभाणुगो आलोएइ । एवं बितियं मासियं । भिवल्लुस्स
कोल्लुगाणुगो आलोएइ । एव ततियं मासियं । एयं सट्ठाणे पच्छित्तं ॥६६२॥

इदाणि सट्ठाणपरट्ठाणजाणणत्थं तेसु चेव पच्छित्तं वत्तुकामो इदमाह -

सट्ठाणाणुग केइ, परट्ठाणाणुग य केइ गुरुगादी ।

सनिमिज्जाए कप्पो, पुच्छ निसिज्जा व उक्कुडए ॥६६२॥

“सट्ठाणाणुग केइ” ति - आयरियस्स सच्छोभया निषद्या सविषया, तट्ठियस्स सीहा सट्ठाणया
सीहाणुगसं सट्ठाणं, तस्स परट्ठाणाणुगत्तणं कप्पपुच्छगादीसु वसभकोल्लुगाणुगत्तणा ।

वसभस्स सट्ठाणाणुगत्तं कप्पे वसभाणुगत्तं तस्स परट्ठाणाणुगत्तणं णिसेज्जपुच्छणादिषु सीहाणुग-
कोल्लुगाणुगत्तणा ।

भिवल्लुस्स सट्ठाणाणुगत्तणं पादपुच्छ-णिसेज्ज-उवकुडुप्रतणेण कोल्लुगाणुगत्तणं, तस्य परट्ठाणाणुगत्तणं
सणिसेज्जं, कप्पे य सीहाणुगवसहाणुगत्तणा ।

सीहाणुगस्स आयरियस्स सीहाणुगो आयरिओ आलोएइ, एसो पढमो गममो ।

१ शुभालः ।

एवं वसभस्स वि आलोयणारिहस्स अविनयप्रतिपत्तौ इमं पच्छित्तं । आयरियस्स णवविहस्स आलोयणस्स आदिसद्दामो वसहभिवसूण वि णवविहाणं । आदिशीहाणुगे चउलहुं, मज्झमे चउगुरुं, अंतिल्ले छल्लहुं, वसभणुगेसु दोसु मासलहुं, अंतिल्ले चउलहुं, दो कोल्लुगा सुद्धा, अंतिल्ले मासलहुं । सेसं पूर्ववत् । भिक्खुस्स आलोयणारिहस्स भीहाणुगादिभेदस्स णव आयरिया सीहाणुगादिभेदभिण्णा आलोयणा । एवं च वसभा णव आलोएतगा, भिक्खुणो वि णव आलोएतगाणं, तत्थ जे आयरिया णव आलोयणा ।

एतेसि पच्छित्तं । जहासंखेण इमं -

चउगुरु चउलहु सुद्धो, छल्लहु चउगुरु अंतिमो सुद्धो ।

छगुरु चउगुरु लहुओ, भिक्खुस्स तु नवसु ठाणेसु ॥६६३६॥

झा, झ, सु, कू, झा, सु, फा, झा, ० ।

दोहि वि गुरुगा एते, गुरुम्मि नियमा तथेण कालेणं ।

वसभम्मि वि तवगुरुगा, कालगुरु होंति भिक्खुम्मि ॥६६३७॥

आयरियस्स एते पच्छिता तथेण कालेण वि गुरुगा, वसभाण वि णववहं आलोएतगाणं एते चेव पच्छिता, नवरं - तवगुरुगा काललहुगा, भिक्खूण वि णववहं आलोएतगाणं एते चेव पच्छिता, नवरं - तवलहुगा कालगुरुगा । नवचित् पाठांतरं - “एमेव य भिक्खू” गाहा - भिक्खुस्स तिविषभेदभिण्णस्स आलोयणारिहस्स आयरियवसभभिक्खुणो आलोएतगा । णव भेदा पूर्ववत् । आहट्टाणे सीहाणुगे चउगुरुं, मज्झट्टाणसीहाणुगे छल्लहुं, अंतट्टाणसीहाणुगे छगुरुं । सेसं पूर्ववत् ॥६६३७॥

पच्छित्तदाणलक्खणं अविनयप्रतिपत्तौ इमं -

सव्वत्थ वि सट्ठाणं, अणुमुयंतस्स चउगुरु होंति ।

विसमासण णीयतरे, अकारणे अविहिए मासो ॥६६३८॥

“सव्वत्थ” ति सर्वालोचनारिहस्याविनयप्रतिपत्तौ इमं आलोणारिहो जायसे प्रासणे णिविद्धो आलोयणो वि जति तारिसं प्रासणं अमुंचतो आलोएति तत्तुल्य एव स्थितेत्यर्थः । तो चउगुरु पच्छित्तं । अह विसमे प्रधिकतीवो छल्लहुं छगुरुं वा स्थानापेक्षयेत्यर्थः । अह विसमे णीयतरे ठितो मासलहुं, अयं अकारणे णिसीएइ तस्स पच्छित्तं । आलोयणकाले सेसपविहीमु वि अप्पमज्जणादीसु मासलहुं चेव ॥६६३८॥

इमं अववादतो भणति -

सव्वत्थ वि सट्ठाणं, अणुमुयंतस्स मासियं लहुयं ।

परठाणम्मि य सुद्धो, जति उच्चतरे भवे इतरो ॥६६३९॥

आलोएतो वि कारणे जति सट्ठाणं ण मुंचति, सट्ठाणं णाम सरिससरिसाणं आयरिय वसह भिक्खुणो य सरिसाणुगे होउं आलोएति ति तो मासलहुं । अह णीयतरट्टाणट्ठितो आलोएति तो सव्वत्थ मुज्झति । सीहाणुभस्स वसभकोल्लुगा परट्ठाणं । कोल्लुगस्स कोल्लुगो चेव उक्कुट्टुओ परट्ठाणं । “इयरो” ति आलोयणारिहो जति उच्चतरे ठितो आलोयणो कारणे णीयतरे प्रासणे णिक्षीयंतो मुज्झतीत्यर्थः । एवं विभागतो एकसासीति-विभागेण पच्छित्तं वुत्तं ॥६६३९॥

इमं ओहेण पवविहं पच्छित्तं भणति--

चउगुरुं मासो या, मासो छल्लहुग चउगुरु मासो ।

छगुरु छल्लहु चउगुरु, बितियादेसे भवे सोही ॥६६४०॥

सीहाणुगो होउं सीहाणुगस्स आलोएति चउगुरु, सीहाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति मासलहु, सीहाणुगस्स कोल्लुगाणुगो होउं मासलहु, वसभाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छल्लहु, वसभाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति चउगुरु, वसभाणुगस्स कोल्लुगाणुगो मासलहु, कोल्लुगाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छगुरु, कोल्लुगाणुगस्स वसभाणुगो छल्लहु, कोल्लुगाणुगस्स कोल्लुगाणुगो चउगुरु, एस बितियादेसे सोधी भणिया ॥६६४०॥

तेणं आलोयणेणं अपलिउच्चिय अपलिउच्चिय आलोइयं, वीप्ता कृता, निरवशेषं सर्वमालोचितं, "सर्वमेत" ति । अथवा - "सञ्चमेय" ति जं भवराहावणं जं च पलिउचणाण्णकणं अण्णं च किं वि आलोयणकाले असमाधारिण्णकणं सञ्चमेतं स्वरूढं । "सगडं" "साहणिय" ति एकतो काउं से मासादि पट्टविज्जति जाव छम्मासा । अहवा - "साहणिय" ति जं छम्मासातिरित्तं तं परिखाडेऊणं भोसेत्ता छम्मासादित्यर्थः । "जे" ति य साबू, "एयाए" ति या उक्ता [विधि] प्राक्कृतस्य अपराधस्य स्थापना "पट्टवणा", अहवा - प्रकर्षेण कृतस्य स्थापना । अहवा - प्रविशुद्धचारित्र्यं आत्मा प्रमायावित्वेन आलोचनाविधानेन उद्धृत्य त्रिमुढे चारित्र्ये प्रकर्षेण स्थापितः । अहवा - "पट्टवणाए" ति प्रारंभः, य एष आलोचनाविधिः प्रायश्चित्तदानविधिश्च घनेन प्रस्थापित प्रवर्तित इत्यर्थः । "पट्टविय" ति तदेव यथाह प्रायश्चित्तकरणत्वेनारोपितं, य एवं प्रायश्चित्तकरणत्वेन स्थापितः । "णिब्विसमाणो" तं पच्छित्तं बहंतो कुब्बमाणेत्यर्थः । तं बहंतो प्रमादतो विसयकसाएहि जइ अण्णं "पडिसेवति" ति ततो पडिसेवणाओ "से वि" ति जं से पच्छित्तं तं "कसिण" ति सत्त्वं । अहवा - अण्णगहकसिण्णेण वा "तत्त्वेव" ति पुब्बपट्टविए पच्छित्तं आरोवेयव्वं चडावेयव्वं ति वुत्तं भवति । "सिप्प" ति भवधारणे दट्टव्वो । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती--

मासादी पट्टविते, जं अण्णं सेवती तमं सत्त्वं ।

साहणिऊणं मासा, छदिज्जंतेतरे भोसो ॥६६४१॥

जं छम्मासातिरित्तं तं एगतर तस्स भोससेसं इमाए गाहाए सुत्ते गतत्थं । "पट्टविए" ति जं पदं तस्सिमे भेटा -

दुविहा पट्टवणा खल्लु, एगमणेगा य होतऽणेगा य ।

तवतिग परियत्ततिगं, तेरस उ जाणि त पताई ॥६६४२॥

—प्रकृतं समाप्तम् ।

सा पापपच्छित्तपट्टवणा दुविधा - एगा अणेगा वा, तत्थ जा संचइया सा णियमा छम्मासिया एग विधा । सा य दुविधा - उग्घाताणुग्घाता वा । अहवा - केसि चि मएण एगविधा मासियादीणं अण्णत्तरठाण-पट्टवणा । तत्थ जा अणेगविहा सा इमा - "तवतिग" पच्छदं । तत्थ पणमादिभिण्णमासत्तेसु परिहारतवो ण भवति, मासादिसु भवतीत्यर्थः । मासिगं एककं तवठाणं, दुपासादि जाव चाउम्मासियं बितियं तवट्ठाणं, णमासछम्मासियं तइयं तवट्ठाणं ति, एते वि उग्घाताणुग्घाता वा, "परियत्ततिगं" णाम पव्वज्जा परियागस्स जत्थ परावत्तो भवति तं परियत्ततिगं तं च छेदतिगं, छेदो वि उग्घाताणुग्घाता वा, भूलत्तिगं, अणवट्टतिगं, एककं

च पारंक्षियं, एयाणि त्वत्तिगसहिताणि जाणि तेरस पदाणि । एसा पारंक्षियवज्जिन्ना अणेगविहा पट्टवणा मयतीत्यर्थः । अहुवा — “जाणि य पदाणि” ति एते एककारस पदा गहिता, एतेसु तव पारंक्षिया एगविषा, छेदादितिभं अणेगविषा पट्टवणा भवतीत्यर्थः ।

एते हिट्ठा सिद्धा किं निमित्तं इह पुणो उक्खरिज्जति ? उच्यते — स्मरणार्थं । अहुवा — जं एवं पट्टवियं पडिसेवति तं कसिणं अणुग्गहेण वा गिरणुग्गहेण वा आरोविज्जति, उग्घाते उग्घायं, अणुग्घाए अणुग्घायं, अस्य आपनार्थमुक्खरितमित्यर्थः, अहुवा — कसिणमप्यारोप्यमानं त्रयोदशकावशमिर्वा पट्टारोप्यते, अस्य आपनार्थमुक्खरितमित्यर्थः । “अपलिउच्चितं” ति एयं पढमभंगसुत्तं गतं ।

वितियभंगसुत्तं पि एवं चेव, णवरं — उच्चारणा से इमा — “अपलिउच्चिते पलिउच्चितं आलोए-माणस्स जाव सिया” ।

ततियभंगसुत्तं पि एवं चेव । णवरं — उच्चारणा से इमा — “पलिउच्चिते अपलिउच्चितं आलोए-माणस्स जाव सिया” ।

चउत्थभंगसुत्तं पि एवं चेव, तस्स उच्चारणा सुतेपेव भणिया — “जे भिक्खु चाउम्मासियं वा सातिरेणचाउम्मासियं वा जाव सिया ।” जहा एते सुत्ता चउभंगविगप्पेण भणिया एवं मासिमदोमासिवा वि सुत्ता उवउज्जिऊण वित्थरओ चउभंगविभागेण भाणियव्वा । एवं बहुससुत्ता वि चउभंगवाहादिदिट्ठतेसु भाणियव्वा । पढमा दस आवत्तिमुत्ता भणिया । पुणो दस ते चेव किं विसेसंविजिह्वा आलोयणमुत्ता भणिया ?, एवं एए बीसं सुत्ता सप्रभेदा सम्मत्ता । सम्मत्तं च एत्थ ठवणारोवणपगयं ॥६६४२॥

एयाणि पच्छित्तं नि सो वहुंतो अण्णं आवउजेज्ज, सो वि तत्थेव “आरुहेयव्व” ति जं बुत्तं तस्स आरोवणे कति भेदा ?, उच्यते — पंचभेदा ।

इमे —

पट्टविता ठविता या, कसिणाकसिणा तहेव हाडहडा ।

आरोवण पंचविहा, पायच्छित्तं पुरिसजाते ॥६६४३॥

पट्टविथा य वहंतं, वेयावक्कड्डिता ठवितगा उ ।

कसिणा भोसविराहेता जहि भोसो सा अकसिणा तू ॥६६४४॥

एषां व्याख्या — जं च वहति पच्छित्तं सा पट्टवितिका भण्णति, ठविया नाम जं आवण्णो तं से ठविज्जं कज्जति ।

किं निमित्तं ?, उच्यते — सो वेयावक्ककरणलदिसंपण्णो जाव अयरियादीण वेयावक्कं करेति ताव से तं ठवितं कज्जति, दो जोमे काउं असमत्थो सो वेयावक्के समत्तं तं काहिति ति, एव ठविया । कसिणा भाम जत्थ भोसो न कीरइ, अकसिणा नाम जत्थ किंवि भोसिज्जति ॥६६४५॥

हाडहडा तिविधा — सज्जा ठविया पट्टविता य । तत्थ सज्जा इमा —

उग्घायमणुग्घायो, मासाइ तवो उ दिज्जते सज्जं ।

मासहुमासादियं उग्घातमणुग्घातियं वा जं आवण्णो तं जत्थ सिज्जं दिज्जति ण कालमपेक्खंति सा सज्जा । इमा ठविया —

मासादी णिक्खित्तं, जं सेसं तं अणुग्घायं ॥६६४५॥

जं पुण मासादि भावणं निविलत्तं ति वेद्यावच्छ्रुया ठवियं कज्जति सा ठविया, तम्मि य ठवियसेसं
ति जं अण्णं उग्घातमणुग्घातं वा भावज्जति तं सत्त्वं अणुग्घातं कज्जति । कम्हा ? जम्हा सो अतिप्पमादी
॥६६४५॥

इमा पट्टविद्या -

छम्मासादि बहंते, अंतरे आक्खणे जा तु आरुवणा ।

सो होति अणुग्घाता, तिष्णि विकप्पा तु चरिमाए ॥६६४६॥

छम्मासियं बहंतो आदिगहणाओ पंचमासियं चउमासियं तेमासियं दोमासियं मासियं वा बहंतो
अण्णं जं अंतरे भावज्जति उग्घातं अणुग्घातं वा तं से साणुग्घहेण निरणुग्घहेण वा आरोविज्जमाणं अणुग्घातं
आरोदिज्जति । कारणं पूर्ववत् । हाडहडाए एते तिष्णि विक्कप्पा ॥६६४६॥

सा पुण जहण्ण उक्कोस मज्जिमा होति तिष्णि उ विकप्पा ।

मासो छम्मासा वा, अजहण्णुक्कोस जे मज्जे ॥६६४७॥

सा हाडहडा छुम्भमाणी तिविद्या - जहण्णादिगा, तत्थ मामगुरु जहण्णा, उक्कोसा छगुरु, एतेसि
दोण्ह वि मज्जे जा सा अजहण्णमणुक्कोसा इमा दोमासियं गुरुणं, तिमासियं गुरुणं, चउमासियं गुरुणं, पंचमासियं
गुरुणं ति । एसा आरोवणा पंचविहा समासओ भणिया ॥६६४७॥

इदाणि मासादी पट्टविए जं अण्णं अंतरे पडिसेवति मासादी तत्थ जं जम्मि दिवसग्ग-
हणप्पमाणं भणति पट्टविगाठविगा सख्वं जतो भणति सुत्तमागयं -

छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरे दोमासियं परिहारट्ठाणं

पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा वीसराइया आरोवणा

आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं

सवीसइराइया दो मासा ॥ख०॥२१॥

पंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरे दो मासियं परिहारट्ठाणं

पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं

सवीसइराइया दो मासा ॥ख०॥२२॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरे दो मासियं परिहारट्ठाणं

पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं

सवीसइराइया दो मासा ॥ख०॥२३॥

तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरे दो मासियं परिहारट्ठाणं

पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२४॥

दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२५॥

मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२६॥

सर्वं संहितासूत्रं उच्चार्येत् पदच्छेद काउ इमो पदव्योपगमो “वड्ढित्ति” संख्या । मानासनामासः, भन्थानि मानानि समयवत्तिकादीनि असतीति मासः, मानानि वा द्रव्यक्षेत्रादीन्यसतीति मासः । मासोऽयं परिमाणं मासमईति वा, मासनिष्पन्नं वा मासिकं । परिहायंते इति परिहारः, परिहरणं वज्जनमित्यर्थः । अहवा – परिहरणं परिहारः, अहवा – परिह्रियते वज्ज्यते च अस्मात् परिहारः । “ष्ठा गतिनिवृत्ती” तिष्ठन्त्यस्मिन्निति स्थानं । परिहारस्य स्थानं परिहार स्थानं । “पट्टवित्ते” ति आदिकम्मणोदीरणभूतेश्वर्येष्विति कृत्वा प्रारब्धं यत् स्थापितं अट्ठवूढं ति भणियं होइ । न गच्छन्तीत्यग्रा वृक्षा इत्यर्थः । अग्रेः कृतं अगारं गृहमित्यर्थः । नास्य अगारं विद्यते इत्यनगारः । अतस्य च अंतरं मज्झं अंतरं ति भणति । द्विमासो अस्य परिमाणं दोमासियं । परिहारस्य स्थानं स्थानं प्रतिषेवित्वा, “प्रति” प्रतिदानयोः प्रतिसन्निधानयोर्वस्तु वस्तु प्रति मूलउत्तरगुणद्वयकण जयणसेवाकरणं, क्त्वा प्रत्ययः, पूर्वस्य परेण सह संबन्धमिच्छति, कृत्वा अग्न्यं किमपि कर्तव्यं तदपेक्षते । आइमज्झादायां, “लोक दशने”, मर्यादयालोचनं दातव्यं, आलोचनं दर्शयेदित्यर्थः । अयं इत्ययं निपातः, अपरा णाम जा सा पुच्चिं भणित्ता सतो जा अण्णा सा अपरा । विशतिरिति संख्या । रज्जत इति रात्रिः, सा च रागस्वभावा, उभयोरपि विद्यते, रात्री उभयग्रहणार्थं, अहवा – अहोरात्रपरिसमाप्तिरत्र भवतीति कृत्वा रात्रिग्रहणं, अन्योन्यप्रतिबद्धत्वात् इतरेतरग्रहणात् सिद्धिरिति । आरोविज्जतीति कृत्वा आरोवणा । पुत्रपायच्छित्ते छुम्भति, अहवा – उर्वरि चडाविज्जतिरिति भणियं होइ । कस्स ? तस्स साहुस्स ज भणियं पायच्छित्तं दिज्जति, “आदिमज्झावसाणेषु” – तस्स छम्मागियस्स परिहारट्ठाणस्स तिसु विभागेषु जत्य जत्य पडिसेवति दो मासियं तत्थ तत्थ वीसतिरातिता आरोवणा आरुभेयव्वा । सह अत्थेण सत्थ, सह हेउणा सहेउं, सह कारणेण सकारणं । किं भणियं होति – तस्स जतो णिष्फत्तिः प्रभवः, प्रसूतिः, तं तस्स अत्थोत्ति वा हेउ ति वा कारणं ति वा एणट्ठं । जहा सुत्तस्स अत्थामो प्रसूतिः उत्पत्तिरित्यर्थः । जहा व तंतुअः पटः, मृत्पंडादधटः, एवं एसा वीसतिरातिता आरोवणा जतो णिष्फण्णा तीए तं से अत्थोत्ति वा, हेतु – कारणं, एणट्ठादिट्ठा । दोमासियाए पडिसेवणाए वीसिया आरोवणा, सा पुण सअट्ठा अहीणमतिरित्ता कित्तिा होइ ?

आयरितो सयमेव पुच्छित्तो भणति – “तेण परं सवीसतिराया दो मासा” । “तेण” ति – तेण मूलवत्पुण्या सह आरोवणापरिमाणं भवति, आवत्तिमाणं न आरोवणमाणं, परं यण्णं चेव जं भणियं होति तेण सअट्ठं सहेउं सकारणं न मानमधिकृत्य, तं पुण सवीसतिराया दोमासा सह वीसाएहि सवीसतिराया दोमासा ।

किं पुन दोमासियाए पडिसेवणाए वीसतिरपि आरोवणा?, उच्यते - लसगोक्तवात्, तस्य लसगं दिवसा पवित्रतणमासा आणिज्जति, मासा वि पेक्सिऊण दिवसा आणिज्जति ।

गाहा - "दिवसा पंचहि भतिता दुरुवहीणा हवति मासाओ ।

मासा दुरुवसहिणा, पंचगुणा ते भवे दिवसा ॥" एसा लवखणगाहा

एएण कारणेण दोहि मासेहि आवनेहि वीसतिरातिथा आरोवणा ।

अहवा - इमो अण्णो वि आएसो सप्रद्वं सहेउं, सकारणं अहीणमतिरित्तमिति, तस्स घणगारस्स उभयतरणादीकारणं आऊण पढमपडिसेवणाए साणुगहं वीसतिरातिथा आरोवणा दिज्जति, जति तह वि ण आएज्जा तो मे तेण परेण सुवादेसो चेव सवीमतिरायदोमासा ।

कहं ? जा सा वीसतिरातिथा आरोवणा सा संकप्पिया ण ताव दिज्जति, तेण वि पुणो दोमासियं तं पडिसेवितं तस्स पढमं साणुगहं कीरइ, बीए सहोदोति काऊणं ते चेव दो मासा गिरणुग्गडा दिण्णा, तेण पर सवीमतिराता दो मासा ।

एवं पंचमासिए वि पट्टविने तं चेव सच्चं आणियच्चं । एवं चाउम्मासिए तेमासिए एयाणि सव्वाणि दोमासिएण समं आणियव्वाणि, णवरं - छम्मासिया संचतिया वा असंचतिया होज्ज, पंचमासिया असंचतिय-पट्टवित्तमुत्ता गता ।

इयाणि ठवियसुत्ता - जे ते सवीसतिरातिता दो मासाते कारणं पडुच्च ठविया मासी ते कारणे जिद्धिने पट्टविज्जति ।

सवीसतिराइयं दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया
आरोवणा आइमज्जावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं
अहीणमतिरित्तं तेण परं सदसराया तिणिमासा ॥४०॥२७॥

सदसरायतेमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया
आरोवणा आइमज्जावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं
अहीणमतिरित्तं तेण परं चत्तारि मासा ॥४०॥२८॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्जावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं
तेण परं सवीसइराया चत्तारि मासा ॥४०॥२९॥

सवीसइरायचाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं
तेण परं सदसराया पंच मासा ॥सू०॥३०॥

सदसरायपंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्झावसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं
तेण परं छम्मासा ॥सू०॥३१॥

तेसु पट्टवित्तसु जति पुणो पडिसेवेज्जा अण्णे अ दो मासा तत्थ वीसतिरातिया आरोवणा भादी
मज्जे पञ्चवसाणे, सह अट्ठेण समट्ठं सहेउं सकारणं ।

इह अत्थो जो पादिपट्टवणा सबीसतिरातिया दो मासा । तेण परं दसरातो दो मासा, दसरातो
तिणि मासा पट्टविण् ।

जइ पुणो वि दो मासा पडिसेवेज्ज ताहे साणुगहं वीसतिराया विज्जंति जाव तेण परं चत्तारि
मासा, एवं ताव पेयं जाव तेण परं छम्मासा । अहवा - केवलि मण भोहि चोदस णवपुव्विणी य तस्स साधुणो
भावं जाणिऊण, इमो सबीसतिराएहि दोहि मासेहि सुक्किहिति ति ताहे सबीसतिराया दो मासा मे
पट्ठविज्जंति ।

जति पुणो वि दो मासा पडिसेवेज्ज तत्थ वि तहेव, तेण परं दस राया तिणि मासा ।

एवं पुणो वीसतिरातिया सुब्भंनेहि जाव ते परं छम्मासा अणुगहट्टवणा चेव थोवे वा बहुए वा
आवण्णे दीसं वीसं दिणा आरुभेयव्वा, पडिसेवणा पडिसेवणा, जाव छम्मासा । एवं ताव छम्मासादिपट्टविण्
दुमासपडिसेविण् कारणं भणियं । एवं ते सूत्रा पट्टविद्याठवियाणं गया ।

इदार्णि अत्थवसओ सुत्ता -

छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३२॥

पंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३३॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३४॥

तेमासियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिक्खी मासो ॥सू०॥३५॥

दोमासियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिक्खी मासो ॥सू०॥३६॥

मासियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिक्खी मासो ॥सू०॥३७॥

छम्मासियं पंचमासियं चाउम्मासियं तेमासियं दोमासियं मासियं सत्त्वा लक्खणाधो पत्ताधो
मवल्लणं पुण मज्झे गहिए सादिमा मत्तिमा य संजोगा ते भाणियव्वा, जहा छम्मासियादिपट्टवणा पट्टविते
दोमासियस्स संजोगो भणितो तहा एतेसि वि सत्त्वासि संजोगो भाणियव्वो ।

तेण इमं अत्थमुत्तं - "छम्मासियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा छम्मासियं चेव परि-
हारद्वानं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा चत्तालीसइया आरोवणा मादी जाव तेण परं सच्चत्तालीस-
तिराया छम्मासा", अत्थो पूर्ववत् ।

एवं पंचमासितं परिहारद्वानं पट्टविते छम्मासियं पडिसेवति ।

एवं चाउम्मासियं पट्टविए पडिसेवति, तेमासियं पट्टविए पडिसेवति, दोमासियं पट्टविए पडिसेवति,
मासियं पट्टविए पडिसेवति । एण छ पडिसेवति । छ वि सुत्ता इहं गत्थि । कि कारणं जेण छम्मासाणं परेण
ण दिज्जति ? ठविया य सच्चत्ताला छम्मासा, तेण ठवित्ता सुत्ता नत्थि । इदाणि छम्मासिए पट्टविए अंतरा
पंचमासितं पडिसेवति । अहावरा बीसतिरातिआ आरोवणा आदि मज्झावसाणे जाव तेण परं सपंचराया छम्मासा,
एवं पंचमासे पट्टविते पंचमासं पडिसेवइ । चाउम्मासिए वि पंचमासा, तेमासिए वि पंचमासा, दोमासिए वि
पंचमासा, मासिते वि पंचमासा, एत्थ वि ठविया सुत्ता गत्थि, जेण सपंचराया छम्मासे ति । छम्मासिए पट्टविए
अंतरा चाउम्मासितं पडिसेवेज्जा, अहावरा तीसति जाव तेण परं पंचमासा, एवं पंचमासितं चउमासितं तेमासियं
दोमासियं मासिए वि पट्टविए चउमासियं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा ती (बी) सतिरातिआ आरोवणा
जाव तेण परं पंचमासा ठवित्ता ।

मुत्तं एत्थ अत्थि - पंचमासियं परिहारद्वानं पट्टविते चाउमासितं परिहारद्वानं पडिसेवित्ता
आलोएज्जा अहावरा ती (बी) सतिरातिआ आरोवणा जाव तेण परं छम्मासो । अत्थो पूर्ववत् । सुत्ता छम्मासियं
परिहारद्वानं पडिसेविते अणगारे अंतरा तेमासितं परिहारद्वानं आलोएज्जा, अहावरा पण्णवीसतिराइदिआ
आरोवणा मादी जाव तेण परं पञ्चूणा चत्तारि मासा पंचमासिते पट्टविए, चउमासिते पट्टविए, तेमासिते

पटुविण, दोमासिण, मासिण परिहारद्वान् पटुविते, तेमासितं परिहारद्वान् पडिसेविज्जा जाव तेण परं पंचूणा चत्तारि मासा ठविता ।

सुत्ता - पंचूणचउम्मासियं परिहारद्वान् पटुविते अंतरा तेमासितं परिहारद्वान्, अहावरा पणुवीसा आरोवणा जाव तेण परं छम्मासा सवीसतिराया चत्तारिमासा, सवीसतिरायं चाउम्मासियं परिहारं अंतरा तेमासियं, अहावरा पणुवीसा आरोवणा जाव ते अट्ठछम्मासा अट्ठछम्मासियं पटुवडि । पटुविण अणगारे अंतरा तेमासियं आलोए०, अहावरा पणुवीसराएदिवारोवणा तेण परं छम्मासा ।

किं कारणं सदसराया छम्मासा ण भणिया ? उच्यते - सातिरेगा छम्मासा णारोविज्जति ति तेण सदसराया छम्मासा ण भयंति । इदानीं मासियसंज्ञोगमुत्ता लक्खणवत्ता सुत्तेण चेत भणति, छम्मासिय-परिहारद्वान् पटुविण अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वान् पडिसेविण आलोए, अहावरा पक्खिया आरोवणा आदी मज्झावसाणे सट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं दिवडुओ मासो, एवं पंचमासियं पटुविते तेमासियं पटुविते मासियं पटुविते अंतरा मासियं जाव तेण परं दिवडुओ मासो ।

ठविया सुत्ता -

दिवडुमासियं परिहारद्वान् पटुविण अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वान्

पडिसेविज्जा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
दो मासा ॥सू०॥३८॥

दोमासियं परिहारद्वान् पटुविण अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वान्

पडिसेविज्जा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
अट्ठाइज्जा मासा ॥सू०॥३९॥

अट्ठाइज्जमासियं परिहारद्वान् पटुविण अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वान्

पडिसेविज्जा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
तिणि मासा ॥सू०॥४०॥

तेमासियं परिहारद्वान् पटुविण अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वान्

पडिसेविज्जा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
अट्ठुडु मासा ॥सू०॥४१॥

अट्ठुडुमासियं परिहारद्वान् पटुविण अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वान्

पडिसेविज्जा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
चत्तारि मासा ॥सू०॥४२॥

चाउम्मासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अट्ठपंचमा मासा ॥सू०॥४३॥

अट्ठपंचमासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
पंचमासा ॥सू०॥४४॥

पंचमासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अट्ठत्थमा मासा ॥सू०॥४५॥

अट्ठत्थमासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
छम्मासा ॥सू०॥४६॥

एवं छम्मासादिपट्टवित्ते जं जं पडिसेवित्ता आरोवणा ठविया व विकल्पा सट्ठाणवट्ठिण् भणिया जाव
छम्मासा ।

इदानीं सगत्तठवियाए मासादिया १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । सट्ठाणवट्ठिया णेयव्वा जाव
छम्मासा, ताहे परट्ठाणे वट्ठी भवति ।

तत्थ सट्ठाणवट्ठी इमा - जहा - मासियठवियपट्टविण् मासियं सेवित्ता पक्खिया जाव दिवट्ठ-
मासा एवं आरोवणं पक्खिअ वट्ठुं तेण ताव पेयव्वं जाव छम्मासा । एयं सट्ठाणवट्ठियं ।

इमं परट्ठाणवट्ठियं - जहा - ठविण् दोमासियं पडिसेवित्ता वीसतिरातिया आरोवणा, जाव-
वीसतिरातो मासो, एवं वीसतियाखेवेण आयव्वं जाव छम्मासा, एवं मासित्ते ठवियपट्टवित्ते तेमासियं पडिसेवित्ता
एण्णवीसरोवणा जाव छम्मासा ।

मासियठवियपट्टविण् चउम्मान पडिसेवित्ता तीसिय आरोवणाए जाव छम्मासा ।

मासियठवियपट्टविण् पंचमासिय पडिसेवित्ता एण्णतीसं आरोवणाए जाव छम्मासा ।

मासियठवियपट्टविण् छम्मासिय पडिसेवित्ता चत्तालीसराइदियारोवणाए जाव छम्मासा ।

एवं मासियपट्टवणाए परट्ठाणवट्ठी भणिया ।

एवं दोमासियाविमु वि पट्टविण्णु सट्ठाणवट्ठिं भणिऊण पच्छा परट्ठाणवट्ठी भणियव्वा, सव्वत्थं
जाव छम्मासा । एसा एककगसंजोगवट्ठी सट्ठाणपरट्ठाणेसु भणिया ।

इदाणि दुगसंजोगे सद्वानपरद्वानवड्ढि दुविहं भणामि -

मासियठवियपट्टविए मासियं पडिसेवेज्ज पविसियआरोवणा तेण परं दिवड्ढो मासा ।

दिवड्ढवित्ते पट्टवित्ते दो मासो पडिसेवेज्ज वीसिया आरोवणा तेण परं पंचरातो तिण्णि (दोण्णि) मासा । सपंचरातो दो मासा ठविए पट्टवित्ते तिमामियं पडिसेवित्ता पविसिया आरोवणा, तेण परं सवीसराया दो मासा ठवियपट्टविए दोमामियं पडिसेवित्ता वीसिया आरोवणा, तेण परं सदसराइ तिण्णि मासा ।

एधं पुणो मामियं, पुणो दोमामियं, एगंतया सव्वत्थ दुगसंजोगवड्ढी दुविहा भाणियव्वा जाव छम्मासा ।

एवं मामिय-तेमामिए य दुगसंजोगो, पुणो मासे चउमासे य । पुणो मासे पंचमासे य (पुणो मासे) छम्मासे य ।

दुगसंजोगे जस्य जाए आरोवणते पविसित्ताए छम्मासा अतिरित्ता भवति तत्थं च उवेद मासा उत्तव्वा परमो न वत्तव्वा । कारणं तं चेव पूर्ववत् । एवं जत्तिया मामियाए ठवियाए दुगसंजोगा ते भाणिऊग ताहे मामियाए चेव ठवियपट्टवियाए तियसंजोगो चउक्कसंजोगा पंचसंजोगा य भाणियव्वा, रेण छक्कसंजोगो णत्थि, कारणं तं चेव । ताहे दोमासठवियाए दुगसंजोगवड्ढी दुविहा भाणियव्वा - या य सव्वत्थेण पत्ता, सुत्तेण चेव भणन्ति । एत्थियं गंतूण सुत्तं निवडित्तं ।

ते च इमं -

दोमामियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्जावसाणे सअड्ढं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
अड्ढाइज्जा मासा ॥सू०॥४७॥

अड्ढाइज्जमामियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा दोमामियं परिहारद्वानं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसिया आरोवणा,
आइमज्जावसाणे सअड्ढं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
सपंचराइया तिण्णि मासा ॥सू०॥४८॥

सपंचरायतेमामियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्जावसाणे, सअड्ढं सहेउं सकारणं अहीणमहरित्तं तेण परं
सवीसतिराया तिण्णि मासा ॥सू०॥४९॥

सवीसतिरायतेमामियं परिहारद्वानं पट्टविए अणगारे अंतरा दोमामियं
परिहारद्वानं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा,

आइमज्झावसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
सदसराया चत्तारि मासा ॥सू०॥५०॥

सदसरायचाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
पंचूणा पंचमासा ॥सू०॥५१॥

पंचूणपंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्झावसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अद्वल्लुमासा ॥सू०॥५२॥

अद्वल्लुमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
अपडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
छम्मासा ॥सू०॥५३॥

दंसणचरित्तजुत्तो, जुत्तो गुत्तीसु सज्जणहिण्णसु ।
नामेण विसाहगणी, महत्तरओ गुणाण मंजूसा ॥१॥
कित्तो कंतिपिण्णदो, जसपत्तो (दो) पड्हो तिसागरनिरुद्धो ।
पुणरुत्तं भमइ महिं, ससिक्ख गगणं गुणं तस्स ॥२॥
तस्स लिहियं निसीहं, धम्मधुराधरणपवरपुज्जस्स ।
आरोग्गं धारणिज्जं, सिस्सपसिस्सोवभोज्जं च ॥३॥

(एवं एकैकं अंतरेता ताव जेयस्वं जाव त म्मासा, एवं एदस्स वि सज्जदुगसंजोगादि भाणियव्वा)
एवं तेमासियठवियपट्टविण्ण दुविषा समतिग चउ पंच छ, परे णत्थि, एवं चाउ० । १।२।३।४। ना । फू । परे
णत्थि । एवं पंचमासियंजोगा १।२।३। ४ । ना । फू । परतो णत्थि, कारणं त चेव । सव्वे वि जहा लवसणेण
भाणियव्वा, एते दुपसंजोगादीणं संजोगा सट्ठाणवड्ढिता भाणियव्वा परट्ठाणवड्ढिया य ।

"सट्ठाणवड्ढित्त" ति किं भणियं होति ? जे मासियठवियपट्टविण्णमासियं चेव आदि काऊण
संजोगा होति ते सट्ठाणवड्ढिता, एवं दो ति चउ पंचमासिए ।

इमे परट्ठाणवड्ढिता - जे मासियं ठवियपट्टविण्ण दोमासियं वा तिमासियं वा चउमासियं वा
पंचमासियं वा आदी काऊण संजोगा कीरति । एसा परट्ठाणवड्ढी ।

एसासि अथा चोदणाए कारणाणि य जहा पढमठवियाणं एवं पढमसुत्तस्स पट्टवणाए पडिसेवणा
य भणिया ।

इदाणि वित्तियसुत्तस्स बहुसस्स इमा विधी - अम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा
बहुसो वि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आदिमज्झावसाणे सअट्ठं

સહેલું સકારણ, ઘડીળમરિતું તેણ પરં દિવદ્દો માસો, એવં પંચમાસિં પટ્ટવિતે માસિયા પડિસેવળા, ચડમ્માસિં પંચમાસિયા, તેમાસિં પટ્ટવિં. માસિં પટ્ટવિં, દોમાસિતે પટ્ટવિં, માસિયા પડિસેવળા, પક્ષિયા શારોવળા. એવં ઠવિતગા સુતા વિ દિવદ્દમાસાદિ માણિયવ્વા । તં ચેવ નિરવસેસં બહુમાડિભલાવેળં સર્વં માણેયવ્વં । એવં દસ સુતા સુત્તકમેળ ચેવ માણિયવ્વા । નવરં — પટ્ટવળે છ વા પંચ વા ચતારિ વા તિણિ વા દો વા એકો વા પડિસેવળાદો, સુ તં ચેવ સવ્વત્થ । સેસં જહાં કમિણસુતે ગહાં ઠવિતે ય પટ્ટવિં, ય, સુતા વિ તદ્દ ચેવ તેસિં સંજોગા વિ તદ્દ ચેવ કાયવ્વા ।

જો વિ કો વિ વિરોસો વિ યુદ્ધો એ ઉવડ્ડિજ્ઞાણ માણિયવ્વો ઇમાતો જતગાતો —

કું ના હુ ૨ ૨ ૧ ।

કું કું કું કું કું કું ।

ના ના ના ના ના ના ।

એક એક એક એક એક એક ।

૨ ૨ ૨ ૨ ૨ ૨ ।

૨ ૨ ૨ ૨ ૨ ૨ ।

૧ ૧ ૧ ૧ ૧ ૧ ।

એવં પટ્ટવિતિગા સુતા સમત્તા ।

ઇદાણિં ઇહ અજ્ઞયણે સુત્તાવત્તિપરિમાણદુવારેણ પચ્છિત્તવહંતયા ભણંતિ ।

જતો ભણંતિ —

એકશૂળવીસતિવિભાસિયમ્મિ હત્થાદિવાયણં તસ્સ ।

આરોવળરાસિસ્સ તુ, વહંતયા હંતિમે પુરિસા ॥૬૬૪૮॥

જે મિલ્લુ હત્થકમ્મ કરેડ — ઇત્યાદિસુત્તાતો જાવ એકશૂળવીસતિપુદ્ગલગ્રંથસુત્તે વાયણસુત્તં, એતેસુ એકશૂળવીસપુદ્ગલો જો પચ્છિત્તરાસી વિભાસિઓ તસ્સ પચ્છિત્તસ વહંતયા ઇમે પુરિસા ॥૬૬૪૮॥

કયકરણાં ઇતરે યા, સાવેક્ખાં સલ્લુ તદ્દં પિરવેક્ખાં ।

પિરવેક્ખાં જિણમાદી, સાવેક્ખાં આયરિયમાદી ॥૬૬૪૯॥

કયકરણાં જોદિં ચડત્થલ્લુમાદી તવો વતો । “ઇતરે” તિ — અકયકરણાં । જે કયકરણાં તે દુવિદ્ધા — સાવેક્ખાં પિરવેક્ખાં ય । તત્થ પિરવેક્ખાં જિણ દિયા, તે સરીગચ્છાદિપિરવેક્ખાંભગતો પિરવેક્ખાં । આદિ-સદ્ધાતો મુદ્ધપરિહારિયા ગ્રહાલંઘિયા પડિસાપડિવળ્લા એતે ગિયમા કયકરણાં ઇતરેયઃ । જે પુણ સરીગચ્છે ય પાવેક્ખાં તે તિવિદ્ધા — “આયરિયમાદી”, આદિસદ્ધાતો ઉવજ્ઞાયા મિલ્લુ ય ॥૬૬૪૯॥

અકયકરણાં વિ દુવિદ્ધા, અણમિગતાં અમિગતાં ય વોધવ્વા ।

જં સેવતી અમિગતો, અણમિગતે અત્થિરે ઇચ્છા ॥૬૬૫૦॥

જે અકયકરણાં તે દુવિદ્ધા — અણમિગતાં ઇતરે ય । તત્થ અણમિગતાં ગામ અગહિયસુત્તત્થા । ઇતરે તિ — “અમિગતાં”, તે ય ગહિયસુત્તત્થા । એત્થ જો કયકરણો ધિતિસંધયણજુત્તો અમિગતો ય સો જં સેવતિ તં ચેવ સે પચ્છિત્તં દિવ્વતિ । જો પુણ અણમિગતો અત્થિરો અકયકરણો ધિતિસંધયણાદિહીણો તસ્સ જં ગાવળ્ણો તં વા દિવ્વજાતિં હુસિયં વા અણ્ણં હુસિયતરં વા “ઇચ્છ” તિ — જાવ સે ખોસો વા ઇતરેયઃ ॥૬૬૪૯॥ એવં સંલેવ્વઓ ભણિયં ।

इमं वित्थरतो -

अहवा सावेक्खितरे, निरवेक्खो गियमसा उ कयकरणा ।

इतरे कताऽकता वा, थिराऽथिरा णवरि गीयत्था ॥६६५१॥

“इयर” ति— गिरवेक्खा, ते एणविहा गियमा कयकरणादिगुणोवत्ता, पुणो “इयर” ति— सावेक्खा, ते तिविहा आयरियातो । तत्थ आयरियउवज्झाया कयकरण — अकयकरणा भाणियव्वा, ते चेव गियमा अभिगता थिरा य । भिवलू अभिगता अणभिगता वा । पुणो एक्केक्का थिरा अथिरा भाणियव्वा । पुणो कयकरणअकयकरणभेदेण य भिदियव्वा । एत्थ थिराथिरसि ज वुत्तं जाव चरणादिहि दंसणातो परीसहोवसभेहि वा चरणातो अतिकवसडपच्छित्तदाणेण वा भावतो ण चालिज्जति सो थिरो, इतरो अथिरो । एवं त्रिकप्पिण्णमु पच्छदभावणा आयरियादी सव्वे कयकरणअकयकरणा भाणियव्वा । णवरं — भिक्खुपवखे थिराथिरगोतमगीयत्था य भाणियव्वा ॥६६५१॥

इमं कयकरणेतराण वक्खाणं -

छट्ठमादिएहि, कयकरणा ते उ उभयपरियारा ।

अभिगत कयकरणत्तं, जोगा य तवारिहा केहं ॥६६५२॥

छट्ठमादितवो जेहि कतो कयकरणा, ते उ “उभयपरियाए” ति— गिहत्थपरियाए सामन्नपरियाए वा, ते कयकरणा, इयरे अकयकरणा । जे ते अभिगता तेसि केइ आयरिया कतकरणं इच्छति । कम्हा ? जम्हा तेहि आयरियजोगा बूढा महाकप्पसुतादीणं ।

सीसो चोदेति — जे ते गिरवेक्खा — तेसि एक्को चेव भेदो । जे पुण सावेक्खा तेसि किं निमित्तं तिविधो भेदो — “इमो आयरिओ” “इमो उवज्झाओ” “इमो भिवलू” ?

आयरियाह — जे ते आयरियउवज्झाया ते गियमा गीयत्था, जे भिवलू ते गीयत्था अगीयत्था वा, एवमादिभेदवरिसणत्थं भेदो कतो ॥६६५२॥

अथवा — तत्थ तिविधभेदे जो गीयभेदो सो इमं जाणइ -

कारणमकारणं वा, जयणाऽजयणा य तत्थ गीयत्थे ।

एण्ण कारणेणं, आयरियादी भवे तिविहा ॥६६५३॥ कञ्जा

अथवा सावेक्खपुरिसभेदकरणे इमं कारणं -

कज्जमकज्ज जताऽजत, अविजाणंतो अगीओ जं सेवे ।

सो होति तस्स दप्पो, गीति दप्पाजते दोसा ॥६६५४॥

अगीओ ण जाणति — इमं कज्जं इमं अकज्जं, इमा जयणा, इमा अजयणा । एवं अजाणंतस्स जा सेवा सा सव्वा दप्पो चेत्त उवलवभत्ति, तम्हा तस्स दप्पणिष्फणं पच्छित्तं “इज्जति । गीयो एण एयं सव्वं जाणइ तम्हा तस्स दप्पणिष्फणं अजयणणिष्फणं वा दायव्वं । अहवा — जहा लोगे जुवरायादिवस्तुविसेसे दंडविसेणो भवति, तथा इड लोउत्तरे आयरियादीणं आसेवणदंडो अण्णणो भवति, तेण तिविधभेदे कओ ॥६६५४॥

सा य वत्थुविसेसओ इमा आवत्ती — १ सव्वजिह्वा आवत्ती पारंचिय, तत्थ गिरवेक्खपारंचिय-करणेऽसंभवतो सुत्रं, आयरिए कयकरणे पारंचिय, अकयकरणे अणवट्टं । उवज्झाए कयकरणे अकयकरणे भूत्तं ।

१ दायव्वं । २ सव्वेस्तिपि अविमिह्वा, इत्थपि पाठः ।

भिवलुम्मि गीते थिरे कयकरणे अणवहुं, अकयकरणे छेदो । अथिरे कयकरणे छेदो, अथिरे अकयकरणे छग्गुह । भिवलुम्मि अगीते थिरे कयकरणे छग्गुह, अकयकरणे छल्लह, अथिरे कतकरणे छल्लह, अकयकरणे चउगुह । एस एक्को आदेसो ।

इमो वितियो - पारचियघावत्तीए चैव कण्णे अयरिए अणवहुं, अकयकरणे मूलं, उवउभाए कयकरणे मूलं, अकयकरणे छेदो । एवं अट्ठोवकंतीए णेयव जाव भिवलुम्मि अगीते अथिरे अकयकरणे चउलहुअ । एवं अणवहु वि दो आदेसा भाणिवव्वा । णवरं - तेषि प्रता चउलहुं मासगुरु य । एथ वि गिरवेक्खे अणवहुसंभवतो सुणं ।

इदाणि मूलं -

सव्वेसिं अथिसिद्धा, आवत्ती तेण पढमता मूलं ।

सावेक्खे गुरुमूलं, कतमकते छेदमादी तु ॥६६५५॥

सव्वेसिं गिरवेक्खादीणं मूलं आवण्णा, तत्थ जे गिरवेक्खा ते जं चैव आवण्णा तं चैव विज्झ, जेण कारणेण ते गिण्णुग्गहा । सावेक्खेणं पुण दाणं इमो विही णायव्वो -

सावेक्खस्स आयरियस्स कयकरणस्स मूलं, अकयकरणस्स छेदो ।

उवउभायस्स कयकरणस्स छेदो, अकयकरणे छग्गुह ।

भिवलुस्स अभिगयस्स थिरस्स कयकरणस्स छग्गुह, अकयकरणस्स छल्लहुया ।

अथिरस्स कयकरणस्स छल्लहुया, तस्सेवाकयकरणस्स चउगुहा ।

अणभिगयस्स थिरस्स कयकरणस्स चउगुहा, अकयकरणस्स चउलहुया ।

अथिरस्स कयकरणस्स चउलहुया, तस्सेव अकयकरणस्स मासगुरु । मूलमावण्णो एवं मासगुरु ठाति ।

छेदावण्णे छेदाओ आदत्तं एतेसु चैव पुरिसठाणेसु अट्ठोवकंतीए मासलहुए ठाति । छग्गुहातो गुरुए भिन्नमासे ठाति ।

चउलहुयातो छल्लहुए मासे ठाति । चउगुहाओ गुरुए वीसराइदिए ठाति । चउलहुयातो वीसराइदिए लहुए ठाति ।

मासगुहाओ पण्णरसराइदिए गुरुए ठाति । मासलहुयाओ पण्णरसराइदिए लहुए ठाति ।

भिन्नमासगुहातो दसराइदिए गुरुए ठाति । भिन्नमासलहुयातो दसराइदिए लहुए ठाति ।

वीसरायगुहातो पंचराइदिए गुरुए ठाति । वीसरायलहुयातो पंचरायलहुए ठाति ।

पण्णरसरायगुहातो दसमे ठाति । पण्णरसरायलहुयातो अट्ठमे ठाति ।

दसराइदिएगुहातो छट्ठे ठाति । दसराइदियलहुयातो चउत्ये ठाति ।

पंचराइदियातो आयविले ठाति । एवं पंचराइदियलहुयातो एक्कासणते ठाति । दसमातो पुरिमड्ढे ठाति ।

अट्ठमातो निव्वत्तेते ठाति । एवं अट्ठोवकंतीए सव्वं णेयव्वं ।

एथ एक्के आयरिया - चरिमादत्तं अट्ठोवकंतीए लहुवणए ठाति दसमादिपदे ण ठायंति । अण्णे चरिमादत्तं अट्ठोवकंतीए पण्णोवरि दसम छट्ठ-चउत्या जाव एअभसपुरिमड्ढे जाव गिबितिए ठायंति ॥६६५५॥

आदेशान्तरप्रदर्शनार्थमिदमाह -

पढमस्स होति मूलं, वितिए मूलं च छेदं छग्गुरुगा ।

जयणाए होति सुद्धा, अजयण गुरुगा तिविहभेदो ॥६६५६॥

पढमो ति - जिणकिओ, तस्स अवकादाभावा मूलं एवं । "वितितो" ति - सावेक्खो कयकरणो आयरिओ, तस्स मूलावत्तीए मूलं चैव । "वा" विकल्पे । छेदो वा भवति ।

अस्य व्याख्या -

सावेक्यो त्ति व काउं, गुरुस्स कडजोगिणो भवे छेदो ।

अकयकरणम्मि छग्गुरु, अड्ढोक्कंतीएणेयव्वं ॥६६५७॥

एस आयरियउवज्झाएमु अववादो । जो य भिक्खू गीतो थिरो कयकरणो य, अगीयपव्वे थिरो कयकरणो य, एतेसि वि एसो चेव अववादो ।

जे मेसा भिक्खुपव्वे तेसि इमो अववातो -

अकयकरणा य गीया, जे य अगीयाऽकता य अधिरा य ।

तेसावत्ति अणंतर, बहुअंतरिया व भोसो वा ॥६६५८॥

जे भिक्खू गीयपव्वे दोणिण अकयकरणा, चसदातो गीतो अधिरा कयकरणो य ।

जे अगीयपव्वे अकयकरणा दोणिण, जो य अगीयो थिरो कयकरणो य । एतेसि भावतोतो जं अणतंरं दुगादिबहुअंतरं वा सव्वतिमं वा दिज्जति, सव्वहा वा भोसो कज्जति । “अजयणाए” पच्छदं - सव्वावत्तिठाणेषु गीयत्थो कारणे जयणाए अरत्तो अदुट्ठो य पडिसेवंतो सुद्धो ।

जो पुण अजयणकारी तस्स अजयणगिण्णं पुरिसभेदतो इमं तिविहं, आयरियस्स चउगुरुं, उवज्झायस्स चउलहं, भिक्खुस्स मासगुरुं । एतेण कारणेण तिविधो पुरिसभेदो कृत इत्यर्थः ॥६६५८॥

सीसो पुच्छति - “किं निमित्तं एस आयरियादिभेदेण विसमा सोही अणिता” ?

उच्यते -

दोसविभवाणुरूवो, लोए डंडो उ किमुत उचरिए ।

तित्थुच्छेदो इहरा, णिराणुकंपा ण वि य सोही ॥६६५९॥

जहा लोमे ण सव्वदोसेसु सरिसो डंडो, अण्णमहतदोसाणुरूवो डंडो दिज्जति, किं च लोमे पुरिसा-गुरूवो विभवाणुरूवो य डंडो दिज्जति, जो जतियं खमति, एवं जति लोमे अणुकंपिणो होउं घरसाराणुरूव डंडं देति, तो किमुत लोपुत्तरे वि अणुकंपपरायणं हि सुट्ठुतरं अणुकंपा कायव्वा । अणं च जइ जो जं खमति तस्स तं जति ण दिज्जति तो तित्थुच्छेदादिया दोसा पच्छित्तकरणयसत्ता उणिबखमंति, किं च अबलं पडुच्च निग्घिणता कवखडपच्छित्तकरणपराअण्णस्स चअणसुद्धो ण भवति, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा उतं पुरिस-भेदयो सोही ॥६६५९॥

“अजयणाए हांति सुद्धा अजयणगुरूगा तिविहभेदो” त्ति एयस्स पच्छदस्स इमं वक्खाणं - तिविधभेदो त्ति आयरिय उवज्झाय भिक्खूण य । उस्सगतो ताव सव्वेसि गेलण्णे सुद्धेण कायव्वं । यह सुद्धं ण लभमति तो कारणाज्जलविणा पणगादिजयणातो असुद्धेण करंता कारवेंता य सुद्धा ।

“अजयणगुरूग” त्ति अस्य व्याख्या -

सुद्धालंभे अगीति, अजयणकरणे भवे गुरूगा ।

कुज्जा व अतिपसंगं, असेवमाणे व अममाही ॥६६६०॥

અપરિણામગા અતિપરિણામગા ય જે તેસિ સુદસ્સ અલંભે જતિ અજયણાં કરેતિ, અહવા - એત્થ અજયણાં - તદ્દા અસંજસતો કરેતિ જહા તે જાણંતિ કહંતિ વા તેસિ અસુદંતિ, સો ચરુપુરુષ પચ્છંતિ । ઇમે ય દોમા અવંતિ, અતિપરિણામગો અતિપસંગં કરેજ્જ, અપરિણામગો વા અકપ્પિયંતિ અસેવંતો અણયાદા-પરિતાવળા અસમાહિમરણં વા ॥૬૬૬૦॥

કિં ચાન્યત્ -

તિવિધે તેદ્ધચ્છમ્મિ, ઉજ્જુગવાઉલ્લણ સાહણા ચેવ ।

પણ્ણવણ્ણ સદ્ધચ્છંતે, દિટ્ઠંતો મંહિપોતેહિ ॥૬૬૬૧॥

અપરિણામગાતિવિધે પુરિસભેદે, અહવા - તિવિધા તેદ્ધચ્છા વાતિયા પિત્તિતા સિમ્મિતા, તાસુ સુદાલંભે અકપ્પિયણ કોરમાણે પ્રાયરિય-ઉચ્ચકાયા-ગીયચિક્ષૂણ ય “ઉજ્જુય” તિ - કુડમેવ સેવંતિ-એવં “અકપ્પિય” તિ જં વા જહા ગહિયં । કમ્પહા ? અમ્પહા તે સસ્સમાવવાદતો જોગાજોમં જાણંતિ, જં ચ જોમં તં પ્રાયરંતિ । જે પુણ અમીતા અપરિણામગા અતિપરિણામગા ય તેસિ અકપ્પિયં તિ ણ કાહજ્જતિ ।

અહ તે મળેજ્જ - કતો એવં તિ ? તાહે કહિજ્જતિ-અમુગાગિહામો તિ વાકુલિજ્જતિ, જહા સે અકપ્પિયં વિ કપ્પિયવુદ્ધો ઉપાજ્જતીત્થયં ।

અહ તેહિ ણાય - તાહે તેમિ “અસુદં” તિ કુડં સાહિજ્જતિ । અહવા - તેહિ સયમેવ ણાયં તેસિ ઇમં સાહિજ્જતિ - “જં ગિલાણેહિ અકપ્પિયં વિધોઈ સેવિજ્જતિ તં ણિદોસં, અણ્ણં ચ પ્રપ્પેણ બહુમેસિજ્જા એવં પંડિયલક્ષણં । ગિલાણં ગિલાણપડિકમ્મે ય અકિજ્જમાણે જતિ મરંતિ તો અસંજતો બહુતરં કમ્મં વંચંતિ, તેમિચ્છે પુણ કપ્પે ચિરં જીવંતો સામણ્ણં કરંતો લઠ્ઠં કમ્મં લ્લવેતિ, અણ્ણં ચ કતાઈ તેણેવ ભવેણ સિજ્જેજ્જ ।”

ઉત્તં ચ - “અત્થિ ણં મંતે લવસત્તમા દેવા” इत्याद आलावकाः । एवं जो तरुणो बहूण य सङ्गुसाङ्गुणीणं उवगहं काहिति, सो एवं पण्णविज्जति ।

અહ પળાવિતો વિ અકપ્પિયં ણ ઇચ્છંતિ, તાહે સે મંહીપોતેહિ દિટ્ઠંતો કજ્જતિ ।

જો મંહી પોતો વા થોવમંઠવળાણ સંઠવિતો વહંતિ સો સંઠવિજ્જતિ । અહ અતીવવિસણ્ણદારુ તો ણ સંઠવિજ્જતિ ।

એવં તુમં વિ ગિલાણે અકપ્પિયસંઠવળાણ મઠવિતો બહું સંજમં કાહિતિ, જો પુણ વુદ્ધો તરુણો વા અતીવરોગધચ્છો અતિગિચ્છો સો જતિ અપ્પણા મળાતિ - “અળાસગં કરેમિ” તિ તસ્સ અળમતી કજ્જતિ, અપ્પણાસમળંતસ્સ “સાહિજ્જતિ” તિ ધમ્મો કહિજ્જતિ, પળ્ણવિજ્જદ્ધ ય “અળાસગં કરેહિ” તિ ।

દર્શણિ તેણેવં કરણિજ્જં અહ ણેચ્છંતિ અળાસગં, તાહે સે મંહીપોતગં દિટ્ઠંતા કજ્જંતિ, સો મળ્ણતિ - તુમં અતો વિસન્નદારુતુલ્લો આરોહણં કરેહિ તિ । “જા એવેસે અવદ્ધા તુ મંહી” વૃત્તં કંઠ ॥૬૬૬૧॥

એવં કારણે જયણાસેવળા વળિતા, અજયણં કરંતેત્તસ આરોવળા ય । અહવા - સાવેવસા દસ આય-રિયાદિપુરિસા કજ્જંતિ ।

કહં ? ઉચ્ચતે - જે મિવલૂ ગીયત્થો સો દુવિહો કજ્જતિ ।

કહં ? ઉચ્ચતે - કયકરણો અકયકરણો ય । ચિરાચિરો ણ કજ્જતિ ।

एवं दस काउं इमा अण्णा आरोवणा भणंति -

णिब्विगितिय पुरिमड्ढे, एक्कासण अंबिले अभत्तट्ठे ।

पण दस पण्णर वीसा, तत्तो य भवे पणुव्वीसा ॥६६६२॥

मासो लहुओ गुरुओ, चउरो लहुगा य होति गुरुमा य ।

छम्मासा लहुगुरुमा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥६६६३॥

आयरियादी छब्बे पंचरातिदियं आवण्णा, तेसि इमं दाणं -

आयरियस्स कयकरणस्स तं चेव दाणं, अकयकरणस्स अभत्तट्ठो ।

उवज्ज्जायस्स कयकरणस्स अभत्तट्ठो, अकयकरणस्स आयंबिलं ।

भिकखुस्स अभिगतस्स कयकरणस्स आयंबिलं, अकयकरणस्स एक्कासणयं ।

भिकखुस्स अभिगतस्स अधिरकयकरणस्स प्रकयकरणस्स णिब्वितियं अहवा - अभिगतअधिरस्स इच्छा । एवं दसराइदिण्णु आढत्तं हेट्ठाहुत्तं पुरिमड्ढे ठाह, पण्णरससु आढत्तं एक्कासणगे ठाति, वीसाए आढत्तं आयंबिले ठाति, मिण्णमासे आढत्तं अभत्तट्ठे ठाति, मासगे आरद्धं पंचसु रातिदिण्णु ठाति, एवं होमासिक तेमासिक चउमासिक पंचमासिक छम्मासिक छेद मूलं प्रणवट्ट पारंचिए आरद्धं सव्वेसु हेट्ठाहुत्तं ओसारैयव्वं तेहि चेव पदेहि । सव्वेते तत्थारिहलहुगा भणिया ॥६६६३॥

एसेव गमो णियमा, मासदुमासादि ए उ संजोए ।

उग्घायमणुग्घाए मीसं मीसाहरंगे य ॥६६६४॥

एवं मासादिसगलसुत्तारोवणाओ भाणियव्वा, एवं उग्घाइण्णु सव्वहा भाणिण्णु भणुवातिण्णु वि एवं भाणियव्वा, तथा उग्घायाणुग्घायमीससंजोगेसु वि भाणियव्वा । एवं मासादिगा जाव छम्मासा पणगसातिरेगेहि भाणियव्वा । पुणो ते चेव गुरुगा पणगमासातिरेगेहि ताहे उग्घायाणुग्घायपणगमासातिरेगेहि तो दसराय-उग्घाताणुग्घायासातिरेगेमीसा य भाणियव्वा । एवं जाव मिण्णमासातिरेगेहि ति । एवं सव्व्वावत्तिसु उवज्ज्ज दाणं दातव्वमिति ॥६६६४॥

एसेव गमो नियमा, समणीणं दुगविवज्जिओ होइ ।

आयरियादीण जहा, पवत्तिणिमादीण वि तहेव ॥६६६५॥

एवं संजतीणं पि सव्वं भाणियव्वं । णवरं - तासि दुगवज्जियं ति प्रणवट्टपारंचियदाणं गत्थि ।

आवत्तीओ पुज तासि मत्थि, ते सव्व्वावत्तीओ दाणाणि य मत्थि । णवरं - परिहारो ण किंचि, जहा पुरिसाणं आयरियादिदाणेसु भणियं तथा तासि पवत्तिणिमादिदाणेसु भाणियव्वं ॥६६६५॥

इदाणि आयरिओ सिस्साणं सिस्सणीणं च इमं णिसीहज्जमयणं हिययम्मि थिरं भवउ त्ति णिकायणत्थं इमं भणइ -

चउहा णिसीहकप्पो, सहहणा आयरण गहण सोही ।

सहहण बहुविहा पुण, ओहणिसीहे विभागो य ॥६६६६॥

अहवा - जं एयं पंचमचूलाए सुत्तं सव्वं एयं समासतो अज्जिहं ।

जतो भणति -- “चउ०” गाहा ॥६६६६॥ चउविहो निशीहकणो तं जहा - सद्दहणकणो, आयरणकणो, गहणकणो, सोहिकणो य । तत्थ जा सद्दहणा सा दुविहा — ओहे विभागो य ॥६६६६॥

एक्केक्का अणेगविहा दमा -

ओहणिसीहं पुण, हो ति पेढिया सुत्तमो विभागो उ ।

उत्सग्गो वा ओहो, अववाओ होति उ विभागो ॥६६६७॥

ओघः समासः सामान्यमित्यनयान्तरं, तं च निशीहपेढिया णामगिप्फणो णिवत्तेओ उ (ओह)गहणा-
दित्यर्थः । विभजनं विभागः विस्तर इत्यर्थः । सर्वासौ उद्देश्येति जो सुत्तसंगहो सुत्तयो य । अहवा -
उत्सग्गो ओहो, तस्यापवादः विभागः ॥६६६७॥

अहवा -

उत्सग्गो वा उ ओहो, आणादिपसंगमो विभागो उ ।

वत्थुं पप्प विभागो, अविसिद्धावज्जणा ओहो ॥६६६८॥

सुत्ते सुत्ते जं उत्सग्गदरिसणं तं ओहो, जं पुण सुत्ते सुत्ते आणाऽणवत्थमिच्छत्तविराहणा य विभाग-
दरिसणं सो विभागो, अहवा - आयरियादिपुरिसवत्थुभेदेण जं भणियं सो विभागो, जो पुण अविसिद्धा
मावत्तो सो ओहो ॥६६६८॥

अहवा -

पडिसेहो वा ओहो, तक्करणाऽऽणाति होइ वित्थारो ।

आया संजम भइता, तस्स य भेदा बहुविकप्पा ॥६६६९॥

“ण कप्पइ” ति काउ जं जं पडिसिद्धं सो सव्वो ओहो, तस्स पडिसिद्धस्स करणाणुणा जा
आणादिणो य भेदा । एस सव्वो वित्थारो ति विभागो सवित्थारो पुण भाणियव्वो । णिककारण अविविपडिसेवणे
णियमा आणासंगो अणवत्था य, मिच्छत्तं च -- “ण जहावादी तहाकारि” ति. विराहणाओ आयसंजमविराह-
णाओ भयणिज्जा — कयावि भवन्ति ण वा । जहा करकम्मकरणे ओपविराहणा भवन्ति ण वा, सजमे णियमा
भवति, पमत्तस्स य पडमाणस्स आयविराहणा, तस्सेव पाणाइवायअसंपत्तीए णो संजमविराहणा । एवं “तस्स”
ति विराहणाए सप्रभेदा । एवं बहुविकप्पा अणेगप्रकारा उवउज्ज भाणियव्वा । एवं विभागो ॥६६६९॥

अहवा सुत्तनिबंधो, ओहो अत्थो उ होति वित्थारो ।

अविसेसो चि व ओहो, जो तु विसेसो स वित्थारो ॥६६७०॥

सुत्तमेतप्रतिबद्धं, जहा पढमसुत्ते करकम्मकरणे मासगुरुं । एस ओहो । सेसो अत्थो जहा -
पढमपोरिसीए करकम्मकरणे मूलं, बितिए छेदो, ततिए छगुरु, चउत्थोए चउगुरु, पंचमीए मासगुरुं । एस
विभागो । एवं पढमसुत्ते । एवं चेव सव्वसुत्तेसु जो अणुवादी अत्थो सव्वो विभागो । अहवा - जं दव्वादि-
पुरिसविसेसेण अविसिज्जति सो ओहो । दव्वादिपुरिसविसिद्धं पुण सव्वं वित्थारो । एवं सव्वं जं वुत्तं सद्दुगसद्दहणस्स
सद्दहणकणो ॥६६७०॥

इदाणि इमो 'आयरणकप्पो -

जे भणिता उ पकप्पे, पुव्वावरवाहता भवे सुत्ता ।

सो तह समायरंतो, सब्बो सो आयरणकप्पो ॥६६७१॥

जे पकप्पे एगूणवीसाते उद्देशगेहि पुव्वावरवाहया सुत्ता अत्था वा भणिता ते तहेव समायरंतस्स आयरणकप्पो भवति । एत्थ पुव्वो उस्सग्गो, अवरो अववाहो । एते परोप्परवाहता - एतेसि सट्ठाणे सेवणा कर्तव्येत्यर्थः ॥६६७१॥

उस्सग्गो अववायं, आयरमाणो विराहश्चो होति ।

अववाए पुण पत्ते, उस्सग्गानिसेवओ भइओ ॥६६७२॥

कथा । भयणा कहं ? उच्यते - जो धितिसंघयणसंपण्णो सो अववायठाने पत्ते वि उस्सग्गं करंतो सुट्ठो, जो पुण धितिसंघयणहीणो अववायट्ठाणे उस्सग्गं करेइ सो विराहणं पावति । एस भयणागतो आय (क) रणकप्पो ॥६६७२॥

इदाणि 'गहणकप्पो -

सुत्तत्थतदुभयाणं, गहणं बहुमाणविणयमच्छेरं ।

उक्कुडु-णिसेज्ज-अंजलि-गहितागहियम्मि य पणामो ॥६६७३॥

सुत्तं अत्थं उभयं वा गेहूतेण भत्तिबहुमाणान्भुट्ठाणातिविणओ पयुजियव्वो । "मच्छेरं" ति आश्चर्यं मन्यते - "अहो ! इमेसु सुत्तत्थपदेसु एरिसा अविकला भावा गज्जंति", अहवा - आश्चर्यभूतं विणयं करोति तिव्वभासवंपण्णो अण्णोसि पि संवेगं जणंतो, अत्थे णियमा सण्णिसिज्जं करेति, सुत्ते वि करेति, वायणापरिवइच्छाए वा सुणेति, उक्कुडुमो ठितो रयहरणणिसेज्जाए वा णिच्चकयंजली । एवं पुच्छमाणो वि सुत्तं पुण कयकच्छमो पठति, जया पुण आसावयं भगति तथा कयंजली कयपणामो य, किं च अगं सुयक्खं भज्जयणं उद्देशगा अत्थाहिमारा सुत्तवक्के य गुरुणा दिण्णे समत्ते वा । गहिए ति अवधारिण्ण अणवधारिते वा मिस्सेण पणामो कायव्वो ॥६६७३॥

इदाणि "सोधिकप्पो" ति सोधि प्रायश्चित्तं तं द्रव्यादिपुरुषभेदेन कल्पते यः स सोधिकल्पः, जो आश्रयणाणं वच्छित्तेण सोधि करोतीत्यर्थः । केरिसो सो ? उच्यते - केवलं मणं ओहि चोद्दस गवपुव्वी य ।

सीसो भणति - तित्थकरादिणो चोद्दसपुव्वादिया य जुत्तं सोहिकरा, जम्हा ते जाणंति जेण विमुज्जइ ति, तेसु वोच्छिण्णेषु सोही वि वोच्छिण्णा ? ।

आचार्याह -

का मं जिणपुव्वधरा, करिमुं सोधिं तथा वि खलु एण्हं ।

चोद्दसपुव्वणिवद्धो, गणपरियट्ठी पकप्पधरो ॥६६७४॥

पुव्वद्धं कंठं । इमं पकप्पज्जयणं चोद्दसपुव्वोहि णिवद्धं, तं जो गणपरियट्ठी सुत्तत्थे धरेति सो वि सोधिकरो भवति । अहवा - चोद्दसपुव्वेहितो णिज्जूहिमो एस पकप्पो णिवद्धो, तद्वारी सोधिकारीत्यर्थः ॥६६७४॥

१ गा० ६६६६ । २ गा० ६६६६ । ३ गा० ६६६६ ।

किं चान्यत् -

उग्रायमणुध्याया, मासचउम्मासिया उ पच्छित्ता ।

पुव्वगते च्चिय एते, णिज्जूढा जे पक्कप्पम्मि ॥६६७५॥

जे उग्रायादिया पच्छित्ता जेसु अवराहेसु पुव्वगए सुत्ते अत्थे वा भणिता ते चेष पुव्वगतसिद्धा इहं पि पक्कप्पज्झयणे णिज्जूढा तेसु चेष अवराहेसु ति, जम्हा एव तम्हा पक्कप्पधारी सोहिक्करो ति सिद्धं ॥६६७५॥

सो पक्कप्पधारी कतिभेदो केरिसो वा गणपरिवट्टी इच्छिज्जति ? उच्यते -

तिविहो य पक्कप्पधरो, सुत्ते अत्थे य तदुम्मए चेव ।

सुत्तधरवज्जियाणं, तिगदुगपरियट्ठणा गच्छे ॥६६७६॥

सुत्तं णामेगे घरेति णो अत्थं, अत्थं णामेगे घरेति णो सुत्तं ।

एगे सुत्तं पि घरेति अत्थं पि, एगे णो सुत्तं घरेति णो अत्थं ।

एत्थ च उत्थो पक्कप्पधरणे सुणोति अवत्थु चेव, सेसतिगमगे पदमभंगित्तो वि । जम्हा एते गणपरिवट्टी पच्छित्तदाणे असमत्थो ति । तं सुत्तधरं वज्जेत्ता तद्दयभंगधरो गणपरिवट्टी अणुस्मातो । तस्सासति चित्तिभंगित्तो वि जम्हा एकभेदेण पच्छित्तदाणे समत्था तम्हा ण वोच्छिणं पच्छित्तं देतगा य ६६७६॥

आह-- "किं कारणं पच्छित्तं दिज्जति ?"

आचार्याह -

पच्छित्तेण विसोही, पमायबहुयस्स होइ जीवस्स ।

तेण तदंकुसभूतं, चरित्तिणो चरणरक्खण्डा ॥६६७७॥

जम्हा मत्तगओ अवसो उम्मग्गगामी वा अंकुसेण धरिज्ज - एव चरित्तिणो चरणं मत्तिणं पच्छित्तेण सुम्भति, इदियादियमादमु य पयट्ठमाणो पच्छित्तेण अंकुसभूतेन निवारिज्जति चरणरक्खण्डा ॥६६७७॥

जं च भणसि "पच्छित्तं वोच्छिणं" ति तत्थ पच्छित्ताभावे इमे दोसा -

पायच्छित्ते असंतम्मि, चरित्तं पि ण चिट्ठती ।

चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे नो संचरित्तया ॥६६७८॥

चरित्तम्मि असंतम्मि, निव्वाणं पि ण गच्छती ।

निव्वाणम्मि असंतम्मि, सच्चा दिक्खा निरत्थया ॥६६७९॥ कंठ्या

तम्हा पक्कप्पधारिणो देतगा अत्थि, पच्छित्तं च देयमप्पत्थि, दातुदेयसवधात् । तं च पच्छित्तं दत्तविहं आलोयणादि सिद्धं ।

तेसि सेस जम्मि वोच्छिणं, जं वा अणुसज्जति तं भणामि -

दस ता अणुसज्जंती, चोइसपुव्वी य जाव संघयणं ।

दोसु वि वोच्छिणेषुं, अट्ठविहं जाव तित्थं तु ॥६६८०॥

तं दसविधं ताव अणुसज्जति जाव चोद्दसपुष्पिणो, चोद्दसपुष्पिणो वि ताव अणुसज्जति जाव पडमसंघयणं, चोद्दसपुष्पा य थूलभदे वोच्छिन्ना । अणुवट्टपारविमतवपच्छिन्ना वि दो तत्थेव वोच्छिन्ना । तेसु य दोसु वोच्छिण्णोसु सेसं आलोयणादि जाव भूल, एयं अट्टविह पि जाव तित्थं ताव अणुसज्जति । लिंग-
संस्कालअणुवट्टपारविचा य । तिगे-दब्धे भावे, दम्भेज्जला, भावे- अणुवरता, खेते - ओ जत्थ दूसति, कालतो जाव अणुवरतो ति ॥६६८०॥

अह्वा दुविहं पच्छित्तं - ओहणिप्फणं वित्थारणिप्फणं च -

ओद्देण उ सट्ठाणं, सट्ठाणविभागतो य वित्थारो ।

चरणविसुद्धिनिमित्तं, पच्छित्तं तू पुरिसजाते ॥६६८१॥

तत्थ ओहणिप्फणं सट्ठाणं, "सट्ठाण" ति जं सुत्ते णिबद्धं, तं च उद्दसगस्स अतसुत्ते निदिसति ॥६६८१॥

सुत्ते सुत्ते पुण णिबद्धो इमो, जहा -

कम्मादीणं करणं, सयं तु सातिज्जणा भवे दुविहा ।

कारावण अणुमोयण, ठाणा ओद्देण तिण्णेते ॥६६८२॥

जे भिक्खु सयमेव हृत्यकम्मं करेड तस्स मासगुरु । साइज्जणा य दुविहा - कारावणा अणुमती य ।
एयासु मासगुरुणा । एते तिणिण वि ओहणिबद्धाओ पच्छित्तं । एयाओ परं जं विभागेण वंसिज्जति सुत्तसूचितं
तं सव्व वित्थारो । एवं बहुविह वण्णोना जत्थ जत्थ सुतनिवातो सो ओहो, सेसं वित्थारो । तं ओहविभागे
पच्छित्तं पडिसेवणपगारं जाणिता आयरियादिपुरिसविसेसं जाणिता मल्लिणविसोविणिमित्तं च देति ॥६६८२॥

कि चान्यत् - इह णिसीहउक्कपणे सुत्ते उस्सग्गववाया दट्ठवा ।

तेसु इमा अणायरणविधी -

हत्थादिवायणंतं, उस्सग्गेऽववातियं करेमाणो ।

अववाते उस्सग्गं, आसायण दीहसंसारी ॥६६८३॥

हन्वकम्मकरणं आदिसुत्तातो माग्गं जाव एणुणवीसइमस्स चरिमस्स चरिमं वायणानुत्तं, एत्थ
ओ उस्सग्गठाणे अववादे करेति अववादे वा जो उस्सग्गं करेति सो तित्थकरअणाणाए अट्टति, दीहसंसारिवत्तं
च णिव्वत्तेह । जम्हा एते दोसा तम्हा उस्सग्गे उस्सग्गं करेज्जा, अववादे अववादे ॥६६८३॥

अह्वा - छेदसुत्तेसु सुत्ते सुत्ते इमो चउक्विहो अत्थोवेक्खो विधीए दंसिज्जति -

पडिसेहो अववाओ, अणुणजतणा य होइ णायच्चा ।

सुत्ते सुत्ते चउहा, अणुओमविही समक्खाया ॥६६८४॥

पडिसेहो जा आणा, मिच्छज्जवत्थो विराहणाऽवातो ।

वित्तियपदं च अणुणा, जयणा अप्पावहणं च ॥६६८५॥

पुव्वदस्स जहासंखं इमा वक्खा - पडिसेहो णाम जा आणा उस्सग्गववायत्ताणीयं च सूत्रमित्थयः ।
अववादे णाम दोसो, तं दोसठाणं पडिसेवतस्से मिच्छत्तं भवति, अणुस्स जणेति, अणवत्तं च पयट्टेति,

आयसंजमविराहणं च पावति । अणणा णाम वितियपदं, अपवाहपदमित्यर्थः । जयणा नाम अत्रवादे पत्ते संचितेउ जं जं अणतरदोसठाणं तं तं णच्चा सेवति । जत्य पुण बहुतरा दोसो तं णच्चा वज्जेति । एवं सव्वेसु सुत्तेसु अरथो दंसिज्जति ॥६६८५॥

आयावाए इमो विसेसो भणति -

देवतपमत्तवज्ज्जा, आतावातो य होति भतियच्चा ।

चित्तवतिपुढविठाणादिणसु चोदंत कलहो उ ॥६६८६॥

सव्वपमायठाणेषु पमत्तभावं देवता छलेज्ज अतो तं देवयपच्चयं “वज्जे ता” मोत्तु इत्यर्थः, सेसा जा आयावाया पमत्तभावंस वितिज्जति । ते “भइयव्व” ति - भवति वा ण वा ति । केसुइ पमायठाणेषु भवति, केसु वि न भवति । अथवा - सव्वपमायठाणेषु आयावातो इमेण पमारेण वितियच्चो, जहा - चित्तमंतए पुढवीए ठाणणिसीदणादि करंतो चोदितो तस्य कलहं करेज्जा, - परोप्परं असहंताण बुद्धे अक्कि-डियाण आयविराहणा होज्ज, एवं सव्वं ॥६६८६॥

एवं आयावाएण भणिए समप्पिउकामे अज्झणणे आयरितो संखेवतो उवदेसमाह -

अवराहपदा सच्चे, वज्जेयव्वा य णिच्छओ एस ।

पुरिसादिपंचगं पुण, पडुच्चणुणा उ केमिं चि ॥६६८७॥

सुत्तभणिया अत्यभणिता वा जे अवराहपदा ते सच्चे वज्जणिज्जा । एस णिच्छयत्थो । तेसि चेव अवराहपदाण पुरिसपंचगं पडुच्च केमिं चि अणुणा भणिता । ते इमे पंच - आयरियो उवज्झासो भिक्खू पेरो बुद्धो य । आदिसहातो संजतोसु वि पंचगं । केति “पंचग” ति गणावच्छेतिए छोडु पंच भणति, तं न भवति अव्यापृतत्वात् ॥६६८७॥

किं चान्यत् -

जति वि ण होज्ज अवाओ, गेण्हणदिट्ठादिया उ अवराहा ।

परितावणमादीया, आणादि ण णिप्फला तह वि ॥६६८८॥

जइ वि अवराहपदेसु ठियस्स आतावातो ण भवेज्जा, गेण्हण - कड्डणादिया वा ण होज्ज, दिट्ठे संका धाडियभोतियादिया वा ण होज्ज, परितावमहादुक्खे एवमादिया न होज्ज । एवमादिअववादअभावे वि प्राणाभंगणवत्थादियाण णिप्फल ति अवस्सं तेसु दोसो भवति ति ॥६६८८॥

अहवां को तस्स गुणो, अवायवत्थूणि जाणि सेवंतो ।

सुच्चेज्ज अवायाओ, जतिरिच्छा सा ण तं सुकरं ॥६६८९॥

पमादिणो अववादाणेषु पमत्तमाणास्स जं आयावायो ण भवति स तस्य गुणो न भवति, “जतिरि-च्छा सा” - धुणवत्तरसिद्धि व्व दट्ठवा, सुकतं तं ण भवति, पुत्रावरगुणदोसालयणमित्यर्थः । तत्र भावप्राणा-तिपातं न फलवत्, जं अयायच्छित्तं दट्ठव्वं ॥६६८९॥

सीसो पुच्छति - भगवं ! पमायमूलो बंधो भवति, पमतो य प्रसंजतो लब्धति ।

आचार्याह - प्रायं ।

पुणो सीसो पुच्छति - “जइ एवं तो कि दोहं पमादअजयत्तगतो आवण अणावणाणं तुल्लपच्छित्तं ण भवति ?”

आचार्याह -

कामं पमादमूलो, बंधो दोण्ह वि तहा वि अजयाणं ।

बहगरस्स होति दंडो, कायणुवाया ण इतरस्स ॥६६९०॥

“कामं” अणुमयस्ये, पमादमूलबंधो, जति वि ते दो वि “अजयाणं” ति - पमादभावे बद्धंति तहावि जो तस्य “बहगो” ति - पाणातिवायं आवण्णो तस्स पुढवादिपरित्तान्तकायाणुवातेण दंडो भवति, इदियअणुवादेण वा । “इतरस्स” ति - अणावण्णस्स तं कायाणवायपच्छित्तं ण भवति, पमायपक्कयं वा भवति ॥६६९०॥

पुनरप्याह चोदक - “ततियच्चउत्पुद्देसगेनु सीसदुवारासिमुत्ता तुल्लाभिहाणा चरिसुद्देसगे य आवत्तिमाइया एवमादिमुत्ताणं तुल्लनणतो णणु पुणरुत्तदोसो भवति ?” ।

आचार्याह -

जति वि य तुल्लऽभिहाणा, अवराहपदा पकप्पमज्जयणे ।

तहवि पुणरुत्तदोसो, ण पावती अत्थणाणत्ता ॥६६९१॥

“अवराहपदा” ति - अवराहणिकद्वमुत्तपदा अत्थणाणत्तं उद्देसमाधिकारातो वत्तव्वं अत्थाधिकार-वसातो वा. मेसं कठं ॥६६९१॥

सूत्रनिबद्धप्रदर्शनार्थमाह -

पडिसेविताणि पुव्वं, जो ताणि करेति एत्थ सुत्तं तु ।

हत्थादिवायणंतं, दाणं पुण तस्स चरिमम्मि ॥६६९२॥

पुव्वं जाणि आया-सूयकडादिमु पडिसिद्धाणि ताणि जो पडिसिद्धाणि करेति आयरतीत्यर्थः । एत्थ एण्णवीसाए उद्देसगेसु हत्थादिवायणंतमुत्तेसु आवत्ति पच्छित्तनिबंधो कतो, तेसि च आवत्तीणं विसत्तिमुद्देसेण दाणं जणियं ॥६६९२॥

किं च उस्सग्गववादविराहणं करेतस्स दोषप्रदर्शनार्थमाह -

आणाभंगे गाणं, ण हो' । अणवत्थमिच्छदिट्ठी उ ।

विरतीविराहणाए, तिण्णि वि जुत्तस्स तु भवति ॥६६९३॥

नित्यकरुवदिट्ठविधिमकरेतस्स नित्यकराणाभंगो, आणाभंगे य गाणी ण भवति ति अण्णाणी भवति, “अणवत्थमिच्छतो” ति - भूयो पयट्ठे अणवत्था, अणवद्वियत्तं तं इच्छतो अभिलसंतस्स दिट्ठी ति सम्मदिट्ठी ण भवति उस्सुत्तमायरतो य वट्ठति । “विरती विराहणाए”, विरती चरित्तं त विराहेतस्स सचरित्रित्तं भवतीत्यर्थः । जम्हा एव तम्हा सम्मं चरणजुत्तस्स नित्यकराणाए वा सम्मं जुत्तस्स, तिण्णि वि गाणदंमणचरणणि भवति ॥६६९३॥

सदृशार्थस्य विशेषप्रदर्शनार्थं विसदृशार्थस्य च अविशेषप्रदर्शनार्थमिदमाह -

अविसेसे वि विसेसो, विसेसपक्खे वि होति अविसेसो ।

आवज्जणदाणाणं, पडुच्च पुरिसे य गुरुमादी ॥६६९४॥

अविसेसे विसेसो इमो, अहा - दो जणा पुढविकायविराहणा, तेति तुत्तं पच्छित्तं ण भवति ।

कहं ?, उच्यते - एकस्स भावति पडुच्च चउलहुं, वितियस्स दाणं पडुच्च भावामं । अहवा - पुढविकायविराहणं ति अविसेसो, इत्थं विसेसो कज्जति - सचित्ते चउलहुं, एवं दाणे विसेसो कायब्बो ।

विसेसपक्खे कहं अविसेसो ?, उच्यते - दप्पमो एककेण एक्यो पंचिदिमो घातिमो, वितिएण दो तिणि वा, दोहं वि मूलं । अहवा - एककेण तिच्चउभवसाणेण मूलभासेवितं, वितिएण मंदउभवसाणेण चरिमं, दोहं वि अणवडुं, पुरिसेसु वा गुरुपादिठानेषु वितिसययणादि वा अविक्खितं दग्गदि वा पडुच्च बहुधा गणणठानपलंवादिसुत्तेसु विसेसविसेसा दट्टव्वा ॥६६६५॥

सीसो पुच्छति - “ भगव ! तुम्हे सुत्ते भवायं दरिसेह, तत्थ ओ भवायभीतो पावोवरति करोति तस्स किं साहुत्तं णिज्जरा वा अत्थि ?, ओ वा सभाववेरग्गजुत्तो पावोवरति करोति तस्स किं ततो विपुलतरा वा णिज्जरा भवति ? ”

आचार्याह -

जो वि य अवायसंकी, पावातो नियत्तए तद्वि साहु ।

किं पुण पावोवरती, निसग्गवेरग्गजुत्तस्स ॥६६६५॥

किमित्थतिशये, पुनविशेषणे, किं विशेषयति ? उच्यते - अणायसंकिनः समीपान्निसर्गः स्वभावः प्रकृतिमो भावः, य एवं वैराग्ययुक्तः पापादुत्तरति करोति तस्स अतिशयेन महंतरेण विपुलतरा णिज्जरा भवति । सेसं कठं ॥६६६५॥

सीसो पुच्छति - “ सव्वसुत्तेसु भववादो भववादो, भववादमंतरेण वा जयणाऽजयणा उ भणित्ता नाति किं सख्खं लक्खणं वा ? ”

उच्यते -

रागदोसविउत्तो, जोगो असदस्स होति जयणा उ ।

रागदोसाणुगतो, जो जोगो सा अजयणा उ ॥६६६६॥

असदभावस्स भववायवत्तस्स जो अरुक्कपडिसेवणे जोगो तत्थिमं रागदोसविउत्तत्तं सा जयणा जयणालक्खणं च एयं चेव । एयविचरीया भजयणा, अजयणालक्खणं च एयं चेव ॥६६६६॥

पुनरप्याह - किं कारणं सुत्ते सुत्ते भवाया भण्णति ?, उच्यते -

पावं अवायभीतो, पावायतणाइ परिहरति लोओ ।

तेण अवातो बहुहा, पदे पदे देसितो सुत्ते ॥६६६७॥

अहा लोगो भवायभीतो पावायरणे वज्जेति तहा सोमुत्तरे वि इहपरसोगावायभीतो पावं ण काहित्ति, तेण सुत्ते सुत्ते बहुविधा भवाया देसिया ॥६६६७॥

शिष्याह - “ भगव ! तुम्हेहि धेरकप्पे उस्सग्गज्जवाया देसिया दप्पकप्पपडिसेवणातो वि देसिता, किमेवं जिणकप्पे वि भवन्ति ? ” न, इत्थुच्यते - अहं ते एगतेण उस्सग्गडिया तह्मा तेसि भववादो णत्थि, कप्पिवा वि पडिसेवणा णत्थि, किमं पुण दप्पिया ?,

जतो भण्णति -

दुग्गविसमे वि न खलति, जो पंथे सो समे कहण्णु खले ।

कज्जे विञ्जवज्जी, स कहं सेवेज्ज दप्पेण ॥६६६८॥

पूर्वाधे दिट्ठतो कंठो, पच्छधे दिट्ठतिथो ग्रन्थो । "कज्ज" ति - एववावठाणपत्ते वि भववावो "अवज्ज"मिति पावं, तं जो वज्जेति, स दप्पेण कहं पावं सेवेज्जा ? ॥६६६८॥

इदाणि अणुओगघरो अप्पणो गारवणिरिहरणत्थं सोताराण य लज्जाणिरिहरणत्थं अह -

अम्हे वि एतधम्मा, आसी वट्ठति जत्थ सोतारा ।

इतिगारवत्सहुकरणां, कहए ण य सावए लज्जा ॥६६६९॥

अणुओगकही चितेति मणाति वा - अम्हे वि एस एवं चेव गुरुसमीवातो सोयवधम्मा आसि, जत्थ संपदं सोतारा वट्ठति । "इति" उवप्परिसण्णे, एवं "अणुओगघरो अह" मिति अप्पणो जं गारवं तं णिरिहरति । 'ण य सावए' ति, ओ सोयारा तेहि वि मुण्णतेहि चितियव्वं "एस गणघरारद्धो सोतव्वकप्पो पारंपरेण आगते" ति ग.उं ण सज्जा कायववा ॥६६६९॥

एत्थ पुणञ्जकयणे इमेहि पगारेहि अत्थञ्चिकारा गया -

पच्छित्तणुवाएणं कातणुवातेण के ति अहिगारा ।

अहिसरीरणुवाया, भावणुवादे ण य कहिं पि ॥६७००॥

पच्छित्तणुवाते णए जहा सन्ने मासगुरुमुत्ता पढममुद्देसे अणुवत्तिमा, बितियादिसु मासलह, छट्ठादिम् चउगुरु, बारसमादिसु चउलह । अहवा - पच्छित्तणुवातो पणमादिगो जाव चरिमं, जहा दगतीरे असंघसंघातिमेसु, एवमादि कायणुवाएण, जहा - पेडियाण पुढवादिगाएसु भणियं । अहवा - छक्काथ चउसु लहुगा ॥ गाहा ॥

एवमादिसु उवहिअणुवातो जहणमज्झिमुक्कोसो, तेसु जहा संखं - पणगमासचउमासो । अहवा - अहाकडस्स परिकम्मा बहुकम्मं ति । सरीरणुवातो जहा - वज्जरिसभनाराचसंघयणातिगो ।

अहवा - वि दिञ्चमणुवतितिरियसरीरा सच्चित्तेतरा पडिमाजुत्ताणि वा विमियचित्ता ए वा वेइदिय-सरीरादिगा । भावाणुवायो, जहा - सप्रमेश णाणदंसणवरित्तायारा । अहवा - परित्तावमहादुक्खादिगा एवमादि ॥६७००॥

ववचिदीदृशाः -

णेगविहकुसुमपुष्पोवगारसरिसा उ केइ अहिगारा ।

सस्सवतिभूमिभावित-गुणसतिवप्पे पक्कप्पम्मि ॥६७०१॥

अणगजातिएहि अणगवण्णहि एकेहि पुष्पोवयारो कम्पो विचित्तो दीसति, एवं सुतत्थविकप्पिया अणगविहा अत्थाधिकारा दडुअवा । कहं?, उच्यते - पक्कप्पो, सो केरिसो? गुणसइअप्रतुल्लो। वप्परूपकं इमं - सस्यं यस्यां भूमौ विद्यते सा भूमौ सत्यवती सत्यपुक्ता, ववचिच्छाली ववचिदिक्षु ववचिज्जवा ववचिद्वीहयः,

भावितो गुणेहि जो सो भावितयुगः, युगायत इत्यर्थः, ते च गुणा सतिमादी, सती नाम बिशिष्टा सत्यवृद्धि-
निरुपहतत्वं इतिवर्जितत्वं बहुफलं च, अभिरुणिरुपेतो वधः ।

इदार्णि उवणमो - वधो इव पदयो, सालिमादीण वा उहेसत्याधिकारा सत्यवृद्धिरिव घनेकार्थः,
निरुहृतमिव दोषवज्रिता, इतिवर्जितत्वांगव पासत्थचरणादिभूषवज्रिता, बहुफलत्वमिव ऐहि कवारविक-
लमिमभवात्, ईदो प्रकल्पे अनेकार्थाधिकारः इत्यर्थः ॥६७०१॥

एयं पुण पकप्पज्जमयणं कस्स ण दायव्वं, केरिसमुणजुत्तस्स वा दायव्वं ?

अतो भणति -

भिण्णरहस्से व नरे, निस्साकारे व मुक्कजोगी वा ।

छिन्विहगतिगुविलम्मी, सो संसारे भमइ दीहे ॥६७०२॥

भिण्णरहस्सो नाम जो अववादपदे अण्णेसि सकप्पियाणं साहति । निस्साकरमो नाम जो किं चि
अववादपदं लभित्ता तं निस्सं करेता भणति - एव चेव करणिज्ज, जहा य एयं तथा अन्नपि करणिज्जं, सत्थ
टिटुतो - जहा कोइ सूईयुहमेत्तमछिं लभित्ता मुसलं पविलवइ । मुक्कजोगी नाम जेण मुक्को जोगो णाणदंसण-
चरित्ततवणियमसंजमादिसु सो एस मुक्कजोगी । एरिसस्स जो देति सो संसारे चउप्पगारे वा पंचप्पगारे वा
छप्पगारे वा एवमादिगतिगुविले "गुविलो" ति गह्णो घुणावपतीति घोरो, एरिसं संसारे भमिहिति दीहे
कालं, एरिसेमु ण दायव्वा ॥६७०२॥

एएसि पडिवक्खा जे तेसु दायव्वा । ते य इमे -

अइरहस्सधारए पारए य असदकरणे तुलोवमे समिते ।

कप्पाणुपालणा दीवणा य आराहण छिण्णसंसारे ॥६७०३॥

अतीवरहस्सं अइरहस्सं, तं जो घरेति सो अइरहस्सधारयो । जो तं अइरहस्सं एकं दो तिणि वा
दिण्णा घरेति ण तेण अहिकारो, जो तं रहस्सधारणं जोविक्कालं पारं नेति तेण अहिकारो । असदकरणो
नाम सव्वच्छादने जो कप्पाणं मायाए ण ठाति, असदो होऊणं करणं करेति । तुलसमो नाम समवृत्तिता
तुला जहा ण मग्गतो पुरवो वा णमति, एवं जो रागदोसविमुक्को सो तुलासमो भण्णति । समितो नाम
पंचहि समितीह समितो । एयगुणसंपरत्ते य देयो, एयगुणसंपरत्ते पदेतेण पक्क्याणुपालणा कया भवति । अहुवा-
पकप्पे जं जहा भणितं तस्स अणुपालणा जो करेति तस्स देयो, पक्क्याणुपालणाए य दीवणा कया अण्णेसि
दीवियं दरिसियं गमयं, जहा एतं एवं कायव्वमिति । अहुवा - दीवणा जो अरिहाणं अणालस्से वक्खानं
करेति तस्सेयं देयं ति । दीवणाए य मोक्खमग्गस्स आराहणा कता भवति, आराहणाए य चउगतिगुविलो
दीहमणवयमो छिण्णो संसारो भवति, छिण्णमि य संसारे जं तं सिक्खमयलमहयमवखयमवावाहमपुणरावत्तयं
ठाणं तं पावति, तं च पत्तो कम्मविमुक्को सिद्धो भवति ॥६७०३॥ अणुगमो ति दारं सम्मत्तं ।

इदार्णि "नय" ति दारं - "णीइ प्रापणे", अनेकविधमर्थं प्रापतीति नया, अथवा - गिच्छिथ-
मत्वं णयंतीति, तथा जो सो अत्थो उवक्कमादीहि दारेहि वणिमो सो 'सव्वो' गएहि समोपारेयव्वो, ते य
सत्तणयसता दो चेव गया जाता, तं जहा - णाणणयो चरणणयो य । तत्थ णाणणयो इमो - "णायम्मि"
गाहा

इदार्णि चरणणमो - "सव्वेसि पि" गाहा

१ सव्वेहि इत्यपि पाठः । २ इमो, इत्यपि पाठः ।

जो गाहासुत्तयो, सो चेव विधिपागडो फुडपदत्थो ।
 रयितो परिभासाए, साहूण य अणुग्गहट्ठाए ॥१॥
 ति चउ पण अट्ठमवग्गे, ति पणम ति तिग अक्खरा व ते तेसि ।
 पढमततिएहि तिदुसरज्जुएहि णामं कयं जस्स ॥२॥
 गुरुदिण्णं च गणिस्सं, महत्तरत्तं च तस्स तुट्ठेहि ।
 तेण कएसा चुण्णी, विसेसनामा निसीहस्स ॥३॥

नमो सुयदेवयाए भगवतीए ।

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए वीसइमो उद्देशओ समसो ॥

॥ इति सनिर्युक्तिभाष्यचूर्णुपेतं निशीथसूत्रं समाप्तम् ॥

निशीथचूएर्याः सुबोधा व्याख्या

विंशतितमोद्देशकस्य विषमपदविवरणरूपा

प्रणम्यवीरं सुरवन्दितक्रमं, विशुद्धशुद्ध्याखिलनष्टकल्मषम् ।

गुरुस्तथा निर्मलशुद्धिकारिणो, विशुद्धतत्त्वान् जगते हितैषिणः ॥१॥

विंशोद्देशे श्रीनिशीथस्य चूणौ, दुर्गं वाक्यं यत् पदं वा समस्ति ।

स्वस्मृत्यर्थं तस्य वक्ष्ये सुबोधां, व्याख्यां कांचित् सद्गुरुभ्योऽवबुद्धाम् ॥२॥

आदौ मासिकपद्धमिह तत्प्रस्तावात् समागता मासाः, तानवधिकृत्यादौ व्याख्या प्रारभ्यतेऽत्र, यथा -

“नक्षत्रे” गाहा (२० उ० गा० ६२८३) “एगत्तीस” गाहा (२० उ० गा० ६२८५-६२८६) नक्षत्रमासानां पंचानामपि प्रमाणाभिधायिके एते गाथे, स्थापना -

न	चन्द्र	आ	ऋतु	अ	मा
२७	२६	३०	३०	३१	१४४
२१	३२	३		१२१	१३
६७	६२	६०	६१	१२४	

तत्र चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डलभोगकालो नक्षत्रमासः । अत्र च सप्तविंशतेः सप्तषष्ठ्या गुणने जातं १८०६ । एकविंशतिभागाश्च मध्ये क्षिप्यन्ते जातं १८३० सप्तषष्ठिभागा । एतावन्तो भागाः नक्षत्रमण्डलभोगकाले भवन्ति, अस्थ च राशेः सप्तषष्ठ्या भागे हृते लब्धम् २७, २१, ६७ । “अहव त्ति तिभि अहोरत्त” ति - द्विषटिकाप्रमाणो मुहूर्तः, तीसाए मुहूर्तेहि अहोरत्तं भवइ, पन्नरसहि छ गुणिया ६० होइ, तत्रो तीसमुहूर्तेहि भागे हृते लभ्यन्ते दिनानि ३, उत्तराणं छण्हं नक्खत्ताण पणयालीसाए छहि गुणणे २७०, ३०, ६० । तीसाए भागे हृते दिन ६ । पण्णरस तीसाए गुणिया तीसाए भागे हृते लब्धा १५, ४५०, ३०, १५ । तत्रो मिलिया सत्तावीसं दिणा २७, २१, ६७, चन्द्रमास उच्यते । अभिइभोगो सावणबहुलपडिवयाए एवं पमाणो चंदस्स वत्तइ ६, २४, ६२, ६६, ६७ । ते सह “छेएण” ति - इगवीसा गुणितज्जइ वासट्ठीए, जायं १३०२, छेदश्च सप्तषष्ठिरूपः स च द्वाषष्ट्या गुणितः ४१५४, अयं भागहारकः, भाज्यश्चायं १३०२, अयं च लघुभागहारकरा- (?) पेशयाऽस्तस्त्रिंशता गुण्यन्ते जातं ३६०६०, ४१५४, ६ । भागे हृते लब्धं मुहूर्ता ६, खेषं चोद्धरितं १६७४ । एतच्च द्वाषष्ट्या गुणनीयं, चतुर्विंशत्यंशानां द्वाषष्टिसप्तत्वात्परं न गुण्यते अंकवृद्धिभयात् ।

किन्त्वपवर्तनं - राशेर्हस्वीकरणं क्रियते, तथाहि - भाज्यस्य द्वापष्टया किल गुणनमिति द्विषष्टिस्ता-
वदेकाऽधस्तनराशेरपि द्वापष्टया भागो हार्य इति द्विषष्टिस्तुल्यैव पश्चाद्द्विषष्टेरिति गुणकारको
द्वापष्टिरेकः छिद्यते, द्वापष्टया एककश्च लभ्यते, तथा च तुल्येन सम्भवेन सति हरं विभाज्यं च राशिना
छित्त्वा भागो हार्यः, क्रमशः इति न्यायोऽन्यत्रोक्तः, ततः ४१५४, अस्य राशेः द्वापष्टया भागे हूते
सप्तपष्टिर्लभ्यते, तथा अस्य राशेः १६७४, १/२ भागे हूते लब्धं २४, ६६, ६७। षड्वाप्त्य
१६७४, राशेर्द्वापष्टया गुणे जातं १०३७८८, ४१५४। अस्य भागोऽनेन ४१५४ हार्यः । लब्धं २४
शेषं ६६ च, ततो द्वापष्टया अपवर्तनं द्वयोरपि क्रियते अघस्तने लभ्यते ६७ उपरितने च द्वापष्टया
हूते ६६ लभ्यते, एवं च अभीचिभोगः प्राग् दर्शितरूपः सर्वोप्यागतः । "सवणाइया नक्खत्तभोगो"
त्ति मिलितानां = १० अभीचिमुहूर्ते ६ क्षेपे = १६ "पुणो अभीइभोगो" त्ति जस्रो एवं कण ६०,
२७०, ४५०। नक्खत्तमास एवं भवति ।

चंदमासो य नक्खत्तमासास्रो अधिकतरो अस्रो पुण्णे नक्खत्ततिगभोगकालः क्षिप्यते
समन्तुति - समस्तः अभीमुहूर्तं ६, २४०, ४२६। मिलियं ६५, अस्य राशेः = १६ मिलने जातं ८८४,
वासाट्टिभागा य, अभीचि ४८, घणिट्टा ४२ सक्का मीलिता ६०। अभीचिचुत्ती ६६, दुगुणिया
१३२, घनिट्टाया दो चुत्तीप्रक्षेपे १३४, मिलितं च जातं, शेषं सुगमं। यावच्चन्द्रमासः समाप्तः ।

उक्तमास इति - बुद्ध्या छिन्नस्य द्विषष्टिभागतया एकाहोरात्रस्य एवपष्टिभागेहि चन्द्र-
गत्या तिथिसमाप्तिर्भवति - एकपष्टिभागरूपा तिथिर्भवतीत्यर्थः। अत्र त्रैराशिकं कर्त्तव्यं यथा -
१८६०। १८३०। १। आद्यन्तयोस्त्रिराशावभिन्नजातीति प्रमाणमिच्छा च फलमन्यजातिमध्ये
तदत्यगुणमादिमेन भजेत्, १८३०, १८६०, १/२ त्रिशता भागे हूतेऽधस्तनराशौ लब्धं ६९,
उपरितने च लब्धं ६१, ततो न्यस्यते १३ लब्धं। त्रिशता गुणितेऽस्मिन् ६१, जातं १६१
एकपष्ट्या भागे ३ हूते लब्धं ३, भागो न पूर्यते, लब्धं शून्यं, ततः ३०। ऋतुमासस्य च
साधनमासकर्ममासाविति पर्यायौ, अत आह - "कम्ममासो सावणमासो य भन्नइति" "एस चेव" त्ति
१६३०, लब्धं, तेन किल चंद्रगत्या तिथिर्भवति, ततश्चन्द्रमा सोऽपि एतस्मादेव तिथिराशेरा-
नीयते इत्यावेदयते। या इव त्ति - कोऽर्थः? अमुक्तेषु एतेषु कर्कस्थेन आदित्येन तद्दिनात् प्रभृत्येव
दक्षिणायनप्रवृत्तिः, किन्तु पुष्यनक्षत्रस्याष्टभिरहोरात्रैश्चतुर्विंशतिमुहूर्तैश्च भुवर्तैरुत्तरायणमेवाति-
श्रामति, तदूर्ध्वं चतुर्भिरहोरात्रैरष्टादशभिश्च मुहूर्तैः सावशेषैर्दक्षिणायनप्रवृत्तिरिति, सयभिसयेत्यादि
षडहोरात्राः षड्भिर्गुणिताः ३६, मुहूर्ताश्च २१, षड्भिर्गुणिता १२६, अहोरात्रविंशतिश्च -
षड्भिर्गुणिता १२०, मुहूर्तस्थिभागाश्च त्रयः षड्गुणा १८, त्रयोदशाहोरात्राः पंचभिर्गुणिता १६५,
भागा १२, गुणिता पंचदशभिः १८०, अभीचिभागा ६, सर्वभागमीलने ३३०, अत्र च विंशता भागे
हूते लब्धा ११ अहोरात्राः, पूर्वोक्तानां षड्त्रिशतादीनां अहोरात्रराशीनां मीलने ३५१, अभीचि-
अहोरात्रचतुष्कक्षेपे मुहूर्तेषु लब्धा एकादशाहोरात्रक्षेपे च ३३६। अत्र च पुष्यभागः प्राग् दर्शितो
न क्षिप्यते, पंचदशगुणकारकमध्ये पुष्यस्य सद्भावात्, ये दिवस १/३६ मीलितो दिन १,
३, एतावत्प्रमाणः क्षिप्यते तदा चतुर्विंशतिभिर्गुण्यते त्रयोदशाहोरात्रमाने राशिस्तदभागाश्च,
अत एव पुष्यभक्तौ पृथग् दर्शितायामपि अवसेसा नक्खत्ता पञ्चरसविस्तरसहाया "जति" त्ति पुष्य
मध्ये कृत्वा पंचदशेत्युक्तं, तत्र चतुर्दशगुणने त्रयोदशाहोरात्रराशौ १८२, भागेषु च १६८, अयं च
मील्यते उपरितनराशिरस्य राशेः १६०, जात ३४२, भागराशेश्च १५०, भागराशिरयं, १६८,
मील्यते जातं ३१८, पुष्यभागा १२, मीलने ३३०, त्रिशता भागे हूते ११, पुष्यादि १३, सर्वं २४,

मील्यते राशे ३४२, रित्यस्य जातं ३६६, कारणं तु कुच्छामि त्ति - अत्र करणराशीनां मीलनमेवा-
भिप्रेतं, अस्य राशेः ३६६, भागे १२, हूते लब्धं ३०, ततोऽपवर्तनं द्वादशानां षड्भागे द्विकः, षण्णां
षड्भागे एकक ३, इति दिनार्धे लब्धं, स्था० ३० ३ यद्वा अयं ३६६, पंचगुणा १८३०, ततः
षड्भागे हूते लब्धं ३०, ततः षण्णां तृतीयभागे द्वौ, त्रयाणां च तृतीयभागे एकैक एव,
इत्यपवर्तः कार्यः। एत्थ वि त्ति अत्र एतस्मिन् राशौ १८३०, अपोभिन्नक्रमत्वात् सर्वमासा अपीत्यर्थः,
अभिवद्भुतं त्ति इत्यादि ऋतुसंवत्सरो हि ३६०, एतावद्दिनप्रमाणस्तदापेक्षया चन्द्रादित्यसंवत्सरयो-
न्यूनाधिक्यं व्यवस्थापयन्नाह -

छत्रेव य (२० उ० पृष्ठ २२७)

आदित्यसंवत्सरः ३६६, एतावद्दिनप्रमाणः, चंद्रसंवत्सरः ३५५, १३ एतावत्प्रमाणः,
तत्रादित्यसंवत्सरे षड्दिनानि ऋतुसंवत्सरापेक्षयाऽधिकानि चन्द्रसंवत्सरे ऋतुवर्षपेक्षयैव न्यूनानि,
ओमरत त्ति अवमराशेः षडेव न्यूनानि दिनानीत्यर्थः। बारसवासेण ए त्ति द्वादश दिनानि, एतानि
वर्षेणाधिकानि, षडवमरात्राश्चन्द्रसंवत्सरसत्का षड् वाऽऽदित्यवत्सरसत्का इति द्वादश एकस्मिन्
वर्षे दिवसा अधिका भवति, एवं द्वितीयवर्षेऽपि द्वादश षडभिर्मासैस्तृतीयसंवत्सरसत्कैः षड्दिवसा
लभ्यन्ते, तत्स्त्रिंशद्दिनानि भवन्ति अर्धतृतीयवर्षेरतिक्रान्तैः, अत एवोक्तं अद्वाइज्जेहि पूरमासो ति -

सट्टीए (२० उ० गा० ६२८७)

युगं हि पंचसंवत्सरैर्निष्पद्यते, पंचसंवत्सरेषु च मासाः षष्टिसंख्या, पक्षद्वयनिष्पन्नत्वाच्च
मासस्य पक्षाणां विंशत्यधिकं शतं युगे भवति, युगस्य च मध्ये अन्ते वाधिकमासो भवति। अद्धं च
मध्यमे व भवति इति मध्ये अधिमासकः। षष्टिपक्षाणामतिक्रान्तानां भवति - त्रिंशन्मासैरतिक्रान्तैरित्य-
र्थः। वायोसे पक्षसप्त ए त्ति युगान्ते हि विंशं शतं पक्षाणां भवति। परमार्थे युगस्य पक्षद्वयं यदतिक्रान्तं
तत्प्रक्षेपे द्वाविंशं शतं मुवत् इति द्वितीयाधिकमासक्षेपे युगान्ते - पक्षाणां १२५, भवति। युगान्ते
चाधिकमासो भवन् आपाद्धान्ते भवत्याषाढद्वयं भवतीत्यर्थः। अह्वं त्ति प्रमाणवर्षस्य दिवसराशिः
१८३०, तस्मान्नक्षत्रादिमासदिनसंख्या आनीयते, सेसा बारस त्ति अंशा छेदाश्च द्वापष्टिः, ते छेदा
अंशाश्चार्धेनापवर्त्यन्ते द्वाषष्टेरर्थं ३१, द्वादशानामर्थे षट्, १३। छेएण भाइए लद्ध त्ति - छेद १२५,
इत्येवमेतन् भाजित इत्ययं राशिः १४५२, लब्धा ११, उद्धरिता ८८, एकादशसु एतस्मिन् ३२७
राशिमध्ये क्षिप्तेषु ३०३, छेदा १२४, अंशा ८८, उभयोश्चतुर्भिरपवर्तनेऽष्टाशोतेः, २२, चतुरधि
कं विंशतिशतस्य च ३१, दिवसा। दिवसेसु त्ति - चन्द्रवर्षत्रयराशि १०६२, अभिवर्धितवर्षद्वयराशिश्च
६६७, ३३ दिवसानां मीलने १८२६। भागा भागेषु त्ति ३६, एवंपा मलिता ३१, एतेषामेक-
त्रिंशता भागे हूते लब्ध एकस्तस्मिन् पूर्वराशिमध्ये क्षिप्ते १८३०। ज ए तेरसेहि चंदमासेहि इत्यादि
स्थापना १३। १२। ३१, १२१, १२४, ६२। द्वादशाभिवर्धितमासा अन्त्ये द्वापष्ट्या गुण्यन्ते
जातं १४४, त्रयोदशभिश्चादिमे भागे हूते लब्धं मासां ६२, ५७-३३ एए पुणो सवन्नियं त्ति त्रयोदश-
भिरेव गुण्यन्ते सप्तपञ्चाशन्मासा, जातं १४४, त्रयोदशभागत्रयप्रक्षेपे १४४, तेरसगुणियाणं ति
लब्धं ३१।

३३३३ शेषं ३३३३ द्वयोरपि षड्भिरपवर्तनेऽधस्तनराशौ १२४, उपरितने च १२१,
दिन। एवंप्रमाणो अभिवर्द्धितवर्षस्य भागरूपोऽधिकमासकः, यद्वाऽनयोराशयोः ३३३३ अर्धयोरपि
षड्भिरपवर्तनप्रथमतो विहिते जातं ३३३३ अस्याधस्तनराशिभागे हूते लब्धं त्रिंशद्दिनरूपोऽधि-
कमासकः समागच्छति, एकत्रिंशदुपरि छेदांशयोर्न्यस्यते।

ससिणो य गाहा २० -

शशिनश्चन्द्रमासस्यादित्यमासस्य च यः कश्चिद्विशेषः उद्धरितं किञ्चित्तस्य त्रिशता गुणने द्विषष्टिभक्ते च यल्लब्धं तच्चन्द्रमासोऽभिधायितो भवति । एतदेव विवृणोति - एसि विसेसे एक ति - विश्लेषेऽपसारणे कृते सति तच्चन्द्रमाससज्जितराशेरादित्यराशिमध्ये आदित्यराशेश्च यद्दिनमेकं तस्य मध्यात् द्वाषष्टिभागा ३२, अपसार्थन्ते त्रिशच्च द्वाषष्टिभागा अवतिष्ठन्ते त्रिशच्च स्वगता षष्टिभागाः ३०, ३१, एव वदित्य ति आद्यस्य दशकेनापवर्तने शून्यद्वयं गतं, द्वितीयस्य चार्धेनापवर्तने जातं ३३ ।

पतोपरं छेयगुण ति कोऽर्थः ? एकत्रिशच्छेदाः षष्टित्रिशद्भागाः स्थाप्या, अपरे चेतस्याधस्तत इत्यं न्यासः ३ ३, १५ १५ । एकत्रिशता च गुणने चाद्यराशौ जातं ३३ द्वितीयस्य च षडभिगुणने ६० एकत्रिशतश्च षड्गुणने १८६, अयं च सट्शच्छेदो नष्ट उत्सार्थो गतार्थत्वात् अंशा अंशा अंसेषु पक्खिता जातं १८३, ततो अंशा १८३ अंशानां त्रिभिरपवर्तने लब्धं ६१, छेदानां त्रिभिरपवर्तने लब्धं ६२, न्यास ३३ । एस तीसगुण ति - एकषष्टिद्वाषष्टिभागरूपः एकस्तिथि-स्त्रिंशद्गुणः १८३०, द्वाषष्टिभक्तः २६६३ चन्द्रमासप्रमाणोऽधिकमासको भवति । अहवे ति - १ । १ । ३० । त्रिशता मध्यभूत एकको गुणितस्त्रिंशद् भवति । एककेन वाद्येन त्रिशतो भागेहृते लब्धे त्रिशदेव लभ्यते । एसा आइहुचंद ति एसा एकषष्टिभागरूपा सोमतिथिः मासस्यान्ते एका तिथिर्वर्धते, एयं चैव अभिवडिद्धं पडुच्च ति - एतां पूर्वेषां - त्रिशत्तिथिरूपां यद्वा २६६३ एतद्वा अभिवधितवर्ष-मासः ३१ ३३, एतावत्प्रमाणः । सेसस्म ति - उद्धरितस्त ३४, एवं रूपस्यार्धे भवंति चतुर्विंशत्यधि-कशतस्य चार्धे द्वाषष्टि, स्थापना ३१, २६, १७, ६२ । नक्षत्रादिमासपंचकव्याख्यानमिदं समाप्तम् ।

तिपरिरयाज्ययणाजुतस्स जा पडिसेवणा सा कम्मोदयप्रत्यया न भवति, क्रोधादिभावस्थो यतोऽसावशुद्धं न गृहीतवान्, किं च म्हे भयवं ! न य वज्जीपावसस्ततुल्ल ति न च वज्जंका विकृतेर्वयं वृषस्य तुल्यास्सन्त इति भावः । बालामोति वर्तयामः । भिन्नं सत् कुट्टसेसं भिन्नकुट्टसेसं छक्कायगेसु ति - कायकेषु, अणिच्छिय ति अनिश्चितालोचनया पण्णरसवेत्तुं मासो दिज्जइ ति द्वयोरपि मासयोः पंचदश पंचदश गृह्यते, ततो मास इति उग्घाइमाणुग्घाइममिश्रभंगकेषु इत्यं विन्यस्स भंगकाश्चारणीया १, २, ३, ४, ५, उग्घा १, २, ३, ४, ५ । नु ६ ।

पंच दश दश पंच एकद्वयादिसंयोगानां संख्यानां -

उभयसुहृताशिदुगं उवरिल्लं आइमेण गुणिऊण ।

हेट्टिल्लभागलद्धे उवरि ठिए हुंति सजोगा ॥

इत्यनेन करणेनागच्छतस्तत एककादिसंयोगत्वेनोद्घातिमानां यानि संयोगस्थानानि पंचाङ्ग ति - पंचकादौ ताव्यनुद्घातिमानां एककादिसंयोगत्वेन ये पंचकादयो गुणकारकास्तैर्गुणनीयानि, ततः पंचविंशत्यादिकं संख्यानं जायते । बहुसमुत्तेषु वि मीसगमुत्तसजोग ति - उग्घाइयग्रणुग्घाइय-मीलकेन मिश्रत्वं ज्ञेयं ।

ननु बहुसमुत्तावलीसु इत्यादि एकमपि मासिकयोग्यमतिचारजातं यदा बह्वीवारां आसेवते तदा बाहुल्यसेवनतो बहुसमूत्रविषयता तस्यां च बहुवारासेवनलब्धो द्विमासाद्यापत्तिसम्भवोऽप्यस्तीति भावः ।

सर्वे विहुंति लहुगा इत्यादि एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धा एकापेक्षया द्वित्र्यादयो मासास्ते च लघवो मासाः सर्वेऽपि प्राप्यन्ते, अतो द्वितीयवृत्तीयपंचममासा अनुक्ता अपि सन्तो गुरवोऽपि

दृष्टव्याः । अयमर्थः—सूत्रे किल मासलघु मासगुरु तथा इत्येवमेवोक्तं, द्व्यादिमासानां च न चिन्ता कृता, तथाऽपि लघवो मासाः षडपि सूचिताः सूत्रे, अतो गुरवो पि मासाः द्व्यादयो दृष्टव्याः, एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् ।

जे भिक्खू मासिए मासियमित्थादि एवं सामान्येन चतुर्भंगीयं विशेषतश्च चिन्त्यमानाः पंचदश भवन्तीत्याह—एवं मासस्तेत्यादि चारणिका, यथा मासिए मासियं १ मासिए दोमासियं २ दोमामिए मासियं, दोमासिए दोमासियमित्थेका ११, १२, २१, २२ ।

एवं शेषा अपि ग्रंथतो दृश्यन्ते, यथा—११ ११ ११ ११

१३ १४ १५ १६

३१ ४१ ५१ ६१

३३ ४४ ५५ ६६

इत्येवं मासस्य द्विकादिमासैः सह चतुर्भंगिकापंचकं लब्धं । एवं द्वित्र्यादिमासानामपि स्व-स्थानपरस्थानैः सह चारणे चतुर्भंगिका भवन्ति, तत्र द्विकचतुर्भंगिकायां द्विकः स्वस्थानम् । त्रिकादिचतुर्भंगिकामु स्वस्वांकरूपं स्वस्थानम्, तद्विसदृशं तु परस्थानम् । ग्रंथतः स्थापना चेयं—२२ २२ २२ २२

२३ २४ २५ २६

३२ ४२ ५२ ६२

३३ ४४ ५५ ६६

दुमासिए दुमासियं । दुमासिए तिमसासियमित्थादि चारणिका कार्या, एवं द्विकचतुर्भंगिकाश्चतस्रः त्रिकभंगिकास्त्रिसः—३३ ३३ ३३

३४ ३५ ३६

४३ ५३ ६३

४४ ५५ ६६

चतुर्भंगिकाद्वितयं,

४४ ४४

४५ ४६

५४ ६४

५५ ६६

पंचकचतुर्भंगिका ५५, ५६, ६५, ६६ । मिलिता सर्वाः १५ ।

जहमन्ने २० उ० गा० (६४२३)—

“एवं” ति—अमुना प्रकारेण बुद्धिहाणिनिष्पन्नं, “च” ति—वाऽर्थः जे सुत्तनिबद्धा मासिय ति—प्रतिपदं सूत्रेण यानि प्रायश्चित्तानि निरूपितानि जहा—सेज्जायरपिडे मासो इत्यादि, तानि सूत्रनिबद्धानि मामिकानि, किमुक्तं भवति ? एकस्मिन् अपि बहुदोषदुष्टत्वेन यका मासिकादिबहुत्वापत्तिः, सा न सूत्रनिबद्धे ति न तदाश्रितं बहुत्वं त्रेधा, किन्तु एकैकदोषदुष्टासेवनेन यद् बहुत्वं तत् त्रिविधमिति । तत्थ—जहन्नमित्यादि, अयमर्थः—पदमुद्दे सएअणुग्घाइयमासपच्छित्ता २५२, । बिइयतइयचउत्थपंचमुद्दे सएसु मासलहुयपच्छित्ता ३३२ । एसि उग्घाइयाणुग्घाइयमासाणं इक्कमो सखित्ताणं ५=४ । एवं सति मासिकपायच्छित्ततिमसेवणे जहन्नमो बहुत्वं तिसि मासा तु

प्रतिबहुत्वं यतः शेषं सुगमम् । अह्वा - ठवणासेवणाहीत्यादि इदं व्यापकं लक्षणं । संचयमासं ति - प्रायश्चित्तापत्तितो यावन्तो मासाः शिष्येणासेवितास्ते संचयमासा इति तात्पर्यम् ।

च उमंगविगणेषु ति - मासिए मासियं । मासिए अणगेमासियं ।

अणगेमासिए मासियं । अणगेमासिए अणगेमासियं । उवड्डीइ ति अपवृद्ध्या हासेन ।

ठवणा वीसिगपक्खिव २० उ० गा० (६४३२) -

वीसाए अट्टमासं २० उ० गा० (६४३३) -

आभ्यां गाथाभ्यां स्थापनारोपणाभ्यां स्थानरचनासमिहिता, साचियं पढमा ठवणारोवण-पंतीए ठवणा - २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५ । इत्येवं पंचकवृद्ध्या स्थानानि तावन्ने याति यावदन्त्यं त्रिशत्संख्यं स्थानं, पंचषष्ठ्यधिकं शतमिति १५५, आरोपणास्त्वत्र पंचदशाद्याः १५, २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५, ५०, ५५ । इत्येवमत्रापि पंचकपंचकवृद्ध्या तावन्ने यं यावत् त्रिशत्संख्यं स्थानं षष्ठ्यधिकं शतमिति १६० ।

द्वितीयस्थापनारोपणपंक्तौ ठवणा पंचदशाद्याः १५, २०, २५, ३०, ३५ । इत्येवं पंचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेयं यावत् त्रिशत्संख्यं स्थानं पंचसप्तत्यधिकं शतमिति १७५ । आरोपणास्त्वत्र पंचाद्याः ५, १०, १५, २०, २५, ३० । इत्येवं पंचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेयं यावत् त्रयस्त्रिंशत्संख्यं स्थानं पंचषष्ठ्यधिकं शतमिति १६५ ।

तृतीयस्थापनारोपणपंक्तौ ठवणा पंचकाद्याः ५, १०, १५, २०, २५, ३०, ३५ । इत्येवं पंचकवृद्ध्या तावन्नेयं यावत् पंचत्रिंशत्संख्यं स्थानं पंचसप्तत्यधिकं शतमिति १७५, अत्रारोपणा अपि पंचाद्याः ५, १०, १५ इत्यादि पंचसप्तत्यधिकशतानां ताः स्थापनास्थानानामधोदृश्याः ।

चतुर्थस्थापनारोपणपंक्तौ ठवणा एकाद्याः १, २, ३, ४, ५, ६ । इत्येवमेकोत्तरवृद्ध्या तावन्नेयं यावदेकीनाशीत्यधिकशतसंख्यं स्थानमेतदेव १७६, अत्रारोपणा अप्येकाद्याः १, २, ३, ४, ५ । एकोत्तरवृद्ध्या तावन्नेयं यावदेकीनाशीत्यधिकं शतमिति १७६ । दोहि वि पक्खे चउ पंच ति भाष्यपदं द्वयोरपि स्थापनारोपणयोः पंचानां प्रक्षेपतः उत्कृष्टं ठवणारोवणाठाणं पावेयव्व । यदुपरि यस्य प्रभवति तदुत्कृष्टं, पक्खिइमठवणारोवणाउ ति पक्खिमाश्चतस्रोऽपि स्थापनारोपणा उत्कृष्टा-अन्त्या इति यावत्, एवं तीसियासु ति - ठवणासु इति द्रष्टव्यं वीसिया से जहन्न ति - वीसिया ठवणा से ति - पक्खिवारोपणयोः जघन्या । एवं बीए आरोवणाः ठाणे ति - विशतिरूपे अतिल्लं तीसइमं ठाणं "फिट्टइ" ति - ठवणायाः सत्कमन्यं त्रिशत्तमं स्थानं पंचषष्ठ्यधिकशतरूपं न तदयोग्यं भवति, अशीत्यधिकशतस्याधिक्यत्वात् ठवणाठाणं उवड्डीए ति - अपवृद्ध्या पाश्चात्यगत्या आरोपणस्थानवृद्धौ ठवणास्थानस्य हासः कार्यः । आरोवणावृद्धौ ति ठवणास्थानवृद्धौ आरोपणास्थानस्यापवृद्धिः हासः । ठवणारोवणसंवेहस्स ति - एगम्मि एगम्मि ठवणारोवणाठाणं कइ कइ आरोवणाठाणाणि भवन्ति संवेहो, गणियकरणं व ति - सकलितगणितानयनोपायः जम्हा पढमा ठवण ति - १६५, एतदूपापढमारोवणाठाणं १६०, एतदूपां इक्कं लब्धइ ति । कोर्थः ?

पंचकपंचकनिष्पन्न एकैकस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादनयोः तदूर्ध्वं पंचकपंचकनिष्पन्नस्य स्थानस्याभावाच्चरिमयोरप्यनयोः प्राथम्यं विवक्ष्यते, जम्हा एगुत्तरवृद्धौ ति - पंचकपंचकनिष्पन्न एकैकस्थानवृद्ध्या द्वितीयादीनि च तानि आरोपणास्थानानि पंचदशकापेक्षया विशत्यादीनीति भावः । सव्वे ति - उत्तरतः पढमठवणा १६५ उत्तरं पि एक्को चेव ति - पंचदश-

रूपस्तदूर्ध्वं उत्तरस्यापरस्याभावात् पंचदशरूपमेव, यत आद्यं स्थानं पदमठवणायां स्थान-
वृद्धिस्तथा—

गच्छुत्तरसंवग्ने उत्तरहीणम्भि (२० उ० गा० ६४४०) —

व्याख्या — गच्छो पदमठवणाठाणे तीसं, बिईम् गच्छो तिस्तीसं, तइए ३५, चउत्थे १७६,
गच्छस्य उत्तरेण संवर्गः — गुणनं कार्यं । अत्र चोत्तर एककरूपस्तेन हीनः कार्या राशिः, ततः आदिः
प्रक्षेप्यः, स चात्रैककरूप एव, एतच्च यदागतं तदन्त्यधनं चतसृष्वपि पंक्तिषु प्रथमे प्रथमे ठवणा-
ठाणे एतावत्संख्यान्यारोपणस्थानानि भवन्ति, तदध्यादियुतं प्रस्तुते एककयुक्तं कार्यं तस्याद्यं कार्यं,
ततश्च यः कश्चिद् गच्छो न्यस्तस्तस्यार्धेनार्धोक्त्येन राशिना गुणन्तु त्ति गुणनं कार्यं । तस्मिंश्च कृते
ठवणारोवणठाणाणं संवेहेण सर्वसंख्यानं भवति । तत्थ पदमे ठवणारोवणठाणे संवेहतो सर्वाग्रं
४६५. द्वितीये ५६१, तृतीये ६३०, चतुर्थे १६११० ।

ठवणारोवणविज्जय ॥ गाहा ॥ २० —

स्थापनारोपणसंख्यानेन विद्युता रहिता विधेयाः, षण्मासदिनराशिः तस्य पंचभिर्भागो
हार्यः, भागे हूते ये लब्धा मासास्ते रूपयुताः कार्याः । स चैतावान् ठवणारोवणाणं गच्छो होइ
पंचभिर्भागो हार्य इत्येवंरूपश्च प्रकार आद्यासु तिसृषु ठवणारोवणासु विन्नेग्रो । चरिमे ठवणे एक्केण
भागो हार्यः । इत्ययमादेशः उपदेश इत्यर्थः ।

अयं भावार्थः — प्रथमतीर्थकरकाले उत्कृष्टं प्रायश्चित्तदानं द्वादशमासाः, मध्यमतीर्थ-
कृत्काले चाष्टौ मासाः, चरमस्य षण्मासा इति । अतस्तीर्थमाश्रित्य षण्मासा इत्युक्तम्, तत् तिस-
णामपि पंचकपंचकनिष्पन्नस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादुक्तं रूपयुतत्वं यदुक्तं तत् सर्वास्वपि स्थापना-
रोपणास्वाद्यपदस्य पंचकादिवृद्ध्याऽनिष्पन्नत्वात् तस्य प्रक्षेपसूचनायम् ।

इयाणि गणयकरणमित्वादि वीसियाए ठवणाए अंतधर्णं ति सर्वाग्रं आरोपणापदानां
भवतीत्यर्थः ।

सह आइल्लेहिं ति अन्त्यस्यारोपणापदस्य १६०, एतद्रूपस्यापेक्षया आदिमाः पंचदश-
प्रभृतयः पंचपंचाशदधिकशतान्ताः संख्याविशेषा एकोनत्रिशत्संख्यास्तैः सह त्रिशत्सर्वाग्रमारोपणा-
पदानां विशे स्थापनापदे भवतीत्यर्थः । वीसियठवणादीनां दिवसा इति विग्रहः । एवं सेसासु ति
पंचविंसियाडसु ।

दिवसा पंचहिं भइया (२० उ० गा० ६४४०) —

व्याख्या — यस्यां स्थापनायमारोपणायां वा यावन्तो दिवसास्ते पंचभिर्भजनीयास्ततो
यत्तलब्धं तद् द्विरूपहीनं विधेयं, स राशिः भासप्रमाणं ब्रूते, तस्मिन् ठवणापदे आरोपणापदे च
अकसिणरूवणाण् ओसगं ति भोपनिष्पन्ना अकसिणा, भोषरहिता तु कसिणारोवणा ।

जइ मासा तइएहिं गुण करिज्ज २० —

व्याख्या — दिवसा पंचहिं भइया इत्यादि करणतो द्विरूपहीनत्वेनारोपणायां यावन्तो
मासा लब्धास्तैर्भागलब्धान् गुणयेत्, ततः स्थापनारोपणासु यावन्तो लब्धा मासास्तत्समासां गाहा
तत्तियभागं करे त्ति तावत्प्रमाणेभ्यैः तं पूर्वं राशिं कुर्यात् । तिपंचगुणं ति — पंचदशगुणः कार्यः
आद्यो भागसेसं ति — शेषाश्च तद्व्यतिरिक्ता द्वितीयाद्या भागा एकत्र सम्मील्य पंचगुणाः कार्यास्ततो

गुणाकारगुणिता राशीनेकत्र सम्मील्य स्थापनारोपणदिवससमन्विता विधेयास्ततः षण्मासप्रमाणो राशिः १८०, भवति। तेहि एक्कारस गुणियं ति - एक्कारसमासाणं पन्नरसदिवसमासाओ मिज्झति चि काउं एए मासा ति दसहिं अद्धमासेहिं पंचमासाए भवति पंच भोसो कयो ति पंचानां प्रक्षिप्तानां भोषउत्सारणं कर्त्तव्यम् ।

जइमि भवे आरुवणा, तइभागं तस्स पन्नरसहिं गुणये ।

सेसं पंचहिं गुणियं, ठवणदिणजुया उ छम्मासा ॥ (२० उ० गा० ६४८५)

एसा गाहा पढमठवणाए पडिसमणाणस्स षण्मासप्रमाणदिनराशेरानयनस्याकारणलक्षणं रुवणाए जइ मासा तइ भागं तं करे इत्यादि ।

का च सर्वसामान्येति पाश्चात्यगाथाया व्याख्यानमाह - आरोगणभागलद्धमास ति एतस्मात् १८०, राशेः पंचत्रिंशत उत्सारणे १४५ पंचप्रक्षेपे १५०, आरोपणा १५, अनया भागे हूते लब्धा मासा १०, एते पंचदशगुणाः कार्याः । पुत्रकरणेण तिदिवसा पच भइया इत्यादिकेन अट्टारसहं मासाणं सज्जमाओ इत्यादि, एक्कारो अत्र दृश्यस्ततो दुत्रि ठवणामासा व सोहीय ति व्योध्यम् ।

अर्न्नेहिं सतगणु जेहिं पंचराईदिया गहियंति सर्वे दिवसा ७० । तइयभागलद्ध ति तावत्प्रमाणैर्मसैर्भागलब्धान् गुणयेत् । अयं प्राचीनः वीसियाए ठवणाए पगारो भणिओ, पुण वीसियाए वि तहेव नेओ । अत एवाह - एवं पुण वीसियाए इत्यादि, द्वितीयवृत्तीयेत्यादि, द्वितीय वृत्तीये चतुर्थे च स्थापनारोपणस्थानेऽयं विशेषो, यथा -

जत्थ उ दुल्लवहीणा, न होज्ज भागं च पंच हिं न हुज्जा ।

एक्काओ मासाओ, ते दिवसा तत्थ नायव्वा ॥

व्याख्या - पंचिकायामारोपणाया पंचभिर्भागे हूते द्विरूपहीनत्वं मासस्य न प्राप्यते खड्गं वा भवति । चतुर्थे च ठवणारोवणठाणे एकद्विकादिके आरोपणास्थाने पंचभिर्भागे न घटते, ततश्च तत्राप्येको मासो द्रष्टव्यः । कुतः इत्याह - यत् एकस्मान्मासात् ते ठवणारोवणदिवसा निष्पन्नास्तत्र द्वितीयादिके ठवणारोवणठाणा ज्ञातव्याः । अत एवाह - “जत्थ उ दुल्लवहीणं न होइ” इत्यादि, आगासं वा शून्यमित्यर्थः । तथात्राम्नायात् भोषः प्रक्षिप्यते यदा तदारोपणराशेः भोषो हीनः समो वा प्रक्षेपव्यो न त्वधिकः । अत्र सर्वत्र तथा तथा कर्त्तव्यं स्थापनारोपणयोर्मेलनं यथाऽशीत्यधिकं शतमुत्पद्यते, सेसं पन्नासं सयमित्यादि आरोवणा एक्काउ ति मासद्वयोत्सारणे सत्येकमास एवावशिष्यते ।

कः प्रत्यय ? इत्यादि एत्थ संबल्ये ति इत्थं पंचदसिपठाठवणारोवणाए सर्वमासेषु ठवणामासे आरोवणामासे मासदशके पक्षः पक्षो ग्रहीतव्यो न न्यूनमधिकं वा । सत्त्वत्य जइहि मासेहीत्यादि तत्र ५, १०, १५, एतास्तिस्त्रो मासनिष्पन्ना यतस्तिस्त्रेष्वपि मासो लभ्यते । पंचभिर्भागे हूते सति विंशतिपंचविंशत्यादिकाश्चारोपणा द्विमासत्रिमासनिष्पन्ना अतस्तासु द्विमासादयो लभ्यन्ते ततः आरोपणामासैस्तावद्भिर्भागलब्धं गुणितव्यम् । छ सय तीसुत्तर ति ठवणारोवणाणं संवेहणसंज्ञानमेयं सभोगं चि, वेयणाउ ति स्वाभाविक मास एवेत्यर्थः ।

इयाणि चउत्थमित्यादि इक्कियाए आरोवणाए भागो ति एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् आरोपणपदानामत्रैककेन भागो हार्यः । तहेव काउं जावेत्यादि ठवणारोवणदिवसानुसार्य एकक भोषक्षेपेऽस्य १७७, राशेस्त्रिभिर्भागे हूते लब्धं ५६, ठवणारोवणमासद्विकप्रक्षेपे ६१ लब्धम् । एवं

दुतिगाइठवणासु वि त्रिचतुर्थठवणारोवणपंक्या द्विश्रादिस्थापनापदेष्वाप्येकादय आरोपणा ज्ञेयाः । पुष्पकयविहिण त्ति एकैकारोपणस्यानवृद्ध्या एकैकस्थापनापदस्य ह्रासः तथा विहीए आरोपणाठाणे आढते इदं १७८, ठवणाठाणं न भवइ । एवं एकै आरोवणाठाणे उवरि उवरि बड्डीए एक्किवकं ठवणाठाणं उवट्टिए हसिज्जा इत्येवं पूर्वकृते विधिः । इह च एगाइसु च उदंसतेसु एक्को चेव मासो वेत्तव्वो । पन्नरसोवरि विकलत्ति पन्नरस १५ १८ १६ इत्येते विगताः कला पंचभरूपा यत्र ते विकला ।

इक्काओ मासाओ निप्फन्न त्ति उद्धरितायामपि कलायामेक एव लभ्यते, न त्वधिकं तद्वसेन किंचिल्लभत इति भावः । एवमेकविंशत्यादिषु चतुर्विंशत्यन्तेषु केवलं तत्ति केवला अनुद्धरितकलाराशयः शुद्धाः पंचकपंचनिष्पन्ना इति यावत्, ते पंचकभागविशुद्धा द्विरूपहीनत्वकृता ये मासास्तैः प्रमाणं येषां दिवसानां ते तथा तेभ्यः दिनेभ्यः इति शेषः । मासभागा यत्रानेतुमिष्यन्ते यकाभिस्ताः स्थापनारोपणाः, इयं च षोडशकाप्रभृत्येवाभवति, नार्वाक् इत्याह इत्तिकयेत्यादि, ते ठविय त्ति एकादश स्थाप्यन्ते सकलश्च छेदः तेन सहिताः ११, एसि त्ति मासस्स पंचमो भागो स विन्नेओ । कोऽर्थः ? मासो पंचगुणो सो पक्खित्तो त्ति ।

इदाणि आरोवणाभागलद्धं त्ति आरोपणाया भागस्तेन यत्त्वब्धं एकादशमासाख्यं वस्तु सेसा सेसं त्ति यदुद्धरितं प्रतिक्रियाजातं आरोपणाभागश्च ते परावर्तिताश्च तैः, कोऽर्थः ? छेदांशयोर्विपर्ययः, कार्यः षट्कोऽथ पंचकाश्चोपरि अत्र पंचकेन गुण्यते द्वासप्ततति, जातं ३६०, षट्केन पंचकगुणने ३०, त्रिशता भागे हूतेऽस्य ३६० राशेरुक्त्वा १२, यद्वा छेदांशकयोर्विपर्यये कृते द्वासप्तत्यधोवर्तिनः पंचकस्य षट्कोपरिवर्तिनश्चापवर्तनं विधेयं—अपनयनं तयोः कार्यमित्यर्थः । ततः षट्केन द्वासप्तते भागे लब्धा १२ । एवं सप्तरसासु छेदांशरूपयोः पंचकयोरुभयोरपि उत्सारणं कृत्वा शेषेण छेदेन इतरांशे संचयमासभागाभिधायकस्य भागो हरणीय इति, यद्वा अंशानंशैर्गुणयित्वा छेदांशं छेदैर्गुणयित्वा भागो हार्य इति, प्रक्रियाद्वयेऽपि न वस्तुक्षतिरिति ततो लब्धा १२, अत्र स्थानद्वये स्थाप्यन्ते एको द्वादशकः पंचदशगुणः १८० । आरोवणाए जइ विगला दिवस त्ति आरोपणायां पंचभिर्भागे हूते शेषं यदुद्धरितमित्यर्थः । तेन द्वितीयो राशिगुणनीयः, अत्रैको विकलो दिवस उद्धरित इत्यर्थः । एक्केण गुणियं तत्तियं चेव स्थापनादिवसेन युक्तश्च द्वादशकस्त्रयोदशकीभूतः प्रक्षिप्तः पंचदशगुणकृतपूर्वराशौ स च राशिः भोपरहितः सन् अशीत्यधिकं शतं भवति । एगवीसिया वी इत्यादिठवणा १ आरोवणा २१, असीयसयाओ अवणीए १५१, एसस्स एक्कवीसाए भागो, भागं सुद्धं न देइ इति दस पक्खित्ता १६८, भागे लब्धं ८, ते ठविया सगलच्छेदसहिताः, आरोवणाभागे हिए लद्धं ४ दुरुक्कहीणत्वे कृते मास २, मासस्स य एक्को पंचभागो मासदुगे पंचगुणे असपक्खेवे कए जाता ११. एक्कियाए वि ठवणाए हेट्ठा पंचमो छेओ दिओ, तओ आरोवणाभागलब्धं ८, तं आरोवणा-मासगुणं कायव्वं त्ति काउं अंसो अंसगुणो छेओ छेयगुणो एक्कारसहि अट्ठ गुणिया पंचहि एक्को गुणिओ जाया अट्ठासी पंचभागा ८८ ठवणारोवणमाससहिय त्ति कायव्वं, एस्य एक्को ठवणाभागो फेडियव्वो, एवं कृते सत्याह “नवरमित्यादि — जं सेसं त्ति ६६ एतच्चारोपणभागाश्च ते परावर्तिताश्च इत्थं तैर्गुणितं कार्यं परं न गुण्यते प्रक्रियात् (?) किन्त्वपवर्तनं पंचकयोर्विधेयम्, ततो भागहियलद्धि त्ति — एकादशभिर्नवनवतिभागे हूते लब्धं ६, तिसु ठाणेसु स्थाप्यं ततः एकनवकः पंचदशगुणः १३५, द्वितीयस्य विकला दिवसस्यात्रैकरूपत्वात् तेन गुणितो नवक एव भवति, तृतीयश्च पंचगुणः (पंचगुणः) सर्वे मिलिता १८६, ठवणादिणजुया दशकभोपरहिता इदं १८०, भवति ।

एगतीसेत्यादि ठवणा १, आरोवणा ३१, एतयोरेतस्मात् १८०, उस्सारणे जातं १४८, सत्तज्जोषपवखेवे १५५, आरोपणाए भागे हिते लब्धा ५, ते ठविया सगलछेयसहिता ५, आरोवणाए पंचहि भागे दुरुवहीणे कए जाता ४, उद्धरितपंचमासस्स एक्को पंचभागो, तत्रो मासचउक्कं पंचगुणियं असंजुयं २१, एविकयठवणाए हेट्ठा पंचको छेओ दिन्नो १, तत्रो आरोवणाभागलब्धं पंचमासकं आरोवणामासगुणं कायव्वं ति असो असंगुणो छेओ छेयगुणो एकवीसाए पंच ५, गुणिया पंचहि एक्को गुणियं जाय १०५, पंचभागानं ते उ ठवणामाससहिय ति कायव्वाए छक्को ठवणापंचभागो फेडिओ सेसं आरोवणा पंचभागो पक्खित्ता जाया संचयमासाण सत्तावीसं सयं पंचभागानं १२७ ।

कत्तो किं गहियं ति एक्को ठवणाभागो फेडिओ सेसं १२६, तत् आरोपणाछेदांशयोः ३६ इत्थं परावृत्तिं कृत्वा पंचक्रयोरपवर्तने कृते एकविंशत्या भागे हृतेऽस्य १२६, राशेर्लब्धं ६, एवं कृते नवरमित्यादिकस्य चूणिवाक्यस्यावसरः । एगतीसरोवणा पंचहि भागे हृते द्विरूपहीन-कृतमासापेक्षया विगलदिनं पंचममाससत्कं लब्धं वर्तते ततश्च आरोपणांशैः परावर्तितैर्यल्लब्धं तत् तावत् स्थानस्थं स्थाप्यमानं पचपट्का न्यस्यन्त इति ।

तत्थिक्को रासी पन्नरसगुणो ६० बिइओ विगलदिवसगुणो ठवणदिवससुतो ७, तृतीयादय एकत्र मीलितः १८, ते पंचगुणा ६०, नवतिद्वयं अग्नीत्यधिकशतं सतकभोपरहितश्च कार्यः, अत ऊर्ध्वं सामान्यलक्षणमाह आरोवणेत्यादि, ठवणासंचयभाग ति सचयमासभागान्तर्वत्तित्वात् स्थापनामासभागो अपि संचया भागा उच्यन्ते, स्थापनामासभागो अपनेतव्या इत्यर्थः । पक्खिवत्तेण-मित्यादिना च ठवणादिगजुया य छम्मासा इति यत् क्रिया तदुक्तं, तेइसगल ति - परिपूर्णदिन-तया न तु खंडरूपतयेति भासं चेत्यादिवाक्ये नवमासा दुरुवसहिद्या पंचगुणा ते भवे दिवसा इतीयं प्रक्रिया उक्ता, उवउज्ज कायव्वाउ ति - भिन्निय ठवणारोवणं इच्छतेण ति शेषः ।

रासि ति हेतुसंख्या, ते खंडा संववहारिए इत्यादि, तउ ति तेभ्यः व्यावहारिकपरमाणु-मात्रकृतखंडेभ्यः आनंत्यादि निश्चयपरमाणुमात्राणि खंडान्येकैकस्मिन् वालयेऽनन्तानि भवन्त्यसंयम स्थानानामपि तत्प्रमाणत्वात् तावन्तीष्यन्ते कैश्चिदिति पराम्भुपगमार्थः, संहस्रमाणं ति कस्मादपि मासात् पंचदशपंचकदशकादि-कियद्दिनग्रहणरूपतया शेषमुत्सार्यमाणमित्यर्थः । भिन्नेसु उवड्ढी ति अपवृद्धिः, पाइचात्थमत्या हांनिद्रंष्टव्या, नवमपूर्वकस्यापि स्तोकेनोनं अन्यस्य तदपि बहुतरेणेत्यादिना तावद् यावद् नवमपूर्वस्य तृतीयमाचाराख्यं वस्तिवति भद्रबाहुकृता नियुक्तिगाथा एव सूत्रं, तद्धरंतीति विग्रहः, निशीथकल्पव्यवहारयोर्मे पीठे ते एव गाथासूत्रं, तद्धरन्तीति । अथवा नियुक्ति-धराः सूत्रधराः पीठिकाधराश्चेति त्रितयं व्याख्येयं । किंसिया सिद्ध तीत्यत्र सिद्धशब्दो निष्पन्नार्थः, ननु ण एसेवेत्यादि प्रथमस्थापनारोपणपंक्तौ एका जहन्न ति उत्कृष्टं स्थापनास्थानं ५४ (१६५) तत्प्रतीय जधन्यारोपणाऽयं १५ द्वितीयादीनां तत्र भावात् । तीसं उक्कोस ति विंशतिरूपस्थापनास्थानमाद्यं प्रतीत्य त्रिंशत् संख्या अप्यारोपणा भवन्तीति, त्रिंशत उत्कृष्टत्वं अतित्वा आरोपणा । उक्कोसिय ति जाव ठवणा उद्दिट्ठा छम्मासा ऊणया भवे ताए आरोवणा उक्कोसा तीसे ठवणाए नायव्वा । इत्यनेन लक्षणेन यस्यां याऽन्त्या सा तस्य उत्कृष्टा भवति, एयासि मज्जेति पच पंच निष्पन्न त्रिंशत् स्थानसंख्यानां मज्जे ति मध्ये वर्तिन्यः, तत्र उत्कृष्टाक्षिंशत् शेषाश्चत्वारिंशदिति सप्ततिः वीसिय-ठवणाए उ ति भाव्यगतापदं, अस्यार्थः - विंशत्या उपलक्षितं आदिभूतया यत् स्थापनारोपणस्थानं तथैता भवन्तीत्यर्थः । अन्नोन्नवेहो भवति ति अन्यस्यामन्यस्यां वेधः सम्बन्धोऽन्योऽन्यवेधस्तस्मात्

पंचदशाद्यारोपणा एकैकस्मिन् स्थापने संयुज्यत इत्यर्थः । तथाहि—पंचदशास्त्रिंशत् स्थापनारोपणा विशती संयुज्यन्ते, भूयोऽपि ता एवैकस्थानन्यूनाः पंचविंशत्या सह संयुज्यन्ते इत्येवमन्योऽन्यानुबोधः संभाव्यते । होणं सि विंशमग्रहणमिति काउ वि मासाग्रो कथं कथं ति दिनाणि गिज्भंति पंच-पंचदशेत्यादिकमित्यर्थः । समग्रहणं णाम सब्बमासेसु विकत्थइ तुल्यान्येव दिनानि गृह्णन्ते इत्येव-रूपं एवं कम्म ति एतत् कर्मठवणाठाणं पक्खिअिकं प्रतीत्य पंचदशाद्यारोपणासु कर्तव्यम् ।

चतुर्थेऽपि विशेषमाह एगा इत्यादि यथा ठवणाः १ आरो० १२, आसीयसयाग्रो तेरस ऊसारिऊण एककभोषप्रक्षेपे - १६८, बारसहि भागहूते लब्धमास १४, ततश्च आरोपणमासेन एकलक्षणेन गुणने एतदेव, ततो ठवणारोवणाभासद्वयप्रक्षेपे १६, एतावन्तः संचया मासाः ।

कतो किं गहियं ? ति पट्टवणा माससोहीए १४, तस्यो आरुवणा जइ मासा तइभागं तं कारेइ ति क्रियते, अत्रारोपणमास १ इति चतुर्दश एवावतिष्ठन्ते, एवं कृते प्रस्तुतचूर्णि वाक्यस्यावसरः, एकोऽपि सत्रयं भागोनपंचदशगुणः क्रियते किन्त्वारोपणाराशिदिनैरिति ततो द्वादशभिर्गुणनेऽस्य १४ जात १६८, ठवणारोवणदिनत्रयोदशप्रक्षेपे एककभोषोत्सारणे च जातं १८०, एवमन्या-स्वप्येकाद्यास्वारोपणासु चतुर्दशान्तासु निजनिजदिनैरेव गुणनमिति ।

जइमि भवे गाहं ति, प्राचीनगाथोक्त एवार्थोऽनया सामान्येनाभिहितः, जइत्थी आरोवणं ति पट्टमठवणारोवणठाणपंतीए इति शेषः । अणेग भागत्य ति द्वित्र्यादिभागस्था इत्यर्थः । स्वचिदेवमिति प्रथमस्थापनारोपणस्थानपक्तावित्यर्थः । ग्रहवा - ठवणादिणसंजुसं ति अथवा-शब्द होउ ति पदं शं ए ज्ञ तं संयोज्य भूयोऽपि त्याद्यन्तं कृत्वा योज्यत इत्याचष्टे, यद्वा शतृज्जं स्वत एव गम्यते, होइऊणं ति क्रियापदमेव कृत्वा योज्यमिति कथयति । ठवणा-दिणसंजुतं ति पदं च उभयपक्षेऽपि समानं, तदयं वाक्यार्थः येन गुणकारेणारोपणा गुणिता ठवणादिणयुता सती षण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया ऊनाधिका वा भवति स गुणकारस्तस्या-रोपणपदस्य न भवति । एएसि ति एतयोः विंशत्यठवणापंचदशकारोवणपदयोः एते द्वे आश्रित्येति । कोऽर्थः ? विंशतिं प्रतीत्य पंचदशारोपणायाः समकरणत्वमाश्रित्य दशकाख्यो गुणकारको न भवति, त्रिंशद्वरूपं च ठवणाठाणं प्रतीत्य भवति, इह च दशकगुणकारभरणं पाक्षिकारोपणां प्रतीत्य तस्या अप्येकद्वि-दिगुणकारपरिहारेण यदुक्तं तद् दशस्थापना-स्थानानि प्रतीत्य पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना प्राप्ते इति ज्ञापनार्थः । किमपि स्थापनास्थानं प्रतीत्य दशगुणाकारपरिहारेण य सती पाक्षिकारोवणा कृत्स्नोच्यते, किमपि च नवगुणा तावद् यावदेक-गुणाऽपि सती कुत्रापि कृत्स्नाऽपि भवति, स्थापनास्थानानि - १६५ । १५० । १३५ । १२० । १०५ । ९० । ७५ । ६० । ४५ । ३० । एतेषु एकद्वित्र्यादिगुणा सती यथाक्रमं षण्मासप्रमाणदिनराशिपूर्वक-त्वात् पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना भवति दशकगुणा नवगुणेत्यादि तावद् यावदेकगुणेति, यदा ओमत्यगपरिहाणीए ति पाश्चात्यगत्या योज्यते तदा पूर्वोक्तानि स्थापनास्थानान्यपि पाश्चात्यगत्या योज्यमानानि त्रिंशतादीनि वेदितव्यानि तेन पाक्षिकारोपणा दश कृत्स्ना भवन्ति, नाधिकया इत्यावेदितं भवति, एवं वीसिएत्यादि विंशत्यारोपणा अष्टौ स्थापनास्थानानि प्रतीत्य कृत्स्ना भवति, अन्यानि वाऽऽश्रित्य विंशतेर्गुणकारेण गुणिताया अपि षण्मासराश्यपेक्षया हीनाधिकत्व-संभवान्न कृत्स्नत्वसम्भवः, तानि चाष्टौ यथा—१६० । १४० । १२० । १०० । ८० । ६० । ४० । २० । एतेषु विंशतिरेकद्व्यादिगुणासती यथाक्रमं अशीत्यधिकशतपूरकत्वात् कृत्स्ना भवति, वियाले यथा उ ति विचारयितव्याः ।

ग्रहवेत्यादि अत्र प्रथमे गाथाव्याख्यानपक्षे प्राधान्यं गुणकारगुणितस्य स्थापनापदस्य गौणता गुणकारगुणिते यत् क्षमा तस्य स्थापनास्थापनपदस्य न्यसनात्, द्वितीयव्याख्याने तु प्राधान्यं स्थापनापदस्य, गुणकारगुणितस्य च गौणत्वं स्थापनापदं नियतं कृत्वारोपणापदविषये स गुणकारः कश्चित् मृग्यो येन गुणिताऽशीत्यधिकशतपूरिका भवतीति कृत्वा तदुपरि माइ त्ति तस्य द्विकस्योपरि त्र्यादयो ये गुणकारास्तैः तदुपरि माई इत्यादिवाक्येन तस्सुपरि ज्ञेय गुणा इत्यादि गाथोत्तरार्धं व्याख्यातं । जइ गुण त्ति येन गुणनं यस्याः सा यद्गुणा, प्राचीनो गाथोक्त एवार्थोऽनया भंग्यन्तरेणोक्तः । ज्ञेय गुणा आरोवणेत्यादि षण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया येन गुणकारेण गुणितारोपणास्थापनादिनसंयुक्ता विहिता सती यावता ऊना भवत्यधिका वा सा तां व्यवस्थापनां प्रतीत्य कृत्स्ना ज्ञातव्या भोषसदभावात् ।

कियान् पुनस्तत्र भोषः ? इत्याह - तं चेव तत्पञ्चभोषणं ति यावदूनं यावदधिकं वा तावत् प्रमाण एतत् स्थापनास्थानं प्रतीत्य तस्यां भोषो भवति । यथा वीसयं ठवणं पडुच्च पक्खियारोवणाए पंचम्रो ज्झोसो लब्धइ तम्रो तेरससंचयामासा निष्पन्ना लब्धति । हुंति सरिसाभिलावाग्रो त्ति भाष्यपदं । अस्यार्थः - एकद्वित्र्यादिसंख्याभिरारोपणाः पंचदशाद्या गुणिताः सत्यः स्थापनादिनयुक्ता यावत्योऽशीत्यधिकशतपूरिका भवति तावत्यस्ताः सर्वाः सदृशाभिलापा भवति - कृत्स्ना भवतीत्यर्थः ।

किं चेत्यादि जाए ठवणाए ति यथास्थापनारोपणयोः स्थापनया, अट्टावीसरोवणमासस्ति व त्ति आरोपणायाः १५० पंचभिभग्नि हूते लब्धा मासा ३० मासद्विकोत्सारणे सत्यष्टाविंशतिरिति जइ पुण न सुज्झइत्यादि तत्थ जावइएण चेव विणा न सुज्झइ त्ति योज्यं । ठवणारोवणामासे नाऊणमित्युक्तं प्राग् यतोऽतः स्थापनारोपणदिनैर्मासोत्पादनकारणमाह - आगासं भवतीत्यादि तत्तिया चेव ते इति यत्संख्याः पूर्वमासान् तावन्त एव दिवसास्ते इत्यर्थः । तेहिं ति आरोवणदिनेहिं इगाइसभावभेदभिन्नाविति ये स्वभावभिन्ना किल भवन्ति तेषु किल नानारूपमासप्रतिपत्तिः प्राप्नोतीत्यभिप्रायः । पंचदशकादिषु मासत्रयं यतः प्राप्यते ततो द्विरूपहीनत्वसंभवः ।

कहं पुणेत्यादि काग्रो ठवणमासाग्रो, कियंतो दिणा गिज्झति, कियंतो वाऽऽरोवणमासाग्रो संचयमासेहितो वा, कियंतो गिज्झति त्ति वितर्कोर्यः । दिवसमाणो सभिं ति सदृश्यां स्थापनायां सदृश्यां चारोपणायामित्यर्थः । पुव्वकरणेणं ति ठवणारोवणदिवसमाणाग्रो विसोहइत्तु इत्यादिकेन जे पुणेत्यादि आरोपणया भागे हूतेऽस्य १६६ राशेयं लब्धा २४ इत्यर्थः । अन्नासु कत्थइ त्ति पूर्वासु तिसृषु स्थापनारोपणपक्षिषु न पुव्वकरणं कर्तव्यमित्यर्थः । समदिवसगृहणं न कर्तव्यमित्यर्थः । यथा वीसं ठं २०, वीसं आरो० २०, इत्थं ठवणारोवणदिवसे इत्यादिना करणेन तावत् कृतं यावत् वरुणो जइ मासा तइ भागमित्यादि करणेन षोडशसु द्विषाऽष्टाष्टतया व्यवस्थितेषु एकः पंचदशगुणः १२०, अन्यस्य पंचगुणः ४०, ठवणादिणक्षेपे भवति १८० भवति । अत्र च पद्धमाणो अट्टागाग्रो पक्खो पक्खो गहिंम्रो, पन्नरसगुण त्ति काउं बिइयाग्रो अट्टागाग्रो पंच पंच राईदिया पंचगुणिय त्ति काउं ठवणामासेहिं दो दस दस राईदिया इत्येवमत्र समेऽपि ठवणारोवणदिवसमाणेन समदिनग्रहणं दृष्टं, तह वि य पडिसेवणाग्रो णाऊणं हीणं वा अहिंयं व त्ति एकं वाक्यं यथाप्रतिसेवनमासाश्च ज्ञात्वा हीनत्वेनाधिकत्वेन वा ठवणारोवणासु तथा कथंचिदिनग्रहणं कर्तव्यं । यथा - षण्मासा पूर्यन्ते, ते य जे आरोवणाए त्ति अशीत्यधिकशतात् स्थापनारोपणदिनरहितात् यथाऽऽरोपणया तद्रहितं कृतं तथैव तस्य भागे इत्यर्थः । वीसियठवणं

वीसपारोवणं च पडुच्च ठवणाए दो मासा आरोवणाए वि दो, तन्नैकस्मिन् ठवणामासे ये दश विवसा गृह्यन्ते ते पंचदशदिनप्रमाणस्थापनामासापेक्षया न्यूनाः । पंचानां दशापेक्षया हीनत्वात्, दशकस्थ च पंचापेक्षया कृत्वाद्, एतदेवाह — कथं इ ठवणाए हीणमित्यादि, आरोवणामासेसु दुहा विभत्सेसु त्ति अष्टाष्टतया द्विधा व्यवस्थापितेषु पत्ररस गहिय त्ति पंचदशकैनाष्टकस्य गुणनात् तत्र चारोपणामासो वर्तते । द्वितीयश्चाष्टकः पंचभिगुण्यते, विंशतिस्थापनां प्रतीत्य पाक्षिकस्थापनारोपणायां सर्वत्र पक्षः पक्षो मासा गृह्यन्ते, ततः संचयमासा दश, पंचदशगुणा १५०, ठवणारोवणदिनयुताः १८०, एवमित्यादि पंचियठवणारोवणाए ठवणारोवणदिवसे माणाओ वि विसोहइत्तु इत्यादि करणेन षट्त्रिंशत् संचया मासा लब्धास्ततः स्थापनामासोऽपनीयते ३५, ततः प्रतिमासात् पंचदिनग्रहणात् पंचकेन गुणिते पंचत्रिंशति स्थापनादिनयुतायां १८० । एविकयाए वि ठवणारोवणाए असीइसंचयमासेहितो ठवणामासे फेडिए मास १७६, इत्थ एक्केक्काओ मासाओ एक्केक्को दिणो गहिओ । ठवणादिणजुओ १८० । एवं एयियठवणा पंचियाइ आरोवणासु वि. तहा हि — ठवणा १, आरो० ५, असीयसयाओ अवणीए १७४, एक्को ओसो पंचभिभणि हूते लब्धा ३५, ठवणारोवणामासयुता ३७, ठवणामासे फेडिए ३६, एक्केक्कमासाओ पंच पंच दिणा गहिय त्ति काउं पंचभिगुण्णे एक्कोषापनयने १८० । तहा ठवणा २, आरो० २ असीयसयाओ अवणीए १७६, दुगुणैभणि हूते मासा लब्धा ८८, ठवणारोवणामाससहिवा संचया मासा ६०, ठवणामासे फेडिए ८६, तओ मासेहितो पत्तेयं दो दो दिणा गहिय त्ति काउं दुगेण गुणिण्ठवणादिणजुए जातं १८० ।

विसमा गाहाए पादत्रिकेण एको वाक्यार्थः । द्वितीयश्चतुर्थपादनेति तानु(?)य मासविसमत्तणओ इत्यादि यथा ठव० ३०, आरोव० १५, असियसयाओ अवणीए १३५, पंचदशभिभणि हूते लब्धा ६, ठवणाए मास ४, आरोवणा एक्को मिलिया संचया मासा १४, ठवणामासापनयने १०, एवं कृते प्रस्तुतचूणिवाक्यस्यावसरो यथा — स्थापनामासानामत्र विषमदिननिष्पत्तत्वेन मासवैपम्यम् ।

कोऽर्थो ? न पूर्णदिननिष्पत्ता मासा लभ्यन्ते किन्तु दिनांशयुक्ता इति । तथाहि — मासो दिनसप्तकेन दिनार्धेन चात्र निष्पन्न इति, स्थापनामासेषु वि दिनसप्तकस्यार्थस्य च ग्रहणमत्र शेषमासेभ्यश्च पक्षपक्षो गृह्यते इति पंचदशगुणिता दश जातं १५० । ठवणादिनप्रक्षेपे १८० । एवमन्यास्वपि विषमदशसु कसिणासु ठवणारोवणासु ठवणामासेसु विषमदिनग्रहणं द्रष्टव्यं, कृत्स्नास्वपि विषमदिवसासु यदि स्थापनामासेसु न पूर्णदिनग्रहणं भवति किन्तु दिनांशयुक्तमपि भवति तथापि तत् तथा गृह्यमानं तथा कार्यं यथा भोषविशुद्धं तद्गृहीतं भवति, यथा ठव० २५, आरो० १५, असीयसयाओ अवणीए १४०, भोषदशकक्षेपे कृते दशभिभणि हूते लब्धा १०, ठवणारोवणमासयुता संचयमासा १४, ठवणामासोत्सारणे ११, पंचदशभिगुण्णे १६५, ठवणादिनयुते भोषविगुद्धे १८०, अत्र स्थापनामासेष्वष्टौ अष्टौ दिनानि दिनांशयुक्तानि शेषमासेभ्यश्च पक्षः पक्षो गृहीत इति भोषविषमार्थेति भोषात् ३ विषमार्थस्य ठवणामासेषु विषमं ग्रहणस्य रूपस्य विशेषप्रदर्शनं भोषविशुद्धदिनग्रहणरूपमर्थोऽस्येति विग्रहः ।

एवं खलु० गाहा ६४६३ ।

ठवणामासैरुत्सारिते शुद्धा ये भोषमासा आरोपणायां यावन्तो मासास्तत्समैर्भागे कृता आरोवणादिणेहि व त्ति चतुर्थोत्थापनारोपणपंक्तिमाश्रित्य उद्धरितविकलदिनैरित्यर्थः । यथा — शतादिप्रक्षेपेण सहजं पूर्यते विसैसिज्जंतीत्यर्थः । इति आरोपणामासेभ्यः स्थापनामासा विशेष्यन्ते, विशिष्टाः क्रियन्ते, पृथक् क्रियन्ते इति यावत्, षण्मासदिनराशिपूरकत्वात्तेषामिति भावः ।

एणदुतिमाइयाहि इत्यादि अनेन व्याख्यानेनारोपणानां कृत्स्नानां मध्ये एकस्या आरोपणायाः प्रतिनियतं संख्यानामाह अहवा - जत्य संखितितरमित्यादि, ते चेव ति आलोचकमुखश्रुताः यथा- अष्टादशमासाः श्रुताः तैरशीत्यधिकशताद् भागे हूते लब्धा १० सर्वविशुद्धिसद्भावात् कृत्स्नं चैतत्, अत्रैकैकस्मान्मासाद्दिनदशकं गृहीतं, अष्टादशमासैर्दशकस्य गुणनेऽशीत्यधिकशतभवनात्, किञ्चित् तस्य विकलं भवइ ति किञ्चिदुद्धरति, परिपूर्णतया यदि स राशिर्न शुद्ध्यतीत्यर्थः । तदा तद्भागलब्धं भागहारकस्य यका संख्या तत्प्रमाणैः स्थानैस्तावत्यो वारा न्यसनीयमित्यर्थः । जावइय ति विकलयुक्तभागाच्छेषा ये अन्ये भागास्ते यावत् स्थानसंख्याकास्तावन्मात्रो राशिर्भाग- हारगुणो ति भागहारेण यो लब्धो राशिः स भागहार उक्तस्तेन गुण्यते यः स वा गुणो गुणकारो यस्य स तथा यद्वा साध्याहारं योज्यते, यथा विकलयुक्तभागाद् येऽन्ये भागास्ते यावन्तः यावत्स्थानसंख्याकाः स गुणकारो दृश्यस्तेन भागहारलब्धो राशिर्भागहारस्तस्य गुणनं गुण्यते वाऽसौ तेनेति विग्रहः । यथा - संचया मासा १३ श्रुताः, अशीत्यधिकशताद् भागे हूते लब्धा १३, उद्धरिता ११, लब्धं त्रयोदशभिः स्थानैरन्यस्यते, एकश्च भागो विकलयुक्तः कार्यः, जातं २४ । अपरे च द्वादशत्रयोदशभागास्ततो द्वादशसंख्यया त्रयोदशको गुणितः जातं १५६, चतुर्विंशतेः प्रक्षेपे जातं १८०, तथा संचया मासा २५, श्रुताः । असीयसयाग्रो भागे हिए लब्धं ७, उद्धरिता ५, सप्तकः पंचविंशतिस्थानेषु न्यस्यते, एको विकलयुक्तः १२, अपरे चतुर्विंशतिस्ततः सप्तकेन चतुर्विंशतिगुणिता १६८, द्वादशप्रक्षेपे १८० । एवमन्यत्रापि अधुना यदा स्थापनारोपणप्रकारेणाशीत्यधिकशतमुत्पद्यते तदा अकसिणारोपणायां सत्यां भोषप्रक्षेपे कृते भागो हतंव्य इत्युक्तं प्राक् इति विकलप्रस्तावादेव यस्यां यावत्प्रमाणो भोषो भवति तत्परिज्ञानार्थमाह - “नापव्व तहेव भोसो य” ति, तथा यस्य मासस्य यद्दिनप्रमाणं गृह्यते इत्येतत् जातं तथा ...भोषो अपि यस्यां यावत्प्रमाणो भोष इत्येतदपि ज्ञातव्यमित्यर्थः ।

कथं ? इत्याह - आरोपणा इत्यादि चूर्णिवार्यं, यथा वीसियठवणा पणवीसा- रोवणा तयोरशीत्यधिकशतादुत्सारणे कृते जातं १३५, आरोपणया भागे हूते लब्धा ५, उद्धरिता १०, एवं कृते चूर्णिवार्यस्यावसरः असुखममाणो ति सर्वथा निर्लोपमध्यात्लघुराशौ यच्छेदां- शविशेषः । छेदोऽत्र पंचविंशतिरूपः उद्धरितदशकस्त्वंशस्तयोर्विशेषो यस्मात् पतति स तस्मात् पात्यते इत्येवं न्यायेन बृहद्वाशिमध्यात्लघुराशेरुत्सारणे कृते उद्धरितरूपः । अत्र हि दशकपंच- विशत्योर्मध्ये पंचविंशतिर् बृहद्वाशिः, दशकस्तु लघुः, तस्य लघोरुत्सारणे कृते पंचविंशतेर्मध्यादुद्धरिताः पंचदश, एतावत्प्रमाणो भोषोऽत्रारोपणायां भवति, तथा ठ० २०, आरो० २५, अशीत्यधिक- शतादुत्सारणे १४५, अत्रारोपणया भागे हूते लब्धा ६, उद्धरिता दश, पंचदशभ्यो मध्याद्दशाना- मुत्सारणे उद्धरिताः पंचकपंचकरूपो भोषोऽत्रेत्येवमन्यास्वपि छेदांशयोर्विशेषो भोसो विज्ञेयः । ततो भोषमित्यं प्रथमत एव विज्ञाय ठवणारोवणदिवसरहितराशिमध्ये प्रक्षिप्यारोपणाया भागो हतंव्यस्ततो यल्लभ्यते तदारोपणामासैर्गुण्यत इत्यादि प्रागर्दिशतप्रकारस्तदूर्ध्वं कार्यः ।

कसिणा० २० गा० ६४१६ ।

तेसु भागत्येमुत्ति यथा ठव० ३०, आरो० १५, असीयसयाग्रो अवणीए १३५, पंचदश- भिर्भागे हूते मास ६, ठवणामास ४, आरो० १ ठवणारोवणमाससहिया संचया मासा १४, ठवणा- मासे फेडिए जाया १०, आरोपणया एकत्वात् एकभागस्थो दशकः पंचदशकेन गुणितः १५०, अत्र दशस्वपि मासेषु पक्खो पक्खो गहिओ, ठवणादिणजुया १८० ।

अहं दुगाइभागत्थं त्ति यथा ठव० ३०, आरो० २५, असीयसयाओ अवणीए १२५, आरोवणया भागे हूते लब्धा ५, आरोवणामासा ३, तैगुणितः पंचक १५, ठवणामास ४, आरोवणमासयुत २२, ठवणामासोत्सारणे १८, आरोपणायां मासत्रयसद्भावात् त्रिभिः स्थानैः षट् स्थितान् मीलयित्वा षष्ठादश ध्रियन्तेऽत्रैकस्मिन् भागे पंचदश दिवसा गृह्यन्ते, अपरयोश्च द्वयोर्भागयोः पंच पंच इति प्रत्येकं भागेषु समदिनग्रहणं, ततो भागानां पंचदशभिः आरोपणामास ३ सहिया संचया मासाः पंचकेन गुणने ठवणादिनक्षेपे १८० ।

अहं कसिणत्ति यथा ठव० २५, आरो० २०, असीयसयाओ अवणीए १३५, पंचदशभोषे कृते १५०, आरोपणया भागे हूते लब्धा ६, आरोपणास्त्रिभिः षट् गुणिताः १८०, ठवणामास २, आरोपणामास ३०, सहिया संचया मासा ३३ ठवणामासोत्सारणे आरोपणायां मासत्रयसद्भावात् त्रयः सप्तका न्यसनीयाः, एकः पंचदशगुणः, अपरो च पंचगुणाविति ७०, भोषस्य पंचदशकस्योत्सारणे पंचदशभिर्गुणिते सप्तके त्रयोदश त्रयोदश दिनानि किंचिन् न्यूनानि मासाद् गृह्यन्ते, इत्यायाता त्रयोदशसप्तका एकनवतियंतः स्यान्, अत आह—ता नियमा तेषु मासेसु विसमग्रहणमिति ।

जइ इच्छसि नाऊण० गाहा [१ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

कस्मान् कियन्ति कियन्ति दिनानि गृह्यन्ते ? इति दिनग्रहणगाथेयं, अस्यार्थः—यदीच्छसि ज्ञातुं किं तद् ? इत्याह—किं गहियं मासेहिं तो त्ति सम्बन्धः, कस्मान्मासाच्च कियद् गृहीतमित्यर्थः । तदा ठवणारुवणा जहाहि त्ति असीयसयाओ ठवणारोवणदिणा उत्सारेहि, मासेहिं त्ति संचयामासेभ्यश्च ठवणामासानारोपणामासाश्चोरेय तदूर्ध्वं तु मासेहिं त्ति विभक्तिव्यत्ययात् मासैः संचयमासैः ठवणारोवणामासैश्च भागं हरेदिति योगः ।

केभ्यः ? इत्याह—तद्विवस त्ति विभक्तिपरिणामात् तेभ्यः स्थापनामासैः स्थापनादिनेभ्य आरोपणामासैरारोपणादिनेभ्यः संचयमासैश्च ठवणारोवणमासरहितै असीयसयाओ ठवणारोवणदिणरहियाओ भागं हरेदित्यक्षरार्थः । यथा—ठव २०, आरो० १५, असीयसयाओ उत्सारणे १५५, एत्थ ठवणारोवणठाणे संचया मासा १३, ठवणारोवणमासतिगुत्सारणे स्थिताः १०, तैर्भागे हार्यः, अस्याः राशेर्लब्धा दिन १४, उद्धरितदिनपंचकस्य भागहारकस्य च दशकाख्यस्यापवर्तना देशानां पंचमे भागे १ न्यासः ३ इति दिनार्थं लब्धं इति संचया मासेषु मासा ३२, दिन १४, दिनार्थं च गृहीतं, अर्धं च दशकेन गुण्यते जाता १०, अर्धस्तनद्विकेन भागे हूते लब्धं दिनपंचकम् ।

कः प्रत्ययः ? चउदसगुणिया १४०, पंचकप्रक्षेपे इत्येवं संचयमासैर्भागे हूते संचयदिनप्रमाणं यावद्गृह्यते तावदनया गाथायीकतं अनुना ठवणारोवणमासेहितो यावन्तो दिवसा गृह्यन्ते स्वसमासकैर्भागे हूते तत्प्रदर्शनाय गाथामाह—

ठवणारुवणा दिवसा ण० गाहा [२ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

व्याख्या—ठवणारुवणादिवसानां भागो हार्यः, कैः ? संतमासैः, स्वकीयस्वकीयमासैरित्यर्थः, तत्र च ठवणारोवणदिवसराशेः पंचभिर्भागे हूते यल्लब्धं तद्विरूपेण (?) तत्समासतया भवति, भागे च हूते यल्लब्धं तद्विवसान् जानीहि, शेषं चोद्धरितं दिनभागानेव जानीहि, न पुनः पूर्णदिनानि इति, यथा ठव० २५, आरो० १५, अत्र च संचया मासा १०, तैर्भागे हूतेऽस्य १४० राशेर्लब्धदिन १४

मासान् गृह्यते, वसकेन गुणिता जातं १४०, आरोपणमासेनैकेन भागे हूते आरोपणदिनराशे लब्धदिन १५, ठवणमासैः त्रिभिर्भागे हूतेऽस्य २५ राशेर्लब्धदिना, मासान् गृह्यन्ते इति २४, उद्धरितश्चैकः स चाष्टकेन गुणितो जाता ८, भागे अष्टकेन हूते लब्धदिन १, मिलितं सर्वं १८०, ठवणारोवणदिवसा ज्ञानसद्भावे इत्यमुक्तं, यदा तु ठवणारोवणराशिर्न ज्ञायते तदा कस्मान्मासात् कियद्दिनानि गृह्यन्त इति कथनार्थमाह—

जइ नत्थि० गाहा [३ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

व्याख्या—ठवणारोवणराशिर्न ज्ञायते विस्मृतत्वादिकारणतो यदा तदा शिष्यमुखात् श्रुता ये सेविता मासास्तैरशीत्यधिकं शतं विभजेत्, भागे हूते यद्द्वयं तत् श्रोत्राद्ग्रह्यं ति अवग्रहीतशेकैकस्मान्मासाद्दिनमानमित्यर्थः । इहापि यदुद्धरितं तद्दिनभागा अवबोद्धव्यास्ते च लब्धदिनराशिना गुणयित्वा तेनैव लब्धदिनराशिना भागं हूत्वा दिनानि कार्याणि ।

कः प्रत्ययः ? सेवितमासैर्लब्धस्य गुणेन तस्य च मध्ये उद्धरितस्य दिनीकृतस्य शतं प्रक्षेपे अशीत्यधिकशतं वि भवति, यथा श्रुतमासाः १३, एभिरस्मान् १८०, राशेर्भागे हूते लब्धं उद्धरितं ११, त्रयोदश-त्रयोदशभिर्गुणिता १६६, एकादश दिनप्रक्षेपे जातं ॥१८०॥ इयाणिमित्यादि अतिक्रमादिषु यथाक्रमं प्रायश्चित्तं यथा—तपः कालाभ्यां लघु, द्वितीये त्वगुरु, तृतीये कालगुरु, चतुर्थे ङ्गा उभयगुरु, प्राभृतवदित्यादि, यद्वा प्राभृतं अर्थाधिकारस्तथा प्राभृतच्छेदा अपि, तथा सकलबहुमसूत्रेषु ये पदविधयः पंच तांश्च प्रत्येकं दर्शयित्वा तत्रो वि गयं ति ततः सम्यग् ज्ञानात् ॥छ॥

गुरुय एकं ओहाडणं ति लघुप्रायश्चित्तानां स्थगनकारित्वात् तस्य पिधानकल्पं तत् बृहन्मध्ये लघूनि प्रतिविशन्ती ति भावः । अहवा—साहूणमित्यादि गुरुणं अण्येमानि सिद्धं ति—आलोचकसाधुबहुत्वात् साहूणं अण्येगालोचनाउ ति एषोऽप्यगीतार्थोऽपि सन् जे सेसा मास ति उद्धरितरूपः पडिसेवओ चेव हाय ति प्रतिसेवनादेवेत्यर्थः ।

असंचए तेरस पया संचए एगारस पया तिणिण दिणा छेओ दिज्जइ ति दिनत्रयं यावदासेवने छेदोऽपि, मास ४, ६ रूपोदयः आयतरपरतरपदाभ्यां चतुर्भंगके चतुर्थशून्यः । अन्ये अन्यतरतर चतुर्थभंगं वृत्ते, उभयोर्मध्येऽन्तरं तु किंच न कर्तुं तरति—शक्नोति अन्यतरतरः जइ इच्छियं करेइ ति ईप्सितं तपःप्रभृतिभेदविकल्पोवलभाउ ति दोसु वि सामत्ये संतेऽन्यतरकारत्वात् पुरुषभेदविगण्यं सलद्धित्तणउ ति गुरुर्योग्यं भक्ताद्यानय ति पच्छित्ते निक्खित्ते कज्जइ ति, प्रायश्चित्तं तस्य स्थाप्यं क्रियत इत्यर्थः, ज वहइ ति यत् करोति तत्थ थोवं पणगाइ इत्यादि लघुमासमापन्नत्वात् तस्य, तथाहि लघुमासलक्षणपन्नस्वस्थानापेक्षया यत् तदधोवर्ति यः पंचकादिभिन्नमासान्तं तत् स्तोकं, तदुपरि च लघुद्विमासादिपारं चिकान्तं यत् तत्परत्वं बहुलघुमासापेक्षया तस्य बृद्धत्वात् एवं लघुद्विमासादिष्वपि हिट्ठिल्लठाणा थोवं ति पणगादि लघुमासांतं थोवं तिगमासियाइ पारं चियंतं बहू एस अविस्सिट्ठो ति लघुपणगादिमासादिसंकीर्णतया प्राप्तः अविशिष्टः लघुपंचकच्छेदो लघुमासादि छेद इति प्रतिनियतविशेषविशिष्टः प्राप्तो विशिष्टच्छेदः । अहवेत्यादि यन्नामकैर्मासैस्तप आपन्नं छेदोऽपि तन्नामकं मासप्रमाणं आपद्यते । तवतियं पि तपस्सिकं, तदेव दर्शयति—मासबभंतरमित्यादिना मासान्तवर्तिलघुपंचकादिभिन्नमासं लघुमास इति ज्ञेयमित्येकं तपः, द्वित्रिमासचतुर्मासरूपं तपः सर्वं चतुर्मासान्तवर्तित्वाच्चतुर्मासाभ्यन्तरमिति द्वितीयं, पंचमास-

पणमासरूपं षण्मासाभ्यन्तरं तृतीयं, एवं छेदोऽपि योज्यमानोऽत्र पक्षे इत्थं योज्यः - यथा पंचमासिषाग्रो उवरि छद्गुह्यं एङ्गुवारा दिन्नं, तत्रो उवरि जइ इक्कं वारं आवज्जइ पुणो वि बोयं वारं, एवं ताव जाव वीसवारा, ताव भिन्नमासछेग्रो पणमाइ पंचविंशतिपर्यन्तरूपो दातव्यः, भूयोऽपि वीसाग्रो परेणं आवज्जमाणे जाव सत्तरसवारा ताव लघुमासछेग्रो कज्जइ, लघुमासप्रमाणपर्यायोऽपनीयत इत्यर्थः। सत्तरसलहमासियाण उवरि पुणो एकैकवारासेवनेन आवन्ने जाव सत्तरस वारा ताव लघुद्विमासद्विकं छेदो दातव्यः, पुणो वि आवन्ने तदुवरि जाव सत्तरसवारा ताव चउलहुच्छेदः कर्तव्यः। तदुवरि आवन्ने जाव पंचवारा ताव लघुपंचमासिग्रो छेदः कार्यः। तदुवरि एकं वारं सेविए छद्गुह्यं छेदो दिज्जइ, एवं सति तपःसमाननामकं मासाभ्यन्तरादिरूपं छेदत्रिकं प्रदर्शितरीत्याऽतिक्रान्तं भवति, एतदेवाह - जम्हा एवमित्यादि सुगमं, एतच्च प्राचीनग्रन्थानुसारेण अत्रैव निगमनवाक्ये भिन्नमासाइ छम्मासत्तेसु ति भणनाच्च सेवनावारासंस्थानमनुक्तमपि दृश्यमिति संभाव्यते। तत्त्वं तु बहुभ्रुता विदंति। उद्धातानुद्धातयोरपत्तिस्थानानि, तेषां लक्षणम्।

अहवा छद्दि० गाहा।

छद्दं मासाणं आरोविद्याणं छद्दिवसा गया, ताहे अन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे जं तेण अद्दवूढ तं सेसिज्जइ, जं पच्छा आवन्नं छम्मासियं तं वहइ, इत्थंभूतेन पंचमासा चउवीसं च दिवसा सोसिज्जति। तं पि ति नूतनं, अहं छसु इत्यादि अन्नं छम्मासियं परिपूर्णं यदि वहतीत्यर्थः, आइमते वा नत्थि ति मासचउमासलक्षणा अघरोत्तराभ्यां काष्टाभ्यां पातितो जइ तस्मिं ति अन्नो, डहिउं ति दग्धं, सहिण ति शृङ्गानि, अप्पाणं न संवारेइ ति असमर्थः स्यात् उग्घायाणुग्घाए पट्टविए ति बहूतः सतः नत्थि एगखंथाइ ति भाष्ययदं एकस्कन्धेन कपोतिद्वयमुद्धोढुं न शक्यते - यप्पेत्थेत्थः (?)। अणवट्टुयारंचियतवाणि वत्ति अनवस्थाप्यं तपः पारचिकं वाऽतिक्रान्तः समाप्त इति, ते यदा ये न विहिते भवन इत्यर्थः। छम्मासिग्रो छेग्रो छम्मासिग्रो धि जस्स परियाग्रो अग्रो तस्स वि मूलं दिज्जइ।

जहमन्ने० गाहा।

पर आह - अहं एवं मन्ये यथा यदुत्तमासं सेवित्ता मासप्रायश्चित्तेनैव शुद्धयति तथा मासं सेवित्वैवं द्विमासादि पारचिकान्तप्रायश्चित्तेनाप्यसौ शुद्धयतीति तदप्यहं मन्ये। प्राचार्योऽप्याह - ग्रामं ति एतदभ्युपगम्यत एवास्माभिर्नात्र काचिन्नो बाधाकं व्येति (?)। यदुक्तं चूर्णी तत् पराभिप्रायः सुगम एवेत्यपेक्षया आचार्याभिप्राययोजनां तु दर्शयति - एस मासियं पडुच्चेत्थादिना भाष्यगाथया हि मासोपेक्षयैव द्विमासादिपारचिकं ताव सा न शुद्धिरुक्ता, एतेन सेसा वि गमा सूइयति द्विमासं सेवित्वा द्विमासादिना शुद्धयतीत्याद्यपि पापं द्विमासादिकदृश्यतम एव चूर्णि-कृता दर्शितं। थोत्रे वा बहु चेव ति अपराधे इति शेषः, आवत्ति सुत्ता नाम शिष्यगतप्रति-सेवनाद्वारेणापन्नप्रायश्चित्ताभिधायीनि, आलोचनाविधिसुत्ता नाम गुरुशिष्ययोर्मध्ये शिष्येण गुरोर्निवेदिते गुरुणा प्रायश्चित्तपर्यालोचनविषयाणि प्रायश्चित्तारोपणं गुरुणा यत् क्रियते एतावत् त्वया कर्तव्यमित्येवं दानरूपाण्यारोपणासूत्राणि, च उरो सूत्रेणैव भणियति यथा - प्रत्येकसगल-मुतं प्रत्येकबहुसमुतं सगलसंजोगमुतं बहुसंजोगमुतमिति, तत्थ जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, जे दोमासियं, तेमासियं चाउम्मासियं पंचमासियं पडिसेवित्ता आलोएज्जा इति प्रत्येकं सूत्रं प्रतिसेवनायां सत्यां प्रायश्चित्तापत्तिः स्यात् इत्यापत्तिस्वरूपमुच्यते।

जे भिक्खू बहुसो मासियं पडिसेवित्ता आलोइज्जा, बहुसो दोमासियं,० बहुसो तर्मासियं,० बहुसो चउम्मासियं,० बहुसो पंचमासियं पडिसेवित्ता आलोइज्जा इति प्रत्येकबहुससूत्रं, जे मासियं च दोमासियं च तेमासियं च इत्यादि सगलसंयोगसूत्रं, जे बहुसो मासियं बहुसो दोमासियं तेमासिय-मित्यादि बहुसंयोगसूत्रं, एतत् सूत्रचतुष्टयमेतावता ग्रंथेन सूत्रोपात्तं व्याख्यातं, इमे ग्रंथग्रो त्ति ग्रंथो व्याख्यानं भाष्यादिकं, तस्मात् षड् बोद्धव्यानि, तं जहेत्यादि जे भिक्खू मासाइरेय-दोमासियमित्यादि बहुससातिरेगसूत्रं ।

जे भिक्खू साइरेगमासियं च साइरेगदोमासियं च एवं सातिरेगमासियं सातिरेगमा-साइणा सह धारेयव्वमित्यादि सातिरेगसंजोगसूत्रं ।

जे बहुसो सातिरेगदोमासियं बहुसो साइरेगदोमासियं चेत्यादि बहुससातिरेकसंयोगसूत्रं मासियं सातिरेकमासियं ।

जे भिक्खू दुमासियं सातिरेकदुमासियं चेत्यादि सकलस्य सातिरेकस्य च संजोगसूत्रं ।

जे भिक्खू बहुसो मासियं बहुसो सातिरेकमासियं च ।

जे भिक्खू बहुसो दुमासियं बहुसो सातिरेगदुमासियं चेत्यादि बहुसस्त सातिरेगस्त य संजोगमुत्त, इत्येवमापत्तिमूत्राणि दस कथितानि, आलोचनासूत्राण्यपि इत्थं वास्यानि, इमं नवमे सुत्ते इति इदमिति सूत्रादर्शोपात्तं पंचमं सूत्रं, आलोचना नवमसूत्रं च, बहुभंगसंकुलमिति नवमसूत्रस्य चतुष्कसंयोगेनान्तयं चतुष्कसंजोगरूपं पंचमं सूत्रं षष्ठं च सूत्रं बहुसरूपं सूत्रोपात्तेना-लोचनादशमसूत्रेन्यचतुष्कसंयोगरूपं तदनेन त्रिगत्सूत्रेषु मध्येऽष्टादशसूत्रेष्वतिश्रान्तिष्वेकोनविंश-तितमे च सूत्रे षष्ठं सूत्रोपात्तं सूत्रमिति कथितं, न पुनर्नाममात्रेण कथनात् गतार्थममीषां दृश्यं, किन्तु पंचमषष्ठसूत्रयोराराधयदर्शोनाथमेवमेतेषु गतेष्वित्युक्तं, तथा चाग्रे आलोचनासूत्राणि व्याख्या-स्यति, तद्व्याख्याते च सर्वेषां सदृशत्वात् सर्वेषां व्याख्यातान्येव भवन्ति, तत्राप्याद्यः आपत्ति-सूत्रचतुष्कभङ्गे नालोचनासूत्रचतुष्कं आरोपणासूत्रचतुष्कं सूत्रेणैवोक्तं व्याख्यातं च द्रष्टव्यम् साति-रेकसूत्रादीनि च षड् व्याख्यास्यति, तत्राप्यालोचनाविषयपंचमषष्ठसप्तमसूत्रव्याख्याने आपत्ति-सूत्रारोपणासूत्रयोरप्येतानि भवन्ति, आलोचना नवमदशमसूत्रयोर्व्याख्याने आपत्त्यारोपणासूत्र-योरपि द्विक व्याख्यानं भवतीत्यारोपणासूत्रद्विके च नवमदशमे यथाक्रमं सूत्रादर्शपित्ते सूत्रे सप्तमाष्टमे भविष्यत इत्यालोचनासूत्राणि षड् व्याख्यास्यति चूर्णिकृत् । इह चालोचनासूत्र-योर्नवमदशमयोरेते पंचषष्ठे सूत्रोपात्ते सूत्रे इति कुतो लभ्यते इति न वाच्यं । भाष्ये होत्यमेवाद-नयोः सूचितत्वात्, इयानि छदुमित्यादि इदं पंचमषष्ठमख्यानं सूत्रोपात्तमात्रापेक्षया द्रष्टव्यम्, न तु प्राग् दर्शितप्रत्येकसगलसूत्रमित्यादि, नामभेदेन सूत्रदर्शकापेक्षया नवमदशमसूत्रयोर् चतुष्कसंयोगास्तेष्वन्तचतुष्कसंयोगसूत्रे इमे, एएसि अथो पूर्ववदिति, पंचमषष्ठसूत्रोपात्तसूत्रयो-रित्यर्थः । अहवा - तं मासादीत्यादि त मासाइपडिसेवियं आलोयणविहीए गुरवो नारुं जं मासाइ-आरोवणाए आरोवयंति तं ति काइयं भन्नइ इति योगः, आरोवणाए वि आरोप्यमानं यन्मासादि हीनाधिकतया यथाहपरं यदारोप्यते तदित्यर्थः । भावग्रो वा निष्पन्नं त्ति रागद्वेषादिना तन्नो मासियं गुरुपणं वा भुं चेत्येणं लघुदशकं चेत्यादि ताव भाणियव्वं जाव गुरु भिण्णमानी त्ति पणगाइयाणं सव्वे दुगसजोगं त्ति ५॥५॥१०॥१०॥१५॥१५॥२०॥२०॥२५॥२५॥

जाइ कुल० गाहा ॥ सा चेयम् -

जाइकुलविणयनाणे दंसणचरणे य खंतिदमजुत्ते ।

मायारहिए पच्छा-णुतावि इय दसगुणोगाही ॥

असुगसुएण त्ति असुकश्रुतेन कल्पनिशीथादिकेन दंसणेणं त्ति सम्यक्त्वेन मायारहिए इत्यस्य व्याख्यामाह - अपलिउंजमाणो इत्यादि अपच्छाणतावीत्यस्यार्थमाह आलोएत्ता नो पच्छेत्तेत्यादि केनापि किंचिदकथनीयमालोचितं, ततः पश्चाद् यो न खेदं याति स इत्यर्थः । सुहुमे आलोएइ नो बायरे एवं कुर्वंतः शिष्यस्य गुरोरेवम्भूतः प्रत्ययो जायते, तमेवदर्शयितुमाह - जो य इत्यादिना, इयरठवियं व त्ति अणंतरठवियं, इयाणि एएसि चैव दोण्ह वीत्यादि आलोचनासूत्र-दशकसंख्यानमध्ये ये पंचमषष्ठसूत्रे तयोरित्यर्थः । जहा पढमवितियसुत्तेसु त्ति यथासूत्रचतुष्टयमध्ये आद्यसूत्रपदसंयोगैस्तृतीयं सकलसंयोगसूत्रं निष्पद्यते यथा च द्वितीयबहुसूत्रपदसंयोगैश्चतुर्थं बहुसं-योगसूत्रं निष्पद्यते तथालोचनाविषयसातिरेकपंचमसूत्रपदसंयोगैः सप्तमं सातिरेकसंयोगसूत्राणां संख्यानमाह - नवमया एगसट्ट त्ति उद्घातिमानुद्घातिमाभ्यां मिश्रसंयोगसूत्रसंख्यानमिदं, इमं चेत्थं यथा - उग्घाइयसंजोगठाणा ५॥१०॥१०॥५॥१ गुण्याः, एते पंच वि अणुग्घाइयसंजोगेण गुणिया, जहासंखं इमे जाया २५॥५०॥५०॥२५॥५॥ एवं उग्घाइयाण एगदुत्तिचउपंचसंयोगो अणुग्घाइय-दुगसंजोगेहि दसहि गुणिए जहासंखं इमे जाया - ५०॥१००॥१००॥५०॥१०॥ उग्घाइयाण सव्व-संजोगा अणुग्घाइयदुगसंजोगेहि मिलिया ३१०, पुणो उग्घाइयाण मव्वसंजोगा अणुग्घाइयतिय-संजोगेहि गुणिया जहासंखं जाया ५०॥१००॥१००॥५०॥१०॥ एए सव्वं ३१० पुणो उग्घाइयसव्व-संजोगा अणुग्घाइयचउक्कसंजोगेहि पचहि गुणिया जहासंखं जाया ॥२५॥५०॥५०॥२५॥५॥ एए सव्वे मिलिया १५५, पुणो उग्घाइयसव्वसंजोगा अणुग्घाइयपंचसंजोगेहि एक्केण गुणिया जहासंखं जाया ५॥१०॥१०॥५॥१०॥ एए सव्वे एककत्तीसं ३१, एवं उग्घाइयाणुग्घाइएहि सव्वसंजोग-मुत्ताणं संखेवो ६६१, सातिरेकाणि सति सगलसूत्राणि तेषां, तानि च त्रिनवतिसंख्यानि, सा च एगतीसत्तिभागेण भवइ, तत्थ एगा एगतीसा य वासातिरेगसगलमुत्ता ॥५॥ उद्घातिमादिविशेष-विकलसामान्यसंयोगसूत्राणि २६ । सर्वाणि ३१ । द्वितीया च उद्घातिमसातिरेगसूत्र ५ । अनुद्घा-तिमसातिरेकसंयोगसूत्र २६ । षड्विंशतिश्च द्विकसंयोगाः १० । चतुष्कयोः ५ । पंचकयोः १ । एतन्मीलने निष्पद्यते, इयं च त्रिनवतिः पूर्वराशेः संयोगसूत्ररूपस्यैत्यस्य ६६१ । मीलिता संजायते । १०५४ । बहुसमुत्ते वि एवं तन्नो दुगुणिए जातं २१०८, पुणो मूलुत्तरदुगेण जायं ४२१६ । दप्पकप्प-द्विकेन गुणने जातं ८४३२ । एवं एय संखाणं पंचमच्छदुसत्तमप्रदुमआलोचनाविषयमुत्तचउक्कस्स आइममुत्तचउक्के वि प्रत्येकसूत्रादिरूपे एतदेव संख्यानं, तन्नो पुणो वि दुगुणिए जातं १६८६४ । एवमालोचना सूत्राष्टके एतावत् सूत्रसंख्यानं जातं, अत एवाह - अट्टमु वि मुत्तेसु इत्यादि आलो-चनासूत्राणां प्रस्तुतत्वात् कथमुक्तं एतिया आवात्तमुत्त त्ति, सत्थं सट्ठत्वाद् येन केनापि अपदेशो न दोषायति संभाव्यते, आपत्तिसूत्राष्टके आरोपणासूत्राष्टके च एतावत्येव संख्या इति त्रिगुणिते पूर्वराशौ त्रिंशत्सूत्रमध्ये चतुर्विंशतिसूत्राणामेतत् सूत्रसंख्यानं जायते ५५०५६२० । एगाइय त्ति एकादि दशान्ताः दशपदाः कर्तव्याः, तान्येव दशपदान्याह -

तं जहेत्त्यादि एगादेगुत्तरिए इत्यादि, एकाद्या एकोत्तरवृद्ध्या पदसंख्याप्रमाणेन स्थाप-नीयाः, कोऽर्थः ? यावन्ति पदान्यभिलषितानि तावत्प्रमाणा राशय एकोत्तरवृद्ध्या व्यवस्थाप्याः,

गुणकार ति दशकादिभिरेकान्तैरघोवर्तिभिः भागहारे लब्धस्य उपरितनैरेककादिभिर्दशकान्तैर्गुण-
नात् गुणकारा एते उच्यन्ते, तथा ह्युपरितनपंक्तौ व्यवस्थितेन दशकेनापरस्य रूपस्य सकलस्य गुणेने
जाता १० । एककेन भागे हूते भागलब्धा १० । एकक संयोगा इत्यर्थः । तत्र दशकेन रूपस्य
गुणनाद्दशको गुणकारो जातः, एककश्चाधोवर्तिभागहारकः, तथायं दशको नवकेन गुणनाद्
गुण्यनवकश्च गुणकारनवकाधोवर्ती द्विको भागहारकः, इत्येवमन्यत्रापि गुण्यगुणकारभागहार कल्पना
कार्या, तथापि शिष्यहितार्थं सप्रपञ्चं दश्यते तत्र दशकस्य गुण्यं रूपं जातं ५० । भाग एकेन १
लब्ध १०, नवकस्य गुण्यं १० । जाताऽऽय ६०, भागो द्वाभ्यां २ लब्धं ४५ । अष्टकगुण्यं ४५, जातं
३६०, भाग ३ लब्धं १२०, सप्तकस्य गुण्यं १२० गुणिते जातं ८४०, भाग ४ लब्धं २१०, षट्कस्य
गुण्यं २१०, गुणिते जातं १२६०, भाग ५ लब्धं २५२, पंचकस्य गुण्यं २५२ गुणिते १२६०, भाग
६ लब्धं २१०, चतुष्कस्य गुण्यं २१०, गुणिते ८४०, भाग ७ लब्धं १२०, त्रिकस्य गुण्यं १२० गुणिते
३६०, भाग ८ लब्धं ४५, द्विकस्य गुण्यं ४५, गुणिते ६० भाग ९ लब्धं १०, एककस्य गुण्यं १० दशैव
च, ते दशानां दशभिर्भागे हूते लब्ध एकक दशयोग एक एव, अत्र चोभयमुखराशिद्वयापेक्षया
पङ्क्तिरपरा आगतफलानामुत्तिष्ठते यथा १।१०।४५।१२०।२५२।२१०।१२०।४५।१०। तथा च पडिराशिष्ये
ति द्वितीयस्थाने धृत्वा गुणय ति यदायतफलं तस्य पाश्चात्यांकेन तथा च नवकाद्दशकः पाश्चात्यो
भवति, तस्माच्च सप्तक इत्यादि, येन गुणितस्तदधस्तनेन भागे हूते यद् लब्धं तत् फलं, आगत-
फलानां मीलने २०३३, प्रतिसेवनाशब्देन हि नवममापत्तिस्मृतं सूच्यते, आदिग्रहणालोचनारोपणा-
सूत्रस्यापि नवमस्य भेदा ज्ञातव्याः, एष चैवोग्धायेत्यादि तत्रोद्धातिमानुद्धातिमाभ्यां मिश्रयोगे
यावन्त उद्धातिमानां दशाभिरेककयोः पंचचत्वारिंशदादिद्विकादियोगैश्चानुद्धातिमानां दशापि
दश पंचचत्वारिंशदाद्यराशयो गुणिता यत्संख्यां प्रपद्यन्ते तदुत्तरत्र चूर्णकृत् दर्शयिष्यति, अत्रताव-
दन्यदपि करणं पाश्चात्यभंगकानयनविषयं व्याख्यायते -

उभयमुहं रासिदुगं, हेट्टिन्लान्तरेण भय पढमं ।

लद्ध हरासि विभक्ते तस्सुवरि गुणंतु संयोगा ॥

आद्यपादः प्रतीतः अष्टस्तनादन्त्याद् योऽनन्तरस्तेन प्रथममधस्तनादुपरिवर्तितं भज,
नाम तस्य हारः, अधोराशिना अनन्तरेण विभक्ते सति उपरितनराशौ यल्लब्धं तेन लब्धेन तस्य
भागहारकानन्तरराशौषपरि योऽधस्तदगुणनं कार्यं, गुणिकोऽनन्तरस्तेन भागे हूते प्रथमस्य
पंचचत्वारिंशदरूपस्य लब्धा १५, तेनाष्टकस्य त्रिकस्योपरिवर्तितो गुणेने जातं १२०, एवमन्यत्रापि
दृष्टव्यं, द्वितीयं च करणं यथा -

उभयमुहं रासिदुगं, उवरिन्लं आइलेण गुणिऊण ।

हेट्टिन्लभायलद्धे उवरि ठिए हुंति संजोगा ॥

व्याख्या - आद्यपादः प्रतीतः, उपरितनमादिमेन गुणयित्वा हिट्टिल्ल ति आदिभात्,
गुणकाररूपादधोवर्तिकोऽधस्तनस्तेन भागे हूते यल्लब्धं तस्मिन् भागहारकादुपरिस्थिते संयोगमीनं
भवति ३६१, अत्र ह्येकानां वामगत्या नयनांऽशकस्यादावपरांगो नास्तीत्यादित्वं, तदपेक्षया
नवकस्य कल्पते, तदपेक्षया चाष्टकस्यादित्वमिति एवं तावद् यावदैककस्यादिमत्त्वं द्विकापेक्षयति,
तत्र ह्युपरितनो दशकस्य गुण्यते, आदिमे नवके जातं ६०, नवकादधोवर्ती द्विकस्तेन भागे हूते नवक्याः
लब्धं ४५, नवकादुत्सार्य द्विकाद्युपरिस्थिता सा एतावन्ते द्विकयोगाः उपरितना पंचचत्वारिंशत्तमा-

दिमेनाष्टकेन गुणयेत् जातं ३६०, अष्टकादधोवर्ती त्रिकस्तेन भागे हूते लब्धं १२०, अष्टकमुत्सार्य न्यस्यते १२०, इत्येवमन्यत्राप्युपरित्वादिमत्वाद्यस्तनादिकं स्वबुद्ध्या परिभाष्य सर्वं करणीयं, अत्र च करणे द्विकादिसंयोगपरिसंख्यानमेवावच्छति, एककसंख्यानं न्वतो दृश्यं, सामर्थ्यलब्धत्वात्तस्य बोध्येददेशकस्य शेषं परमेकं सकलं न्यस्यते, तदपेक्षया दशक आदिमस्तेन तदगुण्यते जाता, १०, दशकाद्य एककस्तेन भागे हूते लब्धं १०, ते उपरिभागहारका न्यस्यन्ते, एवमन्यत्राप्येकोनर-बुद्ध्या वृद्धयोः पदसंख्याया अग्रेऽपरमेकं रूपं सर्वत्र न्यसनीयं तस्य च पूर्वप्रदशितप्रक्रियाविधाने कृते एगसंयोगे संख्यानं लभ्यते । अहवा - तीसपयाणेष्वप्यादि नवमालोचनासूत्रविषयमाणामित्यर्थः, न केवलं दशपदेष्वेतेष्वपि करणमिति । उभयमुहं रासिदुग्भित्यादिकं पूर्ववदित्यर्थः, स्थापना कार्या एककादारभ्य एकोत्तरबुद्ध्या अंकास्तावद् न्यसनीया यावत् त्रिशत्संख्यं - स्थानं, नवरं त्रिशतोऽग्रे रूपं न्यसनीयं, त्रिशतोऽधस्तु एककादारभ्य तावद् नैयं अंका यावदुपरितनैककादारभ्य त्रिशकः ततः उवरित्तलं आदिमेन गुणिऊण इत्यादिकमेण कृते एककयोगाः ३०, द्विकयोगाः ४३५ इत्याद्यंक-स्थानानि भवन्ति, सर्वाग्रं त्रिशत्पदानां सूत्रसंख्यायाम् १०७३७४१८२३ । नवरं - जत्येत्यादि एककादि-संयोगेन निष्पन्नान् आगतफलरूपान् त्रिशत् पंचत्रिशदविकचतुःशताद्यान् भागहारकान् विन्यस्या-नुद्धातिमैककद्विकादिसंयोगफलं त्रिशदादिकं तैगुणयेत्, त्रिशतो त्रिशत्स्थानेष्वेकैकस्थानगतं फलं गुणयेत्, एवं त्रिकयोगादिफलेन च गुणयेत् तावद् यावत् त्रिशद्योगफलेन त्रिशत्स्थानगतं फलमिति । इमं निदरिसणं ति निदर्शनमेतत्, सामान्ये न (?) मिश्रसंयोगफलगुणनतायां न तु त्रिशत्पदागतमिश्र-संयोगफलगुणनविषये तत्रोद्धातिमानमेककयोगा दशपञ्चत्वारिंशदादयश्च द्वायादिसंयोगविषया, एते गुणकाराः, एतेषु च गुणकारेण दशाप्यनुद्धातिमसंयोगफलान्येककबुद्ध्यादिसंयोगविषयाणि गुण्यन्ते, तत्र दशकेन दशादी यथाक्रमगुणने जातं १०० । ४५० । १२०० । २१०० । २५२० । २९०० । ३२०० । ४५० । १०० । १० । एते उग्धाद्य चैककसंयोगैर्दशभिर्दश पणयाला इत्यादिकस्य गुणने संपन्ना, एकत्र मीलने जातं १०३३० । अधुना उग्धातिमद्विकसंयोगैः पञ्चचत्वारिंशत्सङ्ख्यैरनुद्धा-तिमानामेकबुद्ध्यादिसंयोगफलानि गुण्यन्ते । जातं ४५० । २० । २५ । ५४०० । ६४५० । ११३४० ।

सेसा उवरिभुहुतति शेषाणि षट्सप्तमाष्टमनवमसंयोगफलानि पाश्चात्यगत्या यथाक्रमं पञ्चचत्वारिंशता गुणितानि चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमसंयोगगुणितफलसंख्यानं भवन्ति, दशकसंयोगे चैक-स्मन् पञ्चचत्वारिंशदेव एककेन गुणने तदेवेति न्यायात् तदत्र पञ्चकदशकसंयोगफलं ११३८५, एतद्रूपं पृथगुत्सार्य प्रथमसंयोगादिफलं चतुष्कं सम्मील्यते जातं १७३२५, अस्य द्विगुणने ३४६५० । पञ्चकाद्युत्सारितफलमीलने जातं ४६०३५ । एवमुद्धातिमत्रिकयोगैः १२० एतावद्भिर्गुणने दशानां जातं १२०० । ५४०० । १४४०० । २५०० । एकत्र मीलने ४६२०० । द्विगुणने ६२४०० । पञ्चकसंयोगे ३०२४० । दशकयोगश्च १२० । एतद्रूपमुभयोः पूर्वराशी मीलने १२२७६० । उद्घा-तिमचतुष्कयोगफलेन २१० गुणने दशादीनां जातं २१०० । ६४५० । २५२०० । ४४१०० । चतुर्गमिकत्र मीलने जातं ८०५५० । द्विराहते १६१७०० । पञ्चकयोगफलं ५२६२० । दशकयोगफलं च २१० । एतद्रूपमुभयोः पूर्वराशी प्रक्षेपे आगतं २१४८३० । अनुद्धातिमपञ्चकसंयोगफलान्यपि दशादीन्युद्धातिमपञ्चकसंयोगफलेन २५२ । एतावद्रूपेण गुणनीयानि, ततो जातं २५२० । ११३४० । ५२६२० । ६३५०४ । अयं पञ्चकयोगो विभिन्न उत्सारणीयः । षट्सप्तमाष्टमनवमफलानि च यथाक्रमं पञ्चकसंयोगगुणितानि चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमसंयोगगुणितफलसंख्यां प्रपद्यन्ते, ततः चतुष्कमीलने ६७०२० । द्विराहते जातं १६४०४० । एतस्य मध्ये दशकयोगफलं २५२ । पञ्चयोगफलं च ६३५०४ । एतद्रूपमिलितं ततः पञ्चकयोगसर्वाग्रिमिदं २५७७६६ । अमुं विभिन्नमुत्सार्य एकद्विकत्रिकचतु-

६कसंयोगसर्वाग्रफलानि १०२३० । ४६०३५ । १२२७६० । २१४८३० । अमीषां मीलने जातं ३६३८५५ । षष्ठसप्तमाष्टमनवमसंयोगफलं सर्वाग्रमप्येतावदेवातो द्विगुणिते जातं ७८७७१० । पंचकसंयोगफलोत्सारितराशेः प्रक्षेपे जातं १०४५५०६ । एतच्च संख्यानमेककादीनां नवान्तानां संयोगानां दशकसंयोगफलानि च दशादीन्येकगुणानि तावन्त्येव मिलितानि च तानि १०२३ । अस्य च पूर्वराशौ प्रक्षेपे जातं १०४६५२६ । एतदेवाह — मीसगसुत्तसमास इत्यादि, एवं कएसु त्ति दशसु पदेषु भंगकरद्वारेण विस्तारितेषु यदि सा चेवेत्यादि आरोपणासूत्रदशकस्य यद्यप्यत्र सामस्थेन पूर्वसूत्रातिदेशो दत्तस्तथाप्युच्चारणं अर्थविशेषभंगकसंख्यानादिकं च प्रतीत्य स द्रष्टव्यो न पुनः सर्वथा, तथा चारोपणासूत्रविषयेऽन्यदपि बहु वक्तव्यमस्ति । तथाहि प्रायश्चित्ते आरोपिते गुरुणा तदुद्धृतं आलापसंभोगादिना परिह्रियते शेषसाधुभिरिति पारिहारिकत्वं, तथा चारोपणा पंचविधा भवतीति, तस्याः स्वरूपं तथा मासाद्यं पच्छित्तं वर्तते जं अन्नं अंतरा आवज्जइ मासादिकं नत्थ जं जम्मि दिवसग्गहणप्पमाणं कज्जइ इत्यादिकमर्थः, जातमारोपणासूत्रविषयं सर्वमित्त ऊध्वं सूत्रेण भाष्येण चूर्णाय च भणियते । इयाणि सुत्तत्थाण त्ति पुच्छा इति शेषः ।

दाणे दवाणं गाहा १ ॥ (पृ० ३७६ चतुर्थ भाग)

उपह्रियति संस्तारकादेरुपढौकनेन अग्येनास्यादानमनुपहितविधिः जत्तियं चेव भणइ करेइ व त्ति सप्तमु भंगकेषु वक्त्वव्यवस्थापितपदेषु च विधिर्भवति ततश्चाष्टमभंगे सर्वजुत्वादानु-
शास्त्रादीनां त्रयाणां करणमेव सप्तमु च मध्ये यस्मिन् यावन्ति वक्त्राणि तावन्तः सर्वे निषेधाः शेषाश्च तदव्यतिरिक्ता ये ऋजवस्तेषु यदाचार्य उपग्रहादिकं कुरुते तृतीयादिपुल्लभादिकं यद्भणति-
तत् सर्वं मुत्तकलमिति सूचितं दृश्यं गमनिकामात्रमिदमन्यथा वाऽभ्यूह्य आवकप्ये इत्यादि
अपवादपदे छद्दिणज्जोसो कज्जइ इति भावः पूर्वश्च अन्यापेक्षया आद्यश्च अहवेत्यादि अत्र पक्षे
पूर्वस्मिन्नाद्यं सति अनुपश्चाद्भावी अनुपूर्वद्विकः ततः पूर्वं आद्यत्रिकापेक्षया अनुपूर्वो द्विको यस्यां
परिपाटयां ता सार्वानुपूर्वीति विग्रहः, यदा पूर्वस्मिन् अनुः—पूर्वः ततः स एवेति पूर्वक एव स मासः
कार्यः, यथा पूर्वस्याद्यस्य त्रिकापेक्षया द्विकस्यानुपूर्वद्विको यस्यामिति विग्रहः, मत्वर्थीयो वा इन्-
नवरं तदाक्रम इति दृश्यं पुनर्वपच्छुत्थरणविकल्पेण च उभंगो कायव्वो त्ति ।

पुव्वं पडिसेवियं पुव्वं आलोइयं । पुव्वं पडिसेवियं पच्छा आलोइयं ।

पच्छा पडिसेवियं पुव्वं आलोइयं । पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं ।

वितियतितियभंगा मागाविणो नरस्स हुंति मायासद्भावं च स्वत एवाग्रे भावयिष्यति
किमर्थं पुनरसौ प्रथमत एवानुज्ञां याचते यावता यत्रासौ यास्यति स्थास्यति वा तत्रैवासावनुज्ञां
लप्स्यते इत्याह — एवं तस्य गीयत्था संभवाउ त्ति तृतीयभंगशून्य इति तथा ह्याचार्यसद्भावे सति
यथा प्रथमालोचते तथा विकृतादिकं गृहीत्वा गतः सन् पश्चादपि तदन्तिके आलोचिते मायार-
हितश्च पश्चात् प्रतेसेवते इति शून्यता, पश्चादप्यालोचनसम्भवात् पूर्वमेवालोचते इत्यवधारण-
पक्षस्य पदस्याघटनान्, अपलिउंचि वा भावे त्ति मायारहितत्वसद्भावे इत्यर्थः, द्वितीयतृतीयौ च
मायामद्भावे स्तः, भावशब्दात् पाश्चात्यान्त्यवर्णस्य दीर्घता वाक्यद्वयेऽपि प्राकृतत्वात् ।

अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं, ।

पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचियं पलिउंचियं चतुर्थभंगः ।

अपलिउंच० गाहा ॥६६२४॥

भाष्ये यद्यप्यपलिउंचणमिति नोक्तं तथापि पलिउंचणं माया, तन्निषेधपरो निर्देशो द्रष्टव्यः, सूत्रे अकारयुक्तपदसदभावादित्याह, पलिउंचणमित्ययं प्रतिषेधदर्शनादिति, पलिमत्ताए निउत्तं त्ति गोभक्षे नियोजिता क्वचित् सूत्रादर्शे आदिचरिभावेव भंगौ निर्दिष्टौ, द्वितीयतृतीयौ चार्थलभ्याविति, यदुक्तं प्राक् चूर्णा, तदधुना सूत्रकारः स्पष्टीकुर्वन्नाह - अपलिउंचिय इत्यादि, अस्यार्थ इति तं असणादिगहणेति तं सामाचारीभासणाभिगमहेणातिश्रान्तः प्रायश्चित्तं भवतीति विशेषयति तथाह्यासनं गुरोर्नीचमात्मीयासनसमं वा यदि ददर्शितं तदा सामाचार्युल्लंघनमेव कृतं भवति, एवमित्यादि, वृषभशब्देनेहोपाध्यायो ग्राह्यो, भिक्षुश्च सामान्ययतिरेव, आलोचनाहं इति शेषः। नवरं - कोल्हुगाणुगे विशेष इत्यादि आलोचकस्य कोल्हुगाणुगस्याचार्यादेरालोचनाग्रहणकाले आसनं प्रतीत्य विशेषो भवति, निषद्या चेहोपग्रहिकी पादप्रोक्षणकल्पैव दृश्या, तत्र कोल्हुगाणुगो कोल्हुगाणुगसमीवे उक्कुडुप्रो आलोइतो सुद्धो, पायपुंछणणिस्ज्जोवविट्ठो पुण आलोएंतो असुद्धो, मीहवमभाणुगं वाऽऽलोचनाहं प्रतीत्य सो निषद्यापायपुंछणोवविट्ठो वि सुद्धो इत्येषा भजना। अथ सिहाणुगतम् वृषभस्य, सिहानुगतवं वृषभाणुगत्वे भिक्षुश्च कथं घटते अनुचितत्वात् ? इति चेद्, उच्यते, आलोचकेन ह्याचार्येणापि निषद्यादिविनयप्रतिपत्ति कृत्वैवालोचना ग्राह्या नान्यथेति, भिक्षुवृषभयोरपि सिहाणुगत्वादिव्यपदेशस्तत्कालं प्रतीत्य संगच्छते। अत एवाह - जो होइ सो होउ इत्यादि सिहाणुगत्वादिका च पारिभाषिकी संज्ञा, वसभस्स वसभाणुगस्स त्ति एक कप्पे उवट्ठि-नस्येत्यर्थः। भिक्षुस्स कोल्हुगाणुगस्स त्ति पायपुंछणे उवविट्ठस्स भिक्षुपादनिषद्यात्वासनग्रहेण द्वाभ्यां तपः कालाभ्यां प्रायश्चित्तं गुरुकं भवति।

दोहि वि० गाहा ॥६६३१॥

एतस्या पूर्वार्धमाचार्यं प्रतीत्य सुगमम्। उत्तरार्धव्याख्यामाह - वसभाणवीत्यादिना। प्रथं दोहि वीत्यादिगाथाया वृषभमालोचनाहं प्रतीत्य प्रायश्चित्तनिरूपणपरताया भणितायाः प्राग् अपरं यथा द्वयं भाष्ये दृश्यते तत् किमिति नामग्राहं न व्याख्यातं - यावता तत्स्परिहारेण दोहि वीत्यादिगाथैव निर्दिष्टा।

उच्यते - क्वचिद् भाष्ये गाथाद्वयं भवति क्वचिच्च नेति ततश्च यत्र तत्र भवति तत्प्रतीत्य तदर्थो मुक्तक एव चूर्णिकृता स्वतन्त्रतया कथितः तमभिधाय दोहि वीत्यादि भाष्यदृष्टा गाथापत्तौ यत्र च तदभवति तत्र पाठान्तरत्वात्तन्नामग्राहं तां गाथां गृहीत्वा विवरीपुरिदमाह, क्वचिन् पाठान्तरं एवमेव य गाहेत्यादि, तच्चेदं -

एमेव य वसभस्स त्रि आयरियाईसु नवसु ठाणेषु।

नवरं पुण चउलहुगा, तस्साई चउलहु अंतं ॥६६३२॥

उत्तरार्धव्याख्या यथा - तस्य सिहाणुगवृषभस्यालोचनाहंस्यालोचकं आलोचके आदिभूते सिहाणुगे आयरिए ४, वसभाणुगवसभस्स मध्यमस्थाने सिहाणुगपदभूते आचार्यं ४, कोल्हुगाणु-वसभस्स अन्त्यस्थाने आदिभूता सिहाणुगा आचार्यं ६, द्वितीयगाथा, यथा -

लहु लहुओ सुद्धो, गुरु लहुगो य अंतिमो सुद्धो।

छलहु चउलहु लहुओ, वसभस्स उ नवसु ठाणेषु ॥६६३३॥

भिक्षुमप्यालोचनाहं प्रतीत्य -

एमेव य भिक्षुस्स वि, आलोपंतस्स नवसु ठाणेषु ।

चउगुरुगा पुण आई, छग्गुरुगा तस्स अंतम्मि ॥६६३४॥

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थम् -

एमेव य भिक्षुस्स वि, आलोइंतस्स नवसु ठाणेषु ।

चउगुरुगा पुण आई, छग्गुरुगा तस्स अंतम्मि ॥६६३५॥

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थमेव मुक्तलं चूणिक्कत् कथितवान्, क्वचित् पुस्तकेऽस्या दर्शनात्, अत एव पाठान्तरत्वेन एतामपि गृहीत्वा व्याख्यातवान् । एव विभागो एकासीत्यादि, सीहाणुगं आयरियं पडुच्च आलोयणाग्राही आयरिमो तिहा - सी० व० को० ३ ।

वसभाणुगं सूरि पडुच्च आयरिमो आलोयगो तिहा - सी० व० को० ३ ।

कोत्तुगाणुगं पडुच्च सूरि आलोयणा आयरिमो तिहा सी० व० को० ३ सर्वे ६ । आयरियं आलोचनाहं प्रतीत्य आलोचकवृषभोऽपीत्थं नवविधो वाच्यः, ततो भिक्षुरप्येवं नवविधो वाच्यः । प्रत्येका समविशतिर्नवरम्भाचार्यस्यालोचकस्य प्रायश्चित्तं उभयगुरु, वृषभस्यालोचकस्य तपोगुरु, भिक्षुरालोचकस्य कालगुर्विति वाच्यम् । एवं वृषभो आलोयणाहं-क्षिप्वा सी० व० को० । एतदधो आलोचनाग्राही सूरिः पूर्ववद् नवधा वाच्यः, वृषभोऽप्यालोचना-ग्राही नवधा वाच्यः, भिक्षुरपि नवविध इति द्वितीया समविशतिः, तृतीया तु भिक्षुमालोचनाहं प्रतीत्य आचार्यवृषभभिक्षूणां नव नव पदैः समविशतिरिति ।

जे त्ति य साहु त्ति जे इति निर्देशः साधुसूचकः । जाणि य तेरसपयाणि एसा पारंचियवज्जिय त्ति पारंचिकमेकवारैव दीयते इति तस्यैकविधत्वात् तद्वर्जनं, शेषपदानि वाश्रित्यानेकविधा प्रस्थापना भवति, तेषामनेकवारं प्रदानात् । तं कसिणं ति तत्सर्व-मारोप्यते । अणुगहेण वि त्ति तत्साधुगहं छण्हं मासाणमारोविषाणं छद्दिक्सा गया, ताहे अन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे जं जेण अद्धवुहं तं भोसिज्जइ, जं पच्छा आवन्नं छम्मा-सियं तं वहति, एत्थ पंचमासा चउवीसं च दिवसा जेण भोसिया एयं अणुगहकसिणं, निरणुगहेण व त्ति जहा छम्मासिए पडुविए पंचमासा चउवीसं च दिवसा वूढा ताहे अन्नं छम्मासियं आवन्नो तं वहइ, पुब्बिल्लस छद्दिणा भोसो ।

मानासनाम्मास इत्यस्य वाक्यस्यान्वर्थमाह - अत्यानीत्यादिना (?) इह शून्यातावित्यस्य निपातनाम्मास इति, असतीति वाक्यं चूणिवाक्यत्वात्, यद्वा भौवादिकोऽस गत्यर्थोऽप्यने-कार्यत्वात् व्याप्यर्थस्तस्यैदं रूपमिति, मानाद्वेति स्वमानेन द्रव्यादीन् प्राप्नोतीति मासः, तथाहि मासमिषण्णं द्रव्यं मासिकमुच्यते, इति स्वमानेन द्रव्यप्राप्तिः, क्षेत्रे च तास्थ्यात् तद्व्यपदेशो द्रष्टव्यः । परिहायंत इति चूणिक्त्वात्, वाक्यं तु - परिहृत्यत इति ज्ञेयं, तिष्ठन्त्यस्मिन्निति तपोविशेषे इति - स्थानं आदिकभण्यं च उदीरणं चेत्यादि द्वन्द्वः, अन्तं प्राघन्तरूपं राति गृण्हातीति अंतरं मध्यमुक्तं, प्रतिदानयोः प्रतिसन्निधानयोरिति नाव-बुध्यते मूलगुणादेः प्रतिसेवनोच्यते, आङ्मर्यादयाऽशुद्धनिजाभिप्रायप्रकटनं सन्दर्शनम् आलो-चनम् । प्ररज्यते तमसा व्याप्यते या सा रात्रिः निपातनात्, रज्यते वा स्थ्यादौ प्राण्य-

स्यामिति रात्रिः, रात्रिशब्दस्य रागः प्रवृत्तिनिमित्तं, रागश्च दिवसोऽपि भवतीति रात्रिशब्दो-
पादानेन तदपि ग्राह्यम्, उभयोऽपीति दिने रात्रौ च इह छम्मासियं परिहारद्वयं पटुविए -
अन्तरा दो मासा पडि बीसइराइया आरोवणा इत्येकं वाक्यम् । द्वितीयं च आइ मज्जे भवसाणे य
सट्टं इत्यादि तावद् यावत् सबीसतिराइया दो मास ति ततः आदिवाक्येन सामान्यतः विशत्यारो-
पणाऽऽरोप्यते विशेषतश्च प्रायश्चित्तनिमित्तकवस्तुनो विवक्षायामनूनातिरिक्तमारोप्यते यदि तदा
दो मासौ विशतिरात्रिन्दिवाभ्याधिकावारोप्यौ, प्रथमासेवनायां तदुपरि वा सेवने त्रिशतिवृद्धिरेव
प्रतिपदं कार्यं इति । प्रतिसूत्रं सामान्यारोपणं च प्रथमासेवनवारां प्रतीत्य द्रष्टव्या ।

तेण मूल वस्तुणा सहेत्यादि यस्मिन् शय्यातरपिडावाहतादिदोषदुष्टे द्विमासिकापत्तिस्त-
न्मूल वस्तु, तथाचोक्तं प्राक् सामारियपिडाहडे दोमासियं ति प्रायश्चित्तनिमित्तकं वस्तुद्विस्वान्यूनाति-
रिक्ते मारोपणयोः परमाणु भवतीत्यस्यैवार्थमाह - न आवत्तिमाणमित्यादि, आपत्तिर्मासिकद्वयरूपा
तद्रूपं मानं न ।

कोऽर्थः ? मासिकद्वयं शुद्धं, न केवला विशत्यारोपणा, किन्तु परमन्यदेवारोप्यते, विशत्य-
धिकमासद्वयमित्यर्थः । ग्रहवा - इमो अन्नो वि आदेशो इत्यादि अत्र व्याख्यानेन प्रायश्चित्त-
निष्पत्तिकारणं वस्तुचरतेऽर्थशब्देन किन्त्वर्थः प्रयोजनं तच्चात्मनः परस्य वा वैयावृत्यादिकरणरूपं
तस्मिन् हि क्रियमाणे न प्रायश्चित्ततप उद्बोद्धुं शक्यते, अत उभयतरगादिकं कारणं प्रतीत्य
प्रथमवारोप्यते विशत्यारोपणान्यूनातिरिक्ता रोपणीया, एषा च ठवियमा कज्जइ ।

उभयतरागादिगोति काउ पुणो पडिसेविए शठ इति कृत्वा मासद्वयं दीयते, पश्चात्त्यथा विशत्य-
युक्तं एगम्मि प्रायश्चित्ते वुज्जमाणे अन्तरा अग्रमावज्जइ, तं मज्जवत्तियं ठवियं कज्जइ ति काउं ठविय-
सन्नं लभइ तत्प्रतिपादका सुत्ता ठवियसुत्ता, तं पि य वुज्जमाणे पटुवियसन्नं पि लभइ, एवं च वुज्जमा-
णपच्छिन्नवत्त्वव्याभिहाइणो सुत्ता पटुवियसुत्ता भवन्ति, अन्तरा आवज्जाणं तेसि चैव वुज्जमाणवत्त-
त्त्वया प्रतिपादनपरा सुत्ता ठवियसुत्ता । सबीसतिराइयं दोमासियं परिहारद्वयमित्यारभ्य ठविय-
सुत्ता तावत् यावद् दसरायपंचमासियं परिहारद्वयं पटुविए अणगारे जाव तेण परं छम्मासा
इत्येतदंतम् । एतावता च षण्मासिए पटुविए द्विमासापत्तिलक्षणसूत्रमाश्रित्य ठवियसूत्राभ्युक्तानि,
इत ऊर्ध्वं षोडशमासविषये चूर्णिसूत्राणि वाच्यानि, तान्येव भणितुमुपक्रमते ।

इयाणि अत्यवसग्रे इत्यादिना, एतानि वाच्यत्वादियाणि मासियसंयोगसुत्ता लक्षणपत्ते-
त्यादिवाक्यमिति स्थापनासूत्रादशसूत्रसत्कार्यतः अत्र च षण्मासिकादिपदमध्ये चूर्णौ द्विमासिकपद न
भवति । षण्मासिकं प्रस्थापितं प्रतीत्य द्विमासिकस्य सूत्रैवाभिहितत्वात्, सव्वाग्रे लक्खणाग्रे पत्ताग्रे
ति सर्वाः संयोगसूत्रजातयो लक्षणात् प्राप्ताः सामर्थ्याल्लज्जा इत्यर्थः । षण्मासिके प्रस्थापिते
द्विमासिकलक्षणसूत्रोक्तद्विकस्थानव्यतिरिक्ता त्रिकादिसंयोगा अन्त्याः आद्याश्च द्विकान्यास्यान्त्या
एकरूपाः, तद्वा एसि पि सव्वासि ति एतासां मासिकादिषण्मासान्तानां सर्वासं सूत्रजातीनां
स्थापना १ २ ३ ४ ५ ६

१ २ ३ ४ ५ ६

१५, २०, २५, ३०, ३५, ४० ।

आद्यः प्रस्थापितपंक्तिः, द्वितीया आपत्तिपंक्तिः, तृतीया आरोपणापंक्तिः । मासिए
पटुविए चाउम्मासिए पडिसेविए तीसइमा आरोवणा से अट्ठा दिज्जमागा मासचउक्कं तीसा-
रोवणाय मिलियं पंचमासा भवति । एतदेव ठवियासुत्तमित्थं पदे भवति । एयं ठवियसुत्तं पटुवणासुत्तं
किञ्च भणइ - पंचमासियमित्यादि, तेण परं पंचूणा चत्तारि मास ति अग्रे आरोवणा पणुवीसिया

सट्टा दिक्कमाणा चत्तारि मासा तहाहि सट्टी इत्यादिन्यायेन मासा ३ आरोवणा २५ पंचदिशा हीणचत्तारिमासा ।

इयानि मासियं संजोगे सुत्तेत्यादि सूत्रादसंज्ञाणि छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविण् अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं सेवित्ता इत्याद्यारम्भ तावद् यावद् अट्ठ मासियं जाव तेण परं छम्मासा इत्येतदन्तानि वाच्यानि, एतान्येव चूर्णिकारो व्यलीलिखत् पट्ठविया सुत्तं त्ति एतानि प्रदर्शितरूपाणि प्रस्थापितसूत्रा ण गतानि । अधुना पट्ठवियसुत्तेसु जे ठवियमुत्ता आसी ते भन्ति- दिवड्ढोमासियमित्यादि, अत्र कञ्चित् ठवियमुत्ता इति पाठः कञ्चित् पट्ठवियमुत्तं त्ति, तत्राद्य उत्तरसूत्रपातनोक्त्या योज्यः, यत्र त्वितरसूत्रपादवादानिगमनतावती एवं छम्मासाइपट्ठविण् इत्यादिकः षण्मासान्ते यथाकर्म ॥१५॥२०॥२५॥३०॥३५॥४०॥ इत्येवंरूपा विकला स्थापिता सती स्वस्थानवृद्ध्या षण्मासावसाना यका भवति, सो उक्तेति तथाहि षण्मासे प्रस्थापिते यदारोपणं पाक्षिकी आरोप्यमाणं सट्ठं इत्यादि न्यायेन दिवड्ढो मासो आरोविज्झइ, इतीयं विकला परिपूर्ण-मासानामभावात् यद्यपरः पक्षः स्यात् तदा परिपूर्णमासद्वयं किल भवे, स च नास्त्यतो विकलत्वं तथा स्थापिता चेयं, तथाहि जो सो दिवड्ढो मासो ठवियपट्ठविणो यदव मासः प्रतिसेवितः जाया दो मासा । दोमासिण् पट्ठविण् पुणो वि मासियं सेवइ, इत्येवं पाक्षिकमारोपणेन तावद्वाच्यं यावदपरे षण्मासा पूर्वन्त इति स्वस्थानेन मासिकलक्षणेन वृद्धिरिति । यद्यपीहापरा मासासेवनेन द्विमासादि विजातीयं जायते तथाप्येकदोषदुष्टं मासिकयोग्यं किञ्चिदासेवितं येन मास एव भवति, ननु दोषद्वयदुष्टं सेवितं शय्यातरिण्डं सोऽप्याहृतदोषदुष्टं इति, येन युगपदेव स मासिकद्वयमा-पद्यते ततो मासस्य प्रस्थापितत्वाद् मासस्यैव च सेवनात् स्वस्थानवृद्धित्वणापरामासेवनेन प्रायश्चित्तवृद्ध्या षण्मासावसाना वृद्धिरुक्ता, अधुना तु परिपूर्णमासानां प्रस्थापनद्वारेण रोपणा स्वस्थानवृद्ध्या परस्थानवृद्ध्या सा प्रोच्यते विक्रममासप्रस्थापनाकृतः सकलमासप्रस्थापनकृतश्च पातनिकायां विशेषः, तत्र मासे प्रस्थापिते परमासानां प्रतिसेवने पक्ष पक्ष आरोपणेन यत्र षण्मासा पूर्वन्ते सा स्वस्थाने वृद्धिः । एवं द्विमासादिष्वपि योज्यम् । यथा मासिके प्रस्थापिते द्विमासिके वा सेविते विज्ञत्यारोपणेन यत्र षण्मासा पूर्वन्ते सा परस्थाने वृद्धिः । एवं त्रिमासा-दिसेवनेन षण्मासे पूरणमपि परस्थानवृद्धिः ।

मासियठविण् इत्यादि प्रायश्चित्तमवहृतः सतः स्वतन्त्र एव शय्यातरिण्डादिपरिभोगतो यो मास आपन्नः स वैयावृत्त्यकरणादौ साधोव्यापृतत्वात् स्थाप्यः कृत आसीत् । ततः कार्ये समर्थिते मास उद्दोढुमारब्ध इति स्थापितत्वं, एवं दोमासियामु वि पट्ठविण्मु त्ति दोमासिण् ठवियपट्ठविण् दोमासियं पडिसेवइ इत्येवं तावद्वाच्यं बीयारोवणा तेण परं सवीसइराइया दो मासा सवीस-इरायदोमासिण् ठवियपट्ठविण् दोमासियं बीसियारोवणा इत्येवं तावद्वाच्यं यावत् षण्मासा इति स्वस्थानवृद्धिः ।

दोमासिण् पट्ठविण् तेमासिण् पडिसेविण् पणुवीसारोवणा दोमासा । पणुवीसतिराय-दोमासिण् पट्ठविण् तेमासिण् पडिसेविण् पणुवीसारोवणा, तेण परं पणुवीसतिराया दोमासियं पट्ठविण् तेमासिण् सेविण् पणुवीसारोवणा, इत्येवं तावद् यावत् षण्मासा इति परस्थानवृद्धिः ।

इयानि दुगसंजोगे इत्यादि मासे प्रस्थापिते मास द्विमासयोः सेवनेन षण्मासपूरणं विधीयते, एवं मासे प्रस्थापिते मासियतेमासियप्रतिसेवनेनद्विवशोगे षण्मासाः पूरयितव्या इत्येवमन्येष्वपि । कारणं तं चेन्नत्यादि छम्मासाइरित्तो तवो न दिज्झइ इत्येवं रूपं । ताहेत्यादि

दुविहं त्ति सट्ठाणपरट्ठाणे हिट्ठे विध्वमित्यर्थः । एवं एयस्स वीत्यादि एतस्यापि द्वौ मासिकस्य प्रस्थापितस्य सर्वे द्विकसंयोगादयः संयोगा वाच्याः, यथा मासद्विमासरूपो द्विकयोगस्तथा मासादिरूपोऽपि वाच्यः, अत्र स्थाने निशीथसूत्रं सर्वं समर्थितम् ।

इत ऊर्ध्वं शे चूणिकारो भाष्यकारश्च भणियति । एवं तेमासिएत्यादि मासद्विमासादिप्रतिसेवनरूपो द्विकयोगः, मासद्विमासत्रिमासादिरूपस्त्रिकादियोगः, अत्र च यद्यप्येकयोगः ६, द्विकयोगः २०, चतुष्कयोगः १५, पंचकयोगः ६, षड्योगश्चैकस्तथापि मासिक एव स्थापिते द्विमासिके वा प्रस्थापिते सर्वे ते संगच्छन्ते । त्रैमासिके प्रस्थापिते द्विकयोगत्रिकयोगचतुष्कयोगा एव भवन्ति, न परतः षण्मासानामाधिक्यात्, तथाहि - चाउम्मासिए ठवियपट्ठविए मासिए पडिसेविए पक्खिया आरोपणा, तेण परं अट्ठपंचममासा अट्ठपंचममासेसु पट्ठविएसु दोमासिए सेविए वीसियारोवणा, तेण परं सपंचराया पंचमासा तेसु पट्ठविएसु तेमासिए सेविए ण्णुवीसारोवणा, तेण परं छम्मासा, इत्येव त्रिकयोगमेव यावच्चातुर्मासिकप्रस्थापनानि संगच्छन्ते, तदूर्ध्वं चतुष्कयोगानाश्रित्य चतुर्मासिसेवने आरोपणायास्तत्र त्रिशद्विरूपत्वात् सप्तमासा जायन्ते, षण्मासाधिक्यात् । अत्र चूर्णी चातुर्मासिकपंचमासिकपदे आश्रित्यैककादयः पट्ठकपर्यवसाना ये अंका निदिष्टास्ते न संयोगसंख्याकथनपरतया किन्तु संयोगोच्चारणार्थं स्थापनामात्रतया दर्शिता । एवमङ्कानातूर्ध्वमवश्यं व्यवस्थाप्य द्विकादयः संयोगाद्वार्यन्ते, संयोगसंख्यानं तु यत्र पदे यावत् न त्परांशिरूपमेव द्रष्टव्यमित्येवं गमनिकामात्रमुक्तं, तत्रं तु बहुधुता विदन्ति । एवं दोतीत्यादि इह षण्मासपरनिर्देशे सर्वत्र कारणं षण्मासाधिक्यतपोऽभावरूपं द्रष्टव्यम् । एयासम्भीत्यादि, पढममुत्तस्स त्ति आरोपणासूत्रदशकविस्तरस्य प्रस्तुतत्वात् प्रथमं प्रत्येकसूत्रमारोपणाश्रित्यं तद्विषयं सर्वमेतद् द्रष्टव्यम् । द्वितीयं बहुममूत्रं तत्रापि सर्वमिदं द्रष्टव्यं बहुसाभिलाषेन । नवरं - ठवण त्ति छम्मासिए पट्ठविए इत्येवं निर्देशरूपं ठवणाठाण मासियं पडिसेवित्ता आलोएज्जा इत्येवं निर्देशस्वरूपं पडिसेवणाठाणं कणियमुत्ते सगले मुत्ते इत्यर्थः । मासियं ठवियपट्ठविए अंतरा बहुसो मासियं पडिमेव इत्यादिकानि ठवियपट्ठवियमुत्ताणि एतेषु द्विकसंयोगत्रिकसंयोगादयः संयोगा बहुससूत्रेष्वपि द्रष्टव्या इत्यर्थः । जिणाइय त्ति जिनकल्पिकादयः हुसियं च त्ति आपत्तात्तल्लुत्तरं । पुणो इयर त्ति उत्तरार्थं व्याख्येयम् । ते चेव त्ति ते पुनरित्यर्थः तद्धारिहं त्ति भाष्यपदान्तस्य व्याख्यातेहि आयरिया योगा बूढ त्ति तथा तथा चरिता इत्यर्थः । सावेकस्सपुरिसाण भेदकरणं तत्र तत्थ निरविक्षेपारचिए इत्यादि निरपेक्षः - जिनकल्पिकादिस्तस्य पारचिक्रमापन्नस्यापि पारचिकं न दीयते, गच्छनिर्गतेत्वादेव, तेषां गच्छान्निष्ठासनादिकरणरूपं हि किल पारचिकं भवति, द्वयोः प्रायश्चित्तयोर्मध्याद् यत्रैकमयेतनपदे याति सार्धेऽपक्रान्तिरुच्यते, अर्धस्यापक्रमणमुत्तरत्र गमनं यत्रेति कृत्वा, एवं अणवद्वे वीत्यादि अणवद्वारवतीए अणवद्वो कज्जइ, मूलं वा दीयते, इत्येवमादेशद्वयम् । अंगरा बहू ति अनवस्थाप्यकरणपक्षे भिक्षुरीतीतार्थेऽस्थिरे प्रकृतकरणे इत्येवं रूपऽन्त्यपदे चतुर्वधुर्भवति । मूलदानपक्षे द्वितीयेऽन्त्यपदे मामगुरुर्भवति । इत्थं वि त्ति अनवस्थाप्यापन्नो मूलागतो आचार्यादिकं प्रतीत्य मूलं वा दीयते, छेरो वा क्रियते, इत्युसग्ग वक्ष्यति -

सञ्चमिं० गाहा ॥

भाष्यकारेण मूलप्रायश्चित्तमादौ यदुक्तं तत्र सर्वेषां जिनकल्पितादीनामाचार्यादीनां च मूलापत्तो मूलं दीयते एव इत्येवमाश्रित्योक्तम् । पारचिकानवस्थाप्ये च सारोक्षाणामेव जिनकल्पिकादेरपीति तच्चिन्ता चूणिकृताऽभिहिता, अत्र यन्त्रकमुत्तिष्ठते, यथा जिनकल्पिया प्रायश्चित्तो कयकरणो २, अक. कर. ३. उव. कय. ४, अकय ५, भिवसू गोत्रो थिरो कय ६ । भि,

गी. धि. ङ्क. ७।भि. गी. धि. ङ्कय. न।भि. गी. ङ्धि. कय. ६।भि. ङ्गी. धि. ङ्कय. १०।भि. गी. ङ्धि. ङ्क. ११।भि. ङ्गी. ङ्धि. क. १२। एतेषु यथाक्रमं पारचिकापत्ती प्रायश्चित्तम् ।

द्वितीयपंक्ती निरूप्यते यथा शून्य - ०। पारं.। अण.। अण.। मू.। मू.। । । ६।६।६।६।धी।

तृतीयपंक्ती पारचिकापत्तावाप्यादेशान्तरेणेत्यं, यथा - शून्य. अण.। मूलं। मू.।। ही। ही।६।६।धी।धी।व्व।

चतुर्थपंक्ती सर्वेषां मूलापत्ती यथाक्रमं मू.।मू.। । । ही।ही।६।६।धी।धी।व्व।व्व।०।

पंचमपंक्ती सर्वेषां छेदापत्ती छे.।छे.। ही।ही।६।६।धी।धी।व्व।व्व।०।०।०।

षष्ठपंक्ती ही।ही।६।६।धी।धी।व्व।व्व।०।०।०।०।२५।
सप्तमपंक्ती ६।६।धी।धी।४।व्व।०।०।०।०।०।२५।२५।२५।
अष्टमपंक्ती धी।धी।व्व।व्व।०।०।०।०।०।२५।२५।२५।२०।२०।
नवमपंक्ती व्व।व्व।०।०।०।०।०।२५।२५।२५।२५।२०।२०।
२०।२०।

दशमपंक्ती ०।०।०।०।२५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।
एकादशपंक्ती ०।०।२५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।
१५।१५।

द्वादशपंक्ती २५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।१५।
१५।१५।

त्रयोदशपंक्ती २५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।१५।१५।१५।
१०।१०।

चतुर्दशपंक्ती २०।२०।२०।२०।१५।१५।१५।१५।१०।१०।
१०।१०।५।

पंचदशपंक्ती २०।२०।१५।१५।१५।१५।१०।१०।५।५।५।
षोडशपंक्ती १५।१५।१५।१५।१०।१०।१०।१०।५।५।५।५।दशमं।
सप्तदशपंक्ती १५।१५।१०।१०।१०।१०।५।५।५।५।दशमं।
दशमं। अट्टमं।

अष्टादशपंक्ती १०।१०।१०।१०।५।५।५।५।दशमं।दशमं अट्टमं।
अट्टमं। छट्ठं।

एकोनविंशतिपंक्ती १०।१०।५।५।५।५।दशमं।दशमं।दशमं।अट्टमं।
छट्ठं।छट्ठं।छट्ठं।चउत्थं।

विंशतिपंक्ती ५।५।५।५।दशमं।दशमं।अट्टमं।अट्टमं।छट्ठं।छट्ठं।
चउत्थं।चउत्थं।अबिला।

एकविंशतितमपंक्तौ । ५ । ५ । दशम । दशम । अट्ट । अट्ट । छट्ट । छट्ट । चउ । चउ ।
अंबि । अंबि । एकासणा ।

द्वाविंशतितमपंक्तौ । दशम । दशम । अट्ट । अट्ट । छ । छ । चउ । चउ । आयाम ।
मायाम । एगा० । एगा० । पुरिम० ।

त्रयोविंशतितमपंक्तौ अट्ट । अट्ट । छ । छ । च । च । आया० । आया । एगा ।
एगा । पुरि । पुरि । निव्वीयं ति । एत्थ एक्केत्यादि चरिमं पारंरिकं द्वितीयपक्त्यादी निर्दिष्टं
तस्माद्वारंभ्य तृतीयादिप्रायश्चित्तपंक्तिक्रमेण तावन्नयन्ति यावत् पंचदशीकंपंक्तिरिति षोडशाद्याः
पंक्तौ नेच्छन्ति, अन्ये तु पंचकादुपर्यपि दशमादिष्वपि पदेष्ववस्थानं मन्यन्ते ।

चतुर्विंशत्यादिकाःपंक्तीराश्रित्य यन्त्रकं यथा छ । छ । चउ । चउ । आया । आया ।
एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीयं ति ।

पंचविंशतितमपंक्तौ चउ । चउ । आ । आ । एगा । आ । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीयं ति ।

षड्विंशतितमपंक्तौ आ । आ । एगा । एगा । पुरि । पुरि० निव्वी० ।

सप्तविंशतिपंक्तौ एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वी ।

अष्टाविंशतिपंक्तौ पुरि । पुरि । निव्वी ।

एकोनविंशत्पंक्तौ निविकृतकमादिपद एव ।

पदमस्त० गाहा ॥

जिनकालिकस्य पारंरिकापत्तौ मूलापत्तौ वा मूलमेवेत्यर्थः । आचार्यादिस्तु मूलापत्तौ मूलं
वा दीयते छेदो वा विधीयते इत्ययं विकल्पः । जे सेसे त्ति अस्थिरा कृतकरणा दोमि अकयकरणत्ती-
त्यादि सप्तमाष्टमनवमाः दशमपदविहारेण एकादशद्वादशत्रयोदशपदवाच्याश्च ये तेषामित्यर्थः,
द्विकाद्यन्तरितं बहुं तरितं चेत्यर्थः । अजयणं करेतस्सावणाय त्ति तत्राचार्यस्य ४, उपाधाय व्व भि.
पिराथिरो न कज्जइ त्ति गीतार्थस्य स्थिरस्यैव भावादित्यर्थः । आयरिय कय. १, अकय. २, ठव. क. ३,
अकय. व्व, ४ भिक्खु गीमो कय. ५, भिक्खु गी. अक. ६, भि. गी. थि. कय. ७, भि. अगी.
थि. ८, भि. ९, भि. १०, एतेषु दशसु पदेषु प्रायश्चित्तं
यथा आयरिए कयकरणे पंचराइदियं आवन्ने तं चेव ५, अकृतकरणादिषु द्वितीयादिषु यथाक्रमं
अभत्तद्वो २ । अ. ३, अंबि. व्व. अंबि. ५, एगासणा ६, एगा. ७, पुरि. ८, पुरि. ९, अंते निव्वीयं १० ।

द्वितीय प्रायश्चित्तपंक्तौ यथाक्रमं दसराइदिएसु आढत्तं १० । ५ । ५ । अभ. व्व. अभ.
५ । अं. ६ । अं. ६ । अं. ७ । एगा. ८, एगा. ९ । पुरि. १० ।

तृतीयपंक्तौ पंचदशसु आढत्तं १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ. । अभ. । अंबि. ॥ १० ॥
१ का. ॥ १० ॥

चतुर्थपंक्तौ यथाक्रमं २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ. । अभ. । अंबि. ॥ १० ॥

पंचमपंक्तौ २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ. । १० ।

षष्ठपंक्तौ मासलहुगाथो आढत्तं ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० ।

सप्तमपंक्तौ द्विमासिकादारद्धं ० । ० । ० । ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ ।

१५ । १० ।

अष्टमपंक्तौ त्रिमासिकादारद्धं ००।००।०।०।२५।२५।२०।२०।१५।
 नवमपंक्तौ चतुर्मासिकादारद्धं ०।०।तेमा०।तेमा०।दोमा०।दोमा०।०।०।२५।२५।
 दशमपंक्तौ लघुपंचमादारद्धं १५।१५।१५।३।३।२।२।०।०।२५।
 एकादशपंक्तौ ६।६।५।१५।१५।३।३।२।२।०।

द्वादशपंक्तौ छेद. ६।६।५।५।१५।३।३।२।२।

त्रयोदशपंक्तौ मूलाग्रो ब्राह्मन् मू०।छे०।छे०।६।६।५।५।१५।३।

चतुर्दशपंक्तौ अणवद्वाग्रो ब्राह्मन् अण०।मू०।मू०।छे०।छे०।६।६।५।५।१५।

पंचदशपंक्तौ पारंजिकादारद्धं पारं०।अण०।अण०।मू०।मू०।छे०।छे०।६।

६। लघुपंचमासि ए ठाड, अत्र च तपोरूपाणि प्रायश्चित्तानि सर्वाण्यपि लघूनि वाच्यानि, गुरुणि न।

एमेव गमो० गाहा ॥

अनया गाथयाऽऽरोपणासूत्रदशकविषयमुपयुज्य सर्वं वाच्यमित्याचष्टे तत्र सकलसूत्रविषय उक्तः प्राक् शेषं तु वाच्यमित्याह एवमित्यादि, एवं प्रदर्शितरीत्या उद्घातिममासादिसकलसूत्रारोपणा पुनस्तावद् भणितम्। उद्घातिममासद्यारोपणासु च भणितासु अनुद्घातिमविशेषितास्ताएव भणनीया, उद्घातिमानुद्घातिममिश्रसंयोगारोपणा अपि वाच्याः, मासद्विमासाद्यापन्ने तदुपयुज्यवाच्यमित्यर्थः। एवं सातिरेकमासिकाद्यापत्तौ तदारोपणा वाच्या, लघुपंचकसातिरेकमासिकाद्यापत्तौ तदारोपणा वाच्याः। इत्यादि एतास्वापत्तिरूपयुज्यमानं दातव्यम्। नवरं—परिहारो न इति, संयतीनां पारिहारिकनपो न दीयते, शेषसाधुभिः साध्वीभिश्च परिहृत्य इत्युक्तं भवति, तस्सेव पाणाश्वायस्सेति तस्स ति पढमठाणस्स पढमपोरुसीए इत्यादि करकर्मकरणोत्पन्नाभिलापापेक्षया प्रथमपोरुषोप्रमाणकालमात्रमध्ये तत्करणे मूलं, प्रथमपौरुषीमुत्पन्नापेक्षया प्रतीक्ष्य द्वितीयपोरुष्या करणे छेद इत्यादि वाच्यं, न पुनः सूर्योदगमापेक्षया प्रतीक्ष्य पौरुष्यां करणे छेद इत्यादि वाच्यम्, न पुनः सूर्योदगमापेक्षया प्रथमपौरुष्यादि कालमानं ज्ञेयम्। अर्थं गृह्णन् निषद्यां निश्चयेन करोत्येव सूत्रेऽपि करोतीति वाचनाचार्येच्छया वा।

कोऽर्थः ? न करोतीत्यपि कदा च नेति अर्थे च शृणोति शिष्यः उत्कटुकः सन् कथकच्छु उ ति उत्कृतकक्षः विहितममस्तवसनिप्रमार्जनाविध्यापारः सन् अर्थे च सूत्रार्थग्रहणादिविधिरत्रैव प्रागेकोनविशतितमे उद्देशके “जे भिक्षु अप्पत्तं वाएइ” इत्यत्र सूत्रं विस्तरेणोक्तस्तस्माद् बोद्धव्यः, गणपरिपालकः पूर्वगते श्रुते तदप्ये अर्थे च लिंगेत्यादि लिंगक्षेत्रकालानाश्रित्यानवस्थाप्यपारंजिको य ते अद्यापि प्रवर्तते न तु व्यक्लिच्छन्न इत्यर्थः। द्रव्यालिंगं बाह्यं नपुंसकाद्याकारं दृष्ट्वा पारंजिको विधीयते, असी संयतो न क्रियते परिहृत्यते इत्यर्थः। कृतो वा कारणे गच्छान्निसारणेन परिहृत्यते इति पारंजिकता, भावतस्त्वनुपस्तमोहोदयभावो परिहार्यः, एतेऽनलादयो व्रते नावस्थाप्यन्ते इत्यनवस्थाप्यताऽपि घटते, मलिनविशोहि व ति मलिनत्वविशुद्धिः प्राश्रित्तदानं निमित्तं च पारिहारिकत्वशुद्धनपोदानरूपमिति संभाव्यते।

देवथ० गाहा —

अल्पधिको देवनाविशेषोऽन्यतरप्रमादेऽपि वर्तमानं शुद्धचारित्र्यं छलयेत् किं पुनः सर्वप्रमादस्थानवर्तिनम्, अवश्यं तस्य देवतापायः स्यादेव, इति तं मुक्तेत्युक्तं, तथा चोक्तम्—

“अतएवमायजुश्च, छलिञ्च अपिङ्गिओ न उण जुत्तमि” ति—

धाडिय ति मित्त जइरि ति भाष्यपदं यदृच्छा सेत्यर्थः । कायणुवाइ ति भाष्यपदं पृथिव्यादीनां यत् कायं शरीरं तस्मानुपातेन विनाशेन बधकस्य बन्धो भवति, पृथिव्यादीनां द्वीन्द्रियादीनां च बध्यानां यानीन्द्रियाणि तदनुपातेन च वीसइमे उद्देशे भणियं ति प्रभूततरेष्वापत्ते षण्मासतया कृतेत्यर्थः । अववायमंतरेणेत्यादि अपवादचिन्ताव्यतिरेकेणैव यतना अयतनाश्च उक्तः । कहए न य सावए लज्जि ति भाष्यपदं - कथके श्रावके च श्रोतरि कथकश्रोतृभ्यां लज्जा न विधेया इत्युक्तं भवति । वप्परुवणं इमं ति वप्रक्रेदारो जलभृतस्तेन रूप्यते उपमीयत इति वप्ररूपणं, भाविताः संजाता गुणाः सत्यादयो यस्य ततः सस्थवद्भूमौ संजातगुणे सति को यो वप्रस्तस्मिन्नीवेति प्रकल्पियाणं ति अयोग्यानां संसारश्चतूरूपो गति चतुष्कभेदान् पंच-प्रकारश्च एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियादिभेदान् । षट्प्रकारश्च पृथिव्यप्प्रभृतिभिर्भेदान् इति सम्भाव्यते । (संभाव्यन्) घोर ति क्वचिन् पाठो भाष्ये क्वचिच्च दीहे ति ततो द्वितीयपाठ-मप्यर्थतो व्याख्यानवान्, दीहं कालमित्यनेन, अनवदग्नोऽपरिमितः ।

इदानीं चूर्णिकारो यदर्थं मया चूर्णिः कृत इत्येनदाविष्करोति -

जो गाहेत्यादि गाथा शब्देन भाष्यगाथा निबद्धत्वादभिधीयते, ततो गाथा च सूत्रं च तयोर्थं इति विग्रहः । पागडो ति प्राकृतः प्रगटो वा पदार्थो वस्तुभावो यत्र स, तथा परिभाष्यतेऽर्थोऽनयेति परिभाषा चूर्णिरुच्यते ।

अधुना चूर्णिकारः स्वनामकथनार्थं गाथायुग्ममाह -

अतिथिं चेत्यादि वर्गा इह अ,क,च,ट,त,प,य,श, वर्गा इति वचनात् स्वरादयो हकारान्ता ग्राह्याः । तदिह प्रथमगाथया जिणदाम इत्येव रूपं नामाभिहितं, द्वितीयगाथया तदेव विशेषयितु-माह - जिणदाम महत्तर इति तेन रचिता चूर्णिरियम् ।

सम्यग् तथाऽऽम्नायाभावादत्रोक्तं यदुत्सूत्रम्.....(?) ।

मतिमान्वाद्वा किञ्चित्तच्छेदोद्देश्यं श्रुतघरेः कृपाकलितैः ।

श्रीशालिभद्रसूरीणां, शिष्यैः श्रीचन्द्रसूरिभिः ।

विशकोद्देशके व्याख्या, दृष्ट्वा स्वपरहेतवे ॥१॥

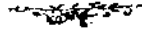
वेदाश्चरद्रयुक्ते, विक्रमसंवत्सरे तु मृगशीर्षे ।

माघसितद्वादश्यां समर्थितेयं रवौ वारे ॥२॥

परिशिष्टानि

प्रथमं परिशिष्टम्

निशीथ-भाष्यगाथानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमशः का
'बृहत्कल्पभाष्यस्य समानगाथानामङ्कनिर्देशश्च ।



अ	नि.भा.गा. नृ.भा.गा.		नि.भा.गा. नृ.भा.गा.
अध्यायं शिञ्जारं	१२८	अभ्यहसं जेष्ठा गिति	११५६ ३५१७
अध्यायो वि ह्र चरणे	५४३१	अभ्यहसो कल्पस्त उ	५६८३ ३०६२
अद्वयस्य सागा पारम्	६७०३	अभ्यहसो वारत्तग	५८८८ ४०६४
अद्वैतगोविन्दमहर्षे	२८४	अभिगकुमारस्वधातो	५७४३ ३२७४
अद्वैतम इन्द्रि-धर्मकहि	२३	अगीतस्म श कल्पति	५२५१ ३३३२
अउगासीतं ठवराणा सतं	६४५८	अगीतेषु विगिबि	५३७४
अकयकरणा य गोया	६६५८	अगीया सलु साह	१६६४
अकयकरणा वि बुधिहा	६६५०		५३७६
अकरंङ्गमि भागे	५८८५ ४०६०	अचित्तममबद्धं	६१८
अकसिणमट्टारसगं	६४२ ३८७३	अचियत्-कुलपदेसे	२८३४ ५५६३
अकसिणमगलमहर्षे	६४०	अचियत्तमतरायं	४५०७
अककतितो य तेषो	३६५०	अच्यविदगा मरणांतगाय	३६८१
अककुट्टा गिते वा	२७८६ २७१०	अच्यवत्तमोत तं पुग	६०१
अकखरत्तमेण समा	४८२५	अच्यवत्ता एसिञ्जरा ३	६२७६
अकखरत्तमसुखं	५४८८ ५३७३	अच्यवत्ते वि विदसखा	४८४४ ६८४
अकखराणं चंदराश्च वा	५१२ ४६०६	अच्यवीकरणां रणगो	१५६६
अकवातिगा उ अकखराणागा	५२११	अच्यवुसिण चिकको वा	४०६५ १८२५
अकवादी टाणा सलु	२३०१	अच्यवत्ताण वि गुणा	२४७६
अकवा संघारो य	१४१६ ४०६६	अच्यवुत्ता ताव समगा	२०२७ १६७६
अकवा वाह कुरणादि	४२६६	अच्यवुत्तां वि य तौतवह	४५००
अकखरत्तमेण पहेसु	३१२६ २७३७	अच्यवुत्तां ज्ञेयसुहा	४५२३
अगडे भातु ए तिल	२१५०	अच्ये समित्य चिचिय	२६६० ५८५४
अगणि गिलागुच्चारै	४१४३ ५२६५	अजउण कारिसेव	४४८
अगणि व गणि नृया	२६२०	अजरायु तिणिण वोदिमि	६१०७
अगदोसहसंजो	३२८२	अजिण सलोमं जतिणं	३६६६
अगमकरणावगारं	११४१ ३५२२	अजिणादी वत्ता सलु	५६१६
अगमेहि कतमवारं	१४४०	अज्ज प्रतियानि गीति व	१२६
अगुत्ति य बंभवेरे	५३२ २५६७	अज्जसुहृत्थाऽऽवगारा	५७४६ ३२७७
अगवातो ह्यो मूलं	६५३१	अज्जसुहृत्थि ममत्ते	५७५१ ३२८२

१ आगम प्रभाकर श्री पुण्यविजय जी द्वारा सम्पादित ।

अथ जयलाट्ट	१७१०	३७३२	अणुसूत्राणि लङ्गमा	६१५७	
अज्जाण तेजज्जाणं	१-३६	३७५८	अणुसूत्राय संकल्पे	२६००	५७६१
अज्जाणं पडिक्कुट्टं	१७०२	३७२४	अणुसूत्रं मोयं गुणो	१६६५	
अज्जेव पाडिपुच्छं	४४८३		अणुसूत्रं अणुगि माऊ	१७०१	३७२३
अभुसिरमं वेदमकुडितं	१-३३		अणुसूत्रं गुणवत्तं	३७५५	
अभुसिरमादीणहि	१२३४		अणुसूत्रो गुणः	३०३८	१६३५
अज्जमयत्तमि पक्कं	१३८६		अणुसूत्रो अनिरित्तं	४०४	
अज्जमयत्तं वोचिअज्जति	५४६८	५४०२	अणुसूत्रो गुणसूत्रो	३६१	
अज्जमयत्तमि एतेहि जेव	३६१७	५१८४	"	३६२	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्गमा	५०३	४६०२	"	४१२	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५०५	४६०३	"		
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	४७३४	८७४	अणुसूत्रं निजमयत्तं	३३६३	७७६४
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	२४२		अणुसूत्रं गुणराजं	३३६२	२७६३
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	६५४८		अणुसूत्रं पञ्चत्तं लङ्ग	४६७६	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	३२१७		अणुसूत्रं पञ्चत्तं लङ्ग	५१०१	२४६१
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	८५४४		अणुसूत्रं मोयं लङ्ग	३७६४	६००४
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५६८६		अणुसूत्रो वि मा कल्पति	३७६८	६०१०
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	२५०१	६३८५	अणुसूत्रं लङ्गमा	३१७	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	७०		अणुसूत्रं लङ्गमा	४३	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५६७६		"	५४३३	४०१६
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	२५०५	६३६५	अणुसूत्रं पडिक्कुट्टं	४५०८	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	६२६०		"	४५१६	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५११३	२४६५	अणुसूत्रं पुण कल्पति	४५११	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	६६०	३८६३	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	२१२७	
"	६६२	३८६५	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	२६६७	
"	६६४	३८६७	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	३२६०	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५६१५		अणुसूत्रं अणुसूत्रं	४४६५	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	१६०५		अणुसूत्रं अणुसूत्रं	४२१२	५६२२
"	१६११		अणुसूत्रं अणुसूत्रं	६६०२	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५०७६	२८२४	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	६६६६	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	६३६७		अणुसूत्रं अणुसूत्रं	२८६६	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५४१५		अणुसूत्रं अणुसूत्रं	३४६७	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	२८२७	५७५७	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	५२५७	३३३८
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	४२३६	५६५६	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	११५६	२१२७
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	१४०२	४०८६	अणुसूत्रं अणुसूत्रं	२८७३	
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	१४३२		अणुसूत्रं अणुसूत्रं	२६१६	५८१६
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	५१४२	२४६२			
अज्जमयत्तं-अज्जमयत्तं लङ्ग	६३६४				

अणु देवमणसंकल्पे	२८६१		अण्णं समिघारेतुं	५४७३
अणुदिग्गमणसंकल्पे	२८८६	५७६०	अण्णं व उहिसाणे	२७३६
"	२८८४	५७६१	"	५५७७
अणुभाषण-संयोगी	२९३६		अण्णं पि ताव तेणं	१३६१
अणुभूता उदयरसा	५२६१	३४२१	अण्णालो मारवे लुद्धे	१८४०
अणुभोदण कः रावण	५०८		"	५८६५
अणुवत्तगा तु एहा	३०७३	१६७२	अण्णान्ते तुमिणीता	१७०६
अणुयालो अणुयाली	५७५४	३२८५	"	५४०६
अणुरंगादी आलो	५६६३	३०७१	अण्णान्ते पालिगे	२२८८
अणुलोपो पडि-लोपो	३६५०		अण्णान्ते मङ्गलित्तिसु	५७७५
अणुसट्ठी भम्मकहा	२५८६		अण्णान्ते वि अण्णसत्ता	२३४५
"	३४६५	२८६८	अण्णान्ते वि हू पडिसेवा	६३०७
अणुसट्ठीय सुभहा	६६०६		अण्णालो अण्णुणित्ते	१२६८
अणुमादण सभासी	८६४		अण्णालो पडिच्छावे	२७६६
अण्णउवहमयणमलो	१२८६		"	६३७४
अण्ण-कल-भोल-कहण	१३५१		अण्णालो सत्तिवम्मि य	२२३७
अण्णालो भिक्खुस्व	२८२३	५७५६	अण्णो दो पायविद्या	२८०८
अण्णभहणं तु दुविहं	४७२५	८६४	अण्णो पालो भेमज	६६५
अण्णदुडलदुडु अण्णालो	५०८०		अण्णो वायव्य लहणी	२०६५
अण्णतत्तामादेणं	६६		अण्णो वि अण्णुतोत्तं	३५१६
अण्णतर तेइकल्ल	२३१४		"	३५२०
अण्णतराग घातु	४३१२		अण्णो वि तस्स एणीया	१२६२
अण्णत्थ पयसत्था	१७०५		अण्णो कीसं तिववे	३५२५
अण्णत्थ एरिसं दुल्लभं	२५०६		अण्णो वि होति दोना	१२८४
अण्णत्थ ठवावेउ	५७६४		"	२५०६
अण्णत्थ तरण महणो	४७२४		"	२५१७
अण्णत्थ व वकमती	५३२२		अण्णोति दिज्जमालो	४४४१
अण्णत्थ वनीउत्तां	११४६		अण्णो वमदण्णदीपो	१६३५
अण्णत्थ वा वि गिण्णजति	६२४६		अण्णोवणा-व दण-वजा	२८०६
अण्णत्थ वि अत्थ अवे	४६१०		अण्णोअण्णो विअद्धं तु	१५८७
अण्णत्थ मज्जिगेणं	२२३५		अण्णो वा कोमट्टो	१८८६
अण्णपडिच्छालो लहणा	६३६६		अण्णो वि य मागुनी	१७२७
अण्णपासंडी य मिही	६२५८		"	५६३६
अण्णामि व कालमि	२७६६		अण्णो वि होइ नउहू	५४५
अण्णया विअत्तेण	१०७०		अण्णत्थवा वि होतिवे य	१३१६
अण्णवपत्तीण पसती	१३२७		अण्णत्थवा वि होतिवे य	१३२४
अण्णत्थ व अण्णत्थ	२७०१		अण्णत्थवा वि होतिवे य	५६३५
अण्णत्थ व दाहामो	२८८६		अण्णत्थवा वि होतिवे य	४५८५

પ્રારંભસ્થ તુ જોગ્યાવતી	૧૬૬૨	૧૬૨૦	અર્ધગુણા પચેસાં	૧૮૭
અવસ્થિત્વ નચરેવં	૩૩૪૬		"	૭૦૧
અનમિ દ્વિરિમંથ તિગુહ	૧૦૬૦		"	૭૧૨
અતિશ્રાવરો મે ચીમતિ	૬૬૭૭		"	૭૧૦
અતિવક્રમે અતિવક્રમે	૬૪૮૭		અર્ધ તેરમ પચ્ચે	૨૮૩૨
અતિમ અમિલા જટણા	૫૧૮૧		અર્ધાણ પ્રોમ અતિવે	૪૬૨૦
અતિમણિય અમણિતે વા	૧૮૧૬		અર્ધાણ-પ્રોમ કુટું	૧૬૦૬
"	૨૭૮૮	૫૭૪૨	અર્ધાણ કાજ અમમ	૧૬૨
અતિમુને ત્રણાલો	૨૮૫૭	૫૮૪૭	"	૨૫૩
અતિમિત્તાણ કિતાણાં	૫૫૨		"	૧૮૮
અતિરેગ ત્રવધિપ્રધિ	૨૧૭૬		અર્ધાણણિમપટ્ટા	૩૨૪૨
અતિરેગદિદુ રોમા	૪૫૨૬		અર્ધાણણિમતાદી	૫૨૪
અતિરેગ-ત્રવિદ્ધ કારણ	૪૫૪૬		"	૧૫૩૨
અતિ મિ જગમિમ ચળાં	૧૭૩૬		"	૧૬૬૭
અતેભાદ્રકાણ-ભાગલો	૧૨૬૬	૨૦૧૪	"	૧૬૮૫
અતદ્દ પચટ્ટા વા	૩૨૩૩	૪૨૫૮	"	૨૧૬૨
અતદ્દાણ પચસ વ	૪૬૦૦		"	૩૨૩૧
અત્તાણ ચોરમેયા	૩૩૬૫	૨૭૬૬	"	૫૨૮૮
અત્તાણમાદિણુ	૩૩૬૬	૨૭૬૭	અર્ધાણણિમતાદીણમદેને	૩૨૭૨
"	૧૩૬૭	૨૭૬૮	અર્ધાણણિમયાદી	૨૨૧
અત્તાણમાદિયાણ	૩૨૬૮	૨૭૬૬	"	૨૧૬૧
અત્તીકરણ રણાં	૧૫૫૬		"	૫૮૮૧
અત્તીકરણારીણ	૧૮૫૪		"	૫૧૬૪
અત્યવરો તુ પમાણ	૨૨		"	૫૧૬૫
અત્યયને અત્તી વા	૧૫૭૬		"	૫૨૮૫
અત્યયણ વિ વિચ્ચિ	૩૬૮૬	૪૬૨૧	"	૫૩૪૬
અત્યયણ મંકણે	૨૮૬૨	૫૭૮૭	અર્ધાણણિમયાદીણ	૪૬૧૨
"	૨૮૬૮		અર્ધાણણિમયા વા	૩૨૫૪
અર્ધકિલ્મમનરે	૧૧૦૧		અર્ધાણ કુલ્લ મેઝા	૨૬૨૦
અર્ધિ તિ હોહ લહુબો	૧૮૪૫		અર્ધાણ પચિમમાળો	૪૮૮૩
અર્ધિ મિ ઘરે વિ અર્ધા	૫૦૩૭	૬૩૬	અર્ધાણબાનકુટ્ટા	૪૬૧૮
અર્ધિ ય મે જોગવાતી	૨૬૭૮	૧૮૮૦	અર્ધાણ-ચાલ કુટું	૪૫૬૭
અર્ધિ કુ અમમમામા	૫૬૪૩	૪૮૫૧	અર્ધાણમમથરણો	૪૫૧
અર્ધિવસ્મુનેમ	૬૦૪૮		અર્ધાણમિ વિવિલા	૫૦૦૦
અર્ધિવસ્મો દિદ્ધ	૫૧૩૪		અર્ધાણમિ ત જજન	૩૪૮૫
અર્ધટ્ટ અટ્ટમામા	૨૮૧૨		અર્ધાણવિવિલા વા	૨૨૮
અર્ધટ્ટમામ પચ્ચે	૨૮૨૬	૫૭૫૬	"	૫૮૦૨
"	૨૮૩૦		અર્ધાણ-મટ્ટમામા	૨૬૮૫

अद्यान् पि य बुधिर्ह	४६३५	३०४१	अपरिवल्लभायकए	४७१	
अद्यान्मि विविता	२३४		अपरिगह्मि बाहि	१६१५	
अद्यान्मी अस्मि	४६२६		अपरिगहित वल्ले	४७८०	६२१
अद्यान्मी अतिशब्द	२२७		अपरिगहिते बाहि	१६०८	
अद्यान्मा संघट्टि	२६२५	५८२२	अपरिगमगमराणं	४६५१	
अद्यान्मासंवरणे	३४५६	२६११	अपरिमितो ह्युद्धी	४४८८	
अद्यान्मे उच्चाता	१०५८	२७५५	अपरिमिते भारिना वि	१६५५	१६१३
अद्यान्मे अमोमतिवे	४५६८		अपरिहृतस्तेते	३८७७	४२६८
अद्यान्मे अमो वा	३४७३		अपहृन्वते काले	४६०८	
अद्यान्मे नेसण्णे	८६०		अपुठते वि कु चरणं	६१६१	
"	६३०		अपुठते अणुप्रयोगे	६१८५	
"	१६६३		अपुठते य कहेंते	६१६५	
"	४५१३		अपुठते य कहेंते	६१८६	
अद्यान्मे जयगाए	४८८५	१०२३	अप्यग्गंथ महत्तं च	३६२१	
अद्यान्मे पलिमंथो	३६३०		अप्यब्धो अकिली	१३५७	
अद्यान्मे वत्तव्वा	२६३८	५८३४	"	६३२४	७८५
"	२६४६		अप्यब्धो अचण्णो	३६८८	
अद्यान्मे संवरणे	३४६१	२६१३	अप्यब्धो य गरहा	६०३८	
अदिष्टामद्वायुं वीसुं	५७७६		अप्यब्धो वीवरपत्तणं	२८१५	५७८१
अदितिकरणे पुच्छा	२४४१		अप्यब्धिते उ पकिस्सं	२८६४	६४२२
अदिति दिट्ठो पण्हय	१०४३		अप्यब्धिलेहोपमज्जया	२७०	
अदं समस्त लस्सग	६२१	३८५४	अप्यब्धिलेहियदूते	४००१	
अधवा गुहस सोसा	२०६५		अप्यत्तरमच्चित्तं	६३	
अधवा पायायन्नी	२२३६		अप्यत्तमच्चित्तं	१०७७	
अधवा पुरिसाहण्णा	२०६६		अप्यत्तं उ सुत्तं	२७५३	
अधवा वि समासेयां	६६६		अप्यत्तारा विमितं	३४४२	२८६५
अधवा सो तु विगडणं	१२५६		अप्यत्तिप अमंल्ल	१०५	
अधिकरणमंतराए	१०८६		अप्यत्तिवादि पंच य	११३	
अधिकरणमारणाणी	१३२४		अप्यत्ते अकहिता	३७५२	
अधिकरसा रायदुद्धे	१०५१		अप्यत्ते जो उ गमो	४७७२	६१३
अधिकरणं कायवहो	४८१५		अप्यपरयशावासो	४३३८	
अधुबुद्धि भिक्खुकाले	४६३०		अप्यपर-परिच्छादो	५८३४	४०१०
अभ्रतरपमादजुत्तं	६०६६		अप्य-वित्त-अप्य-त्ततिमा	१७२८	३७१४
अभ्राणकुत्तितियमते	३७०१		अप्यभुत्ता तु विदिण्णो	११८०	३५६१
अभ्रो पुरा पल्लतो	३३३४		अप्यभु लह्मो दिग्गिणि	११७८	३५५६
अपडिक्कमसोहम्मे	३१६६		अप्यमलो होनि सुवी	६५६४	
अपडिह्मन्ता सोउं	३०२६		अप्या अमंवरंते	५८०८	
अपडुप्पणो बालो	३७२८				

अप्या मूत्रपुण्ड्रिणं	१३१६	अभिभूतो पुरा भतिनो	३६५४
अप्याःहेति पुराणातिनाग	३२६७	अभिभूतो सम्भुजकति	३६६८ ५२१८
अपिगमह तं बहसं	३२८१	अभिनावमुद्र पुच्छा	५४६७ ५३७२
अपुत्रमनिहिकारो	१३४२ ५६८	अभिहारते वयतो	२७०४
अपुत्रव-विजित-वहुस्मुना	१०५६ २७५३	अमणुण्णालुडहारं	२३१६
अप्ये मंनलमि य	१५४८	अमणुण्णालुण्णरासी	६३८१
अप्योलं मिउपमह	५८०१ ३६७८	अमिता अभिरुबदिण्णं	४६६३
अप्यामृता देसे	२०४६ ५८५	अमिलारी उभयमुहा	५१६१ २५५५
अवलरं वरकुहं	३३६२	अमुगएमुधो वच्छति	५०६६ ५३७१
अहृस्मुग अमीयये	५४४८	अमुगं कलमणागते	५०३१ ६३०
अहृस्मुना यमदा	२७२३	अमुग एणिस वा	५००६
अहृस्मुने अ पुगिसे	४६५	अमुगापरियमरिच्छाहं	५६८२
अह्माल बुद्धाणे	४६१०	अमुगिचवथ रा भुजे	५०१२ ६१२
अह्ममन्नाण गिस्संकया	५४४५	अमुगो अमुगं कालं	४३१७
अह्मरहियम्म हरणे	३१८६	अम्मा विमुभावी उ	१०७०
अह्म-हिउ-वास-महिगा	२६१४ ५८११	अम्मापियरो कस्सति	३७३२
अह्मगिय संवाहिय	४३८८	अम्मे ए वि जाणामो	४२८०
अह्मनमललितो	६१७३	अम्हं समारद्धे	४०८८ १८४६
अह्मनरं अ वाहि	७६४	अम्हं वि करेति अरती	२४४२
अह्मनागस्य गतूग	८६३	अम्हं लमणा ए गली	२६१६
अह्मनासि अ वमउता	१७५८ ३७२१	अम्हेदाणी विमहिमो	५५६ ४६२५
अह्मउन्नत घोहाणे	५४६५	अम्हे मो सकतमुहा	२६१३
अह्मउन्नतामेगतरं	२५१५	अम्हे मो धाएमा	५६०
अह्मउन्नो आनरा	३०३२ १६३३	अम्हे मो धादेमा	५२४
"	२१११	अम्हे मो कुवहीणा	२६११
अह्मउन्नो बुद्धया	३०३३ १६३४	अम्हे मो जातिहीणा	२६१०
अह्मउन्नता य नोमो	२४२५	अम्हे मो लिअरही	२६८८ १८६०
अह्मउन्नतायवेरा	३२०१	अम्हे मो वणहीणा	२६१५
अभगितो कोह ए इच्छति	२६८१ १८८३	अम्हे मो व्वहीणा	२६१२
अनवाणी पेहेनु	४६३७	अम्हे वि एतधम्मा	६६६६
अभिद्योगभिसकए वा	४६४६	अम्हेहि तहि गगहि	८६८७ १८८६
अभिद्योगे कतिलओ	५६६३	अय-एलि-गावि-महिसी	४००३
अभिगह संभोयो पुग	२१३८	अयते पण्णोउते	५६२४
अभिरावपुगालगहितं	४६११	अयमणो उ विगणो	२२०८
"	४६१६	अयमपरो उ विगणो	२३८०
अभिरावकोमिद्धामति	४१६६	अयमंइ पाया ललु	३००७
अभिणो महस्यपुच्छा	४१०८ १०४५	अयमइ पाया ललु	२००६
अभिचारते वामस्यवादिणो	५४७६ ५३८१	अयमारी पाया ललु	५६१२

असत्यादि इवमाख्ये	१६५४	१६१२	"	५४८०
असत्यादी वाऽऽहारे	२३४७		असिवादीकारणितो	४५७७
असत्यादी बाहारे	२५५८		असिवादी मुक्त्याणि एव	४८१२ ६५३
अस्ये पाथे वत्ये	११५३		असिवादीहि यथा पुण	५५४१ ५४४२
असति मिहि एतियाए	१६८		असिदे अगममाख्ये	५६५६ ३०६४
"	४२५३	५६६२	असिदे अमोदरिए	३४२
असति तित्ते पुण	५८७८	४०५३	"	४५८
असति वमधीए बीव	१६६०	१६१८	"	१४५४
"	११५०	३५३१	असिदे अमोदरिए	७२६ ४०५७
असति बिहि-सिग्गता	१६८३		"	७४७
असति समणाय कोदण	५०७६	२८२१	"	७७३ ४०५७
असती अवाकडाल	५११	४६०८	"	७७८
असती एव दवस्म तु	१६६३	१६२१	"	८१२
असती गच्छविमज्जण	३७३		"	८१४
असती ते अम्ममाख्ये	३४५३		"	८१५
असती य परिमयस्त	१६४		"	८८४
असती य भद्दो पुण	४८७६		"	१००७
असती य भेत्तणं वा	१३७२	४६३६	"	१०२१ १०१६
असती य मत्तगस्मा	५४१		"	१४३७
असती य लिगकरणं	१६६१		"	१४६२
"	५०२२		"	१४८१
असती य संजयाण	५६२७		"	१४६०
असती विमिक्कमाख्ये	४६०६		"	१८५७
असत्ताण-लोम-रज्जु	६५३	६३७६	"	१८५३
असत्तोणे पभुविडं	११८४	३५६५	"	२००७
असत्ताही ठाणा अत्तु	६४६३		"	२०१२
असरीरत्तेणभंभे	१६५०	५७६	"	२०२४
असत्ताही परिचित्तसत्ताण	५४७६	५३८४	"	२०४४
असत्तर अमोणावा	३८५१		"	२०६१ १०१६
असत्तति अहासदे	५३२६	२४०३	"	२६६०
असिद्धी अति एणएणं	४८६७	१००६	"	२६८४
असिक्कगहितं ति काउ	३४४		"	२६६७
असिक्कगहितं तणादी	३४३		"	२६६८
असिवाद्दकारणोहि	३१५२	४२८३	"	३१०४ २००३
असिवात्तिकारणोण	५०३२		"	३१२७ २७४१
असिवाद्दिकारणवत्ता	१२२५		"	३१२६
असिवाद्दिकारणवतो	२४११		"	३१६१
असिवाद्दिकारणोहि	३८४७			

प्रसिधे प्रोमोयगि	३२०६		"	५६६३	
"	३२६६	४०५७	"	५८८२	४०५७
"	३३४२		"	५६५३	
"	३३५५	२००२	"	५६५७	
"	३४८७		"	५६६२	
"	३४८९		"	५६६७	
"	३६०५	१०१६	"	५६७६	
"	४०५६		"	६०२६	
"	४१११		"	६०७२	
"	४११८		"	७३४	
"	४२०७		प्रसिधोम-दुह-रोषण	१६१२	
"	४२८१		प्रसिधोमाईकाले	६२३६	
"	४३०५		प्रसिधोमावयणेसु	६११४	
"	४३१७		प्रसिकंटकविसमादिषु	१००	
"	४३६५		प्रस्संजतमतरेते	१०१	
"	४४०३		प्रस्संजमजोगाणं	४४३७	
"	४४०६		प्रस्संजय-सिगीहि तु	४७४५	८८७
"	४४१७		प्रस्संजयागु भिक्खु	४३६१	
"	४४३१		ग्रह अन्त्यपदविपागे	३२५७	४२८७
"	४४३८		ग्रह उग्राहणंतण	१४००	
"	४४४३		ग्रह जारिसधो देसो	४३६०	
"	४४५४		ग्रह जे ष धोयमइले	२२७८	
"	४४६७		ग्रह-तिरिष-उद्धयोगा ण	६५	
"	४४८५	४०५७	ग्रह दूरं गंतव्वं	४४१	
"	४६१३		ग्रह पुण गिब्बाषायं	६१२१	
"	४६३१		ग्रह मागसिनी गरहा	२७२५	४७३७
"	४६५४		ग्रह धायगोति भण्णति	२६३०	
"	४६५८	४०५७	ग्रह सउदगा उ सेज्जा	५२२८	
"	४६७१		ग्रह भिक्खवंतयं पुण	६४५	
"	४६८३	४०५७	ग्रह सो विवायपुत्तो	३६६६	
"	४६८८		ग्रहणं मिब्बिस्सामी	६७३	
"	४८८१	१०१६	ग्रहभावदरिक्कगम्मि वि	२२५३	
"	४८७८		ग्रहभावमागतेरां	४०३२	
"	४८६६		ग्रहमेगकुल गच्छं	३१५	६०८६
"	५४१६		ग्रहयं च मावराही	६३१०	
"	५६३०		ग्रहय ग्रहंभं जतो	५११४	२४६६
"	५६५४	३०६८	ग्रहय जति ग्रथि भेरा	२७४४	

अहव जदि अथि घेत्ता	५५८०		अहवा भिक्खुसंघं	५३३१	२४०५
अहव एा कत्ता सत्ता	४८१६	६६०	अहवा महानिहिमि	६५२६	
अहव ग पुद्दा पुब्बेण	५०६३	२८०७	अहवा रोगमहसती	६६८	३८६६
अहव ग मेत्तो दुक्खं	७७३४		अहवा वणिग्भरणा ग	६५२५	
अहव ग मुद्धा विभवे	१६५७	१६१०	अहवा वाता निविहा	११६	
अहव ग हट्ठण्णितर	८१७		अहवा वि अणीयत्था	६८००	६६१
अहवाऽऽजत पठिसिधी	६६२३		अहवा वि अविट्ठमि ग	१२६३	२०४०
अहवा अभुमिरगहणे	१२३१		अहवा वि अयोरोगं	५८८०	६०५५
अहवाऽनुमट्ठु बालं भुवग्गहं	६६१८		अहवा वि गालवद्धं	५७७४	
अहवा संबीभूते	३२२६	४०५१	अहवा अचिनकम्म	२५६०	
अहवा आणविदिराहणाद्यां	५१३५	२४८५	अहवासमगाऽसंजय	४७४७	८८६
अहवा आहणार्ता	६१५६	५०७८	अहवा मयं तिलाणां	६२४८	
अहवाऽहारे पूर्वा	८०७		अहवा मार्वाकितरं	६६५१	
अहवा उस्मग्गु नगियं	८२५		अहवा मिस्वासिकसं	३५७७	
अहवा गगमाहणे	६७०६	८५५	अहवा सुननिबंयो	६६७०	
अहवा ग्गोऽपरिगते	६०३४		अहिकरणा अरुपता	६७७६	
अहवा एमगासुद्ध	८७७७		अहिकरणमहोकरणा	२७७७	
अहवा एमेव भयो	३५७७		अहिकरणमंतराणं	५३१३	२३८७
अहवा एमेव तवी	३५७७		अहिकरण विगति जोग	६३२७	
अहवा योमहहं	४०५७	४५५६	अहिकरणा अनुभातो	३३२४	
अहवा को तस्म गुणा	६६८६		अहिकरणा गिह्थेहि	७८३५	५५६६
अहवा गुणगा गुणा	६२०६	१०६७	अहिकरणा जोगे भूल	२१६	
अहवा चिरं वसंती	६०२६		अहिसामधो उ काले	६६	
अहवा छद्दि दिवसीह	६५५१		अहिसम्म इमे दोषा	५८६६	६०७८
अहवा ज वडिट्ठि	६६६४		अहिसामिया तु घंतो	६११६	
अहवा ज भुक्खन्तो	७७६०	६००७	अहिरण्यगच्छ भगव	३०४७	१६४४
अहवा ग वेव वण्णनि	३३३१		अहि-विचटुग-विमकट	६०१०	३८३३
अहवा ग मज्झ जुण	७६३३		अहुगुट्ठिय व अण-	६३८२	
अहवा तनिते दोषो	३६०३	५१७०	अहोरात्रं सत्तवीस	६२८४	
अहवा तिगमात्तवेग	३८७१		अकम्मि व भूमीण	१२७	
अहवा तिगि विवोमा	६०६१		अके पत्तियोः वा	२३१०	
अहवा तेमि ततियं	७६३०	५८७७	अणाम उवणाग	४६२	
अहवा दुग य गावसं	१३६८		अणुदु पोरेमेत्ता	१८२७	
अहवा पद्मे छेदो	३५३०		अणुनिकोमे पणम	६२०	२८४०
अहवा पद्मे दिवसे	२५३७		अह्मणनवट्ठुणं वा	१५३१	
अहवा पणाम्पण्णिहयो	६५७७		अह्मणं सम्महा	१६३१	
अहवा पवणं संजतीग	७६३०	७४०६	अ जगत्त्वजगत्-वट्ठुमिने	५००७	५८६०
अहवा पावयसीमि	१६८८	३७०६			
अहवा भिक्खुसंघ	५१७७	७४७६			

अजगम-द्विमुखाय	५२				
अजयमुज्ज्वल कल्पे	६१०६				
अतः प्राणा अमनी	१५४३	२७६६			
अतस्मि व यज्जमि व	२३७६	६८१८			
अपर रिमंतिश्रो वा	१३४७				
अतरपल्लीगहितं	४१६३	५३१२			
अतरपल्ली लहुगा	३२८७				
अतररहितागत	६२५८				
अतं न होइ देय	५८४४	६०२०			
अतेउरं च तिविध	२५१३				
अतो अलम्भमाशेषराभादीसु	२३६१	६८२८			
अतो अहोत्तम उ	६०७०				
अतो आवशमादी	६७३१	८७१			
अतो गिटु लसु गितं	१५३४				
अतो गियंमनी पुग	१४०३	६०८७			
अतो पर-सबन्दीयं	३०४८				
अतो बहि कच्छ-मुडाद	११६१	३५७२			
अतो बहि च धोतं	६१०२				
अतो बहि च भिष्यं	६१०५				
अतो बहि रा लम्भनि	२६६३	१८६५			
"	८६६५	१८६७			
"	८६६६	१८६८			
अतो बाहू व दहू	५८५०				
अतो भरो किरिसिया	५६६६				
अतोवत्सय बाहि	१०३५				
अतो बहि संजोयम्	६०००				
अधकारी पदीबेर	१८६८	२००७			
अवं केग तिऊगं	६०००				
अवगमादी पवक	६७१२				
श्री					
आइष्णुपितित महिगा	८१६०				
आइष्णुभराइष्णु	१४८८				
आइष्णुभराइष्णु	८६६				
"	१४७१				
"	१४६१				
आइष्णु लहुसएण	६००				
"	६०४				
"	६०६				
आइष्णु बह्मणं			६०७		
आइष्णु रयगाई			२५१०	६३६४	
आइष्णु लहुसकारण			६०२		
आउक्काण लहुगा			५३४०	२४१५	
आउगाहसेताश्री			२१८५		
आउ उजोवग वीणम्			५२२	२५६०	
"			५२०७	२५८७	
आउट्ट जरी मरुगाग			५३४४	२४१८	
आउट्टियावराहं			६१७४		
आउत्तपुव्वभगिते			६१३३		
आउत्तपाउगम्भी			२११७		
आउं बलं च वड्डनि			३३६५		
आऊ अगनी वाऊ			२४०५		
आऊ नेऊ वाऊ			३१३०	२७१२	
आगम विसंवादे			२६६२		
आक-ड्डगमाकसणं			६०१४		
आकंपिता गिमितं ए			२६६४		
आकंपिया गिमितं ए			४४०६		
आगम शम कालगते			४५६०		
आगमसुयववहारी			६३६३		
आगमिय परिहरता			४७८६	६२७	
आगरगदी कुडगे			५८५६	४०३४	
आगर पल्लीमादी			५८६०	४०३५	
आगंतागारादिमु			२३१२		
आगंतागारादी			४६५३		
आगंतागारेमु			१४४६		
"			१४५८		
आगंतागारे			२३४२		
आगंतागारेमु			१४३८		
आगंनु अहाकड्य			५५६२		
आगंनु एतरो वा			१८६२		
आगंनुएमु पुव्वं			३२४४	४२६६	
आगंनुग तज्जाता			४६५२		
आगंनुग तज्जाया			४६५५		
आगंनुगं नु वेज्जं			२४७५		
आगंनुगणि ताणि य			५८८३	४०५८	

आगंतु तदुत्थेण व	०१५१		आतविपुडोए जती	११३२	
आगंतु पउण जायग	३०६६	१२६५	आतममुत्थमसज्जाइय	६१६६	
आगाढ फससमीसव	४२८३		आतकविणमुक्का	१७७८	
"	४६६१		आतावण तह जेव उ	५३४२	
आगाढमलागाढं	४८८८	१०२६	आतावण साहुस्सा	५३४५	
आगाढमलागाढे	४७१		आतियणे मोत्तूणं	५६७०	
"	१५६४		आदरिसपडिहता	४३२१	
"	३१०७		आदाणे चलहत्थो	४८६	
आगाढं पि य दुविहं	२६०७		आदिगहणेणं उगममो	४३५	
आगाढे अप्पल्लिगं	५७२४	३१३६	आदिभयणाल तिहं	१६६७	३६६१
आगाढे घहिरणो	२७६१	२७१३	आदीअदिट्ठभावे	६२१३	७६३
आगारमिदिएणं	२३३५		आदेसगं पचंगुलादि	५३	
आगारिय दिट्ठतो	६५११		आधाकम्मादी णिकाए	१०८१	
आगारेहि सरेहि य	६३६८		आधारावधि दुविधो	११५२	
आजातादी ठाणा	४१२५		आपुच्छण आवस्सग	५२५	२५६०
आचंडाला पढमा	१४७३	३१८५	आपुच्छणकितिकम्मे	६१२७	
आचेलक्कुदेसिय	५६३३	६३६४	आपुच्छित उग्गाहित	११५५	३५३६
आगुयणे जा भयणा	१३०६	८६०६	आपुच्छिय आरक्खिय	२३६२	४८०६
आणंद अपडिहयं	२६६०		"	३३८५	२७८६
आणाइरणो य दोसा	२८३६		आभरणणिए जारासु	५२१०	२५६३
आणाए जित्ठवराणं	५४७२	५३७७	आभिगमहिउत्ति कए	१५४६	
आणाए उ मुक्कपुरा	१०२३		आभिगमहिउत्तिसाति	१२४६	
आणाए बोच्छेदे	६७०		आभोएत्ताण विट्ठ	२५७४	
आणादिणो य दोसा	५७४०	३२७१	आभोगिणीय पत्तिणेण	१३६६	४६३३
आणादिया य दोसा	२३५८		आमज्जणा पमज्जणा	१५१६	
"	२७३५		आमफलाइ न कप्पति	४७५७	८६६
आणावि रसपसंगा	४६०४	१०३७	आमति अणुवणए	५२८८	३४११
आणाभये णाणं	६६६३		आमे धडे निहितं	६२४३	
आणुगदेसे वासेण विणा	४६२४		आयपरउभयदोसा	३७८२	
आतवर परतरे वा	६५४०		आयपर-पडिक्कम्मं	३८१७	
आततरमादियारणं	६५५६		"	३६३७	
आत-पर-मोहुदीरण	१४६८		आयपर-मोहुदीरण	१२१	
"	१५१७		आयपरोभयदोसी	५३०	२५६५
आतपरे वाक्की	५६०४		आयरिआ अभिसेओ	८७१	६११०
आतपरोभावणता	१४५२		आयणि अभिसेए	२६८५	६३७७
आतवेयं च परवयं	१०४२		आयणि अभिसेगे	६०२०	४३३६

आयसि उवज्जभाए	५५७४	५४७४	आयारे अगहीण	६१६६	
आयसि उवज्जभाए	२७४१	५४७६	आयारे चउसु य	७१	
आयसि कइ सोही	६६२८		आयारे गिअवो	४	
आयसि कालवने	५५०२	५४०६	आयारे अगं चिय	३	
आयसि गालतो	८६८	६१०७	आयुहे दुगिगमटुम्मि	४८७०	१००६
आयसि दोषिण आगत	५४८७	५३६७	आरिअवलो विमज्जेति	३३८६	२७८७
आयसि भग्गाहि तुम	६५५७		आरभडा मम्महा	१४२८	
आयसि य गिलाहो	३०	१८८७	आरभनियत्ताणं	५०६५	२८०६
"	११२६	"	आरभ मोल्लकोने	६७६४	६०६
"	११२६		आरिय-आरियसंकम	५७३०	
"	१६८५	५०८७	आरियमणारिणसुं	५७२६	
आयसि आयसि	२६२८		आरवणा जति मामा	६४८४	
आयसि एणं ग भलो	२७६४	५७७८	आरवणो सोहणो	४८३५	६७५
आयसि कोरिमो	६६१३		आरवणा उट्टहा	६४३८	
आयसि चउमासे	२८०३	५७६६	आरवणा उहणो	६४३५	
आयसि वि ह तिहि	५५७१		आरोह परोमाहो	२६५०	२०५१
आयसि कुट्टिपदं	३६३२		आलने वाहिरो	८६३	
आयसि पत्रतिगीय	४६०७		आलवणं पडिपुच्छणं	१८८७	
आयसि अभावित	११०८		आलवणं तु दुविहं	६२२	
आयसि उवज्जभाए	३३७६		आलवणो विसुट्ठे	२०६२	
"	५५७६	५४७६	"	३२६२	
आयसि उवज्जभाए	३७३५	७७८०	"	५८१२	३६८६
आयसिपादमूलं	३८५६		आलावण पडिपुच्छणं	२८८१	५१३७
आयसि बालबुद्धा	१६६४		"	६५६६	"
"	५८६६		आलावो देवदत्तादि	८६४	
आयसि-वसभ-अभिसेस	४६३३	१०७०	आलिहण-मिच-त्तावण	२४२४	
आयसिमाधुवंदरा	१०५५	२७५२	आलिहण-वत्तासण	५८८	
आयसियादीण भया	५४५५		आलिहण-हत्थादिमज्जो	५१७६	२५२६
आयसियादी वत्तुं	४८१४	६५५	आलीह पच्चलीडे	६३००	
आयसिया भिक्खुण य	३४१७		आलोपम्मि चित्तिमिली	६१६२	
आय कारणभागाद्धं	४८१०	६५१	आलोपणं तह चेदं तु	६२७६	
आयं बिलिण्णितियं	६८४७		आलोपणं ति य पुणो	६६२७	
आयं बिलिस्स-लंभे	१६०७		आलोपणाविहासं	६५७८	
आया तु हत्थ पादं	६३५		आलोपणापरिणामो	६३१२	
आय मज्जम पवयसा	१५४१		आवडणमादिणसु	३०२१	१६२४
आय-रपकप्पसत्त उ	२		आवणो इदिणहि	६५५८	
आय-विगय गुरुक्कप्पादीवणा	३८६५		आवसि कम्महि	५६१	६६२७

आकरिसायण उक्त्वलिपुं	२३१६		आनि नदा समगुष्मा	१८४६	
आवस्तिषा णिमीहीय	२११	३४३८	आमिनो उमितो	३५७४	५१५१
"	५३८३	३४३८	आसंग य दिवुं तो	६३६६	
"	६१३६		आहकुचुयानिगाविम	६१६२	५२८५
आवहति महादोमं	३६७५		आह जनि णगमेव	७६५४	
आवातं तव वेव य	८२१		आहा अघे य कम्म	७६६६	६६७५
आवाय गिष्वावं	१२२		आहाकम्मं मडं पातो	५६६१	
आवासग कानुणं	६६२४		आहाकम्मिय ण गग	३८३५	
आवासग सवकाया	३५५०		आहाकम्मदुमिय	३७५०	६२७५
आवासग परिहृणो	४३०		आहाकम्मं निविहे	७६६३	
आवातगमादीयं	६१८०		आहातज्ज-वदातो	६३००	
आवासगमादीया	६२१४	६७६	आहारउत्तमणं	१८३५	
आवासग सज्जाए	४३४६	३१६३	आहारउत्तमो पुगा	५७२	
"	६३४३		आहार उवहि देहं	५७८१	
आवासगं प्रणियतं	४३४७		आहार उवहि देहे	४३५६	
आवास बाहि असती	२२४	३४५४	आहार उवहि विभत्ता	७११८	
"	५३६५		आहार उवहि सेज्जा	७५७६	
आवास-सोहि अजलंत	५०१६	६१६	"	५६३४	
आवासितं व ब्रुवं	६११३		"	६२६६	
आवासियमज्जणया	६३३२		आहारदीणज्जती	६२३५	
आसकरणादि ठाणा	४१३२		आहारमणाहारस्स	१६३५	
आसगतो वृत्तिगतो	६२५	३८५७	आहारमंतभूसा	२२८७	
आसज्जणिसीहिवावस्सिय	५२३	७५८८	आहारमंतरेणाति	१२४	
आसणगतरो भवमायती	६७६		आहारविहरादिसु	११	
आसणमुक्का उट्टिय	२५५५		आहारादीराज्हा	४३५३	
आसणुवस्सए मोत्तु	११३५		आहारादुत्पादण	८४१२	
आसणो परमणितो	४५५४		आहारादुवभोगो	२४२१	
आसणो साहंति	१७६६		आहारे जो उ भयो	५३६४	
आसणो य उरपूतवो	५२७६	३३५५	आहारे ताव छिदाहि	३८६८	
आसक-वेरजगगं	१८२६		आहारो व देव वा	४१६६	
आसंदग-वट्टमभो	१७२३	३७४५	आहारोवहिमादो	४५०६	
आसंद पीठ मंचग	५६५१		आहिङ्ग विवित्तं	२७१५	
आसाठ-मुष्णिमाए	३१४६	४२८०	आहिङ्गति सो णिच्छ	२७१६	
आसाही इदमहो	६०६५		आहेणं दारगहत्तगण	६४८२	
आसाण य हत्थीण य	२६०१				
आसासो दोसासो	१७४८	३७७१	इध अणुलोमए तेसि	५५७	
आसा हत्थी खरिगाति	३६६५		इच्छा-गुलोमभावे	३०२६	१६२६

६

इच्छामि कारणेणं	१६१३		इस्सरसवितो उ गुरु	६६२६	
इदम-सुखमि परिचिह्ताण	४४४६		इस्तासुए वि वेदुक्कडया ?	३५६३	
इदु-कलत्त-विभोगे	१६८७	३७११	इह परलोए य फलं	४८१६	६५७
इतरह वि ताव गच्छं	८४०		इहलोइयाण परलोइयाण	३११२	
इतरेसि गहणम्मि	२४८५		इहलोए फलमेयं	६१७८	
इतरेसु होति महुगा	२१०५		इह सोमादी ठाणा	४१४०	
इत्तरोवि य पंतावे	४४६६		इह वि गिही भविसहणा	३८४४	
इत्तरिओ पुण उववी	१४३५		इहरह वि ता न कप्पइ	६०३२	
इत्तरिं पि भाहारं	३२१५		इहरह वि ताव भम्हं	५२६८	३४०१
इति एस अयुष्णवणा	११८१		इहरह वि ताव गंभो	६०५०	
इति भोवगदिट्ठं	१३८०		इहरह वि ताव लोए	३३११	
इति दप्पतो भणाइप्पं	४८६३		इहरा कहासु सुणिमो	५२६३	३४२३
इति दोसा उ भगीते	४८०६		इहरा परिट्ठवणिमा	५०६७	२८१२
इति सज्जगा तु एसा	५३०६		इहरा वि भरति एसो	५६६६	३११४
इति संदसा-संभासणे हे	१६८६		इंगाल-सार-डाहो	१५३७	
इत्थि-परियार-सहे	२०१५		इंदमहादीएसु	२४८०	
इत्थि पटुच्च सुत्तं	२४६६		इंदमहादीसु समागएसु	३१३३	२७४५
इत्थिकहं भलकहं	११		इदियपडिसंचारो	३८७८	
इत्थिकहाओ कहेति	३५८३	५१५६	इदियमाउत्ताणं	६१४६	
इत्थी जूयं मज्झं	४७६६	६४०	इदिय सल्लिख्णाते	४३६	
इत्थी शकुं सको वा	१६१४		इदिथारि कस्तावे य	३८५८	
इत्थी पुरिस नपुंसग	५०३८	६३७	इदेण बंमवण्ण	४१०१	१८५८
इत्थीणं मज्झम्मी	२४३०		इंषणभूमे गंभे	८०५	
इत्थीणातिसुद्धीणं	२४३३		"	४७१०	८४१
इत्थीमादी ठाणा	४१३७		इंषणसाला गुरुगा	५३६२	३४४७
इत्थी सागारिण	५१६६	२५५२			
इत्थीहि खाल-बडाहि	१७६४				
इत्थरह वि ताव सहे	१७७२		इत्तर-तलवर-माधंविण्णि	२५०२	६३८६
इत्थरह वि ताव गच्छं	८२८		इत्तर मोइयमादी	२५०३	६३८७
इम इति पञ्चवसम्मि	२४८६		इत्तरियत्ता रज्जा	५१६०	२४१०
इम सत्तरी जहण्णा	३१५४	४२८५	इत्ति कपोलता वा	३७७१	
इम विमल्लिओ उ भयव	१७८०		इत्ति भूमिमपत्तं	३४७८	
इयरह वि ता ए कप्पति	५०६२				
इरिएसण-मासाणं	३१७६				
इरियं ए सोपयिस्सं	४८८				
इरियावहिमा हत्तंते	६१४१				
इरियासमिति भावेसणा	३६३३				
इस्सरनिक्कंतो वा	३८४२				
			उज्जवट्ठपीठफल्लगं	४३४८	
			उक्कोसमो जिण्णाणं	१४१०	४०६३
			उक्कोसगा तु दुविहा	८०	
			उक्कोसतिसामासे	६६०	
			"	५८३८	४०१४

उक्कोत माउ-मज्जा	५१६७	२५१७	उक्कतभत्तिए वा	६००२	
उक्कोसं विगतीघो	३४६०	२६१२	उक्कत्ताए चारुणं	४४६२	
उक्कोसाउ पयाघो	६५४६		उक्कसर-सरोसुतं	२८१८	
उक्कोतेण बुवासस	६०६२		उक्कवारपासवण्णहेस मत्तए	३१७२	
उक्कोतो म्हुविचो	१४१२	४०६५	उक्कवारभापरित्ता	१८७३	
उक्कोतो येराणं	१४११	४०६४	"	१८८०	
उक्कोतो दद्दुणं	३५१२		उक्कवारं पासवणं	१७३२	३७५३
"	३५४७		उक्कवारं बोसिरित्ता	१८७७	
उक्को. सोवधिलए	१०१६		उक्कवारित्ता अर्धदिल	३७५१	
उक्कप्पत्तगित्ताखो	३०७६	१६७८	उक्कवारो पासवणो	१७५४	३८७७
उग्गम उप्पावण	२०७३		उक्कववण्णेषु संभारितं	५२७७	
उग्गम उप्पावण	१८३३		उक्कवाहितो परेण व	४४४५	
"	४६७२		उक्कवाहो विसीदंवे	२६६१	
"	२०६७		उक्कुवसरीरे वा	४०५१	
"	४६६३		उक्कोलसुप्पिमावण	१८८१	
उग्गमदोसादीया	४७१६	८४६	उक्कोल दोसु भावस	४६४१	
"	४६७४		उक्काणद्वाणादिषु	४६५८	
"	४६६४		उक्काणऽट्टालवणे	२४२६	
उग्गमदिसुद्धिमादिसु	४६३५		उक्काणऽक्कसमूले	३८७६	
उग्गममादिसु दोसेसु	४११०		उक्काणा भारेणं	४१७०	५२८६
उग्गममादी सुद्धो	१२७५		उक्काणाऽऽउहण्णमेण	५७४२	३२७३
उग्गममणसंक्कणे	२८६६	५७६३	उक्काणातो परेणं	४१८२	५३०२
उग्गममणसुग्गए वा	२६२६	५८२३	उक्कासज्जसंभाणं	२१६	
उग्गमयविसी मुत्ती	२८६३	५७८८	उक्कुत्तणं से भानोयणाए	२६८०	५३५६
उग्गहणंतगपट्टे	१३६८	४०८२	"	२६८१	५३५७
उग्गवारणकुसले	३०१६	१६१६	उक्कोमफुडम्मि तु	४३२०	
उग्गातिकुलेसु वि	४४१५		उट्टु-गिणवेसुसंभए	५६६	
उग्गिक्का विष्णु प्रभाये	२८४६		उट्टुज्ज एणिसीएक्का	२८८३	५६०८
उग्गाताणु कावे	६४२१		"	६६००	"
उग्गः तियमासाणं	६५४४		उट्टे तं निवेसंते	३५५२	
उग्गसिधं बहंते	२८६८		उट्टुब्रिगमेगतं	१२३८	
उग्गातिया परित्ते	४७२३	८६२	उट्टुबद्धे रयहरणं	७०६	
उग्गायमणुग्घातो	३५३४		उट्टुमासो तीसदिलो	६२८५	
उग्गायमणुग्घायं	२८६१		उट्टुवास सुद्धो कालो	८६०	
"	३५३३		उट्टुवाहरक्कणट्टा	३२६	
"	३५५४		उट्टुवाहं व करेक्का	५२६६	३३४५
उग्गायमणुग्घाया	६६७५		उट्टुवाहं व कुसीता	४०२	
उग्गायमणुग्घायो	६६४५		उट्टुवमं तिठियम्मि व	३१६३	४८४१

उद्बन्तासो भपरिक्रमो य	३६३१		उद्वाचण एभिन्नस्य	४७६३	२५०१
उद्बन्तं चिरं प्रचुरितं	१४३१		"	४१५१	"
उद्बन्ते केण कतमिणं	१२६६		"	३३७६	
उद्बन्ते वि लघुमणं	१६३८		उद्दिष्टं तित्तेनतरं	४०१०	६१०
उष्णशितिरितमासा	३१४८		उद्दिष्टमणुहिदुं	४५६३	
उष्णियवासाकम्पा	३२०६		उद्दिष्टाभो नईभो	४२०८	
उष्णियं उद्दिष्टं वावि	३८०२		उद्दिष्टिय मेह अंतर	४००८	६०६
उष्णोद्दिष्टं मियमोमे	७६०		उद्दिष्टस्य वाहि	३४६३	२६१६
उष्णोद्दिष्ट-संगण-मद्विय	४६३४		उद्दिष्टया लघुदेसना	२०१६	
उत्तार-ससावयाणि य	३१३६	२७४७	उद्दिष्टमि चउत्तरे	२३५०	
उत्तारिण सेसकाले	६३८८		उद्दिष्टियमि लघुगो	२०२२	
उत्तरकरणं एगमया	३२१६		उद्दिष्टिया य तेणं	६७८१	३८००
उत्तरगुणातिचारा	६५२६		उद्दिष्टियामो लोभंमि	१५६५	
उत्तररश्मि पक्षिते	४२२५	३६३५	उद्दिष्टयदंको गिहृत्वो	६४१७	
उत्तरमाणास्स एवि	८४६		उद्दिष्टयदंको साहू	६४१७	
उत्तरयूसे मुदे	१६६०	२६६४	उत्पत्तारेण तु पततं	५८	
उत्तर-सासा उत्तर-गिहा	२४८८		उत्पत्तकमे गतं	२२७२	
उत्तिगो पुरं विदुं	६०१८		उत्पत्तकारो गंतु	३२७१	४३०३
उत्त्याणो सहगारो	१८७६		उत्पत्ताराणुत्पत्तारा	३८६४	
उत्तुल्ल मद्रिया वा	१८४८		उत्पत्तरो मधिकरले	१७०८	३७३०
उत्तुल्लादीपसू	१८३१		उत्पत्तरो उवसमे	३६४५	
उदण कम्पूराधी	३७६१	६००१	उत्पत्तरो गारावरे	४७३६	३२६७
उदण चिकमन्तपरित	४२३१	३६४१	उत्पत्तरी रोगाभं	६४०४	
उदणरा वातिगत्स	३५८६	३१६५	उत्पत्तिवादी गुरुता	४६६०	३०६८
उदण-गि-तेणसावयमणसु	४६२		उत्पत्त-पतमाई पुरा	४८३८	६७८
उदणसरिच्छा पक्षेणजेति	३१८६		उत्पत्त भणिभक्ष्यितु	३५६	
उदणतेण चित्तिमिली	५३४८	२४२२	उत्पादगमुत्पत्तरो	१८१६	६११६
उदणगणितेणोमे	५६३८		उत्पायरोसणसु वि	२०८४	
उदणगणितवाताधिसु	३१३२	२७४४	उत्पन्न पवाहेती	६०११	
उदणियमभो चउसु वि	५७४८		उत्पन्नामगज्जुत्पन्नामग	४०८२	१८३६
उदाहृदा जे हरियाहृदीए	५८१६	३६६३	उत्पन्नामग मडसालेण	१४०	५०२२
उदिप्याजोदाउलसिदसेणो	५७५८	३२८६	उत्पन्नो वि श्रद्धावोयण	३१६२	
उदुबन्ते मासं वा	४६८६		उत्पन्नगणी पेहेतुं	४६१७	१०६४
उद्दरे बभित्ता	२६३४	३८३०	उत्पन्नद्वारिणिविदुं	२४६६	२०७१
उद्दरे मुभिक्षे	१६६८	१०१८	उत्पन्नरणांमि दोसा	४३३२	
"	३४२६	"	उत्पन्नमि व भागादे	१६०१	
"	४८८०	"	उत्पन्नस निशिरणद्वी	१२२६	
उद्वाण परिदुविया	५४४	२६०६	उत्पन्नो पवित्रदाए	५४८	२६१४

"	४४६	२६१५	उवरि तु पंचमसूते	६४६०	
उमयो सह-कज्जे वा	६५७	२३८०	उवरि तु मुंजयस्सा	८२२	
उम्मतवायसरितं	५२५७	३३२६	उवरिसंते लहुगं	१२८२	
"	५३७०	३३२६	उवलक्खिंया य उदगा	५२६१	
उम्मार कोट्टिबेसु य	५७१६		उवलक्खिंया तु पुब्बं	४२३७	५६५७
उम्मादो लल्लु कुविघो	३६७०		उयसम-गणित विभावित	२६७५	
उम्मायं च लभेज्जा	६१७७		उवसमवहिट्ठाणं	४३६४	
उम्मायं पावेज्जा	३३४१		उवसमणहु पउहुं	११७३	३५५५
उल्लम्मि य पारिच्छा	३७५६		उवसंते वि महाकुले	३५३७	
उल्लावं तु असत्तो	२६५५		"	३५५७	
उल्लोम लहु दिय सिंसि	११६८	३५७८	उवसंतो रायमब्भो	३६७७	
उल्लोभारुण्णवणा	११६७	३५७७	उवसंपयावरुहे	२७६१	
उल्लोयणा सिग्गमणो	५३५०		उवसामितो गिहत्थो	२८५६	५५८०
उदण्णो संघ-द्वग	१६८८	२६६२	उवस्सए य संघारे	१७००	३७२२
"	१६८६	२६६३	उवस्सग शिषेसण	३०६८	१६६६
उवकरणपूतियं पुण	८१८		उवहत्त उट्ठिय खयणे	३६७३	
उवकरणे पडिलेहा	२०८	३४६२	उवहत्तं-उवकरणम्मि	३५७६	५१५४
"	५३८०	३४३४	उवहम्मति विण्णारो	६२२६	
उवगरण-गेण्हरो भार	५६४६	३०५७	उवहयउग्गहत्तंभे	४६०७	
उवगरण पुब्बभणितं	५६५७	३०६५	उवहयमसुवहत्ते वा	४६०५	
उवग्गहिता सृपादिया	६६३		उवहिम्मि पढग साढग	३०६८	१६६७
उवचरग ब्रह्मिरे वा	२७६६		उवहि सुत्त भत्त पाणे	२०७१	
उवचरति को गिलाणं	२६७४		उवही भाहाकम्मं	२६६४	
उवजुंजिउं एमिंते	३५५६		उवही य पूतियं पुण	८१०	
उववेस-अणुवदेसा	२६२८	५८२५	उवेहउपतियपरितावरण	३०८५	१६८४
उवधिममत्ते लहुगा	३६०		उवेहोभासरणकरणे	३०८६	१६८७
उवधी पडितेहेत्ता	१४३८		उवेहोभासरण उवणा	३०८७	१६८६
उवधी लोभ-मया वा	१३३३		उवेहोभासरण परितावरण	३०८६	१६८५
उवधी सरीर चारित्त	२४४६		उवेहोभासरण वारण	३०८८	
उवधी सरीरमलाचव	११६५		उव्वत्त खेस संघार	२६८४	१८८६
उवधीहरणे गुरुगा	१११		उव्वत्तणणीहरणं	३६०६	
उवधुत्त-वेरसद्धि	२२३१		उव्वत्तण परिपत्तण	१७५६	३७८२
उवधुत्तभोगधेरेहि	६११		उव्वत्तणमप्यत्ते	५४६५	५३७०
उवरिमसिण्हा कप्पो	१६०		उव्वत्तण्ण संघार	३८८४	
उवरि सुयमसद्वहणं	६१८२		उव्वत्ताए पुब्बं	१६४६	
उवरि पंच अपुण्णो	३२६६	४३००	"	१६४५	
उवरि तु अप्पजीवह	१५७		उव्वरगत्त तु भसत्तो	३००२	१६०५
उवारं तु धंगुलीयो	६१८	३८५०	उव्वरगे कोलो वा	१३४४	५७०

उसिरो संसदुं वा	३०५२	१६५१	एएसामण्यतरं	२७२६	
उसुकादिएहि भंडेहि	४३८६		"	३७७४	
उस्सगगिई सुद्धं	५२३६	३३१८	"	४३६३	
"	५३५६	"	"	४४८४	
उस्सगगलसणं सत्तु	३५७१	५१४८	"	४६५३	
उस्सगगसुतं किची	५२५७	३३१६	"	४६५७	
उस्सगगसुयं किची	५२३४	"	"	६०३१	
उस्सगगती वितहे	५०२१	६२१	एएसामण्यतरं	४३२५	
उस्सगा पद्ध-कहा य	२१३१		एएसामण्यतरं	२६२६	
उस्सगगत-वापातं	८३८		एएसि तिब्बं पी	५२१२	२५६३
उस्सगगयवापाते	८४१		एएसि तु पक्कस	५६२५	
उस्सगगयस्स पुब्बि	८३३		एएहि कारणेहि	३२६१	
"	८४७		"	३६०८	५१७५
उस्सगे भववायं	६६७२		"	३७६६	
उस्सगे गोयरम्मी	५२३७	३३१६	"	३७७६	
"	५३६०	"	"	४६१४	
उस्सगेरा एहि सिद्धाणि	५२४५	३३२७	"	४८८२	१०२०
"	५३६८	"	"	५६५५	"
उस्सगेरां भणिताणि	५२४४	३३२६	"	३१३५	२७५७
"	५३६७	"	"	४०५३	
उस्सगो वा उ ओहो	६६६८		एएहि तु उववेयं	२७३३	
उस्सीसन-गहणेणं	२१६५		एएहि य णणेहि य	२३६२	४८००
उस्सुसनगुवद्धुं	३४६२		एएहि संपउत्तो	६२६३	
उस्सेतिम पिट्ठावी	४७०६	८४०	एक्कत्तीसं च दिणा	६२८६	
उस्सेतिममादीणं	४७१३		एक्कत्तो हिमवतो	१५७१	
उस्सेतिममादीया	५६६६		एक्कत्तं मोत्तुभं	६३३६	
उहाए पण्णातं	५६१०		एक्कत्तेरा रा लम्भा	६३५५	
			एक्कत्तस ओण्ह वा	६१४४	
			एक्कत्त न एक्कत्त व	५०६२	२८०६
			एक्कहि विदिण्ण रज्जे	२५८१	
			एक्कं दुगं चउक्कं	३०१८	
			एक्कं पाउरमारो	७६५	
			एक्कं भरेमि भाणं	३४३८	२८६०
			एक्कार-तेर-सत्तर	२३२५	
			एक्कुत्तरिया चक्कुकएण	६५६३	
			एक्कुएवीसति विभासियम्मि	६६४८	
			एक्केक्कपदा आणा	१६०३	
			एक्केक्कम्मि उ सुत्ते	६१६२	
ऊ					
ऊणादुं एरिय चरण	३५३२				
ऊणाहिय दुब्बलं वा	४४६७				
ऊणातिरिसमासे	३१४४				
ऊणाहिय मण्णतो	३६६७	५२१७			
ऊणेण न पूरिसं	५८२६	४००६			
ऊत्तायो गाधो	१५३८				
ए					
एएण सुत्त रा कयं	२६५१	५८४६			
एए सः ३ दोसा	३२५२				

एककेवकम्मि य ठाणे	५१०२	२४५४	एगं ठवे णिज्जितए	१२०२	३५७२
"	५२०५		एगं व दो व तिभिणु व	२०७५	
एककेवकं तं दुविहं	५०४		एगं संचिकलाए	६२४४	
"	१८६८		एगंणि उभिणुयं खलु	८२६	
एककेवका उ पदायो	५१०	४६०७	एगंणिउ उ दुविधो	१२२०	
एककेवका ते तिविहा	५२१३	२५६६	एगंणिय वस विर	४२३२	५६४२
एककेवका सा तिविधा	७११		एगंणियस्स असती	१२७४	
"	७१६		एगंतणिज्जरा से	३६५२	
एककेवका सा दुविहा	२६१७		"	३६६३	
एककेवको तिणिणु वारा	६१५७		एगंतरणिज्जिगती	६३३०	
एककेवको वि य तिविधो	३१६६		एगंतरियं णिज्जिबिल्लं	३८२५	
एककेवको सो दुविहो	५६६७	३०७६	एगारियस्स सुवरो	४५६०	
एककोमहेणं छिज्जति	६५०६		एगापणां व सत्तावीसं	५७२६	३१३८
एगखेतणिवसी	१०२२		एगा मूलगुरोहि	२०६३	
एगचरि मन्नता	५४४३		एगावराहवडे	६५१३	
एगट्टा संभोगो	५६४०		एगासति संभे वा	१२६६	
			एगाह पराग पक्खे	२७३८	५४७६
एगतरम्मिए उवस्सयम्मि	२४०७		"	५४७६	"
एगतरणिग्गतो वा	५००७		एगिदियमादीसु तु	१८०८	
एगते जो तु गमो	१४५६		एगिदि-विगल-वंधिदिएहि	५००३	
एगत्य वसंताणं	२३७७	४८१४	एगुरावीस जहण्णे	३५२६	
एगत्य रंधरो भुंजणे य	११८५	३५६६	एगुत्तरिया घडखकएणं	६५६६	
एगत्य होति मत्तं	४१६०	५३०६	एगूरातीस दिवसे	३५१८	
एग दुण तिणिणु मासा	२६२१		एगूरातीस वीसा	३५१७	
एगपुड सगल कसिणं	६१४	३८४७	"	३५४६	
एगवतिल्लं भंडि	३१८०		एगे अपरिएण एया	५४६४	५४३७
एगमखेगा दिवसेसु होति	६३२३		"	५४३६	"
एगमखेगे खेदो	५२८२	३३६०	एगे अपरिएणते या	५५४५	"
एगमरणं तु लोए	५१४०	२४६०	एगे उ कज्जहाणी	३८४१	
एगम्मिअण्णेगदाणे	६४२६		एगे गिलाणपाहुड	५४६६	
एगम्मि दोसु तीसु व	५११२	२२७१	एगे तु पुम्बमरिउ	४५७६	
एगस्स अण्णेगएण व	४०३६		एगेण कयमकज्जं	४७८७	६२८
एगस्स पुरेकम्मं	४०७६	१८३६	एगेण तोसिततरो	६०८१	
एगस्स वितियगहणे	४०८५	१८४२	एगेण समारद्धे	४०८६	१८४३
एगस्स मारणजुत्तं	४४६८		"	४०८६	
एगं उडुवडम्मि	२१६६		एगेणं बंधेणं	७४३	
एगं व दोव तिभिणु व	३८३१		एगेणेगो छिज्जति	६५०५	
"	३८३८				

एणे तू बळगते	५४८६	५३६१	"	५६२५
"	५४८६		"	५६८६
एणे महागुणस्त्री	११८२	३५६३	एतेण भज्ज भावो	४४२८
एणेसि जं भणितं	३३१६		एतेण उवातेणं	१४६१
एणे इत्थिगमो	५४५५		एते गु. दवायेति	१३६६
एणे गिलाणुपाहुड	६३३६		एते पदे ए रक्खति	१३३८
एणे छिदिसतेमं	४५६४		एतेसामभ्युत्तरं	६२३
एणे व होज्ज यच्छो	१६५७	१६१५	"	६३३
एणे संघाडो वा	३०३०		"	६४१
एणे संघारगतो	३८४८		"	६४६
एतएतं रागादि	४६३		"	१०७३
एतहोसविमुक्कं	१६५२		"	१५०२
"	५०६४		"	१५४०
"	६३४१		"	१५८६
एतविहिमागतं तू	५४६३	५४३६	"	१६२१
एतं खलु भाइणं	८६८		"	१८१४
एतं चिय पच्छित्तं	१६०२		"	२१५७
एतं तं वेव वरं	१४६६		"	२१८३
एतं तु परिगृहितं	१८६६		"	२२२४
एतं सदेसाभिहूडं	१४८७		"	२४६५
एताइं सोहितो	१८३८		"	२५१४
एताणि वितरति	२५८४		"	२६८३
एतारितंमि दंतो	४६६		"	२७१०
एतारिसांभ वासो	५२३२		"	३७४०
एतारिसं विउसज्ज	५४६५	५४३८	"	४४६६
"	६३३८	"	"	४६७०
एतारिखं विओसज्ज	५५५६	"	"	५६५६
एतारिखे विओसेज्ज	५५३७	"	"	६२५६
एतासि असतीए	१७७५		एतेसामभ्युत्तरं	६०८
एतविहिमागतं तू	५४३५		"	६१६३
एते अण्णो य तहि	३८२६		"	६१७०
"	३८३६		"	७७१
एते उ अनेप्यंते	५०३०		एतेसामभ्युत्तरं	७२७
एतेखिय पच्छिता	३३७		"	८७३
एते वेव मिहीणं	३३८		"	८८४
एते वेव दुवासस	१३६५		"	८८६
एते वेव य दोसा	४२५०		"	१२२१
"	५६३२		एतेसि असणादी	५६२६

एतेसि बसतीए	४४६	एतो रिङ्गायणा	६४७५
एतेसि कारणाणं	३३५०	एतो समाकमेज्जा	६६१८
एतेसि च पयाणं	५६७३	३०८२ एतो हीणत्तराणं	१८६५
एतेसि तु पयाणं	२१३५	एत्थ उ अणमिमाहियं	३१५१
"	४६२७	एत्थ उ पयाणं पयाणं	३१५३ ४२८४
एतेसि तु पयाणं	५६७५	३०८२ एत्थ किर सत्ति सत्तण	५७३८ ३२७०
एतेसि पडमपदा	१४६६	एत्थ पडिसेवणाओ	६४२२
एतेसि पडवराता	३१०६	"	६५८१
एतेसु उ गेण्हते	४७६५	एत्थं पुण एक्केक्के	६१६४
एतेसु चिध समणादिएसु	२८	एमादि अणागय दोसरनत्तगाट्ठा	३४४१ २८६४
एतेह संघरत्तो	२६६८	एमादिकारणेहि	२४५४
एतेहि कारणेहि	८६१	एमेव भवहितम्मि वि	११३३
"	१०६७	एमेव अस्सिण्णेषु वि	४५५६
"	११२७	एमेव अट्टयात्तं	३६८
"	१२१६	एमेव अतिक्कते	१०७६
"	१३०८	४६०८ एमेव असण्णहिते	२२२६
"	१४५०	एमेव अहासंते	५५६७ ५४६६
"	१५६८	एमेव इत्थिवम्मे	४५६५
"	१५७५	एमेव उम्मादी	२६७७ ५३५३
"	१५८२	एमेव उत्तिमदु	३४२४ २८७६
"	१७५६	एमेव उवहित्तेज्जा	६२०१ ७६६
एत्ते हीति अपत्ता	६२२८	एमेव उवज्जए	२८२१
एत्तो एगत्तरीए	७८३	एमेव कतिविमाए	१३२६
एत्तो एगत्तरेणं	१६२	एमेव कायमादिसु	४४२६
"	७३६	एमेव गणायारि	२८०६ ५७७५
"	६८०	"	२६०७ ५८०४
"	१०८४	एमेव गणावन्दे	५५५०
"	१०६१	एमेव गिलाणे की	१३३६ ५६५
"	१०६७	एमेव गिहत्थेषु वि	३४७
"	१३५६	एमेव चरियमंणे	३७८४
"	१४५१	एमेव चरियमंणी	२६३३
"	१५५६	एमेव जाउलोदे	५६७५
"	१५७०	एमेव चारणमडे	१३२२
"	१५७८	एमेव चिण्णट्ठादिसु	५३३७
"	१८५०	एमेव चेष्टयाणं	४५८०
"	२१६०	एमेव राक विकप्पा	१८३६
"	३३४०	एमेव तत्तियमंणे	३७८३
"	६०२५	एमेव तत्तियमंणी	३४२२ २८७४

एमेव तिबिहकरणं	६०३६		एमेव य सच्चिवत्	४७६७	६०७
एमेव तिबिहपातं	४४६०		एमेव य समशीर्ष	६१६६	
एमेव तु संयोगा	४२४१		एमेव विहारम्या	१०६५	
एमेव तेल्न-गोभिय	५७५०	३२८१	एमेव सम-गुग्गे	२६७१	५३४७
एमेव संभकेयण	३१६०		एमेव संजईण वि	४६०१	
एमेव संतणम्मि वि	३८७०		एमेव संजतीण	४६३६	१०७३
एमेव संसणे वी	६३६५		एमेव संजतीण वि	२०७६	१०८५
एमेव देहवातो	२४२		"	४६४८	
एमेव पतये मोहयम्मि	५०५५	२८००	एमेव सेसएसु वि	५०७	४६०४
एमेव पज्जितापलिते	४६४३	१०८०	"	२६१६	
एमेव बारसविहो	५२१४		"	२६३६	
एमेव वितियमणे	३७८०		"	२७१७	
एमेव वितियमुत्तं	५४४२		"	२७६२	
एमेव भावतो वि य	४६०३	१०४०	"	३३७७	
एमेव भिक्खुगहणे	२६०६	५००६	"	४१४५	५२६७
एमेव मज्जणादिसु	५०४८	६४७	"	६००४	
एमेव भामगस्स वि	५०२६	६२८	एमेव सेसएहि वि	४२३८	
एमेव य भरणे वी	४६४०		एमेव सेसग्गि वि	३२३०	
एमेव य भवराहे	६३७७		एमेव सेसगाण वि	२०८२	
एमेव य भोममि वि	३४८		एमेव सेसियासु वि	४३८६	
एमेव य इत्थीए	२७१२	५०८०	एमेव होइ इत्थी	५२२१	२५७६
एमेव य उदितो त्ति य	२६१२	५८०६	एमेव होति उक्करि	२५७	२६१६
एमेव य उवगरणे	५०६३		"	३४६८	"
एमेव य कम्मए वि	४३६		"	५७०२	"
एमेव य गेलभो	२६२४	५८२१	एमेव होति नियमा	४४८३	
एमेव य जंतम्मि वि	४५२१		एमेवोवाधिसेज्जा	१८३७	
एमेव य छेदादी	३५२१		एयगुणविप्पमुक्के	३०१७	
एमेव य ण्हाणादिसु	२०३०	१६७६	एयगुणविप्पमुक्के	३१०८	
एमेव य गिज्जीवे	४८५६	६६८	एयगुणविप्पमुक्के	३११३	
एमेव य पडिबिम्बं	४३२४		एयविहिमागयं तु	५५४४	५३६८
एमेव य पण्डए	१६६		एयस्स गण्ठि दोसो	२८३८	५५७२
एमेव य परिमुत्ते	४१०६	१८६७	"	५१५२	२५०२
एमेव य पासवरो	६१२०		एयस्स गाम दाहिह	३०३८	१६३६
एमेव य पुरिसाण वि	५०४०	६३६	एवं केव पपाणं	५८३६	४०१५
एमेव य मयरादी	४६६४	१०७१	एयं तु भावकसिणं	६६६	
एमेव य भिक्खुत्तं वि	६६३५		एयं भुत्तं भफलं	१५४६	
एमेव य कसभस्स वि	६६३२		एयाइ भवुब्बतो	४३७४	
एमेव य विज्जाए	३७१५		एयाणि य मयणाणि य	२७२८	

एयाणि सोह्वन्तो	४६७३		एवं जायगुवत्थं	४०५०	
एयारिसम्मि वासो	४६६४		एवं गामं कप्पती	३२४८	
एयारिते विहारे	४३५५	३३१४	एवं तं अस्सहाए	४७४३	८८५
एरवति कुणालाए	४२२६	४६३६	एवं ता उडुवद्धे	१२३२	
एरवति जंथ चक्किय	४२४३	४६३३	एवं ता गिहवामे	३०४६	१६४७
एरवति जम्मि चक्किय	४२२८	४६३८	एवं ता गेण्हते	४०४७	२८०२
एरिसमो उवभोगो	४१०५	२४५७	एवं ना जिगुक्खे	४१४८	४२७०
एरिसय वा दुक्खं	४४३५		एवं ता गोहरणं	१२८६	
एरिससेवो एयारिसा	३५८७		एवं ता पच्छित्तं	३१११	
एवइयं मे जम्मं	१०३६		एवं ता सच्चित्ते	१५३	
एवमपि तस्स शिययं	२६५८		एवं ता सव्वादिमु	३३५८	
एवममंखडे वी	११०		एवं ता सविगारे	४२०६	२४५६
एवमुवस्सय पुरिमे	२६७३	४३४६	एवं ताव अभिण्णो	४६६८	
एवं मज्झिमकती	३५२६		एवं ताव दिवसमो	८६३६	४८३२
एवं मज्झिमादिमु	४८७६		एवं तावज्जुगुद्धे	४७२८	
एवं मलम्भमाणो	१२३७		एवं ताव विहारे	४५८६	
एवं मवायदंसी	४१५४	४२७६	एवं तियाः गह्वरो	६४५	
एवं ममं एा कप्पति	४८६७		एवं तु मणीयत्वे	२८०१	४७६७
एवं मालोएति	३८७४		एवं तु अप्पमसंभोडणमु	१६५६	१६१७
एवं उगमदोसा	४१८५		एवं तु अलम्भते	४०१७	
एवं उभयांवरंथे	११२५		एवं तु प्रसङ्गभावो	१८६४	४६१०
एवं एक्केक्क तिगं	४२२२	२४६६	एवं तु प्रहाज्जे	३४०१	
एवं एक्केक्कदिगं	२८०५	४७७१	एवं तु केह पुरिमा	३४७६	४१५६
एवं एत्ता गमिया	२८२४		एवं तु मण्डित्तुमु	४०४६	६४८
एवं एत्ता गमिया	६४५२		एवं तु दिया गह्वरं	१६८०	२६८४
एवं एया गमिया	६४४६		एवं तु पवत्तमाएस्स	४७५	
एवं एसा जयणा	४६३१	१०६८	एवं तु पाउसम्मो	३१२८	
एवं खत्तु उक्कोसा	३८८६		एवं तु भु जमाण	४७७८	
एवं खत्तु गमिताणं	६४६२		एवं तुमपि बोदग	६४१४	
एवं खत्तु जिणक्खे	१४४४		एवं तु समत्तेण	६४६४	
एवं खत्तु ठवणामो	६४६३		एवं तु सो अवहिता	२७०७	४०८१
एवं खत्तु सविग्गे	४४६४	४४६३	एवं तेसि टिताणं	४६३७	१०७४
एवं गिलाणलक्खेण	२६८६	१८६१	एवं दव्वतो द्दण्हं	४७७३	६१४
एवं च पुणो ठावते	१६३६	१४६१	एवं दिवसे दिवसे	२८००	१७६६
एवं च भणित्तेतम्मि	४२६०	३३६६	एवं पराप्परस्सा	१७६३	
एवं चिय पिसित्तेणुं	४३८		एवं पाओवगमं	३६२२	
एवं चैव पमाणं	६६१		एवं पाउसकलि	२२६५	
			एवं पाओवगमं	३६७५	
			एवं पि मठावते	४४८१	४४८१

અર્થ પિ ઇઠાચસો	૨૭૪૩	૪૪૮૧	અસા મુત્ત ચલતા	૬૨૪૨	
અર્થ પિ કીરમાણે	૩૦૦૭	૧૬૧૦	એસેવ કમો ગિયમા	૪૮૭	
અર્થ પિ પરિચલતા	૪૧૮૮	૪૩૦૭	"	૪૬૦	૪૬૪૦
અર્થ પીતિવિચલ્લો	૪૧૭૫	૪૨૬૪	અસેવ ગમો ગિયમા	૬૦૦	
અર્થ પુષ્પામુદે	૪૦૪૪	૬૪૩	"	૬૧૩	
અર્થ ફામુમફામુ	૪૦૬૧	૧૮૧૮	"	૮૩૪	
અર્થ કારસમાસા	૬૪૪૨		"	૮૪૪	
અર્થ કારસમાસે	૨૮૦૪	૪૭૭૦	"	૬૬૮	
અર્થ મળાતો દોસો	૨૬૪૦		"	૧૦૦૮	
અર્થ ચિતિગિચ્છે ચી	૨૬૧૮	૪૮૧૪	"	૧૨૬૭	
અર્થ વિ મગમાણે	૭૪૮		"	૧૩૦૬	૪૬૦૬
"	૭૬૭		"	૧૪૮૮	
"	૮૪૩		"	૧૭૭૭	૩૭૬૬
અર્થ સદ્ગુલાદ	૧૬૩૪	૧૪૮૬	"	૧૬૬૪	
અર્થ સણ વજ મુ'જ ચિપ્પો	૮૨૭		"	૨૦૨૮	
અર્થ સમિણતરાણ વિ	૩૪૩૬		"	૨૩૭૭	
અર્થ તિદ્ધ મહુળ	૪૪૪૦		"	૨૪૨૪	
અર્થ મુત્તગિચ્છો	૧૨૨૩		"	૨૬૪૦	
અર્થ મુત્ત મફલ	૪૧૭૧	૪૨૬૦	"	૩૦૬૪	
"	૪૨૦૮	૨૪૬૧	"	૩૨૬૮	
અસ ગમો ચંચગામીસણ	૪૨૮		"	૪૬૬૪	
અસ તર્થ પઠિચ્છજ્ઞતિ	૧૮૮૬	૪૪૬૭	"	૪૬૬૭	
"	૨૮૮૦	"	"	૪૮૬૦	૧૦૦૦
"	૬૪૬૪	"	"	૪૮૬૬	૧૦૩૩
અસ તુ પર્લંબહારી	૪૭૮૨	૬૨૩	"	૪૧૬૩	
અસ પસત્થો જોગો	૪૬૬૧		"	૪૨૨૩	
અસમણાદ્ધણા સલુ	૧૪૭૮		"	૪૮૭૧	
અસ વિહી તુ ચિસજ્જિતે	૪૪૬૦	૪૪૩૪	"	૪૬૩૧	
અસણ દોસે વ કતે	૧૬૪૪	૧૬૦૩	"	૪૬૪૮	
અસણમાદી મિણ્ણો	૪૩૨		અસેવ ગમો ગિયમા	૧૭૮૨	૩૮૦૩
અસણમાદી રહાદિ	૪૪૩		"	૨૮૪૪	૪૩૮૭
અસા મ્મિહી મણિતા	૪૦૮૪	૧૮૪૧	"	૩૩૧૦	
અસા મ્માદ્ધણા સલુ	૧૪૬૨		"	૪૪૪૧	૪૪૪૧
અસા ડ અમીયત્થે	૬૩૪૮		"	૬૬૬૪	
અસા ડ અપિયા	૪૬૪		અસેવ ચતુહ પઠિસેવણાતુ	૬૧	
અસા સલુ મોહેણ	૪૧૬૭		અસેવ ચ.વિદુ'તો	૪૮૬૬	૧૦૦૮
અસા વિહી ચિસજ્જિતે	૪૪૩૩		"	૬૪૦૮	

एसेव य विवरीभो	४२३
एसो उ असञ्जभो	६११७
एसो उ आसविही	४७१७
एसो वि ताव बभयउ	२७८३
एहि भलितो ति वञ्जति	६२११

श्री

श्रीकच्छिय-वेकच्छिय	१३६६
श्रीगास संघारो	३८६
श्रीगाहण्ण सासतण्ण ग	४१
श्रीदइयादीयाणं	३१४१
श्रीदण-गौरसभादी	२४६३
श्रीदण श्रीसे शिम्मीसुवक्करो	४६३८
श्रीदरिए पत्थयणा	४६६७
श्रीधोववी जिराणं	१३८६
श्रीबद्धदीवकलयं	४७६८
श्रीभाविभो मि	१४६४
श्रीभावणा पवयणे	१०८४
श्रीभासणा य पुच्छा	४८६४
श्रीभासिय ण्डिसिद्धो	४४४८
श्रीमम्म सोसलीए	४६२३
श्रीमं ति-भागमद्धे	२६६१
श्रीमंय पाणमावी	४८६४
श्रीमाणस्स व दोसा	१६८४
श्रीमायिकारणीहि व	४४१६
श्रीमे एणण सोही	४७०६
श्रीमे तिभागमद्धे	४२६
"	३६६४
श्रीमे वि गम्ममाणे	१७६
श्रीमे संगमथेरा	४३६३
श्रीमोवरियागमणे	४७०७
श्रीमोवरिया य जहि	४७६७
श्रीयन्भूतो क्षेतं	४८१८
श्रीरोहवरिसणाए	४७०८
श्रीलगणमणुवयणं	१४५६
श्रीवंबिऊण समपात्रतं	३८०४
श्रीलोणम्मि मिलिमिली	६१६२
श्रीवट्टिया पदीसं	४३८४

श्रीवासामिषु सेहो	४००
श्रीवास संघारे	१०१५
"	१०१७
श्रीसक्कण श्रित्सक्कण	१००६
श्रीसट्टे उज्जिय-धम्मिए	२४६४
श्रीसवणं अधिकरणे	२११६
श्रीसणमलक्खणसंजुयाभो	४२६७
श्रीसण्णापरिभोगा	४४
श्रीसण्णे वट्ठुणं	१०८
श्रीसण्णो वि विहारे	४४३६
श्रीहे अभिग्गह दाणं	२०७०
श्रीहणिसीहं पुण	६६६७
श्रीहाणं ता अज्जो	३६७८
श्रीहाणाभिमुहीणं	१७०४
श्रीहातिय-कालगते	२७५१
श्रीहादीया भोगिणि	२४७२
श्रीहारमगरादीया	४२२३
श्रीहावता दुविहा	४४७८
श्रीहावित-उस्सण्णे	४४६२
श्रीहावित श्रीसण्णे	२७५५
श्रीहावित-कालगते	४४८६
श्रीहिमणा उज्जिय	३४६०
श्रीहीमाती खातुं	२४८३
श्रीहे उवग्गहम्मि थ	१३८७
श्रीहे एणदिवसिया	६३१५
श्रीहे वत्त अयत्ते	४४२८
श्रीहे सव्वण्णसेहो	४२०२
श्रीहेण उ सट्ठाणं	६६८१
श्रीहेण विभागेण य	२०१७

क

कक्खतक्खवेगण्डिताइसु	४६३०
कच्छादी ठाणा खलु	४१७७
कज्जकारणसंबंधो	६६७
कज्जमक्कज्ज जताऽज्जत	६६५४
कज्जविर्वात दट्टेण	६२०५
कज्जं एणणादीयं	४२४६
"	४३७२

कञ्जे मतपरिणामा	२७६८	कमङ्गमादी लङ्गु	२४०
"	६३७३	कनरेणु भवङ्गुमाणी	४७८३
कट्टकम्मादि ठाणा	४१३६	कम्मचउक्क दब्बे	४००
कट्टेण किलिचेण व	१८७५	कम्मपसंगऽणवत्था	२०६४
कट्टेण व सुत्तेण व	४६१६	कम्मपसत्यपसत्ये	४१२०
कट्टे पोत्ते चित्ते	५११८	कम्ममसंसेज्जभव	३६०२
"	५१५४	"	३६०३
कडम्भो व चिलिमिली वा	२२२	"	३६०४
"	५३६६	"	३६०५
कडगाई भाभरणा	२२६५	कम्मस्स भोयणास्स य	४४०
कडगादी भाभरणा	५६१४	कम्मं कीत्तं पाभिक्खियं च	५४१७
कडजोगि एवकगो वा	१६६३	कम्मादीण करणं	६६८२
कडजोगि सीहुपरिसा	३४४३	कम्मे आदेसदुगं	४६४७
कडिपट्टे य छिहली	३६१०	कम्मे सिप्पे विज्जा	३७१२
कडिपट्टमो अभिरावे	३६११	"	३७१३
कराणा हणति कालं	६१४७	कयकरणा इतरे या	६६४६
कण्णतेपुरमोलोप्रयोगे	४८५१	कयम्मि मोहभेसज्जे	३८०६
कण्णं सोधित्तामि	६८३	कयमुहं अकयमुहे वा	४६६८
कतकञ्जे तु मा होज्जा	६२७	कयवर-रेणुच्चारं	२३१८
कतमेण सभावेण व	१३३०	करडुमभत्तमलदं	४४४२
कतजसगहियमोल्लं	३७२१	करणे भए य संका	४७३
कतरं दिसं गमिस्ससि	३१४	कर पाव डंडपादिहि	४७६०
कत्तरि पयोयणापेक्ख	४४१६	कर-मत्ते संजोगो	१४६
कत्तो ति पत्तिमादी	३४४७	कलमत्तातो अहमल	१५८
कत्थइ देसग्गहणं	५२३६	कलमादहमलगा	१४६
कत्थति देसग्गहणं	५३६२	"	१८६
कप्पट्टु खेल्लण	१३०३	कलमेत्तं रावरि रोम्मं	४०३५
कप्पट्टु दिट्ठ लङ्गु	४७२६	कलमोदणा वि भणिते	३८५३
कपट्टिओ अहं ते	२८७६	कलमोदणी य पयसा	३८५४
"	६५६४	कलमोयणी य खोरं	३०२५
कप्पडियादीहि समं	३४५८	कवडगमादी तंभे	३०७०
कप्पति ताहे गारत्थिएण	८०३	कव्वाल उट्टमादी	३३२०
कप्पति तु गिलाणट्ठा	५६४४	कसाय-विकहा-वियञ्जे	१०४
कप्पति समेषु तह	४०६६	कसिणासमोसहीणं	१५८३
कप्प-यकप्पा तु सुत्ते	६३६५	कसिणं पि गेण्हमाणी	६३६
कप्पम्मि अकप्पम्मि अ	४८६६	कसिणाए क्वणाए	६४६४
कप्पा आतपमाणा	५७६४	कसिणाक्खणा पढमे	६४१८
कप्पासियस्स भवती	७६३	"	६४१९
		कसिणाऽविहिमिएणम्मि य	४६१५

कसिखे चतुर्विधम्मी	६७२		कामं प्राज्यवज्जा	३३२३	
कसिखा कसिखा एता	६४६६		कामं उदुविवरीता	२०५८	
कस्स घरं पुच्छिऊणं	४४४६		कामं कम्मणिमित्तं	५१५	
कस्स त्ति पुच्छियम्मी	५०२४		कामं कम्मं पि सो कप्पो	५६६०	३१००
कस्स त्ति पुरकम्मं	४०६४	१८२१	कामं खलु असुगुरुगो	४८५६	६६६
कस्सेते तराफसगा	१२६०	२०३८	कामं खलु यलसद्दो	३५०४	
कस्सेयंति य पुच्छा	१७८८		कामं खलु चेतण्यं	५६७४	
कस्सेयं पच्छित्तं	४७६५	६३६	कामं खलु धम्मकहा	४३५४	
कहिता खलु आगारा	२३४१		कामं खलु परकररो	१६२३	
कहितो तेसि धम्मो	५७५३	३२८४	कामं खलु पुरसद्दो	४०६२	१८१६
कंचणपुर इह सण्णा	३८४६		कामं खलु सव्वण्ण	४८२२	६६३
कञ्जियमायामासति	२००		कामं जिणपच्चंक्खो	५४३४	
कञ्जिय जाउलउदए	३०५६	१६५८	कामं जिणपुठ्ठवरा	६६७४	
कंटगमादी दब्बे	६२६३		कामं तु सम्बकालं	३१७७	
कंटगमादीसु जहा	१८८३	५४६६	कामं देहावयवा	६१७२	
कंटड्ढि खानु विज्जल	४७३६	८८१	कामं पमादमूलो	६६६०	
कंटड्ढि मच्छि विच्छुग	४१७		कामं पातधिकारो	४५२२	
कंटड्ढिमातिएहि	४७४१	८८३	कामं ममेतं कज्जं	६४०६	
कंटाइ-साहण्डा	२६५३		कामं विभूसा खलु लोभ-दोमो	५८१८	३६६५
कंटादी पेह्वो	६२६	३८५८	कार्यं विसमा वत्तू	६४०४	
कंटाईहिसीतरस्सहुता	६३१	३८६३	कामं सत्ताविकप्पं	३३१५	
कंडादि लोभ गिणिरगा	१८०७		कार्यं समावसिद्धं	३१	
कंहुसग-बंघेणं	२१७५		कामं सम्बपदेसु	३६४	४६४४
कंतार-गिण्णतारणं	२५२८		कामं सुप्रोवधोगो	६०६७	
कंदप्पा-परवत्थं	३१८		कामी सचरंजगत्तो	४६८७	
कंदादि अश्रुं जंते	५६६८	३११३	कामी सचरंजगत्तो	४६६५	
काइयभूमी संसारए य	३१५६		कयकरणा इतरे या	६६४६	
काउस्सग्गमकातुं	१५६६		कायत्तीणं कातुं	२८५	
काउं सयं ए कप्पति	८३६		कार्यं परिच्छयंती	४७६१	६३१
काऊण अकाऊण व	२८५६	५५८६	कायाग वि उवधोगो	३६५	
काऊण भासकप्पं	२०३८	१६८७	काया वया य तच्चिय	३३०८	४६७६
"	३१४५		कायी सुह्वीसत्ता	१६७१	
"	३१५६	४२:६	कायेहज्जिमुदपहा	१४७६	
काएण व वायाए	२२५८		कारण असुगुण विहिणा	५८१५	३६६२
काप्रोवचिभो बलवं	३६१०		कारण एग मड्ढे	२४१०	
काकणिवारो लहुभो	३८४		कारणभो सग्गामे	६०४२	
काणच्छि रोमहरितो	२३३६		कारणगहरो जयसा	६०५३	
काणच्छिमाइएहि	५१४५	२४६५	कारणगहिउम्बरियं	३३६६	२८५१
कानूण य पराणं	५५२६				

कारणचाए अवहर्षा	२७०६	५०८४	कालो समयादीयो	३१४३	
कारणतो पविधीए	१६६८	३७२०	कालो सभा य तद्वा	६१३२	
कारणपडितेवा वि य	४५६		कावालि य भिक्खु	५०७७	२८२२
कारणमकारण वा	६६५३		कावालि सत्तल	३६२२	५१८७
कारणमकारणो वा	८०८७		कात्तातिमातिज पुष्पकाले	५०१३	६१३
”	३५०६		काहीया तरुणोमु	५२२५	२५८०
कारणमणुण-विधिया	२०८६	३६६२	काहीता तरुणोमु	५२१६	२५७६
कारणलिगे उद्धोरमत्तगा	४६६७		”	५२२४	२५७६
कारणगुपालगण	३२६८		काहीया तरुणोमु	५२१५	२५६७
कारणए वि य दुविधे	१०६१		किड्ड तुयट्ट अरावार	१३११	
कारणो उदुगहिते	३१७१		कितिकम्म च पडिच्छति	२८८४	
कारणो विलगियव्व	६००६		कितिकम्म तु पडिच्छति	६५६६	
कारणो सपाहुडि-ठित्ता	१३४३	५६६	कितिकम्मस्स य करणे	२०७२	
कारणो हिसित मा	४६३६		किमणोऽभयं गिण्हति	२७७५	
कारावणमभियोगो	५८६		किरियातीयं एणु	१७५६	३७७८
कामणं सव्वद्धा	५४		किवलेमु दुव्वलेमु य	४४२४	
कालगतम्मि सहये	४५६२		किह उप्पण्णो गित्ताणो	३००५	
कालचउक्कं उक्कोसएण	६१५२		किह भिक्खु जयमाणो	६३०४	
कालचउक्के एणतग	६१५५		किह भूतगुवधानो	६२६	३८६१
कालदुवातीतादीणि	१०१४		कि आगतज्ज्य ते विति	३३८०	२७८१
कालसमावाणुमतो	३८८८		कि उवधानो धोए	४१०७	१८६५
कालात्तिकमदाणे	१६७५	३६६६	कि उवधानो हत्थे	४१०५	१८६३
कालादीते काले	३८७		कि कारण चकमणं	३८८०	
कालियपुब्बगतो वा	५५२३	५४२५	कि कारण चमदणा	१६३२	१५८४
कालियमुयं च इत्थिआसियाणि	६१८८		कि काहामि वराधो	२६८३	१८८५
कालुद्वाइ कालनिवेमी	५६७४	३०८३	कि काहि ति मयेते	१७४१	२७६४
कालुद्वादीमादिमु	५६६२	३१०२	कि काहि ति मे वेज्जो	३०७६	१६७५
कालेरा अपत्ताणं	३२३७	४२६०	कि शीयत्थो केवलि	४८२०	६६१
कालेरा पुण कप्पति	५६७३		कि च मए अट्ठो मे ?	१७८६	
कालेरावतिणं	३२२५	४२६०	कि दमग्रो हं भते	४०३४	६३३
काले अपट्ठपंते	२३६७	४८०५	कि पत्तो गो भुत्तं	३८६०	
काले उ अणुणएते	४१६०	५२८२	कि पुण अणुणरसहायएण	३६१३	
काले उ मुयमाणो	२६४३		कि पुण जगजीवमुहावहेण	५६४२	
काले गिलाणवावड	२६५४		कि पेच्छह ? मारिच्छं	१६८८	३७१२
काले तिपोरिसट्ठ व	६१०१		कि मण्णे गिण्हिमणं	५६३८	३०४४
काले वा पेच्छामो	१२६०		कि वच्चसि वासंते	३०२	
काले विराये बहुमाने	८		कि वा कहेज्जं छारा	४४८२	
काले सिहि-गादिकरे	२२६३		किचणं दग्धा एण्हि	२४७२	
कालो दब्बअत्तरती	१०१२				

कीयकं वि य दुविहं	४४७५	केवय-मणोहि-बोहस	५४२४
कीय किराविय भयुमोदितं	४४७४	केवलवज्जेसु तु प्रतिसएसु	५६६२
"	६०३०	केवलविष्णो अत्ये	४८२६ ६६६
कीवस्स गोण्णसामं	३५८८	५१६४	५०२३
कीवे पुट्ठे तेणे	३७४२	केसव-प्रद्वबत्तं पण्णवैति	१४१ ५०२३
कीस ए शाहिह तुम्हे	५०२५	६२४	१६४७ १६०६
कुण्डलदोसा उत्तेण	८५०	केसि च अभिगमहिता	३५४६
कुण्डलतलिय कुलिगी	६६	केसि च एव वानी	६०६०
कुज्जा व पञ्चकम्मं	४६५०	केसि च होतऽमोहा	१०
कुज्जा वा अभियोगं	४०२८	को भाउरस्स कालो	३२४७ ४२७२
कुट्टित्त सक्करापीहि	६३३	कोई तत्थ भरोज्जा	४२८७
कुट्टित्तारिया भसती	१७२८	कोउय-भूतीकम्मं	४३४५
कुट्टित्त-कुसत्थेसु	३३५३	कोउय-भूतीकम्मे	५६३
कुत्तीय-सिद्धिण्णहण	५८५८	कोउहलं च गमणं	५८५४ ४०२६
कुसमादिकज्ज दंढिय	६३४	को गेण्हति गीयत्थो	५१०३ २४५५
कुलबंसम्मि पहीणे	२२४२	को जागति केरिसम्भो	४७३२ ८७२
"	२३५१	कोडुगमादिसु रत्ने	२५३४
कुलसंघयो तु तेसि	१०६६	कोट्टागारा य तथा	४०५७
कुलियं तु होइ कुडं	४२७३	कोट्टिय छप्पो उदिट्ट	५६५४
कुलियादि ठाणा खलु	४२७२	कोट्टियमादीएसु	५०८
कुवण्य पत्थर सेट्टह	४७७४	कोणायमादी भेशो	१२०८
कुसमादि भकुसिराह	१२२६	कोणाभेकमणोया	३४१६ २८७१
कुसलविभागसरिसम्भो	६४०६	को दोसो को दोसो	४८४६ ६८६
कुं षित सत्ते मालामारे	६३६६	को दोसो दोहि भिष्णो	४७११ ८४२
कुं भार-तोहकारेहि	४०१५	कोहवपलालमादी	२६२
कूपति अदिज्जमारो	३८४३	कोत्रम्मि पिता पुत्ता	५८२३ ४०००
कूपरदंसमसोससीता	५६३६	को पोरिसीए काले	२८७०
कूरो णासेह खुचं	३७८६	को जंते परिवाम्भो	६५८४
केहत्थ भुत्तमोई	५१०४	"	२२६४
केहत्थ भुत्तमोनी	२५४७	कोमुत्ति शिंसा य पवरा	३०३७ १६३८
केई परिसहेहि	३६२३	कोयो मज्जगगविही	४२६०
केई पुब्बणिसिद्धा	६३४४	कोला उ बुणा तेसि	५३६० ३४४५
केण पुण कारणेणं	६४२५	कोलालितरे वत्थज्जी	४३६२
केणुवसम्मिभो सइकी	८८०	कोलपरंपरसंकलिया	१३४६ ५७५
केयि भहाभावेणं	१४५०	को वा तथा समत्थो	५४२७
केलासभवरो एते	४४२७	को दोण्हति गेलणो	३०६५ १६६४
केवइय आस-हत्थी	२३६६	कोसग एहुरक्खट्टा	३४३३ २८८५
केवल मण्णपज्जवणारिणो	६४६७	कोसंभाऽऽहारकए	५७४४ ३२७५

कोसाग्रि-सल्ल-कंटम
कोहा गोगादीशं
कोहा वलवागमं
कोहाई परिणामा
कोहातिसमिभूषो
कोहादी मच्छरता
कोहेण ग एस विषा
कोहेण व माणेण व
"
कोहो वलवा-गमं

३४३७
३२८
४४०८
४२६५
३५६
३५५
२६३
३४०
३१६
२६६६

स

समूहेण उवहते
सल्लमाणे वायवधो
सत्तियमादी ठाणा
सडादाशि य गेहे
समधोसि धाममोशं
समणं मोहतिगच्छा
समणोणं सामियं वा
समणो वेधावच्चे
सव उवसम मीसं पि य
सरए सरिया सुह्रा
सर-कस-गिट्ठरं ए
सर-कस-गिट्ठराई
सरटणभीधो क्खु
सरिया महिगुणशिया
ससुणे एक्को बंधो
सत्साढगम्मि ससुणा
सडे पत्तो तह दग्ध
संताविसिद्धज्जेते
संतिस्समं महवियं
संते व भूणते वा
संधकरणी चउहरण वित्तरा
संधादी ठाणा ससु
संधारमया शासति
संधारती गातुं
संधे दुवार संजति
संधो ससु पायारो
वाणुगमादी मूलं

४५८१
६२४
२५६७
३१८६
६२५४
३३६८
३६६०
३६६०
५४३०
४०५०
२६१४
२८१७
६६२५
५१७८
६३८
६४१३
१६८२
१३६५
३१०५
१२६२
१४०७
४२७५
१३३२
१३५३
१५२५
४२७६
३१०

सायु कंटम-विसवे
सामित विउसवित्ताइ
सिलम्मि सेसियेस्सा
सिणं भरेज्ज भारेज्ज
सिवणे वि धपावंतो
सिसा ससु धोमम्मी
सीर-वधियादीहि
सीर-वहीमादीण व
सीर-दुम-हेहु पंचे
सीराहारो रोवति
सीरुहोद विसेवी
सीरोखे य दग्धे
सुब्बाई ठाणा ससु
सुद्धं ! जणणी ते मत्ता
सुद्धागसमोसरलेसु
सुद्धी वेरासणे
सेतस्स उ पडिलेहा
सेतबहिता व माले
सेतमहायणजोमं
सेतं मतो य मडवि
सेतं वं बालादी
सेततो सेतबहिया
सेततो शिवेसयावी
सेता भोयण-सुद्धी
सेतारक्खिनिवेयण
सेतोयं कालोयं
सेतोवसंपयाए
सेस-पवाव-शिवते
सेवे सेवेससुणा
सोडाविभंगज्जुगह
ग
ममारव दंडिततिग
गच्छगहणे गच्छो
गच्छपरिरक्खणद्वा
गच्छम्मि एस कणो
गच्छम्मि य पट्टविते
गच्छसि ए ताव कालो
गच्छसि ए ताव मच्छं

५८३०
१८१८
५४८६
४२८६
४७७५
२६३८
२२५३
४१८१
१५१
४३७७
२३१
३८५२
२६०५
३०७
४५७५
१६८४
२४५१
३००१
८५६
३४६६
५६६६
२६४२
४७२६
२६६२
५५३१
४८१७
५५०५
१२७३
४०४०
६२६५
७८२
३४१३
४३६६
१६२७
२८१६
८५७
३१३
४००७
६३१८
६१६
५३०७
२६८८
३०७५
५८३८
१५८३
५७८२
६०८४

मच्छंती तु दिवसतो	१६५		महणं तु सभाकडए	७८५	
मच्छा अलिगमस्ता	२७६६	५७६२	महणंमि मिच्छिऊणं	६७७	
मच्छाणुक्कपण्डा	५५३		महणाईया दोसा	२५३५	
मच्छुत्तरसंभवे	६४४०		महले पक्खेवंमि य	१६०	
मच्छे च्छाणुमि य	४३१		महिए व भगहिए वा	३२-६	४२६१
मच्छे व करोडादी	३२८३		महितम्मि अट्टरत्ते	६१५४	
मच्छो महाणुभाओ	१६२६		महितं च तेहि उवणं	५२७८	३४२७
मच्छो य दोषिए मासे	२८०२	५७६८	महिते उ पगासमुहे	४५५७	
मणचित्तमस्त एतो	५०११	३६८८	महिते व भगहिते वा	३७२४	
मणसाए पमाणेण व	२१६५		महितेहि दोहि मुक्खां	४५५८	
"	५७८५		मंगादी सक्कमया	३३५४	
मणसाणे पमाणेण व	५८२५	४००२	मंठील्लेवगपहिवणउदम्भहारी	३६५५	
मणमत्तं समवाधो	२४७६		मंढपोसिते बहुएहि	६१३०	
मणि आधिए सपयं	२६३५	५८३१	मंढं च अरतिर्यसि	१५०५	
मणिएसिरिओ उ बेरो	५३३६	२४११	मंढाविएणु किमिए	१५१०	
मणि सिंसिरिओ परवणे	३८१४		मंढी कच्छवि मुट्ठी	४०००	३८२२
मणि सिंसिरिम्म उवही	३८१६		मंढी-कोड-समादी	४८८६	१०२४
मणि-वसथ-वीय-	४८६२	१०३०	मंतम्भवेसरागी	५६५६	३०६७
मणिवण्णे बहुयुते	२६१८	६०६०	मंतम्भस्स न कासो	८५५	
मणिसहमाहमहितो	६१७६		मंतम्भोसह-पडिलेह	८५६	
मति ठाणु भासमावे	६२०२		मंतुं विज्जामंतण	४४५८	
मति-वास-मंय-कडि-पट्टि	३५६६		मंतूण पडिनिमत्ते	४०६३	१८५०
मती मवे पच्चवलोद्धयं च	३५६८	५१४५	मंतूण परविदेसं	२२३८	
मग्गे कीते भणए	३६७६		मंभम्भणट्टाउज्जस्स	३८७५	
ममणादि अपडिलेहा	२५२२		मंभम्भ दिसा विज्जुग	६०८८	
ममणादि खंत-मुम्भुर	२३२		मंभारगिरी देवय	३१८४	
ममणादी रुवमरुववं	४३२६		मंभीरविसदकुडमधुरगाह्मो	५३६	२६०१
ममणे जो जुतगती	५६६६	३०७८	मंभीरे तसपाणा	४०२३	
मंभीरविसदकुडमधुरगाह्मो	५३६		माउम दुमुणादुमुणं	१५२	३५६६
मम्मति कारणाजाते	१६६६	३७२१	"	१७६	"
मल-कूड-पासमादी	१८०५		"	२१४	
मविसण महिए आलोय	२६०५		"	५३८५	३४४०
मविव कोहे विसएणु	३११०		"	५३८७	"
मव्वेण ते उहिप्पणा	५६२८		माहुत्तं गूहणकरं	२६०८	
मव्वो सिम्मद्वता	६२४	३८५६	मामपहादी ठाणा	४१३१	
महण मवेसण भोगण	४१३		मामभाने बदरी	४१७६	५२६८
महणं च जाणएणं	१२४७		माममहादी ठाणा	४१२६	
महणं च संजयस्स	३५८१		मामवहादी ठाणा	४१३०	

नामाद-संक्षेपेसा	२००४		नीयत्त्वमहोसं	४०७०	
नामादा शेषं वेरं	४४०१		"	४१०८	"
नामादी ठाणा कसु	४१२८		नीयत्त्वमुत्तमं सलु	३८३२	
नामये कुम्भियमकुम्भिते	५३१७	२३६१	नीयत्त्वमनीयत्वं	३६२४	
नारवकारणवेत्ताइलो	५६८३		नीयत्त्वविहारतो	५५५६	
नावी उट्टी महिती	१०२४		नीयत्त्वस्स वि एवं	५२८३	
नावी पीसा वासी	६५१४		नीयत्वे आणयणं	३०३५	१६३६
नाह गिहं तस्स पत्नी	१०८२		नीयत्वे ए मेसिज्जति	५५६३	५४६२
नाहेइ जसाओ ववं	६०१०		नीयत्वेण सयं वा	४८८४	१०२२
निष्कृति एिसीतितुं वा	५६६८		नीयत्वेसु वि भयणा	४०६०	१८४७
निष्कृते चिट्ठं ते	३६६७		नीयत्वेो जतयाए	३६६	४६४६
निष्कामो प्रतिरेगं	४५५५		नीयमनीयो नीयो	२८७१	
निम्हातिकालपाण	२४१३		"	६५८५	
निम्हासु चउ पडसा	५७६८	३६७५	नीयमनीताकीते	५५६०	५४५६
निम्हासु तिणिए पडसा	५७६७	३६७४	नीयाए व नीसाए व	५५६१	५४६०
निम्हासु पंच पडसा	५७६६	३६७६	मुक्कमा-वयण-कक्कोर	१७५३	३७७६
गिरिजप्पणमादीसु य	३४०३	२८५५	मुणनिष्कसी बहुगी य	४५३८	
गिरिजत्तपट्टियाणं	२५६५		मुणपरिवुड्डिसिमतं	१०२४	
गिरिजसा गयगहली	२५६६		मुणसयसहस्सकलियं	५४३८	
गिरिजादि पुण्णा वासा	४२३६	५६४६	मुणसंबरेण पच्छा	१०४८	
गिरिपडणादी मरणा	३८०१		मुणसंयवेण पुब्बि	१०४६	
गिहं कक्कं पेरेता	१५३५		मुता मुत्तदुबारा	२४५७	१०५८
गिहं अण्णसिणिय	३२१६		मुतो पुण जो साधू	३६	
गिहं-अण्णसिणियएहि व	५७७१		मुसमो चउसहु चउगुर	२७०४	५०७७
गिहं-अण्णसिणियाए व	४११२		गुरु गणिएणपावभूत्तं	२४१४	
"	४२८८		गुरु पाउराए कुब्बज	५८३२	४००८
"	४३०८		गुरुवक्कमा भासायणा	२६४४	
गिहिसण्णसिणियाए	६२६१		गुरुसज्जित्तए सज्जित्तिए	५५१८	५४२१
गिहं-कुस-पाराणादे	६०४७		गुरुगा आणासोवे-	५७१०	३१२२
गिहिनं मूलमुखोमू	३३०५		गुरुगा उ समोसरणे	३३५	
गिहिरात पितीय सिने	४४७		गुरुगा पुण कोहु वे	४७५२	८६४
गिहिरात्तममरावेसे	४३६२		गुरुगा य गुरु-गिलाणे	५८३३	४००६
गिहिरात्तज्वरज्जमासे	३८३		गुरुगा जावज्जीवं	२६८६	
गिहिससे जो उ मयो	४०४६		गुरुगा व अण्णसो वा	३६०७	५१७४
गिहिसहितो वा संका	२४७७		गुब्बिसि बासवक्कमा य	३४०८	
गिहिसंजयप्रहिकरणे	६३२८		गुहसिरागं पत्तं	४८२७	६६७
गीधो विकीवितो खलु	६५२५		गेह्णए कट्ठएववहारो	४५२०	
गीताणिए य पडिताणिए अ	५३५		गेह्णए गुणा छम्मासा	३३७५	६०४
गीयत्यग्गहोरां	३४५५	१८२७	गेह्णए गुणा छम्मासा	४७६२	"

मेघहरो गुरुमा छम्मास	५१५०	"	गोबालवन्धवाला	३२७०	४३०१
मेघह वीर्य पात्रे	४५५०				
मेघहति वारणस	१२०४				
मेघहतेषु व दोषु वि	५२६६	३३७८	बणकुट्टा सकवाडा	२४५५	२०५६
मेघय बणिग्य सेविय	१८४६		बण-मसिणं निरुवहतं	६४६	३८८२
मेलभ्यामुल्ल गुरुमा	६३७१		बरां वृत्ते बिरं मउभे	५८००	३६७७
मेलभ्याद्धाराणे मे	४६२१	१०५८	बट्टा-रेणुविणासो	२६४६	
मेलभ्याभरणमाठी	४७७७		बट्टिसंठवित्ताए	७१५	
मेलभ्यामुल्लभट्टे	१५४७		"	७२३	
मेलभ्या रायवुट्टे	१४४५		बट्टिसंठवित्ते वा	६६६	
"	१५६६		"	७०५	
"	१५७४		बट्टे जं सन्चितं	२४७५	५३८०
"	१५८१		बट्टिसंठवित्ताणं	६७६	
"	१८५६		बतसत्तुदिट्ठु तो	४५१५	
"	१८६३		बथकुडवो य जिणस्सा	६५०३	
मेलभ्या-रोह-मसिबे	२३६१	४७६६	बरभूमोसहकउजे	७६८	
मेलभ्या वास महिता	१६५१		बरसंताणग-गणगे	१४३६	
मेलभ्या वास महिया	१६५६		बंसणे हत्थुवचातो	४६३६	
मेलभ्या मुत्त जोए	४६८६		"	४६४४	
मेलभ्या पि य दुविहं	४८८७	१०२५	बेतुं समयसमत्थो	३७२६	
मेलभ्या मे कीरति	५६३१		बेतुणंआरालिभं	४५६५	५८५८
मेलभ्याभरागाडे	१६०४		बेतुणा रिणिस पत्तायणा	२६६३	
मोच्छयपादट्टवणं	५८०६		बेतुणं दोषिणं वि दवे	११०५	
मोणादि कालभूमी	६१४०		बेतुणं भोगणादुणं	१११४	
मोणादी व अभिहरणे	४१६		बेतुणं य धाममभं	४६०१	
मोणादीवाचाते	२३७०	४८०८	बेप्पति च-सद्धेणं	६४६८	
मोणे य साणुमाठी	५२७३	३३५२	मोडेहि व मुत्तेहि व	१७१३	३७३५
"	५३८६				
"	४६५१				
मोविन्दज्जो णाणे	३६५६		बउकणम्मि रहस्से	३६६१	
मोमंडलवन्नादी	४८०२	६४३	बउगुरुणं छच्च लहु	६६५	३८६८
मोमियगहणं अण्णे	६७१		बउ गुरुणं छच्च लहु गुरु	२२१०	२४७८
मोपरमगोयरे वा	४०४८		"	५१२८	"
मोपरमचित्तभोगण	३७४६		बउ गुरुणं मासो या	६६४०	
मोरप्रभावियपोत्ते	३४४०	२८६२	बउगुरुणां छगुरुणां	२२१४	२५२१
मोवय उच्छेत्तुं भति	४५०२		बउगुरु बउलहुं मुट्ठो	६६३६	
मोवाइतूणं वसधि	११४३	३५२३	बउत्थपदं तु विदिणं	५२०	२५८६
मोबालए य भताए	४५०१		बउपादा तेदच्छा	३०३६	१६३७
			उकल पीत्ति सीसे	१५२७	

चतुर्भोगो महाराष्ट्रकेशव	४८४१	६८१	चतारि महाकव	७६६	४०३१
चतुर्भोगो शाखगहले	२१४३		"	४८३६	"
चतुर्भोगो रातिभोगले	३३६७		चतारि उ उक्कोसा	४७८६	३६६६
चतुर्भोगसेसाए	१४२६		चतारि स्रव्य सहु बुक	६६१	३८६४
चतुर्भोगसेसाए	१८५८		"	२२०६	२४७७
चतुर्भुल अंभुला	४२८६	३४२६	"	३०६६	
चतुर्भुलभुरापरिपुडो	४००५	३८२८	"	४१२७	२४७७
चतुर्भुल वितली	४८०५	३६८२	चतारि य उभावा	४१२०	२४७१
चतुर्भुल विदेस	४८७४		"	४१२२	२४७३
चतुर्भुल य जु गिया सलु	३७०७		"	४१८२	२४३६
चतुर्भुल गुरुगा	३०६३	१६६१	चतारि विचिताह	३८२४	
"	३०६४	"	चतारि समोसरले	३२३६	४२६४
"	३०६७	"	चम्मकरम सत्वादी	४६४०	३०५८
"	४१८४	२४३८	चम्मतिग पट्टुग	१४१४	४०६८
"	३१२०	१६६१	चम्ममि समोमममी	३६६६	
चतुर्भुल चतुर्भुल	२२१६		चम्ममि सोहपहण	३४३०	२८८२
चतुर्भुलगादी मूल	६०६		चरवादिशिवट्टुं	१०८३	
"	२२०३		चरण-चरण-परिहीरो	४४६६	४४६४
चतुर्भुल वि हु अज्जउ	४६३४	१०७२	चरित्तु देस बुविहा	४४३६	४४४०
चतुर्भुलपारेण	१०३६		चरित्तमि असंतमि	६६७६	
चतुर्भुल कसातेसु गती	३१६२		चरित्ते वि होइ जयणा	२०४२	१६६१
चतुर्भुल एणिसीहकप्पो	६६६६		चरित्तो परिणत कड-	८६	
चतुर्भुल भज्जमाणास्स	४८२८	६६८	चरित्तं करेमि इहरा	३४६०	
चतुर्भुल वीसतिभाग	२३४४		चंकमणमावडलो	१४१६	
चतुर्भुल सराव कंसिय	३०६०	१६४६	चंकमणं गिल्लेवरा	४३२१	२३६४
चतुर्भुलगा छगुलगा	४१७१	२४२१	चंकमणादी उट्टुण	६३३१	
चतुर्भुलगादी छेवो	२२०४		चंकमिमं ठियं जपियं	४३३	२४६८
चतुर्भुलगा तेइच्छा	३०७४	१६७४	चंदुलपुत्तो य	४७४४	२६४
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	१६३७		चंदिमसूखरागे	६०६१	
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	१६३२		चंदुलगा को दोतो	३४०६	२८६१
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	१४६		चंपा अणंगसेलो	३१८२	
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	१८१२		चंपा महारा वाणारसी	२४६०	
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	४०८८	२८३३	चाउम्मासातीत	१०१६	
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	६०६४		चाउम्मासुक्कोसे	६४४	३८८८
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	२७६०		"	१४३४	"
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	६४७६		"	४०७३	१८३०
चतुर्भुलगा चतुर्भुलगा	७४७	४०३१	"	४००४	६७६
"	८४२		चाउल उक्कोदण तुवर	४८६२	४०३७

वासकमुष्ण इष्टानुष्ण	४४६५		बोधं तु होति क्षीरो	२४१२	
बार मर बोध मेंठा	२४६१	२०६६	बोरववा वावीधो	२६५	
बारिय-बोराभिरा	२५११	६३६५	बोरो ति कटु दुष्प्रीतिषो	३२७१	३३५०
बारिय-बोराहिरा	१३०				
बारि धेरजे वा	३४६८				
चिकसन वास प्रतिवातिपसु	३२६१	४२६१	अन्काए रा कटुहति	३६७१	
चिट्टणणितिय तुपट्टे	५३२५	२३६१	अन्काय-अन्का भित्ते	३६८२	
चित्तो वहादी	५४६०		अन्काय-अन्का कटुस	३६६६	२७७०
चित्तं जीवो भणितो	४२५६		अन्काय-अन्का लहवा	३३५१	२७७१
चित्तं य विचित्तं य	२००१		"	११७	४६१
चिर्वेहि प्रागमेत्तु	१३३७	५६३	"	३३७०	"
चोयत्त कक्कडो कोउ	४६१४	१०५१	"	४७३७	२७७१
चुण्णखउरादि दाउं	५४१८		अन्काय-अन्का लहवा	३६७४	
चुत्तुक्कनियं टोए	८०८		अन्काय-अन्का लहवा	३६४८	
चेइय-सावग पञ्चति	२५७८		अन्काय-अन्का लहवा	६११	
चेयराभित्तदब्बे	६३६०		"	१६७४	३६६८
चेयराभित्तदब्बे वा	३३४६		"	१८५७	
चोएति रागबोसे	२८३३	५७६१	"	१८६७	
चोदग एताएण्णिय	५०७६	४०५४	अन्काय-अन्का लहवा	१८६२	
चोदग कण्णामुहेत्तु	४७०५	८५४	"	३१२५	२७३६
चोदग दुविषा अस्सतो	५८७६	४०५१	"	४३१०	
चोदग पुरिसा दुविहा	६४१८		"	५६४८	३०५६
चोदग मा गह्वरि	६४००		अन्काय-अन्का लहवा	६४७१	
चोदग मारुसण्णित्तु	६१५८		अन्काय-अन्का लहवा	६६५२	
चोदग वयणं अण्णामुक्कपितो	४१८७	५३०६	अन्काय-अन्का लहवा	१६४०	
चोदावेत्ति गुरुय व	५५५६	५४५५	अन्काय-अन्का लहवा	२७४६	५४८७
चोदेत्ति अजीवत्ते	४८४६	६८६	"	५५८७	"
चोदेत्ति धेरज्जंते	४१५३	५२७५	अन्काय-अन्का लहवा	६७५०	५४८८
चोदेत्ति रागबोसे	६४५३		"	५५८८	"
चोदेत्ति से परिकारं	६२७०		अन्काय-अन्का लहवा	५८२	४६३५
चोदेत्ति वण्णकाए	४८३६	६७६	अन्काय-अन्का लहवा	१३२३	
चोदसं पणुवीसा	५६०१	४०७६	अन्काय-अन्का लहवा	१५४२	
चोदसं उदेसे	६०२७		अन्काय-अन्का लहवा	४८४०	६६०
चोदस वासाणि तया	५६११		अन्काय-अन्का लहवा	१३२५	
चोदस सोलस वासा	५६१८		अन्काय-अन्का लहवा	५६७८	
चोदा दो वाससया	५६१३		अन्काय-अन्का लहवा	६०६८	
चोयग गुरुपडिसिद्धं	५०६८	२८३	अन्काय-अन्का लहवा	६५८	
चोयग गिहयत्तं न्य	४८४३	६८३	अन्काय-अन्का लहवा	१२६५	
चोयगपुच्छा गमरो	३०११	१६१४	अन्काय-अन्का लहवा	२२६१	

कहं एकं वातं	४५३०	कुमनं जने वसतो	४२१३	४६२३
कसीसगुणसमन्तामण	३८६२	कुम्भाले पंचकिरवा	४७६६	६१०
कहोसावतले पुण	२५३३	केरणपतञ्जेजे	२५१	
कपधपणगरकवा	७६६	केरले मेदली बेव	५०२	४८६६
कपति दोसा जम्भण	२६५	केरतिगं मूलतिगं	६५३६	
कम्पुरिसा मज्ज पुरे	४७८५	केवसुतरासीहादी	३६४७	
कम्भामकए हत्ये	५८६६	केवादी धारोवण	२६२१	
कम्भागकरं काउ	४६६२	केवी कम्मुह महवा	२२४१	
कम्भासकरणजहु	३६३५	केवी कम्मुह कल्लहु	३५६२	२६१५
कम्भासा धायरिपो	३१०३	केवी मूखं च तथा	२२१५	२५२२
कम्भासादि बहते	६६४६	"	२२१७	
कम्भासियपारणए	४२६	"	५१७२	२५३६
कम्भासे भपूरेंतो	५४५३	"	५१८५	"
कम्भासे भपूरेंता	६२०७	केयसुयमुलसमुयं	६१८५	
कम्भासे धायरिपो	३१००			
कम्भासे उवसंपव	५४५२	जइ धत्थि पयविहारो	३१५७	
कल्लहुगादी चरिमं	२२०५	जइ भंतो वाचातो	२४६३	२०६८
कल्लहुगा य शियते	३०६	जइउमलाभे गहणं	१६३	
कल्लहुगे ठाति वेरो	५३३५	जइ उस्सगे ए कुणइ	२१०	३४३७
कम्भाससयाइं नवुसरइं	५६१७	जइ ताक पलंभाणं	४६१६	१०५३
अहि एण्णज्जति सो क	४८३७	जइ ताव सावताकुल	३६१२	
अहि दिवेसेहि गतेहि	६५४६	जइ दंतज्जाइया जा	१६७२	२६७६
अदण्णस्तं सट्ठं	४३५८	जइ पुण धायरिण्हि	४७५३	
अदं विधी विकल्पं	१२५	जइ पुण धुरिमं सचं	२६७०	५३४६
अदिय गहिय गुरुणं	३५८२	जइ भणति दीइयं तु	१०३८	
अदिय सइगयाण व	३४०४	जइ वि य ता पन्जत्ता	४४४७	
अदो गम्भामं	१२६	जइ सम्बसो भ्रमावो?	३६७	
आदेती धणुकुइए	१४०४	जहुं लग्गे महिसे	२०२	२६२३
आवत्स पिवास्स व	५७१	"	३४७१	
आरो तु अपुंजकडो	१५३६	जइडे महिसे चारो	१६३७	१५८६
अण्णमअण्ण काले	२०३४	जइडो जं वा तं वा	१६३८	१५६०
अण्णमअण्णो दुविहे	४५०६	जणपुरतो कामुणं	५६३२	
अण्णमअण्णो व धरो	३७२२	जण रहिते कुज्जारो	५२६	२५६१
अण्णं परिकम्पितं खलु	४०२६	जणलावो परगामे	४१७६	५२६१
अण्णोण अण्णोण व	५६४६	जण सावगाण खिसण	४४७१	
अण्णो दिट्ठमदिट्ठो	४५१०	जणोव छिदियञ्च	७६६	
अहली तु अण्णञ्छतो	३६१२	जति धकसिणस्स गहणं	६४३	३८७३
अदंतमअदंता	३५१३	जति भ्रगणिया तु दड्डा	१७११	३७३३
कुम्भण सि वण बोतण	४२१७			

अति मन्त्रतो मुनिशिष्यो	१८३१	अति रथ्यो मन्त्राए	५०३५	६१४
अति उस्वसे ए कुणति	५३८२	अति रिक्को तो दममत्तमन्त्रि	४१६१	५११०
अति एकमात्रजिमिता	५१४१	अति वा शिरसीचारा	५४२६	
अति एते एव दोसा	४५३५	अति वा मन्त्रति सारं	३३२१	
अति एयविष्णुहृणा	४१८४	५२८०	अति वि ए होज्ज भवाधो	६६८८
अति एवं संसद्	४१८६	५३०८	अति वि शिबंको सुत्ते	४८६१
अति कालवता गणिली	१७०६	३७३१	अति वि य तुल्लजिमिवाणा	६६६१
अति कुसलकम्पयातो	४८७२	१०११	अति वि य पिबीमगादी	३४१२
अति गहणा तति मारु	१८७		अति वि य फासुगदब्बं	३४११
अति सिद्धा तति मासा	२३६		अति वि य वितोषिकोदी	४४२
अति जन्मति मुचिहिता	११४८	३५२६	अति वि य समरगुणाता	४६०
अति जं पुरतो कीरति	४०६०	१८१७	अति सब्बे गीतत्वा	१४६३
अति जीविहिति अति वा	४५६६		अति सब्बे य य इत्थी	५२००
अति गाम पुब्ब सुद्धे	४६७२		अति संसिजं एा कप्पति	३६७६
अति शिखिलवती विवसे	१६०३		अति सि कज्जतमरी	१३६७
अति येतु एतुमासा	५४८४	५३८६	अतिहि-मुणा आरोबणा	६४८७
अति ताव पिहुगमादी	४६५५	१०८२	अतियमिता बारा	६२२
अति ताव मम्मपरिचट्टियस्स	४२८५		अतियमेता बारा	४००८
अति ताव सोतियगुस्स	४१८६	५३०५		४५४१
अति ता सण्फत्तोसू	५१६२	२५४६	अतियमेत्ते दिवसे	१६०२
अति तूण मासिएहि	४६७६		असुगंतारादीणं	२५६३
अति ते अणणे मूलं	२१७		अतो बुत्तो विहारो	५४४६
अति तेसि जीवाणं	४००७	३८३०	अतो कुस्सीना लसु	२४६०
अति दिट्ठं ता सिदी	४८६५	१००४	अत्थ धरिता पुढवी	४२४०
अति दोण्ह चेव गहरणं	४५५५		अत्थ उ ए होज्ज संका	४६८५
अति पत्ता तु निसीधे	२४७०		अत्थ उ दुरुवहीणा	६४८६
अति परो पडिसेविज्जा	२७८२	५७३८	अत्थ उ वेसग्गहणं	५३६६
अति पुण मन्त्रंताणं	६१२८		अत्थ पु एा वि सन्तंति	२७६
अति पुण तेरा ए बिट्ठा	२७१६	४७३०	अत्थ पु वेसग्गहणं	५२४३
अति पुण पब्बावेति	४६२६	१०६३	अत्थ पवातो दीसति	३८०२
अति पुण पुब्बं सुद्धं	४६५६		अत्थ पुण अहाकठए	४६६१
अति पुण सब्बो वि ठितो	५१३३	२४८३	अत्थ पुण होति क्षिभं	३७२५
अति पोरिसिद्धा तं	४१५०	५२७२	अत्थ वि य गंतुकामा	३३८७
अति कुसति तहिं मुं	६१०८		अत्थ विसंजं जाणति	३५५७
अति भागयया मत्ता	५१६४	२५१५	अत्थाइणं सब्बं	६०१
अतिभि (वि) अये आरुवणा	६४८५		अवि एगस्स उ दोसा	४०८३
अति भोयणमावहती	५८६७	४७७३	अदि एतविष्णुहृणा	४१५८
अति मं आणह सामि	५७५५	३२८६	अदि तेसि तेरा बिणा	११३०
अति भूलगपिलवा	४७०४	८५३		
अति रज्जातो मद्दो	५०३६	६३५		

अदि दोसा मयतेते	६४१		अह अह परसिणि	४४६०	
अदि सम्भं उदिसिं	२६६६	५३४५	अह एगम असीकोसी	३६४६	
अथ आतरो से दीसद	१४४२		अह ते गोदुद्धालो	३६७३	
अम्मण-एणस्समणेषु य	५७३५	३२६६	अह पदमपाउसम्मी	३५७८	५१५५
अम्हा तु हत्थमसेहि	४१०६	१८६४	अह पारमो तह मली	४८७८	१०१७
अम्हा करेति सेज्जं	११४२	३५२४	अह भासो जंवंतो	३८६३	
अम्हा पदमे मूलं	५१३१	२४८१	"	६३६२	
"	५१७३	"	अह भणितो तह उद्धितो	३५४८	
"	५१८६	"	अह भणितो तह चिद्ध	३५१६	
जयमाणपरिह्वते	६३४६		अह भणिय चउत्तयस्सा	२६५०	५८४५
जरजजरो उ येरो	५६६१		अह मयर-महुयर-गला	२६७१	१८७३
जर-सास-कास-डाहे	३६४७		अह मण्णे एगमासियं	६५६१	
जलजाओ अत्तं प तिम	५३२८	२४०२	अह मण्णे दत्तमं	६५६७	
जल-भल-भहे य रयगा	२६६२	५८५७	अह मण्णे बहुसो	६४२३	
जलदोणमदमारं	४२६५		"	६५६८	
जलमूए एलमूए	३६२६		अह मोहप्पगढीणं	३३२०	
जलसंभमे मलादिसु	२४०६		अहअंती सुकुमालो	३६७२	
जलमलपकिताण	५३४	२५६६	अह सपरिकम्मलंभे	५८८१	४०५६
जल्लो तु होति कमडं	१५२२		अह सरणमुवगयालं	६६१५	
जबमज्ज मुरियवंतो	५७४७	३२७८	अह सा बलीसवडा	३६७४	
जस्स मूलस्स भग्गस्स	४८२६	६६६	अह सुकुसलो वि भेज्जो	३८६०	
"	४८३०	६७०	अह सो कालासगबेसिउ	३६७०	
जस्स मूलस्स सारातो	४८३१	६७१	अह सो वसिपदेसे	३६७१	
"	४८३२	६७२	अह हास-खेडु आकार	५१८६	२५४३
जस्सेते संभोगा	२१४६		अह हेमो तु कुमारो	३५७५	५१५३
अह कारणम्मि पुण्णे	४२४५	५६५५	अहि अण्पतरा दोसा	५१६६	२५४६
अह कारणम्मि पुरिसे	४२१८	२५७३	अहियं एसणयेसा	५५४०	५५४१
अह कारणे अणहाराओ	३७६६	६०११	अहि लहणा तहि गुरुणा	४७३८	
अह कारणे सलोमं	४०१६	३८४१	अं अज्जियं वरितं	२७६३	२७१५
अह वेव अण्णगहणे	४७४८	८६०	अं अज्जियं समीखल्लएहि	२७६२	२७१४
अह वेवअमुद्धालो	२११७		अं एत्थ सव्व अम्हे	३०३६	१६४०
अह वेव पुवचिमादी	२७५		अं कट्ठकम्मादिसु	५१००	२५४२
अह वेव य भडाओ	१६८		अं किं चिं मवे वत्थं	५०६०	२८३५
अह वेव य आहज्जा	४६६०		अं गहितं तं गहितं	४७५५	८६७
अह वेव य हत्थीसु	५२२०	२५७५	अं गंधरसोवेतं	११०४	
अह वेव य कितिकम्मे	२११२		अंआरणामारत्तो	२६४६	
अह वेव य पुढवीए	२०३		अं व बीएसु पंचाहो	१५८८	
अह वेव य पुरितेसु	५२१७	२५७२	अं व महाकप्पसुयं	६१६०	

જં એવ પરદારો	૨૬૨૪		જં હિંચંતા કાણ	૪૪૭૧	
જં એવ સુન્નિયુતે	૧૧૨૨		જં હોજાં ભયોજાં જં	૧૧૨૧	
જં બોદસપુષ્પવરા	૪૮૨૪	૬૬૪	જં હોતિ પ્રપેજાં જં	૧૧૧૧	
જં કોરેણેમેણં	૭૬૮		જં હોતિ પ્રપ્તગાથં	૬૯	
જં જમિ હોફ કામે	૬		જંમિય-મંમિય-સસ્ય	૭૪૬	
જં જં સુયમત્તો વા	૬૨૦૬	૭૪૪	જંચક્કા સંચટ્ટો	૧૬૪	
જં ચારિસયં વત્થં	૭૬૦		"	૪૨૨૬	
જં જસ્સ જિયં સામારિયમ્મિ	૬૦૪૭		જંધાતારિય કલ્લહ	૧૬૧	
જં જસ્સ યુત્થિ વત્થં	૪૦૧૪	૬૧૪	જંધાહીણે ધોમે	૪૪૬૩	
જં જહ સુતે મણિયં	૪૨૩૩	૩૩૧૪	જા ક્કતવત્થા દમુણ	૩૨૭	
"	૪૩૪૬	"	જા દાગદેસેણ દક્કા ડ મંડી	૪૮૬૩	
જં યા સરતિ પવિત્તુદો	૪૩૦૩		જા વામકહા સા	૨૩૪૩	
જ તં સિલ્લમાપાતં	૮૨૦		જા ચિટ્ટા સા સલ્લા	૨૬૪	
"	૮૨૩		જા જેણ વ તેણ વધા	૨૪૨૩	
જં તં તુ સંકિસિટ્ટં	૪૧૪		જા જેણ હોતિ વચ્છેણ	૪૩૮૪	
જં તે અણંધરંતા	૪૬૧૬		જાગરહ યુગા યિલ્લં	૪૩૦૩	૩૩૮૨
જં તેણ કતેણ વ	૩૬૬૬		જાગરંતમજીરાદી	૧૪૬૮	
જં કલ્લતાં તમલં	૨૧૪૬		જારિતા મન્નીણં	૪૩૦૬	૩૩૮૬
જં પુણ સુદાપત્તમણે	૩૭૬૦	૬૦૦૦	જાણહ જેણ હુદો સો	૧૩૭૧	૪૬૩૪
જં પુણ પદમં વત્થં	૪૦૮૪	૨૮૩૦	જાણંતિ દણં વા	૪૬૦૪	
જં પુણ સલ્લપ્પાત્તો	૪૪૭૭	૪૩૮૨	જાણંતેણ મિ એવં	૩૮૬૧	
જં પુલ્લકત્તમુહં વા	૬૮૮		જાણંતો પ્રણુજાણતિ	૨૪૭૪	
જં પુલ્લં યુત્થિયં સલ્લુ	૪૩૪૨		જાણામિ યામ યાં	૧૭૭૧	
જં પુલ્લં પવિત્તિદં	૪૨૪૬		જાણિતિ દ્વિતિ તાવડ્ઞલ્લે	૨૪૦૪	
"	૪૩૬૬		જાતાં પ્રણાહસાલા	૩૬૪૬	
જં મહુવા સિલ્લંતં	૭૬૭		જા તાવ ઠવેમિ મણ ય	૧૩૪૨	૪૭૮
જં મિલ્લુ વત્થાપિ	૪૬૬૦		જાતિ કુલ ક્વ ભાસા	૨૬૦૬	
જં મામતિ તં કુલમતિ	૬૪૮૮		"	૨૭૩૨	
જં મામતિ તં કુલમતિ	૨૮૭૪		"	૪૨૮૪	
જં સહુતયં તુ કલ્લં	૨૬૩૬		જાતિ-કુલસ્સ સરિસયં	૨૬૨૮	
જં વચ્છંતા કાણ	૪૬૨૩		જાતી કમ્મે સિલ્લે	૩૭૦૬	
જં વત્થં જંમિ કાલમ્મિ	૬૪૨	૩૮૮૪	જાતી કહં કુલકહં	૧૧૬	
જં વત્થં જંમિ વેલ્લમ્મિ	૬૪૧	૩૮૮૪	જાતી-કુલસ્સ સરિસં	૨૬૩૧	
જં વા પ્રસહીણં તં	૧૧૭૧	૩૪૪૨	જાતી કુલગણ કમ્મે	૪૪૧૧	
જં વા મુલ્લપ્પાત્તસ ડ	૩૭૬૩	૬૦૦૩	જાતી કુલે વિવાસા	૪૪૧૨	
જં વેલં સંસજ્જતિ	૨૭૩		જાતી ય જુલિતો સલ્લુ	૪૬૨૨	
જં સમ્મહમ્મિ કીરહ	૬૩૮૬		જાતી ય જુલિતો પુણ	૪૪૭૦	
જં સેવિતં તુ વિસિયં	૪૬૮		જા તુ પ્રકારણ સેવા	૪૮૩	

आने वि य काभगता	१७२१	जीवति यमोति वा	२६८६
वा पुष्पवद्विता वा	७१३	जीवरहिषो उ देहो	३५५
"	७२१	जीवरहिते व पैहा	३३०७
आमातिपुत्तपतिमारणं	४४०२	जीवा योग्यलसमया	५६
आमातिव-मंडवयो	२०१८	जीहाए विलिहंतो	६६१४
आम्यगहले फासु	३११८	जुग-सिद्ध-एासिया	६०४
आयण-सिमंतलाए	५००३	जुज्जति हू पगासकुडे	४३२२
आयसु रा एरिसो हं	४४५२	जुत्तपमाएस्तससती	५८४५
आवते सु धपत्वं	२६६८	जुत्तपमाए धतिरेण	५५०
आरिसदब्धे इच्छह	३०८१	जुत्तमवाएमसीले	४६६१
आरिसयं वेणमं	३०२८	"	४६८३
आव ठवण उविपट्टा	६४३७	जुत्तं एाम तुमे वायएण	२६३१
आव रा मंडलिनेवा	२०३२	जुत्तं सयं रा वाउं	३०४०
आव रा मुक्को ताव	३००६	जे आवरिखंतो	४३२३
आवतिएणटो मे	१००२	जे कुज्जा बूया वा	२२५१
आवतिमं उवयुज्जति	११२३	जे केह मएल दोसा	३७३७
आवतिमं वा लज्जति	४६४०	जे वेव कारणा सिक्कगस्त	३४३५
आवतिमा उवज्जति	१६७	जे वेव सक्कदारो	४६१५
आवतिगाए लल्ला	१४७४	जे जतिमा उ—	६४६४
आवतिथमुदेखो	२०२०	जे जहि धतोयवाढी	२३८३
आवति वा वगणिया	१४७२	जे जे दोसामतएण	४१०३
आ समसि संजमालं	५६१८	जे जे सरिसा वब्बा	३३५७
आ संजक्ता जीवेसु	६४३२	जेहा सुदंएण जभासि—	५४६७
आहे कराइया ला	३६६२	जेण रा धावति मूलं	४८२
आहे य माहरोहि	३७११	जेण तु पदेण मुणित्ता	६४८६
अइंदियो विली दक्खो	६२६	जेणअहिमं ऊणं वा	२८५८
अणकपिपा उ दुविवा	१३६०	जे ते भोसियसेसा	६४५०
अणकप्ये सुते ठं	५८८७	जे ति य ऋजु सिद्धे	४६७
अण बोहस जातीए	६४०२	जे ति व ते ति व केति व	६२७३
अणएिल्लेवलकुडए	६४६२	जे पुण ठिता पकप्ये	८१
"	६४७०	जे पुण संसविपेही	२६४७
अणपणएत्तं माहे	६४७४	जे पुष्पवद्विता वा	७०२
अणसिगमण्विहंतं	२३७२	जे पुष्पं उवगरणा	५६८८
अणवयण पडिक्कुट्टे	३७४५	जे भसिता उ पकप्ये	६६७१
अणवयणमासितेणं	५४३६	जे भिक्खाऽऽजीविपिडं	४४१०
अणवयणमप्येयं	३६१४	जे भिक्खु भजोणी तु	१६१०
अण्णा अरसक्काहं	१४०६	जे भिक्खु धरोगतं	४३३५
अवसत्तु-एरवरिबस्त	२३५२	जे भिक्खु धसणादी	२३२६
		"	२६५८
		"	३४७२

"	૩૬૬૧	જે સુતે ધવરાહા	૪૬૧	
"	૪૬૫૬	જેસિ એમુવદેસો	૪૦૦૦	૧૮૩૭
"	૪૬૬૫	"	૪૫૩૨	
"	હરિયયાણ	"	૪૫૫૨	
"	ઝવગરણ	જો ડ ડેર્હ કુજા	૩૦૮૪	૧૬૮૩
"	કોર્વપિંડ	જો ડ રિસજ્જો વ ગતો	૨૧૨૮	
"	ગાજ્જા	જોગમકા ડમહાકહે	૫૦૦૬	૬૦૭
"	મિલાણસ્મા	જો મંધો જીવજહો	૮૫૧	
"	"	જો મંધો જીવજુણ	૬૧૪	
"	મિટ્ઠવતિકુલ	જોમે કરણો મરંભમાદી	૧૮૧૦	
"	મિહિમત્તે	જોમે ગેલગમિમ ય	૧૬૦૦	
"	ચુળપિંડ	જો જેવ વલિયમમો	૧૩૩૧	૫૫૮
"	જોગપિંડ	જો જેવ ય ડવધિમિમ	૨૦૮૮	
"	ણહ-સિહામો	જો જતિણ રોગો	૬૪૦૨	
"	ણાતગાઈ	જો જત્થ ઋચિતો લલુ	૬૮૬	
"	ણાયગાઈ	જો જત્થ હોઈ કુસતો	૩૬૦૦	
"	રિમિત્તપિંડ	જો જત્થ હોઈ મળો	૫૪૪૬	
"	તિગિચ્છપિંડ	જો જસ ડ ડવસમતી	૨૭૭૬	૫૭૩૩
"	તુચ્છદંટે	જો જસુવરિ તુ પમ્મ	૬૬૧	
"	તેગિચ્છ	જો જ કાડ સમત્થો	૬૬૦૩	
"	દોહાઈ	જો જારિસમો કાલો	૩૮૮૫	
"	દૂતિપિંડ	જો જેણ પ્રકયપુચ્છો	૩૩૩૮	
"	ધાતિપિંડ	જો જેણ ઝમિ ઠાણમિમ	૨૭૫૬	૫૪૬૧
"	પુલ્લવિકાય	"	૫૫૬૩	
"	મહુનો માસિયાઈ	જો જેણ પચારેણ	૩૩૪૫	
"	માણપિંડ	જોજ્ઞા-મણી પતીને	૩૪૦૫	૨૮૫૮
"	રાતીણ	જો શી વીણ ય તહિ	૨૨૩૬	
"	વણજાહિ	જો તસ્સ સરિસગસ્સ તુ	૫૬૩૭	
"	વણિયાપિંડ	જો તં સંવદ્ધ વા	૬૧૫	
"	વત્થપાઈ	જો તં તુ સયં ભેતી	૩૭૩૦	
"	વત્થપાદી	જંતિસનિમિત્તમાદી	૫૨૫૬	૩૩૩૭
"	"	જો તુ અમજ્જાહિલ્લે	૪૦૩	
"	વિયઈ તુ	જો તુ ગુણો દોસકરો	૫૮૭૭	
"	સચેલો તુ	જો પુણ અપુચ્છગહણે	૪૩૩૬	
"	સન્નિચત્ત	જો પુણ ડમયાવત્તો	૨૭૪૬	૫૪૮૪
"	સુદુમાઈ	"	૫૫૮૪	
જે મે જાણંતિ જિણા	૩૮૭૩	જો પુણ કરણો જહો	૩૬૩૬	
જે વિજ્ઞમંત દોસા	૪૪૬૬	જો પુણ ચોજ્જંતો	૬૩૪૬	
જે સુત્તમુણા થુતા	૩૬૧૬	જો પુણ તદ્દાણામો	૪૦૮	
		જો પુણ તં મત્થં વા	૨૬૫૬	૫૮૫૪

जो भागहृषो पत्यो	६६२३		ठाणं वा ठायंती	५२६५	३३७३
"	५८६१	४०६७	ठाणो निममा क्वं	५२६	२५६५
जो मुद्धा अभिमितो	२५६७		ठितकप्पम्मि दसविहे	५६३२	६५५१
जोयलसं तु गंता	४८३३	६७३	ठितिकप्पम्मि दसविहे	२१५६	"
जो वक्कंत्तम्मि विधी	६१३८		ठितो वद्धा वेत्तवहिं सगारो	११८६	३५७०
जो वा वि वेत्तिथो तं	५६७६	३०८८	ठियकप्पे पक्खिसेहो	४३६५	
जो वि पुवत्थ तिक्त्थो	५८०७	३६८५			
जो वि य ज्ञायसंकी	६६६५		डगसग-सत्तरक्खं कुडमुह	३२३८	४२६३
जो वि यऽसुवाप्यधप्पो	५८०५		डगलच्छारे लेवे	३१७५	
जो वि य होतज्जकंठो	४२३५	५६५५	डहरयामम्मि मत्ते	६११५	
जो सो डवगरणंणो	३५५२	२६०५	डहरस्स एते बोसा	५८६५	४०७०
जो हट्ठसाहारो	१६३५		डहरो यकुलीणो त्ति य	२७६०	७७२
जो होज्ज ड भसमत्थो	६१२३		"	६२१०	"
			डहरो एत्थं तव मुक्क	२७६१	
किञ्चिद्विरुद्धिपसंवे	४७०३	८५१	डंढग विडंढए वा	६६६	
			"	६७७	
ठक्कण-कुलाइ ठवेडं	१७०६	३७२८	डंढतिगं तु पुरतिमे	६५०८	
ठक्कणए एणक्खेवो	३१५०		डंढिय सोमाधीनो	१३३५	
ठक्कणकुला तु बुविधा	१६१७				
ठक्कणकुले व मुं वति	२०६६		डडंढसर पुप्फमुहो	४३६०	
ठक्कण तु पक्खित्तं	१८८५		डिक्कुण-पिप्पुवादि तहिं	५५७१	५३७६
ठक्कणसिंत्तं आरोवण	६५३१				
ठक्कणारोवणविमहे	६५८८		ण करेति भुं जित्तुणं	१५६७	
ठक्कण बीत्तिग पक्खिण	६५३२		ण शिरत्थयमोवसिया	४६६०	
ठक्कण संचयरासी	६५२७		ण तस्स वत्थाविषु कोइ संगो	५८१६	
ठक्कण होति जहण्णा	६५३५		ण पमाणं गणो एत्थं	११३६	
ठक्कणसति अक्खियत्तं	२२३		ण पमारो कात्तव्यो	६५	
ठक्कणसति विट्ठु व	६१५०		ण य वज्जिया य वेहो	६३२६	
ठाण-एसीयण-मुयट्ठण	२६३		ण य सम्भो वि पमतो	६२	
ठाण एसीयण-मुयट्ठण	३६३८		ण वि किं वि जलुण्णायं	५२४८	
ठाण-एसीय-मुयट्ठण	६२६८		"	५३७१	
"	१५५		ण वि कोइ किं वि पुप्फति	२३८६	
ठाण पक्खिसेवणाए	५११६	२५७०	ण वि ज्ञातियं ए वि वयी	४८४८	
ठाण-वसही-पत्तये	३८१५		ण वि छं म्हावत्ता खेव	४६०६	
ठाणसिं व मोत्तुण	१६६		ण वि जाणामो एमिस्सं	५०६०	
ठाणं गमणागमणं	१६५५	१६०५	ण वि य इहं परियवगा	६३७८	
			ण वि य समत्थो सम्भो	१७६८	

શાલાદો કતીસા	૨૧૩૬	શિક્ષકારણમિત્રી	૧૬૬૬	૩૬૬૦	
શાલાસી પરિવૃત્તી	૪૬૬	શિક્ષકારણમિત્ર મપ્પા	૧૬૨૧		
શાલાયારે પગલં	૪૫	શિક્ષકારણમિત્ર એ	૪૬૬૫	૪૦૭૭	
શાલાવિહં ઉવકરણ—	૧૦૩૫	શિક્ષકારણમિત્ર એ	૫૫૭૨	„	
શાપ્તી શા વિણા શાળં	૭૫	શિક્ષકારણમિત્ર એ	૫૨૫૭	૩૩૬૬	
શાસુજ્જોયા સાહુ	૨૨૫	૩૪૫૩	શિક્ષકારણમિત્ર મુલ્લા	૧૬૬૮	૩૬૬૨
શાસે ચરણે પલ્લવનં	૬૨૬૨		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૬૨૨	
શાસે રંસણ ચરણે	૪૪		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૪૫૭૬	
„	૨૭૨૭	૪૭૩૩	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૬૨૬	
શાસે સુપરિચ્છિયરમે	૪૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૦૭૬	
શાતમ કહણ પદોસે	૨૨૫૨		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૭૧	
શાતવમણાતનં શા	૨૪૬૭		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૫૦૭	
શાતીવળં કુવિહં	૫૫૦૪		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૬૬૬	૩૭૧૬
શામણ-બોવણ-નાસણ	૬		„	૧૬૬૭	૩૭૧૮
શામંઠવણ-શિસીહં	૬૭		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૫૧૧	
શામં ઠવણા હાલો	૪૬૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૭૫૭	
શામં ઠવણા કપ્પો	૫૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૫૫૬૧	
શામં ઠવણા કૂલો	૬૩		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૩૫	
શામં ઠવણા દલિ	૧૭૬૭		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૩૮	
„	૬૨૬૨		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૪૧૦૨	૧૮૫૬
શામં ઠવણા મિલ્લુ	૪૬૮		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૫૬૨	૪૬૨૮
શામં ઠવણાચારો	૫		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૧૮૮	૩૫૬૬
શામુદયા સંચયનં	૮૫		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૬૮૦	૧૮૮૨
શાલસેણ સમં સોક્ક	૫૩૦૭	૩૩૮૫	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૬૩૫૬	
શાલીત પલ્લવણા	૬૫૦૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૬૫૩૬	
શાલ-પલ-લેવહેદુ	૪૨૪૬	૫૬૫૬	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૪૪૨૦	
શાલાદ ઝલિયણો	૪૨૫૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૫૦૭૦	૨૮૧૫
શાલાતારિમ ચતુરો	૧૮૩		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૪૫૮	૨૦૪૮
શાસણ-શાદ્ધૂરે	૨૪૫૬	૨૦૬૦	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૪૬૨૨	૧૦૫૬
શાસા મુહશિસ્સાસા	૬૧૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૨૬૫૫	૫૮૫૦
શાસેદ મનીયત્વો	૩૮૨૬		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૫૦૪૫	૬૪૪
શાસેદ મસંચિયો	૩૮૩૪		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૫૦૪૬	૬૪૫
શાસણો સહુ સુતાર્થો	૫૨૫૨		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૬૩૧	
„	૫૩૭૫	૩૩૩૩	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૩૬૪૧	
શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૦૬૮	૨૭૫૮	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૩૮૧૮	
શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૭૬૩	૩૭૮૬	શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૫૧૦૬	૨૪૬૧
શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૪૬૭		શિક્ષકારણમિત્ર મલ્લુ	૧૨૦૦	૩૫૮૦

	६११६		शिसिदंतो व ठवेज्जा	१७८५	
शिशुहृतादि ठाणा	४१३४		शिसिपदमपोरिमुग्गव	५७६	४६३२
शिशुवसंसंगीए	५५३२	५५३३	शिसिमादीसम्मूठो	८७६	
शिशुवरां धवसावो	१६		शिसिह एवमा पुब्बा	६५००	
शिशुवरो शिशुवरो	३०१	६०६६	शिसीहिया खमांकारे	६१३४	
शिता ए पमज्जति	५३६७	३४५२	शिसुद्धंते भाउवधो	३२१२	
शिता ए पमज्जती	२२३	"	शिसेज्जा व वियइलो	६५१२	
शितिए व धग्गपिडे	६६६		शिसेज्जाऽसति पडिहारिय	६३८६	
शित्तिहस्स समीहं	४५७४		शिस्संकिय शिक्कलिय	२३	
शिहोसं सारवंतं व	३६२०	२८२	शिस्संभया उ समणा	४१४४	५२६६
शिहमधुरेहि भाउं	३५४१		शीरोज्ज पूय-कधिरं	१५०६	
शिडे दवे पणीए	३७६७	६००७	शीयस्सयदुधरिताशुकित्तणं	२३३८	
शिययं व धशिययं वा	११८६	३५६७	शीयस्स भग्गु गेहे	१२१४	
शिप्पच्चवाय-संबंधि	२४६५	२०७०	शीयासणंजलीपग्गहादि	१३	
शिप्पत्त कंटइस्से	६३८२		शीसंको व ऽणुसुद्धो	४५६८	
शिप्पक्कणो वि स धट्ठा	१००५		शेपुणुणममुं वंते	१६२४	
शिप्पेइयो सेहस्स तु	३७३४		शेगविषा इट्ठीधो	२६	
शिक्कए गारत्थीणं	४२५१	५६६०	शेगविह कुसुमपुष्पोवयार	६७०१	
"	१६६	"	शेवाण उ खाणत्तं	१३५०	
शिक्कए पिट्ठतो गमणं	११०३		शेगासु चोरियासू	६५१५	
शियएहि ओसहेहि य	३०२७	१६३१	शेगेसु एगगहणं	५२३५	३३१७
शियगद्धितिमत्तिकता	१५८५		"	५३५८	
शिक्षस्स गदपघोवो	४८७१		शेगेसु पिता-मुत्ता	११७५	३५५६
शिक्षस्सग्गामिमां	२८७८		शेहाति एवं काहं	४८७	
शिक्षहण ओरित्थीयं	३७०	४६५३	शो कप्पति भिक्कुत्ता	१०८०	
शिल्लोय-सलोमऽविरो	४६११	१०४८	"	१०६०	
शिवचित्त विकास पडिच्छणा	३१६५		"	१०६६	
शिवत्तण शिवित्तवरो	१७६५		"	१५४४	
शिववित्ततादि भसह	४६१		शो कप्पति वाऽविच्छणं	५२३८	३३२०
शिवपिओ गयभत्तं	४५१२		"	५३६१	
शिवभरणं भूतवेवो	६५१७		शो तरती भमत्तट्ठी	२७६८	५७६४
शिववत्सभवदुपक्कम्मि	३६२३	५१८८	शोल्लेऊए ए सक्का	१६७७	३७०१
शिवित्तिगणिकवले भोमे	५७४		शोवयणामं दुविहं	४७१५	८४५
शिव्वत्तणा य दुविषा	१८०१		त		
शिव्वत्तातक्कादी	८२४		तइया गवेसणाए	२८६६	
शिव्वित्तमितिय पुरिमद्धे	६६६२		तक्कम्मसेवि जो ऊ	३५६५	
शिव्वित्तभोति य पडमो	५७०६	३१२१	तक्ककुडेसाहरणं	१२	
शिव्वीयमायतीए	२५५१		तक्कत्तपरोप्परधो	५७६६	
			तच्चिता तल्लेसा	५१०७	२४५६

नञ्जातगतज्जातं	२४७	३०७	नत्थं गिमागो एगो	६३३७	
नञ्जातमतज्जाता	२०५५		नत्थं गिमागो व दिवसं	१७३१	३७५५
नग-कट्ट-मुष्क-फल	५४१४		नत्थं दसण्णं भवते	३०१०	
नगकट्टहारगदी	५४१३		नत्थं पत्तेसे लहणा	५४७०	५३७५
तग कंबल पावारे	३६०७		तत्थं भवे सगु एव	५६६०	
तगगहगु पणिसेवगां	४७७६	६००	तत्थं भवे ग तु पुणे	६४६८	
तगुगहणे भुसिरेतर	४७६१	६०३	तत्थं भवे मायमोमो	६३५७	
तग डमल्ल-द्वार-मल्लग	३३२		तत्थं वि वेपयति अं	४६४१	
तग डगल-द्वार-मल्लग	११५४	३५३५	तत्थेव प्रसंगगामे	२६६६	१६०२
तग विगग संजयट्टा	५०२६	६०५	तत्थेव गंतुकामा	२६४०	५८३६
तग वेत-मु-ज कट्ट	२२८६		तत्थेव य गिगुवगां	५७७६	६१७
तग-संजयसादीगं	५५		तत्थेव य निम्माग	५५१५	५४१८
तगुवणसम्मि वि दोला	४००६	३८३८	तत्थेव य पडिबंघो	५१५३	२५०३
तगमादिभासिवाधो	५६१०		तद्दिगमभादिगं वा	११६२	
तगुमासिवादिवा उ	२२८८		तद्दिगमकताग तु	२८०	
तगुयमसितं धासत्थ	६०१५		तद्दिगमभोगादी	६०६६	
तथ्ण-वाग-र-बरहिए	५६०६		तद्दिगम पडिसेट्टा	१२७६	
तथ्णवसता केई	५१११		तत्पडिपक्खे दब्बे	६३८७	
तथ्हाधेदम्मि कते	३८८६		तमतिमिरपडलभूधो	२८४७	५५८१
तथ्हाधेदो गिमागो	५२६५	३४२५	तम्मि भसंधीरो जेट्टा	११८३	३५६४
ततागतते वणभूमिरे	५६६४		तम्मि वेव भवप्पी	३८०६	
ततिए पतिट्टियादी	६३१६		तम्मि तु भसंधीरो वा	१२६६	
ततिए वि होति जयगा	५७२०		तम्मि य भतिगतमेते	१६७३	३६६७
ततिधो उ मुहसगांस	१२५४		तम्मि य गिद्धो धणं	११०७	
ततिधो जावज्जीवं	४०७७		तम्मि वि गिम्मापाते	७३४	
ततिधो धिति-संघण्णो	८४		तम्हट्टा जाएज्जा	६७६	
ततिधो मकल्लजुतं	४५५१		तम्हा भाषीएज्जा	११३४	
ततिधो संजय-मट्टो	१७४२		"	३१२१	
ततियभंगसांघकिंतावि-	२६३२		तम्हा उ अपरिकम्मं	४६३७	
ततियसताए गवेसी	२८६७	५७६४	"	४६४५	
ततियस्ययादयारे	३७२७		तम्हा उ गिग्गुय्यं	३२३४	४२५६
ततियस्स जावज्जीवं	४०७५		तम्हा उ जहि गहिं	४१४७	५२६६
ततियं भावतो भिण्णं	४७२१		तम्हा उ ए गंतव्यं	४१८३	५३०३
ततियाए दो धमुदा	२८६५		तम्हा खलु भवले	१३४०	५६६
ततियावेसे भोत्तूण	३४१५		तम्हा खलु वेतव्यो	१२४६	
तत्ताप्रथमिते गंधे	२६५२	५८४८	तम्हा खलु पट्टवणं	२८३६	५५७३
तत्थ गतो हंग्ग पट्ट	४१२५		तम्हा खलु सय्यामे	६०४४	
तत्थ गहणं पि भुविहं	४७४६	८६१	तम्हा गवेसियव्वो	१३५८	

तम्हा गीयत्येणं	३८३३		तस्संबन्धि मुत्ती वा	२८४०	५५७४
तम्हा ए कहेयव्वं	६२२७	७६०	तह भग्णतिथियादां	३२२७	४२५२
तम्हा ए तत्थ गमणं	२४८६		तह इत्थि-मालबन्दाहिं	१७६५	
तम्हा ए वि सिदिज्जा	२१६३		तह वेवभिहारते	२७१४	
तम्हा ए संवसेज्जा	२४७३		तह वि य ग मव्वकालं	४३५५	
तम्हा तिपासियं सलु	२१७६		तह समगमुविहियाणं	५७७	४६३०
तम्हा पमाणागहणे	११२४		"	६३०६	"
तम्हा पमाणाधरणे	४५४४		तह से कहेति जह	३०५१	१६५०
तम्हा पुव्वादानं	१८७६		तहि सिक्कणहि हिज्जति	३४३४	२८८६
तम्हा वसघोदाता	१२०७		तहि वज्जते गुरुणा	२८५३	५५८२
तम्हा विधीए भुंजे	१११६		तं भ्रष्टपसंय-दोसा	७२	
तम्हा सट्टाणगयं	४६७८		तं भग्णतिथिणं	७६६	
तम्हा सव्वाणुणा	२०६७		तं भग्ण सहदेसी	१०३७	
तम्हा संविसोणं	३८४०		तं काउं कौति ए तरति	४१५१	५२७३
नया दूराहडं एतं	१४६४		तं कायपरिचयती	२६५६	
त-गा येरा य तहा	२५८२		"	३६६२	
तरुणा वेसितिय विवाह-	२५६२		"	४७६०	६३०
तरुणाण्णे णिज्जं	२३५३	५२५६	तं चेव सिद्धवेत्ती	५१४६	५५८३
तरुणीभो पिडियाभो	४०६१	१८४८	तं चेव निट्टवेत्ती	२८५०	"
तरुणीया य पक्खेत्ती	२२४३	४६५०	तं चेव पुव्वभणियं	२३८४	४८२१
तरुणे निष्कण परिवारे	६०२१	४३३८	"	६५५६	
तल म्हालिणिरि लउए	४७०२	८५२	तं जे उ संजतीणं	४०२७	
तलिय पुडम दढेगा	२४३१	२८८३	तं जो उ पलोएज्जा	१४७६	
तलिया तु रत्तिभरणे	३४३२	२८८४	तं ए लमं खु पमादो	६३०६	
तव कप्पति ए तु उम्हं	३७६२		तं तु भ्रष्टुद्वयदंडं	३६६६	
तव छेदो लहु गुरुणा	२२११	२४७६	तं दट्टुण सयं वा	६७२	
तवगलण्णज्जाणे	२६२०	५८१७	"	६७४	
तव छेदो लहु गुरुणे	५१२६	२४७६	"	१२८३	
तवतिगं छेदतिगं	६५३८		तं दारुदंडयं पादपुंछणं	८३१	
तवतीयमसहहए	६५६०		तं दुविहं एताव्वं	५०१	
तवबलिभो सो जम्हा	६५४२		तं पडिसेवेत्तुणं	१८६०	
तस-उदय-वणे घट्टण	४२२२		तं पाडिहारियं पायपुंछणं	१६४८	
तस-पारा-नीयरहिते	३६४३		तं पि य दुविहं बत्थं	५००१	
तस-वीयम्मि वि विट्ठे	५८६७	४०४२	तं पुण भोहविभागो	६३१४	
तसपाण तण्णागादी	३६७७		तं पुण गमेज्ज दिवा	४६३६	३०४२
"	५६०५		तं पुण गहणं दुविधं	७८६	
तस्सद्वयतोभासण	३८४२		तं पुण पडिच्छामाणो	३७३१	
तस्सज्जति कालितग्गि	७८६		तं पुण रुवं तिविहं	५११५	

तं मूलमुब्रह्मिहणं	४७७८		तिष्ठ वि कतरौ गुरुभौ	५१५६	
तं रयणि घणएत्था	३४८०		"	५१७६	
तं वेल सारवेंती	२०४१	१६६०	तिष्ठ एगेण सभं	१६६१	१६१६
तं सच्चिदं दुविहं	४७६८	२०८	तिष्ठं तु तच्चिदयाणं	७३२	
तं सारिसणं रयणं	३६२१		तिष्ठं तु बंधाणं	७४५	
साहं तराफममाहं	१२८८	२०२७	तिष्ठं तु विकप्पाणं	२१८६	
ना जेहि पगारेत्ति	३३७०		तिष्ठारेण समानं	६२२०	७८१
तानायं य चारे	३०४३	४८६८	तिष्ठुवरि कालियस्मा	६०५६	
"	३२५५	"	तिष्ठुवरि कालियाणं	७८७	
नाशो भेदो अयसो	१८१५	५७४१	तिष्ठुवरि बंधाणं	२१७८	
"	१८०१		तिष्ठुगरे गमणं	५७१३	३१२५
"	२७८७	२७०८	तिष्ठंकर पडिकुट्टो	११५६	३५४०
नामेवूणं अयत्ति	५६०८	३६८८	तिष्ठंकर राधाणो	६४१०	
नाहे चिच पणि मंतुं	४६८०		तिष्ठंकर महीसं वा	१६००	
नाहे पलवभेगे	४६८४		तिष्ठंकर मलागाडे	११७०	३५५१
निक्कम्मि उदयवेगे	५७६		तिष्ठंकर मतिपरा दिट्ठो	४६७६	
"	६३०५		तिष्ठं मासिय तिग पणए	१८०६	
तिष्ठुत्तो तिणिग मामा	१८४२		तिष्ठंको मालुज्जालो	६००८	
तिष्ठुत्तो सक्खेत्ते	११७४	३५५५	तिष्ठंनिवारणं अभिहणग	५२७५	३३५४
तिग बानाला अट्ट य	६५३५		तिष्ठंमवेतसवेत्ते	२२२३	
तिग संवच्छर तिगदुग	३०५५	१६५४	तिष्ठंमययदेवीणं	६०३	
तिगुगगतेहि ग दिट्ठो	१४४७		तिष्ठंमयुस्सिस्वीणं	६०२	
"	१४५५		तिष्ठंपाउ असुभनामस्स	३३२७	
तिगुगपयाहिरापादे	३७५१		तिष्ठंपोयागुज्जालो	१८४	
तिट्ठाणो मवेगो	४५८२		तिष्ठंम्मि कालखेदे	५७६६	३६७३
तिग बइ भुमिरट्ठाणो	२७६		तिष्ठंम्मि वि गादम्मो	७३७	
तिणिग उ हत्थे डंठो	७००		तिष्ठं वोसिरिभो सो	३८६१	
तिणिग कसिरो जहणो	५८०६	३६८६	तिष्ठं वा य दब्बचूला	६४	
तिणिग तिगेमंतरिते	१६०५		तिष्ठं वेदच्छम्मि	६६६१	
तिणिग दुवे एकका वा	३१६५		तिष्ठं परिगह दिब्बे	४७५०	८६२
तिणिग पमवी य लट्ठम	८६५		तिष्ठं च होइ बहुणं	६४२६	
तिणिग विहत्थी चउरगूल	६८६	४०१३	तिष्ठं च होति पादं	५८५२	१०२७
"	५८३७		तिष्ठं पुग दब्बमं	५०	
तिण्णोव य पच्छागा	१३६४		तिष्ठंणाग वि एधांसि	५६२६	
"	१३६७	४०८१	तिष्ठंणागमगभेसज्ज	५६८६	२०६५
"	५७८८	३६६३	तिष्ठंनिहत्थि तत्थ धेरी	५०३२	६३८
तिष्ठंट्ठारसबासा	३२७८		तिष्ठं परिहत्ति तत्थ	५८५३	४०२८
तिष्ठंट्ठारसकमणं	५५५३		तिष्ठं उ विसयदुट्ठो	३६६०	

निविहो य पकप्पघरो	६६७६		तेगिच्छिगमस इच्छा	३०६२	
निविहो य होइ जडो	६६२५		ते चैव तत्प दोसा	५१७५	२५२५
निविहो य होइ धानू	४३१३		"	५१६८	"
निविहो य होइ बुद्धो	३५४२		तेणद्धम्मि पमज्जरा	३३७८	
निविहो य होति कीवो	३६३७		तेण पर गिहत्थानं	२३८६	
निविहो य होति बालो	३५१०		तेण परं सरितादी	६५६५	
निविहो मरीरजडो	३६२६		तेणभव-मात्रयभया	३२७३	४३०५
तिब्बाणुबद्धोसो	११४		तेणभयोदककज्जे	५६५२	३०६०
तिसु छल्लहमा छगुठ	२६४५	५८४१	तेणादिमु जं पावे	३२६५	
तिसु तिणिए तारणाओ	६१४६		तेणारक्खिय-सावय	१५५३	३२०६
तिसु लहुओ गुरु एगो	२६४४	५८४०	तेणा व संजयट्ठा	४५१३	
तिसु लहुओ तिसु लहुमा	१६४१		तेणे कीवे राया	३७४१	
तिहि धेरेहि कयं जं	३४०८	२८६०	तेणे देव-मणुस्से	४७४०	८८२
तितिणिए बलबित्ते	६१६८	७६२	तेसो य तेणतेणे	३७२६	
तीतम्मि य अट्टम्मी	८८१		तेणेव साइया मो	३०८३	१६८२
तीसदिसे भायरिए	२८११	५७७७	तेसोसु णिस्सट्ठेसुं	५३०२	३३८१
तीसं ठवणाठाणा	६४३६		तेणेहि व भयणीण व	१७२५	३७४७
तीसुत्तरे पणुवीसा	६४८१		तेलीसं ठवणपद्दा	६४४८	
तीसु वि दीक्षितकज्जा	२७५२	५४६२	ते तत्थ सणिएविट्ठा	५२६०	३३४१
तीसु वि विज्जंतीसुं	५५१		ते तत्थ सन्निविट्ठा	५२६३	३३७२
तुच्छेण वि लोहिज्जनि	२४५३	२०५४	"	५३६४	
तुम्भट्ठाए कतमिणं	५८६१	४०३६	ते दोज्जुबालभित्ता	५४७४	५३७६
तुम्भेवि ताव गबेसह	१३८१	४६४५	ते पुण एगमलोणा-	६३५१	
तुमए चैव कतमिणं	६६०६		तेरस सय अट्ठट्ठा	६४७२	
तुमए समगं धामं	३६२४	५१८६	तेरिच्छं पि य तिविहं	५१८०	२५३४
तुम्हे मम धामरिया	२६३५		तेल्लुककदेवमहिता	१७१५	६२००
तुल्लम्मि अदत्तम्मि	३४६४	२६१७	तेल्लुव्वट्ठण ण्हावण	३०५३	१६५२
तुल्ले मेहुणभावे	५१६३	२५१४	तेल्ले षत्त गावणीते	१५६२	
तुल्लं वि समारंभे	४०७२	१८२६	ते वि य पुरिसा बुविहा	५२०६	२५६२
तुल्लेसु जो सलदी	६३६६		तेमि अवारणे लहुगा	५२७४	३३५३
तुवरे फले य पत्ते	२०१	२६२२	तेसि अप्पा सिज्जर	३३३५	
"	३४७०	"	तेसि तत्थ ठियाणं	३२४०	४२६५
"	५७०४	"	तेसि पडिच्छणे आणा	५६२६	
तुसिणी अदंति णिति व	२२६		ते सीदिउमारट्ठा	५११०	२५६२
तुसिणीए डुंकारे	८६६	६१०५	तेसु अगिण्हत्तेसु	२५३१	३५८६
तुह दंसण-संजणिओ	२२६६		तेसु अगेण्हत्तेसु	२४८४	"
तूरपति दंति मा ने	५०४२	६४१	तेसु असणवत्थादी	५७६१	
तुळ-वाडविहणा	४२४२	५६५२	तेसु ठितेसु पउत्थो	५२५८	३३३६

नेसु तमसुष्णातं	३५०				
नेसु अमहोरोसु	३६८५				
नेसु विद्रुमवसंतो	४१२६				
नंदुरुपशक्यं पि व	६१६६				
नो कठ दित्तव्या उ	८४२८				
नो पञ्चा संघुएहि	१७६७				
नोमनिग वगवरणा	५३६१	३४४६			
अ					
अमजीवि तन्नां खलु	३६८०				
अल-देउनिपट्ठाणं	११६८	३५४६			
अल-संकमणो अयणा	४२४८	५६५८			
अलि गोणि मयं यत	४८५३	६६३			
अडिन्-तिविद्रुवधाति	१५३३				
अडित्तम असति अट्ठाग	१८६८				
"	१६१८				
अडित्तममायारी	६३४८				
अडित्तं न वि पासति	३५५१				
आवरणिक्कणं पुण	६४०				
ओ-मुरिसअगायारे	५३८०	२३७४			
ओ पुरिमा जह उदयं	३६०२	५१६६			
ओ पुरिमा पत्तेयं	३६०४	५१७१			
ओसुं ते अज्जय गुरुणा	५७७३				
ओत्ताए विगडपादो	४३६१				
ओणाओ होति वियलो	६२६८				
ओणाओ आणा अलु	४२६७				
ओल-मुट्टमेसु वोत्तं	५८७५				
ओले वा सुहमे वा	५८७४				
ओरबहिहा लुहा	२४०४				
ओराओस वि दिओ	४५३८				
ओरानिनिविह अथवां	५२२८	८५८१			
ओरिय दुष्णिज्जिते	३४००				
ओरी दुस्सललोरा	४३८३				
ओरुवमा अक्कते	४२६३				
ओरेण अरुष्णाए	३७६५				
ओवं जति आवणणे	२८५७	५५६०			
ओवाओमेमपोरिनि	६०७८				
ओवाओमेमियाण	६१३५				
ओवा वि हणति लुहं	५३८५	३०६४			
व					
दगककादीह नवे	४६४२				
दगघट्ट तिणिण सत्त व	३१६५				
दग-णिगमो पुष्कुत्ता	२०५६				
दगतीरे ता षिट्टु	१६७				५६६१
"	४२५२				"
दगभाणुणे दट्टु	५२७८				३४२८
दगमुहेसियं वेव	६२७८				
दंग-मेहुणसंकाए	५३२३				२३६७
दगवाय संधिकम्मे	२०५७				
दगवारवट्टाणि	४११३				
दगवीणिण्य दगवाहो	६३४				
दगतीरविट्टणाओ	५३१०				
दट्टुं पि रो ल लक्का (अमामो)	१३४६				५७२
दट्टुण दुष्णिणविट्टुं	३६४१				
दट्टुण य राइडि	१७४०				३७६२
"	२५५३				
"	२५६६				
दट्टुण व सतिकरणं	५३३६				
दट्टुण व हिडलेण वा	१२५१				
दट्टुण वा णियत्तण	५३१४				२३८८
दट्टे मुत्ते छगणे	१७१				
दत्थी हामि व णीए	१०५७				
दधितक्कबिलमादी	२६२				
दप्प-अक्कप्प-णिगारांअ	४६३				
दप्पम अणि आयरणे	४३१८				
दप्पममादाणाओगा	४७७				
"	४७८				
दप्पादी पडिसेवणा	१४३				
दप्पे कप्प-अमत्ताणाओगा	६०				
दप्पे सकारणंमि य	८८				
दप्पेण होति लहुया	४७६				
दमए दमगे अट्टे	५०६३				६३२
दमए पमाणापुरिते	४०६६				१८८२
दमगादी ठाणा अलु	२६००				
दरहांअने व भाणं	४१६४				५३१३

दक्षिणपरिणामतो वा	३८६७			२६४१
दक्षद्वयार्णं धंती	१६३६	१५८८	"	३३४३
दक्षद्वयार्णहारे	३१६६		"	३६५१
दक्ष-गिरितीहं कृतवादिणसु	६८		दक्षेण य भावेण य	१०११
दक्षतो चउरो सुता	४७१८		"	४०६८
दक्षदिसलेतकाले	३६६४	५२१४	"	६६१७
दक्षपट्टिबद्ध एवं	२०६८		दक्षे तं चिय दक्षं	६०८३
दक्षपमाणाभितरेण	५८२२	३६६६	दक्षे पुट्टमपुट्टो	१०२६
दक्षपमाणा गणगणा	१६५३	१६११	दक्षे भविष्यो शिञ्जितप्रो	६२८३
दक्ष-पमाणागणगणैरेण	५७८६		दक्षे भावेऽविमुत्तो	११६३
दक्षमिम दाडिमवाडिएसु	३३४४		दक्षे य भाव तित्तिए	४८०
दक्षमिम वत्थपत्तादिणसु	८५३		दक्षे यं भाव भेयण	६२८०
"	८७६		दक्षोपगहणग आएस	४६
दक्षसिती भावसितो	३८२२		दक्षोवक्खरसोहादियाग	३२२५
दक्षं लेतं कालं	६२३४		दक्ष आउत्तिवागदसा	२५४३
"	६२३६		दक्ष उत्तर सत्तिशए	६४८०
"	६२२२		दक्ष एतस्स य मज्झ य	३०५
"	६२४६		दक्ष जेव य पलायाना	६५८२
दक्षं जोरगं या लब्धं	१०६५		दक्ष ता अणुसज्जंती	६६८०
दक्षं तु जाणितव्व	१७५५	३७७३	दक्षउर-गगच्छुधरे	५६०७
दक्षाह उज्जिभयं	५०११	६११	दक्षदुयए संजोगा	२०६२
दक्षातिसाहए ता	३७५६		दक्षमासा पक्खेण	२८३१
दक्षादि चतुरभिगह	६३७६		दक्षसु वि मूलापरिए	३६०१
दक्षादि निविहकसिलो	६५६		दक्षहि य रायहाणी	२५८८
दक्षादिनिवक्कासं	३३५१		दक्षधरो ल्हारक्खिधो	२५१६
दक्षादी अपसत्थे	३७५०		दक्ष पडिहार-वज्ज	१६७३
दक्षे आशारादिमु	२६४२		दक्षमुलभमि लोए	६६०७
दक्षे इक्कड कट्टिएदिणसु	८८७		दक्षकिख्य दोवारोहि	२५१५
दक्षे एणं पादं	५८८६	४०६१	दक्षच्छिण्णमलितं	३४६४
दक्षे सेत्ते काले	८५२		दक्षपुरे आहरणं	१२६५
"	८६१		दक्षामय दत्तेसु	१५२०
"	८७५		दक्षिक्क-गोर-तेत्ते	५६६४
"	८८६		दक्षे दिट्ठे विंगनय	६१११
"	८९८		दक्षगजरेणा मूढस्स	४७६८
"	१०१०		दक्षग-गण-चरित्तग	२१५६
"	१०२५		दक्षग-गण-चरितं	४८४
"	१०६४		"	२६२७
"	११८१		"	४३४१
"	११८१		"	४३४२

दंनगुणालो माता	३३८३	२७८४	दिदुमदिदु विदेसत्य	२७१८	४७२६
दंनगुणालो सुतस्य	६३६२		दिदु सतोमे दोषा	४०११	३८३४
दंनगुणालो यायिरिपोरुकाय	४४३४		दिदु कारगुणहणं	६०३६	
दंनगुणभावगणं	४८६		दिदु च परामदु च	१७७६	३७६८
दंनगुणवाय लहुगा	१४७७	३१८६	दिदु त पडिहणित्वा	१३७६	४६४०
दाऊण सणणदब्बं	४०६७	१८२६	दिदु व मोइएणं	२२७१	
दाऊण गेहं तु सपुतदारो	११६३		दिदुपडिसंहारो	४७०	
दाऊणं वा गच्छति	२६७६	१८८१	दिदुमोहे अपतंसरो य	३४	
दाऊणहरो संवासो	४६२७		दिदु गिमतया लपु	४४२६	
दाऊणं लविजुणं	६६३		दिदु महस्सकारे	६८	
दाणं ग होति अफलं	४४३०		दिदु संका भोतिय	४७२७	२१७२
दाणाई संसग्गी	१८४१		दिदु वप्पोणमहं	१२४४	
दाणो अभिगमसदु	१६२०	१४८०	दिष्णमदिष्णो दडो	६४१४	
"	१६२६	१४८६	दिष्णो भवत्तिभेण व	१३४६	४६२३
"	१६३०	१४७६	दियदिन्ये वि सच्चित्ते	४६४०	३०४६
"	१६३१	१४८१	दियभत्तस्स दवण्णं	३३६३	
दाणेण तोसिनो वा	३७०४		दियराओ गोमतेण	४१६६	
दातुं वा उदु रुस्से	४०२२		दियराओ लहु गुहणा	२६६१	४८४६
दावग-माहण-डाहो	४६६६		दियरातो उवसंपय	६३२४	
दारदुगस्स तु पमती	२३७८	४८१४	दियरातो भोयणस्सा	३३६१	
दारं न होति एत्तो	२२६६	३३७४	दियरातो लहु-गुहणा	४७३६	८७८
दाराभोग एणागि	२६६४		दियरातो तेवणं	४०००	
दाराभोयण एणागि	४४०७		दिक्ससिणसि पडमचरिमे	१३४	
दावद्विओ गतिचवलो	६२०३	७४२	दिवसतो अण्णं सेण्णति	२६६४	
दासे दुट्ठे य मूढे य	३४०७		दिवसतो ग चव कप्पति	३२२०	
दासो दासीवतिओ	३१८४		दिवसभयए य जत्ता	३७१८	
दाहं ति तेण भणितं	४४४०		दिवसभयओ उ धिप्पति	३७१६	
दाहामि ति य भणिते	१००१		दिवसा पंचहि भतिसा	६४४२	
दाहामो णं कस्सयि	४०८२	२८२७	दिव्य-मगुय-तेरिच्छं	३३१४	
दाहामो ति व गुहणा	३०४१	१६४२	दिव्यमगुयाउ दुमतिपस्स	३६४६	
दाहिएकरम्मि गहितो	३४१४		दिव्यं अण्णेरं विमहओ	३३३६	
दाहिएकरेण कण्णे	४८६६	६६६	दिक्काइतिग उक्कोसगाइ	३६१	
दिक्केहि भच्छता	२४८४		दिक्केसु उत्तमो लाभो	४०८६	२८३४
दिज्जंतो पडिसेहो	४४७६		दिसि पक्का गाम सूरिय	१८७१	
दिज्जंतो वि तदा	१३०४	४६०१	दिसिमूलो पुब्बावर	३६२६	४२१६
दिज्जंतो वि ए गहितो	१३७८	४६४२	दिसिदाहो छिप्पामूलो	६०८६	
दिदुमणोसियगहणे	१०२		दिस्सिहिति चिरं बडो	४६०७	
दिदुमदिदु य पुणो	२२०१		दितेण तेसि मप्पा	४४३४	

दीहं क्षेयणं हवको	२३०		दुविधे तन्निच्छामी	२२३०	
दीहं च शीतं सेज्जा	५६२१		दुविधो उ भावमयधो	१०४०	
दुक्करयं सु जहुसं	५४४४		दुविधो कायमि वणां	१५०१	
दुक्कं कप्पो बोहुं	३६६		दुविधो सल्लु पासत्थो	४३४०	
दुक्कं सु निरणुकपा	५६३३		दुविधो परिमाहो पुण	३७७	
दुग्ग-तिग्ग-चउक्क परागं	१३६१		दुविधो य मुसावातो	२६०	
दुग्गपुड-तिग्गपुडादी	६१७		दुविधो य संकमो लल्लु	६२१	
दुग्गुणो चउग्गुणो वा	५८०४		दुविहं चउविहं छउब्बिह	११५१	३५३२
दुग्गविसमे वि न सलति	६६६८		दुविहं तिविहेण रं भति	४६६४	
दुग्गादि तौसियणिवो	६०८०		"	४६८६	
दुग्गुडाणं छम्मागदंसरो	५३१	२५६६	दुविहमदत्ता उ गिरा	६२५०	
दुद्धिय भग्ग पमादे	४०२२		दुविहमि भेरवमि	५७२३	३१३५
दुष्णिगं दोष्णिगं विट्ठा	३४८६		दुविहकयमालुराणं	४६२१	
दुपदचउप्पदेणासे	४६८२		दुविहं च दांसु मासेसु	६४२४	
दुपदचउप्पद-बहुपद	७०३		दुविहं वेव पमाणं	५४३२	
दुपय-चउपयमादी	३२६		दुविहा उ होइ बुद्धी	२६२३	५८१६
दुपय-चउपयदरासे	१४६७		दुविहा तिविहा य तया	४१२३	
दुप्पडिसेहियदूसं	४०२०	३८४३	दुविहा दप्पे कप्पे	१४४	
दुप्पडिसेहियमादीसु	२७६७	५७६३	दुविहा दुग्गु छिया लल्लु	५७५६	
दुप्पमिति पितापुता	११७७	३५५८	दुविहा पट्टवणा लल्लु	६६४२	
दुब्बलगहणि गिलाणा	४६५७		दुविहा य तक्कणा लल्लु	४२६२	
दुब्बलियत्तं साहू	४२०६		दुविहा य होइ दूती	४३६८	
दुब्बासियहसितादी	६३२०		दुविहा य होति जोई	५३५३	
दुमपुप्फिपदमसुत्तं	२०		दुविहा सोउलरिया	१६१६	
दुल्लभदब्बं दाहिंति	३६७		दुविहा सामायारी	६२१५	७७७
दुल्लभदब्बे च सिया	११७२	३५५३	दुविहासती य तेसि	६२७१	
दुल्लभदब्बे पदमो	४५२		दुविहे गेलण्णमी	२४३२	३५५०
दुल्लभपक्के सज्जालुगो	१५५८		दुविहो भदंसणो लल्लु	३६७२	
दुविधं तवपरुदराया	४१		दुविहो जालमजाली	३६०६	
दुविधं च भावकसिणं	६५३	३८८६	दुविहो तस्म भवण्णो	३३०१	
दुविधं च होई तेष्णं	३२४		दुविहो य अणमिभूतो	३६३६	
दुविधं च होति मज्झं	२४३२		दुविहो य पंडतो लल्लु	३५७२	५१४६
दुविधा छिण्णमच्छिण्णा	४५४६		दुविहो य होइ कुंभी	३५६१	
दुविधा छायामणाया	३६३५		दुविहो य होइ दुट्ठी	३६८१	४६८६
दुविधे गेलण्णम्मि	११६६	६३७६	दुविहो य होइ धम्मो	३२६६	
"	२५२४	३५५०	दुविहो य होइ पंधो	५६४५	३०५१
"	२५१२	६३६६	दुविहो य होइ कीटो	३६३८	
दुविधे तेहच्छामी	२२५६		दुविहो य होति कालो	६१२५	

दुविहो य होति दीवो	५४०४	३४६१	दो चैव निसिज्जाओ	६२१७
दुविहोहानि वमभा	४२८५		दो चैव सया सोला	२१३३
दुव्वगम्मि य पार्दम्मि	७५५		दोब्बेए भागतो	५७४१ ३२७२
दुस्सिक्खियस्स कम्मं	४१२२		दोच्चं पि उगगहो ति य	४०६६ २८११
दुसुओ गेलगम्भी	३२८६		दो जोयगाई मंतु	४२४७ ५६५७
दुहतो वाघातो पुग	३७८५		दोणिग उ पमज्जलाओ	२८२ २७४६
दुहतो वाघायम्भी	३७८६		"	३१३४ २७४६
दुइज्जंता दुविहा	२६२३		दोणिग तिह्थायामा	१४०६
दुतितं सु मरहितं	१८००		दोणिग वि विसीयमाणे	५४५७
दूमिय धूमिय बाभिय	२०४८	५८४	दोणिग वि सह भवन्ति	१७४५ ३७६८
दूरगमरो गिगि वा	५७७०		दोण्णेकनरे खमणे	६३७०
दूरे चिक्खित्तो	४५३६		दोणाननरे काले	१०६२
दुगपलासंतरिग	६१८		दोणहट्ठाए दाण्ह वि	२७५३
दूसियवेदो दूओ	३५७३	५१५०	दोण्ह वि उवट्ठियाए	६००३
देवत्तपमत्तवज्जो	६६८६		दोण्ह वि कयरो गुरुओ	२६०४ ५८०१
देवा ह रो पमग्गा	३०८२	१६८१	दोण्ह वि चियत्तं गमणं	५६७७ ३०८६
देविद्वंदिएट्ठि	६१८७		दोण्ह नि समागता	५६७८
देमकत्ता परिकट्ठो	२७७८	२६६७	दोण्ह जइ एकस्सा	३२२४
देसगहणे बीए	५३६३	३३२२	दोण्हं पि गुरूमाओ	५६१
"	५२४०	"	दोण्हं पि जुवत्तयाणं	५०४१ ६४०
देसक्काई सव्वज्जाई	४८१		दोण्हं वच्चं पुव्वचियं तु	६४
देसपदोसादीसु	३३२५		दो येर सुहु येरे	३७६६
देसम्मि बायरा ते	२०४३		दो दवियग्गापहा वा	६५६ ३८६२
देसं भोच्चा कोई	३८६३		दो पत्त पिया पुत्ता	३७६७
देसिय वागिय लोभा	५०८१	२८२६	दो पायाज्जुगएता	४५२४
देसिस्सगं पम्हजुयं मग्गुणं	५८२१	३६६८	दो मासे एसगाइ	५५४२
देसे सव्वुवहिम्मि य	४५४८		दो रासी ठावेज्जा	६४४७
देसो नामं पमती	४६४३		"	६४४१
देसो व सोदमग्गो	४७६६	६३७	दोरेहि व यज्जेहि व	६३७ २८६६
"	४८०१	६४२	दो लहुया दो गुरुया	३५२८
देसो सुलमहीयं	६२६७		दो लहुया दोसु लहुओ	१५८६
देहजुतो वि य दुविहो	२१६७		दो बारियपुत्तुसा	२५२७
देहजिउगा सिण्णं	३६०१		दोसविमवासुक्खो	६६५६
देहविमूसा बंभस्स	५०६५		दोसा जेण गिहं भन्ति	५३७३ ३३३१
देहस्स तु दोच्चत्तं	१८६३	५६०४	दोसा जेण निवं भन्ति	५२५० ३३३१
देह्हिको गणएवको	६५४		दोसा वा के तस्सा	११३६ ३५८०
दोणइ पडगुपधरगा	१५		दोसअरमा दीविच्चमाउ	६५८ ३८६१
दोणच्च बहता मांरो	३७६		दोसु वि अलद्धि कण्णावरंति	५४७ २६१३

दोसु वि धव्योच्छरणे	११८७	३५६८	न वि रागो न वि दोसो	४२६७	
दोहि तिहि वा विखेहि	२७७०		नखपेच्छं ददुगणं	२६७६	५३५२
दोहि वि भुवगा एते	६६३१	४४२४	नडमादी ठाणा खलु	२५६८	
"	६६३४	"	नदिखेडजणव उस्सुग	५६०१	
"	६६३७	"	नयवातसुहुमथाए	६०६३	
दोहि वि गिणिसिज्जणेहि	२१६०		नदिपडिगह वि पडिग्गह	४५६३	
दोही तिहि वा दिणेहि	६३७५		नंदीतूरं पुण्णस्स	३०२०	१५४६
ध			नाऊण य वोच्छेदं	२७११	
धरावुयमच्चकारिय-भट्टा	३१६४		नाणम्मि तिणिण पक्खा	५४६२	५३६७
धण्णंतरितुल्लो जिणो	६५०७		नाणाति तिविहा भग्गो	२८६६	
धण्णाइ चउओसं	१०२६		नाणिक्खिट्ठं लभति	४५०४	
धण्णाई रतणधावर	१०२८		नागुज्जोया साहु	५३६६	३४५३
धम्मकहातोऽहिज्जति	४४८१		नाणे दंसण-वरणे	७	
धम्मकहा पावेति य	३६१५	५१८२	नाणे महकप्पमुयं	५५७२	५४७२
धम्मकहि वादि क्षमए	४४८०		नातिक्कमते धाणं	२६१७	५८१४
धाताद्धिपिड भविमुद्ध-	४४७३		नातो मि सि पण्णसति	३५६६	
धातुनिधीण दरिसणे	१५७७		नामं ठवणा धाणं	४७०८	८३६
धारयति धीयते वा	४३७६		नामं ठवणा दविए	३३५६	
धारेतस्व जातं	१७६१		"	६२८२	११२६
धारोदए महासलिलजने	५२६२	३४२२	"	६२६६	
धिति बलजुतो वि मुग्गो	१७६०	३७८३	नामं ठवणा पक्कं	४८६८	१०३४
धिति सारीरा सत्तो	४८१५	६५६	नामं ठवणा भिक्खू	६२७४	
धीरपुरिसपण्णत्ते	३६११		नामं ठवणा भिण्णं	४७१६	८५८
धीरपुरिसपरिहाणा	५४२३		नामं ठवणा मत्थं	५००२	६०३
धीमुद्धिओ दुरप्पा	४७५६	८६८	नायममनायगं वा	३७४७	
धुवणाऽधुवणो दोसा	५८३६	४०१२	नावजले पंकथले	६०२४	
धुवसंभो वा दग्धे	४०५		नावा- उग्गमउप्पायसेसणा	६००१	
धुवलोभो उ जिण्णाणं	३२१३		नावाए-खिवण बाहणा	६०१२	
"	३१७३		नावादीधे सव्वे	६०१६	
धूमादी बाहिरितो	३६६५	५२१५	नावासंसारपहो	६००७	
घोताम्म य निप्पगले	६१६७		नाविय-साहुगदोले	४२१४	५६२४
घोतस्स व रतस्स व	१६७४	२६७८	निककारणम्मि दोसा	५२८४	३३६२
न			निकसम-पवेसवज्जणा	५२६२	३३७१
न पगासेज्ज लहुतं	३६३४		निग्गंधी-गमण-पहे	१७८६	
न वि जोइसं न गणितं	३६७६		निम्मल्लमंभगुलिया	४४७६	
न वि जोतिसं न गणियं	५२८६		नियमा तिकाकवितए	२६६५	
न वि रागो न वि दोसो	४६७६		"	४४०५	
			- नियमा पच्छाकम्मं	४११४	

निरुपस्वगनिमित्तं	६५६३		पञ्चाकड-साभिग्गह	७०८	
नीसट्टु मु उवेहं	५३००	३३७६	"	७१७	
नीसंकमणुदितो अतिच्छिता	२६११	५००८	"	७२५	
नोयंकिमो वि संतुण	४५६६		"	१६२६	
नेच्छति जसूग वेज्जे	३१६६		"	४०३१	
नोइदियस्स भिसमो	४२६८		पञ्चाकडादिणिहि	४६५२	
नोवेकलति अम्पाणं	३३१६		पञ्चाकडादि जयणा	३०४४	१६४५
			पञ्चाकडे य सण्णी	३०२३	१६२६
प			पञ्चाकडममतिते	५४१६	
पउमम्मि य पच्छिंशं	३०७२		पञ्चाकडमपवहुणे	६८२	
पउमप्पल मातुल्लिगे	१६४२		पञ्चा वि होति विगला	३७१०	
"	४८६१	१०२६	पञ्चा संघवदोसा	१०४४	
पउमप्पले अकुमलं	७५४	४०२५	पच्छित्तं गुपुब्बीए	६६२१	
पउमप्पले अकुमले	५८४६	४०२५	पच्छित्तं गुवाएणं	६७००	
पउरज्जुवालागमरो	२३६०	४८२७	पच्छित्तं रुवराया	४१४६	५२६८
पक्के निण्णाभिण्णो	४६००	१०३६	पच्छित्तं विवट्ठी	२०८१	
पक्खिय चउवरिते वा	२१४२		पच्छित्तं खु वहेज्जह	४८७७	१०१६
पक्खिय चउ संवच्छर	६३१३		पच्छित्तं दोहि गुहं	२२०७	
पक्खिय-मासिय-छम्मासिए	३२१४		"	२२१३	
पक्खी-पसुमाईणं	२३२३		"	२२२१	
पक्खी-पसुमादीणं	२३२१		पच्छित्तं पण जहण्णो	४८६८	
"	२३२७		पच्छित्तं बहुपाणा	३२०२	
पदसे-पक्खे भावो	३५६७		पच्छित्तं विस्सोही	६६७७	
पक्खेवदमादीया	१२१२		पज्जोसवणाए अक्खराइ	३१३८	
पगतीए संमतो गाधु	४१०		पज्जोसवणा कप्पं	३२१८	
पगती पेलवसरा	४०७३	२८१८	पज्जोसवणा काले	३१३७	
पच्चक्खणं भिक्खू	३६८६		पज्जोसवणा केसे	३२१०	
पच्चक्खणं संते	१६१५		पटो वि होति एणो	१४०१	४०८५
पच्छणं अतति गिण्हय	२३८१	४८१८	पट्टविमो मे अमुमो	२६८८	
पच्छणं-पुव्वमणिते	२३८७	४८२४	पट्टवित्तं ददिते ताहे	६१४३	
पच्छणं सति वहिता	२३६६	४८०४	पट्टवित्तं सिलोणे	६१६१	
पच्छाकड-वत-अंसरा	१०६४		पट्टविता उविता या	६६४३	
पच्छाकड-साभिग्गह	६२६		पट्टविया म वहते	६६४४	
"	६३८		पट्टीवंसो दो चारणाओ	२०४६	४८२
"	६४४		पडणं अवंमुत्तमि	५८६५	
"	६४६		पडणं नु उप्पत्तिता	३८०३	
"	६६१		पडिकारा य बहुविधा	२४१६	
"	६६७		पडिकुट्टु देस कारण गता	३४२६	२८८१
"	६६८				

पडिक्कुट्टे स्तगदिवसे	६३८३		पडिलाभित्त बध्धता	४४७२	
पडिगमण अणुतिरिचय	५३८	२६०३	पडिलेहण-अणुणवगण	८६२	
"	२५४८	१०५४	पडिलेहण पण्णेडण	१४१८	
"	४६१७	१०५४	"	१४२२	
पडिगमणादिपदोसे	३८२८		"	१४३३	
पडिगामो पडिवसो	४६७५		पडिलेहणामाणुयरो	१३५५	
पडिचरणपदोसेण	४५०३		पडिलेहण-मुहुपोत्ती	३४६३	
पडिचरती आचरती	३५६६		पडिलेहण-सज्जाए	६३४७	
पडिजग्गति मिसाण	३२७२	४३०४	पडिलेहण-संचारे	३६०८	
पडिजग्गिता य लिप्प	१७६२	३७८५	पडिलेहण तु तत्सा	१४१७	
पडिणीयता य केई	३६६७		पडिलेहण दिसाण	१८७०	
पडिणीयता य ण्णो	२२७०		पडिलेहण पमज्जण	१४२३	
पडिणीय पुच्छणे को	५६८५		पडिलेहण पमज्जणा	१४२०	
पडिणीयम्मि दि भगणा	६३६०		पडिलेहण बहुविहा	४१४६	
पडिणीय-मेच्छ-सावत	१७३४	३७५६	पडिलेहण य पण्काडणा	१४१६	
पडिणीयया य केई	३६६८		पडिलेह दिवतुयट्टण	५४५५	५४५५
पडिणीय विसक्खेवो	१४८०		पडिलेहपोरिसीधो	३०००	१६०३
पडितं पम्भुट्टं वा	१७०३		पडिलेह पल्लिमो	६४६	३८७७
पडिपक्खो तु पट्टो	२२४६		पडिलेहिताम्म पादे	१४२१	
पडिपहणियतममाणम्मि	५६१४	२३८६	पडिलेहियं च लेत्तं	२४६४	२०६६
पडिपुच्छ-दारा-महरो	१७८७		पडिलेहोभयमंबलि	६५६	२३७६
पडिपुच्छं धमणुण्णो	२०६६		पडिलोमाणुलोमा वा	३८८२	
पडिपुण-हृथ प्ररिम	२१७०		पडिवतीइ अकुसलो	१६६	
पडिपोगले अपडिपोगले	२५४२		पडिजिज्जबंभणादी	४४५६	
पडिबद्धतंदि उग्गह	२१२२		पडिसिद्ध समुद्धारो	४२४	
पडिबद्धा सेज्जाए	५१७		पडिसिद्ध तेगिण्णं	४८०६	
पडिबद्धा सेज्जा पुण	५१८		पडिसिद्धा ललु लीला	४८४२	६८२
पडिमंतबंभणादी	४४६१		पडिसेवे पडिलेहो	१८३६	
पडिमाए आभियाए	५३७७	३४६५	पडिसेवे वाचाते	४२५	
पडिमाकुत देहपुयं	३६२		पडिसेवघो उ ताभु	७६	
पडिमाकुते पि एव	६०७		पडिसेवणाए एव	५१३२	२४८२
पडिमाग्गमण ओरमणं	५४०५	४६६	"	५१७४	"
पडिमापडिवणणाणं	३१४७		"	५१८७	"
पडिमेतरं तु बुविहं	५११६		पडिसेवणातिमारा	३८७२	
पडियरिहाभि गिलाण	२६७६		पडिसेवणा तु भावी	७४	
पडियाणियाणि तिण्हं	७७६		पडिसेवणा य संवय	६६१६	
पडिलाभणअट्टममी	५८१	४६३४	पडिसेवणा पि कम्मोवणण	६३०८	
पडिनाभणा तु सद्धी	५८४	४६३७	पडिसेवती विमतीतो	३८६६	
			पडिसेवतो तु पडिसेवणा	७३	

पडिनेकनम्म तहि	३७५	४६५८	पडमस्म ततियठाणे	५१६२	२५१६
"	२२४८	"	पडमस्म होति मुक्	६६५६	
पडिमवित्तगि पुक्क	६६६२		पडमं तु भंडसावा	५३६३	३४४८
पडिमैहगस्म लहुगा	५४६२	५३६७	पडमं बितियं ततियं	५६७२	
पडिमैह प गिचकुमण	५६८०	३०८६	पडमं राई ठवैते	२६६४	१८६६
पडिमैहगा सरटग	४७५४	८६६	पडमा ठवगा एक्को	६४५६	
पडिमैह मयंभे वा	३४४६	२८६६	"	६४६०	
पडिमैहऽवगाए	३०४२		"	६४६१	
पडिमैह पडिमैहो	४६७७		पडमा ठवगा पक्को	६४४६	
"	४६६८		"	६४५०	
पडिमैहो मयवाधो	६६८४		"	६४५१	
पडिमैहो जा माणा	६६८५		पडमा ठवगा पंच य	६४५४	
पडिमैहो वा मोहो	६६६६		पडमा ठवगा पंचा	६४५५	
पडिहारिगमो पडिहारिमो	१३००		"	६४५६	
पडिहारिए ओ तु गमो	१६५२		पडमा ठवगा ओसा	६४५३	
पडिहारिते पवेसो	१७५०	३७७३	"	६४५४	
पडिहारियं अद्वैते	३३४		"	६४५५	
पडुपणाश्यागते वा	२६५७		पडमाए गिष्ठिठरां	४१६१	५२८३
पडमग-मंगो वज्जो	२४६६	६३८३	पडमाए पोरिसीए	५७८	४६३१
पडमचरमाहि तु	१४२७		पडमाए बितियाए	२६०२	५७६६
पडम-ततिय-मुक्काए	३३७३	२७७४	पडमालिक् कररो वेसा	२४६	
पडमदिगाबितिय-ततिए	२७६५		पडमासति ऽमणुण्णो	२३८५	४८२२
पडमदिगाणापुच्छ	६३७२		पडमासति सेवारा व	२३७१	
पडमदिशो म विफाले	६३२६		पडमिल्लुगम्मि ठाणे	५१२६	२४७५
पडमबितिएसु कप्पे	३८७७		"	५१६८	
पडमविताहि छडु	३८२७		"	५१८३	२७७५
पडमबितिय दिवा वो	२६५६	५८५१	पडमिल्लुगम्मि तदारिह	५१७०	२५२०
पडम-बितियदुतो वा	४७६		पडमुस्सोतिममुदयं	५६७१	
पडम-बितियाण करणं	६६५		पडमे गिलाणकारण	५३४६	०४२०
"	७०४		पडमे पंचविधम्मि वि	७७०	
"	७१४		पडमे पंच सरीरा	१७६६	
"	७२२		पडमे बितिए ततिए	११४७	३५२८
पडमजितियातुरस्स य	३४२३	२८७५	"	२५३६	
पडमम्मि जो तु गमो	१४४८		पडमे भंगे गहरां	४११७	१८६६
पडमम्मि य चतुलहुगा	१३१५	४६१७	पडमे भंगे चउरो	४६२८	
पडमम्मि य संघयरो	३६४८		पणमं च भिण्णमासो	५४६१	
पडमम्मि ममोसरणे	३२२२		"	२६४८	
"	३२५३		पणमं तु बीय चट्टं	२५०	

परागातिमन्त्रिकर्ता	१५६७		पदमगमकमालवशो य	६१६	
परागाति मासपत्नी	७६४२	१०७६	पदमगो मंत्राग्रा	६२०	
परागातिरेग जा पत्नी—	६५७६		पप्पडए मन्त्रितो	१५४	
परागाति हरितमुच्छ्रग	६३६		पप्पापरियं सोधी	८७०	
परागादि भ्रसपादिमं	५३३४	२४०६	पशु-मशुपशुगो द्वावेदणं	१३४८	५७४
परागादि संग्रहो होति	६३५०		पमागादरेगधरगो	५८२४	४००१
परागासं ठवरापदा	६४५३		पम्हुट्ट मन्त्रहण वा	२५५६	
परा दस पणार बीसा	५३३३	२४०८	पम्हुट्टे पडिमारग	६३६४	
परायासदिगो गणिगो	२८१०	५७७६	पथनी पुग मन्त्रिता	४३०२	
परायासीसं दिवसे	५८५७	४०३२	पयसा उल्ले मरुण	२६८	६०६६
परावीसजुतं पुग	२१०४		"	८८२	"
पराहोरा तिभागद्वे	१६०८	५८०५	पयसा गिद-नुयट्टे	१६६१	३७१४
पराकाग जोगजुतो	३५		"	१६६२	
पराया य भंडसाला	५३८६	३४४४	"	१६६४	३७१५
परासति चर-दूर	६२		पयलामि किं दिवा	३००	६०६८
परासति जनुदीवे	६१		परतितियउवगरणं	३४३६	२८६१
परासरस दस व पंच व	३२६५		परतो समय राच्चा	३८४४	
पराबरायमेतमिदं	२१६८		परदेसगए गातु	३२७४	४३०६
पराबरायजा भावा	४८२३		परपक्खमि य जयगा	५२७२	३३५१
पराबराय च उवेहं	३३५६		परपक्खमि वि दारं	५२६७	३३७६
परागार पराट्टो	६४७७		परपक्खे तु सपक्खे	३६६३	
परासा पाडिज्जति	३१५५		परपक्खे उ सपक्खो	३६८८	
पतिदिवसमलम्भे	३४२१		परपक्खो उ सपक्खे	३६८६	
पतम्मि सो व मन्त्रो	५५७३		परपक्खो परपक्खे	३६६०	
पत्तं पत्तावंधो	१३६३	१६६२	परमज्जोयसाओ	३२८५	
"	१३६६	४०८०	"	३२६३	
"	५७८७	"	परमज्जोयसाओ	४१६७	
पत्तं वा उच्छेदे	३४६		"	४१६८	५२८७
पत्ताणं पुष्पाणं	४८४०	६८०	"	४१६५	५३१४
पत्ताणमससत्तं	२७८		परवत्तियागु किरिया	२७८१	
पत्तात्रयपमाणं	५७६०	३६७१	परवयणाज्जट्टे उं	१३७७	४६४१
पत्तोय साहारग	२५४		परसक्खियं गिबंधति	३०४७	
पत्तोयचट्टगामति	२३६८	४८०६	परिणमरा मुक्कोसं	६८६	
पत्तोय समग दिक्खिय	२३८०	४८१७	परिणम्मगो चउभंगो	२०८५	३६६१
पत्तोयं पत्तोयं	६५०१		"	५८१४	"
"	६५७१		परिमलण पवडणो वा	६०४३	
पत्थारदोमकारी	५१६१	२५११	परिसट्टण शिम्भोयग	६६४	
पत्थिव-गिडधिकारो	२४६६		परिसट्टणं तु शिहणं	७०६	

परिद्वारण-संक्रामण	२६६	परिमयो अणुद्वयं	१५६०
परिणामयो उ तद्दि	४८७५	पल्लवि कोयवि पावारण—	४००२
परिणामयेतु अक्षति	३४८८	पवतिणि अभिसेगपत्त	६०२२
परिणद्विपुजीवजहं	३४६६	पवहंते कायवहो	४२७०
परितावला य पोरिमि	४७५६	पविसंते एिकक्षमंते	५७८२
परितावमणुपुकापा	२८६३	पव्वज्जागपनिस्सय	५५१७
परितावमहादुवसे	३११६	पव्वज्जाए अभिमुहं	६२६४
परिपिडितमुत्तमावो	४४५७	पव्वज्जाए सुएण य	५५१६
परिभायणं तु दाषं	८३७	पव्वज्जादी आलोयणा	३८६६
परिभोगविवक्खातो	१५२६	पव्वज्जादी काउ	३८१२
परिमितभत्तगदासो	४१७४	"	३६४०
परियद्वुरासपुभोगो	२१२५	पव्वज्जासिक्खावय	३८१३
परियद्विए अभिहडे	३२५१	पव्वयसी आमं कस्स ति	२७२२
परियद्वियं पि दुविहं	४०६३	पव्वसहितं तु खं	५४११
परिआएण सुतेण य	६२४०	पव्ववाण गीयत्थे	३५६३
परियाय परित्त पुरिसं	४३७३	पव्ववाणिज्ज-तुलणा	२४१६
परियायपूयहेतुं	५४३७	पव्ववाणिज्ज-वाहिं	२७००
परिवार सद्दज्जण	५४३	पव्ववाणिश्रो सियति य	३७४६
परियासियमाहारस्स	३७८८	पव्ववावेति जिणा खलु	३५३५
परिवसणा पञ्चुत्तणा	३१३६	"	३५५५
परिवार-पूयहेतुं	५४६१	पसत्थविगतिमहणं	३१६६
परिवारियमज्जगते	५७७६	पसिडिल-पलंब-तोला	१४२६
परिसंते अट्ठासो	२४४७	पसिणापसिणं सुविरो	४२६०
परिसं व रायमुट्ठे	४११	पहरणमग्गणे छग्गु	११२
परिसाए मज्जमिंमि पि	४६८४	पको पुण चिकसल्लो	१५३६
परिसाडिमपरिसाडी	१०१३	पंध उ मासा पव्वे	२८२५
"	१२१८	पंध पव्वेउणं	७६२
"	१२८१	"	४२१०
"	१३१०	पंध व छं सत्तं सते	३८३०
"	१२८७	"	३८३७
परिलेसु भोर महिसासु	३५७०	पंधविधन्विभिग्गीण	६५६
परिहरणा वि य दुविहा	४०७४	पंचसता चुलसीता	६४७०
परिहारः सुपरिहारी	६६११	पंचगुलपतोयं	६४४
परिहास्तवकिंसंते	१८६५	पंचण्ह वि मग्गा रां	५७
परिहारिमगठवेते	२७७७	पंचण्हं अणुत्तरे	७८४
परिहोणं तं दण्वं	३०७८	पंचण्हं गगतरे	५२५२
परीसहचसू	३६२५	"	५५६८
परिउंचण चउमंको	६६२४	पंचण्हं गहोएणं	४२११

पंचभू परिकुट्टी	६४३६		पाउमसम शलमे	२४४५	
पंचभू वषाणाण	६४४	३८८७	पाउनमपाउना घट्ट मट्ट	१४६०	
"	४६३२		पाउल्लगो दुविधं	८१८	
पंचवहायरिथाह	२६०४		"	१६४४	
पंचतिरित्तं दब्बे उ	२१८२		"	१६५३	
पंचमपम्मि वि एवं	५१२३	०४७४	पागमा अट्टातक्कं	४३०१	
पंचम-छ-सत्तमियाण	२६०३	५८००	पागमा देति लोमां	४४२५	
पंचमहृष्यभेदो	६००६	७७०	पागमा बीयभोई	४७९३	६३३
पंचमे अणोसगादी	५६४१	३०४७	पाडेज्ज व भिदेज्ज व	४२०५	
पंचविधम्मि वि वत्थे	७८१		पागमाजोगाहारे	३८८०	
पंचविधं सज्जायं	२२३३		पागमादीणि जोगाई	३८५०	
पंचविहममज्जायम्म	६११८		पागट्टा व पविट्टो	१६६४	१६२२
पंचविह-वणा-कसिरो	६३५	३८६७	पागदयम्ममगाकरणे	४५३७	
पंचसत्तदासगहणे	३०४५	१६४६	पागमुण्णा य भुंजति	६३३३	
पंचसमित्तस मुण्णयो	१०३		पाणातिपातमादी	१६६६	३६६३
पंचसयमोगि अगणी	५१५७	२५०७	पागादिरहितदेसे	२७२	
पंचसया तुल्लसोमो	५६२१		पागा सोत्तम कुंथू	१२४५	
पंचसया तुलमीया	५६१६		पातगिमित्तं वयिमो	४६८७	
पंचसया चोयाला	५६१६		पादच्छिन्नाम-कर	४६२४	
पंचसमा जातेरुं	३६६५		पादप्पमज्जगादी	४६४६	
पंचादिहत्थ पंचे	१४७		"	५०६१	
पंचादी गिक्खित्ते	२०७		पादस्स जं पयाणं	६१५	३८४८
पंचादी लहुगुस्सा	०४६		पादादी तु पमज्जण	१८५५	
"	३८२		पादे पमज्जगादी	२२८१	
पंचादी लहु लहुया	३४१		पादेसुं जो तु गमो	१५००	
पंचादी ससण्णदे	१७८		पादोक्कमं अगियं	३६४२	
पंचासवप्पवत्तो	४३५१	४२६५	पादोसिय धत्तुरत्ते	६१५१	
पंचूरो दोमासे	३२६४	४२६५	पाभाइत्तम्मि काले	६१५५	
पंचेगत्तरे गीए	५५६६	५४६८	पमाणातिरेगघरणे	४५२७	
पंचेदियाण दब्बे	६१००		पामिञ्चित्तं पामिञ्चावित्तं	४४८६	
पंचए वातिए कीवे	३५६१	५१६६	पायच्छिन्ना-स-कर	४५७२	
पंचुइया मि घरासे	१६८५		पायच्छित्तं घसत्तम्मि	६६७८	
पत्तसुर-परिग्गहिते	१६०१		पायच्छित्तो पुच्छा	४८४५	६८५
पंता उ हात्तपत्ती	५१४७	२४६७	पायप्पमज्जगादी	२३०४	
पंचसहायमसत्तो	५४८८	५३६३	"	३३१२	
पंचे ति एक्कंरि रोम्मं	२४४३		पायम्मि य जो उ गमो	११६४	
पंचू अचित्तरयो	६०८६		पायसहरणं खेत्ता	३१८७	
पंचू य मत्त-रुहारे	६०८५		पायावक्क कुट्टु बिय	२२००	

पायावच्छ परिग्रहे	५१२१	२४७२	पासे तल्लः सोहल	५३६५	
"	५१२४	"	"	५४०७	
"	५१३०	२४८०	पासो सि बंधनं सि य	५३४३	
पारणम-महिता-भाहितं	१६७६	३७००	पाहिज्ये खाणसं	३०४६	१६४८
पारंविद्यो रा दिज्ज व	५६४५		पाहुजियं सि य एये	३०१२	१६१५
पारंवि सतमसीतं	६६१७		पाहुजिया वि हु दुविभा	२०२५	१६७४
पारिच्छ-पुच्छमणह	२४१७		पाहुण्यं व पउत्ये	११७६	३५६०
पावं प्रकाउडातो	५३१६		पाहुणमितेसवाणे	४१७७	५२६६
पावं प्रकायभीतो	६६६७		पाहुण तेणज्जोण व	५०५६	२८०४
पावंते पत्तम्म य	४७७०	६११	पिप्पलण राहुज्येवण	६७६	
पासग-मट्टिगिसीयण	६६४		पिप्पलण विकरणाट्टा	३४३६	२८८८
पासत्थ-महाछंदे	४३५०		पियधम्मे दढधम्मे	२३६५	४८३२
"	४६७१		"	२४४६	२०५०
पासत्थमहाछंदे	४६६२		पियधम्मो दढधम्मो	१७५१	३७७४
पासत्थमादियाणं	४०५७		"	६१३१	
पासत्वादि-कुसीले	१८४०		पिय-भुत्त सुहु येरे	३७६४	
पासत्वादिगयस्सा	२८२६		पियपुत्तयेरण वा	११७६	३५५७
पासत्वादिममत्तं	४०६		पिसियासि पुच्छ महिसि	१३६	५०१८
पासत्वादी ठाणा	४६७०		पिह्तिमुग्गिणकवाहे	५६५५	
पासत्वादी पुरिसा	४६६१		पिडस्स जा विमुद्धी	६५३४	
पासत्वादी मुं हिते	५५७०	१२६२	पिडस्स पक्कणता	४५७	
पासत्थि यणसंभोदणीण	२०८६		पिडे जग्गम उप्पादणोसण	४५६	
पासत्थि पंडरज्जा	३१६८		पिडो लल्लु मल्लो	१००६	
पासत्थोसणकुसीलठाण	३८८३		पीडग-गिणसज्ज-बंधग	१४१३	४०६६
पासत्थोसण्णाणं	१८२८		पीडगमादी भासण	४०२१	
"	१८३२		पीडफलणसु पुच्छं	४०२५	
"	४६६६		पीतीसुण्णो पिसुणी	६२१२	७७५
पासवण्णुणसकूवे	५१६	२५८५	पुच्छ सहु-भीयपरिसे	४६२५	१०६२
पासवण-पडणुणसिकज	१५५५		पुच्छंतमणानसाए	३६८४	४६८६
पासवणमत्तएयं	५५५	२६११	पुच्छा कताकतेसुं	८६५	
पासवणुच्चारं वा	१८६६		पुच्छा सुद्धे मट्टा	३७४८	
"	१८६६		पुच्छाणं परिमाणं	६०६०	
पासवणुच्चारणं	१८५६		पुच्छाहीणं गहियं	५०५८	२८०३
पासवणुच्चारदीण	१८६०		पुं जा पासा गहितं	१३१२	
पासंकिणित्थि पडे	४७४६	८८८	पुट्टो जहा प्रबढो	५६०८	
पासंकी पुरिसाणं	२३८२	४८१६	पुडवि-त्तण-बत्थमातिसु	५७६५	
पासंणो पवाते	५७०५		पुडवि-दग-अगणि-आरुध	३६११	
पासिन्ता भासिन्ता	१८२३		पुडवि-ससरकल-हूरिते	२०११	

पुढवी-भाउकाग	१५५		पुरिसाण जो तु गमो	१४५७	
पुढवी-भाउकाते	१३७५	४६३६	पुरिसिखी आगमरो	५५३	
पुढवी-भोस सजोतो	५५८		पुरिसेसु भोर महिनासु	३५७०	५१५७
पुढवीमादीएसु	२३०८		पुरिसेहितो बत्थं	५०७१	२८१६
पुढवीमादीएसु	४६४८		पुरिसो आयरियादी	१०६६	
पुढवीमादी ठासा	४२५७		पुरे कम्मन्नि कयम्भी	४०६२	
पुढवीमादी पूणादिएसु	४६४७		"	४०६५	
पुणरवि दग्गे तिबिहं	५००४	६०५	"	४०६७	
पुणरवि पडिते वासे	१२४३		पुव्वसतोवर असती	१७३	
पुणम्मि एण्णयाणं	३२५८	४२८८	पुव्वगते पुरमो वा	१०८६	
पुत्तो पिता व जाइतो	१२६७		पुव्वगायकान्तियसुण	५४४७	
पुत्तो पिता व भाया	१७१४	३७३६	पुव्वगहितं च नासति	६०७१	
"	१७१६	३७४१	पुव्ववरं दाऊण	२०२६	१६७८
पुप्फग गलंगं वा	४३२८		पुव्वण्हमपट्टविते	२०४०	१६८६
पुयातीणि विमद्द	३०६१		पुव्वण्हे अवरग्गे	२०३६	१६८५
पुरकम्ममि य पुच्छा	४०५६	१८१६	पुव्वतव-मंजमा होंति	३३३२	
पुर-पच्छिमवज्जेहि	११६०	३५४१	पुव्वपयावितमुदए	१०७५	
पुरतो दुरुहणमेगते	४२५५	५६६४	पुव्वपरियासियस्स उ	६०५२	
पुरतो य पासतो पिट्ठतो	३४४६	२६०२	पुव्वपरिसाडितस्स	८०१	
पुरतो य वच्चति भिगा	३४४८	२६०१	पुव्वपवत्ते गहणां	२००८	
पुरतो वच्चति साधू	२४३८		पुव्वपविट्ठे गतरे	२४०६	
पुरतो व मममो वा	२४३७		पुव्वभणितं तु जं एत्थ	५२०१	२५५४
पुरतो वि ह जं धोयं	४०७१	१८२८	पुव्वभणितो व जयणा	५६८२	
पुराणा साधन-सम्महिट्ठि	५६७१	३०८०	पुव्वभविययेम्मेणं	३६५४	
पुराणादि पण्णवेउं	५७१८	३१३०	"	३६५५	
पुराणोसु सावतेसु	६०४६		पुव्वभवियवेरेणं	३६५४	
पुरिमजरिमाण कप्पो	३२०३		"	३६५६	
पुरिमंतरति भूयगिह	५६०२		पुव्वमभिण्णा भिण्णा	४८६४	१००३
पुरिसज्जाधो प्रमुषो	२०३७	१६८६	पुव्वं भवता भूतेसु	६२७	
पुरिस-एणुं सा एमेव	८७		पुव्वं अपासिऊणं	६७	
पुरिसम्मि इत्थिगम्मि य	२७०६		पुव्वं गुरुणि पडितेविऊण	६६२२	
पुरिसम्मि दुब्बिणोए	६२२१	७८२	पुव्वं चिय पडिसिद्धा	३७७२	
पुरिससागरिए उवस्सयम्मि	५२०३	२५५६	पुव्वं चितेयव्वं	५४६४	
पुरिसा उक्कोस-मज्झिम	७७		पुव्वं तु असंभोगी	४६१७	
पुरिसा तिबिहा संघयण	७६		पुव्वं दुष्परियाणं	३५७७	
पुरिसा य भुत्तभोगी	५३७	२६०२	पुव्वं पच्छा कम्मो	५७७७	
पुरिसाण एगस्स वि	२६७२		पुव्वं पच्छा सधुय	५७७२	
पुरिसाण जो उ गमो	२२८६		पुव्वं पच्छुद्धि	५५०८, ५४११	

"	५५१०	५५१३	पोम्पल असती समितं	२८८	
"	५५१२	५५१५	पोम्पल नैदियमादी	३४५६	
"	५५१३	५५१६	पोम्पल-मोयन-इते	१३५	
पुल्लं पच्छुद्धिं	५५०७	५५१०	पौडमयं वागमयं	१६६५	
पुल्लं पि धीर सुग्गिया	१६३३		पोत्तवज्जिएट्ठितो	४००४	३८२७
पुल्लं भगिता जतगा	५६६३	३०६१	पोगिसिगासण परिताव	४७४२	८८४
पुल्लं मीसपरपर	५६६३		पोसगमादी ठाणा	२५६६	
पुल्लं व उवकसडियं	५७१६		पोसग-संपर-एड-लंस	३७०८	
पुल्लं धुग्गाहिता कंती	३७००		पोसिता ताई कोती	३८६२	
पुल्लाउत्ता उवचुल्लसुत्ति	३०५७	१६५६		फ	
पुल्लाए भलपाणं	४१४१		फलगादीला प्रमिसलण	२८६	
पुल्लाणुपुल्लि पडमो	६६२०		फासुमफासुगे वा	२६६०	१८६२
पुल्लाणुपुल्ली दुविहा	६६१६		फासुमफासुगेण य	३००३	१६०६
पुल्लाभयप्पकोवा	१८२५		फासुग जोशिएपरितो	३४६७	२६१८
पुल्लाभयप्पकोवो	५६८८		"	५७००	"
पुल्लावरदाहिणउत्तरेहि	३६४७		फासुगपरित्तमूले	४५०	
पुल्लावरसंजुतं	३६१८	५१८५	फासुगजोशिएपरितो	२५६	३११५
पुल्लावरसंभाए	६०५४		फिडितम्मि अदरत्ते	६१५३	
पुल्लाहारोसवणं	३१६७		फिडितं च दग्गट्ठि वा	५२६५	३३७४
पुल्लाहीयं एासति	३२०७		फेडितमुद्दा तेणं	५२६७	३३४६
पुल्लि पच्छाकम्भे	४०४४			ब	
पुल्लुहिट्तं तस्स उ	५५०६	५५१२	बत्तीमलकसणघरो	३६५७	
"	५५०६	"	बत्तीसा अट्ठसयं	४२६३	
पुल्लुहिट्तं तस्सा	५५११	"	बत्तीसा सामन्ने	४५१७	
पुल्ले अवरं य पदे	१०५३		बत्तीसाई जा एकघासो	४६३६	१०७६
पुल्लोगहिते सेत्तं	४६३२	१०६६	बत्तीसादि जा लंबसो	४२७	
पुल्लोवट्ठमलद्धे	६८७		बट्टिए वि एणं	५७०१	
पुल्लोमादी कुलिमादिणसु	५६०२		बडियं चिप्पियं प्रविते	३६००	
पूअलिय सत्तं, भोदण	२३६५	४८०३	बम्ही य सुन्दरीं या	१७१६	३७६८
पूअीकम्मं दुविधं	८०४		बलवणणरुवहेतुं	४६६	
पेच्छहं तु अण्णाचारं	३४१८	२८७०	बलि अम्मकहा किड्ढा	१३२६	५५४
पेआति पातराभे	२४१८		बहि अंतजसन्निसन्निसु	३२४६	४२७१
पेसवित्तम्मि अदत्ते	३३६०	२७६१	बहि बुद्धी अदजोयण	१४७५	
पेह पमज्जण वासए	२०६	३४३६	बहिता व रिग्गमागं	५०६६	२८१४
"	५३८१	"	बह्मिषोतरड मुदो	६१०३	
पेहपमज्जणसगियं	५२६८		बहियप्पण्णकल्लवसी	२७६४	
पेज्जाअेहकता दोसा	५८१३	३६६०	बहिया वि गसेत्तुं	२३६४	४८३१
पेहुण तंदुल पण्य	१३७४	४६३८			

कहिया वि होति दोसा	२५११		कासत्ताणे पणुयं	१४१४	
बहुभाइभ्यो इतरसु	२२४५		बाहाए मंगुलीए व	१७२४	३७४६
बहुएसु एकदाणे	६४०१		बाहाहि व पाएहि व	४२०६	
बहुएसु एगदाणे	६४३०		बाहिठितपद्धितस्स तु	११६०	३५७१
बहुएहि वि मासेहि	६४११		बाहिठिया बसभेहि	३१५०	४२८१
बहुएहि जलकुडेहि	६४६६		बाहिरकरणेसु समं	५४२५	
बहुपाइसेविय सो या	६४२८		बाहिर सेतो चिम्भो	१२०१	३५८१
बहुमाणे भत्ति मइता	१४		बाहिरठवराबनिधो	६२५५	
बहुपरपदेस धम्भत्त	५५६६		बाहि भागमएपहे	४३७०	४५१३
बहुसो पुच्छिज्जंतो	२६८२	१८८४	बाहि तु बसियुकामं	२४०२	४८३६
बयं बहं च चोरं	३३८२	२७८३	बाहि दोहएवाडग	११६६	३५७६
बयं बहो रोहो वा	३७१६		बाहुस्ता गच्छस्स तु	११६२	३५४३
बंभवतीए पुरतो	५५६		बिइयपदमराण्यज्जे	३६८३	
बंभवए विराधरा	१७६४		"	३६८६	
बंभस्स वतस्स फलं	३५३१		बिइयं पडुणिविसए	४३११	
बंभस्स होतडुगुणो	४०४६		बितिए वि समोसरणे	३२६६	४२६७
बाडग पाहि-एिवेसए	१४८५		बितिए वि होति जयणा	५७१७	
बादरपूतीयं पुणु	८०६		बितिएण एतडकिच्चं	४८१६	
बायासीसं दोसे	४४५		बितिएणोलोएति	४८५२	६६२
बारग कोदव-कत्ताण	३८७६		बितियो वि य भाएसो	६५०	
बारस भद्रुग छक्का	६४६६		"	६२४३	
बारस बोइस पणुवीसधो	१३८८		बितिय गिलाणागारे	१६१६	
बारस दस नव चेव तु	६४४७		बितियततिएसु नियमा	५८८४	४०५६
बारस य चउव्वीसा	२१३२		बितियपए एगागी	३७७५	
बारसभगुलवीहा	७१०		बितियपए कामगए	३०७१	
बारसमे उइसे	५६६८		बितियपदज्जाभिते वा	१३०७	४६०७
बारसविहमि वि तवे	४२		बितियपद तेण सावय	६०००	५६६३
बालभरणेय य पुणो	३८११		"	६०१३	
बासजसहु-बुइइ-अतरत	३२६३	४२६४	बितियपददोष्णि वि बहू	१११०	
बासं पंठित उभयं	४८		बितियपदयणुज्जमे	५६६	
बाला बुइइ सहा	११२८		"	६१७	
बाला मंठा किहु	३५४५		"	७६१	
बालादि परिच्छत्ता	१६४६	१६०४	"	८७४	
"	१६४८		"	१४६४	
बाले बुइइ कीवे	३७४४		"	१५२३	
बाले बुइइ एणुसे य	३५०६		"	१५४३	
बाले सुत्ते भूती	३२०८		"	१७८४	
बावत्तरि पि तहू चेव	२१३७		"	१८१७	
बावीसमासुपुवि	३६७४		"	१८२२	
			"	१८२७	

वित्तियपदमण्यप्युक्ते

"	१६६६
"	२००३
"	२०१६
"	२१५८
"	२१७१
"	२१७७
"	२१८०
"	२१८५
"	२१८७
"	२१८९
"	२१९५
"	२२२८
"	२२५५
"	२२६०
"	२२६८
"	२२७३
"	२२७५
"	२२७७
"	२२८०
"	२२८२
"	२२८५
"	२२८९
"	२२९५
"	२२९७
"	२३००
"	२३०२
"	२३०५
"	२३०८
"	२३११
"	२३१३
"	२३१५
"	२३२०
"	२३२२
"	२३२६
"	२३२८
"	२३३०
"	२३३२
"	२३३५
"	२३४०
"	२३४६

वित्तियपदमण्यप्युक्ते

"	२४३४
"	२४४४
"	२४४५
"	२४५०
"	२४६२
"	२४७०
"	२६२७
"	२७७१
"	३३०६
"	३३१३
"	३३३६
"	३३६६
"	३५०२
"	३७७६
"	३८०८
"	३८८५
"	४०२५
"	४०४१
"	४१२५
"	४३२७
"	४३६७
"	४३६८
"	४६२५
"	४६५०
"	४६६५
"	४६६६
"	४६५१
"	४६५५
"	५०६५
"	५४५१
"	५४५०
"	५७८५
"	५६०३
"	५६०८
"	५६०६
"	५६११
"	५६१३
"	५६१५
"	५६१७
"	५६२६

वितियपदमरणपञ्चमे	५६८४	वितियपद होञ्जमणं	११३७
"	५६९०	वितियपद मरणवट्टो	३११६
"	५६९५	वितियपदं प्रदाणे	११०२
"	६२५७	वितियपदं भावरिए	२७३६
वितियपदमराणावे	१५६६	वितियपदं उट्टाहे	८८५
वितियपदमराणाभोगा	१६६२	वितियपदं मम्ममाणे	५६५३
"	२५२०	वितियपदं गेलण्णे	६१२
वितियपदमराणाभोगे	१०७८	"	१४६६
"	१२०६	"	१५२८
"	१४६८	"	१५६१
"	१६६५	"	१६०६
"	१७६५	"	१६४१
वितियपदमणिउत्ते वा	६२८	"	२४७४
"	६३७	"	२४८७
"	६४३	"	३२८१
"	६४८	"	३२८८
"	६६०	"	३३५२
"	६६६	"	३४२०
"	६६७	"	३४७६
"	७०७	"	३६६४
"	७१६	"	४०४५
"	७२४	"	५७६६
"	१६२८	"	६०३४
"	४०३०	"	६०४१
वितियपदमधासण्ड	१३१३	"	६०४५
वितियपदमसति वीहे	२२०	"	६०५१
वितियपदमविमयी	१०८८	"	६२३१
वितियपदममविमो	५४६७	५४०१	वितियपदं तन्धेव य
"	५५३८		वितियपदं तु गिलाणे
"	५५४७		वितियपदं तेगिच्छं
वितियपदवुज्झणजतगा	५१३		वितियपदं दोन्वे वा
वितियपद वृद्ध-उभामित	६४२		वितियपदं परलिगे
वितियपद वृद्धज्झामिय	६४७		"
वितियपद बुद्धमुद्धोरणे	१६३४		वितियपदं पारंशिय
वितियपद समुच्छेदे	६२६५		वितियपदं संवधी
वितियपद साहुबंदरा	२८८७		वितियपदं सामण्णं
वितियपद सेहरोघण	१८८२		वितियपदे आसिवादी
वितियपद सेहसाहारणे	५७८०		वितियपदे आहारो
वितियपद होज्ज भमहू	८०२		

त्रितियपदे कालपते	३०६६	१६६८	वीयपय तेण सावय	६००६	५६६३
त्रितियपदे जावोग्यहो	६७४		वीयं जांगागाढे	१६२०	
त्रितियपदे जो तु परं	४७२		वीयं तु ग्रपण्ड	४२६१	
त्रितियपदे दोणिए वि बह	११२०		वीयादि सुहुम धट्टण	२४८	
त्रितियपदे वसचीए	१२८५		वीयारभूमि मसती	१०६३	
त्रितियपदे वाधातो	१६५०		वीसीयठवराण तू	६४८२	
त्रितियपदे वासाम्	८४८		वीहावेती भिक्खू	३३१८	
त्रितियपदे सागारे	१५५४		वेदियमाइणसु	२८७	
त्रितियपदे सेहादी	२४४		वेरगकहा विसयारण-	३६१४	
त्रितियपय तेण सावय	४२५४	५६६३	बोडिय सिवभूइओ	५६२०	
त्रितियपयमगाभोगे	३२७५		बोरीए दिट्ठितं	४१७८	५२६७
त्रितियमि रयग देवय	५१५८		बोहण पडिमोहायण	३१८३	
"	५३७८		बोहिंग-मेच्छादिभए	५७२५	३१३७
त्रितियमी दिवसमिम	५८०	४६३३			
त्रितियं भपटुपंते	५४८५	५३६०	भगवं ! अणुगहंता	१०००	
त्रितियं उप्पाएतुं	२८५६	५५६२	भगधरे कुड्डं सु य	६३८०	
त्रितियं गिहि ओमण्णा	३२२१		भगइ य एाहं वेज्जो	४४३३	
त्रितियं गुहवणसा	२८६७		भगइ य दिट्ठ गियत्ते	३११	६०८०
त्रितियं च बुड्ढमुट्ठांगे य	१६२७		भगति रहे जइ एवं	२६५६	
त्रितियं पढमे ततिण	२६५१		भगमागा भाएवेती	५५५८	५४५७
त्रितियं पढमे ततिण	४०३७		भगितो य हं दे गेण्हह	१७६०	
त्रितियं पभुगिज्जिसण	१२४०		भगिया तु अणुधाय	८१६	
"	१२८०		भण्णति सज्जमसज्जं	४१५७	५२७६
त्रितियं पट्ठगिज्जिसण	१२६८		भण्णति जहा तु कोली	३३३३	
त्रितियाऽऽगाढे सागारियादि	६०५६		भत्तट्ठणमालोए	२३६८	४८३५
"	६०६२		भत्तट्ठितप्पाहाडा	२४००	४८३७
"	६०६६		भत्तपरिण गिलारी	४०१६	३८४२
"	६१६४		"	१२२८	
"	६१७६		भत्तमदारममहंते	५१६६	२४८६
त्रितियातो पढमपुब्बा	४१४२	५२६४	भत्तस्स व पाणस्स व	६६२	६०६६
त्रितियादेसे भिक्खू	३४१४	२८६६	"	५८६३	"
बिदू य छिय परिणय	६१३६		भत्तं वा पाणं वा	१८६३	५६०७
विय तिय चउरो	२६०		भत्ताति-संकिसे	२६८६	१८८८
"	३७७		भत्तामासे लेवे	८६७	
बिले मूलं मुखया वा	३४०१		भत्ते पाणे ओवण	३५४०	
वीएनु जो उ गमो	४६६७		भत्ते पाणे विस्सामणे	३४५१	२६०४
वीएहि कंदमादी	५२४२	३३२४	भत्ते पाणे सयसामणे	३५५८	
"	५३६५	"	भत्ते पणवम निगूहणा	२७०३	५०७६
			भत्तेण व पाणेण व	३४५४	२६०७

भ

भक्तोवधिवोन्धेयं	२४८३	भावित करण सहामो	५३५१
भक्तोवधिसंभोए	१८००	भावितकुलारिण पविसति	१४७०
भक्तोवहिवोन्धेयं	२५३०	भावितकुलेषु गह्वरं	४८६५ १०३२
भक्तवधयो भवत्	५६८१	भावे उक्तोस-पणीत	११६४ ३५५५
भक्तो तण्णीसाए	२४८२	भावे पाउगस्ता	८८८
भदेतरु-मगुया	४७५३	भावे पुण कोषादी	८६२
भदेतरा तु दोसा	१४४१	भावेण य दम्भेण य	४७२० ८५६
भदेसु रायपिडं	२५३८	भावो तु एण्णए सि	३२६२ ४२६२
भदो उगमदोते	१४५३	भासचवरो चउडा	६२०४ ७५३
भदो लभिएस्साए	२५२६	भासरो संपातिवहो	३१७८
भदो पुण सगह्वरं	१३७६	भा-समि-रितु-सूरमासा	६२८७
भदो सव्वं वितरति	२५७७	भिक्षवचरस्तज्जस वि	४०६६ १८५२
भमुहाधो दंतसोवण	१५१५	भिक्षणसोसो भिक्षु	६२७५
भयउत्तरपगडीए	३३२१	भिक्ष-विचार-विहारे	१५२४
भयकेलभ्याऽद्वारो	४१६४	भिक्षस्त व वसधीय व	२३७६ ४८१३
भयणपदाए चउण्ह	२३४६	भिक्षं चिय हिंता	५०१६ ६१६
भयणपदाए चउण्ह	१६३८	भिक्षं पि य परिहायति	३७४ ४६५७
"	२४३६	"	२२४७ "
भत्तायगमादीसुं	२२६६	भिक्षातिगतो रोगी	४४३४
भवपञ्चदया सीसा	४२६६	भिक्षाति-णिग्णसुं	६३१७
भववीरियं गुणवीरियं	४७	भिक्षातिवियारगते	४१५५ ५२७७
भवेज्ज जइ भावातो	३८४६	भिक्षादी वण्णते	४३६६
भंडी वहिलग काए	१४८६	भिक्षुगमाधि उवासण	३२३
भंडी-वहिलग-भरवाहिएसु	५६६६	भिक्षुणो धत्तिकमते	३४१६
भागुण्यमाणहणो	५८२७	भिक्षुदणसमारंभे	४४८६
माणस्स कप्पकरणं	११०६	भिक्षुवसहीसु जह्वेव	३२८६
"	२३६६	भिक्षुसरवणे तावस	५७३२
भायणदेसा एतो	४५६१	भिक्षुसरिस्सी तु गरिणी	८७२ ६१११
भायणुकप्पपरिण्णा	२३५६	भिक्षुस्स तत्तिगहरो	२६२२ ५८२०
भारेण वेयणाए	४१६६	भिक्षुस्स दोहि सहुगा	२८५५ ५५८८
भारेण वेयणाते	५८२६	भिक्षुगा जहि देते	५५२४ ५४२६
भारो भव परितावण	३२८०	भिक्षु जह्वणयम्भी	५६५०
भारो भव परिवावण	६७०	भिक्षे परिहायते	४४६४
भारो विलविमभेत्तं	५६७	भिक्षु-रहस्से य नरे	६७०२
भावज्जुवार सपदं	४७३०	भिक्षस्स पक्खलता	४६१८ १०५५
भावम्मि उ पाडिबद्धे	५२७	भिक्षं गण्णजुत्तं	६७३
"	५२८	"	५८१०
भावंमि ठायमाणो	५४०	भिक्षं समतिकंतो	१४४६
भावंमि रागदोसा	३८८	भिक्षाणि देह भेत्तूण	४६२८ १०६५
भावामं पि य दुविहं	४७१४		

भिक्षासति वेलातिक्कमे	४६२६	१०६६	भोयणभाप्रणमिदुं	११६६	३५७६
भिक्षो व ऊकायिते वा	७३०		भोयणो वा कस्सेते	४२६४	
"	७४८				
"	७७६		मइलकुचेलेमम्मगिए	३०१६	१६२२
"	६८५		मइलं च मइलियं वा	४६८१	
भिक्षो व ऊकायिते वा	७३५		मइले अणुमइहेणुं	२२७६	
"	४५४७		मक्कडसंताणा पुण	४२६२	
मिसं तु होइ अयं	४६६६		मगदंतियपुष्पाइ	४८३६	६७६
मिन्ने व ऊकायिते वा	७७४		मगहा कोसंकीया	५७३३	३९६२
मिदंडो वा वि सुचं	६२८१		मग्गंति थेरियाधो	५०८३	२८२८
मीतावालो रतीचम्मे	५४५४	५७१४	मग्गो खलु सगइपहो	४३०७	
मुत्तमुत्ताण तहिं	२५६१		मज्जणम-गंधपुष्कोवयार	३६५८	
मुत्तभोगी पुरा ओ वि	३८८१		"	३६५३	
मुत्तस्स सनीकरणं	४०१२	३८३५	मज्जणगतो मुहं की	४२१५	५६२५
मुत्तेयर दोस-कुच्छिते	५३१८	२३६२	मज्जणगदीच्छिते	३०५०	१६४६
मुजइ ण व ति सेहो	३२८४		मज्जण-ण्हाणदुत्तसेसु	५३२४	२३६८
मुज्जल-उज्ज-पदाणं	२१०२		मज्जण-निसेजइअक्खा	६२१८	७७६
मुज्जण वज्जा अण्ये	२११३		मज्जति व सिच्चति व	५३४३	२४१७
मुज्जसु पक्खवक्कातं	३०३	६०७१	मज्जादाणं ठक्खा	१६२८	
मुज्जो वितकम्मट्टिता	४४२१		मज्ज पठो ऐसं मुहं	८७७	
मुज्जु मा व समणा	११३१		मज्जमिणमण्णपारुं	२७०२	५०७५
मुज्जाओ कमइगादिमु	३२२		मज्जम्मि य तदणीओ	२४०३	
मुज्जिसु मए मडि	३७६१		मज्जं दोण्हंतगलो	२४३१	
भूतणमादी अस्सो	३६६३		मज्जा य वितिय-सतिया	८२	
भूतणगह्ति खंतं	१३६३	४६२७	मज्जिमवीसं लहुणो	३५२४	
भूमि-धर-तफणारादि	१०३३		मज्जेम मेण्हकए	६८२	
भूमिमिसाए फलण	३६०६		मज्जे व देउलादी	५४०८	३४७२
भूतणभासासट्ठे	५४२	२६०७	मणउम्ममप्राहारादीया	१८३४	
भूतण-विषट्ठणारिण य	२३३६		मण उट्ठियपदभेदे	२५४१	
भेद अइयासमेहे	३८५		मण उट्ठियपयभेदे	२५४६	
भेदो य मासकणे	१३१८	५४६	मण एसणाए सुद्धा	२६०१	५७६८
भोइत-उत्तर-उत्तर	१३६४	४६२८	मण परमोहिजिणं वा	६५७२	
भोइयकुलसेविआओ	२१५२		मण-वयण-कायमुत्तो	३१७६	
भोइय-महयरमाओ	२४५८	२०६१	मणिबंधाओ पवत्ता	५६८०	
भोइयमाइविरोधे	२४०८		मणुणं भोयणुज्जायं	१११८	
भोइयमादीणुत्तनां	१३७३	४६३७	मनिमं अरौणि दीहाउओ	४३७८	
भोगत्थिणो विगने	५१४८	२४८८	मनिजिनफालितअफोसित	४४६१	
भोत्तण य आगमण	३४०७	२८५६	मत्तमअगइण मुदय	५८८६	४०६५

मद्वक्करणं शाणं	६२२२	७८३	मात पिता पुत्रसंयुक्तौ	१०४१	
मधुरा मधु प्रागम	३२००		माता पिता य मगिराणी	५०७८	२८२५
मध सीस कुलिच्छ—	३८६		माता मगिराणी धूया	५६२८	
मयमातिवच्छमं पि व	४४१६		"	५६३०	
मदएहि य दिदुतो	४८७३	१०१२	माति-समुत्था जाती	१२०	
महत्तमाणी उ गुरु	६५१६		मानुष्माणं हियए	२२४६	
"	६५२३		मा सुज रायपिबं	२६०६	
मरेज सह विज्जाए	६२३०		मायामोसमदत्तं	१२४६	
मनेण वत्थं बहुणा उ वत्थ	५८१७	३६६४	"	१२७६	
महजणजाणता पुण	४७८१	६२२	"	१६४६	
महतरअणुमहयरए	११६४	३५७४	"	१६५८	
महतरपगले बहुपक्खिते	६०६७		"	१६६१	
महदणे मण्यवणे व वत्थे	५८२०	३६६७	मायावी अनुयारो	१०४५	
महितासहावो सरवसभेमो	३५६७	५१४४	मालवतेणा पडिता	१३३५	५६१
महिमा तु गम्भमासे	६०८२		मालोहं पि तिबिहं	५६४६	
महिमा य भिष्णवासे	६०७६		मा वद एवं एककसि	६४१२	
महिमादि छेत्तजाते	३२५		मासचउमासिण्हि	६५१०	
मनुषीमगलम्मि तिभिण व	१५६३		मास जुयल हरिमुप्पसी	६५४१	
मंगल-बुद्धिपवसण	२००६		मासगुरुगादि छल्लहु	६०५	
मंगलममंगलच्छा	२५६४		"	२२०२	
मंगलममंगले या	२००५		मामगुहं चउगुरुया	२२१६	
मंगलममंगले वा	२०१०		मामगुहं वज्जिता	१२६२	
"	२५६८		मायाइ अमं चइए	६५३७	
मंडलमम्मि वि चरितो	३५१४		मायादी जा गुरुया	१०६८	
मंतेणमिसं पुण रायवल्लभे	१३६०	४६२४	"	११००	
मंसक्खाया पारद्विगुमया	२५५३		मासादी गद्विते	६६४१	
मंसच्छवि भक्खण्णु	२५५२		मा सीएज्ज पडिच्छा	३७१	४६५४
मंसाई पगरणा खलु	३४७६		मामे पक्खे दमराताए	२०३५	१६८४
मंसाण व मच्छाण व	३४८१		मामो दोप्पि य सुद्धा	६६३०	
मंसोवचया भेदो	५७३		मासो य भिण्णसामो	१४३०	
माउणामो तिबिहो	२१६६		मामो लहुधो गुरुधो	३१२	१५५६
मा किर पच्छाकम्मं	१८५२		"	८६७	"
मा एं परो हरिस्सति	४६३५		"	३२७६	"
मा एहि सयं दाहं	२३६३		"	६६६३	"
माणुम्माणपमाणा	४२६४		मिच्छन्तं मज्जेज्जा	५०५३	२७६६
माणुम्माणपेममणं	५६७७		मिच्छन्तथिरोकरणं	३८०७	
माणुस्सगं पि तिबिहं	५१६६	२५१६	"	४४२२	
माणुस्सयं अनुद्धा	६१०६		"	६२६०	

मिच्छता-बहुप-वारण	१३१६	५४४	मूलगुण " "	६२०८	७६६
मिच्छता सोपव संका	५०५२	२७६७	मूलगुण बह्व्यसगडे	६५३३	
मिच्छता संघति	३७६५	६००५	मूलगुण पठमकाया	६३१८	
मिच्छतो उद्गाही	५६३७	३०४३	मूलगुणो उलारगुणे	३३०६	
"	५६२०	६१७०	मूलगुणो छट्टाणा	८६	
मिच्छतो संकादी	४७८८	६२६	मूलगुणो तिष्ठिण उ	३१३१	८७४३
मिच्छापविबली	२६४८		मूलतिचारोहितो	६५२७	
मिच्छाकल्पव्यवसायी	५७२८		मूलव्यवतिचारः	६५२८	
मिहितान् सन्धिधरे	५६००		मूलं छेदो छगुरु	३६६१	
मीसाधो मोदस्य	६३०२		मूलं तु पडिककते	२८०६	
मुद्ग-उबयी-मककोडगा	२६१		मूलं दसमु मनुके तु	४७४	
मुद्गमादी-रागरम	२८३		मूलं सएकमसु	५२७०	
मुक्कपुरा संपागडकिन्वे	४३७१	४५४४	"	५२८१	
मुक्को व मोदमो वा	३६६२		मूलाविवेकमो खलु	६२६१	
मुक्को व मोदतो वा	३७१७		मूलतर पडिसेवरा	६३०३	
"	३६६६		मूलतर चतुभंगो	२०५१	५८७
मुक्को व मोदतो वा	३६८०		मूलं रु द भकण्णा	६०१६	
मुच्छातिरित वंशमे	६३२१		मूसादि महाकायं	६१०४	
मुच्छा बिसूरा वा	१७३३		मेच्छमयधोसण्णिवे	६०७६	
मुल्लिमुद्वयंतवासी	३६६४		मेहा बारण इदिय	२५५४	
मुदिते मुदभिसिती	२४६८	६३८२	मेहानि शीयवसी	४३६४	
मुय एणिव्यसे राट्टुद्विते	१२४१		मेहुलाभावो तन्भावसेवरो	२२१८	
मुरियादी आणए	५१३७	२४८७	मेहुलासंकमसंके	५०५६	२८०१
मुद्-एयण-बलण-वंता	८६६		मेहुणं पि य तिविधं	३५२	
मुहपोसिय-रयहरणे	१४२५		मेहुणं पि य तिविहं	३६०	
मुहकोरण सभण्डा	४६६६		मोक्खपसाहणहेलं	४१५६	५२८१
मुहणंतमस गहणे	३६८५	४६६०	मोत्तु गिलाणकिन्धं	३६३४	
मुहपोति-एणसेज्जाए	२१८८		मोत्तु पुराण-भावित—	३१७४	
मुहमादि-बीणिमा खलु	२०१३		मोत्तुण एव एकं	५६२४	
मुदं च धरेमाणे	६२६८		मोत्तुण रावरि पुब्बं	३७३८	
मूदंगमानि-खड्दते	२१८६		मोत्तुण वेदमूदं	३७०२	
मूगा विंसति शिति व	५४००	३४५५	मोयगभतमलद्धं	१३७	५०१६
मूदेमु सम्महो	२१७४		मोरणिक्कियदीलार	४३१६	
मूदो य दिसज्जयणे	६१३७		मोरी नउली बिराली	५६०४	
मूलगिहमसंबदा	२४६०		मोल्लजुलं पुण तिविधं	६५७	
मूलगुण उत्तरगुणा	६५३०		मोह-तिमिच्छा समणं	१६८३	३७०७
मूलगुण उत्तरगुणे	३३०२		मोहोदय मणुवसमे	२२२६	
"	४३६६		"	२२५५	

र		राजा दोषा मोहा	६१७५
रत्नम-पिमाय-लेगा-शङ्खु	३३१७	रागेग व दोसेण व	२७३१
रत्नला-भूतलहेउं	१७०	"	२७५६
रत्नलज्जति वा पंथी	३३७४	रागेतर शुक्लहुगा	१३२
रत्नमादि अस्त्रिण्णं	६३०१	रातिगिधो उस्सारे	५०२० ६२०
रत्नू वेहो बंधो	४२६६	रातिणिमगारवेणं	६२५१
रत्ने देसे नामे	२८३७	रातिणिम सारिषतरणं	२११६
रत्ने काँकलामाच्छा	३८५६	रातो व दिवसतो वा	२६३७ ५८३३
रत्नो मोरोहातिषु	३६६३	रायगिहे गुणसिसए	५५६८
रत्नो उवन्नहणिया	२५५६	रायहुहु-मए वा	१६१३
रत्नो दुबारमादी	२५२६	रायहुहुमएसू	१६०७
रत्नो पत्तेणं वा	२५८१	"	३६०६
रत्नो महाभित्ते	२५६७	रायमरणम्मि कुल-वर	१५५७
रत्नो य इत्थिया ललु	५१६५	राया इव तित्त्वकरो	६०७७
रत्तुक्कवाधो इत्थी	६११०	राया उ जहि उमिते	२५५७
रत्तणिज्जमिक्क गाभो	५२५४	राया कुं भू सण्णे	३१५८
रत्त-लोत्तमादिषु महो	४७७१	रायाऽमच्च पुरोहिण	६२६६
रत्तगाइ धनुक्कोनं	१०३१	रायाऽमच्च सेट्ठी	१७३५ ३७५७
रत्तलाणपलब्धे	२८१	राया रावसुदी वा	१५६०
रत्तलाणपमाणं	५७६१	"	१५७२
रत्तमाइ मच्छि विच्छ य	४१४	"	१५७६
रत्तहरसीगोत्तेणं	३२२८	राया रादागो वा	३७६८
रत्तगंधा तहि सुत्ता	४६१३	रायादि-गाहणद्वारा	२५६६
रत्तगिद्धो य वसीए	५५२६	रायित्ति.....गाहा	६४६५
रत्तगेहि अथिक्काए	१११६	राहे उ अट्टमासे	२३७५
रत्तगेही पडिबट्टे	४७८६	रिक्कम्म वा वि दोमो	१६८६ ३७१०
रत्ताभमवि दुगांभि	१११३	रोयति अणुवन्नोमो	२५४६
रत्तवीरपुरं नगरं	५६०६	रोधादमोधि रत्ति	५६४२ ३०४८
रत्त-हृत्ति-जाण-पुरगे	३०१४	रत्तविलगो रत्तिता	३६२६
रत्तण किमि वाणिज्जं	४६६२	रत्तं बोच्छिप्पे वा	२४०१ ४८३८
"	४६८४	रत्तस्सेव मरिसं	२६२६
राईण दोण्ह भंडग	३३८८	रत्तं भाभरणमिहि	२५६३
राईभत्तं चउध्विहे	४१२	"	५२०४ २५५७
रायणि संजमिधण	६०६	रत्तं भाभरणविही	५०६६ ०५५१
रायहोसविउलो	६६६६	रत्ते रत्तसहणे	३५३
रायहोसविमुक्को	५६५८	रोगेग व वाहीण व	३६४५
रायहोमालुगत	३६३	रोसेरा पडिणिवेसेग वा	५४२२
रायहोमुप्पत्ती	१२७	राहे उ अट्टमासे	२६७५ ४८१२

ल

लक्ष्मणाद्वि उक्थायपङ्कः	३५००
लज्जाए गोरवेरा व	६८१
लक्षणगहे य लक्षते	४२३४
लक्ष्मण भगवत्कथे	५०१४
लक्ष्मण एवे इतरे	३२४५
लक्ष्मण नामुसत	१७१८
लक्ष्मण ए एवेदेती	३३३
लक्ष्मी तीरित कज्ज	१३८४
लक्ष्मो उ उवेहाए	२७८०
लक्ष्मो गुरुमो मासो	२६६६
लक्ष्मो य दोमु दोमु म	१०६
लक्ष्मो य दोमु य	१०८
लक्ष्मो य होइ मासो	३७२
लक्ष्मो लक्ष्मा गुरुमा	१८२०
लक्ष्मो लक्ष्मा गुरुमा	६६३
लक्ष्मो लक्ष्मा दुपडादिएसु	६१६
लक्ष्मा भगुमाहम्मी	४७५८
"	५२६६
"	५२८०
लक्ष्मा तीमु परिते	४६०५
लक्ष्मा य तिरालवे	४७३५
लक्ष्मा य दोमु दोमु य	४७२२
लक्ष्म गुरु लक्ष्मा गुरुमा	५६४
लक्ष्मो गुरुमो गुरुमो	१०७
लक्ष्मो य होइ मासो	२२४६
लक्ष्मो लक्ष्मा गुरुमा	३२०
लक्ष्मो बज्जभेदे	१८
लक्ष्माह्मादीजणयं	६३६१
लक्ष्मादी मावारिते	८६६
लक्ष्मा लक्ष्मो मुदो	६६३३
लाउदास्यपाते	६८५
लाउदास्यपादे	७२६
"	६७५
ला भालाभपरिच्छा	६७८
"	६८४
लाभाभाम-मुह-दुस्स	२६८७
लाभाभाममुहदुह	४२६१
लाभित नितो पुटो	४५१६

लाला तथा विते वा

३४७५

लिक्खंत-गिज्जमारो

२२६७

लिगट्ट भिक्ख सीते

१६७७

२६८१

लिगस्यमादिपाणं

३०१३

१६१७

लिगस्यस्स तु वज्जो

११५८

३५३६

लिगस्येसु धक्कयं

५०२८

६२७

लिगम्मि य जउमंगो

२२३४

लियेण कालियाए

४४६

लियेण नेव किडिया

२२३२

लियेण पिसित्तगहणे

४३७

लियेण लिगिणीए

१६६०

लिरधारणं दवेणं

१८७४

लिबि भासा मत्थेण व

२२६२

लुट्ठस्सज्जभंतरमो

२६६१

१८२३

लेयकडे वोसट्टे

५८३५

४०११

लेवाडमराभोगा

४२०

लेवाडहत्थच्छिक्केण

४६०६

लेदेहि तीहि प्रति

८०६

लोइय-लोउत्तरियं

६६४

लोइयववहारेसु

४३५६

लोउत्तरम्मि ठवित्ता

१६२२

लोए वि होति गरहा

६०५५

लोण हवइ दुगुंछा

४५४३

लोकगमुगहकारीसु

४४२१

लोगच्छेरयमूयं

५७३७

३२६८

लोगविट्ठं दुपरिच्चयो

३०६३

१६६२

लोमे जह माता ऊ

६२६४

लोमे वि य पारेवाओ

५५२५

५४२७

लोसं व गिलागट्टा

१७४

लोमे एसगुघातो

२४०५

६३८६

लोमे य आभिभोगे

२५२३

लोयस्सज्जमुगहकरा

५०७२

२८१७

लोळति मही य भूत्तो

४३८७

लोळती छम-मुत्तं

१७४७

३७७०

लोवए पवए जोहे

३६२७

वइगा अयोग-योगी

१६०६

व

वहमाति भिक्खु भावित	४५५				२६४३	५८३६
वहमासु व पस्तीसु व	२३६४	४८०२	वत्थञ्ज पउरा जायगा		३०६७	१६६६
वक्कंतजोणि तिच्छड	३०५६	१६५५	वत्थं छिदिरसामिं सि		६८०	
वक्कंतजोणि वडित	४८५८	६६८	वत्थं वा पादं वा		८७८	
वक्कैहि य सत्थेहि य	४१२१		वत्थं वा पायं वा		८५८	
वक्कसि एाहं वक्के	३०४	६०७२	वत्थं सिम्बित्तामी		६७१	
वक्कह एणं दग्धं	३१६		वत्थादिमपत्तंतो		८५४	
वक्कंतस्स य भेदा	४७३३	६०८७	वत्थिणिरोहे प्रभिवहुमाणे		३५६२	
वक्कंतो वि य दुविहो	५४८१	५३८६	वत्थुं वियाणिऊणं		२६३७	
वक्कामि वक्कमाणे	२८४८		त्थेण व पाएण वं		१६८१	२६८५
वक्कल्ले असितमुं डो	४६०		वत्थाई ठाणा लल्लु		४११६	
वट्ठंति तु समुद्वेसो	३०६	६०७४	वत्थादी जा विह लोहवादि		५६६६	
वट्ठंति वपरितंती	३८६६		वमण-विरेगादीहि		२३१७	
वट्ठं समचउरंसं	६६३	४०२२	वमण-विरेयराणी		६५६०	
"	५८४६	"	वमणं विरेयणं वा		४३२६	
वडपायवउम्भूलण	५६५		"		४३३०	
वरागमपाटण कुट्टिय	२६६		वय-मांड-मुल्ल-त्तसुय		४३८१	
वण्णद्ध-वण्णकसिणं	६१६	३८५१	वयसंयवसंतोणं		१०५२	
वण्णसंडसरे जल थल	२७८६	२७०७	वरतर मए सि भणितो		२६३४	
वण्णउज्ज साट्ठं रयणा	२६६४		वरिसधरट्ठारादी		२६०३	
वण्णयं महिलाभूतं	३६६६		वरिसा गिमासु रीयति		३३४८	
वण्णया ए संघरंती	३२२६	४२५१	वरिसज्ज मा हु छणो		१२६४	
वण्णमविक्खणकरणे	४६३८		वल्लयं वल्लयायममाणो		३८०५	
वण्णविक्खणासं पुण	४६३३		वसधी ए एरिसा लल्लु		१०१८	
वण्ण-त्तर-स्व-भेदा	४३३१		वसधी य भसंज्जाए		१७०७	३७२६
वण्णेरा य मंथेए य	१११२		वसधी य भसंज्जा		६३२	
वतियादि मंथमादी	४४७७		वसधीपूतियं पुण		८११	
वत्तणा संघणा वेव	६३६१		वसधा भीहेसु मिगेसु		३४५०	२६०३
वत्तम्मि जो गमो लल्लु	२७५४	५४६४	वसभे छागुगगाई		२६२३	
"	५५६०	"	वसही आषाकम्मं		२६६५	
वत्तवधो उ भगीधो	५५८३	५४८३	वसहीए दोसेणं		३७६	४६५६
"	७७४५	"	वसही कुल्लभताए		६२५	
वत्तस्स वि दाधब्बो	५४८२	५३८८	वसहीरक्खगवग्गा		५२५५	२३३६
वत्ते लल्लु गीयरथे	२७३७	५४७५	वसिकरणा-मुत्तगग्गा		१५२६	
"	५५७५	"	वसुमं ति व वसिमं ति व		५४२०	
वत्थरथा वसमाणे	६०२८		वहणं तु गिलागग्गा		२०००	
वत्थम्मि एणिगित्तमी	५०५४	२७६८	वहवण्ण उद्दवणं		३६५८	
वत्थञ्जजयणपत्ता	२६३६		"		३६७८	
			"		३६६७	

बंका उ रा साहूती	२६८२	५३५८	वासावासविहारे	३१२४	२७३५
बंकासमिदमागो	१६		वासासु प्रपडिसाही	१२४४	
बंदिय पणमिय बंजलि	२१०३		वासासु व तिभिए विसा	६१४८	
बंसम कडलोकरपण	२०४७	५८३	वासासु वि गेण्होती	३२५६	४२८६
बाउल्लादीकरणे	१६१		वासासु दगवीराय	६३०	
बाए पराजिभो सो	५६०६		बासेरा खुदीपूरेरा	५६६५	३०७३
बाएतस परजित	६२३२		बाहि-गिदाग-बिकारे	३०२४	१६२७
बाभोवएहि राई	३१८८		विउसग जोग संघाडए	५०५१	२७६६
बाबाते भसिवाती	१०६३		विउसगो जाणएगुहा	२८७७	
बाबाते ततिभो सि	६१२६		"	६५६२	
बाबातो सज्जए	२५०७		विकडुममगणे दीहं	४८५४	६६४
बागंतरिय जहणं	५११७	२४६८	विगतिमगुहा भु जति	१५६५	
बात खनु बात कंटग	५६४७	३०५५	विगति विगतिभोभो	१६१२	
बातातवपरितावरण	३०१५	१६१८	विगति विगतीभोभो	३१६८	
बादपरायणकुविया	५५२७		विगतीए गहगमि वि	३१७०	
बाई जण्य वितंड	०१३०		विगतीकथारुबधो	३८६६	
बादो जण्य वितंडा	२१२६		विगयम्म कोउहल्ले	५२६४	३३४३
बापण पडिपुच्छण	२०६४		विगहगते य सिद्धे	३६२०	
बायाए गुमोकारो	४३७२	४५४५	विगहमगुण्यवेसिय	३५६६	
बायाए हथेहि	२७८४	२७०५	विच्चाभेलण सुते	२७७६	२६६५
बायामवगुणादी	४६४		विच्छु य सण्य भूसग	५६०३	
बायाववेहि भूमति	३३६४		विजज-दवियदुए	५३४७	२४२१
बारगसारणि अण्णावएस	३२६		विजजस य पुफ्फावी	३०३१	
बारत्तग पम्पज्जा	५८६०	४०६६	विज्जा-भोरससबली	२८६०	५३६३
बारम य चउम्मीमा	२१३४		विज्जा-तवप्पभाव	४४४०	
बारैइ एस एयं	२७६५	२७१७	विज्जा-मंत-गिभिले	५५७३	५४७३
बारै तेरो तह सावग	५६४३	३०४६	विज्जाए मंतेरा व	४४५५	
बारारे काल धरो	३७२३		विज्जादसती भोयादि	१२७०	४६३४
बास उडु भालंदे	२१२०		विज्जादीहि गवेसरा	१३६८	४६३२
"	२१२१		विज्जा मंत-परुवरण	४३०४	
बास-सिसिरेसु बातो	२४१		"	४४५६	
बासत्तागुअसरिया	६०८४		विगिउत्तमंड भंडग	६४०५	
बास न उवरमती	३१६०		वितिगिच्छ प्रभसंध	२६३१	५८२८
बासाक्षेत्तलंभे	३१४६		वित्थारायामेणं	६४०	३८८३
बासाणं एगतरं	१२७८		"	१८६४	
बासाण एस कण्यो	३२४१	४२६६	विंहु कुच्छित व भण्यति	२५	
बासाविसु वा ठाभोसि	३७६३		विदंसग छावग लेवरो य	२०२६	१६७५
बासा पवरणगहरो	११६७		विधिपरिहरणे नूढो	२०६०	

विभुवर्ण गंत कुसादी	५०६		वीयारे वहि गुहगा	२४५६	२०६४
विभुलकुले धर्षि बालो	३५३८		वीरल्लसउरि विष्ठाभियं	१६७२	३६६६
विभुलं च भण्णपाणं	१८६०		वीरवरस्स भगवतो	४२१८	५६८८
विप्परिणतम्मि भावे	१२५७		वीसज्जिता य तेणं	५७५६	३२८७
विप्परिणमेव सण्णो	३७३३		वीसज्जुत्तरस मह गुरु	६५४३	
विप्परिणामणसेहे	२७१३		वीसत्पादी दोसा	३७७८	
विमलीकतम्भु चक्खु	१०४६		वीसत्था य मिसागा	१६७०	३६६४
विम्हावणा तु दुविधा	३३३७		वीसरसहक्वते	६६५६	
वियडसो खक्काए	६०३३		वीसं तु आउलेहा	४६६३	४०४५
वियडसस्स उ वाहि	६०४०		"	५८७०	"
वियडं गिण्हइ वियरति	१२१		वीसं वीसं मंडी	६५२१	
विप्पसम्मिधारण वाते	३७५८		वीसाए धम्मामं	६४३३	
विरए य अविरए वा	४०५५		वीसाए तू वीसं	६४७५	
विरत्तिहासं चरणं	४७६४	६३४	वीसा दो वाससया	५६१४	
विरहासंभे मूल—	३५८		वीसा य सयं पणयानीमा	६५८३	
विरहे उ मठायंतं	२६५७		वीसुं उवस्सते वा	२८४२	५५७६
विरुक्कवादि ठाणा	४१३६		वीसुं दिण्णे पुच्छा	६४०७	
विस्सज्जए य जायइ	३४६५	२६१५	वीसुं भूमो राया	१७३८	३७६०
वित्तियंति आरुभंते	४६४६		वुग्गह्वरंइयमादी	६०६४	
विबरीय दग्गह्वरो	२६१		वुग्गह्वरकंताणं	५४६४	
वित्तकुंभ सेय मंते	२०४		वुत्तं दग्गावातं	३६६	
वित्तगरमादी लोए	१८०६		वुत्तं वत्थगह्वरां	३२७६	
वित्तमा आरोवणाए	६४६२		वुत्तिरातियागणातो	५४५१	
वित्तय कलहेतरं वा	२२५७		वुत्ति संविग्गो भगितां	५४२१	
विभुघ्रावणमुक्कवणं	८४५		वेउज्जियसद्धी वा	२५८७	
विहमद्वानं भगितं	५६३४		वेकच्छिता तु पट्टो	१४०५	४०८६
विहरण वायण भावानगाग	४३३६		वेज्जस्स पुक्कमणियं	४६६८	
विहि-प्रविहीभिण्णस्मी	४६०२	१०३६	वेज्जस्स व दग्गस्स व	२०७४	
विहिण्णित्तादि	५४०१		वेज्जं ए वेव पुच्छह	३००४	
विहिण्णित्तातो तु जत्तिनु	५३६		वेज्जेद्वग एगदुगादि	४८६०	१०२८
विहिबंघो वि ए कप्पति	७४०		वेज्जे पुच्छण जयगा	४८८६	
विहिभिण्णस्मि ए कप्पति	४६२०	१०५७	वेत्तिपगह्वरिक्खेवे	२६८	
विहिसुत्ते जो उ गमो	३१२३		वेयावचस्सट्ठा	५६६	
वीमंसा पडिणीता	५१४६	२४६६	वेयावचचे भगलो	३७७३	
वीमंसा पडिणीयट्ठवा	५१४४	२४६४	वेयावचचे तिबिहे	६६०५	
वीयण समोदाराम	५०७४		वेरगकरं जं ना वि	५४६	२६१२
वीयार-वीयरे वेरसंजुमो	३६१३	५१८०	वेरगकहा विसयाग	३६१४	५१८१
वीयारभूमि असतो	१०६३		वेरमित्तो विवित्तो य	३५००	
वीयारभूमि-दोसा	१०६२				

वेरं जस्य उ रज्जे	३३६०	२७६०	सगणम्मि पंच राईदियाइ	२८२०	५७५३
वेलातिवक्रमपसा	१०६०		"	२८२२	५७५५
वेलुमयो वेरामयो	८३०		सगणिच्चया स-सिस्सिणि	२४३६	
वेलुमयी लोहमयी	७१८		सगदेस परदेस विदेसे	३६५३	
वेवग्गि पंगु वड्ढं	३६४६		सय-पायम्मि य रातो	१५५१	
वेहाणस घोहाणे	३०६०	१६८८	सयला-सगलाइन्ने	४६४४	१०८१
वेहाणण मण्णे	४५३१		सगुरुकुल सदेसे वा	३४२८	२८८०
वोच्चये वडलहुया	३०१०	१६१३	सग्गहणिकुड एव	६०६३	
वोच्चिण्णमड्ढे	४२२		सग्गाम-परग्गामे	१४८४	
वोच्चिण्णम्मि मड्ढे	३८००		"	३६६०	
वोच्चेदे तस्सेव उ	६०५८		"	४३६७	
वोसट्ठकायमसिदे	४२६६		"	४०४३	६४२
"	४२७१		सग्गामे सउवस्सए	२६६६	१८७०
"	४२७४		सच्चित्त-गत-परंपरे य	१५०	
"	४२७७		सच्चित्तोरा उ भुवणे	१८२	
वोसट्ठ पि हु कप्पति	४६६६		सच्चित्तो लहुमादी	१८१	
"	५८७३		सच्चित्तसत्तककारप	२६४५	
स			सच्चित्तसच्चित्तमीसो	२७७४	५७२७
मइ लाभम्मि अणियता	१३४१		सच्चित्तमीस भगणी	२१३	
सउरण-पाय-सरिच्छा	१६३३		सच्चित्तमीसएमु	५६५८	
सउणी उक्केडवेदो	३५६४		सच्चित्तमीसगे वा	१६६६	
सयरीए एणपण्णा	६४७८		सच्चित्त-सकलमूलं	१८६६	
सकडकसपेहणं बाल—	२३३७		सच्चित्त-सकलमूले	१६०६	
सकड इह समभोम्मे	४८५७		"	१६१६	
सकल-प्पमाण-वण्णा	६१३		"	१६१७	
स किमवि कानूणधवा	२०८३		"	१६१६	
सकि भंत्रणम्मि लहुभो	३६८७		सच्चित्तं ग्रन्थितं	३६५७	
सककमहादीएमु	१६०८		"	४६६२	
सककयमत्ताविदू	१७		सच्चित्तं वा ग्रंथं	४७०१	
सककर-धय-गुलमीया	५६८४	३०६३	सच्चित्तं वा हरति ए	४६६२	५४८०
सकका भपसत्थाणं	३३२८		सच्चित्तं वा हरति ए	४५८०	"
सकखेने जइ ए लम्भति	४१७२		सच्चित्तं वा हरति ए	३३६	
सकखेत्तो परखेत्ते	३२६०	४२६०	सच्चित्तं वा हरति ए	३७८	
सकखेत्तो सउवस्सए	१२०५		"	६२६७	
सग-जवगादि विरूवा	५७२७		सच्चित्तं अच्चित्तं	३६६४	
सगणम्मि एतिय पुच्छा	६५८६		"	३६५२	
"	२८७२		सच्चित्तं अच्चित्तं	४५६६	

सम्बद्ध परिष्कृता	४५५६	संणी सण्याता वा	१६६४
सम्बद्धेण उ एकं	५७१४	संणीसु असंणीसु	५२२७
सम्बद्धेण य गमनं	५७११	संणीसु पदमवगमे	५२१६
सम्बद्धेण सयं वा	५७१२	संने करेति पुत्तं	२१७२
सजियपतिट्टिए लहुओ	४७६६	सति कावदं एतुं	१६५६
सज्जगाहणातीतं	३३६१	सति कासफेइणे	१६७०
सज्जाएण खु लिण्णो	१६६३	सति कोउएण दोण्ह वि	५१०६
सज्जाए पल्लिमो	१२२२	सति दो तिसिय अमादी	१०५३
सज्जाए वाचाओ	१६७६	सनुसा सचेसणा वि य	१५८४
सज्जायट्ठा दप्पेण	३२५६	सत्तचउक्का उग्घाइयाण	६५४५
सज्जायमचित्ता	६१२६	"	६५५८
सज्जायमातिएहि	२८१३	सत्त तु वासासु भवे	४२४४
सज्जायवज्जमसिबे	६०७३	सत्त दिवसे ठवेत्ता	५०७५
सज्जाय काऊणं	१२७१	"	५०८४
सज्जा-लेवण-सिब्बण	४१६३	सत्त य मासा उग्घाडयाण	६५५७
सट्ठाणारुग केई	६६२६	सत्तट्ठगमुक्कोमो	३५११
सट्ठाणे अणुकां	१६७५	सत्तट्ठि एक्कसत्तं	६२८८
सट्ठित्त-पडिताण करणं	२०२१	सत्तण्हं वसणाणं	४७६८
"	२०५४	सत्तरत्तं तवो होइ	२७४८
सट्ठि गिही अण्णतित्थी	१४४३	सत्तरत्तं तवो होति	५५८६
सट्ठी गिह् अण्णतित्थी	१०७४	"	६२४६
सट्ठेहि वा वि भसिता	१२०३	"	६२४६
सणमाई बागविही	७६१	सत्तसया चौयावा	६२८६
सणसत्तरसा अण्णा	४६५६	सत्तं अदीणता खलु	५६८१
सणिसेज्जो व गतो पुण	२६२६	सत्तारस पण्णारस	६५५५
सण्यातमा वि उज्जुत्तरोग	२६७८	सत्तोया दिट्ठीओ	५६२३
सण्यातमिहं अण्णो	१२६३	सत्थपणए य मुद्धे	५६७२
सण्यातगे वि तथ चेत्र	१२६१	सत्थपरिणगा उक्कमे	५३६४
सण्याततेहि एति	१३३६	सत्थपरिणगा उक्कमा	५२४१
सण्यातपल्लि सोहिण	५८५	सत्थवाहादि ठाणा	२६०२
सण्यातसंखडोसू	१२१३	सत्थहताऽऽमति	१७२
सण्यायण भागमरो	३४१०	सत्थं च सत्थवाह	५६६१
सण्या सिगगमादी	२४७	सत्थाण अट्ठमुत्तो	३५३६
सण्हिअसिण्णचयातो	२४६२	सत्थाए पुज्जपिता	३५५६
सण्हित्तं जह सजिय	२२०६	सत्थाहट्ठगगुणिता	५६७६
सण्हिय-अहियासु	२२२५	सत्थं ति पंचभेदा	५६६२
सण्हियं जह सजिय	२२१२	सत्थं वि वक्कमाणं	१६७०
"	२२२०	सट्ठिमं हत्थवत्थादिएहि	१७७६
		सट्ठहणा खलु पुलं	२१५५

सहं च हेउसरयं	५५२०	५४३१	समगुणोसु विदेसं	१८४४	
सहं वा मोऊणं	५१६		समगुणं समगि सावग	५०२७	६२६
सहाइ इदियत्योवधोग-	२५१८		समगुणो ह य भगणतो	४०८७	१८४४
सहं पुण धारेउं	५६६७		समगो उ वणे व भगंदले	६१६८	
सहं से सिस्सिणि सज्जं	२२३३		समत ति होति चरणं	६१६३	
सभ्रातिवतो भद्राणिभो	२७०१		समवायाई तु पदा	२४७८	
मद्रासुत्तं सागारियं	५०६६		समवायादि ठाणा	४१३८	
सभि सरकम्मिभो वा	३६१६	५१८३	समाणे बुड्डवासी	१०५४	
सभिहितारो वडारो	६१४२		सभि-विचिणिवादीणं	२६१३	५८१०
मपरवकमे जो उ गमो	३६३६		समितीण य गुत्तीण य	३६	
मपरिकम्मा सेज्जा	२०४५		समिती पयारुवा	३८	
सपरिगहं अपरिगहं	१८६७		समितीसु य गुत्तीसु य	४०	
सपरिगहेतरो वि य	४३१४		समितो नियमा गुत्तो	३७	४४५१
मपरिपक्खो विसयवुट्ठो	३६६२		समुच्छंति तहि वा	३४७४	
मपडियरो परिणो	४०६		समुदाणं पारियाण व	४५६७	
सबित्तिज्ज व मुंजति	५७१५	३१२७	समुदाणं पंथो वा	४२४६	५६५६
सबीयम्मि धंतो भूलं	२२४०		समुदाणि श्रोयणो	३०५४	१६५३
सवेट्ठप्पमुहे वा	३४७७		सम्भज्जण वरिसीयण	२०३१	१६८१
सभमाकुज्जाणिगहा	२४२७		सम्ममसम्भा किरिया	४४१४	
सभए सरभेदादी	५६८७	३०६७	सम्मेयर मम्म दुहा	४७५१	८६३
समगं तु ग्रहोणेम्	३७७०		सम्मेतो घडा भोज्जं	३४८३	
समगुणविदुस्सज्जणो	५७३४	३२६६	सयकरो चउलहुवा	६३६	३८७१
समगुणधिकारो पडिणीय	६३३४		सयगुणसहस्सपानं	३१६७	
समगुणभज्जावित्तुं	५७५७	३२८८	सयरो तस्स सरिसधो	१०२७	
समगुण संजतीहि	५६१६		सयमेव कोइ साहवि	३५६४	५१४१
समगुणं इत्थीसुं	५१६८		सयमेव छेदगम्मी	१६६७	
समगुणं जो उ गमो	३७८७		सयमेव दिट्ठपादी	१७५७	३७८०
समगुण समगि सपक्खो	५६६८	३०७७	सयमेव द भवहारो	२७५८	
समगि मगुणो छेदो	२१००		सयसिक्खगम्भि विट्ठे	१६२५	
समगो उ देति उभयं	२१०६		सयं चैव चिरं वासो	३८४५	
समगो जणे पविट्ठे	१७३०		सरतिमिगा वा विष्णय	६०१७	
समगुणगुणमिदं	६३२४		सरिकण्णे सरिच्छेदे	२१४७	६४४५
समगुणमगुणो वा	२१२४		सरिकण्णे सरिच्छेदे	२१४८	६४४६
समगुण-संजतीणं	२०८८		सरिसावगहदो	२८१४	५७८०
समगुणगम विधीए	२१०१		सरीरमुज्झयं जेण	३६३०	
समगुणा परिसंकी	४१०४	१८६३	सरीरे उवकरणम्मि य	३६३३	
समगुणो मगुणो	२०७४		सविकारो मोहुदीरण	२२६०	
समगुणोतर गिहि-	१६७६	८६८३	सविगार घमज्झत्ये	७०१४	

सविमारी मोहूदीरणा	२२६३		सखेसि तेसि घाणा	११६१	३५४२
"	२२६६		सखेसि संजयाणं	२६७६	
"	२२६६		सखेसि भविसिद्धा	६६५५	
सखत्थ पुच्छणिज्जो	११६५	३५७५	सखेसु वि गहिणसु	१२७२	
सखत्थ वि मायरिभो	६०२३	४३४६	सस-एलामाद्	२६४	
सखत्थ वि सट्ठाणं	६६३८		ससणिग्ग दुहाकम्मे	१४८	
"	६६३६		ससणिग्ग बीयघट्टे	६५७६	
सखपदाणाभोगा	३६३		ससणिग्ग-सुहुम	४३३	
सखमसखरतणिभो	२०६		ससणिग्गे उदउल्ले	१८६	
सखम्मि उ चउलहुगा	२०३३	१६८०	ससत्तकसहत्थ पंथे	१४६	
सखम्मि तु सुयणाणे	३३०४		ससहायभक्तेण	५५०१	५४०५
सखत्स छट्ठाणि विगिचरणा	२६१६	५८१३	ससिणिग्गमादि ग्रहियं	६५८०	
सखत्स पुच्छणिज्जा	२४२२		ससिणिग्गमादि सिण्हो-	१७७	
सखत्स वि कातव्वं	५५२०	५४२४	सहजेणामंतूण व	२००२	
सखसंहुण्यभावातो	३६१६		सहमा व पमादेणं	१०६	
सखं नेयं चउहा	४८२१	६६२	सहमुण्यम्मि जरे	४८०७	६४८
सखं पि य तं दुविहं	४७०७		सहिगादी वत्था ललु	२२६८	
सखं भोच्चा कोई	३८६५		संकपुट्टियपदभिदरो	७५४०	
सखं भोच्चा कीती	३८६४		संकप्पे पदभिदरा	२५६	५८६७
सखगिया उ सेज्जा	१२१७		संरूपो संरंभो	१८१३	
सखाभो ग्रज्जातो	३६१८		संकम-करो य तथा	२०५३	
सखाणमाइयाणं	३४८६		संकम जूथे अचले	५३३८	३४१३
सखाणि वंचभो तट्ठिणं	४०७८	१८३५	संकमथले य ग्गो थने	४२३०	५६४०
सखासि ठवरणाणं	६४७४		संकमतो अण्णगणं	२८१२	
"	६४८३		संकलदीने वप्पी	५४०६	३४७०
सखाहिं व लद्धीहि	३६१६		संका सामारहे	१८७२	
सखे एणपदोमादिणसु	३३२६		संकुचिन तरुण आतप्पमाण	५७६५	३६७०
सखे वा गीयथा	५०१८	६१८	संस-तिणिमागुलुचंदणाइ	१०३२	
सखे वि खलु गिहत्था	४६६०		संसडिगमरो विनिनो	३४०२	२८५४
"	४६८२		संसडिमभिधारेता	२६४१	५८३७
सखे वि तत्थ रुंभति	१३८३		संसुण्णतो तवस्सो	४१६५	
सखे वि दिट्ठुक्खे	१२७०		संसेज्जजीविता खलु	४०३६	
सखे वि पदे सेहो	२४५		सखे सिगे करतल	२३७	
सखे वि य पच्छिस्ता	६४६६		संगामदुग्गपहवगा	३६२६	
सखे वि लोहयादा	४०४३		संगामे साहमिनो	३६२८	
सखे समणा समणी	२६७४	५३५०	संघट्टणा तु वाने	१४६३	
सखे सखद्धाते	३६१५		संघट्टणा य घट्टणा	४२२१	५६३१
सखेसि एवचरणं	५४२८		संघट्टणा य मियगा	४२२७	५६३७

संघट्टणादिषु	२१५		संजमठाणां कंडगाण	३८२३	
संघट्टे मासादी	१८५		संजमतो छक्काया	१०५६	
संघयणधित्तुत्तो	३६३६		संजमदेहविषड	४१८	
संघयणं जह सगड	६५१६		संजम-महातसायस्त	१६८०	३७०४
संघयणोए तु जुत्तो	८३		संजमविषयकरे वा	१५६१	
संघयणो संवण्णा	७८		"	१५७३	
संघस्त पुरिम-पच्छिम	२६६७	५३४३	"	१५८०	
संघस्सायरियस्स	४८५		संजम-विराहणाए	५६३६	३०४५
संघं समुद्दिस्ता	२६६८	५३४४	संजयगणे गिहिंगणे	२८५१	५५८४
संघाडए पविट्टे	५०६१	२८१०	संजय-गिहि-सद्धभयभट्टगा	३३७१	
संघाडगा उ जाव तु	६५६७		संजयगुरु तदहिवो	२८५२	
"	६५६८		संजयपदोसगहवति	१०८७	
संघाडगा उ जाव	१८८८		संजयपरे गिहियरे	६८८	
संघाडगा उ जी वा	२८८३		संजयभट्टगमुक्के	३३७२	२७७३
संघाडगाओ जाव उ	२८८२	५५६६	संजयभट्टा तेणा	४५१४	
संघ-डगागुवट्टा	३६४३		संजोए रणमादी	६००५	
संघाडगा य परिसाडगा	१८०४		संजोगविट्टपाडी	२६७७	१८७६
संघाडमादिकयणे	५८३	४६३६	संजोय-विधि-विभारे	२०६३	
संघाड दाऊण	२०८०		संज्ञागतम्मि कत्तहो	६३८५	
संघाडिओ चउरो	४०२६		संज्ञागतम्मि रविगत	६३८४	
संघाडेगो ठवणा	४१७३	५२६२	संज्ञा राती भणित्ता	२४२६	
संघातणा य पडिसाडगा	१८०२		संठावण त्तिपयुता	२०५२	
संघाटिएतरो वा	१४०८	४०६२	संठियम्मि भवे लामो	५८४७	४०२३
संघइयमसंघते	१६५१	१६०६	संठाससिद्धेण हिमाइ एति	५७६३	३६६८
संघरिते वि ह्म दोसा	३७८१		संठाहिमादी पडमो	४५४	
संघावणा तु तस्सा	५६५		संतभुल्लणासला जणु	५४२६	
संजतगतीए गवणं	१०६६		संतविभवा जति तव	१७१७	३७५६
संजतगिए गिहिंगिए	६७८		संतम्मि य वलविरिए	६३२२	
संजत-भट्टा गिहि-भट्टगा	१६७१		संतासंतसतीए	७३३	
संजतिगमणे गुरुगा	२४५२		"	७७२	
संजतिवणे गुरुवा	२०६१		"	६८६	
संजतिवणे वेव	२०७८		"	७२८	
संजमभिमिमुहुस्स वि	१६८१	३७०५	"	७३१	
संजमसाविबिरावणा	११५		"	७३६	
संजमसेसपुपाणं	३२०५		"	७४१	
संजमसेसपुपा वा	८२६		"	७४२	
संजमकाज्जाते	६०७५		"	७४४	
संजम-सिद्धताजोगा	४८६६	१०३५	"	७४५	
संजमजीविमहेउ	३६५	४६४५	"	७४६	

"	७४६	मंभोदयमणसंभोदयग	६०३५	
"	७७५	मंभोगपञ्चगता	२०६६	
"	७७७	मंभोगमणसंभोदय	२१५५	
"	७८०	मंभोगा अवि हु तिहि	५५५४	५४५३
"	७८८	मंरंभ मणेरुं तू	१८११	
"	६८३	मंनवमणी वि अहं	१७७३	३७६२
"	६६०	मंनहितं पि य तिविधं	१७२०	३७४२
"	६६२	मंनेह पंच भागे	२६०६	
"	६६७	मंनच्छरं गणी वा	३१०२	२०००
मंती कु पू य अरो	२५६१	मंनच्छरं न रुहुं	२८०७	५७७३
संयडमसंयडे वा	२८८८	मंनच्छराणि तिणिण उ	५५१४	५४१७
संयडिभो संयरेतो	२६१०	मंनच्छरा तिनि उ	३१०१	१६६६
संयरगमि असुदं	१६५०	मंनट्टिणमयाणं	२३७३	४८१०
संयरमाणमजाणंत	१०७६	मंनट्टिमि तु जतगा	२३६३	४८०१
संयारगहि य तहि	५२५६	संवादादयुरागो	१७६२	
संयार कुसंवाद्यो	१७४४	संवासे जे दोसा	२४७६	
संयारगमितारो	४०१४	संवासे संभोगो	२१४१	
संयारविष्णुमासे	१३१४	संवाहसमभंगण	५६७	
संयारविष्णुमासो	१३५४	संविगं शितियवासी	३०६४	१६६२
संयारं देहंत	१२५३	संविगं-भाविताणं	१६४६	५६०७
संयारुत्तरपट्टो	५८०३	संविगं-भावितेसुं	१६८७	
"	१२३०	संविगमसंविगं	४७४४	८८६
संयारेगमखेगे	१३०५	संविगमुत्तरं खलु	३८३६	
संयारो दिट्ठो ल य	१२५२	संविगममोतत्थ	५५८५	५४८५
संदिहं य पाउगं	२५८०	संविगमगीयत्थं	२७४७	"
संपत्ति-रक्षुप्पती	२१५४	संविगमगुणाते	१६५८	१६१६
संपत्तीइ वि असतो	४१००	संविगमणसंभोदयहि	२८२४	
संपत्ती व विवत्ती	४८०८	संविगमणसंभोदयहि	२०७७	
संपादमे असंपादमे य	५३२७	संविगमसंविगं	४५८७	
संपातिमादिघातो	२४३	"	४५६४	
"	५६२३	"	३००६	१६११
संपातिमे वि एवं	५३३०	"	६२६६	
सफाणितम्म गहणं	१६४३	संविगमसंविगं	४२८२	
सफासमगुप्पतो	३६४०	संविगमसंजनीयो	३०६२	१६६०
संबंधभाविणसुं	३२४६	संविगं गोपत्था	३०६१	१६८६
संबंधवज्जित्ती	१७६६	संविगं समगुणा	६२४५	
संवाहणा पधोवण	१४६५	संविगं सगाये	४५८८	
संविच्छेणं व अच्छह	१३२०	संविगं दगुमट्ठो	४५८६	

संविगासंविगो	३००८		सागारिणादि पलियकं—	३४६५	
संविगोतरभाविथ	१६८६	२६६०	सागारिसंज्ञताणं	१३२१	५४६
संविगोहसुसुद्धो	४५११		साडज्जसंगश उज्जलगा	३०२२	
संविगो सेज्जायर	३०६६	१६६४	साणादीमकसएता	४१५	
संसज्जमेसु कुम्भति	४१५२	५२७४	सागुप्यगभिकसुद्धा	३०७७	१६७६
संसदुमसंसदु	४११६	१८६८	सातिज्जसु रज्जसिरि	१५६२	
संसत्तपंथ-भरो	२५८		साङ्ग जिणपडिकुद्धो	४८४७	
संसत्तपोगलादी	२८६		साधम्मत्त वेधम्मत्त	२१५३	
संसत्ताति न मुञ्जति	३४०६	२८५७	साधम्मियत्थलीसु	३४५	
संसत्तेऽपरिभोगो	२६६		साधम्मिया य तिविधा	३३६	
संसरोसु तु भत्तादिएसु	२६७		साधारण-भरोगो	२१२३	
संसयकरणां संका	२४		साधारणे विरेतं	४३५७	
संसारवदुषडितो	४६५		साधु उवासमाशो	३५०३	
संसाहगस्स सोतु	५४६३	५३६८	"	२४६८	
संभोहण संसमणं	४४३६		सा पुगा जहण लक्कोस	६६४७	
साएताग्गाऽभोग्गा	३२४७		साभावि गितिय कप्पति	१००४	
सागवहादावावो	१२३		सामावितं च उच्चियं	१००३	
सागणिण शिक्खित्तो	२०५		साभावितो तिष्ठिण दिगा	६०८७	
सागणिया तु सेज्जा	५३५२		साभावियगिस्साए	१३२८	
सागारिअदिण्णोसु व	४०१		सा ममाति साधम्मी	१७८३	३८०४
सागारिउ त्त को पुण	११३८		सामण्णे जे पुंनिव	१०७१	
सागारिपुत्त-भाडण	११६६	३५४७	सामत्थ एव धपुसो	३६८	४६४६
सागारिय-प्रधिकरणे	२४७१		सामादय पारेतूल	४६६३	
सागारिय तुरियमसभोगतो	१६४		"	४६८५	
सागारिय-सज्जाए	६५५		सामादयमादय	३३०३	
सागारिय-संतिथं तं	१६५७		सामा तु दिवा छाया	४३१६	
सागारियणिक्खेवो	५०६८	२४५०	सामागारि वितहं	४३४६	
सागारियगिस्साए	१२११		सामित-करण-प्रधिकरण	६०	
"	३५६०		सामिते करणम्मि य	३१४२	
सागारियमल्लुदए	४४७८		सामो चार भडा वा	४५०५	
सागारियसम्भातग	१२१०		सारोरे पि य दुविहं	६०६६	
सागारियसंदिद्धे	११४५	३५२६	सारवि-सावग-मिहिमे	५८६	
सागारियस्स गधं	३५६८		सारुवि सिद्धपुत्तेण वा	४६०२	
सागारिवस्स एामा	११४०	३५२१	सारेऊण य कवयं	३८१६	
सागारियं धपुच्छिय	१२०६		सारेहिति सीयंत	४५८४	
सागारियं गिरवसति	३५८४	५१६०	सावति एववि रोमं	२४८६	
सागारिया उ सेज्जा	५०६७		सालंबो सावज्जं	४७५	
सागारियादिकहण	६०६८		साला तु ग्रहे विषयडा	२४२८	

साहित्यादि उक्तिस्रो	१२१६		सिण्याई सिकसंतो	३७१४	
साक्षी-वय-गुल-गोरस	२६६२	५३४१	सिरिपुत्तं छत्रुयो	५६०५	
सावयसिभ्याद्वारो	२३६६	३८३६	सिंहिरिणि लंभाऽऽलोयरा	३६८७	४६६२
सावततेरा दुविधा	३२६४		सिक्का वीथी पट्टा	५३१२	२३८६
सावत्वी उत्तमपुर	५६२२		सिक्कति ते उवहि वा	४२२०	५६३०
सावय भयपट्टकडे	५६६४		सीमोदगभोईण	४११५	
सावय-तेरा-परदे	५६६५	३१०४	सीतं पउरिक्कलता	१७५	
सावय तेराभया वा	२५५		सीताणे जं दहदं	६११२	
सावय-भय धारणति वा	२२६	३४५८	संतितरफासु चउहा	५२३०	
सावयतेरो उभयं	४२२४	५६३४	सोतेरा व उसिरोरा व	१६३६	
सावयभए धारणति व	४४०३	३४५८	सीतोदगभावितं भविगते	५८६३	
सावेक्खो ति व काउं	६६५७		सीतोदगम्मि सुवमति	५६७०	
सासवणाले छंदरां	३६८३	४६८८	सीतोदगवियडेणं	२२७४	
सासवणाले मुहणंतए	३६८२		सीतोदे उसिणोदे	५२२६	३४२०
साहम्मि धणहम्मि य	३६४२		सीतोदे जो उ गमो	२२७६	
साहम्मि य उदं सो	४५२५		सीसगणम्मि विसोसो	२१०८	
साहम्मि य वच्छलं	२६		सीसगता वि ए दुक्खं	४२१६	५६२६
साहम्मियत्थलासति	३४६		सीसपक्खि पाटुव	६३४०	
साहारणस्स भावा	५७०३		सीसं उरो य उवरं	५६३	
साहारणं तु पढमे	५५०३	५४०७	सीसोक्कपरा हत्थे	२७२४	४७३६
साहारणे वि एणं	५६४६		सीसोक्कपिय गरहा	२७२१	४७३२
नाहिकरणे य दुविहो	२७७३		सीहगुहं वग्गुहं	५५६५	५४६४
साहिति य पियभम्मा	१६४३		सीहाऽऽसीविस भग्गो	५६८	
साहुं उवासमारो	४६७४		सुध भग्गवरो भग्गीधो	५५८२	५३८७
साहुण वेह एणं	५७४६	३२८०	सुक्कोदणो समतिमा	५६८६	३०६६
साहुणं वसहीए	५३०१	३३८०	सुक्कोल भोदणस्सा	५८६२	४०६८
सिक्कककरणं दुविधं	६३६		सुट्टं कयं धाभरणं	५१०८	२४६०
सिक्कययं धागमणं	४१८०	५२६६	सुट्टं कया भह पडिमा	५१४३	२४६३
सिग्गुजुगती भासो	६३११		सुट्टं लसिते भीते	३६६	
सिज्जादिणु उभयं	४०७		"	२२४४	
सिद्धम्मि रा संनिग्गह	२८५५	५५७६	सुणमारो वि ए सुणिमो	२३६७	४८३४
सिरोहो पलवी होइ	३८२१		सुणं कुट्टं वजुवा	१३१६	
सिग्गा सीसग हेडोवर	१८०		सुणो एतं पक्खिण	१२४२	
सित्तिवणरा पडिसामण	४४५३		सुणो व उत्तममो	४०६६	
सिद्धत्थगजालेण व	४००६	३८२६	सुतसुह दुक्खे वेरो	२१४०	
सिद्धत्थग पुणं वा	३४४४	२८६७	सुतट्ठि सक्कसो	६२८८	
सिप्पसिलोमासीहि	४२७८		सुतणिवाभो इत्थं	३८८६	
सिप्पसिलोमे चट्ठावए	४२७६		सुतणिवाभो इत्थं	२०६०	
			सुतणिवाभो सक्कित--	५६५६	

मुत्तलिवातो उक्कोसयम्मि	५६५२		मुद्धतवो मज्झाणं	६५६१	
मुत्तलिवातो एरुं	१८८६		मुद्धपडिच्छले सङ्गुग	६३६३	
" "	१६६८		मुद्धममुद्धं चरणं	५४३३	
" "	२२२७		मुद्धं एसित्तु ठावेति	३६३१	
" "	३७४३		मुद्धं पडिच्छिऊणं	६३४२	
" ओहे	२०२३		मुद्धासंभे मणीते	६६६०	
" कसिले	६६६		मुद्धे सङ्गी इच्छकार	२८७२	१८७४
" एतिए	१०२०		मुद्धो सङ्गुग तिषु दुषु	६०६	
" एतियमा	१०५०		मुप्पे य तालवेटे	२३६	
" तण्णेषु	१२२४		मुबहहि वि मासेहि	६५२०	
" वितिए	६१०		"	६५२४	
" सयत्तकमित्तं	६२३		मुग्गी पदमणीहो	१११७	
मुत्तत्थ मपडिबद्धं	३१०६		मुयमभिगमणायविही	४४८७	
मुत्तत्थतदुभयविसारयम्मि	३३८४	२७८५	मुय-चरणे दुहा चम्भो	२८६५	
मुत्तत्थतदुभयाहं	६२२५	७८६	मुयचम्भो सत्तु दुविहो	३३००	
मुत्तत्थतदुभयाणं	६१८१		मुयनाएम्मि य मत्तो	६१७१	
"	६६७३		मुयवत्तो वयावत्तो	२७४०	
मुत्तत्थावत्तएसीधियासु	५२१		मुत्तसा ममूद्धदिट्ठि	३२	
मुत्तत्थे धकहेता	३७५४		मुवह य मज्जर भूतो	५३०५	३३८७
मुत्तत्थे पत्तिमंभो	१६६६		मुवति मुवत्तस्स मुवं	५३०४	३३८४
"	४२१६	५६२६	मुहपडिबोहा शिहा	१३३	२४००
मुत्तनिवातो सम्मासा	१४८६		"	५३२६	"
मुत्तमवी रज्जुमयी	६५१	२३७४	मुहमवि धावेदंती	३३३०	
मुत्तम्मि एालबद्धा	५५२२		मुहमिण्णया मुहमोहया	५१५५	२५२७
मुत्तम्मि होति भयमा	६२१६	७७८	"	५१७७	२५४४
मुत्तवत्तो वयवत्तो	५५७८		"	५१६०	२५२७
मुत्तमुहदुक्खे सेत्ते	५५२१		मुहसाहणं पि कज्जं	४८०३	६४४
मुत्तस्स व धत्थस्स व	५४५६		मुहसील्लेणमहिते	३३१	
मुत्तस्स विषंवादी	५७३६		मुहिणो व तस्स कीरिय-	१५६३	
मुत्तं कडडति वेद्दो	२११५		मुहियावो ति य मत्तो	२६८५	१८८७
मुत्तं तु कारगिणं	४८६२		मुहुवं च बादरं वा	३३०	
मुत्तं पट्टण्ण गहिते	२६१५		मुहुवो य बादरो व	३८०	
मुत्तं व मत्तं व दुवे वि कावं	१२३६		मुहुवो य बादरो वा	२६७	
मुत्तंमि एते सङ्गुग	२१		मुत्तिग्गति मत्तुवावो	४६७५	
मुत्ताभावविरोधत्त	२११४		"	४६६६	
मुत्ते बहा शिबंभो	३२०४		मुत्तीमादीमानं	६६२	
मुद्धतवे परिहारिय	६६०४		"	६६५	
मुद्धतवो मज्झाणं	२८७६		मुत्तममममकसा	४४६६	

सुयग-मत्तग-कुलाई	१६१८		मेहादी पङ्कितो	३८१	
"	५७६०		महुम्भामगभिन्नुलि	३५७	
सुयिमण्डाए तु	६६८		सो आग्या भगवत्स	७५१	
सुयि अविधीए तु	६७५		"	७६३	
सूरत्यमणम्मि तु णिम्मताण	११५७	३५३८	"	८३६	
सूरुगते जिणाय	१४२४	१६६१	"	११०६	
सूरे अणुगयम्मि उ	२८६०	५७८६	"	१११५	
सूवोदणस्स भरिउ	६६२५		"	१४६६	
सेएरा कवलमाती	३६३२		"	१४६७	
सेज्जा-कप्प-विहिण्णू	१२४८		"	१५५२	
सेज्जा-संचारदुगं	१६६०		"	१६११	
सेज्जातर-रातपिडे	३४६६		"	१८२४	
सेज्जातराण धम्मं	१७२६	३७४८	"	१८२६	
सेज्जातरो पभू वा	११४४	३५२५	"	१८६१	
सेज्जायरकप्पट्टी	५५४८	५४४६	"	२१६६	
सेज्जायरकुलनिस्सित	४३४४		"	२१६३	
सेज्जायरमादि सएज्जिभा	५५४३		"	२२४८	
सेज्जायरस्स पिढो	३४८५		"	२४४०	
सेज्जासंघारो ऊ	१३०१		"	२८६२	
सेज्जोवहि आहारे	२१०७		"	३११५	
"	२११०		"	४०३४	
सेहंशुलि वगुडावे	४४५१		"	४३०६	
सेहुग रुते पिजिय	१६६२	२६६६	सोभाती एव सोता	३६६०	
सेणादी गम्भिहीती	२३५७	४७६६	सोउ हिङ्गण-कषणं	१२५८	
सेणाहिव मोइ महयर	६०६५		सोऊण जो गिलाणं	२६६६	१८७१
मेयविपोलासाढे	५५६६		सोऊण य घोसणय	४७८४	६२५
सेय वा जल्ल वा	१५२१		सोऊण व पासित्ता	१७६६	३७८८
सेलउट्टि-यभदारुपलया	३१६१		सोऊण वा गिलाणं	२६७०	१८७१
मेवंतो तु अकिच्चं	४७०		"	२६७३	१८७५
मेसा उ जहासली	६१२२		"	२६७५	१८७७
सेसेसु तु सन्भाव	२७२०	४७३१	सोऊण च गिलाणि	१७४६	१८७२
सेसेसु फामुएणं	२०५०		सो एसो जस्स गुणा	१०४७	
सेह-गिहणा व चिट्ठे	३७६६	६००६	सोगधिण य मासिते	३५६२	५१६७
सेहसवहारो दुविहो	२६६६		सोभा यत ति लङ्गणा	१३०२	४६००
सेहस्स विसीदणता	२१२	३४३६	सोन्वाणं परसमीदे	२६६७	
सेहस्स विसीयणता	५३८४	"	सोन्वा पत्तिमपत्तिय	१३१७	५४५
सेहादेण भवण्णा	२६४७		सोन्वा व मोवसगं	२३६०	
सेहादीण दुगुं छा	१५४५		सो एिच्छुभति साधू	२८४१	५५७५
			सो गिणजति गिलाणी	३०८०	१६७६

सो शिञ्जराए कट्टति
सो शिञ्जराए कट्टति
सो तं ताए अण्णाए
सो तुं अण्णाभिरयाणं
सो त्वियबन्धो दुव्विओ
सो परिणामविहिण्णु
सो पारयम्मि रायरे
सो पुण्ण अलेवो वा
सो पुण्ण पडिञ्छयो वा
सो पुण्ण नेओ चउहा
सो भगति साधम्मि
सो राक्खेज्जसिक्खी
सो लसं वाताणि तया
सो सङ्गमुविहिंतेहि
सो सङ्गमुविहिंयाणं
सो होती पडिणीतो

ह

हत्थविह्वविप्पराद
हत्थदमत्तदारुय
हत्थ-यण्णं तु दीहा
हत्थं वा मत्तं वा
हत्थाद-जाव-सोत्तं
हत्थादि वायधट्ठण
हत्थादिपादधट्ठण
हत्थादिवातणत्तं
हत्थादि-वायणत्ते
हत्थादिवायणत्त-
हत्थेण अदेसिते
हत्थेण अपावेत्तो
हत्थेण व मत्तेण व
हत्थे पाए कण्ठो
हय-गय-रहसम्महं

१७६१ ३७८४
४०१८ ३८४०
४०६८ १८२३
६२२३
७३८
१७५२ ३७७५
५१५६ २५०६
४८६४ १०३१
४५६२
४२०१
१७७४ ३७६३
५७५२ ३०८३
५६१२
३५८५ ५१६१
५७६७
५४४०

हयगमलचिक्काइ
हयजुद्धादी ठाणा
हयमादी सात्ता खलु
हरिए बीए चले जुत्ते
हरियाव भणोसिलं
हविपूयो कम्मगरे
हाणी जा एगट्ठा
हा दुट्ठु कयं
हासं दण्णं च रति
हित सेसगाण अस्तती
हिडितो वड्ढिले काये
हीणप्पमाणधरलो
"
हीणाजितरेगदीसे
हीणाधिप य पोरा
हीणाहियविक्खीए
हीणे कज्जविक्खी
हीरत्तं शिञ्जत्तं
हुंढं सबलं वातादद
हुंडादि एगबन्धे
हुंढे चरित्तयेदो
"
हुंढे सबले सज्जरा
हुंढ उवासणहेउं
हेमन्तकडा गिम्हे
होऊण सन्नि सिद्धो
होऊण गुह्यो मिलाणो
होऊण नु वसणप्पत्तो
होति समे समगहणं
होमातिवित्तकरणे
होहिंति जुगप्पहाणी
होहिंति वि गियंसणियं
होति उव्वणा कण्णा

३६५४
४१३३
२४६१
५६०० ५००
४८५४ ६७४
१८०३
२३७४ ४८११
६५७३
५६६
५७२१ ३१३३
३८५७
५८२८ ४००५
५८३१
५८४१ ४०१७
२१६८
६३४५
२१६७
३४८४
७५२
५८५५ ४०३०
७५३ ४०२४
५८४८
५८५१
२४६२ २०६७
२०५६
४६०३
२६५२
५४३५
६४६१
४४१३
३७३६
५०४७ ६४६
५६४

द्वितीयं परिशिष्टम्

निशेधचूर्णौ चुरिकारेणोद्धृतानि गायत्रिप्रमाणानि

.. ११११११ ..

	विभाग	पृष्ठ		विभाग	पृष्ठ
अकानि चरसि भिक्षू	१	७	अभिति ह्यह मुहुत्तं	४	२७७
[दश० अ० ५, उ० ७, गा० ५]					
अचिकण्णं य सूरिदे	१	७१	अरसं विरसं वा वि	२	१२६
अशुष्मासियाला गुलिया	४	३६७	अरहा अत्यं भासति	१	१४
			[नष्टकल्पभाष्य, गा० १६३]		
अट्ठविहं कम्मरयं	१	५	अवसेला एकसत्ता	४	२७७
अट्ठारत्तपयसहस्सिधो वेवो	१	२	अ (आ) वंती केयावन्ती लोमसि	१	१३
			[आचा० अ० १, अ० ५, उ० १]		
अट्ठारत्तपुत्तिभु	१	१३२	असंसल	२	४१६
[निशेधभाष्य, गा० ३५०५, तुलना]					
अस्थिणं अन्ते कम्मसत्तमा	४	४००	अस्थिमे ओमोपरिण	१	८०
अस्यं नंहेहि अहं	२	१७७	अहयं दुक्कं पत्तो	३	४०५
[कल्पवृक्षभाष्य]					
अत्तत्वं संभवं भोक्ता	३	२५०	अहाकडोहं रंयति	१	१३
[उत्त० अ० ७, गा० ११]					
अभि च्छं अयिहाना	१	६५	आयंविहता अशुभारहता	४	१६३
अन्ते तिक्का भोक्ताभाट्	३	५७७	आयेलुक्कुहं सिम	३	४०१
[दश० अ० ५, उ० १, का० ७४]					
अप्पोवही कम्महक्किञ्जला य	४	१२७	"	२	३५६
[दश० अ० २, गा० ५]					
अभंभरत्ता बुभिका	१	२१	आदिममुत्ते भरिते	४	२१३
अभुवपते सत्तु वासावत्ते	३	१२२	आस्ताएणिय चरणं	१	५६
[आचा० अ० २, अ० ३, उ० १, सू० १११]					

आधारसं आहारसं	४	२६३
		]
इयदुद्धरातिगाडे	४	२१०
		]
इह कलु निगंधारा	२	१८५
	[	वृहत्कल्प, उ० ३]
उक्कोसं गणसं	१	२८
		]
उगमउपपायस	१	१५५
		]
उग्यातितुगएहि	४	२६६
		]
उग्यातिगुगएहि	४	२६७
		]
उक्कासयम्मि पादे	३	५००
	[	ग्रोधनियुक्ति, गा० ७४६]
उक्कालियम्मि पादे	१	४२
	[	ग्रोधनियुक्ति, गा० ७४६]
उक्क बोलति वदं	२	१३४
	[	बृह० उ० १, भा० गा० १५३६]
	[	ग्रोधनियुक्ति, गा० १७०]
उद् से रिहं से	२	२
	[	आवश्यकनियुक्ति, गा० १४०]
उक्कभायवेयावक्कं करेमाणे	४	२६६
		]
उवेहेत्ता संजमो बुतो	३	४०
	[	ग्रोधनियुक्ति
उत्सण्णं सम्बुधं	१	५
		]
एक्के वउसतवण्णा	४	२६६
		]
एग बुग तिण्णि मासा	४	२१६
		]
एगमेगस्स एं भंते ! जोवस्स	१	१०८
	[	भग० अ० १८, उ० ७]
एगावि अल्लुग्याता	४	२६७
		]
एगे वरवे एगे पाए चियत्तोवकरण-	४	१५७
	[	सौपयातिक, तपोवर्गन सू० ४०]
	[	ग्याना० ग्या० ३, उ० ३]

एगेण कयमकज्जं	१	५४
	[	वृहत्कल्पभाष्य, गा० ६२८]
एतेसि एं भंते ! बासाणं	३	३६३
	[	भग० अ० १२, उ० २, तुलना]
एस जिण्णं आणा	४	२१०
		]
कडते य ते कुंडलए य ते	१	२१
		]
कण्णसोक्खेहि सद्देहि	३	४८३
	[	दश० अ० ८, गा० २६]
कति एं भंते ! कण्हराईओ	१	३३
	[	भग० अ० ६, उ० ५]
कप्पति शिगंधाराणं पक्के-	३	५३२
	[	वृहत्कल्प, उ० १, सू० ३]
कप्पति शिगंधाराणं वा-	४	३२
	[	वृहत्कल्प, उ० १, सू० ८]
कप्पति शिगंधाराणं वा	४	३२
	[	वृह० उ० ३, सू० ६]
कप्पति शिगंधाराणं सलोमाइं	४	३२
	[	वृहत्कल्प, उ० ३, सू० ४]
कप्पति शिगंधाराणं सलोमाइं-	४	३२
		]
कप्पति शिगंधाराणं पक्के	४	३१
	[	वृहत्कल्प, उ० १, सू० ५]
कप्पति से सागारकडं	३	५८३
	[	वृह०, उ० १, सू० ३६]
कम्ममसंसेउजभवं	३	२६८
	[	अवधारभाष्य, उ० १०, गा० ५१०]
कपरे आगच्छति दित्तुवे	४	२७०
	[	उत्तराध्ययन, अ० १२, गा० ६]
कागसियात्तल्लइयं-	२	१८५
		]
काम आनामि ते मूलं	२	२०
	[	महाभाग]
कि कतिविहं कस्स	२	८
	[	आवश्यकनियुक्ति, गा० १४१]
कि मे कडं, कि च मे किक्खसेसं	२	२६३
	[	दश० अ० ८, गा० १२]
कुणतु व संघवं उ बडो	३	१५८
		]

कोदिसयं सतऽहियं	४	३६६	जाव बुत्थं सुहं बुत्थं	१	२१
[]	[]	[]	[]	[]	[]
को राजा यो न रक्षति	१	७	जीवे एं भंते ! ओरातिवसरीरं	२	२८१
[]	[]	[]	[भग० श० १६, उ० १, तुलना]	[]	[]
को राया जो न रक्खइ	१	१२२	जीवेणं भंते सता समितं	२	३२०
[]	[]	[]	[भग० श० ३, उ० ३]	[]	[]
कोहो य माणो य अरिण्यहीया	४	३३	जे असंतएणं अशमकलारेणं	४	२७२
[दश० श० ८, गा० ४०]	[]	[]	[]	[]	[]
कुत्तनकमंक्षयात् मोक्षः	१	१५७	जेट्टामूलंमि मासंमि	१	२१
[तत्त्वा० अ० १०, सू० ३, तुलना]	[]	[]	[]	[]	[]
गच्छन्मि केई पुरिसा	४	२६२	जेण रोहंति बीयाइं	१	२०
[]	[]	[]	[]	[]	[]
गजिज्झा एाभेये एो वासित्ता	४	३०७	जे भिक्खू असंणं वा पाणं वा	४	३२
[स्वाना० स्था० ४]	[]	[]	[बृह०, उ० ४, सू० ११, तुलना]	[]	[]
गवाशनानां स गिरः भृगोति	३	४६२	जे भिक्खू उग्घातियं	३	२८
[]	[]	[]	[]	[]	[]
गहणं पुराणसावग	४	२२२	जे भिक्खू तरुणे बत्तव	४	१५७
[]	[]	[]	[आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]	[]	[]
गोयरणपविट्ठो उ	४	३१	जे मे जाएणति जिहा	३	२६६
[दशव० अ० ५, उ० २, गा० ८]	[]	[]	[]	[]	[]
बंघुत्तपपुत्तो उ	२	३६२	जो जेण पगारेणं	१	४
[बृहत्कल्पभाष्य, गा० २६४]	[]	[]	[]	[]	[]
छब्बेव धत्तेरिसा	४	२७७	जो य ए दुक्खं पत्तो	३	४०५
[]	[]	[]	[]	[]	[]
जह इच्छसि नाऊरां	४	३३७	जं अज्जियं समीसत्त्वएहिं	३	४३
[]	[]	[]	[]	[]	[]
जति एत्थि ठवरणआरोचणा	४	२३७	जं जाणेज्ज विराधोतं	४	१६६
[]	[]	[]	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७६]	[]	[]
जतिभि भवे आरुवणा	४	३२४	जं बुज्जति उवकारे	१	६३
[निगीयभाष्य, गा० ६४८६]	[]	[]	[]	[]	[]
जत्तो भिक्खं जलं देमि	१	८०	ठवरणारुवणादिवसाण	४	३३७
[]	[]	[]	[]	[]	[]
जत्थ राया सयं चोरो	१	८१	ए चरेज्ज वासे वासंते	१	१०६
[]	[]	[]	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ८]	[]	[]
जमहं दिया य राओ य	१	२०	ए मत्तो सुयं तण्णुविबयं	३	५१४
[]	[]	[]	[मन्दीसूत्र, तुलना]	[]	[]
जह दीवा दीवसयं	१	५	ए य तस्स तण्णिमिस्सो	१	४२
[]	[]	[]	[ओषनिर्गुक्ति, गा० ७४६]	[]	[]

खण्डासाक्षुज्जिवालि	१	२१	तहेवासंजतं धीरो	१	१६१
[		]	[		]
एष बि लोणं लोणज्जति	२	१७७	तं ऐज्यद्वयं खयमए	१	२६
[		]	[		]
एष ह्व वीरियपरिहोणो	१	२७	तावदेव चत्तयर्थो	१	५२६
[		]	[		]
एषाहास्स वंसहास्स	१	५	तिगजोयेऽष्टुघाता	४	३६७
[		]	[		]
सिद्धा विगहा परिवज्जिएहि	१	६	तिगुल्लरा विसाहा	४	२७६
[		]	[		]
एषो कप्पइ शिम्भंयाणं इत्थिसामारिए	४	२३	तिगुहमण्णतरागस्स	४	३२
[		]	[		]
एषो कप्पइ शिम्भंयाणं वेरेज्ज—	३	२२७	तेगिच्छं एगभिस्संवेज्ज	३	५०६
[		]	[		]
एषो कप्पति निगमंयाणं असोमाइ	४	३२	तेजो बापू होन्निवाइयइय	३	३१५
[		]	[		]
एषो कप्पति शिम्भंयाणं वा	४	३२	तेरस य वंदमासो	४	२७५
[		]	[		]
एषो कप्पति शिम्भंयाणं	३	१५४	तेषां कउतटअष्टः	१	१०३
[		]	[		]
एषो कप्पति शिम्भंयाणं वा	४	३१	अयः शल्या महाराज !	२	१२०
[		]	[		]
एषो कप्पति शिम्भंयाणं वा शिम्भंथीणं वा	४	३२	वत्था वानमनीइवरः	१	५८१
[		]	[		]
एषो कप्पति शिम्भंथीणं ससोमाइ	४	३२	वंडक ससत्थ	१	१५
[		]	[		]
तयो अणवदुप्पा पण्णसा	१	११२	वक्कं लेत्तं कालं	३	५३५
[		]	[		]
" "	१	११६	वाणं दवावणं कारावरणे य	४	३७६
[		]	[		]
तच्चुगतिकिरियसमिती	१	२३	वंतपुरं वंतवक्के	४	३६१
[		]	[		]
तमुक्काए एणं भंते ! कहि	१	२३	वंतानां भंजनं श्रेष्ठं	२	६०
[		]	[		]
तहणो एणं पादं गेष्सेज्जा	३	२०६	धमे-धमे एणातिधमे	१	८
[		]	[		]
तथ प्रसादाद्धुत्तुं च	१	१०४	धम्मियाणं किं सुलया	४	८६
[		]	[		]

बन्धो मंगलमुषकहं	१	१३	मूढनइयं सुयं कालियं तु	१	४
[दश० अ० १, गा० १]					
पञ्चोत्तराण्यस्त	३	१५८	रक्षो भत्तं सिलो जत्थ	१	१३
[					
पञ्च वद्धंति कीर्त्तये !	१	५४	रत्त-रक्षिर-मात्त-मेवोऽस्थि-	१	२६
[					
पञ्चवीसतहस्ताइं	४	३६७	लंघण-पवण-समत्थो	१	२०
[					
परमाशु योगलेखं भंते !	४	२८१	वद्यस्त-मए भीतेण	१	२०
[भग० अ० २५, उ० ४]					
परिताप महाभुक्खो	२	४१८	वयस्सक कायस्सकं	२	३४६
[वृहत्कल्पभाष्य, गा० १=६६]					
विद्धस्स जा विसोही	१	३२	[दश० अ० ६, गा० ८]		
[			वरं प्रवेष्टुं ज्वलितं हुताशनं	१	१२७
पुरेकस्मे पञ्चाकस्मे	१	५८	[		
[			वसहि कहं रिसेंजिद्वि य	१	५०
पुध्वभरिण्यं तु जं एत्थ	१	३	[		
[			वसही दुत्तभताए	२	३७
बहुभट्ठियं योगत्तं	४	३२	[		
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७३]			विभूता इत्थीसंस्मी	४	१४३
बहुवोसे मायुस्से	१	१८	[दश०, अ० ८, गा० ५७]		
[			वीतरागो हि सर्वज्ञः	४	३०६
बहुभोहो वि य शं पुरबं	४	७२	[		
[			वैक्यं व्याधिपिहः	१	५३
बहुवित्थरमुत्तमं	४	२११	[		
[			सद्दीए अतीताए	४	२७७
कारसविहम्मि वि तवे	४	२२७	[		
[			सत्तमया सद्दुहिमा	४	३६७
भट्ठं भट्ठं भोच्चा	२	१२५	[		
[दश०, अ० ५, उ० २, गा० ७३]			समणो य ति संजतो य ति	१	२१
मद्यं नाम प्रचुरकत्तं	१	५३	[		
[			सम्प्राप्तिवच्च विपत्तिवच्च	३	५०८
मायुस्सत्तं सुई सट्ठा	३	०६४	[		
[उत्त० अ० ३, गा० १]			समितो नियमा पुत्तो	१	२३
माताप्येका पिताप्येको	३	५६१	[		
[			समभित्तवभरणीयो	४	२७६
मीसणसुत्तसमासे	४	३६७	[		
[			सद्यमेव उ ज्ञंए लवे	१	२१
पुत्तसिगोहे वक्खुं	२	०१७	[		

संस्कृत्य संजसं संजमाद्यो	१	१५३	मेसा उवरिमुहुता	४	३६७
	[ओषनिमुक्ति, गा० ४६]			[	]
संस्वामगंधं परिष्णाय	३	४८५	सोलसमुगमदोसा	१	१३२
	[आचा० अ० १, अ० २, उ० ५]			[	]
संस्वोसि पि	४	४१०	सोही उज्जुचभूतस्स	४	२६४
	[	]		[उत्त० अ० ३, गा० १२]	
साहम्मिय वच्छल्लमि	१	२२	संकप्पकिरियगोवरा	१	२३
	[	]		[	]
सिरीए सतिमं नुस्से	१	८	संतं पि तमप्पणाणं	१	२६
	[	]		[	]
सूतीपदप्पमाणाणि	१	८	संहिता य पदं चेव	२	२
	[	]		[	]
से गामंसि वा	४	२७२	हा दुदुट्ठं कयं	१	१५६
	[दश० अ० ४]			[निवीथभाप्य, गा० ६५७३]	

तृतीयं परिशिष्टम्

सूचीं प्रमाणत्वेन निर्दिष्टानां ग्रन्थानां नामानि

		विभाग	पृष्ठ			विभाग	पृष्ठ
अर्थकण्ड	(अर्थकण्ड)	३	४००	उपचरनश्रुत	(आचारांग १-६)	१	२
अर्थसत्य	(अर्थशास्त्र)	३	३६६	मोहनिवृत्ति	(मोहनिवृत्ति)	२	४३६
अनुयोगद्वार	(अनुयोगद्वार)	४	२३५	"	"	३	४०, ४४६,
आचारप्रकल्प	(निशीथ-मूत्र)	१	२६	"	"	"	४५०,
आचारप्राभुत		१	३०	"	"	"	४६१
आचारांग		३	१२२	"	"	४	६४, १०६,
आचार्य (आचार्य—निशीथ)		४	२५२	"	"	"	१२०
आचार्यकल्प	(आचार्यप्रकल्प)	१	२, ५, ३१	कल्प	(कल्प)	१	३५
आचार्यकल्प	(")	४	७३	"	"	३	३६८,
आचार्यवस्तु	(आचार्यवस्तु)	३	६३	"	"	"	४३०
आचार्य	(आचार्य)	१, ३, ५, ३५		"	"	"	४८३
"		३	२१२	"	"	४	३०४
"		४	१६३	कल्पसूत्र	(कल्पसूत्र)	३	४२३
"		"	२५३	"	"	४	२३
"		"	२५४	कल्पपेठ	(कल्पपीठ)	१	१३२
"		"	२६४	कल्प-पेठिका	(कल्पपीठिका)	१	१५५
आवश्यक		२	३३	कुटुम्बाचारकहा		४	२४३
आवश्यक	(आवश्यक)	४	२५४	(कुल्लकाचारकथा, दश० अ० ३)			
आवश्यक	(आवश्यक)	१	१४६	गोविन्दनिवृत्ति		३	२१२
"		४	७३, १०३,	"	(गोविन्दनिवृत्ति)	"	२६०
"		"	२४०	"	"	४	६६
इतिभाष्य	(ऋषिभाष्य)	४	२५३	अवगच्छक	(अवगच्छक)	४	२३५
उगह्यदिमा		१	२	वेदकहा	(वेदकहा)	४	२६
(अवग्रहप्रतिमा, आका० २-७)				अवग्रहप्रतिमा	(अवग्रहप्रतिमा)	१	३१
उत्तराध्ययन	(उत्तराध्ययन)	२	२३८	अन्वीयनिका	(अन्वीयनिका)	३	२८०
"		४	२५२	दशवै० अ० ४		४	२६८

छेदसुत (छेदसूत्र)	४	८८	पञ्चसति (प्रज्ञति)	२	२३८
अंभूदीवपञ्चसति (जम्भूदीपप्रज्ञति)	१	२१	पञ्चवाकरणा (प्रश्नवाकरणा)	३	३८३
जोगसंगह (योगसंगह)	३	२६६	पिण्डसिञ्जुति (पिण्डनिर्मुक्ति)	१	१३२
जोशियाहुड (योनिप्राश्रन)	२	२८१	"	"	१४४
"	३	१११	"	"	२४६
"	४	१२०	"	"	६७,
शमोष्कारणिञ्जुति [नमस्कारनिर्मुक्ति]	२	२८५	"	"	१६१
"	३	३६६	"	"	१६२
शरबाहणवैवक्या [नरवाहनवस्तक्या]	२	६१५	"	"	१६३
संवी [नदी]	४	२३५	"	"	२०७,
सिसीह [निशीय]	८	१२०	"	"	२२०
तरंगवती	२	४१५	पिण्डसेना [पिण्डसंगमा आवा० २०१]	१	८
"	४	२६	"	"	१६३
तनुसवेपालिय [तदुलवेचारिक]	४	२३५	"	"	२६८
दसवेपालिय [दशवैकालिक]	१	२१८	पोरिसोमंडल [पोरिसोमण्डल]	४	२३५
"	२	८०	विदुसार [विन्दुसार]	४	२५२
"	३	२८०	वैभवैर	४	२५२
"	४	२५२	[वैभवैर्य, आवा० ५० १]		
"	"	२५४	भगवती सुत [भगवती सूत्र]	१	३३, ३६
"	"	२६३	"	"	२३८
दसा [दशाभूतरकथ]	३	७	भारह [भारत]	१	१०३
"	४	३०४	भावरण	१	२
"	४	२६४	[भावना, आवा० २-२३]		
द्विष्टिवाय [द्विष्टिवाद]	१	४	मगधसेना	२	६१५
द्विष्टिवात	१	२१	मरणाविभक्ति	३	२६८
"	३	६३	मलयवती	२	४१५
"	४	७३,	महाकल्पसुत [महाकल्पसूत्र]	२	२३८
"	"	२२६,	"	"	६६, २२४
"	"	२५३	महाशिसीह शिञ्जुति	४	३०४
दीवसागरपञ्चसति [दीपसागरप्रज्ञति]	१	३१	[महानिशीयनिर्मुक्ति]		
दुमपुष्पिक [दुमपुष्पिका, दश० अ० १]	१	२४	रङ्गवका	३	७४०
दुबालसंग [द्वादशांग]	१	१५	[रतिवाक्या, दश० अ० १]		
"	"	१६५	रामायण	१	१०३
धूतक्वाशण [धूतस्थानक]	१	१०५	रोगविधि	३	१०१
"	४	२६	लोकविजय [लोकविजय, आवा० ११२]	४	२५२
जंदी [नदी]	४	२३५	वक्कशुद्धि	२	८०
पकप [प्रकल्प]	१	३३	[वाक्यशुद्धि, दश० अ० ७]		
"	४	२५६,	ववहार [व्यवहार]	१	३५
"	"	३०४	"	४	३०४
"	"	३३८			

बभ्रुवेवचरिय	[बभ्रुवेवचरित]	४	२६	सामाज्य लिङ्गजुति	४	१०३
विमोक्षि		१	२	[सामायिकनिष्ठुक्ति]		
	[विमुक्ति, आचा० २-२४]			सिद्धिर्विनिश्चय	१	१६२
विवाहपटल	[विवाहपटल]	३	४००	[सिद्धिविनिश्चय]		
वेज्जसत्थ	[वैद्यशास्त्र]	३	१०१,	सुति	१	१०३
"		"	४१७	सूयकड	१	२५
वेदरहस्य	[वेदरहस्य]	३	५२७	"	४	२५२, २६४
शस्त्र-परीक्षा		१	२	सूर्यप्रज्ञप्ति	१	२१
	[आचा० शु० १, अ० १]			"	४	२५२
सत्यपरिष्ठा		४	३३, २५२	"	"	२७८
	[शस्त्रपरीक्षा, आचा० १-१]			सेतु	३	३६६
सद्	[शब्दव्याकरण]	४	८८	"	४	२६
सम्मति	[सन्मति]	१	१६२	हेतुसन्ध	४	८८, ६६
सम्मति	"	३	२०२			

चतुर्थ परिशिष्टम्

निशोथभाष्यसूच्यन्तर्गता दृष्टान्ताः

प्रथम भाग

विषय	दृष्टान्त	पृष्ठ संख्या
अप्रसस्त भावोपक्रम	गणिका, बाहुरी और अमात्य	३
अकाल स्वाध्याय	तक बेचने वाली अहीरी	८
"	भुंग बजानेवाला किसान	८
"	शंख बजाने वाला	८
"	दो द्वाणहारिका युद्धा	८-९
विनय	श्रेणिक राजा और दिद्यातिशयो चाण्डाल	९
भक्ति और बहुमान	जिहपूजक ब्राह्मण और भोल	१०
उपधानन्तप	असगड पिता आभोर	११
निह्वन = अपलाप	विद्यातिशयो नापित	१२
शंका और अशंका	दो बासक	१५
कांक्षा और अकांक्षा	राजा और अमात्य	१५
विचिकित्सा और निविचिकित्सा	दिद्यासाधक आवक और बोर	१६
विदुग्ध = साधुओं के प्रति कुत्सा	एक आवक-कन्या (श्रेणिक पत्नी)	१७
अमूढदृष्टि	सुलसा आविका और अग्मड परिव्राजक	२०
उपवृंहण	श्रेणिक राजा	२०
स्थिरीकरण	आचार्य आषाढभूति	२०-२१
वात्सल्य	वज्ररत्नामी द्वारा संघरक्षा	२१-२२
"	नन्दीवेण	२२
त्रिधासिद्ध	अज्ज खड्ड	२२
लम्बिवीर्य	महावीर द्वारा गर्भ में माता त्रिशला की कुक्षि का घातन	२७
स्वयानर्द्ध निद्रा	पुष्पस-भक्षो अमरा	५५
"	मोदकभक्षो अमरा	५५
"	शिरश्छेदक कुम्भकार अमरा	५५
"	गजदन्तोत्पाटक अमरा	५६
"	वटशाखा-भञ्जक अमरा	५६

प्राजातिपात-रत्निका प्रतिमेवना
नौकिक मृदावाद
भयनिमित्तक श्रुत्यमेवम

सिंहमारक कोकराभिषु १००
अमन्ती के शशकादि धूर्त १०२-१०५
पुत्रार्थी राजा और भीत तरुण भिक्षु १२७

द्वितीय भाग

प्रणीत ग्राह्यार
निरन्तर कार्यसंनमता
अग्रादान का संचालनादि
अखण्ड वस्त्र-ग्रहण की संशोधना
कलुष-परिष्ठापन
रस-भोजन सम्बन्धी लुब्धता-प्रलुब्धता
नाष्टगुण का किन्तु रजोहरण
अविमुक्ति अर्थात् गृद्धि
यथावसर स्थापना-कुलों में अप्रवेश से हानि
" "
निष्कारण संयती-वसति में गमन
निर्वर्तनाधिकरण = जीवोत्पादन
" "
असंवृत हाम्य
" "
प्रसवण-भूमि का अप्रतिनिखन
असंभोग-सम्बन्धी पृच्छा
विमंभोग का प्रारम्भ
" "
अभियोग-प्रतिसेवना
लोक-कथाओं का अनुपदेश
मोपसर्ग-स्थिति में संयती के साथ विहार

बह्मदत्त चक्रवर्ती का भोजन और पुरोहित २१
कुलवधू का कामोपशमन २२
सिंह, सर्प आदि सात उदाहरण २८
कम्बसरत्नग्राही आचार्य और चोर ६७
नक्खो, छिपकली आदि १२३
आर्यसंगु और आर्यसमुद्र १२५
मरहट्ट देश में रसापण (मद्य की दुकान) पर
पञ्चा १३६
बोरल्लशकुनि (श्येन पक्षी) १३७
यथावसर गो-बोहन न करने वाला गृहस्थ २४८
यथावसर फूल न तोड़ने वाला माली २४८
बोरल्ल शकुनि (श्येन पक्षी) २६०
आचार्य सिद्धसेन द्वारा अश्वनिर्माण २८१
महिष और दृष्टिविष सर्प का निर्माण २८१
श्रेष्ठो, पाँच सौ तापस २८५
भिक्षु का मृतक-हार्य २८६
खेला (खेलन) और ऊँट २८८
अगद आदि के ६ उदाहरण ३५६
आर्य सुहस्तो और आर्य महागिरि ३६०
सम्प्रति राजा का जन्म ३६०
पुत्रार्थी राजा और तरुण भिक्षु ३८१
भल्लीगृहोदपत्ति कथा कहने वाला भिक्षु ४१६
दो यादव भ्रमण-बन्धु और भगिनी ४१७
सुकुमालिका साध्वी

तृतीय भाग

अधिकरण का अनुपशम
" "
नम सपराध में विषम दण्ड
स्वगण तथा परगण में दण्ड की अल्पाधिकता
दुष्ट राजा को निश्चार्य अनुशासन
" "
" "
" "

कलहरत सरदों द्वारा जलचर-नाश ४१
कोधी द्रमक और कनकरस ४३
राजा द्वारा तीन पुत्रों को विभिन्न दण्ड ४८
पति द्वारा चार भार्याओं को विभिन्न दण्ड ५२
आर्य खण्ड ५८
बाहुबली ५८
संभूत (ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती का भ्राता) ५८
हरिकेश भल ५८

परिहार-तप में भीत को आश्वामन
अग्निप्रमाण भोजन
अवम भोजन
वान्त भोजन का अपवाद
ग्लानसेवा और तदर्थ अश्वयन्त
धर्म की आपग (दुकान)

युग्म-काल में परिवर्तन
युग्म में कलह-अपशमन

क्रोध
मान
माया
लोभ

भाव वैर
अग्निप्रमाण-भक्तग्रहण

ग्रहार्चन द्वारा समानता का दावा
वेदोपपात पण्डक
उपकरणोपहत पण्डक
वातिक क्लीब
स्त्री-पुरुष के परस्पर संवास-सम्बन्धी दोष

ज्ञान-स्तेन
चारित्र स्तेन

मकारण प्रवृत्त्या

स्वपक्ष की स्वपक्ष में कषाय-दुष्टता

परपक्ष की स्वपक्ष में कषाय-दुष्टता
द्रव्य-भूद
काल-भूद

कालकाचार्य और उज्जयिनी-नरेश गदाभिलष
अगड, नदी प्राधि
अतिभोजी दरिद्र बटुक और अमात्य
बटलोई
रत्नवर्णिक द्वारा बौराकुल अटकी को यात्रा
दानार्थी, साथ ही अभिमानी भूतक
सुवर्णादि का क्रय
गान्धिक आपण में मद्य-क्रय
कालकाचार्य और महाराष्ट्र-नरेश सातवाहन
खलिहान जलाने वाला कुम्भकार
उदासन और सञ्जयप्रद्योत
दरिद्र कृषक और चौर-सेनापति
गोघातक भूतक
अश्वकारिय भट्टा
पंडरज्जा साम्बो
रस-लोभ से आर्य मंगु का यक्ष-जन्म, सुद्वन्द्वी
ग्राम महत्तर और चौर सेनापति
मधुबिन्दु

पैतृक सम्पत्ति के समानाधिकारी चार कृषक पुत्र
राजकुमार हेम
दुराधारी कपिल क्षुल्लक
दुराधारी तक्षन्धिय भिक्षु
आश्रम जाने वाला राजा
मातृदर्शन से बत्स को स्तनाभिलाषा
आश्रम-दर्शन से लासा-आश्रम
आर्य गोविन्द
उदायो नृपमारक भट्ट
मधुर कौण्डहल
प्रभञ्ज
मेतार्य-श्रुति-घातक
मृत गुरु के दांत तोड़ने वाला भिक्षु
मुह्यन्तक के लिए मुकधत्तक भिक्षु
गुरु की शाल निकालने वाला भिक्षु
गुरु को बन्धन मारने वाला भिक्षु
मधुरा का जउरा (यवन) राजा
दुःशील भार्या और अघ्यापक पति
एक महिषोपालक पिंडार

गंगाना-मूढ	एक ऊँटवाला	२६७
माटव्य-मूढ	शामभूतनर और खीर-सेनापति	२६८
बैद-मूढ	मातृ-गामो राजकुमार अनंग	२६८
व्युद्वाहण-मूढ	मातृ-गामो बलिक्-पुत्र	२६९
"	पंचशैल जाने वाला अनंग सेन	२६९
"	अन्धपुष्प और धूर्त	२६९
"	पशुपालक और स्वर्णकार	२६९
हस्त-पादादि-विवर्जित बिम्ब	मृगावती-पुत्र	२७०
अज्ञान भाव में गर्भवती की प्रसूतिया	करकण्डुमाता पद्मावती	२७३
प्रत्यनीक द्वारा माव्वी का गर्भवती होना	पेढाल के द्वारा गर्भवती उपेष्टा	२७७
पुत्रपादादि में अनभिज्ञ के महाव्रत	स्थाणु पर पुष्पमालारोहण	२८०
स्थविर से पूर्व क्षुल्लक की उपस्थापना	राजा के द्वारा पुत्र को राजसिंहासन	२८३
भाव-मंथनना	अमात्य और कौतलक	२९६
"	क्रोध में अपनी उंगली तोड़ देने वाला भिक्षु	२९६
उत्तमार्थ प्रतिपन्न का आहार	सहस्रयोधी का कवच	२९८
प्रत्याख्यान-कालीन आभोग (उपयोग)	कंचनपुर में क्षमक का पारण	३०२
पादोगमन में धैर्य	स्कन्दक	३१२
"	अणुशय	३१२
"	विपीलिकाओं का उपवन	३१२
"	कालासग बेसिय	३१२
"	अवन्ति सुकुमाल	३१२
"	जल-प्रवाह का उपसर्ग	३१२
"	बसीस धड़ा	३१३
पुष्पक ने होने वाली जीव-हिंसा	चतुरंगियों सेना से आवेष्टित मृग	३२१
"	दुग्ध-पतित भक्षिका	३२२
"	मछली पकड़ने का जाल	३२२
"	तिलपीलक चक्र (घागी)	३२२
पूर्वस्थापित आसन का सदोदन	जैन भ्रमण और बौद्ध भिक्षु	३२५
दृग्-कर्मकृत कर्मवन्ध का अधिकारी ?	इन्द्र को ब्रह्महत्या का शाप	३४०
भिक्षार्थ धैर्यवृद्धि करने के गुण	कृपण बणिक् की गृहचिन्तिका परनी	३५७
"	गांव के समीप कुबड़ी बढरी (बेरी)	३५८
नीकानयन सम्बन्धी अनुकम्पा	मुरुंड राजा	३६५
नीकानयन सम्बन्धी द्वेष	कञ्चल मन्त्र नागकुमार और	
	नौकालुद्ध भगवान् महावीर	३६६
एकेन्द्रिय जीवों की वेदना	जरा-जीर्ण स्थविर	३७७
एकेन्द्रिय जीवों का उपयोग	रक्ष भोजनगत स्नेह-गुण	३७७
"	पूरवीगत स्नेह-गुण	३७७

निधानदर्शन	मयूरनृपाक्षित बीनारों का निधान	३८८
अनभगत रोग का परिकर्म	झंकुर तथा बद्धमूल वृक्ष का अन्तर	३८४
"	अर्वाक्षित तथा चिबद्धित वृक्ष	३८४
लौकिक व्यवहारों का निरुपेय	दो नारी और एक पुत्र	३८६
"	पटक	३८६
घातृ-पिण्ड	रोता हुआ बालक और भिक्षु	४०४
"	आचार्य संगमस्थलिर और वसत शिष्य	४०८
निमित्त पिण्ड	अविध्यकथन से सगर्भा घोड़े की हत्या	४११
चिकित्सा पिण्ड	हुबल व्याघ्र की चिकित्सा	४१८
कोप-पिण्ड	मातोपवासी धर्मरक्षि भिक्षु	४१८
मातृ-पिण्ड	इदृगा-भोजनार्थी क्षुल्लक ; इवेलांगुलि आदि पुरुष	४१६
विद्या-पिण्ड	विद्या द्वारा उपासक का वञ्चोकरण	४२२
मन्त्र-पिण्ड	पादलिप्ताचार्य द्वारा मुहंङ राजा की मंत्र- चिकित्सा	४२३
अन्तर्धान पिण्ड	चन्द्रगुप्त मौर्य के यहाँ क्षुल्लक-द्वय का अन्तर्धान-प्रयोग	४२३
योग-पिण्ड	कञ्जस्वामी के भानुल समिताचार्य और ५०० तापस	४२५
कीतकृत	शम्पातर मंथ	४२८
पामिच्च	तेल पामिच्च के कारण बहन का वासोत्व	४३०
परिवर्तन	कोद्वह कूर के बदले में शालि कूर	४३२
आच्छेद्य	दुग्ध-आच्छेद्य से रुष्ट गोपाल	४३३
"	सत्त-ध्रों में स्तेनाच्छेद्य वृत्त	४३६
अग्नि-सृष्ट	बत्तीस मोदक वाला भिक्षु	४३७
आज्ञा-भंग	राजा द्वारा प्रजा को बण्ड	४०३
ज्ञानादिलाभार्थ प्रलम्ब-प्रतिमेवन	साम्भार्थ आशिष्य-कर्म	४१०
प्रलम्ब-विदशना	दो अजवातक म्लेच्छ	४१८
अनवस्था प्रसंग का निवारण	कृषक के इक्षु-क्षेत्र की हानि	४१६
"	राजा की कन्याओं का अन्तःपुर	४२०
"	भोलों द्वारा देवद्वीपी (गौ) की हत्या	४२१
प्रलम्ब-रम की प्रासक्ति	मद्यपान से मांसाहार की प्रासक्ति	४२१
प्रलम्ब-भक्षण से आत्मविराधना	भूग की कच्ची कली खाने से स्त्री की मृत्यु	४२२
अनाचीर्य	अक्षित तिलों से भरी गाड़ी और भगवान्	४२३
"	महावीर	४२३
"	अक्षित जल से भरा हृद और भगवान् महावीर	४२३
यतना और अयतना	विष, शस्त्र, वेतास और औषध	४२५
परिणामक, अपरिणामक और अतिपरिणामक	चार मरक और इक्षु-मांस	४२६
अकल्प-सेवन की भूमिका	अंशतः भंग गाड़ी की अरम्भत	४३१

अभिन्न प्रलम्ब से संयती को मोहोदय
समर्ग का महत्त्व
दत्त वस्तु का पुनरादान
संयती पर कामगु-प्रयोग
वस्त्र-विभूषा से हानि

स्त्रीयुक्त वसति से चारित्र्यहानि
आज्ञा-भंग पर गुस्तर उँड
सुल-विजय, सुल-मोक्ष आदि स्त्री

"

"

"

"

व्युदग्रह अपक्रान्त
अनाय देशों में मुनि-विहार से आत्म-विराधना
अन्ध-द्रविडादि देशों में मुनि-विहार
मात्रक की आवश्यकता
अस्वाध्याय में स्वाध्याय से हानि
पंचविध अस्वाध्याय
आचार्यादि-परिशुद्धि गच्छ
परिकुचित आजीवना
तीन बार आजीवना

द्विभामादि परिकुचित (अन्यमर्गगणन)

"

"

"

विषय प्रतिमेवना की समसुद्धि
अनवस्था-प्रमग का निवारण
जानबुझकर बड़ प्रतिमेवना
अनेक अपराधों का एक दण्ड
अपरिकुचितता की दृष्टि में एक दण्ड
दुर्वचन की दृष्टि में एक दण्ड
आचार्य की दृष्टि में एक दण्ड
तीनार्थ और अतीत परिणामकों की प्राप्तिवचन
अतीत अपरिणामक और अनिर्णयामकों की
प्राप्तिवचन
यचना और अयचना सम्बन्धी प्राप्तिवचन

महादेशों को ककटी से विकारोत्पत्ति ५३६
दो युक्त-बन्ध ५६१
विजिता वृक्ष का पुनर्ग्रहण ५८१
विद्याभिमन्त्रित पुष्प ५८४
रत्न-कमल के कारण तरकरोपहव ५८४

चतुर्थ भाग

अमिततप्त जल ४
चन्द्रगुप्त मौर्य १०
पाँच सौ ध्यन्तर देवी १४
रत्न देवता १४
अहंप्रक २१
सिंहों (शेरों) २२
मानुषी की कुश्कुर-रति २२
बहुरत आदि निष्कृष १०१
पालक द्वारा स्कन्दक का यन्त्र-पोलन १२७
मौर्य तरेज संप्रति १२८
वारत्तग मन्त्रोपुत्र का सत्रागार १५८
श्लेष्माक्रमण पर नृप-वोधना २२६
पाँच राजपुरुष २३०
पक्षी और पिंजरा २६२
अव्यक्त शल्य से अश्व-मृत्यु - ३०४
न्यायाधीश के सम्मुख बयान की तीन बार
प्राप्ति ३०५
मत्स्य-भक्षी तापत ३०६
सशल्य सैनिक ३०६
दो मालाकार ३०६
चार प्रकार के मेघ ३०७
पाँच वसिक्तों में १५ वर्षों का बंटवारा ३०६
धान्य-ग्रहण पर विजेता सेनापतियों की दण्ड ३११
गंजा तम्बोली और सिपाही ३१२
रथकार की भार्या ३४२
चोर ३४२
बैल और गाड़ो ३४३
मूल देव ३४३
चतुर वसिक्त का मुक्त ३४४
मूल बाह्य का मुक्त ३४४
निधि पाने वाले वसिक्त और बाह्य ३४५

सभी भालोचनाओं में समान विलोपचार
सूत्रोत्तर गुणों की प्रति सेवना से अन्त्योन्त्यविनाश
सूत्र गुण-प्रतिसेवना से चारित्र-नाश
उत्तर गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश
प्रायश्चित्त बहान करते हुए वैयावृत्त्य
सानुग्रह और निरनुग्रह प्रायश्चित्त दान

प्रायश्चित्त-शृङ्खला का रहस्य
भालोचनाई की गम्भीरता
परिहार तपस्वी को आश्वासन
शेष-शुद्धि न करने से चारित्र-नाश

शुद्ध तप और परिहार तप
शुद्ध भालोचक के प्रति आचार्य का सद्व्यवहार

नियन्त्रण का महत्त्व
अकल्पित चाहने वाले को उद्बोधन

निधि-उत्खनन ३४६
ताल वृक्ष ३४७
इति और शकट ३४८
एरषट्-मण्डप ३४८
पुरस्कृत राजसेवक ३४०
अग्नि ३५४
दारक ३५४
जल-घट, सरितादि ३५८
बन्तपुरवासी बन्तवर्णिक का दृढ़ मित्र ३६१
अगद, नवी आदि ३७३
नाली में सुरा ३७४
मण्डप पर सर्वप ३७४
गाड़ी में पाचारण ३७४
बस्त्र पर कज्जल-चिम्बु ३७४
छोटी-बड़ी गाड़ियाँ ३७४
आय ३८०
माय ३८१
भिक्षुगण ३८१
वमशूरहित राजा और नापित ३८२
भंडी-पोत ४००

पंचमं परिशिष्टम्

निशोथभाष्यसूच्यन्तर्गतानां विशेषनाम्नां विभागानुक्रमणिका

	भागांक	पत्रांक		भागांक	पत्रांक
१			"		४४१
तोर्यकर			प्रज्जरविषय-पिया	१	१६४
अर	२	४६६	प्रज्ज वडर	१	१६३
उसभ	३	१५३	प्रज्ज सुद्धर्था	२	३६१, ३६२
कुंघु	२	४६६	"	४	१२८
महावीर वद्धमानसानी	३	१४२, ३६३	अग्निाय-पुत्त	२	२३१
महावीर	३	५२३	प्रतिमुत्तकुमार	३	२३५
रिसभ	२	१३६	अवन्ती सोमाल	२	६०
वद्धमाण	२	१३६, ३६०	"	३	३१२
"	३	१४२, १५३	आमाह भूति	१	१६, २०, २१
"		१६८, ३६३	उदाह-मारक	१	२
"	४	४६	"	३	३७
मन्ती	२	४६६	"	४	६८, ७०
२			करकह	२	२३१, ४४५
गलघर			"	३	२७७
गोयम	१	१०	कविल	१	१२४
"	३	३६३, ५२२	"	३	२४३
सुधम्म	३	१५३	कपिलायं	४	२००
"	४	१०६	कालगज्ज	३	५८, १३१
मोहम्म	२	३६०	खंदग	१	३१२
३			"	४	१२७
अनाचार्य और अन भयण			गोविदज्ज	३	२६०
अज्ज लउड	१	२२	गोविदवाचक	१	३७
"	२	४६५	"	४	२६५
अज्ज महागिरी	२	३६१	बंडसुधाचार्य	४	३७७
"	४	१२८	असभ	२	३६०
अज्ज भंगू	२	१२५	जिराहास	४	४४३
"	३	१५२	अंजु	२	३६०
अज्जरवि लय	३	१२३, २३६,	"	३	२३६, ५२२

धूनभट्ट	२	३६०, ३६१	सीह	३	४०८
दत्त	३	४०८	सीहगिरी	३	२३५
दुष्कलिय	४	२५३	सुद्विप	३	२४३, ४२३
धम्मसूह	३	४१८	सेज्जभव	२	३६०
नंदिसेन-विषय	२	२६८	जालिभद्र सूरि	३	२३५
पञ्जुष्ण समासरा	१	१	श्रीचन्द्रसूरि	४	४०८
पसण्णचंद	४	६८			४४३
पम्ब	२	३६०			
"	३	२६१	जैन धम्मणी		
"	४	४५	भज्ज चंदरा	४	३७६
पासित	३	४२३	पडरज्जा	३	१५१
पूसमित	४	२५३	बम्ही	२	२६३
बाहुवली	३	५८	सुकुमालिया	२	४१७
भट्टमाहु	१	१५१	सुदरी	२	२६३
"	२	१५, ५७			
"	३	३३४			
"	४	११३, १२१	जैन निह्व		
		२४३, ३५०	भासमित	४	१०२
भसम	२	४१७	धामाड	"	"
मराग	३	२३५	अमालि	"	१०१
माथ-नुप	३	२५४	तीसगुत्त	"	"
मेयज्ज ऋषि	३	२६१	पूसमित	"	१०२
रोहमीस	४	२००	बोडिय	"	"
साटाचार्य	२	१३३	"	४	८७
बहरसामी	१	२१, १६४	रोहगुत्त	४	१०२
"	३	२०५, ४८१	गोठामाहिल	३	१२३
विण्डु	२	४५	"	४	१०२
"	१	१६२			
विस्सभूती	२	८३	प्रतिमा		
विसाहगली	४	३६५	गोमीसदाधम्य पडिमा	३	१४१
समिय	३	४०५	जिय-पडिमा	०	३६२
ससम	२	४१७	जियंत-पडिमा	३	७६
संगमयेर	३	४०८	नारायणादि पडिमा	६	५६
संभूत	२	३६०	पिउ-पडिमा	४	१५८
सिद्धमेताचार्य	१	८८	दिसभानि कणग-पडिमा	३	१४४
"	२	४, २८१	तिण्णय-पडिमा	१	१२८
"	३	३३४	लेपग-पडिमा	३	१४५
"	४	७५, १२१, २४३			
			पडिमा (अभिपहविशेष)		
			मोयपडिमा	१	१६
			"	२	८२८

म	कापालिका	४	६०
अःत्रकः	मेरुअ	२	३३२
प्रगन्धिम	"	३	४१४
खज्जूर	गोव्यय	३	१६५
खीरपट्ट	चरक	२	११८, २००
घतमहु	"	३	२०७, ३३१
तंडुलचूर्ण	"	४	३६
दतिवक	चरिका	४	६०
विष्णाअ	तन्त्रिय	३	२५६, ३२५
भेसऊअ	तच्छणगी	४	६०
सत्तुअ	तडिय	२	२०७, ४५६
समितिम	तावस	२	३, ३३२
सुखोदण	"	३	४१४
सुखमंडग	तिदंडी परिधायग	१	१२
	दिसापोक्कल	३	१६५
	परिधाय, परिराजक	२	११८, २००

६
अन्यतीर्थिक देव

केसव	१	१०५	परिराजिका	४	६०
पसुवति	१	१०४	पंचगव्यासगिय	३	१६५
बंभा	१	१०४	पंचभिगतावय	३	१६५
"	३	१४२	पंडरंम	२	११६
महादेव	१	१४६, १४७	पंडर भिक्खु	३	४१४
रुद्र	१	१४६, १४७	रत्तपडा	१	११३, १२१
विण्हु	१	१०३, १०४	"	२	११६
"	३	१४२	"	३	४१४, ४२२
सिक्ख	१	१०	रत्तपडा	१	१२३

१०
अन्यतीर्थिक भ्रमण और भ्रमणी

आजीवक	२	११८, २००	वृद्ध भावक	२	११८
"	३	३३२	सक-शाक्य	२	३, ११८, २००, ३३२
"	३	४१४	"	३	४१४
कप्पडिय	२	२०७, ४५६	सरक्ख	३	२५३
"	४	१०	समण	२	३३२
कब्बडिय	३	१६८	हड्ड सरक्ख	२	२०७
कापालिय	२	३८			
कावाल	४	१२५			
"	३	२५३			

११
परिराजक

४ ८८

अम्भुड	१	२०	इन्द्र	१	२४
उडक रिरी	३	३४०	कंबल-सबल	३	३६६
१२					
दशमं प्रोत्तरं वाचनिक					
आजीविग	१	१५	कामदेव	३	१४४
ईसरमत	३	१६५	"	३	४०८
उल्लूग	१	१५	खेतदेवया	३	१५
कपिलमत	३	१६५	गोरी	४	१५
कविल	१	१५	गंधारी	४	१५
कावाल	४	१२५	चंद्र	३	१४४, २०८
कावालिम	३	५८५	जकव	१	२१
चरग	१	२	"	३	१४१
"	४	१२५	जोइसिप	४	५
जइग-सासग	१	१७	डागिणी	२	४१
जंनतं व	३	३६०	गाइलदेव	३	१४१
लक्ष्मिप्रिय	३	२४६, २५३	शाग-कुमार	३	१४४, ३६६
लावस	१	१५	देविद	१	२०
"	४	१२५	पतदेवया	१	८
परिष्ठायाग	१	१७	पिसाव	३	१८६
पंडरंग	३	१२३	पुष्पाभट्ट	३	२२४
बोडित	१	१५	पुरंदर	२	१३०
मिच्छुग	१	११३	पूयणा	३	४०८
मिक्खू	३	५८५	इहस्सति	३	१४४
"	४	१२५	भवरगवामी	२	१२५
रत्तपड	१	१७, ११३	"	४	५
वेद	१	१५	भूत	१	६
सक्क	१	१५	मागिभट्ट	३	२२४
"	३	१६५	रक्खस	३	१८६
मरक्ख	४	१२५	रयणदेवता	४	१४
"	३	२५३	वणदेवता	४	११८
सुत्तिवादी	३	५८५	वारणमंतर	१	८, ९
सेयवड	१	७८	"	४	५
सेयभिक्षु	४	८७	वारणमंतरी	४	१३
"	३	४२२	विज्जुमाली	३	१४०
माक्यमत	३	१६५	वेमाणिग	४	५
हहसरवल	३	५८५	शक्र	१	११३
१३					
देव प्रोत्तरं देवी					
अच्यु देव	३	१४१	सम्मदिट्ठी देवया	१	८
			"	४	११८
			सामाणिग	१	२४
			सुदाठ	३	३६६

હાસ પહાસા	૩	૧૪૦
હિરિમિલક (શાળાલ-યજ્ઞ)	૪	૨૩૮

૧૪

ચક્રવર્તી, બલદેવ ધ્રોર વાસુદેવ

ધ્રુવ	૨	૪૬૬
કુંબુ	૨	૪૬૬
કેસવ	૧	૪૬
"	૨	૪૬૬
બલદેવ	૩	૩૮૩
બ્રહ્મદત્ત	૨	૨૧
મરહ	૨	૪૪૬, ૪૬૪
"	૪	૬૮
રામ	૧	૧૦૪
વાસુદેવ	૧	૪૩
"	૨	૪૧૬, ૪૧૭
"	૩	૩૮૩
સંતી	૨	૪૬૬

૧૫

રાજા, રામકુમાર ધ્રોર પ્રમાત્મ

મર્જુન	૧	૪૩
મરણકુમાર	૩	૨૬૮
મરણ રાજા	૩	૨૬૬
મરણસેન	૪	૧૫૮
મરણકુમાર	૧	૬, ૧૦, ૧૭
"	૨	૨૩૧
"	૪	૧૦૮
મસોગ	૨	૩૬૧
મસોગસિરી	૪	૧૨૬
ઉદાયન	૩	૧૪૬, ૫૨૩
કુરાલ	૨	૩૬૧
"	૪	૧૨૮
કૌન્તેય	૧	૫૪
કુટુમ્બકુમાર	૨	૨૩૧
"	૪	૧૨૭
લંદગ	૪	૧૨૭, ૧૨૮
મહાભિલ્લ	૩	૫૮
મંધાપ્રિય કુમાર	૨	૨૮
મંધાર	૧	૧૦૪

પરજોત	૩	૧૪૬, ૧૪૭
વંદનુલ	૨	૩૬૧, ૩૬૨
"	૩	૪૨૪
"	૪	૧૨૬
ચાણક્ય	૨	૩૩
"	૩	૪૨૪
જવણ રાયા	૩	૨૬૬
જરકુમાર	૨	૪૧૬, ૪૧૭
જરાકુમાર	૨	૨૩૧
જિતાર	૩	૨૬૮
જિયસત્	૨	૪૧૭
"	૩	૧૪૦
"	૪	૨૦૮
હંડગિ	૪	૧૨૭
દંડગિ	૩	૩૧૮
દંતવક	૨	૧૬૬
"	૪	૩૬૧
ધમ્મમુલ	૧	૧૦૪
પંડુ	૧	૧૦૪
પાલગ	૧	૧૦
પાલય	૩	૫૬
સલભાનુ	૩	૧૩૧
સલમિત	૩	૧૩૧
સિદ્ધસાર	૨	૩૬૧, ૩૬૨
"	૪	૧૨૬
સસમ	૨	૪૧૭
સાગુમિત	૩	૧૩૧
શ્રીમ	૧	૪૩, ૧૦૪
મયૂરક	૩	૩૮૮
મહિહિદત	૩	૫૨૦
મુરુંડ	૩	૪૨૩
મૂલદેવ	૪	૩૪૩
"	૧	૧૦૪
મેલ્લ (મેલ્લ)	૪	૨૨૬
વસુદેવ	૨	૨૩૧
વારતગ	૪	૧૫૮
સસમ	૨	૪૧૭
સંતાગિત	૪	૪૬
સંપતિ	૪	૧૨૬
સંવ	૧	૧૦

मानवादन	४	१६८	अभमगावय	२	४६६
"	३	१३१	उज्जटावय	"	"
नाहि	३	५६	कण्डुज	"	"
सुगीघ	१	१०४	कोतगह	"	"
सुनुदी	३	१५०	नामरगह	"	"
मणिए	१	६, २०, १७	छत्तगह	"	"
हणुभंत	१	१०४, १०५	डंडारभिसय	"	"
हेमकुमा	३	२४३	दीवियगह	"	"
हेमकूट	३	२४३	दीवारिय	"	"
१६ राज्याधिकारी			भरगुगह	"	"
			परियट्टगह	"	"
अमन्थ	२	४४६	मज्जावय	"	"
ईदवग	०	४५०	मंडावय	"	"
कुराया	२	४६७	वरिसधर	"	"
कोडुविय	४	१५	संवाहावय	"	"
खत्तिय	०	४६७	हट्टगण्यह	"	"
गामउड	"	२६७	१६ गणधर्म		
गामभोविय	२	४५०			
जुवराया	४	२८१	मल्ल	३	१६५
डंडिय	४	१५	संरस्सय	"	"
तलवर	२	४५०	रूपसभ	"	"
पुरोहिय	२	४४६	२० बल (सेना)		
माडवी	२	४५०			
मुडाभिसिन	२	४४६	आमबल	२	४५५
रहुउड	२	२६७	पाइवकबल	"	"
राया	२	४६७	रहबल	"	"
सत्यवाह	२	४४६	हत्थिबल	"	"
सेट्टी	२	४४६, ४५०	२१ अभिषेक-राजधानी		
सेगावई	२	४४६			
१७ राज्याह			कपिल	२	४६६
			कोसंबी	"	"
खग	२	२६८	अपा	"	"
छत	"	"	मट्टरा	"	"
नामर	"	"	मिहिला	"	"
पाउया	"	"	रायगिह	"	"
रायहन्थी	"	"	वाणारसी	"	"
१८ राजसेवक			साए	"	"
			मावरथी	"	"
असिगह	२	४६६	इरियणपुर	"	"

२२
अनपद

अवली	१	१३
अव	२	३६२
"	४	१२५
आभीर	३	४२५
उत्तरावह (उत्तरापथ)	१	२१, ५२, ६७, ८७, १५४
"	२	६५
"	३	७६
उत्तरापथ	४	१२७
कच्छ	१	१३३
काय	२	३६६
कुडुक्क	३	१६१
कुणाल	४	१२५
कुणाला	३	३६८
"	४	१२६
कुक्षेत्र	२	१०८, ११०,
कीरडुक	३	१६१
कोणाला	१	३६८
कोसल	१	५१, ७४
कोकण	१	५२, १०० १०१, १४५
यंधार	३	१४४
गोल्लय	३	१६१
चिलाइय	२	७७०
चीण	२	३६८, ३६६
जवण	४	१२५
टवक	२	७६
तोमलि	२	३६६
"	३	८१
"	४	४३, ६१
पूणा	४	१२५
दक्षिणावह	३	३६, १११
दक्षिणावह	२	४१५
दमिल	४	१२५
"	२	३६२
दविट	२	३८५

पारस	३	५६
पुण्यदेश	३	१११
"	३	६४
बन्वर	२	४७०
बहुद्रीप	३	४२५
मयल (मलय)	२	३६६
मरहट्ट	२	१३६
मरहट्ट	१	५२
"	३	११, ३७१
"	३	१३१, १४६
"	४	११५, १६५
मह	३	१३१, १४६
"	४	१०६
मगध	३	५२३
मगह	३	१६३
"	४	१२५
मालव	२	७६, १०६
"	३	१६३
रिणकंठ	२	१५०
रोम	२	३६६
लाड, (लाट)	२	६४, २२३
"	३	३६, ५६६
"	४	२२६
वच्छ	४	४५
सिधु	१	१३३
"	४	६०
"	२	७६, १५०
"	४	६०
संधव	१	१४५
"	३	१६१
सग	४	१२५
सुरट्ट (सोरट्ट)	१	५८, १३३
"	२	३५७, ३६२
"	३	३६
हिन्दुदेश	३	५६

२३

ग्राम, नगर, नगरी आदि

अककवली	३	१६२

अयोध्या	३	१६३	दारवती	२	४१६
अवंती	१	१३, १०२	पतिहाग	३	१३१
अधपुर	३	२६६	पाडलिपुत	१	१०४
आणंदपुर	२	३२८, ३१७	"	२	६५
"	३	१५८, १६२, ३४६	"	४	१२८, १२६
आमलकपा	४	१०१	पुलिदपल्ली	३	५२०
उज्जैली	१	१०२, १०४	पौडववन	४	१४४
"	३	५६, १३१, १४५	बारवड	१	६६
"	४	२००	बीतिभय रागर	३	१४४, ५२३
उत्तर महारा	२	२३१, २६६	मयकच्छ	२	४१५, ४३६
उमभपुर	४	१०३	भिल्लपल्ली	४	१५१
कंचगापुर	३	३०२	भिल्लमाल	३	१११
कचिपुरी	२	६५	मधुरा	२	१२५
कपिलपुर	२	२१, ४६६	"	३	२६६
कुसुमपुर (पाडलिपुत)	२	६५	"	४	२६५
कुंभकारकड	३	३१२	मधुरा	३	१५२, ३६६
कुंभकारकड	४	१२७	महुरा	१	८
कुगाला	३	३६८	"	२	३५७, ४६६
कोट्टग (पुलिदपल्ली)	३	५२१	माहाग कुंडगाम	३	२३२
कोल्लहर	३	४०८	मिहिला	२	४६६
कोसला	३	७६	"	४	१०२, १०३
कोसम्बाहार	२	३६१	मेहुगापल्ली	२	२३
कोमंबी	२	४६६	रहवीरपुर	४	१०२, १०३
"	४	४६, १२५, १२८	रागगिह	१	६, २०
क्षितिपतिद्विय	३	१५०	"	२	४६६
"	४	२२६	लंका	१	१०४, १०५
गिरफुल्लिगा	३	४१६	वराणसी	२	४१७, ४६६
चंपा रायरी	१	२०	वेणगातड रागर	४	४२५
"	२	४६६	सविसयपुर	३	५०३
"	४	१२७, ३७५	साएघ (साकेत)	२	४६६
तुलुमिगिरागरी	२	४१७	"	३	१६३
तेयालग पट्टग	१	६६	सावली	२	४६६
दसपुर	३	१४७, ४४१	"	४	१०३
"	४	१०३	सेर्गविद्या	४	१०३
दंतपुर	२	१६६	सोपारय	४	१४
"	४	३६१	हल्थिगापुर	२	४६६
			हेमपरिस नगर	३	२४३

२४		कसाव	३	२६६	
उद्यान		कत्ताल	४	१३२	
अग्निपुत्राग	४	१२७	कम्पकार	२	२८०
असोमवगिया	३	१४०	कम्पद्विष	३	१६८
गुणसिल	४	१०१	कुम्भपुत्राग	३	२७१
जिह्वापुत्राग	१	१०२	कुम्भकार	१	६०, १३६
तिहुग	४	१०१	"	२	३, २२५
दीवग	४	१०२	"	३	१६६
२५		कोसिग	३	२७०	
अरक		कोसेकजग	३	२७१	
कोसंबारग	२	४१६	सट्टिक	२	६
हडगारग	४	१२८	"	३	२७१
२६		"	"	१	१०४
कुल		"	"	२	४६७
गोवाल		गोवाल	४	१३४	
गोवाल		गोवाल	३	१६६	
गम्भकार		गम्भकार	३	२७१	
गम्भ (महाकुल)	२	४३३	"	४	१३२
गोहाव	२	४०८	गारग	३	१६३
दिवाभोजि	१	१५४	वेड	३	१६३
मद्ग	२	२०६	बंढाल	३	५२७
भोतिग	२	३६१	जल्ल	२	४६८
राज	४	३०५	डोव	२	२४३, २८४
वसिय	३	४१८	"	३	२७०
सामंत	२	३६१	एट्ट	२	४६८
सावग	२	४३५	एक	३	१६३, १६३, २७१
सेज्जातर	२	२४३, ४३५	गुहिय	१	१२
सेट्टि	१	६	"	३	२७१
२७		"	"	२	२४३
बंस		"	"	२	२४३
भोरपोसग (चन्द्रगुप्तवंश)	४	१०	गिल्लेव	२	२४३
भोरिय	२	३६१	रोवकार	३	२७०
सग	३	५६	तंतिवरत	३	२७०
२८		तंतिवरत	२	३	
जाति और किल्ली		"	३	१६६	
गोहीर	१	८, १७	तालावर	३	१६३
कच्छुय	२	४६८	गुलकार	३	२७२
			वरशिपुन	२	३५

तेरिमा	२	२४३	मालिय	१	१०
चिजजाति	१	११३, ११३	माहन (मातृगण)	३	२५१
		१६२, १६३	"	२	११६
भीमार (भीचार)	१	१८	मुद्रिय	२	४६८
"	२	८१	मेय	३	१६८, २७०
धीर	२	२४६	मोरतिय	२	२४३
पदकार	३	२७१	रजक	१	१०४
परीषद	३	२७१	रयग	३	२७१
पयकर	२	२४३	रहकार	२	३, ३५
पवग	२	४६८	"	३	१६६
पारण	२	२४३	"	४	३४२
"	३	२७०	संक्ष	३	२७१
"	४	२३७	साउलिय	३	१६३
पारसीय	२	३६६	सासन	२	४६८
पुरोहित	१	१६४	लोढया	३	१६८
"	२	२६७, ४४८	लोहार (लोहकार)	१	७६, १३६
"	४	१२७	"	२	३, ६, २८०
पुलिन	१	११, १४४	"	३	१६६, २७०
"	३	२१६, ५२१	वणिय	१	१३६, १४३
"	४	४६	"	३	१४२, २६६, ५१०
पोसग	३	२७१	वरुड	३	२७०
बंधण	१	१०, ११	वरुड	४	१३२
"	३	४१३	वागुरिय	३	२७१
बोहिय	१	१००	वागियग	३	५८५
बंध	३	१६३	वालजुय	३	१६३
बिस्त	१	१४४	वाह (व्याध)	३	२७१
बोहिय	२	४५४	विष्ण	१	१०४
मच्छिक	३	२७१	वैसवग	३	४६८
मणियार	२	५	सबर	३	८७
मयूरपोसग	३	२७१	सत्यवाह	२	२६७, ४६८
मरुअ	१	१०४	"	३	२८४
"	२	११८, २०८	संपर	३	२७१
मल्ल	२	४६८	सुवष्णुगार	१	५०
महाधण (महाजन)	३	२७१	"	३	२६८, २६६
मायंग, (मातंग)	१	६, २१	"	४	१२
"	३	५२७	सूद्र	२	११६
मालाकार	२	६	सोगरिय (सौकरिक)	३	२७१
"	४	३६०	सोणहिय	३	१६८

सोबाग	३	५२७	
सोहक	२	२४३	
सोषग	३	२७१	ददमित
हरिएस	१	१०	धगमित
"	३	२७०	माकदियदारग
हेड्डुण्हावित	२	२४३	सागरदत्त

३१

सायंवाह

४	३६१
४	३६१
४	२१०
३	८७

२६

पशु-पक्षि प्रावि-भोषक

घाय-पोसय	२	४६८	
घास	"	४६८	
दरपी	३	२७१	
कुक्कुड	२	४६८	
पीरल्ल	"	"	
तित्तिर	"	"	
पोय	"	"	
मयूर	"	"	
महिंस	"	"	
मिग	"	"	
मेढ	"	"	
मोर	२	२४३	
लाबय	२	४६८	
वग्ग	"	"	
वट्टय	"	"	
वसह	"	"	
सीह	"	"	
सुणह	"	"	
सुय	"	"	
सूयर	"	"	
हत्थि	"	"	
हंस	"	"	

३०

दमक, मेढ और आरोह

घास-दमग	२	४६८	
हत्थि-दमग	"	"	
घास-मिठ	"	४६६	
हत्थि-मिठ	"	"	
घास-रोह	"	"	
हत्थि-रोह	"	"	

३२

साधान्य व्यक्ति

इंददत्त	२	१५, १४७,
		२४५, ३३४
"	२	४२०
इंदसम्म	२	१७६
उसभवत्त	३	२३६
जग्गदत्त	१	३१
देवदत्त	१	२, ३१
"	४	३०५
पेढाल	३	२७७
विण्णुदत्त	१	३१
सत्थकि	३	२३६
सोमदेव	३	२३६
सोमसम्मा	२	१५
सोमिल	१	२३६

३३

भारी

अच्चंकारियभट्टा	३	१४६
असगडा	१	११
उमा	१	१०४
कविला	१	१०
किण्हगुलिमा	३	१४२
संडपाणा	१	१०४
जयंती	४	४६
जेट्टा	३	२७७
तिसला	१	२७
देवती	१	१०३
भरगसिरी	४	३६१
चारिणी	३	१५०
पडमसिरी	४	३६१

पञ्चावली	२	२३१	अष्टाहिमहिम	३	१४१
"	३	२७७	आगर	२	४४३
पञ्चावली	३	१४२	इष्टगा	३	४१६
पुरंदरजया	३	३१२	इद	२	२३६, ४४३
"	४	१२७	"	३	१२३, २४३
भट्टा	३	१५०	"	४	२२६
भट्टा	३	१५०	कौमुदी	४	३०६
भानुसिरी	३	१३१	संद	२	४४३
मृगावली	३	२७६	"	४	२२६
मियावली	४	३७६	गिरि	२	४४३
वीरवती	३	२६८	वेद्य	"	"
सत्त्ववती	४	३६१	जकल	"	"
सीता	१	१०४	"	४	२२६
सुकुमारिया	२	४१७, ४१८	एदी	२	४४३
सुमदा	४	३७५	एग	"	"
सुलसा	१	१६, २०	तडाग	"	"
सुवर्णमुनिया	३	१४५	तलागजणग	२	१४३
हेमसंभवा	३	२४३	कूम	"	४४३
			दरी	२	४४३
			दह	२	४४३
			देवउलजणग	२	१४३
भालवी	२	४७०	भूत	"	४४३
ईसरी	"	"	"	४	२२६
खुज्रा	"	"	"	२	४४३
धारुमिणी	"	"	मुगुंद	"	"
पद्मभी	"	"	सकल	"	"
परिसरी	"	"	रह	"	"
पल्लवी	२	४७०	सेपग	३	१४५
पाउसी	"	"	विवाह	१	१७
पुलिव्दी	"	"	"	२	३६६
बम्बरी	"	"	सक	२	२४१
लउसी	"	"	सर	२	४४३
लासी	"	"	सागर	"	"
वामरी	"	"			
सबरी	"	"			
सिहली	"	"	गिरिजता	२	४६२
			राष्ट्र	"	"
			भंडीर	३	३६६
भगड	२	४४३	रह	२	१३७, ३३४

३४
वासी

३६
यात्रा

३५
उत्सव

	३७ पूजा		मिग मिणी सुवर्ण	
पहवण—	२ १३७, ३३४			१ १७१
समण—	३ १३१			१ ५१
सुय—	४ २-६			१ १७१
	३८ नालक (मुद्रा)		उदग	४० पालक
उत्तरापहक	२ ६५		कजिग	१ २८७
कवहुग	३ १११		खीर	२ २५३
कागणी	" "		खंड	३ २८७
कुसुमपुरग	२ ६५		गुल	२ "
केवडिग	३ १११		बिचा	२ "
केतरात	" "		तक	१ २८७
चम्भलात	" "		द्राक्षापानक	२ २२३
खोलप्र (रूपक)	२ ६५		दातिम	२ १२३
तव	३ १११		परितिमग	२ २५३
दक्षिणापहग	२ ६५		मज्ज	३ २८७
दीविचिक	" "		मुहिता	२ १२३
दीगार (मुवण)	३ १११, ३८८		सककरा	२ "
पाडलीपुत्तग	२ ६५			४१
पीय (मुवण)	३ १११		इद्र	बिमिष्ट भोज्य पदार्थ
रुप्य	" "		खंड	३ ४१६
साहरक (रूपक)	२ ६५		पयपुण्य	२ २८७
	३९ पात्र		मण्डग	२ २८७
पय	३ १७१		मत्तागल	३ ४१६
कणग	" "		हविपूय	२ २८०
हृदोरग	१ ५१			४२
करोडग	" "		असुय	अस्थ
कंस	३ १७१		आईरग	२ ३६६
बम्म	" "		आभरश विजित	२ ३६६
बेल	" "		उट्टिय	२ ५७
जायस्व	" "		उभियाय	२ "
तडय	" "		कणग-कंत	२ ३६६
तंव	" "		कणग-खविय	" "
दन्त	" "		कणग-विन	" "
मकुय	१ ५१		कप्पामिय	" "
रुप्य	३ १७१		किट्ट	" "
इदर	" "		कुत	" "

कोयर	२	३६८	उक्कल्लडग	२	४५५
कोसियार	"	५७	कम्मंत	"	४३३
कंबल	"	३६८	कम्म	४	६२
सोम्म	"	३६६	कुंभकार	२	२५५
चीण	"	३६६	"	३	१६०
चीणसुय	"	"	"	४	६१
जंगिय	"	५६	कुविय	२	४३२
तिरीडपत्त	"	५६	कोट्टागार	२	४५५
दुगुल्ल	"	३६६	सीर	"	१५५, ४५६
पट्ट	"	५७	गय	२	४४६
पोत्त	"	५६	गंज	२	१५५, ४५६
पोंड	"	३६६	गुज्ज	२	४४६
भंगिय	"	५६	गुलजंत	४	१५१
भियलोमिय	"	५७	गो	२	४३३
वाय	"	५७	गोण	२	"
सराय	"	५६	वंध	२	२१०
	४३		"	४	२४०
विद्या			सुस	२	४३२
अभियोग	१	१२१	अंत	४	१५१
अंजण	"	"	जाण	२	४३२
अंतदाण	३	४२३	जुग	२	"
आभोगिणी	२	४६३	जोति	४	६१
इंद आल	३	१६१, १६३	तण	२	४३३
उण्णामिणी	१	६	सुस	२	४३२
ऊसोवणी	१	१२१	निज्जाण	२	४३१
ओणामिणी	१	६	पणिय	२	४३२, ४३४
गद्दी	३	५६	पयण	४	६२
तालुवाडिणी	१	१२१	परिया	२	४३२
यंभणी	१	१६४	पाण	२	४५५
पडिसाहरण	३	४२२	पोसह	३	५५८
माणसी	१	१३६	भिन्न	२	४३२
मातंग	४	१५	भंडागार	२	४५५, ४५६
	४४		भंडसाला	४	६१, ६२
क्रांति			महारास	२	४५५, ४५६
इंधण- माला	४	६१	मंत	२	४४६
उज्जारा	२	४३१	मेहुण	"	"
उत्तर	२	४४५	रहस	"	"
			वक्क	१	१०३

मैत्रु "
 चम्पारण "
 मेण्ड "
 गुण्ड "
 हय "

१ १५ मंदर, मेरु
 ४ ६१, ६२ " "
 १ ८४ मालवग
 २ ४३२ हयग
 २ ४४६ विमोगस्त
 वेयड्ड
 "
 हिमवन्त

१ २७, ३२
 ३ १५१, ४१६
 २ १७५
 १ २७
 ३ ३१२
 १ २७
 ३ १४४
 १ १२

४५
 भास

भासाह
 "

२ ४७, ३३३
 ३ १२१, १२६
 १३२, १६२

"
 भासोय

४ २२६, २७५
 ३ १२८

"

४ २२६

कस्तिय

१ १३८

"

३ ६२, १२८

"

४ २२६, २३०

केस

४ २२६

जेड्ड

२ ४७, ३३३

पीस

३ १२८

भट्टवय

३ १३०, १३१

१३२, १६३

मगसिर

१ १३८

"

३ १२६, १३२

"

४ २३०

वैसाह

२ ३३४

सावरा

३ १२१, १२६

१३२

४ २२६, २७५

४६
 पञ्चत

अंजगण

१ २७

इंदपय

३ १३३

कुंडल

१ २७

कैलास

३ ४१६

गयग

३ १३३

गौरगिरि

१ १०

बुल्लि हिमवन्त

३ १४१

दहिमुख

१ २७

४७
 द्वीप और क्षेत्र

भट्ट भरह

२ ४१७

भरुणधर दीव

१ ३३

उत्तर कुरु

३ २३६, ३११

एरवत

३ ३०५

जंबुदीव

१ २७, ३१, ३३

"

३ १४०

रादीसर दीव

१ १६

"

२ ६५

दीविक्षिक दीव

३ १४१

देवकुरु

३ २३६, ३११

पंचसेल दीव

३ १४०

घाततिसंड

१ ३१

बंभदीव

३ ४२५

भरह

१ १०५

"

३ ३०५

"

४ ६८

महाविदेह

२ १३६

हिमवय

१ १०५

हेमवय

१ १०५

४८
 समुद्र

भरुणोदय समुद्र

१ ३३

सवण-समुद्र

" ३१, १६२

४९
 नदी

उत्सुगा

४ १०३

एरवती

३ ३६८, ३७१

एरावती

३ ३६४

कण्हवेगा

३ ४२५

गंगा

१ ११, १०४

॥	३	१६५, ३६४	फल	॥	॥
जउला	३	३६४	बीय	॥	॥
मही	३	३६४	भिन्न	॥	॥
वेण्णा	३	४२५	मयाग	॥	॥
सरऊ	३	३६४	मुंन	॥	॥
सिधु	४	३८	मोरंग	॥	॥
५०			रुदक	॥	॥
उबक			वेत	॥	॥
नालोदग	४	४३	संख	॥	॥
नादोदग	४	४३	सिंग	॥	॥
धारोदग (सत्तधारा)	४	३८	हड्ड	॥	॥
५१			हरिय	॥	॥
लौकिक तीर्थ			५४		
धनकलंड	३	१६५	धामरस	२	३६८
केयार	॥	॥	महुहार	॥	॥
नंगा	॥	॥	उलंवा	॥	॥
पहास	॥	॥	एगावली	॥	॥
प्रयाग	॥	॥	कडग	॥	॥
मुक्कुर	३	१४७	कडीमुत्तय	॥	॥
तिरिमाय (न)	॥	१६५	करागावली	॥	॥
५२			कुंडल	॥	॥
जल संतरण - साधन			केयूर	॥	॥
उकुप	१	७४	गलोसइया	॥	॥
लावा	१	७४	तिसरिय	॥	॥
तुंब	१	७४	मुडिय	॥	॥
वति	१	७४	पट्ट	॥	॥
५३			पसंब	॥	॥
मासा			मउब, भुकुट	॥	॥
कट्ट	२	३२६	मुत्तावली	॥	॥
कवडग	॥	॥	रयणावली	॥	॥
गुंजा	॥	॥	वासंभा	॥	॥
उपरपत्त	॥	॥	सुवण्णा मु	॥	॥
इंत	॥	॥	हार	॥	॥
पत्त	॥	॥	५५		
पिछ	॥	॥	गन्धद्वय	२	४६७
मुसंजीवग	॥	॥	अगद	॥	॥
पफ	॥	॥	कुं कुम	॥	॥
द्विय	॥	॥	कपूर	॥	॥

बंदण	"	"	सद्विषय	"	"
सुखमय	"	"	सरिमय	४	१५३
मिगंड	"	"	सालि	२	१०६, २३७
	५६		हिरिमय	२	१०६
	धाम्य			५७	
ग्राम्य	२	१०६		बाब	
घतसि	"	"			
घनिसिद	"	"	कम्पुभी	४	२०१
कल	"	"	कंसताल	"	"
"	३	३२७	कंसालन	"	"
"	४	१५३	काहला	"	"
कलमसालि	२	२३३	खर मृही	"	"
कलाय	३	३२७	मु'जापगव	"	"
कुलरथ	२	१०६	गोसुई	४	२००
कंगू	२	१०६, २३७	गोहिय	४	२०१
कोदक	२	१०६, २१३	भल्लरी	४	२००
"	३	५	भोडय	"	"
गोबूम	२	१०६, २३७	डमरुग	"	"
कराय	२	२३७, २४१	डंकुल	४	२००
"	३	३२७	एालिया	१	८४
"	४	३३, १५३	ताल	४	२०१
बवलन	२	२३७	तुण	४	२००
जव	२	१०६	तु'बवीणा	४	२००
शिप्फाव	२	१०६	तु'डुमो	४	२०१
"	४	३३	नंदी	४	२००
तंडुल	२	२३६	पएस	"	"
तिल	२	१०६, २३७	पडह	४	२००
तुबरी	"	१०६	परिलिस	४	२०१
त्रिपुड	"	"	पिरिपिरिता	४	२०१
भाणग	"	"	बन्वीसग	४	२००
पलाल	"	"	भल	४	२०१
भसूर	"	"	भंभा	४	२०१
मास	"	१०६, २३७	भेरी	४	२००
		२४१	मकरिय	४	२०१
मुग	२	१०६, २३७	महुय	४	२००
		२४१	महई	४	२०१
रालक	२	१०६	मुद्ग	४	२००
वल्ल	२	२४१	मुदज	४	२०१
मीरि	२	१०६	मुरली	१	८४

पुरव	४	२००	पद्मराग	३	३८६
सिद्धि	४	२०१	सूर्यमणी	३	३८८
बल्लरी	४	२००	सूरकान्त	२	१०६
बलिवा	४	२०१	स्फटिक	२	१०६
बिन्दु	४	२००	"	३	३८६
बीणा	४	२००		६१	
वेणु	४	२०१		५१	
वेवा	"	"	एलामाद	१	१०२
वस	४	२०१	खडपाणा	"	"
मणालि	४	२०१	मूलदेव	"	"
सदुध	४	२००	ससग	"	"
सम्भ	४	२०१		६२	
संलिमा	४	२०१		आवण	
मृग	३	२०१	कल्लाकावण	४	२२३
	५८		कुत्तिपावण	४	१५१, १-०२
	आकर		मज्जावण	२	१३६
अय	२	३२६	रसावण	२	१३६
त	"	"		६३	
त	"	"		भाषा	
रयण	"	"	अद्वारसदेसी भाषा	३	२५३
वहर	"	"	अद्वारमागई	"	"
नीसग	"	"	पायप	"	"
सुवण्ण	"	"		६४	
हिरण्ण	"	"		पुरोहित	
	५६		पालय	४	१२७
	लौह			६५	
अय	२	३६७		सुवण्णगर	
बंटा	१	६			
तलय	२	२६७	अण्णसेरा	३	१४०
तंब	"	"	"	४	१२
रूप	"	"		६६	
नीसग	"	"		शोकरिक	
सुवण्ण	"	"	काल	१	१०
	६०			६७	
	मलि और रत्न			बंछ	
इ इनील	३	३८६	अन्न तरी	३	४१२
बद्रकान्त	२	१०६	"	४	३४०

દ્વિતીય
અંક

સામર
જ્ઞાન
સંપ્રદાય
સંપ્રદાય
સંપ્રદાય

પૃથ્વી
૩ ૧૦૧ પુષ્પાવલસ
" " "
૧ ૮૮ મિત્રા
૩ ૧૦૧ સંજ
" " સીંહાસન

" "
૧ ૮૮
૩ ૧૦૧
૩ ૧૦૧
૩ ૧૦૧
"

सुभाषित—सुधासार

जं जन्मि होइ काले, आयरियव्वं स कालमायारो ।
वतिरित्तो हु अकालो, लङ्गा उ अकालकारिस्स ॥

—गाथा, ६

पडिसेवणा तु भावो, सो पुण कुसलो व होज्ज अकुसलो वा ।
कुसलेण होति कप्पो, अकुसलेण पडिसेवणा दप्पो ॥

—गाथा, ७४

ए य सब्बो वि पमत्तो, आबज्जति तथ वि सो भवे वधम्भो ।
जह अप्पमादसहिम्भो, आवरणो वी अवहम्भो उ ॥

—गाथा, ६२

पंचसमितस्स मुशिलो, आसज्ज विराहणा जदि हवेज्जा ।
रीयंतस्स गुणवम्भो, सुव्वत्तमबन्धम्भो सो उ ॥

—गाथा, १०३

रागदोसाणुगता तु, दप्पिया कप्पिया तु तदभावा ।
आराधतो तु कप्पो, विराधतो होति दप्पेण ॥

—गाथा, ३६३

कामं सब्बपदेसु, विउस्सग्गध्वातधम्मता जुत्ता ।
मोत्तु मेहुण-धम्मं, ए विणा सो रागदोसेहि ॥

—गाथा, ३६४

संसारगड्डपडितो, एणादवलंबितुं समारुहति ।
मोक्खतदं जथ पुरिसो, वल्लिवितारेण विसमा उ ॥

—गाथा, ४६५

एचुप्पतितं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिब्बाए ।
अदीणो अव्वहितो, तं दुक्खं हियासए सम्मं ॥

—गाथा, १५०३

सोऊणं च गिलाणि, पथे गामे य भिक्खवरियाए ।
जति तुरितं गागच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥

—गाथा, १७४६

ख्वस्सेव परिसयं, करेहि ग हु कोद्वो भवे साली ।
आमललियं वराप्पो, चाएति न गद्दो काउं ॥

—गाथा, २६२६

जं अज्जियं चरित्तं, देसूणाए वि पुव्वकोडोए ।
तं पि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहत्ते एणं ॥

—गाथा, २७६३

संपत्ती व विवत्ती व, होज्ज कज्जेमु कार्गं पप्पं ।
अणुपायओ विवत्ती, संपत्ती कालुवाएहि ॥

—गाथा, ४८०६

—भाष्यकार, आचार्य सिद्धसेन क्षमाश्रम

गाणं पि काले अहिज्जमाणं गिज्जराहेऊ भवति, अकाले पुण
उवघायकरं कम्मवन्धाय भवति, तम्हा काले पडियव्वं

—भाग १, पृ० ७

मोक्खत्थं आहारविहाराइमु अहिगारो कीरति ।

—भाग १ पृ० ७

कुलगणसंघसमितिसु मामायारी पक्खणो सु य ।

मुत्तघराओ अत्थघरो पमाणं भवति ।

—भाग १, पृ० १४

उपयोगपूर्वकरणाक्रियालक्षणो अप्रमादः ।

—भाग १, पृ० ४२

हिमादिअकज्जकम्मकारिणो अणायगिया ।

—भाग ४, पृ० १२४

आवत्तीए जहा अप्पं रक्खंति,

तहा अणोवि आवत्तीए रक्खियव्वो । —भाग ४, १२६

अज्जवं अकरेमाणस्स संजमसोही ण भवति ।

—भाग ४, पृ० २६४

पमाया दप्पो भवति, अप्पमाया कप्पो ।

—भाग १, पृ० ४२

कम्मबंधो य ण दव्वपडिसेवणाणुरूढो, रागदोसाणुरूढो भवति ।

—भाग ४, पृ० ३५६

जहा जउ अग्गिणा गलति

एवं जहुत्तसंजमजोगम्म अकरणात्तो चरित्तं गलति ।

—भाग ४, पृ० ४

जाग्गिमी रागभागमावा मंदा मध्या तीव्रा

वा, ताग्गिमी मात्रा कर्मेबंधो भवति ।

—भाग ४, पृ० १६

जो जो माधुस्स दोसनिरोधकम्मखवणो किरियाजोगो

मो मो मोक्खोवात्तो ।

—भाग ४, पृ० ३५

—वर्णिकार आचार्य जिनदाम महत्तर

पुस्तक परिचय-

निशीथ-भाष्य एक महत्त्वपूर्ण विशालकाय आगम है। उसमें आचार के सभी अंगों का जीवन एवं देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार सांगोपांग वर्णन किया गया है। आचार के साथ दर्शन, तत्त्व-ज्ञान एवं उस समय की सारंकृतिक, राजनैतिक, सामाजिक स्थिति का, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि सभ्यता का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। वस्तुतः निशीथ, एक ज्ञान-कोष है। जो अब तक अलभ्य था। उपाध्याय श्री अमरमुनि जी एवं सहयोगी पं० मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज जी द्वारा इसका संपादन तथा सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा द्वारा प्रकाशन हुआ था। उक्त संपादित निशीथ पर कुछ रिसर्च स्कॉलर पी० एच० डी० भी कर चुके हैं।

भारत के मूर्धन्य विद्वानों एवं विशेष कर जर्मनी के कई पुरस्कृत्यों एवं विद्वानों की ओर से निरन्तर निशीथ की माँग आ रही है, उसकी संपूर्ति के लिए 'निशीथ-सुग्रम्' का द्वितीय संस्करण मुद्रित किया गया था।

प्रस्तुत आगम पर स्थविर पुंगव श्री विसाहगणी महत्तर का भाष्य और आचार्य प्रवर श्री जिनदास महत्तर की विशेष चूर्णि भी प्रकाशित हो रही है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् पं० दलसुख मालवणिया, अहमदाबाद 'निशीथः एक अध्ययन' तथा सुप्रसिद्ध शोधकर्त्ता वी० वी० रायनाडे (उज्जैन) द्वारा इंग्लिश में लिखित समालोचनात्मक विस्तृत प्रस्तावना भी साथ में संलग्न है। पुस्तक की विद्वानों द्वारा मांग पर हमने इसका तृतीय संस्करण की कुछ प्रतियाँ छपी है ताकि गुरुदेव जी का नाम अमर रहे।

प्रस्तुत ग्रन्थ चार भागों में डेमी साइज 8 पेजी लगभग 2000 पृष्ठ।

तृतीय संस्करण

मूल्य : 1000 रु०

Ardha Magadhi Ditionary : (Illustrated) : Literary Philosophic and Scientific by Shatabdhani Rattan Chand ji maharaj, (Complete in Five Vols.) with Introduction by A. C. Woolner (in original size), 1988

7500/-

श्रीमद्वादिदेवसूरिविरचित : - स्याद्वादरत्नाकरः ।

800/-

जैन दर्शन - (सम्यक् ज्ञान दर्शन चरित्र के परिप्रेक्ष्य में) डॉ० साध्वीसुभाषा

500/-

जैन साहित्य में युवाचार्य मधुकर मुनि का योगदान - आर्या चन्द्रप्रभा आभा श्री

250/-

Jain Philosophy - (Religion and Ethics)-Prof. B.B. Rayanade, Demy 8 Vo. 2001

395/-

प्राकृतसूक्ति-कोश - मुनिचन्द्रप्रभसागर-2002

250/-

शौरसेनी प्राकृतभाषा और व्याकरण - प्रो० प्रेमसुमन जैन

125/-

कुन्दकुन्दाचार्य की प्रमुख कृतियों में दार्शनिक दृष्टि - डॉ० सुषमागांग

60/-

प्राकृतचन्द्रिका (Prakrtacandrika) : प्रभाकर झा

25/-

भारतीयदर्शन परम्परायां जैनदर्शनाभिमत-देवतत्त्वम्

(Bharatiyadarsana Paramparayam Jainadarsanabhima-
ta Devatatvam) : डॉ० दामोदर शास्त्री, 1985

150/-

अमर पब्लिकेशन्स

सी० के० 13/23 सती चौतरा,
वाराणसी । फोन 2392378